भूमिका ।

—— :o: ——

अर्बी .कुरान का उलथा हिन्दी भाषा में जहां तक बिचार है यह पहली ही बार छप रहा है कुरान मुसलमानों का धर्म ग्रन्थ और ईश्वरीय बाणी है इसलिए उचित है कि हिन्दी पढ़नेवाले भी उससे सूचित हों कि उसमें क्या कुछ शिक्षा दी गई है, किसी भाषा का उलथा दूसरी भाषा में करना बड़ा कठिन है परन्तु हमने इस विषय में उद्योग करके मूल को हिन्दी भाषा में उलथा किया और साथ ही उसमें बहुतायत से टिप्पणी भी लगा दीं कि जिससे समझने में सुगमता हो हमारी इच्छा थी कि कुरान का विस्तार पूर्वक एक इतिहास और सूरतों का क्रमशः चर्चा भी पुस्तक में करें परन्तु पुस्तक के छपने ही में अधिक समय लगा यह बिचार करके इस इच्छा को रोकना पड़ा कहीं कहीं छापे की भी अशुद्धियां पाई जाती हैं परन्तु जहां तक विचार है वह ऐसी नहीं जिससे मूल में भेद आवे इस कारण पाठकों से विन्ती है कि ऐसी अशुद्धियों को कृपा करके क्षमा करें ॥

अहमदशाह

एस. पी. जी. मिशन

ता० २० दिसम्बर १९१४ ई०

हमीरपुर (यू. पी.)

क्रमानुसार सूचीपत्र ।

वर्णमालानुसार सूचीपत्र।

१ सूरए फ़ातिहा* मक्की रुकू १ आयत ७

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से आरम्भ।

(१) सर्व महिमा ईश्वरही के निमित्त है जो सर्व सृष्टियों का प्रभु है। (२) वह दयालु और कृपालु है। (३) न्याय के दिन का स्वामी है। (४) हम तेरी ही स्तुति करते हैं और तुझही से सहायता चाहते हैं। (५) सीधे मार्ग की ओर हमारी अगुवाई कर। (६) हां उनके मार्ग की ओर जिन पर तू ने अनुग्रह† किया। (७) न कि उनके मार्ग की ओर जिन पर तेरा कोप‡ भड़का अथवा जो मार्ग से भटक§ गए॥

२ सूरए¶ बक़र (बैल अथवा गाय) मदनी रुकू ४० आयत २८६।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) इस पुस्तक में कोई सन्देह नहीं है—संयमियों के निमित्त अगुवाई है। (२) जो बे देखे†† पर विश्वास रखते हैं और नियमानुसार प्रार्थना करते हैं और हमारी दीहुई जीविका में से देते हैं। (३) और वह उस पर जो तुझ पर और जो तुझ से पहिले उतरा विश्वास लाते हैं और अन्त के दिन का भी

नोट—* यह सूरत अवश्य मक्की सूरतों में से आदि की है क्योंकि सूरए साफात की १८२ आयत ठीक ठीक वही है जो इसकी प्रथम आयत है और सूरए हजर की ८७ आयत में इसका चर्चा है सो अवश्य इन सूरतों के पहिले की सूरत है. इस छोटी सूरत में उतनीही विन्तिएं हैं जितनी मसीहियों की ईश्वर की प्रार्थना में हैं. महम्मदी इसको अपनी हर प्रार्थना में कईबार पढ़ते हैं और इसके अन्त में आमीन भी कहते हैं कोई २ विचार करता है कि यह सूरत दो बार उतरी है. इस सूरत के विषय में कहा जाता है कि भविष्यद्वक्ता होने के प्रथम जब महम्मद साहब घर से दूर बन में हुआ करते थे अर्थात् घूमा करते थे तो बहुधा एक शब्द सुनाई दिया करता था "हे महम्मद" जिसको सुनकर हज़रत् भयातुर होजाया करते थे और जब इसका चर्चा नौफ़ल के पुत्र वरक़ा से जो एक मसीही विद्यवान था किया तो उसने कहा कि भय न करो वरन ध्यान दे के सुनो कि वह क्या कहता है जब इस पर अभ्यास किया तो जानपड़ा कि यह शब्द जिबराईल का है और उसने यह सूरत हज़रत को पढ़ाई मानो ईश्वर की खोज का गुर सिखा दिया. पहिली तीन आयतों में ईश्वर के विषय में शिक्षा दी और अन्तिम चार आयतों में प्रार्थना करना सिखाया जिससे सीधे मार्ग की ओर अगुवाई करे॥

† अर्थात् ख्रीष्टियान॥ ‡ अर्थात् यहूदी॥ § अर्थात् मूर्ति पूजक और साझी ठहरानेहारे॥

नोट—¶ इस सूरत का अधिक भाग सन् २ हिजरी अर्थात् बदर के संग्राम के पहिले उतरा जानना चाहिए कि हिजरत मुहर्रम के आरम्भ अर्थात् अप्रैल अथवा जून सन् ६२२ ईसवी के मध्य में हुई। †† मृत्यु पुनरुत्थान और न्याय के दिन पर।

विश्वास रखते हैं। (४) वे ही अपने प्रभु की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वेही मनोरथ पानेहारे हैं। (५) और जो अधर्म्म में पड़े हैं उनको डराना अथवा न डराना एकसा है वह विश्वास नहीं लाने के। (६) ईश्वर ने उनके हृदयों पर छाप करदी और उनके कानों और उनकी आखों पर पट है और उनके निमित्त दुसह दुख हैं॥

रु० २—(७) और कुछ लोग * हैं जो मुँह से तो कहते हैं कि हम ईश्वर पर और अन्त के दिन पर विश्वास लाए हैं यद्दपि उन्हों ने नहीं माना। (८) वे ईश्वर और विश्वासियों को धोका देते हैं और नहीं समझते कि केवल अपने आपको छोड़ और किसी को धोका नहीं देते। (९) उनके मनों में रोग है ईश्वर ने उनका रोग अधिक कर दिया उनके निमित्त पीड़ाकारक दण्ड है क्योंकि वह मिथ्या कहते थे। (१०) और; जब उनसे कहा जाय कि जगत में उपद्रव मत करो तो कहते हैं कि हमतो सुधार करनेहारे हैं। (११) और ये ही उपद्रवी लोग हैं परन्तु नहीं समझते। (१२) जब उनसे कहा जाता है कि जिस भांति और लोग विश्वास लाए हैं तुम भी विश्वास लाओ तो कहते हैं कि क्या हम मूर्खों की भांति विश्वास लाएं—हां वह तो आपही मूर्ख हैं परन्तु नहीं जानते। (१३) और जब विश्वासियों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी विश्वास लाए हैं और जब अपने † दुष्टात्मों के साथ एकान्त में होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथी हैं हम तो उनसे केवल हँसी को छोड़ और कुछ नहीं करते। (१४) ईश्वर उनसे हँसी करता है और उनको उनकी भ्रम के चक्र में डाले रखता है। (१५) ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने शिक्षा के सन्ती भ्रम को ग्रहण किया सो उनके बनिज ‡ ने उन्हें कुछ लाभ न पहुँचाया और न उन्होंने शिक्षा पाई। (१६) उनका दृष्टान्त उस मनुष्य की नाईं है जिसने अग्नि जलाई और जब उस अग्नि से चारों ओर प्रकाश हुआ तब ईश्वर ने उस ज्योति के देखने हारों से उनकी ज्योति छीन ली और उनको अंधेरे में छोड़दिया कि कुछ नहीं देखते। (१७) वह गूंगे, अंधे, बहरे हैं वह नहीं फिरने के। (१८) अथवा उनका दृष्टान्त ऐसा है कि आकाश से बड़ी झड़ी का मेह बरसै जिसमें अंधेरा कड़क और चमक है और बिजली की कड़क से मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियां डालते हैं और ईश्वर अधर्मियों को घेरेहुए है। (१९) बिजली उनके नेत्रों की ज्योति को झपटकर लेजाती है जब प्रकाश जान

* यहूदियों में से! † अर्थात् यहूदी और ख्रीष्टियान जो महम्मद साहब के भेरित पद के बिरुद्ध थे ‡ भविष्यद्वक्ता बनने से पहिले महम्मद साहब आप भी व्यापार करते थे देखो इसी सूरत की २४६ आयत को

पड़ता है तब चलते हैं और जब अंधेरी छाजाती है तब खड़े रहजाते हैं यदि ईश्वर चाहे तो उनके सुनने और दृष्टि को लेजाय निस्सन्देह ईश्वर सर्व वस्तुन पर शक्तिवान है ॥

रु० ३— हे * लोगो अपने प्रभु की जिसने तुमको और उनको जो तुमसे पहिले थे सृजा अराधना करो जिस्तें तुम संयमी होजावो। (२०) जिसने तुम्हारे निमित्त पृथ्वी को बिछौना और आकाश को डेरा और आकाश से मेंह बर्षाया फिर तुम्हारे भोजन के निमित्त फल उपजाए सो तुम ईश्वर के तुल्य किसी को मत थापो तुम तो यह जानते हो। (२१) और यदि तुम उस बात में जो हमने अपने दास पर उतारी है कुछ सन्देह में हो तो तुम बनालाओ इसके समान एक सूरत और ईश्वर के उपरान्त अपने सब सहायकों को भी बुला लेओ यदि तुम सच्चे हो। (२२) यदि तुम न करसके और निश्चय न कर सकोगे तो बचो उस अग्नि से जिसका ईंधन मनुष्य और पाषाण † हैं जो अधर्म्मियों के निमित्त बनी है। (२३) उन लोगों को जो विश्वास लाए हैं और सुकर्म्म किए हैं सुसमाचार सुनादे कि उनके निमित्त बैकुण्ठ हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और जैबार उनको वहां खाने को फल मिलें कहेंगे कि यहतो वही है जो हमको पहिले मिला था क्योंकि यहतो स्वरूप ‡ में वैसेही होंगे और वहां उनके निमित्त पवित्र स्त्रियां हैं और वह सदा वहां रहेंगे। (२४) निस्सन्देह ईश्वर को इस बात में लाज नहीं कि वह एक मच्छड़ § अथवा उससे भी बढ़कर ‖ कोई दृष्टान्त कहे और जिन्हों ने निश्चय किया वह जानते हैं कि सचमुच यह प्रभु की कहीहुई है ₰ और जो अधर्म्म में पड़े हैं वह कहते हैं कि ऐसा दृष्टान्त कहने से ईश्वर का क्या प्रयोजन था बहुतों को उससे भटकाता है और बहुतों को उससे अगुवाई करता है केवल कुकर्मियों के और किसी को नहीं भटकाता। (२५) जो ईश्वर के नियम †† को पक्का करके भंग करते हैं और जिसके जोड़ने की ईश्वर ने आज्ञा दी है उसको तोड़ते ‡‡ हैं और पृथ्वी में उपद्रव करते हैं और यही लोग हानि में पड़ते हैं। (२६) तुम ईश्वर को क्योंकर

---

* यहांसे आयत १७ के अन्तलों अवश्य मक्का में उतरा है क्योंकि जब मदीना में लोगों को बुलाया जाता है तो कहा जाता है कि हे विश्वासियो परन्तु मक्का में कहाजाता है "हे लोगो" इस टुकड़े में जो कुछ वर्णित है यह भी मक्काही में उतरना सिद्ध करता है। † मूर्ति और झूंठदेव ‡ अर्थात् जिस प्रकार के संसार में मिलते थे परन्तु बैकुण्ठ में उनका स्वाद अत्युत्तम होगा। § महम्मद साहब को ठट्ठा किया गया था कि वह चिंउंटी मक्खी और मकड़ी के दृष्टान्त वर्णन करते हैं। †† अर्थात् महम्मद साहब पर विश्वास लाने के पश्चात मुकरना इस विचार के निमित्त इसी सूरत की ६० आयत को देखो। ‡‡ अर्थात् स्त्री को त्याग देना। ‖ अर्थात् छोटी वस्तु। ₰ अर्थात् वाणी।

वही क्षमा करने हारा अति दयालु है। (३६) हमने उन से कहा इस में से तुम सब उतरो सो यदि तुम्हारे तीर मेरी ओर से शिक्षा आवे और जो मेरी शिक्षा के आधीन होगा तो उसको न कुछ भय होगा न शोक। (३७) और जो अधर्मी हुये और मेरे चिन्हों को मिथ्या ठहराया वह अग्नि में पड़ने हारे लोग होयेंगे और उसी में सदा रहेंगे॥

रु० ५—(३८) हे इसरायल सन्तान वह उपकार स्मरण करो जो मैंने तुम पर किए मेरे नियम को पूरा करो मैं भी तुम्हारे नियम को पूरा करूंगा और मेराही भय करो उसपर विश्वास लाओ जो मैंने सत्य सिद्ध करता हुआ उतारा * है जो तुम्हारे तीर है और उसके पहिले मुकरने हारे तुमहीं न बनो और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो और मेराही डर मानो। (३९) सत्य में मिथ्या मिला कर संदेह † मत डालो और जब कि तुम जानते हो सत्य को मत छिपाओ। (४०) प्रार्थना करो और दान दो और झुकने हारों के साथ झुको। (४१) तुम क्या लोगों से भलाई करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो, तुमतो पुस्तक पढ़ते हो क्या तुम नहीं समझते। (४२) धीरज धरने और प्रार्थना करने से सहायता लो निस्सन्देह यह कठिन है परन्तु धर्मी मनुष्यों के लिये नहीं। (४३) वह लोग जानते हैं कि निश्चय अपने प्रभु से मिलेंगे और अवश्य उसी की ओर लौट जायेंगे॥

रु० ६—(४४) हे इसरायल सन्तान मेरे उपकारों को स्मरण करो जो मैंने तुमपर किये मैंने तुम को समस्त पृथ्वी पर बड़ाई दी। (४५) उस दिवस से डरो जब कि कोई प्राणी किसी के अर्थ न आयेगा और न उस के निमित किसी की बिन्ती ग्रहण की जायगी और न कुछ उस के बदले में लिया जायेगा और न उनकी सहायता हो सकेगी। (४६) जब कि हमने तुम को फिराऊन के लोगों से बचाया जो तुम को अति दुख देते थे तुम्हारे पुत्रों को घात कर डालते और तुम्हारी पुत्रियों को जीता रखते थे और इस में तुम्हारे निमित तुम्हारे प्रभु की ओर से बड़ी परिक्षा थी। (४७) और जब हमने तुम्हारे निमित समुद्र को चीर दिया और तुमको बचा लिया और तुम्हारे देखते देखते फिराऊन के लोगों को

---

* अर्थात महम्मद साहब। † महम्मद साहब ने यहूदियों और मसीहियों को धर्म्म पुस्तक में अदल बदल करने के विषय में कभी स्पष्ट रीति से दोष नहीं दिया बरन केवल यह कि यह उनके अनुचित अभिप्राय करते हैं जिस्सें महम्मद साहब का वाक्य खण्डन होजाय सूरए-ऐराफ की १६८ आयत भी इसको सिद्ध करती है और इसी सूरत की २७२ आयत॥

डुबा दिया। (४८) और जब हमने मूसा से चालीस रात्रियों की बाचा बांधी इस के पश्चात तुमने बछड़ा बना लिया और तुम दुष्टता के कर्म्म कर रहे थे। (४९) फिर इस पर भी हमने तुमको क्षमा किया कि कदापि तुम धन्यवादी बनो। (५०) और जब हमने मूसा को पुस्तक और फ़ुरक़ान * दिया जिस्तें तुम मार्ग पर आओ। (५१) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि हे मेरी जाति तुमने बछड़ा बना कर अपने प्राणों पर अनीति की सो अब अपने प्रभु के सन्मुख पश्चाताप करो और अपने प्राणों को मारो † तुम्हारे प्रभु के निकट तुम्हारे निमित्त यह अति उत्तम है फिर तुम को क्षमा किया हां वह बड़ा क्षमा करने हारा दयालु है। (५२) जब तुमने कहा हे मूसा हम तेरी प्रतीत कभी न करेंगे जबलों कि हम ईश्वर को आमने साम्हने न देख लें और तुम्हारे देखते देखते तुम को बिजली ने आ पकड़ा। (५३) और तुम्हारी मृत्यु के पीछे हमने तुमको फिर उठाया कि कदाचित् तुम धन्यवादी बनो। (५४) और हमने तुम पर मेघ से छाया की तुम पर मन्न और बटेरें बर्षाई कि हमारी उत्तम वस्तुओं में से खाओ जो हमने तुमको दीं उन्हों ने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा परन्तु अपनीही हानि की। (५५) और जब हमने कहा इस नगर ‡ में प्रवेश करो फिर वहां इच्छा भर के जहां से चाहो खाओ और फाटक में दण्डवत करते और "हित्तुन" § कहते हुये घुसो तो हम तुम्हारा अपराध क्षमा करदेंगे और धर्म्मियों को हम अधिक देते हैं। (५६) परन्तु दुष्टोंने उस के उपरान्त जो उन्हें बताया गया था दूसरा शब्द बदल ** लिया और हमने उन दुष्टों पर स्वर्ग से दण्ड उतारा इस कारण कि वह बुरे कर्म्म करते थे॥

रु० ७—(५७) और जब मूसा ने अपनी जाति के निमित पानी मांगा और हमने कहा कि अपनी लाठी से पत्थर को मार और उस से बारह सोते फूट निकले और †† प्रत्येक मनुष्य ने अपना घाट जान लिया ईश्वर की दी हुई जीविका में से खाओ और पियो और पृथ्वी में उपद्रव मचाते न फिरो। (५८¶) और जब तुमने कहा कि हे मूसा हम एकही भोजन पर कभी न रहेंगे सो आपने प्रभु से हमारे निमित मांग कि हमारे निमित और वस्तुओं को उपजावे जिन्हें पृथ्वी उपजाती है अर्थात् उसके साग उसकी ककड़ी उसका लहसुन उसकी मसूर उसके कांदा¶† में

---

* अविया ४९ अर्थात् विभेद करनेहारी। † निर्गमण ३२ : ५४, ५६—२७॥ ‡ यरीह् किसी के विचार में यरूशलम देखो आयत ५८। § हम क्षमा मांगते हैं। ** ऐराफ़ १६२। †† जानपड़ता है कि निर्गमण १९ : २७ से लिया है॥ ¶ यह आयत और शोरा की ५९ आयत प्रगट करती है कि महम्मद साहब व्यतीत वृत्तान्तों से कैसे अनजान थे। ¶† अर्थात प्याज़।

से उस ने कहा क्या तुम उत्तम वस्तुओं की सन्ती घटिया वस्तुयें बदलने चाहते हो मिस्र को लौट चलो जो कुछ तुम मांगते हो वह तुम्हे मिले और उन पर उपहास और कङ्गाली ईश्वर के कोप के कारण डाली गई और यह इस कारण हुआ कि उन्हों ने ईश्वर के चिन्हों को नकारा और भविष्यद्वक्ताओं को अकारण घात किया और इस कारण कि उन्हों ने हठ की और अनीति करते थे ॥

रु० ८—(५९) कोई हो चाहे विश्वासी S अथवा यहूदी अथवा नसरानी † अथवा सायबी ‡ जो ईश्वर और लेखे के दिन पर विश्वास राखे और धर्म्म के कार्य्य करे उस का प्रतिफल उस के प्रभु के यहां है और उसे न डर है न शोक। (६०) और जब हमने तुम से बाचा बाधी थी और तुम पर पर्व्वत ऊंचा § किया और कहा कि जो कुछ हमने तुमको दिया दृढ़ता से थामे रहो और जो कुछ इस में है उस को स्मरण राखो जिस तें तुम डरते रहो। (६१) फिर तुम इस से भटक गये और यदि तुम पर ईश्वर की अनुग्रह और दया न होती तो तुम नाश होजाते और तुम तो उन लोगों के वृतान्त जानते हो जिन्हों ने सब्त के दिन अनीति की और हमने उन्हें कहा कि तुम तुच्छ बन्दर †† बन जाओ। (६२) इसी भांति उन लोगो के निमित जो उस समय में थे और उन के निमित जो उनके पीछे आयेंगे इस वृतान्त के चितौनी के तुल्य बना दिया और संयमियों के निमित शिक्षा ठहराई। (६३) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुम को ईश्वर आज्ञा देता है कि तुम गाय बलि करो वह ‡‡ बोले क्या तू हम से ठठे ली करता है उस ने कहा कि ईश्वर की शरण कि मैं ऐसा कर के अंजानो में बनू बोले कि हमारे निमित तू अपने प्रभु से पूछ कि यह कैसी हो वह कहता है कि वह एक गायहो न बूढ़ी न बछिया परन्तु तरुण सो करो जो आज्ञा तुम को दी गई। (६४) वह बोले हमारे निमित तू अपने प्रभु से पूछ बतावे कि उस का रङ्ग कैसा हो वह कहता है कि एक गहरे पीले रङ्ग की गाय हो जिस का रङ्ग देखने हारों को अच्छा लगे। (६५) बोले कि अपने प्रभु से पूछ कि वह कैसी हो हमें गायों में सन्देह पड़गया यदि ईश्वर चाहे तो हम अगुवाई पायेंगे। (६६) वह कहता है कि एक गाय हो कि न हल में जुती हो और न खेती को पानी देती हो और हर भांति से ठीक हो न उस में कोई धब्बा †‡ हो—वह बोले अब तूने ठीक बताया उस को उन्हों ने बलि तो किया परन्तु उन का जी न चाहता था ॥

S अर्थात मुसलमान। † अर्थात ख्रिष्टियान। ‡ तारागण के माननेहारे। § ऐराफ़ १७० †† ऐराफ १६४ ‡‡ गणना १९ पर्ब्ब. व्यवस्था विवरण २२ : १—९। †‡ अर्थात निर्दोष हो।

रु० ६ - (६७) जब तुमने एक प्राणी को घात किया और परस्पर इसमें भिन्नता की और ईश्वर को प्रगट करना था जिसको तुम छिपाते थे (६८) और हमने कहा इस में इसका टुकड़ा लगादो इसी रीति ईश्वर निर्जीव को सजीव करता है और तुम्हें अपने चिन्ह दिखाता है जिस्तें तुम समझलो। (६९) तत्पश्चात भी तुम्हारे हृदय कठोर होगए हां पत्थर के समान कठोर अथवा कठोरता में उससे भी बढ़कर क्यों कि पत्थरों में कोई कोई ऐसे भी हैं जिनसे धाराएं निकलती हैं और कोई ऐसे भी हैं जो फट कर पानी निकालते हैं और कोई २ ईश्वर के भय से गिरपड़ते हैं ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों से अचेत नहीं। (७०) क्या तुम आशा रखते हो कि वह तुम्हारी बातों को मान लेंगे यद्यपि इनमें एक ऐसा जत्था* था जो ईश्वर का वचन सुनता था फिर उसको समझने के पीछे जानबूझ कर बदल डालता था। (७१) जब वह विश्वासियों † से मिलते हैं कहते हैं कि हमभी विश्वास लेआए और जब एकान्त ‡ में परस्पर मिलते हैं तो कहते हैं कि क्या तुम उनसे वह कहदेते हो जिसका समाचार § ईश्वर ने हमको दिया जिस्तें तुम्हारे संग तुम्हारे प्रभु के सन्मुख तुमसे झगड़ा करें क्या तुमको इतनी बुद्धि नहीं। (७२) परन्तु क्या वह नहीं जानते कि ईश्वर तो जानता है जो कुछ वह छिपाते अथवा प्रगट करते हैं। (७३) कोई कोई उनमें से अनपढ़ हैं जो केवल बुरे विचारों के पुस्तक †† को नहीं जानते वह केवल अनुमान के पीछे चलने वाले हैं सो धिक्कार है उन लोगों पर जो पुस्तक को अपने हाथों से लिखते हैं और फिर कहते हैं कि यह ईश्वर की ओर से है जिस्तें वह इस से थोड़ासा मूल्य प्राप्त करें उन के हाथों के लिखे पर शोक और उनकी कमाई पर भी शोक। (७४) वह कहते हैं कि नरक की अग्नि हम को न छुए गी परन्तु केवल गिन्ती के थोड़े ‡‡ दिन क्या तुमने ईश्वर से वाचा लेली कि वह अपनी उस वाचा के विरुद्ध न करेगा ईश्वर के विषय में ऐसी बात कहते हो जिसका तुम को ज्ञान नहीं। (७५) जिस की कमाई पाप है और जिस के पापों ने उसे घेर लिया है वही नरक गामी हैं और सदा उस में रहेंगे। (७६) जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किये वही लोग वैकुण्ठगामी हैं सदा उस में रहेंगे॥

---

* अर्थात यहूदी॥ † अर्थात मुसलमान। ‡ इस आयत से जान पड़ता है कि यहूदियों का व्यवहार महम्मद साहब के साथ कैसा था। § अर्थात व्यवस्था में। †† अर्थात व्यवस्था। ‡‡ अर्थात जितने दिन बछड़ा पूजा था।

रु० १०—(७७) और जब हमने इसराएल सन्तान से वाचा बांधी कि तुम ईश्वर को छोड़ किसी की सेवा मत कीजियो माता पिता और समीपी नातेदारों से और अनाथों और कङ्गालों से भलाई कीजियो और लोगों से अच्छी वार्त्ता कीजियो नियमानुसार प्रार्थना कीजियो दान देते रहियो परन्तु कुछ लोगों को छोड़ तुममें से सब फिर गये और तुमतो फिर जाने हारेही हो। (७८) फिर जब हमने तुमसे वाचा बांधी कि तुम * परस्पर लोहू मत बहाइयो और अपने लोगों को अपनी बस्ती से न निकालियो और तुमने इसको ग्रहण किया तुम आपही साक्षी हो। (७९) सो तुमही वह हो जो † अपने लोगों को घात करते हैं और अपने एक जत्था को उनके घरोंसे निकाल देते हैं और उनपर कठोरता और अनीति से एक दूसरे के सहायक होते हैं फिर यदि वही बँधुवा होकर तुम्हारे तीर आते हैं तो बदला देके छुड़ावते हो यद्यपि उनका निकाल देनाही वर्जित था क्या तुम पुस्तक के एक भाग पर विश्वास रखते हो और एकको नकारते हो सो जो मनुष्य तुममें ऐसा करे उसका दण्ड यही है कि संसार में लज्जित हो और पुनरुत्थान के दिन अति क्लेश में पड़े ईश्वर तुम्हारे कर्म्मों से अचेत नहीं। (८०) यही लोग हैं जिन्हों ने अन्त के जीवन की सन्ती संसार के जीवन को मोल लिया सो इनके क्लेशमें न घटी की जायगी न उनको कहीं से सहायता मिलेगी॥

रु० ११—(८१) और हमने मूसा को पुस्तक दी और उसके पीछे लगातार प्रेरित भेजे और हमने मरियम के पुत्र ईसा को प्रत्यक्ष चिह्न दिए और पवित्र ‡ आत्मा से उसकी सहायता की—क्या जब तुम्हारे निकट कोई प्रेरित ऐसी आज्ञा लाया जिसको तुम्हारा जी नहीं चाहता था तुमने सामना किया सो एक जत्थाको मिथ्या ठहराया और एक को मार डालते रहे। (८२) कहते हैं कि हमारे हृदय ढँके हुए हैं ईश्वर ने उनके अधर्म्म के कारण उन्हें श्राप दिया इस कारण उनमें से थोड़े विश्वास लाते हैं। (८३) और जब उनके तीर एक पुस्तक ईश्वर की ओरसे आई जो उसको सच्चा ठहराती है जो उनके तीर है और इससे पहिले अधर्म्मियों पर जय चाहते थे परन्तु जब उनके निकट वह ¶ वस्तु आई जिसको

---

* अपने कुटुम्बी नातेदारों में। † अरबी और यहूदी गोष्ठियों के परस्पर बैरभाव की ओर सूचना है।

‡ जान पड़ता है कि महम्मद साहब ने जानबूझ कर पवित्र आत्मा की ईश्वरताई को अनअंगीकार किया और उसको जिबराईल दूत बतलाया यदि सूरए इसराईल आयत ८७ को देखें तो वहां आत्मा को प्रभु के नाम से बतलाया है इस आयत को राजाओं की पहिली पुस्तक २२ : २१ से मिलाओ। § अर्थात् खतना नहीं हुआ।

¶ जान पड़ता है कि वस्तु का अभिप्राय ख्रीष्ट है क्योंकि यहूदी उसकी बाट जोहते थे. हागी २ : ८ में आनेहारे ख्रीष्ट का चर्चा है यद्यपि महम्मदी उसको महम्मद साहब की ओर लगाते हैं. यशैयाह ४४ : ९।

उन्हें ज्ञान था तो उसके नकारने हारे होगये सो नकारने हारों पर ईश्वर का श्राप है। (८४) तुच्छ वस्तु की सन्ती उन्हों ने अपने प्राणों को बेचदिया कि वह उस * वस्तु को जो ईश्वर ने उतारी है नकारते हैं इस हठसे कि ईश्वर अपने अनुग्रह से अपने दासों में से जिसपर चाहे उतारे तो उन्हों ने कोप पर कोप कमाया अधर्म्मियों के निमित्त उपहास का दण्ड है। (८५) और जब इनसे कहा जाता है कि उस पर विश्वास लाओ जो ईश्वर ने उतारा है तो कहते हैं कि हमतो उस पर विश्वास लाते हैं जो हमपर उतरा और वह उसको नहीं मानते जो पीछे आया यद्यपि वह सत्य है और उसको सत्य ठहराता है जो उनके तीर है तू कह अगले भविष्यद्वक्ताओं को क्यों † घात किया यदि तुम विश्वासी थे। (८६) मूसा तुम्हारे तीर प्रत्यक्ष चिन्ह लेकर आया फिर उसके जाने के पीछे तुमने बछड़ा बनालिया और इस भांति तुमने दुष्टता की। (८७) और जब हमने तुम पर पर्व्वत को ऊंचाकिया ‡ और तुमसे वाचाली और कहा कि जो हमने तुमको दिया है उसको दृढ़ थामे रहो और सुनो वह बोले हमने सुन लिया वरन विरुद्धता की और अपने अधर्म्म के कारण अपने मनों में बछड़े को पिए § हुए थे कह कि वह बुरी बात है जिसकी तुम्हें तुम्हारा विश्वास आज्ञा करता है यदि तुम सत्य विश्वासी हो। (८८) तू कह यदि अंत का घर ईश्वर के यहां औरों को छोड़ केवल तुम्हारेही निमित्त है तो मृत्यु की अभिलाषा करो यदि सत्यबादी हो। (८९) और वह मृत्यु की अभिलाषा कभी न करेंगे और उन करतूतों के कारण जो उनके हाथों से हुई ईश्वर दुष्टों को जानता $ है। (९०) और तू उन्हें सबसे अधिक जीवन का लोभी पायगा साझी ठहराने हारों मेंसे भी प्रत्येक चाहता है कि आह शहस्र वर्ष आयु पाता परन्तु अधिक जीना भी उनको दुख से नहीं बचा सकता ईश्वर उनके कर्तव्यों को देखता है॥

रु० १२—(९१) तू कह कौन मनुष्य ¶ जिबराईल का शत्रु है क्योंकि उसी ने इसे तेरे हृदय पर ईश्वर की आज्ञा से उतारा है जो पहिले को सिद्ध ठहराता है विश्वासियों के निमित शिक्षा और उपदेश है। (९२) जो ईश्वर का और उसके दूतों का और प्रेरितों का जिबराईल और मीकाईल का शत्रु है तो ऐसे नकारने

---

* यहूदी अरब मूर्तिपूजकों में भविष्यद्वक्ता का होना असम्भव समझते थे। † मती २१:३७। ‡ सूरए ऐराफ १७०। § निर्गमण ३२ : २०। $ पहिलातिपोथी ९ : २४। ¶ यहूदी महम्मद साहब के इस कथन को कि कुरान जिबराईल के द्वारा उतरा खंडन करते थे क्योंकि जिबराईल को वह अपना बैरी समझते थे और कहते थे यदि कुरान उतरता तो मीकाईल के द्वारा उतरता जिसका मान उनकी दृष्टियों में जिबराईल से बहुत था देखो दानिएल १२ : १ को॥

हारों का ईश्वर भी शत्रु है। (९३) हमने तेरी ओर खुली हुई आयतें उतारीं इसका मेटने हारा कोई नहीं परन्तु वह जो कुकर्म्मी हैं। (९४) और क्या यह नहीं कि जब कभी उन्हों ने कोई नियम बांधा उनमें से एक जत्था ने उसको एक ओर फेंक दिया वरन उनमें से बहुतेरे इसबात का विश्वास भी नहीं करते। (९५) और जब उनके तीर एक प्रेरित ईश्वर के यहां से आया जो उस पुस्तक को सिद्ध करता है जो उनके तीर हैं तो पुस्तक वालों की एक जत्था ने ईश्वरकी पुस्तक को अपनी पीठों के पीछे ऐसा फेंक दिया कि मानों वह जानतेही नहीं। (९६) वह उस वस्तु के आधीन होगए जिसको दुष्टात्माएं सुलैमान के राज्य में पढ़तीं थीं और सुलैमान ने अधर्म्म नहीं किया परन्तु दुष्टात्माओं ने अधर्म्म किया कि लोगों को टोना और उस बात को जो बाबुल नगर में दो दूतों हारूत † और मारूत पर उतरी थी सिखाया करते थे और वह किसी मनुष्य को नहीं सिखाते थे जबलों कि पहिले यह न कहदेते कि हमतो केवल एक परीक्षा हैं–सो तू अधर्मी मत बन सो लोग उनसे वह बात सीख लेते जिससे पति और पत्नी में फूट डाल दें यद्यपि ईश्वर की आज्ञा के बिना इससे किसी को कुछ हानि पहुँचा नहीं सकते थे वह उस बात को सीखते थे जो उन्हे हानि पहुंचाए और लाभ न दे और यह जानते भी थे कि जो इसका ग्राहक होगा उसका अन्त में कुछ भाग नहीं तुच्छ वस्तु थी जिसपर उन्हों ने अपने प्राणों को बेच दिया यदि उनको इसकी समझ होती। (९७) यदि विश्वास लाते और संयमी बनते तो ईश्वर के निकट उनके निमित्त उत्तम प्रतिफल होता यदि वह इसको जानते।

रु० १३ - (९८) हे विश्वासियो "रआना ‡" मत पुकारा करो वरन "उंज़रना" कहो और ऐसाही सुनो अधर्म्मियों पर कठिन दण्ड है। (९९) पुस्तक वालों में से जो नकारते हैं न वह और न साझी ठहराने हारों में से यह चाहते हैं कि तुमपर तुम्हारे प्रभु से कोई भलाई उतरे पर ईश्वर अपनी दया से जिसे चाहता है ठहराता है ईश्वर बड़ा अनुग्रह करता है। (१००) हम किसी आयत को खण्डन § करें अथवा तेरे मन से भुला दें तो हम उससे उत्तम अथवा उसी के समान फिर उतारते हैं क्या तू नहीं जानता कि ईश्वर हरबात पर शक्ति

---

† कहते हैं कि यह दो दूत मनुष्य की पुत्रियों के संग प्रीति में फंसे जिसके कारण बाबुल के कूप में बन्द किए गए उत्पत्ति ६ : २ ॥ ‡ रआना इबरीभाषा में हमारा गड़रिया अथवा हम सब में अशुद्ध अर्थात महम्मद साहब को एस न कहा करो। § नहल १०३, निसा ८४, महम्मदी मानते हैं कि कुरान में २२५ आयतें ऐसी हैं जिनका खण्डन उपस्थित है ॥

मान है। (१०१) क्या तुझे ज्ञान नहीं कि स्वर्ग और पृथ्वी का राज्य ईश्वरही का है और तुम्हारा ईश्वर को छोड़ न कोई सम्हारनेहारा है न सहायक। (१०२) क्या तुमभी चाहते हो कि अपने प्रेरित से वैसेही प्रश्न करो जैसा इससे पहिले मूसा से किएगए जो कोई धर्म्म को अधर्म्म से बदलेगा वह सीधे मार्ग से भटक गया। (१०३) बहुतेरे पुस्तकवालों में इसपरभी कि सत्य उनपर प्रगट होचुका ऐसे हैं जो चाहते हैं कि तुमको तुम्हारे विश्वास लाने के पश्चात अपने डाह के कारण फिर अधर्म्म की ओर फेरदें सो तुम क्षमा करो और जाने दो उस समयलों कि ईश्वर आज्ञा करे ईश्वर हर बात पर शक्तिमान है। (१०४) उचित रीति से प्रार्थना करो दान देओ और जो कुछ भलाई तुम अपने निमित्त आगे भेजोगे तुम उसे ईश्वर के यहां पाओगे ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को देख रहा है। (१०५) उनका वचन है कि बैकुण्ठ में केवल यहूदी अथवा नसारा के और कोई प्रवेश न पायगा यह केवल उनके मनमानी बात है कहो कि इसपर प्रमाण लाओ यदि तुम सत्य-वादी हो। (१०६) परन्तु जिसने ईश्वर के सन्मुख अपना मत्था टेका और भलाई पर ठहरा रहा तो उसका फल उसके प्रभु के तीर प्रमाणिक होचुका उन्हें न कोई भय है न शोक॥

रु० १४—(१०७) यहूदियों का वचन है कि नसारा कुछ मार्ग पर नहीं और नसारा का वचन है यहूदी कुछ मार्ग पर नहीं यदपि दोनों पुस्तक पढ़ते हैं ठीक इसी भांति की बातें अज्ञानों* ने कहीं सोई ईश्वरजी उठने के दिन न्याय करेगा जिस बात के निमित्त वह परस्पर झगड़ रहे हैं। (१०८) उस मनुष्य से बढ़कर दुष्ट कौन है जिसने ईश्वर के मन्दिरों † में ईश्वर का नाम लेने से रोक दिया और जो उसके नाश करने के निमित्त दौड़ा यह लोग इस योग्य नहीं कि इसमें घंसें बरन डरते हुए उनके निमित्त इस संसार में उपहास और अन्त में कठिन दण्ड है। (१०९) पूरब और पच्छिम ईश्वर ही का है सो जिधर को मुंह ‡ करो उधरही को ईश्वर का मुंह है निस्सन्देह ईश्वर बड़ा जाननेहारा है। (११०) कहते हैं कि ईश्वर ने बेटा ठहरा लिया है वह तो पवित्र है और उसी के अधिकार में है जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है सब उसके आधीन हैं। (१११) वह स्वर्ग और पृथ्वी का रचनेहारा है जब वह चाहता है कि कुछ करे तो यही कहता है कि हो और होजाता है। (११२) और अज्ञान § लोग कहते हैं कि क्यों नहीं

---

* अर्थात् अरब मूर्तिपूजक। † हुदबा के युद्ध के समय अर्थात् सन हिजरी ६ में मक्का के लोगों ने महम्मद साहब को काबा में प्रवेश करने से रोका था जान पड़ता है कि यह आयत उसी समय उतरी॥

‡ यह आयत इसी सूरत की ११९ वीं आयत से खण्डन होगई। § अर्थात् अरबवाले॥

ईश्वर हमसे बात करता अथवा क्यों नहीं हमारे तीर कोई चिन्ह आता ऐसाही उन्हों ने कहा था जो उनसे पहिले थे इनके हृदय एक समान हैं हमने विश्वास लाने हारे लोगों के निमित्त चिन्ह वर्णन करदिए हैं। (११३) निस्सन्देह हमने तुझे सत्य देके सुसमाचार और डर सुनाने को भेजा है नर्कगामियों के विषय में तुझसे प्रश्न न होगा। (११४) यहूदी और नसारा तुझसे कभी प्रसन्न न होंगे उस समयलों कि तू उनके मतके आधीन न हो जाय तू कह निस्सन्देह शिक्षा तो वही है जो ईश्वर की शिक्षा है यदि तू ठीक शिक्षा पाने के पीछे उनकी इच्छाओं के पीछे चलेगा तो ईश्वर तेरा साथी, और सहायक न रहेगा। (११५) जिन लोगों को हमने पुस्तक दी है वह उसे पढ़ते हैं जैसा कि पढ़ने का नियम है यही लोग इस पर विश्वास रखते हैं और जो कोई उसको नकारे वही नाश होंगे॥

रु० १५.—(११६) हे इसराएल संन्तान मेरे उपकारों को स्मरण करो जो मैंने तुम पर किए मैंने समस्त पृथ्वी पर तुमको बड़ाई दी। (११७) और उस दिन से डरो जिस दिन कोई प्राणी किसी के कुछ अर्थ न आयगा न उनसे कुछ बदला ग्रहण किया जायगा न उनको किसी की बिन्ती लाभ देगी न उनको सहायता पहुंच सकेगी। (११८) जब इबराहीम की उसके प्रभु ने कई बातों में परिक्षा की जिसमें वह पूरा उतरा उससे कहा कि मैं तुझे समस्त मनुष्यों का इमाम * बनाऊंगा उसने पूछा और मेरे सन्तान में भी कहा मेरा नियम दुष्टों तक नहीं पहुंचता। (११९) और जब कि हमने उस घर † को लोगों के इकट्ठे होने के निमित शरण स्थान बनाया और कहा कि स्थान इबराहिम को प्रार्थना का स्थान ठहराओ और इबराहीम और इसमाइल से यह कहते हुए नियम बांधा कि तुम दोनो मेरे घर को परिक्रमा करने हारों और एतकाफ़ ‡ करने हारों और झुकने हारों और दण्डवत करनेहारों के निमित पवित्र § रखो। (१२०) और जब इबराहीम ने कहा कि हे प्रभु इसको शान्ति नगर करदे यहां के बासियों को फलों का अहार दे अर्थात उनको जो ईश्वर और अंत के दिन पर विश्वास लावें हमने कहा जो नकारते हैं उन्हें भी कुछ समय लों हर्ष दिया जायगा और तत्पश्चात नरक के दण्ड की ओर खींच लेजाऊंगा जो बहुत बुरा ठौर है। (१२१) और जब इबराहीम और इसमाइल इस घर की नींव ¶ उठारहे थे बोले कि प्रभु हमारी ओर से इसको ग्रहण कर

---

* अर्थात् अगुवा। † अर्थात् काबा को। ‡ अर्थात् एकान्त सेवन॥ § अर्थात मूर्तियों से।
¶ अर्थात् काबा की नींव रखना इमरान ९० ।

तूही सुनता और जानता है। (१२२) हे हमारे प्रभु हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संन्तान मेंसे भी एक जत्था को अपना आज्ञाकारी बनाइयो–और हमें हज की विधि बतादे और हमको क्षमाकर निस्सन्देह तूही क्षमा करने हारा और दयालु है। (१२३) हे * हमारे प्रभु इनमें एक प्रेरित स्थापित कर जो तेरी आयतें इन पर पढ़े जिनको पुस्तक और बुद्धि सिखावे और इनको स्वच्छ बनाए निस्सन्देह तू बड़ा बुद्धिमान है॥

रू० १६—(१२४) इबराहीम के मत † से कौन फिर सकता है परन्तु वही जो मूर्खता के बन्धन में है निस्सन्देह हमने उसको पृथ्वी में चुन लिया और अंत के दिन में वह भले मनुष्यों में होगा। (१२५) जब उसके प्रभु ने उससे कहा कि अपने सिर को झुका तो उसने कहा कि मैंने सृष्टियों के प्रभु के सन्मुख सिर झुकाया। (१२६) इबराहीम ने अपने पुत्रों को यही आज्ञा दी और याकूब ने भी कि हे मेरे बेटो ईश्वर ने तुम्हारे निमित यही मत चुन लिया सो तुम्हारी मृत्यु इसलाम मेंही होनी चाहिए। (१२७) हे इसराएल संन्तान क्या तुम उपस्थित थे जब याकूब ने मृत्यु शयन पर अपने पुत्रों ‡ से कहा कि मेरे पीछे तुम किसकी अराधना करोगे उन्होंने कहा कि हम तेरे ईश्वर और तेरे पितरों इबराहीम और इसमाईल और इज़हाक के ईश्वर की उपासना करेंगे जो अकेला ईश्वर है और हम उसके सन्मुख दीनताई से शीस नवाते हैं। (१२८) यह एक जत्था थी जो बीत गई उनकी कमाई उनके साथ है और तुम्हारी कमाई तुम्हारे साथ है तुमसे उनके कर्म्मों के विषय में प्रश्न न होगा। (१२९) वह कहते हैं कि यहूदी अथवा नसारा होजाओ तो मार्ग पाजाओगे तू कह नहीं परन्तु मैं इबराहीम § हनीफ के मत का आधीन हूँ क्योंकि वह साझी ठहराने हारों में नहीं था। (१३०) तुम कहो हम ईश्वर पर विश्वास लाए हैं और उस पर जो इबराहीम और इसमाईल और इज़हाक और याकूब और जो उनके संन्तान पर उतरा और जो मूसा और ईसा को दिया गया और जो कुछ सब भविष्यद्वक्ताओं को उनके प्रभु की ओरसे मिला हम उनमें से किसी में भी विभेद नहीं करते और हम उसीके आधीन हैं। (१३१) फिर यदि वह भी विश्वास लाएँ जिस भांति तुम विश्वास लाएहो तो वह अगुवाई पागए और यदि वह फिर जावें तो केवल हठ पर हैं सो अब ईश्वर तेरी

---

* अर्थात् मक्कावालों में से प्रेरित होने की प्रार्थना व्यवस्था विवरण १८ : १५। † इबराहीम का मत मुसल्मान था। ‡ उत्पत्ति ४९ : २ व्यवस्था विवरण ६ : ४। § नहल १२१ इनाम १४७

ओर से उनके निमित्त बस है वह सुनता और जानता है। (१३२) ईश्वर के रँग * में रँग जाओ ईश्वर के रँग से किसका रँग उत्तम है हम उसी की स्तुति करते हैं। (१३३) क्या तुम हमसे ईश्वर के विषय में झगड़ते हो यद्यपि वह हमारा भी प्रभु है और तुम्हारा भी हमारे निमित्त हमारे कार्य्य और तुम्हारे निमित्त तुम्हारे और हम निष्कपट हृदय से उसके हैं। (१३४) क्या तुम कहते हो कि इबराहीम इस्माईल और इज़हाक और याकूब यहूदी अथवा नसारा थे तू कह क्या तुम अधिक जानकार हो अथवा ईश्वर उससे बढ़कर और कौन दुष्ट है जो उस साची को जो ईश्वर की ओर से उसके तीर है गुप्त करे ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों से अचेत नहीं। (१३५) वह एक जत्था था जो बीत गया उनकी कमाई उनके साथ और तुम्हारी कमाई तुम्हारे साथ तुमसे उनके कार्य्यों के विषय में प्रश्न न होगा॥

रु० १७—(१३६) निकट है कि मूर्ख कहेंगे किस वस्तुने उनको उनके क़िबले † से जिस पर वह थे फेर दिया पूर्व और पश्चिम ईश्वर ही के निमित्त हैं वह जिसे चाहता है सीधे मार्ग की अगुवाई करता है। (१३७) और इसी कारण तुमको मध्य ‡ जाति बनाया जिसतें तुम लोगों पर साची हो और प्रेरित तुम पर साची हो। (१३८) हमने उस क़िबले को नहीं ठहराया जिसपर तू था केवल इस कारण कि हम उसको परखलें कि कौन प्रेरित के आधीन रहता है और कौन है जो अपनी एड़ियों पर फिर जाता है निस्सन्देह यह बात उन लोगों के उपरान्त कठिन है जिनकी ईश्वर ने अगुवाई की औरों पर यह अनहोना है कि ईश्वर तुम्हारे विश्वास क्षीण § करे निस्सन्देह ईश्वर लोगों के साथ प्रेम करने हारा और दयालु है। (१३९) हमने तेरा स्वर्ग की ओर मुँह करना देख लिया फिर हम तुझको एक क़िबले की ओर जो तुझको भाएगा फेरेंगे अपना मुँह मसजिदे हराम की ओर ¶ फेर और जहां कहीं तुम होओ उधर मुँह कर लिया करो निस्सन्देह जिन लोगों को पुस्तक दी गई है जानेंगे कि यह उनके प्रभुकी ओरसे सत्य है और ईश्वर उनके कार्य्यों से बेसुध नहीं। (१४०) और यदि तू पुस्तक वालों के निकट सब

---

* ईश्वर का जल संस्कार। † आरम्भ में महम्मद साहब ने किसी विशेष दिशाकी ओर मुँह करके आराधना नहीं की परन्तु जब कि मदीना को चले गए तब से आज्ञा दी कि यरूशलम की ओर मुँह किया करें परन्तु सन् हिजरी २ में अरब मूर्ति पूजकों की नाईं काबा की ओर मुँह करके प्रार्थना करने की आज्ञा दी ‡ दृढ़ बातों के मानने हारे। § अर्थात् यरूशलम की ओर प्रार्थना करने के कारण। ¶ किबले का बदलना यरूशलम से मक्का की ओर जान पड़ता है कि इस सूरत का यह भाग उस समय उतरा जब महम्मद साहब और यहूदियों में बैरभाव होचुका था अर्थात् सन् २ हिजरी के आरम्भ में उतरा।

चिह्न लेभावे तौ भी वह तेरे क़िबले के अनुगामी न होंगे और न तू ही उनके क़िबले का अनुगामी होगा और यदि तू उनकी इच्छाओं का पीछा उसके पश्चात् करे कि तुझे ज्ञान पहुंच चुका है तो निस्सन्देह तू भी दुष्टों में हो जायगा। (१४१) जिन लोगों को हमने पुस्तक दी है वह उसको * इस भांति चीन्हते हैं जिस भांति अपने पुत्रों को निस्सन्देह इनमें एक जत्था है जो सत्य को छिपाता है और यह वह जानता है। (१४२) यह सत्य तेरे प्रभु की ओर से है सो तू सन्देह करने हारों में मत हो ॥

रु० १८—(१४३) और प्रत्येक के निमित्त एक दिशा है कि वह उस ओर को झुकता † है सो तुम भले कार्य्यों की ओर दौड़ो जहां कहीं तुम होओगे तुम सबको ईश्वर इकट्ठा करेगा निस्सन्देह ईश्वर सब कुछ कर सकता है। (१४४) जहां कहीं तुम जाओ अपने मुँह को मसजिदे हराम की ओर फेरो निस्सन्देह यही तेरे प्रभु की ओर से सत्य है ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों से अचेत नहीं है। (१४५) जहां कहीं तुम जाओ अपने मुंह मसजिदे हराम की ओर फेरो और जहां कहीं तुम होओ अपने मुंह को उधर ही फेरो जिसतें लोग तुमको किसी भांति दोष न देसकें उन लोगों को छोड़ जो इन में दुष्ट हैं सो उनसे मत डरो मुझसे डरा जिसतें मैं अपना वरदान तुम पर पूरा करूं जिसतें तुम अगुआई पाओ। (१४६) जैसा हमने तुमही में से एक प्रेरित भेजा जो तुम पर हमारी आयतें पढ़ता है और तुमको पवित्र करता है तुमको पुस्तक और बुद्धि सिखाता है और जो बातें तुम नहीं जानते थे वह बताता है। (१४७) सो मेरी ही चर्चा करो मैं तुम्हें स्मरण करूंगा मेरा धन्यवाद करो कृतघ्न मत बनो ॥

रु० १९—(१४८‡) हे लोगो तुम जो विश्वास लाए हो धीरज और प्रार्थना करने से सहायता मांगो निस्सन्देह ईश्वर धीरज धरने हारों के साथ है। (१४९) जो लोग ईश्वर के मार्ग में मारे जांय उनको ¶ मृतक न कहो वह तो जीवते हैं परन्तु तुमको ज्ञान नहीं। (१५०) और हम तुम्हारी परिक्षा एक बात से करेंगे अर्थात् डर और भूख से धनों और तनों और फलों की हानि से धीरज धरने हारों को सुसमाचार सुनादे। (१५१§) कि जब उनको दुःख पहुँचता है तो वह लोग कहते हैं कि निस्सन्देह हम ईश्वर के निमित्त हैं और निस्सन्देह हम

---

* मानो यहूदी महम्मद साहब को जानते हैं कि यह भविष्यद्वक्ता हैं। † अर्थात् प्रार्थना में। ‡ आयत १४८ से १५२ लों बदर और उहद के संग्राम की ओर सूचना करती है। ¶ अर्थात् जो अधर्मियों से लड़ने में मारे गये। § जब कभीं महम्मदी कष्ट में होते हैं तो इस आयत को लगातार पढ़ते हैं

उसकी ओर जाने हारे हैं। (१५२) यही लोग हैं कि उन पर उनके प्रभु की ओर से आशीषें और दया है और यही लोग अगुआई पाए हुए हैं। (१५३) निस्सन्देह * सफ़ा और मरवा ईश्वर के चिह्नों में से हैं फिर जिसने आश्रम काबा की यात्रा की उनपर कुछ पाप नहीं कि उन दोनों का परिक्रमा करें जो कोई अपनी इच्छा से भलाई करे तो ईश्वर उपकार स्मृता और सब कुछ जानता है। (१५४) निस्सन्देह जो लोग उस वस्तु को जो हमने चिह्नों और अगुवाई के साथ उतारी है छिपाते हैं इसके पश्चात् कि हमने उन लोगों के निमित्त पुस्तक † में कह दिया है वही लोग हैं कि ईश्वर उनको श्राप देता है और श्राप करने हारे श्राप करते हैं। (१५५) केवल उन लोगों के जिन्हों ने पश्चाताप किया और अपनी दशाको सुधारा और प्रगट कर दिया तो उन लोगों को क्षमा कर देता हूँ मैं ही क्षमा करने हारा और दयालु हूँ। (१५६) निस्सन्देह जो लोग मुकर गए हैं और मुकरनेही की दशा में मृत्यु वश पड़े उन लोगों पर ईश्वर का,—दूतों का-और सब मनुष्यों का श्राप है। (१५७) और वह सदा उसी में रहेंगे न उन पर से क्लेश न्यून होगा और न उन पर दृष्टि होगी। (१५८) ‡ तुम्हारा ईश्वर अकेला ईश्वर है केवल ईश्वर के कोई क्षमा करने हारा और दया करने हारा नहीं॥

रु० २०—(१५९) निस्सन्देह स्वर्ग और पृथ्वी के रचने और रात और दिन के भेद करने में और नौकाओं में जो मनुष्यों को लाभ देने हारी वस्तुओं के निमित्त समुद्रों में चलती हैं और उनमें जिसको ईश्वर ने स्वर्ग से उतारा है अर्थात् वर्षा जिससे उसने पृथ्वी को मरने के पीछे फिर जीवता कर दिया और उनमें फल दिए— भांति भांति के चलने हारे पशु बयारों के चलाने में और मेघों को स्वर्ग और पृथ्वी के बीच वश में रखने में निस्सन्देह सब चिह्न हैं उन सबके निमित्त जो बुद्धिवान हैं। (१६०) फिर लोगों में कोई २ ऐसे है जिन्हों ने ईश्वर को छोड़ अपने निमित्त उसके समान ठहराए हैं वह उनसे ऐसी प्रीति करते हैं जैसी ईश्वर से करनी उचित थी परन्तु जो विश्वासी हैं वह ईश्वर ही से अधिक प्रेम रखते हैं यदि कोई दुष्टों को उस समय देखे जब वह दण्ड को देखेंगे तो कहेंगे कि निस्सन्देह सर्व शक्ति ईश्वरही को है ईश्वर कठिन दण्ड देने हारा है।

---

* यह मक्का में दो पर्व्वत हैं जो प्राचीन काल में अरब मूर्त्तिपूजकों में यात्रा योग्य थे आरम्भ में महम्मदी इनको किसी भांति से आदर करने से हिचकिचाते थे इस कारण यह आयत उतरी। † अर्थात् व्यवस्था देखो इसी सूरत की १४१ आयत को। ‡ जान पड़ता है कि आयत १५८ से १६१ लों मक्का में उतरीं।

(१६१) और जब † वह जिनकी अनुयाई कीगई अपने पीछे चलने हारों से दोषित होंगे और दण्ड को देखेंगे उनके सम्बन्ध कट जायँगे। (१६२) उनके अनुयाई कहेंगे आह! हमको फिर अवसर मिले तो हम भी उनसे दोषित होयँगे जिस भांति वह हमसे दोषित हुए सो इसी रीति ईश्वर उनको उनके कर्म्म दिखायेगा उनके निमित्त लजाएँ हैं और कभी अग्नि से बाहर न निकल सकेंगे॥

रु० २१—(१६३) हे लोगो पृथ्वी में से लीन और पवित्र वस्तुएँ खाओ दुष्टात्मा के पीछे २ मत चलो निस्सन्देह वह तुम्हारा शत्रु है। (१६४) वह पाप अथवा बुराई को छोड़ तुम्हें और कोई आज्ञा नहीं देता और इस बात का कि तुम ईश्वर के विषय में वह कहो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं। (१६५) जब उनसे यह कहा जाता है कि उसको मानो जो ईश्वर ने उतारा है कहते हैं कि हमतो उस पर चलते हैं जिस पर हमने अपने पुरखों को पाया क्या तौ भी कि यदि उनके पुरखा बुद्धि न रखते थे अथवा अगुवाई पाए हुए नहों। (१६६) जो नकारने हारे हैं उनका दृष्टान्त उसके समान है जो शब्द ‡ करता है जिससे केवल पुकार और शब्द के और कुछ समझ न पड़े वह बहरे हैं गूँगे हैं अंधे हैं सो वह कुछ नहीं समझते। (१६७) § हे विश्वासियो पवित्र वस्तुओं में से जो हमने तुमको दी हैं खाओ ईश्वर का धन्यवाद करो यदि तुम उसकी आराधना करते हो। (१६८) केवल उसके जो कुछ उसने तुम पर अलीन किया अर्थात् मरा हुआ और लोहू $ और सुअर का मांस और वह जिस पर ईश्वर को छोड़ किसी और का नाम लिया जाय परन्तु जो अशक्त ¶ हो जाय बिना अनीति किए अथवा बिना विरोधी हुए तो इसमें उसका पाप नहीं निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (१६९) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर की उतारी हुई पुस्तक में से छिपाते हैं और उसे तुच्छ मूल्य पर बेचते हैं यह लोग अपने पेटों में कुछ नहीं खाते परन्तु अग्नि ईश्वर अन्त के दिन उनसे बात न करेगा न उनको पवित्र करेगा उनके निमित्त दुख देने हारा दण्ड है। (१७०) यह वह हैं जिन्हों ने भटकना को अगुवाई की सन्ती मोल लिया है और क्षमा के बदले दण्ड को किस वस्तु ने उनको अग्नि पर धीरज वान बनाया। (१७१) यह इस कारण हैं

---

† अर्थात झूठे मत के अगुवा। ‡ अर्थात पशु। § आयत १६८ से १७१ लों मक्का में उतरी हैं $ देखो प्रेरितों की क्रिया १५ : २०—२१, २८—२९० २१ : २५॥ ¶ बेबशी की दशा में अलीन वस्तु भी लीन हैं।

कि ईश्वर ने पुस्तक उतारी जो सत्य है निस्सन्देह जिन्हों ने उस पुस्तक में विभेद किया वह बड़ी गहरी फूट में पड़े हैं ॥

रु० २२—(१७२) इसमें कुछ धर्म्म नहीं कि तुम अपने मुख पूर्व्व अथवा पश्चिम की ओर फेरो वरन धर्म्म यह है कि ईश्वर पर अन्त के दिन पर और दूतों पर और पुस्तकों पर भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास लाओ और उसके प्रेम वश कुटुंबियो अनाथों निर्धनों यात्रियों भिक्षुकों और दासों के निर्बन्ध करने में संसारिक धनदे जो प्रार्थना करें और दान दे और जो अपनी प्रतिज्ञा पर पूरे हैं। जब वह वाचा करें निरधनी और दुख और संग्राम में धीरजवान हों वही लोग सत्यवादी हैं और वही संयमी हैं। (१७३) हे विश्वासियो तुम्हारे निमित्त लोहू की सन्ती लोहू बहाने की आज्ञा लिखी गई निर्बन्ध की सन्ती निर्बन्ध और दासकी § सन्ती दास स्त्री की सन्ती स्त्री सो जिसको उसके भाई की ओरसे कुछ क्षमा किया जाय और अपने नियम का अनुगामी होकर उपकार मानते हुए उसको चुकाता है। (१७४) तुम्हारे प्रभुकी ओर से यह सुगमता और दया है फिर जिस मनुष्य ने उसके पीछे अनीति किई उस पर दुख देने हारा दण्ड है। (१७५) लोहू का पलटालेने में तुम्हारे निमित्त जीवन है हे बुद्धिमानो यदि तुम संयमी बनों। (१७६) तुम्हारे निमित्त यह नियत किया गया कि यदि तुममें से कोई मृत्यु पाने के निकट हो और यदि वह कुछ धन छोड़े तो अपने माता पिता और कुटुंबियों के निमित्त लिखदे सब संयमियों को यह उचित है। (१७७) सो जो सुनने के पश्चात् इसको बदलता है तो उसका पाप उन्हीं पर है जिन्हों ने उसको बदला है निस्सन्देह ईश्वर सुनने हारा और जानने हारा है। (१७८) फिर जिसको मत्यू लेख ¶ करने हारे की ओर से उलट फेर अथवा पाप का डरहो और उसने उसमें सुधार किया तो उस पर कुछ पाप नहीं निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है।

रु० २३—(१७९) हे विश्वासियो तुम्हारे निमित्त उपवास लिखा हुआ है जिस भांति उन लोगों के निमित्त लिखा गया था जो तुमसे पहिले थे जिसमें तुम संयमी बनो। (१८०) गिने हुए दिनों में वरन जो कोई तुममें रोगी हो अथवा यात्रा में हो तो और दिनों में गिनले और जो वह उपवास रखने के योग्य हैं

§ इसलाम से पहिले दास की सन्ती निर्बन्ध और स्त्री की सन्ती पुरुष घात किया जाता था मूसा की व्यवस्था के निमित देखो निर्गमण २१; २३। ¶ अर्थात वसीअतनामा।

एक निर्धन को भोजन कराके पलटा दिया करें फिर जो हर्ष से भलाई करे यह उसके निमित्त उत्तम है उपवास रखना तुम्मारे निमित्त उत्तम है यदि तुम जानो। (१८१) रमज़ान का महीना वह है जिसमें क़ुरान उतारा गया जो लोगों के निमित शिक्षा * और शिक्षा का प्रत्यक्ष चिह्न है जो विभेद करके दिखाता है तुममें से जो कोई इस महीना को पाए उचित है कि उपवास करे जो कोई रोगी अथवा यात्री हो तो और दिनों में गिनके रखले ईश्वर तुम पर सुगमता चाहता है और तुम पर कठिनाई नहीं चाहता जिस्तें तुम गिनती पूरी करलो और तुम ईश्वर की बड़ाई करो इस कारण कि उसने तुम्हारी अगुवाई की कि तुम धन्यवाद करो। (१८२) जब मेरे लोग मेरे विषय में तुझसे पूछें तो निस्सन्देह में बहुत निकट हूँ पुकारने हारे की बिन्ती का जब वह मुझे पुकारता है उत्तर देता हूँ सो उचित है कि मेरी आज्ञा मानें मुझपर विश्वास लाएं कि सीधा मार्ग पाएँ। (१८३) उपवास की रात्रि में तुमको तुम्हारी स्त्रियों से प्रसंग लीन हैं वह तुम्हारे वस्त्र † हैं और तुम उनके—ईश्वर ने जान लिया जो तुम चोरी से करते थे सो तुमको क्षमा किया और तुमसे पूछ पाछ न की सो अब उनके निकट जाओ और उसकी लालसा करो जो ईश्वर ने तुम्हारे निमित लिखा और खाओ और पीओ जबलों भोर हो और तुम श्वेत और श्याम डोरे को चीन्ह लो ‡ फिर उपवास को रात्रिलों पूरा करो और जिस समय तुम मसजिदों में ध्यान के निमित्त § एकान्त में होओ स्त्रियों से प्रसंग मत करो यह ईश्वर की मर्यादें हैं कि उनके तीर मत जाओ ईश्वर इसी भांति अपने लोगों के निमित चिन्ह वर्णन करता है कि वह संयमी बनें। (१८४) परस्पर एक दूसरे का धन अनीति से मत खावो और न उसको प्रधानो लों पहुँचाओ कि लोगों के धनका कोई भाग पाप जानते हुए खाओ।

रु० २४—(१८५) वह तुझसे नवीन चन्द्रमाओं के विषय में पूछते हैं कह कि वह लोगों के और यात्रा के निमित ठहराए हुए समय हैं यह भलाई नहीं कि तुम अपने घरों में पिछवाड़े $ से घुसो वरन भलाई यह है कि जो कोई संयमको

---

* सूरए अंबिया आयत ४९। † एक दूसरे का सुख। ‡ यहूदियों में भी यही रीति थी कि प्रार्थना उसी समय आरम्भ करना उचित है कि जब नीले और श्वेत डोरे में विभेद जानपड़े आयत १८३ से १९३ लों महम्मद साहब के मदीना में रहने के बहुत समय पश्चात उतरीं इस कारण यह मदीना के पहिले समय की नहीं जान पड़ती हैं क्योंकि इनमें आज्ञाएं बड़ी कठिनता से वर्णन कीगई हैं। § अर्बी भाषा में एत्तकाफ। $ अरब के लोगों में यही रीति थी कि यात्रा से लौट के घर में पीछे की ओर से प्रवेश करते थे और इसको शुभ जानते थे॥

ग्रहण करे और अपने घरों में उनके द्वारे से घुसे—ईश्वर का भय रखो जिस्तें तुम आशीष पाओ। (१८६) ईश्वर के मार्ग में उनसे जो तुमसे लड़ते हैं लड़ो परन्तु अनीति न करो निस्सन्देह ईश्वर अनीति करने हारों को मित्र नहीं रखता। (१८७) जहां उनको पाओ मारडालो उनको वहां से निकाल दो जहां से उन्हों ने तुमको निकाल दिया उत्पात मार डालने से अधिक बुरा है उनसे मस्जिद हराम के निकट मत लड़ो जबलौं कि वह तुमसे उसमें न लड़ें सो उन्हें घात करो अधर्मियों का दण्ड यही है। (१८८) और यदि वह रुक रहें तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (१८९) और उनसे लड़ो जबलों उत्पात शेष न रहे और मत ईश्वर का होजाय यदि वह रुक रहे तो दुष्टों को छोड़ और किसी पर अनीति करना उचित नहीं है। (१९०) पवित्र मास पवित्र मास के बदले में है पवित्रों * का बदला है—सो जो कोई अनीति करे तुम भी उसके साथ अनीति करो जैसी उसने तुमसे की ईश्वर से डरो और जान लो कि ईश्वर अपने डरने हारों के साथ है। (१९१) ईश्वर के मार्ग में व्यय करो और अपने † आपको विनाश में मत डालो उपकार करो उपकारी ईश्वर को भाते हैं। (१९२) और यात्रा को और अमरा ‡ को ईश्वर के निमित पूरा करो सो यदि तुम रोके जाओ तो जो होसके भेंट पहुँचा दो जब लौं भेंट अपने स्थान पर न पहुँच जाय अपने सिर मत मुड़ाओ जो कोई तुम में रोगी हो अथवा उसके सिर में कोई रोग हो वह इसका बदला उपवास रखके अथवा दान दे के अथवा भेंट दे के करे और जो कोई अमरा को यात्रा से मिला कर लाभ ले तो जो कुछ बनसके भेंट के निमित्त भेज दे और यदि न पावे तो तीन दिन का उपवास यात्रा के समय में करे और सात दिन जब कि तुम लौट जाओ यह दस पूरे हुये यह केवल उसके निमित है जिसका कुटुम्ब मसजिद हराम में नहीं बसता ईश्वर से डरो और जाने रहो कि ईश्वर कठिन दण्ड देने हारा है॥

रु० २५—(१९३) यात्राके मास नियत हैं परन्तु जिस मनुष्यने उनमासों में अपने ऊपर यात्रा उचित करली तो यात्रामें न स्त्रियों से कुछ सम्बन्ध लीन है न कुकर्म करो नझगड़ा जो भलेकार्य्य तुम करोगे ईश्वर उनसबको जानता है अपने निमित यात्राकी सामग्री अपने साथ लियाकरो परन्तु सबसे उत्तम सामग्री संयम है हे

---

* अर्थात् हुरमतों का। † इससे जान पड़ता है कि महम्मद साहब एक समय लौं स्वतन्त्रता के मानन हारे थे। ‡ भिन्न २ स्थानों की यात्रा करना।

बुद्धिवानों मुफ़सिडरो। (१९४) इसमें तुमपर कुछ पापनहीं यदि तुम अपने प्रभुसे अधिकता की लालसा करो फिर जबतुम अरफ़ातसे फिरो मशारउलहराम के निकट ईश्वरका चर्चाकरो और जिस जिस भांति तुमको शिक्षा मिली ईश्वरकी चर्चाकरो यदापि इससे पहिले तुम भटकेहुओं मेंसेथे। (१९५) फिरो जहां सबलोग फिरते हैं और ईश्वरसे क्षमामांगो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१९६) फिर जबतुम अपनी यात्राके नियम पूरे करचुको तो ईश्वरका स्मरणकरो जैसे तुम अपने पिताओं का स्मरण करतेहो बरन इससेभी अधिक स्मरणकरो कोई हैं जो कहते हैं हे हमारेप्रभु हमें इस संसारही में देदे सो उनके निमित अंतमें कुछ भाग नहीं। (१९७) उनमेंसे कोई कहता है कि हे हमारे प्रभु हमें इस संसार मेंभी भलाईदे और अंतमेंभी भलाईदे और हमको अग्निके दण्डसे बचा। (१९८) यही लोगहैं जिनको उनकी उपार्जन मेंसे भाग मिलता है ईश्वर शीघ्र लेखा चुकाने हाराहै। (१९९) ईश्वरका गिनहुए दिनों में स्मरण करो फिर जिस मनुष्यने दोदिन में शीघ्रताकी और जिसने विलंब किया तो उसपर कोई पाप नहीं और जो ईश्वर से डरता है उसपरभी पापनहीं सो ईश्वर से डरो और जानलोकि निस्सन्देह तुम उसके निकट इकट्ठे किए जाओगे। (२००) इनमें एक मनुष्य * है उसकी बात संसार के जीवन के विषय में तुझे अच्छी लगती है और उस वस्तु पर जो उसके हृदय में है ईश्वर को साक्षी लाता है यदापि वह बहुत लड़ाका है (२०१) और जब वह सामने से चलाजाता है तो प्रयत्न करता है कि पृथ्वी में उपद्रव करे और खेती को और पशुओं को नाश करे ईश्वर को उपद्रव नहीं भाता। (२०२) जब उससे कहाजाय कि ईश्वर से डर तो उसका घमण्ड उसको पाप की ओर उभारता है परन्तु नर्क उसके निमित बस है और वह बुरा बिछौना है। (२०३) कोई † कोई लोग ऐसे भी हैं जो अपने प्राणों को इस कारण बेचते हैं कि ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करें ईश्वर अपने ऐसे सेवकों पर दयालु है। (२०४) ‡ हे विश्वासियो सबके सब कुशल में प्रवेश करो दुष्ट आत्मा के पीछे चलने हारे मत बनो निस्सन्देह वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है। (२०५) यदि तुम उसके पश्चात कि तुम्हारे निकट चिन्ह आए भटक जाओ तो जानलो कि ईश्वर बलवान बुद्धिवान है। (२०६) क्या वह इस

---

* शरीक के पुत्र अख़नस धर्म्म कपटी के विषय में।   † जब सहीब महम्मद साहब पर विश्वास लाये तो अपना धन अधर्मियों के हाथ में छोड़ दिया।   ‡ दो सौ चार आयत से २१० लौं उन महम्मादियों से वर्णन कीगई जो मूसा की व्यवस्था के किसी किसी भाग को मानते थे।

बात की बाट जोहते हैं कि उनपर ईश्वर और दूत गण मेघों की छांह में आयें परन्तु बात तो ठहर चुकी है और ईश्वर की ओर सब कार्य्य लौटजाते हैं ॥

रु० २६ — (२०७) इसराएल सन्तान से पूछो कि हमने कितने प्रत्यक्ष चिन्ह उनको दिए और जो कोई ईश्वर के वरदान को उसके पश्चात कि वह उसपर पहुंच चुका बदलदे तो ईश्वर का दण्ड अति कठिन दण्ड है। (२०८) जो अधर्मी हुए उनके निमित संसारिक जीवन सुगम किया गया वह विश्वासियों का ठट्ठा करते हैं परन्तु संयमी पुनरुत्थान के दिन उनपर उच्च होयंगे ईश्वर जिसको चाहे अलेख जीविका देता है। (२०९) पहिले सब लोग एकही जाति § थे फिर ईश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं को उपदेश देने हारे और डराने हारे बनाकर भेजा और उनके संग सत्य पुस्तक उतारी जिसतें लोगों में इस बात का न्याय करें जिसमें वह विभेद करते हैं और उन लोगों ने जिनके तीर प्रत्यक्ष चिन्ह आचुके अपने डाह के कारण से विभेद किया और ईश्वरने अपनी इच्छासे उनकी अगुवाई की जो विश्वास लाए उस सत्य पर जिसमें उन्होंने विभेद किया ईश्वर जिसको चाहता है सीधे-मार्ग की अगुवाई करता है। (२१०) क्या तुम्हारा विचार है कि वैकुण्ठ में चलेजाओगे यद्यपि तुमपर वैसा कुछ नहीं बीता जैसाकि उनलोगों पर जो तुमसे पहिले हुए उनपर कठिनाई और विपति आपड़ी कपकपी में डालेगए यहांलो कि प्रेरित और विश्वासी उनके साथ बोलउठे कि ईश्वरकी सहायता कब आवेगी क्या निस्सन्देह ईश्वरकी सहायता बहुत निकट नहीं है। (२११) तुझसे प्रश्न करते हैं कि किसभांति व्यय करें तूकह जो कुछ धन व्यय करो उचित है कि माता पिता कुटुम्बियों और अनाथों दीनों और यात्रियों के निमित हो जो कुछ पुन्य तुम करोगे ईश्वर को उसका ज्ञान है। (२१२) तुम पर लड़ना ठहराया गया परन्तु तुमको इससे घिन है। (२१३) कदाचित तुम किसी बात से घिन करो और वही तुम्हारे निमित भलाई हो और कदाचित किसी बात से तुमको प्रेम हो और वह तुम्हारे निमित बुराई हो ईश्वर सब कुछ जानता है और तुम कुछ नहीं जानते।

रु० २७ — (२१४) वह तुझसे माहे हराम में लड़ाई के विषय में पूछते हैं तू कह इसमें लड़ना महा पाप है ईश्वर के मार्ग से लोगों को रोकना ईश्वर से अधर्म्म करना है और मसजिद हराम में उसके रहने हारों को निकाल देना ईश्वर

---

§ अर्थात् मत।

के निकट बहुत बड़ा पाप है और उत्पात लोहू बहाने से अति बुरा वह सदा तुमसे लड़ते ही रहेंगे यहां लों कि तुमको तुम्हारे मत से यदि बश हो तो फेरदें और जो तुम में से अपने मतसे फिर कर अधर्म्मी ही मर जावे तो संसार और अन्त के दिनमें ऐसोंही के कार्य्य निष्फल होजाते हैं और यही लोग नर्क गामी हैं और सदा उसी में रहेंगे। (२१५) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और जिन्हों ने अपना देश छोड़ा और ईश्वरके मार्गमें युद्ध किया वही लोग ईश्वर से दया के अभिलाषी हैं और ईश्वर क्षमा करने हारा कृपालु है। (२१६) तुझसे मदिरा और जुवा † के विषय में पूछते हैं बता दे कि उनमें बड़ा पाप है यदपि उसमें लोगों को किसी प्रकार का लाभ भी है परन्तु पाप लाभ से अधिक है और पूछते हैं कि कितना व्यय करें। (२१७) तू कहदे जो आवश्यकता से अधिक हो यूँही ईश्वर तुमको अपनी आज्ञा बतलाता है जिससे तुम विचार करो। (२१८) संसार और अन्त के दिन और अनाथों के विषय में तुझसे पूछते हैं कहदे कि उनका सुधार करना भलाई है। (२१९) यदि तुम उनको मिला लो वह तुम्हारे भाई हैं ईश्वर उपद्रवी और सुधार करने हारों को जानता है यदि ईश्वर चाहता तो तुमपर कठिनाई डालता निस्सन्देह ईश्वर बलवान और बुद्धिवान है। (२२०) अधर्म्मी स्त्रियों को अपने विवाह में मत लेओ जबलों कि वह विश्वास न लायें निश्चय जानों विश्वासी दासी अधर्म्मी स्त्री से उत्तम है यदपि वह तुमको अच्छीही लगती हो अधर्म्मियों को विवाह में मत दो जबलों कि वह विश्वास न लायें निश्चय जानो कि विश्वासी दासा अधर्म्मी मनुष्य से उत्तम है यदपि वह तुमको अच्छाही लगे। (२२१) यह लोग तो तुमको अग्नि की ओर लेजाते हैं परन्तु ईश्वर अपनी इच्छा से तुम्हें वैकुण्ठ और क्षमा की ओर लेजाता है वह लोगों के निमित अपनी आयतें वर्णन करता है कि कदाचित् वह चेत जायँ॥

रु० २८ — (२२२) वह तुझसे स्त्रियों के मासिक ‡ धर्म्म के विषय में पूछते हैं तू कहदे कि वह अशुद्धता है सो तुम ऋतु ‡ वाली स्त्रियों से दूर रहो और जबलों वह शुद्ध न होलें उनके निकट मत जाओ और जब वह शुद्ध होवें

---

† जुवा के लिये अरबी भाषा में "मैसर" शब्द है जो चिट्ठी द्वारा खेला जाता था जो हारता था वह एक जवान ऊँट दिया करता था जिसको बध करके दरिद्रियों में बांट दिया जाता था, दान का विचार करके महम्मद साहब ने इसको ग्रहण किया परन्तु जो इसमे उपद्रव और झगड़े उत्पन्न होते थे यह लाभ से अधिक थे इस कारण इसकी निन्दा कीगई देखो सूरए निसा ४२ मायदा ९९—१०० आयत को॥

‡ अर्थात हैज़।

उनके निकट मत जाओ और जब वह शुद्ध होलें तो उनके निकट जाओ जिधर से ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा दी है निस्सन्देह ईश्वर पाश्चाताप करने हारों और शुद्ध रहने हारों से प्रेम करता है। (२२३) तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारी खेती हैं सो तुम अपनी खेती में जिधर से चाहो * जाओ और उससे आगे अपने निमित भेजो † और जान रखो कि तुमको उससे सन्मुख ‡ होना है विश्वासियों को सुसमाचार दे। (२२४) अपनी किरियाओं में ईश्वर को आड़ न बनाओ कि तुम सुव्यवहार और संयम और लोगों में मेल कराना छोड़दो ईश्वर सुनता और जानता है। (२२५) ईश्वर तुमको तुम्हारी झूठी किरियाओं में न पकड़ेगा परन्तु उन बातों में पकड़ेगा जो तुम्हारे हृदयों ने कमाईं और ईश्वर क्षमा करने हारा और कोमल स्वभाव है। (२२६) जो लोग अपनी स्त्रियों के समीप जाने के विषय में किरिया खाबैठे हैं तो उनको चार मास ठहरना उचित है परन्तु यदि वह उससे फिरजायं तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा और कृपालु है। (२२७) यदि उन्हों ने त्याग देने की इच्छा की निस्सन्देह ईश्वर सुनता और जानता है। (२२८) और त्यागदी हुई स्त्रिएं तीन ऋतु § की बाट जोहें और उन्हें उचित नहीं कि जो कुछ ईश्वर ने इनके गर्भों में उपजाया उसको छिपावें यदि ईश्वर और न्याय के दिन पर उनका विश्वास है और इस समय में यदि वह अपना सुधार चाहें तो उनके पतियों को अधिक अधिकार है कि उन्हें फिर लेलें और स्त्रियों का भी अधिकार पुरुषों पर है जैसा पुरुषों का अधिकार स्त्रियों पर है नियमानुसार पुरुषों को स्त्रियों पर बड़ाई है ईश्वर बलवान बुद्धिवान है॥

रु० २९.—(२२९) त्याग केवल दोबार देना उचित है फिर अथवा भलाई से रखना अथवा सुव्यवहार के साथ बिदा करना और तुम पर यह लीन नहीं कि उसमें से जो कुछ तुमने उनको दिया है कुछ भी फेरलो परन्तु जब इस बात से दोनों को डर हो कि दोनों ईश्वर के नियम स्थिर नहीं रखसकते सो यदि इस बात का डर हो कि दोनों ईश्वर के नियमों को स्थिर नहीं रख सकेंगे तो उन दोनों पर कुछ पाप नहीं इस बात में कि स्त्री अपने बदले में उसको दे यह ईश्वर के बांधे हुए नियम हैं इनसे बाहर न होओ और जो ईश्वर के नियमों से बाहर हुआ वही लोग दुष्ट हैं। (२३०) और यदि स्त्री को फिर त्याग देदिया गया तो उसके पीछे उसको लीन नहीं यहांलों कि वह दूसरे पति से विवाह करे फिर यदि वह

---

* अर्थात जिधर से चाहो प्रसंग करो।　† अर्थात् सुकर्म्म।　‡ अर्थात अपने कार्य्यों के कारण ईश्वर से।　§ अर्थात तीन हैज़ों की।

उसको त्याग देदे तो इन दोनों पर पुनः विवाह करलेने में कोई पाप नहीं यदि वह जानें कि हम ईश्वर की आज्ञाओं पर स्थिर रहेंगे यह ईश्वर की आज्ञाएं हैं जो समझदारों के निमित इन्हें वर्णन करता है। (२३१) जब तुम स्त्रियों को त्यागदो और वह अपनी इद्दत* का समय पूरा कर चुकें अथवा उन्हें सुव्यवहार से रोकलो अथवा सहर्ष विदा करो उनको सताने के निमित बंद न कर रखो कि उनपर अन रीत करो और जो कोई ऐसा करेगा-तो निस्सन्देह उसने अपने ऊपर आप अन्याय किया और ईश्वर की आयतों को हँसी में मत उड़ाओ ईश्वर का उपकार स्मर्ण करो और इस बात को कि उसने तुम पर पुस्तक और ज्ञान उतारा जिससे वह तुमको शिक्षा देता है ईश्वर से डरो और जानलो कि ईश्वर हर वस्तु का जानने हारा है॥

रु० ३०—(२३२) जब तुम अपनी स्त्रियों को त्याग देचुके और वह अपनी इद्दत † को पहुंचजायँ तो उनको मत बरजो कि और पुरुषों से विवाह करें जो परस्पर नियमानुसार इस बात में सम्मति हों इसबात से उस मनुष्य को उपदेश है जो तुममें से ईश्वर पर और अंतके दिनपर विश्वास लाता है, इसबात में तुम्हारे निमित अधिक पवित्रता और निर्मलता है ईश्वर जानता है जो तुम नहीं जानते। (२३३) और माएँ पूरे दो ‡ वर्ष लौं अपने बालकों को दूध पिलाएँ यह उसके निमित है जो दूध पिलानेके समय को पूरा करना चाहें और उसपर जिस का यह बालक है दूध पिलाने हारी स्त्रियों का भोजन वस्त्र नियमानुसार उचित है कोई मनुष्य उसके वितसे अधिक विवश नकिया जायगा नतो माताही को उसके बालकों के कारण दुख दियाजाय और न पिताही को उसके बालकों के कारण से और स्वामी परभी ऐसी आज्ञा है दोनों अपने मेल और सम्मति से दूध छुड़ाना चाहें तो इसमें उनपर कोई पापनहीं यदि तुम अपने बालकों को और से दूध पिलाना चाहो तो इस में भी कोई पाप नहीं जब कि तुम नियमानुसार उसकी ठहराई हुई धनि चुका दो ईश्वर से डरो और जान रखो कि ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों पर दृष्टि रखता है। (२३४) और जो लोग तुम में से स्त्रियों को छोड़ कर मरजांय तो वह अपने ऊपर चार मास और दस दिन समय ठहरावें और जब वह अपने नियत समय को पहुंच जांयं यद्यपि वह नियमानुसार कोई कार्य्य करलें तो उनपर कोई पाप नहीं ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को जानता है। (२३५) तुम्हारे

* ठहराया हुआ समय देखो इसी सूरत की १२८ आयत। † देखो सूरए बकर आयत २२८।
‡ लुकमान आयत ११ को।

निमित भी कोई पाप नहीं यदि उनको विवाह * का संदेश भेजो अथवा अपने मनमें इसे छिपाए रखो ईश्वर जानता है कि तुम इन स्त्रियों को स्मर्ण करोगे परन्तु उनसे छिपकर वाचा न कर बैठो वरन यही जो नियमानुसार है उनसे कुछ कहदो। (२३६) उस समयलों विवाह की इच्छा न करो जबलों कि लिखा हुआ समय अपने अन्त को न पहुंचजाय और जान राखो कि ईश्वर तुम्हारे मन के भेदों को जानता है सो उस से डरते रहो और जान राखो कि ईश्वर क्षमा करने हारा और नम्र है।

रु० ३१—(२३७) तुमपर कुछ पाप नहीं यदि तुम अपनी स्त्रियों को त्यागदो पहिले इसके कि तुमने छुआ हो अथवा उनसे कुछ ठहराया हो और उनको त्याग दो और उनको व्यय देदो धनवान अपने वितानुसार और कङ्गाल अपने वित समान सब भले मनुष्यों को यह व्यय देना उचित है। (२३८) यदि तुम छूने से पहिले त्याग दो और उनके निमित कुछ ठहरा चुके हो तो ठहराये हुये में से आधा देदो परन्तु यदि वह आप छोड़ † दें अथवा वह मनुष्य जिसके हाथ में विवाह का अधिकार था छोड़ दे और तुम्हारा छोड़ना संयम के समान है और परस्पर व्यवहार को मत भूलो निस्सन्देह जो कुछ तुम करते हो ईश्वर देखरहा है। (२३९) प्रार्थनाओं की रक्षा ‡ करो विशेष कर बीच की प्रार्थना की और ईश्वर के सन्मुख सादर खड़े होओ। (२४०) फिर यदि तुमको कुछ भयहो तो पैदल अथवा असवारही पढ़ो और जब भय जाता रहे तो ईश्वर को स्मर्ण करो जिस भांति तुमको वह सिखाया है जो तुम न जानते थे। (२४१) जो लोग तुममें से मरजायँ और पत्नियाँ छोड़जायँ वह अपनी स्त्रियों के व्यय करने के निमित एक वर्ष लों बिना निकाले हुये लेख धारजायँ फिर यदि वह आप निकल जायँ अथवा जो कुछ वह अपने निमित उचित रीति से करें तो तुमपर कोई पाप नहीं ईश्वर बलवन्त बुद्धिवान है। (२४२) और त्यागी हुई स्त्रियों के निमित नियमानुसार भलाई करना संयमियों पर उचित है। (२४३) ईश्वर तुम्हारे निमित अपनी आयतें इसी भांति खोलकर सुनाता है जिस्तें तुम समझो।

रु० ३२—(२४४) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो मृत्यु के भय से अपने देश से निकल § गए और वह सहस्रों थे फिर ईश्वर ने उन्हें कहा कि

---

* अर्थात् चार मास के भीतर। † अर्थात् ठहराए हुए धन में से। ‡ यह आयत सूरए निसा के आरम्भ से बहुत पहिले उतरी है क्योंकि जो आज्ञा यहां बतलाई गई है सूरए निसा में इसका खण्डन है क्योंकि महम्मदी मध्यान्ह के पश्चात् की प्रार्थना देर में करते थे इसी के सुधार के निमित यह आयत उतरी।
§ हिजकिएल ३७ : १—१० लों॥

मरजाओ फिर उन्हें जीवता कर दिया निस्सन्देह ईश्वर लोगों पर बड़ा अनुग्रह करनेहारा है परन्तु बहुतेरे मनुष्य धन्यवाद नहीं करते। (२४५) ईश्वर के मार्ग में लड़ो और जानते रहो कि ईश्वर सुनता और जानता है। (२४६) वह कौन मनुष्य है जो ईश्वर को ऋण दे अच्छा ऋण और वह उसको दुगना करके कई गुणा करदे ईश्वरही सकेती और चौड़ाई* करता है और तुम उसकी ओर लौट जाओगे। (२४७†) क्या तू इसरायल सन्तान की उस जत्था की दशा को नहीं जानता जो मूसा के पीछे हुआ अपने भविष्यद्वक्ता से कहा कि हमारे निमित कोई राजा ठहरा दे जिसतें हम ईश्वर के मार्ग में लड़ें उसने कहा क्या तुम ऐसे नहीं कि यदि तुम्हें लड़ाई की आज्ञा हो तो न लड़ोगे वह बोले हम ईश्वर के मार्ग में क्यों न लड़ेंगे जब कि हम अपने देश और बालबच्चों से निकाले गये जब उनको लड़ाई की आज्ञा हुई तो थोड़े मनुष्यों के उपरान्त सभों ने पीठ दिखाई ईश्वर दुष्टों को जानता है। (२४८) और उनके भविष्यद्वक्ता ने कहा कि ईश्वर ने तुमपर तालूत ‡ को राजा किया वह बोले वह हमारा राजा कैसे होसकता है यद्यपि हम उस से अधिक राज्य के योग्य हैं और उसके यहां धन की अधिकाई भी नहीं उसने कहा निस्सन्देह ईश्वर ने उसी को तुमपर नियुक्त किया और उसको विद्या और शरीर में अधिकाई दी ईश्वर जिनको चाहता है अपना देश देता है ईश्वर अधिक देनेहारा और जानने हारा है (२४९) और उनके भविष्यद्वक्ता ने उनसे कहा उसके राज चिन्ह यह हैं कि तुम्हारे यहां वह मंजूषा आजायगा कि जिस में तुम्हारे प्रभु की ओर से सकीना § और मूसा के कुटुम्ब और हारून के कुटुम्ब की कुछ बची हुई चिन्हार वस्तुएं हैं¶ उसको दूत उठालायेंगे उसमें तुम्हारे निमित सम्पूर्ण चिन्ह हैं यदि तुम विश्वासी हो।

रु० ३३—(२५०) फिर जब तालूत सेनायें लेकर बाहर निकला उसने कहा ईश्वर एक धारा से तुम्हारी परीक्षा किया चाहता है सो जो कोई उसमें से पीवे वह मेरा नहीं और जो कोई न चाखे तो वह मेरा है परन्तु हां जो कोई

---

* अर्थात् दरिद्री और धनवान करता है। † महम्मद साहब ने अपनी आगम दृष्टि से देख लिया कि मदीना के लोगों की ओर से शीघ्र विरुद्धता होगी इस कारण यहूदी इतिहास से सहायता लेकर अपने लोगों को युद्ध पर तत्पर किया। ‡ अर्थात साऊल। § शब्द "सकीना" इब्री भाषा का शब्द है जिसको महम्मदी टीका करनेहारों ने तसकीन से अर्थाया जो अशुद्ध है क्योंकि सकीना और ताबूत दोनों के अर्थ मंजूषा के हैं शब्द ताबूत के निमित सूरए तोय आयत ३९ को देखो यह वृत्तान्त राजाओं के वृत्तान्त की पहिली पुस्तक ४, ५, ६ पर्ब्ब से लिया है। ¶ इन वस्तुओं में मूसा की लाठी और जूतियां हारून का मुकट मन्न का मर्तबान और व्यवस्थाओं की पटियों के टुकड़े बताए जाते हैं॥

अपने हाथ * से एक चुल्लू भरले सो उसमें से केवल कुछ मनुष्यों के सब पीगये फिर जब वह आप और उसके साथ वाले विश्वासी धारा उतरे तो कहने लगे कि आज हमको जालूत † और उसकी सैनाओं के साथ युद्ध की शक्ति नहीं वह जो जानते थे कि निस्सन्देह हम ईश्वर से मिलें गे बोले कि कभी यह हुआ है कि छोटा दल बड़े दल से ईश्वर की इच्छा से जीत गया ईश्वर सन्तोषियों का साथी है। (२५१) जब जालूत और उसकी सैना सन्मुख आई तो बोले हे हमारे प्रभु हमको दृढ़ता दे और हमारे पाओं को स्थिर रख और इस धर्म्म हीन जाति पर हमारी सहायता कर। (२५२) सो उन्हों ने उनको उनके ईश्वर की आज्ञा से पराजित किया और दाऊद ने जालूत को घात किया और ईश्वर ने उसको राज और बुद्धि का दान दिया और जो चाहा उसको सिखाया और यदि ईश्वर कुछ मनुष्यों को कुछ के हाथ से रोक न दिया करे तो पृथ्वी में उपद्रव मचजाय परन्तु ईश्वर का अनुग्रह सृष्टियों पर अधिक है। (२५३) यह ईश्वर की आयतें हैं हम उन्हें तुझको ठीक ठीक सुनाते हैं और निस्सन्देह तू प्रेरितों में से एक है।

१. (२५४) उन प्रेरितों में हमने किसी को किसी पर बड़ाई दी किसी के साथ हमने वार्तालाप किया और किसी को हम ने उच्च पद दिया और हम ने मरियम के पुत्र ईसा को प्रत्यक्ष चिन्ह दिये और हमने उसकी पवित्र ‡ आत्मा से सहायता की यदि ईश्वर चाहता तो उनके पश्चात आये हुये लोग स्पष्ट आज्ञा पहुँचने के परस्पर न लड़मरते परन्तु उन्हों ने परस्पर फूट § डाली कोई इनमें से विश्वास लाया और कोई नकार ने लगा परन्तु यदि ईश्वर चाहता तो वह इस भांति न लड़ते पर ईश्वर जो चाहता है करता है।

रु० ३४—(२५५) हे विश्वासियो उस वस्तु में से जो हमने तुमको दी है व्यय करो पहिले इसके कि वह दिन आवे जिसमें न बेचना है न मैत्री है न बिन्ती और अधर्म्मीही दुष्ट हैं। (२५६) ईश्वर ¶ ही है कोई देव नहीं वरन वह जीवता है और सदा काल स्थिर रहने हारा है जिसे न आलस आता है न निद्रा जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है उसीका है उसके सन्मुख उसकी इच्छा के बिना कौन बिन्ती करसकता है वह अपनी रचना की अगली और पिछली दशा को जानता है

---

* न्यायियों की पुस्तक के छटे पर्व्व से लिया है। † अर्थात् जिलियाद इस वृत्तान्त में जिदाऊन और दाऊद को गड़बड़ कर दिया है। ‡ देखो इसी सूरत की आयत ८१ को। § इस भांति की आयतें कुरान में बहुतायत से हैं जिनसे जान पड़ता है कि अगली ईश्वरीय पुस्तकों में कठोरता से बात कीगई सो इसलाम को बढ़ाने करने की सन्ती फूट का बीज बोया गया। ¶ यह "आयत कुर्सी" कहलातीहै और बहुधा मसजिदों के द्वारों पर लिखी है॥

कोई उसके ज्ञान में से किसी बात को पा नहीं सकता परन्तु जितना वह आप चाहे स्वर्ग और पृथ्वी में उसकी चौकी बिछी है वह उसकी चौकसी से नहीं थकता वह अति उच्च और महान है। (२५७) मत में कुछ बरियाई * नहीं है—अगुवाई और भ्रमता निस्सन्देह प्रगट होचुकी हैं सो जो मनुष्य तागूत † से मुकर गया और ईश्वर पर विश्वास ले आया उसने दृढ़ डोरी को थाम लिया जो टूटने हारी नहीं ईश्वर सुनता और जानता है। (२५८) ईश्वर विश्वासियों का स्वामी है उनको अंधेरियों से निकाल कर प्रकाश में लाता है। (२५९) और मुकरने हारों का स्वामी तागूत है जो इनको प्रकाश में से अंधकार में ले जाता है यही लोग नर्कगामी हैं और वह सदा उसमें रहेंगे।

रु० ३५—(२६०) क्या तू उस मनुष्य ‡ का वृतान्त नहीं जानता जो इबराहीम से उसके प्रभुके विषय में झगड़ा-क्योंकि ईश्वर ने उसको राज दियाथा जबकि इबराहीमने कहा कि मेरा प्रभु वह है जो जिलाता है और मारता है कहा मैंभी मारता और जिलाता हूं इबराहीमने कहा कि निस्सन्देह ईश्वर सूर्य्य को पूर्व्वसे निकालता है तू उसको पच्छिम से निकाल क्योंकि वह अधर्म्मी था भौंचक्क रहगया ईश्वर दुष्टों की अगुवाई नहीं करता (२६१) अथवा वह मनुष्य जो गांव § से निकला जो अपनी छतों के बल औंधा पड़ाथा कहनेलगा कि ईश्वर इसको इसके नाशके पश्चात फिर कैसे बसायगा सो ईश्वरने उसको वहां सौ वर्ष लौं मारके रक्खा और फिर उसे जीवता किया और पूछा कि तू कितनी बेर लौं पड़ा रहा बोला मैं दिनभर अथवा उसका कोई भाग पड़ारहा सो अपने खाने और पीने की वस्तुओं को देख कि वह अबलौं नहीं बिगड़ीं और अपने गदहेपर दृष्टिकर हम तुझको लोगों के निमित चिन्ह बनायेंगे और हड्डियों की ओर देख कि हम उनको कैसे उठाते हैं और कैसे उनपर मांस चढ़ाते हैं और जब उसको दिखाया गया उसने कहा मैं जानताहूं कि ईश्वर सबकुछ करसकता है। (२६२) और जबकि इबराहीम ने कहा कि हे मेरे प्रभु मुझको दिखा कि तू कैसे मृतकों को जिलायगा कहा क्या तुझे विश्वास नहीं बोला क्यों नहीं परन्तु इस कारण कि मेरे मनको शांति होजाय कहा कि तू चार पच्छियों ¶ को अपने समीप लेले और हरएक पर्व्वतपर उनका

---

* जान पड़ता है कि यह आयत उस समय सुनाई होगी जब महम्मद साहब अपने को मदीना में सम्पूर्ण रीति से रक्षित समझ चुके होंगे। † इसका अभिप्राय एक अथवा अनेक मूर्तियों से है अल्लात और उज्ज़ा मक्का की प्राचीन काल की मूर्ति थीं तागूत का शब्द अरबी भाषा की अपेक्षा इब्री जान पड़ता है इसका अर्थ विपरीत अर्थ अर्थात् गलती है। ‡ अर्थात् निमरूद सूरए बनी इसराएल ५२-६९ लौं। § अर्थात् यरूशलम का नाश होना नहेमियाह २५ : १५ ¶ उत्पत्ति १५ : ९

एक एक भाग रखदे फिर उनको पुकार वहतेरे निकट दौड़ते हुए चले आएंगे और जानरख कि ईश्वर निश्चय महाबली और बुद्धिमान है ॥

रु० ३६—(२६३) उन लोगों का दृष्टान्त जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं उस बीजके समान है जिसमें सात बालें निकलीं और प्रत्येक बालमें सौ बीज और ईश्वर जिसके निमित चाहता है कई गुणा करदेता है ईश्वर बड़े फैलाव वाला और जानने हारा है । (२६४) जो लोग अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं और जो कुछ उन्होंने व्यय किया उसका पीछा नहीं करते न उपकार जताते न क्लेश देते हैं उनके निमित उनके प्रभु से बदला है उनको न कुछ भयहै और न शोकित होंगे । (२६५) अच्छीबात कहना और क्षमा करना उस दानसे उत्तम है जिसके पीछे दुख दियाजाय ईश्वर धनवान और कोमल है। (२६६) हे विश्वासियो अपने दानोंको उपकार जताकर और दुख देकर अकार्थ मत करो उसका दृष्टान्त उस मनुष्यके समान है जो अपना धन लोगोंको दिखानेके निमित व्यय करता है परन्तु ईश्वर और अन्तके दिनपर विश्वास नहीं रखता और ऐसे मनुष्य का दृष्टान्त ऐसा है जैसे पत्थर पर कुछ मिट्टी हो और जब उसपर भारी वर्षा हो तो सब स्वच्छ होजाय ऐसों को उनकी उपारजन से कुछ लाभ न मिलेगा ईश्वर अधर्म्मी जातिकी अगुवाई नहीं करता । (२६७) और जो लोग अपने धन ईश्वर की प्रसन्नता हेतु और विश्वास सहित व्यय करते हैं उसबारी के समान है जो उंचाई परहो जिसपर भारी वर्षाहो और वह दुगना फलदे परयादि भारीवर्षा न बर्षे तो उसके निमित ओसही बसहो ईश्वर तुम्हारे कर्म्मों को देखता है (२६८) क्यातुम में से कोई मनुष्य इसबातको ग्रहण करेगा कि उसकी एक खजूरों और दाखों की बारीहो जिसमें धाराएं बहतीहों और उसके निमित उसमें नाना प्रकारके फल उपस्थित हों और उस मनुष्यपर बुढ़ापा आजाय और उसके बालक दुर्बलहों सो ऐसे समय में पवनका एक कड़ा झोंका चले जिसमें अग्निहो तो * वह भस्म होजाय निश्चय ईश्वर तुमको अपनी आयतें इसीभांति समझाता है जिस्तें तुम विचार करो ॥

रु० ३७—(२६९) हे विश्वासियो अपनी पवित्र उपार्जन में से व्यय करो जो तुमने उपार्जन की है और उसमें से जो हमने तुम्हारे निमित्त भूमिसे उगाया है बुरीवस्तु व्यय करने की इच्छा मत रखो । (२७०) जिसको तुम आप भी ग्रहण न करोगे केवल वसके कि उसके लेते समय आंखें मूँदलो जान रक्खो कि

* अर्थात् वाटिका ।

ईश्वर धनी और महिमा योग्य है। (२७१) दुष्ट आत्मा तुमको कङ्गाली * की वाचा देता है और तुमको निर्लज्जता की आज्ञा देता है पर ईश्वर तुमको अपनी क्षमा और अनुग्रह की वाचा करता है ईश्वर बड़े फैलाव वाला और जानने हारा है। (२७२) वह जिसको चाहता है बुद्धि देता है और जिसको बुद्धि दी गई निस्सन्देह उसको बहुत सी भलाइयां दीगईं बुद्धिमान के उपरान्त और कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता। (२७३) जो कुछ दान तुम देते अथवा मनौती मानते हो ईश्वर उसे जानता है दुष्टों का कोई सहायक नहीं यदि तुम दान प्रगट में करो तो वह भी अच्छा है और यदि गुप्त † में दारिद्रियों को दो तो तुम्हारे विषय में और भी अच्छा है वह तुम्हारे कुछ पाप मिटा देगा ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को जानता है। (२७४) उनको शिक्षा देना तेरा कार्य्य नहीं ईश्वर जिसको चाहता है मार्ग पर लाता है और जो धन तुम व्यय करते हो तुम्हारे ही लाभ के निमित्त है और तुम केवल ईश्वर की इच्छा के उपरान्त व्यय न करोगे और जो कुछ दान में तुम व्यय करोगे तो तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा और तुम पर अन्याय न होगा। दान उन भिक्षुकों का अंश है जो ईश्वर के मार्ग पर स्थिर हैं और देशमें चलने की शक्ति नहीं रखते निर्बुद्ध उनको धनवान समझते हैं क्योंकि वह नहीं मांगते तू उन्हें उनके मुखसे चीन्हता है वह लोगों से चिपट कर नहीं मांगते और जो कुछ दान में तुम व्यय करोगे निस्सन्देह उसका ज्ञान ईश्वर को है।

रु० ३८—(२७५) जो लोग अपना धन रात और दिनको गुप्त में और प्रगट में व्यय करते हैं उनके निमित उनके प्रभुके निकट प्रतिफल है उनको नभय है और नवह शोकित होयंगे। (२७६) व्याज खानेहारे लोग पुनरुत्थान के दिन उठेंगे परन इसभांति कि जिसरीति वह मनुष्य जिसको दुष्ट आत्मा ने छूकर सिड़ी कर रखाहै खड़ाहो यह इसकारण कि उन्होंने कहा कि बेचना भीतो व्याजही के के समान है ईश्वर ने बेचने को लीन ठहराया और व्याज को अलीन सो जिस के निकट उसके प्रभुसे कोई शिक्षा आवे और वह रुक ‡ रहे तो उसका है जो आगे होचुका और उसका कार्य्य ईश्वर के साथ है और यदि किसी ने फिर किया वह अग्निमें डाले जायंगे और सदा उसमें रहेंगे। (२७७) ईश्वर पापी को मित्र नहीं रखता निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए और प्रार्थना करते रहे और दान देतेरहे उनका प्रतिफल उनके प्रभुके निकट है न उनको भयहै

* अर्थात दान देने से रोकता है। † मती ६ : ३-४ लों। ‡ अर्थात शिक्षा ग्रहण करले और बुरे कर्म त्याग दे॥

और न शोकित होंगे। (२७८) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो और जो कुछ ब्याजसे शेष रहगया उसे छोड़दो यदि तुम विश्वासी हो। (२७९) सो यदि तुम ऐसा नहीं करते तो तुमको ईश्वर और उसके प्रेरितकी ओर से युद्धकी बुलाहट है और यदि तुम पश्चाताप करो तो तुमको मूलधन मिलसकता है न तुम अन्याय करोगे न तुमसे अन्याय किया जायगा। (२८०) और यदि कोई दरिद्रीहो तो उसके धनवान होनेकी बाट जोहना उचित है तुम्हारे निमित दानदेना उत्तम है यदि जानते हो। (२८१) उस दिनमें डरतेरहो जिसदिन ईश्वर की ओर फिर जाना है हर मनुष्य को उसकी उपार्जना नुसार पूरा मिलेगा और किसीपर अन्याय नहोगा॥

रु० ३९—(२८२) हे विश्वासियो यदि तुम किसी ठहराएहुए समयलों परस्पर उधार लेनदेन करो तो उसको लिख रखाकरो उचित है कि तुम्हारे बीचमें कोई लेखक ठीक ठीक लिखे और लेखक जैसा ईश्वरने उसे सिखायाहै लिखनेसे नाँह नकरें वरन लिखदेना उचितहै और लिखाए वहजो धारताहै और उचित है कि ईश्वर से डरे जो उसका प्रभुहै और उसमेंसे कुछभी न घटाए फिर यदि वह मनुष्य जो धारता है अयाना अथवा दुर्बलहो अथवा आप न लिख सकताहो तो उचित हैकि उसका अधिकारी ठीक ठीक लिखवादे और अपने लोगों में से दो जन साक्षी ठहरालो यदि दो जन उपस्थित न हों तो एक पुरुष और दो स्त्रीयां हों जिनको तुम साक्षियों में उचित जानो यदि इनमेंसे एक भूलजाय तो दूसरी उसे स्मर्ण कराए और साक्षी जबकि बुलाए जायँ उनको नाँह करना उचित नहीं और ठहराएहुए समयलों कोई विषय छोटाहो अथवा बड़ा उसके लिखनेमें आलस न करो ईश्वर के निकट यह बड़े न्याय की बात है इससे साक्षी दृढ़ रहती है जिस्तें तुम दुविधा में न पड़ो परन्तु जबकि वह विषय व्यापार रोकड़ द्वारा परस्पर करते हो तो उसके न लिखनेमें तुम पर कुछ पाप नहीं और जब परस्पर लेन देन न करो तो साक्षी करलिया करो लेखक और साक्षी को हानि न पहुंचे यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारे निमित इसमें पाप है ईश्वर से डरते रहो ईश्वर तुमको सिखाता है और ईश्वर सब वस्तुओं से जानकार है। (२८३) यदि तुम यात्रा में हो और तुमको कोई लेखक नहीं मिलता तो धरोहर पर अधिकार करो और जो कोई तुम में से दूसरे को धरोहर सौंपे तो उचित है कि उस धरोहर को जिसपर भरोसा किया गया फेरदे और ईश्वर जो उसका प्रभुहै उससे डरे और तुम साक्षी को न छिपाओ और जो उसको छिपाता है उसका हृदय दोषी है ईश्वर तुम्हारे कर्मों को जानता है॥

रु० ४०—(२८४) जोकुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है चाहे तुम अपने हृदय की बातको प्रगट करो अथवा छिपाओ ईश्वर उसका लेखा लेगा फिर जिसे चाहे क्षमा करेगा और जिसे चाहे दण्ड देगा ईश्वर प्रत्येक बातपर शक्तिवान है। (२८५) * प्रेरित उस वस्तुपर विश्वास लाया जो उसके प्रभु की ओर से उसपर उतरी है और हरएक विश्वासी भी ईश्वर पर और उसके दूतों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके प्रेरितों पर विश्वास लाताहै और हम उसके प्रेरितों में से किसी एक में भी विभेद नहीं करते और कहा कि हमने सुना और ग्रहण कर लिया है ईश्वर हम तुझसे क्षमा चाहते हैं क्योंकि तेरे समीप फिर जाना है। (२८६) ईश्वर किसी प्राणी को उसके चित से अधिक दुख नहीं देता जो कुछ उसने उपार्जन किया वह उसीके निमित है और उसीपर आताहै हे हमारे प्रभु यदि हम ने भूल की अथवा चूक की हमसे लेखा न ले और हम पर ऐसे भारी बोझ मत रख जैसा तूने उन पर धरा जो हमसे पहिले थे और हे हमारे प्रभु हम पर हमारे सहने की शक्ति से अधिक बोझ मत धर हमारे अपराध क्षमा करदे और हमको क्षमा करदे और हमपर दयाकर तूही हमारा स्वामी है अधर्म्मी जाति के सन्मुख हमारी सहायता कर॥

* इस आयत से आयत २५४ का खण्डन होताहै और सूरए मरियम की किसी २ आयत के विरुद्ध है

॥ ३ सूरए इमरान* मदनी रुकू २० आयत २०० ॥

अति दयालु और कृपालु ईश्वर के नाम से ।

रु० १—(१) अ.ल.म. ईश्वर है कोई देव नहीं वरन वह-वह जीवता और सदा काल स्थिर रहने हारा है। (२) उसने तुझपर सत्य पुस्तक उतारी है जो उसको जो उनके हाथों में है सत्य बताती है और इससे पहिले लोगों की शिक्षा के निमित्त तौरेत और इञ्जील उतारी और हमने फुरकान उतारा। (३) जो लोग ईश्वर की आयतों के मुकरने हारे हुए उनके निमित्त कठिन दण्ड है ईश्वर कठिन पलटा लेने हारा है। (४) निस्सन्देह ईश्वर से कोई वस्तु छिपी नहीं न स्वर्ग में न पृथ्वी में जिस भांति चाहता है तुम्हारा स्वरूप गर्भ में बनाता है-कोई देव नहीं वरन वही बड़ी बुद्धिवाला है। (५) उसीने तुझपर पुस्तक उतारी उसमें कुछ आयतें जो पक्की † हैं जो पुस्तक की जड़ हैं और समान ‡ हैं फिर जिन लोगों के हृदयों में टेढ़ापन है तो उस में से समान आयतों के पीछे पड़ते हैं उत्पात करने और भावार्थ गढ़ने के निमित्त केवल ईश्वर के उनका यथार्थ अर्थ कोई नहीं जानता और जो कोई विद्या में निपुण हैं कहते हैं कि हम उस पर विश्वास लाए हैं सबका सब हमारे प्रभुकी ओर से उतारा हुआ है बुद्धिवानों को छोड़ कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करता। (६) हे हमारे प्रभु शिक्षा देने के पश्चात तु हमारे मनों को टेढ़ाई की ओर मत फेर हमको अपने यहां से करुणा दे निस्सन्देह तू ही देनेहारा है। (७) हे हमारे प्रभु तू उस दिन लोगों को एकत्र करेगा जिसमें कुछ संदेह नहीं ईश्वर का वचन कभी विरुद्ध नहीं होता।

रु० २ (८) जो मुकरते हैं ईश्वर के सन्मुख उनका धन और सन्तान किसी अर्थ न आयँगे और यह लोग नर्क का ईंधन बनेंगे। (९) जैसा फिराऊन के लोगों और उनसे पहिलों का सुभाव था उन्होंने हमारे चिन्हों को झुठलाया सो ईश्वर ने उनके पापों में उनको पकड़ा ईश्वर कठिन दण्ड देनेहारा है।

---

* आयत १८० लों बदर के संग्राम और सन ६ हिजरी में उतरी हैं महम्मद साहब का विचार था कि इमरान पवित्र कुँवारी मरियम के पिता थे पवित्र मरियम और इलीशबा बहने बहने थीं-इनके उपरान्त प्रभु ईशू युहन्ना बप्तिस्मा देनेहारा और ज़करिया इमरान के कुटुम्ब में थे यहूदी मूसा की बहिन] मरियम को इमरान की पुत्री जानते थे महम्मदी टीका कारकों का विचार है कि मूसा की बहिन मरियम का शरीर और आत्मा अद्भुत रीति से रक्षित रहे जिससे खृष्ट के आने के समय लों रक्षित रहें और इस रीति मरियम खृष्ट की माता वही मरियम है जो मूसा की बहिन थी। † अर्थात मुहकम। ‡ अर्थात मुतशाबिह।

(१०) मुकरनेहारों से कह दे कि तुम शीघ्र पराजित होजाओगे और नर्क की ओर ढकेले जाओगे वह बुरा ठौर है। (११) निस्सन्देह तुम्हारे निमित उन दोनों जथाओं के परस्पर सन्मुख होने में चिन्ह हैं एक दल ईश्वर के मार्ग में लड़ता था और दूसरा अधर्मियों का था और वह अपनी आंखों से उन्हें दुगुना* देखते थे और ईश्वर अपनी सहायता से जिसकी चाहता है सहायता करता है आंखवालों के निमित इसमें बड़ी चितौनी है। (१२) लोग शारीरिक विषयों स्त्रियों बालकों स्वर्ण और रूपे के इकट्ठे किए हुए ढेरों और उत्तम खानि के घोड़े और ढोरों और खेती पर रीझ गए यह सब सान्सारिक जीवन की सामग्री है अच्छा ठिकाना ईश्वर के निकट है (१३) तू कह कि मैं तुमको उससे उत्तम वस्तु बताऊँ संयमी पुरुषों के निमित उनके प्रभु के निकट ऐसी ऐसी वारिएं हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं वह सदा उसमें बसेंगे और पवित्र स्त्रिएं हैं और ईश्वर की प्रसन्नता है ईश्वर अपने सेवकों को देखता है। (१४) वह लोग जो कहते हैं कि हे हमारे प्रभु निस्सन्देह हम विश्वास लाए सो हमारे पाप क्षमा करदे और हमको नर्क के दण्ड से बचा। (१५) वह सन्तोषी हैं सत्यवादी हैं आज्ञा पालक हैं दान करने हारे हैं जो प्रातःकाल क्षमा मांगते हैं। (१६) ईश्वर साक्षी देता है कोई ईश्वर नहीं वरन वह दूतों ने और विद्वानों ने जो न्याय पर स्थिर हैं कहा कि कोई ईश्वर नहीं वरन वह-वह शक्तिमान है और बुद्धिवान है। (१७) कहते हैं कि ईश्वर के निकट निस्सन्देह इसलाम ही मत है और पुस्तकवाले जानलेने के पश्चात् अपनी हठ के कारण इसके शत्रु होगए और जो कोई ईश्वर की आयतों से मुकर गया ईश्वर शीघ्र लेखा लेने हारा है। (१८) यदि तुझसे वह झगड़े तू कहदे मैंने और मेरे अनुगामियों ने अपना मुँह ईश्वर की ओर कर दिया। (१९) और पुस्तकवालों और उम्मियों† से पूछ क्या तुमने इसलाम को ग्रहण किया है यदि उन्हों ने इसलाम को ग्रहण किया तो उन्होंने अगुवाई पाई और यदि फिर गए तो तेरा कार्य्य तो केवल सन्देश पहुँचाना है ईश्वर मनुष्यों की दशा को देखता है॥

रु० ३ – (२०) निस्सन्देह जो ईश्वर की आयतों से मुकरते हैं और भविष्यद्वक्ताओं को अकारण मार डालते हैं और जो लोग न्याय की घात बताते उनको भी घात करते हैं उनको दुःख दायक दण्ड का समाचार दे। (२१) यह वही लोग हैं

---

*बदर के संग्राम में महम्मद साहब ने तीन सौ उन्नीस पुरुषों से एक हज़ार मक्कावालों को सन २ हिजरी में पराजित किया। † इसका अभिप्राय विशेष कर अनपढ़ नहीं वरन ऐसे लोग हैं जिनके तीर कोई ईश्वरीय पुस्तक नहीं थी अरबवाले इसी कारण उम्मी कहलाते थे॥

जिनके कार्य्य संसार और अन्तके दिनमें मिटगए और उनका कोई सहायक नहीं। (२२) क्या तूने उन मनुष्यों को नहीं देखा जिनको पुस्तक में से कुछ भाग दिया गया ईश्वर की पुस्तक की ओर वह बुलाए जाते हैं जिसतें उनमें निर्णय करें फिर उन में से एक जत्था मुँह फेरकर हट जाता है। (२३) यह बात इस कारण है कि वह कहते हैं कि हमको अग्नि कभी न छुएगी केवल थोड़े दिनों के-उनकी मिलावट ने उनको उनके मत में धोका दिया है। (२४) क्या दशा होगी जबहम उनको उसदिन जिसमें कुछ सन्देह नहीं इकट्ठा करेंगे हर मनुष्य को उसकी उपार्जन का पूरा पूरा प्रतिफल दिया जायगा और किसी पर अनीति न की जायगी। (२५) * तू कह हे ईश्वर देशके स्वामी जिसको तू चाहताहै देश † देता है और जिससे तू चाहता है देश छीन लेता है जिसे तू चाहता है आदरदेता है और जिसको चाहता है अनादर करता है तेरेही हाथ में भलाई है निस्सन्देह तू हर वस्तु पर शक्तिमान है। (२६) तू रात को दिनमें डालता है और दिनको रातमें और जीवतेसे मृतक निकालता है और मृतकसे जीवता और जिसको चाहता है अलेख जीविका देताहै। (२७) विश्वासी लोग धर्म्मियों को छोड़कर अधर्म्मियों से मित्रता न करें और जो कोई ऐसा करे तो उसका ईश्वर से कुछ सम्बन्ध नहीं परन्तु यह कि तुम उससे बहुत डरते हो और ईश्वर तुम्हें अपना भय दिलाता है और तुम्हें ईश्वर ही की ओर जाना है कहदे यदि तुम छिपाओगे जो कुछ तुम्हारे हृदयों में है अथवा उसको प्रगट करो ईश्वर उसे जानता है वह जानता है जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर प्रत्येक वस्तुपर शक्तिमान है। (२८) उस दिन प्रत्येक जन जो कुछ भलाई उसने की है सन्मुख देखेगा और जो कुछ बुराई की है आशा करेगा कि आह इसमें और मुझमें बहुत अन्तर होजाय ईश्वर तुमको अपने से भय दिलाता है ईश्वर अपने दासोंपर कृपा करने हारा है॥

रु० ४—(२९) तू कह यदि तुम ईश्वर को मित्र रखते हो तो मेरी आज्ञा पालनकरो ईश्वर तुमको मित्र रखेगा तुम्हारे पाप क्षमा करदेगा ईश्वर बड़ा क्षमा करने हारा दयालु है कहदे ईश्वर की और उसके प्रेरितकी आज्ञा पालन करो फिर यदि मुकरे तो निस्सन्देह ईश्वर अधर्म्मियों को मित्र नहीं रखता। (३०) निस्सन्देह ईश्वर ने आदमको और नूहको और इबराहीम के कुटुंब और इमरानके कुटुम्बको

---

* आयत २५ और २६ किसी खोई हुई सूरत का भाग हैं जो बेजोड़ हैं इस सूरत में मिलादीगई जिनका अगली और पिछली आयतों से कुछ सम्बन्ध नहीं है। † अर्थात् राज्य॥

समस्त सृष्टिमें प्रसिद्ध ठहराया जिसमें से कोई किसीके सन्तान थे ईश्वर सुनने हारा और जानने हारा है। (३१) जबकि इमरान की पत्नी ने कहा कि हे प्रभु जो कुछ मेरे गर्भ में है मैंने उसको शुद्धता से तेरीही भेंट किया सो मेरी ओर से ग्रहण कर निस्सन्देह तूही सुनने हारा और जानने हारा है सो जब वह उसे जनचुकी तो बोली कि हे मेरे प्रभु मैंने तो पुत्री जनी है ईश्वर को सब ज्ञान है जो कुछ वह जनी पुत्री तो पुत्रके समान * नहीं होती मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मैं उसको और उसकी सन्तान को स्थापित † दुष्टात्मा से तेरी शरण ‡ में देती हूं। (३२) फिर उसको उसके प्रभुने भलीभांति ग्रहण करलिया और उसको भलीभांति पाला और ज़करिया को उसका रक्षक ठहराया और जबकभी ज़करिया उसके निकट कोठरीमें आता तो उसके तीर खानेकी कोईवस्तु पाता पूछता हे मरियम यहतेरे निकट कहांसे आता है वहबोली ईश्वर के यहांसे आता है निस्सन्देह ईश्वर जिसको चाहे अलेख जीविका देताहै। (३३) इसी ठौर ज़करिया ने अपने प्रभुसे प्रार्थनाकी कि हे मेरेप्रभु मुझे अपने यहांसे पवित्र § स्थान दे निस्सन्देह तू प्रार्थना का सुनने हारा है सो उसको दूतों ने जब कि वह कोठरी ¶ के भीतर प्रार्थना में खड़ा था पुकारा। (३४) ईश्वर तुझको यहिया का सुसमाचार देता है जो ईश्वर के वचन की दृढ़ता करेगा वह अध्यक्ष और स्त्रियों से रहित रहेगा और भले भविष्यद्वक्ताओं में होगा। (३५) कहा हे मेरे प्रभु मेरे यहां पुत्र कैसे होगा मुझपर तो बुढ़ापा आगया और मेरी स्त्री बांझ है कहा ईश्वर जो चाहता है इसी भांति करता है। (३६) कहा हे मेरे प्रभु मेरे निमित कोई चिन्ह ठहरादे कहा तेरे निमित चिन्ह यह है कि तीन दिनलों किसी मनुष्य से केवल सैन करने के बात न करसकेगा और अपने प्रभु का सांझ और भोरे सुमरण कर अपने ईश्वर की बड़ाई कर॥

रु० ५ (३७) और जब कि दूतों ने कहा हे मरियम ईश्वर ने तुझे चुन ‖ लिया और पवित्र किया और संसार की समस्त स्त्रियों में आदर मान्य किया। (३८) हे मरियम अपने प्रभु की आज्ञा पालक होजा और झुकने हारों के संग झुक। (३९) यह गुप्त के समाचार हैं जो हम तुझपर प्रेरणा करते हैं तू उनके

---

* इसका तात्पर्य यह है कि यहूदी रीति के अनुसार स्त्रीमन्दिर में याचक नहीं होसक्ती थी। † अर्थात पथरवाह किया हुआ कहते हैं कि जब इबराहीम अपने पुत्र को बलि कर रहा था तो दुष्टात्मा-रोकता था तो उसने उसे पत्थर मार कर भगाया। ‡ महम्मदी कहते हैं कि जन्मते समय बालक को दुष्टआत्मा छूता है परन्तु पवित्र मरियम और उसके पुत्र को ईश्वर ने दुष्टात्मा को उनके छूने से रोका। § अर्थात् पुत्र ¶ लूका १:११। ‖ लूका १:२८।

समीप न था जबकि वह लेखनीयां * डालरहे थे कि हममेंसे कौन मनुष्य मरियम का रक्षक हो तू वहां नहीं था जबकि परस्पर झगड़रहे थे। (४०) जबकि दूतों ने कहा कि हे मरियम ईश्वर तुझको अपने वचन का समाचार देना है जिसका नाम मसीह ईसा है वह संसार और अन्त में आदर योग्य समीपियों † मेंसे हैं। (४१) वह लोगों से पालने में और पूर्णावय में बात करेगा और वह सुकर्म्मियों में होगा (४२) उसने कहा हे मेरे प्रभु मेरे पुत्र कैसे होगा मुझे तो किसी पुर्ष ने नहीं छुआ वह बोला कि ऐसेही जो ईश्वर करना चाहता है उत्पन्न करता है जब किसी कार्य्य को करना चाहता है तो ऐसेही कहदेता है कि हो और वह होजाता है। (४३) और ईश्वर उसको पुस्तक और बुद्धि तौरेत और इंजील का ज्ञान देग और इसराएल की ओर प्रेरित करके भेजेगा कहेगा मैं तुम्हारे तीर तुम्हारे प्रभु की ओर से चिन्ह लेकर आया हूं मैं तुम्हारे निमित मिट्टी से पक्षी बनाता हूं फिर उसमें फूंक मारता हूं और मैं जन्म अन्धे और कोढ़ी को अच्छा करता हूं और ईश्वर की आज्ञा से मृतकों में जीव डालदेता हूं और जो कुछ तुमने भोजन किया अथवा घर में धर आएहो बतादेता हूं यदि तुम विश्वास करो तो इसमें तुम्हारे निमित पूरा चिन्ह है। (४४) तौरेत जो मुझसे पहिले है उसको दृढ़ करता हूं कोई कोई वस्तु जो तुमपर अलीन थी लीन करता हूं और तुम्हारे निकट तुम्हारे प्रभु की ओर से चिन्ह लेकर आया हूं सो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो निस्सन्देह ईश्वर मेरा प्रभु और तुम्हारा प्रभु है सो उसकी आराधना करो यही सीधा मार्ग है। (४५) फिर जब ईसा ने उनका अधर्म्म जानलिया और कहा कौन है जो ईश्वर के मार्ग में मेरा सहायक हो हवारियों ‡ ने कहा हम ईश्वर के सहायक हैं और हम ईश्वर पर विश्वास लाए हैं तू साक्षी रह कि हम आज्ञापालक हैं। (४६) हे प्रभु हम उसपर विश्वास लाए जो तूने उतारा है और हम प्रेरित के आज्ञापालक हुए हमको साक्षियों में लिखले। (४७) उन्होंने छल किया ईश्वर ने भी छल किया ईश्वर सब छलियों में उत्तम है॥

रु० ६—(४८) जबकि ईश्वर ने कहा कि हे ईसा मैं तुझे मृत्यु§ देने को हूं और अपने तीर उठानेवाला हूं और जो लोग तेरे अनुगामी हुए हैं उनको पुनरुत्थान लौं अधर्म्मियों पर प्रबल रखूंगा फिर मेरी ओर तुमको लौट आना है तब मैं

---

* टीका करनेहारे कहते हैं कि जकरिया के संग और याजकों ने व्यवस्था की आयतें लिखकर यर्दन नदी में डालीं कि जिसकी लेखनी तैरती रहे वही मरियम का रक्षक नियत हो सो जकरिया की लेखनी तैरती रही और वह मरियम का रक्षक बना। † अर्थात् ईश्वर के समीपियों में से। ‡ सूरए मायदा १११। § देखो सूरए निसा १५६ मरियम १४ आयत को॥

तुममें निर्णय करदूंगा जिस बात में तुम विभेद करते हो। (४९) फिर जो लोग मुकरने हारे हैं उनको संसार और अन्त में दण्ड मिलेगा उनका कोई सहायक न होगा। (५०) और जो विश्वास लाए हैं और सुकर्म्म किए ईश्वर उनको उनका पूरा पूरा प्रतिफल देगा ईश्वर दुष्टों को मित्र नहीं रखता। (५१) यह बातें जो हम पढ़कर सुनाते हैं भली आयतों का वृत्तान्त है। (५२) निस्सन्देह ईसा का दृष्टान्त ईश्वर के निकट आदम* के समान है जिसको उसने मिट्टी से बनाया और कहा हो तो होगया। (५३) तेरे प्रभु की ओर से सत्य बात यही है तू सन्देह करनेहारों में मत हो। (५४) जो कोई इस विषय में तुझसे झगड़े † जब तू सत्य बात जान चुके तू कहदे कि आओ हम अपने बेटे और तुम्हारे बेटे अपनी स्त्रियें और तुम्हारी स्त्रियें बुलाएं और हमभी ‡ और तुमभी यह कहके प्रार्थना करो कि झूठों पर ईश्वर का श्राप हो (५५) निस्सदेह ठीक वृतान्त यही है ईश्वर को छोड़ कोई ईश्वर नहीं निस्सन्देह ईश्वरही बलवान बुद्धिवाला है (५६) सो यदि वह फिर जांय तो ईश्वर को झगड़ा करने हारों का ज्ञान है।

रु० ७—(५७) कह हे पुस्तक वालो आओ एक बातकी ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच एक है कि हम ईश्वर के उपरान्त किसी की बंदगी न करें न उसका किसी को साझी ठहरावें न तुम में से कोई ईश्वर के उपरान्त किसी को स्वामी § बनाए सो यदि वह फिर जावें तो उन से कह कि तुम साक्षी रहो कि हम मुसल्मान हैं (५८) हे पुस्तकवालो तुम इबराहीम के विषय में क्यों विवाद ¶ करते हो तौरेत और इंजील तो उसके पीछे उतरी हैं क्या तुम को इतनी भी बुद्धि नहीं (५९) सुनो जिस विषय में तुमको कुछ ज्ञान था उसका तो तुम झगड़ा कर चुके सो जिस बात की तुमको सुधि नहीं उस में गझड़ा क्यों करते हो ईश्वर जानता है और तुम नहीं जानते। (६०) इबराहीम न यहूदी था न खृष्टियान था वह तो हनफ़ी $ मुसलमान था और साझी ठहराने हारों में न था। (६१) इबराहीम का सम्बन्ध उन लोगों से अधिक था जो उसके अनुगामी थे और इस‖ भविश्यद्वक्ता का और उन लोगों का जो

---

* अर्थात् दोनों का कोई संसारिक पिता न था। † यह उस दुताई का वर्णन है जो नजरान के खृष्टियान राजा ने अपने बिशप के संग महम्मद साहब के तीर मदीना में भेजी थी दूतसभा ने यह ठहरा लिया था कि हम करेंगे यदि हमारे धर्म्म और देश में रोकटोक न कीजाय। ‡ अर्थात् तुम आप और हम आप देखो उत्पत्ति १२ : ५। § अर्थात् खृष्टियान अपने बिशपों और महन्तों को प्रभु कहके पुकारते थे। ¶ अर्थात् वह न यहूदी था न खृष्टियान। $ नहल १२१। ‖ अर्थात् महम्मद साहब ॥

उसपर विश्वास लाए हैं ईश्वर विश्वासियों का मित्र है। (६२) पुस्तकवालों की एक जत्था चाहता था कि तुमको भटकावें वह किसी को नहीं भटकाते वरन अपने आपको और नहीं समझते। (६३) हे पुस्तक वालो तुम ईश्वर की आयतों से क्यों मुकरते हो यद्यपि तुम आपही साक्षी हो। (६४) हे पुस्तक वालो सत्य में असत्य क्यों मिलाते हो और जान बूझ कर सत्य को क्यों छिपाते हो॥

रु० ८—(६५) पुस्तक वालों के एक जत्था ने कहा कि उसपर विश्वास लाओ जो विश्वासियों पर उतरा है प्रात काल को विश्वास लाओ और सन्ध्या को उससे मुकर जाओ कदाचित वही फिर जावें। (६६) और किसी का विश्वास न करो केवल उसके जो तुम्हारे मत पर चले कहदे निस्सन्देह शिक्षा तो वही है जो ईश्वर की शिक्षा है कि प्रत्येक को वैसाही मिल सकता है जैसा तुमको दिया गया है फिर यदि तुम से तुम्हारे प्रभु के * यहां झगड़ा करें कहदे निस्सन्देह अनुग्रह ईश्वर ही के हाथ में है जिसको चाहता है देता है ईश्वर बड़ा दाता है (६७) अपनी दया से जिसको चाहता है अभिषेक करता है ईश्वर बड़े अनुग्रह वाला है (६८) पुस्तक वालों में कोई ऐसा है कि यदि तू उसके समीप सोने का ढेर छोड़े तो वह तुझको फेर देगा और उनमें ऐसा भी है कि यदि तू उसके तीर एक † सूकी छोड़े वह तुझको फेर न देगा यहांलों कि तू उसके सिर पर जा खड़ा हो (६९) यह इस कारण कि उन्हों ने कह रखा है कि अशानों के विषय में कोई पूछपाछ नहीं वह ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधते हैं और वह उस को जानते हैं (७०) वरन जो कोई अपनी वाचा पूरी करे और संयमी रहे निस्सन्देह ईश्वर संयमियों को मित्र रखता है (७१) जो लोग ईश्वर की वाचा और अपनी किरियाओं को तुच्छ मोल की सन्ती बेंचते हैं वह वही लोग हैं जिन के निमित्त अन्त के दिन में कोई भाग नहीं और ईश्वर पुनरुत्थान के दिन न उन से बात करेगा न उनकी ओर दृष्टि करेगा और न उनको पवित्र करेगा उनके निमित्त कठिन दण्ड है (७२) और इनमें एक जत्था ऐसा भी है जो पुस्तक को जीभ मरोड़ कर पढ़ता है जिस से तुम समझो कि वह पुस्तक में है यद्यपि वह पुस्तक में नहीं और कहते हैं कि वह ईश्वर की ओर से है यद्यपि वह ईश्वरकी ओर से भी नहीं और जान बूझकर ईश्वर पर झूठ बांधते हैं (७३) किसी मनुष्य को यह शक्ति नहीं कि ईश्वर उसको पुस्तक और बुद्धि और भविष्यद्वाक्य दे और वह

---

* अर्थात विषय में। † अर्थात दीनार अर्थात सब से छोटा सिक्का।

लोगों से * कहता फिरे कि ईश्वर को छोड़ के मेरी ही अराधना करो वरन यह की ईश्वरीय पुस्तककी शिक्षामें प्रवीण होजाओ तुम पुस्तकको जानते हो और तुमने उनको पढ़ा है (७४) वह तुमको यह नहीं कहता कि तुम दूतों और भविष्यद्वक्ताओं को प्रभु ठहरालो क्या तुम्हारे मुसलमान होने के पीछे वह तुमको अधर्म सिखायगा।

रु० ९—(७५) जब कि ईश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं से † वाचाली कि जिस समय मैंने तुमको पुस्तक और बुद्धिदी फिर तुम्हारे निकट कोई प्रेरित आया जो उसको सिद्ध करता है जो तुम्हारे तीर हैं तो अवश्य उस पर विश्वास लाइयो और उसकी सहायता कीजियो ईश्वर ने कहा क्या तुमने प्रतिज्ञा करके मेरी वाचा ग्रहण की वह बोले हमने प्रतिज्ञा की ईश्वर ने कहा सो अब साक्षी रहो और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूं (७६) सो अब जो कोई उससे फिर जावे वही अपराधी हैं (७७) क्या ईश्वर के मतके उपरांत और चाहते हैं यद्यपि हर एक मनुष्य जो स्वर्ग और पृथ्वी में है सहर्ष और बरियाई उसीके साम्हने झुकते हैं और उसी की ओर पलट जायंगे (७८) तू कह कि हम ईश्वर पर विश्वास लाए और उस पर जो हम पर उतरा और जो इबराहीम इसमाईल और इजहाक और याकूब की सन्तानपर उतरा और जो कुछ मूसा और ईसा और सब भविष्यद्वक्ताओं को उनके प्रभु की ओर से दिया गया हम उन में से किसी में भी कुछ विभेद नहीं करते हम उसके आज्ञा पालक हैं (७९) और जो कोई इसलाम को छोड़ और मत ग्रहण करे तो वह कभी भी ‡ ग्रहण न किया जायगा और वह पुनरुत्थान के दिन कठिन हानि उठाने हारों में होगा (८०) ईश्वर ऐसी जातिकी अगुवाई क्योंकर करेगा जो विश्वास लाने के पश्चात् अधर्मी होगई हो और साक्षी दी हो कि निस्सन्देह प्रेरित सत्य है और उसके पीछे खुले चिन्ह आचुके हैं ईश्वर दुष्टों की अगुवाई नहीं करता (८१) वही हैं जिनका दण्ड यह है कि उन पर ईश्वर और दूतों का और सब मनुष्यों का श्राप है (८२) सदा उसी में रहेंगे उन पर से दण्ड न्यून न होगा और न उन पर दृष्टि की जायगी (८३) परन्तु

---

* इसमें महम्मद साहब यह प्रगट करते हैं कि ख्रृष्ट ने लोगों से कभी यह न कहा होगा कि ईश्वर के संग मेरी भी अराधना करो वरन उसके अनुगामियों ने आप ही ख्रृष्ट को परमेश्वर बना लिया॥

† यहूदियों में भी इस प्रकार की बात प्रसिद्ध है कि जब परमेश्वर ने सीना पर्ब्बत पर व्यवस्था दी तो समस्त भविष्यद्वक्ता अपनी उत्पती से पहिले वहां उपस्थित थे।

‡ अर्थात ईश्वर उसके उस मत को ग्रहण करने के कारण ग्रहण न करेगा अर्थात क्षमा न करेगा॥

जिन्होंने उसके पीछे पश्चाताप किया और भलाई की तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है (८४) निस्सन्देह जो विश्वास लाने के पश्चात् अधर्मी हुए और अधर्म्म में अति की उन का पश्चाताप कभी ग्रहण न किया जायगा वही लोग भटके हुए हैं। (८५) जो लोग अधर्मी हुए और अधर्म्मही में मरगए तो ऐसे किसी से पृथ्वी भर कर स्वर्ण भी बदले में ग्रहण न होगा ऐसेही लोगों के निमित दुःख देने हारा दण्ड है और उनका कोई सहायक नहीं ॥

रु० १०—(८६) तुम कभी भलाई को न पहुंचोगे जबलों कि उन वस्तुओं में से व्य न करो जिनसे तुमको प्रीति है और जो कुछ तुम व्य करोगे निस्सन्देह ईश्वर उसको जानता है। (८७) सब भोजन की वस्तुएं इसरायल सन्तान पर लीन थीं केवल उसके जिसको इसरायल ने अपने प्राण पर तौरेत उतरने से पहिले मलीन ठहरा लिया था तू कह लाओ तौरेत और उसको पढ़ो यदि तुम सत्यवादी हो। (८८) फ़िर जो कोई ईश्वर पर इसके पीछे दोष लगाए वही लोग दुष्ट हैं। (८९) कहदे ईश्वर ने सत्य कहा कि तुम इबराहीम हनीफ़ के मत के अनुगामी होजाओ वह साभी ठहराने हारों में न था। (९०) निस्सन्देह सब में पहिला घर जो लोगों के निमित बना है वह वही है जो मक्का में है अशीष वाला और शिक्षा सब सृष्टियों के निमित है। (९१) इबराहीम के उसमें प्रत्यक्ष चिन्ह हैं जो उसके भीतर आता है चैन पाता है और उस घर की यात्रा करना लोगों पर ईश्वर ने जो वहां पहुंचने की शक्ति रखे उचित ठहराई। (९२) और जो कोई मुकरा तो ईश्वर को संसार के लोगों की चिन्ता नहीं। (९३) तू कह कि हे पुस्तक वालो तुम ईश्वर की आयतों से क्यों मुकरते हो ईश्वर साक्षी है जो कुछ तुम करते हो। (९४) कह कि हे पुस्तक वालो तुम ईश्वर के मार्ग से उसको क्यों रोकते हो जो विश्वास लाया तुम ईश्वर के मार्ग को टेढ़ा करना चाहते हो और ईश्वर जानता है जो कुछ तुम करते हो। (९५) हे विश्वासियो यदि तुम उनमें से एक जत्था के जिनको पुस्तक दीगई है अनुगामी हो तो वह तुमको तुम्हारे विश्वास से फेरकर अधर्मी बनायेंगे। (९६) तुम क्योंकर मुकरोगे यदि तुम पर ईश्वर की आयतें पढ़ सुनाई जाती हैं और तुममें उसका प्रेरित है जो कोई ईश्वर को दृढ़ पकड़े रहे तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग पर स्थिर होगया ॥

रु० ११—(९७) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो जैसा उससे डरना उचित है और तुम न मरना बरन मुसलमान * होकर। (९८) और तुम सब मिलकर

---

* अर्थात तुम्हारी मृत्यु इसलाम मत में हो ॥

लोगों से * कहता फिरे कि ईश्वर को छोड़ के मेरी ही अराधना करो वरन यह की ईश्वरीय पुस्तककी शिक्षामें प्रवीण होजाओ तुम पुस्तकको जानते हो और तुमने उसको पढ़ा है (७४) वह तुमको यह नहीं कहता कि तुम दूतों और भविष्यद्वक्ताओं को प्रभु ठहरालो क्या तुम्हारे मुसलमान होने के पीछे वह तुमको अधर्म सिखायगा।

रु० ९—(७५) जब कि ईश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं से † याचाली कि जिस समय मैंने तुमको पुस्तक और बुद्धिदी फिर तुम्हारे निकट कोई प्रेरित आया जो उसको सिद्ध करता है जो तुम्हारे तीर हैं तो अवश्य उस पर विश्वास लाइयो और उसकी सहायता कीजियो ईश्वर ने कहा क्या तुमने प्रतिज्ञा करके मेरी याचा ग्रहण की वह बोले हमने प्रतिज्ञा की ईश्वर ने कहा सो अब साक्षी रहो और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षी हूं (७६) सो अब जो कोई उससे फिर जावे वही अपराधी है (७७) क्या ईश्वर के मतके उपरांत और चाहते हैं यद्यपि हर एक मनुष्य जो स्वर्ग और पृथ्वी में है सहर्ष और बरियाई उसीके साम्हने झुकते हैं और उसी की ओर पलट जांयगे (७८) तू कह कि हम ईश्वर पर विश्वास लाए और उस पर जो हम पर उतरा और जो इबराहीम इसमाईल और इजहाक और याकूब की सन्तानपर उतरा और जो कुछ मूसा और ईसा और सब भविष्यद्वक्ताओं को उनके प्रभु की ओर से दिया गया हम उन में से किसी में भी कुछ विभेद नहीं करते हम उसके आज्ञा पालक हैं (७९) और जो कोई इसलाम को छोड़ और मत ग्रहण करे तो वह कभी भी ‡ ग्रहण न किया जायगा और वह पुनरुत्थान के दिन कठिन हानि उठाने हारों में होगा (८०) ईश्वर ऐसी जातिकी अगुवाई क्योंकर करेगा जो विश्वास लाने के पश्चात् अधर्मी होगई हो और साक्षी दी हो कि निस्सन्देह प्रेरित सत्य है और उसके पीछे खुले चिन्ह आचुके हैं ईश्वर दुष्टों की अगुवाई नहीं करता (८१) यही हैं जिनका दण्ड यह है कि उन पर ईश्वर और दूतों का और सब मनुष्यों का श्राप है (८२) सदा उसी में रहेंगे उन पर से दण्ड न्यून न होगा और न उन पर दृष्टि की जायगी (८३) परन्तु

---

* इसमें महम्मद साहब यह प्रगट करते हैं कि खृष्ट ने लोगों से कभी यह न कहा होगा कि ईश्वर के संग मेरी भी अराधना करो वरन उसके अनुगामियों ने आप ही खृष्ट को परमेश्वर बना लिया॥

† यहूदियों में भी इस प्रकार की बात प्रसिद्ध है कि जब परमेश्वर ने सीना पर्व्वत पर व्यवस्था दी तो समस्त भविष्यद्वक्ता अपनी उत्पत्ती से पहिले वहां उपस्थित थे। ‡ अर्थात ईश्वर उसके उस मत को ग्रहण करने के कारण ग्रहण न करेगा अर्थात क्षमा न करेगा॥

जिन्होंने उसके पीछे पश्चाताप किया और भलाई की तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है (८४) निस्सन्देह जो विश्वास लाने के पश्चात् अधर्मी हुए और अधर्म्म में अति की उन का पश्चाताप कभी ग्रहण न किया जायगा यही लोग भटके हुए हैं। (८५) जो लोग अधर्म्मी हुए और अधर्म्मही में मरगए तो ऐसे किसी से पृथ्वी भर कर स्वर्ण भी बदले में ग्रहण न होगा ऐसेही लोगों के निमित दुःख देने हारा दण्ड है और उनका कोई सहायक नहीं॥

रु० १०—(८६) तुम कभी भलाई को न पहुचोगे जबलों कि उन वस्तुओं में से व्य न करो जिनसे तुमको प्रीति है और जो कुछ तुम व्य करोगे निस्सन्देह ईश्वर उसको जानता है। (८७) सब भोजन की वस्तुएं इसरायल सन्तान पर लीन थीं केवल उसके जिसको इसराएल ने अपने आत्मा पर तौरेत उतरने से पहिले अलीन ठहरा लिया था तू कह लाओ तौरेत और उसको पढ़ो यदि तुम सत्यवादी हो। (८८) फ़िर जो कोई ईश्वर पर इसके पीछे दोष लगाए वही लोग दुष्ट हैं। (८९) कहदे ईश्वर ने सत्य कहा कि तुम इबराहीम हनीफ़ के मत के अनुगामी होजाओ वह साझी ठहराने हारों में न था। (९०) निस्सन्देह सब में पहिला घर जो लोगों के निमित बना है वह यही है जो मक्का में है अशीष वाला और शिक्षा सब सृष्टियों के निमित है। (९१) इबराहीम के उसमें प्रत्यक्ष चिन्ह हैं जो उसके भीतर आता है चैन पाता है और उस घर की यात्रा करना लोगों पर ईश्वर ने जो वहां पहुंचने की शक्ति रखे उचित ठहराई। (९२) और जो कोई मुकरा तो ईश्वर को संसार के लोगों की चिन्ता नहीं। (९३) तू कह कि हे पुस्तक वालो तुम ईश्वर की आयतों से क्यों मुकरते हो ईश्वर साक्षी है जो कुछ तुम करते हो। (९४) कह कि हे पुस्तक वालो तुम ईश्वर के मार्ग से उसको क्यों रोकते हो जो विश्वास लाया तुम ईश्वर के मार्ग को टेढ़ा करना चाहते हो और ईश्वर जानता है जो कुछ तुम करते हो। (९५) हे विश्वासियो यदि तुम उनमें से एक जत्था के जिसको पुस्तक दीगई है अनुगामी हो तो वह तुमको तुम्हारे विश्वास से फेरकर अधर्म्मी बनायंगे। (९६) तुम क्योंकर मुकरोगे यदि तुम पर ईश्वर की आयतें पढ़ सुनाई जाती हैं और तुममें उसका प्रेरित है जो कोई ईश्वर को दृढ़ पकड़े रहे तो निस्सन्देह वह सीधे मार्ग पर स्थिर होगया॥

रु० ११—(९७) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो जैसा उससे डरना उचित है और तुम न मरना वरन मुसलमान * होकर। (९८) और तुम सब मिलकर

* अर्थात तुम्हारी मृत्यु इसलाम मत में हो॥

दृढ़ता से ईश्वर की डोरी को थांभलो और भिन्न २ न होओ ईश्वर का जो उपकार तुम पर हुआ उसे स्मरण करो कि जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे उसने परस्पर तुम्हारे हृदयों को मिला दिया और तुम उसके उपकार से परस्पर भाई बनगए। (९९) तुम अग्नि से भरे हुए गड्ढे के किनारे थे कि ईश्वर ने तुमको उससे बचा लिया इसी भांति ईश्वर तुम पर अपने चिन्ह वर्णन करता है जिस्से तुम मार्ग पाजाओ। (१००) और तुममें एक मण्डली ऐसी होनी चाहिये जो लोगों को भलाई की ओर बुलावे और भले कार्य्य करने की आज्ञा दे और बुरे कार्य्यों से बर्जे और यही लोग लाभ उठाने हारे हैं। (१०१) और उन लोगों के समान मत होओ जिन्हों ने पश्चात इसके कि उनके तीर चिन्ह आगए फूट डाली और विभेद किया वही लोग हैं जिनके निमित्त कठिन दण्ड है। (१०२) जिस दिन कुछ मुँह ज्योति मय हो जायँगे और कुछ काले होजायँगे सो जिनके मुँह काले होंयँगे कहा जायगा क्या तुम विश्वास लाकर अधर्मी बनगए सो अपने अधर्म्म के कारण दण्ड भोगो। (१०३) और जिनके मुँह ज्योति मय हैं वह ईश्वर की दया में होंगे और उसमें सदा रहेंगे। (१०४) यह ईश्वर की आयतें हैं जो हम तुमको ठीक २ पढ़ सुनाते हैं ईश्वर पृथ्वी पर अन्याय करने की इच्छा नहीं करता (१०५) ईश्वर ही का है जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है और सब बातों को ईश्वर ही की ओर लौट जाना है।

रु० १२ (१०६) तुम सब जातियों में उत्तम हो जो विश्वास में प्रगट हुई तुम अच्छे कार्य्यों के करने को कहते हो और बुरे कार्य्यों के करने को बर्जते हो ईश्वर पर विश्वास रखते हो यदि पुस्तक वाले भी विश्वास लेआवें तो निस्सं-देह उनके निमित्त अच्छा है इनमें कोई तो विश्वासी हैं और बहुधा कुचाली हैं। (१०७) वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे केवल इसके कि तुमको कुछ दुखदें यदि तुमसे लड़ेंगे तो तुमको पीठ दिखावेंगे फिर उनकी सहायता न की जायगी। (१०८) वह अनादर किए जांयगे जहां कहीं भी पाए जायँगे बिना ईश्वर की अथवा मनुष्यों की शरण के वह ईश्वर के कोपमें पड़ेंगे उनपर दरिद्रता डाली गई यह इस कारण हुआ कि वह ईश्वर की आयतों के मुकरने हारे हुए भविष्यद्वक्ताओं को अकारण घात कर डालते थे यह कार्य्य उनके पाप करने और मर्य्यादा से अधिक बढ़ने के कारण से हुआ। (१०९) पुस्त वालों में एक ऐसा भी जत्था है जो ठीक मार्ग पर स्थिर है और रात भर ईश्वर की आयतें पढ़ता है और दण्डवत करता है। (११०) वह ईश्वर और अन्त के दिन पर विश्वास करते लोगों को

अच्छे कार्य्य करने को कहते हैं और बुरे कार्य्य से वर्जते और भले कार्य्यों में शीघ्रता करते हैं यही लोग सुकर्मियों में हैं। (११४) जो कुछ भलाइयां वह करते हैं मिटाई न जायँगी ईश्वर संयमियों को जानता है। (११६) निस्संदेह जो लोग मुकरते हैं उनके धन और सन्तान ईश्वर के सामने कुछ भी अर्थ न आयँगे और यही लोग नर्कगामी हैं और सदा उसमें रहेंगे। (११७) वह जो कुछ संसार के जीवन में व्यय करते हैं उसका दृष्टान्त ऐसी बयार के समान है जिसमें कठिन पाला हो जो एक ऐसी जाति की खेती पर गिरे जिसने अपने ऊपर अन्याय किया हो फिर समस्त खेती मारी जाय ईश्वर ने उनपर अन्याय नहीं किया पर वह अपने विषय में आपही अन्याय करते थे। (११८) हे विश्वासियो ! अपने लोगों को छोड़ किसी को अपना भेदी मत बनाओ वह तुम्हारी हानि में न्यूनता नहीं करते वह उस वस्तु को मित्र रखते हैं जो तुमको शोक पहुँचाती है निस्सन्देह उनके मुहकी बातों से शत्रुता प्रगट होती है और जो कुछ उनके मनों में छिपा है सो उससे अधिक है निस्सन्देह हमने तुमको अपने चिन्ह बतला दिए यदि तुम बुद्धिमान हो। (११९) देखो जिन लोगों को तुम मित्र रखते हो उनको तुम्हारे सङ्ग प्रीति नहीं है तुम पूरी पुस्तक पर विश्वास रखते हो और जब वह तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम विश्वास लाए और जब अकेले होते हैं तो तुम पर क्रोध के मारे उँगलियां चबाते हैं कहदे अपने क्रोधमें मरजाओ निस्सन्देह ईश्वर मनकी बातों को जानता है। (१२०) यदि तुमको कोई भलाई पहुँचती है तो इनसे उनको शोक होता है और जब कोई कठिनाई तुम पर आपड़े तो वह हर्षित होते हैं सो यदि तुम धीरज धरोगे और डरते रहोगे तो उनका छल तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ न सकेगा निस्सन्देह ईश्वर उनके कार्य्यों को घेरे हुए है।

रु० १३—(१२१) जब तू भोर को अपने घरसे निकल कर विश्वासियों को लड़ाई * के निमित्त ठिकाने पर बैठाने लगा ईश्वर सुनता और जानता है। (१२२) जब कि तुम में से दो जत्थाओं ने कायर होने की इच्छाकी तो ईश्वरही उनका स्वामी था उचित है कि विश्वासी ईश्वरही पर भरोसा करें। (१२३) निस्सन्देह ईश्वर ने तुमको बदर के युद्ध में विजयदी यद्यपि तुम तुच्छ थे ईश्वर से डरो कि तुम धन्यवादी बनो। (१२४) और जब तू विश्वासियों से कहरहा था कि क्या तुम्हारे निमित्त तुम्हारा प्रभु बस नहीं तीन सहस्र दूत गण तुम्हारी सहायता को भेजे है। (१२५) क्यों नहीं यदि तुम संयमी बनो और ईश्वर से डरो और वह

* इसका अभिप्राय उहद के संग्राम से जान पड़ता है ॥

अधर्म्मी लोग तुमपर अचानक आएं तो अभी तुम्हारा प्रभु पांच सहस्र महिमा युक्त दूतों से तुम्हारी सहायता करेगा। (१२२) और ईश्वर ने तो इसको तुम्हारे निमित एक शुभ समाचार और तुम्हारे हृदयों के निमित शान्ति का कारण ठहराया और जीत तो केवल बड़े बुद्धि वाले ईश्वरही की ओर से है कि तुम दुष्टों के एक जत्था को घात करो अथवा उनका अनादर करो जिसते वह परास्त होकर पीछे चलेजायँ। (१२३) इस विषय में तेरा कुछ भी वश नहीं चाहे वह उसको क्षमा करदे अथवा दण्ड दे क्योंकि निस्सन्देह वह दुष्ट हैं। (१२४) और ईश्वर ही का धन है जो कुछ स्वर्ग और पृथ्वी में है जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दुखदे ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है।

रु० १४—(१२५) हे विश्वासियो दुगने पर दुगना ब्याज मत खाओ ईश्वर से डरो कि तुम मनोर्थ पाओ। (१२६) उस अग्नि से डरो जो मुकरनेहारों के निमित बनी है ईश्वर और प्रेरित के आज्ञाकारी रहो जिस्तें तुमपर दया हो। (१२७) अपने प्रभु की क्षमा की ओर दौड़ो और उस बैकुण्ठ की ओर जिसकी चौड़ाई स्वर्गों और पृथ्वी की बराबर है जो संयमियों के निमित बना है। (१२८) वह लोग जो आनन्द * और कष्ट में व्यय करते हैं और क्रोध को पीजाते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं और ईश्वर उपकारियों को मित्र रखता है। (१२९) और वह लोग जो कभी कोई निर्लज्जता कर बैठें अपने प्राणों पर अनीति करते हैं तो ईश्वर को स्मर्ण करते हैं फिर अपने पापों की क्षमा चाहते हैं ईश्वर को छोड़ कौन पाप क्षमा करसकता है वह इनके किए पर हठ नहीं करते और वह जानते हैं। (१३०) उन लोगों का प्रतिफल उनके प्रभु के यहां से क्षमा और बैकुण्ठ है जिनके नीचे धाराएं बहरही हैं उसमें सदा रहेंगे कार्य्य † करनेहारों का क्या उत्तम प्रतिफल है। (१३१) तुमसे पहिले बहुत से वृत्तान्त बीतचुके हैं तुम पृथ्वी में फिरके देखो कि झुठलाने वालों का क्या अन्त हुआ। (१३२) यह लोगों के निमित दृष्टान्त है और संयमियों के निमित शिक्षा है। (१३३) ‡ अब तुम आलसी मत बनो और शोकित मत हो तुमहीं प्रबल रहोगे तुम विश्वासी बनो। (१३४) यदि तुम्हारे घाव हुआ तो उस जाति को भी ऐसाही घाव होचुका है और यह औसरही है जिसको हम लोगों में अदलते बदलते रहते हैं और तू कह कि ईश्वर को सच्चे

* अर्थात् धनवान और दरिद्री दशा में। † अर्थात् सुकर्म्म करने हारों का ‡ आयत १३३ से १९४ लौं उहद के संग्राम के हारने के पीछे उतरीं॥

विश्वासी जानपड़ें और तुममेंसे किसी को साक्षी * बनावे ईश्वर दुष्टों को मित्र नहीं रखता। (१३५) और तू कह कि ईश्वर निष्कपट विश्वासियों को परखले और अधर्म्मियों को नाश करडाले। (१३६) क्या तुम्हारा विचार है कि तुम बैकुण्ठ में प्रवेश करोगे अभी तो ईश्वर ने उनमें से जो युद्ध † करने हारे हैं और जो स्थिर रहनेहारे हैं उनको जांचाही नहीं। (१३७) तुम मृत्यु की आशा उसके मिलने के पहिले तो करते थे अबतो तुमने उसको देख लिया और तुम देखतेहो॥

रु० १५—(१३८) ‡ और महम्मद तो केवल एक प्रेरित है और कुछ नहीं है उससे पहिले बहुत प्रेरित बीत चुके क्या यदि वह मरजाए अथवा माराजाए तो उलटे पाँव फिरजाओगे और जो कोई उलटे पाँव फिर जायगा व ईश्वर की तो कुछ भी हानि न करसकेगा ईश्वर धन्यवाद माननेहारे लोगों को वेग प्रतिफल देगा। (१३९) और कोई मनुष्य ईश्वर की आज्ञा के विना नहीं मरसकता समय लिखा हुआ है जो कोई संसार की भलाई चाहता है हम उस में उसको देंगे और जो कोई अंतका प्रतिफल चाहता है हम उसको उसमें देंगे और धन्यवाद करने हारों को प्रतिफल देंगे। (१४०) और भविष्यद्वक्ताओं में से बहुत ऐसे हैं कि उनके साथ होकर बहुतसे प्रभु के दास लड़ते थे और फिर वह लोग ईश्वर के मार्ग में दुःख पाने से नहीं हारे और न आलसी ही हुए न दब गए ईश्वर को स्थिर रहने हारे प्रसन्न हैं। (१४१) वह यही कहते रहे कि हे हमारे प्रभु हमारे पाप क्षमा करदे और जो कुछ हमारे कार्य्यों में अनीति हुई वह भी क्षमा कर और हमारी मर्य्यादों को स्थिर रख और अधर्म्मी जाति पर हमें सहायता दे फिर ईश्वर ने उनको संसार का यश और अंत के दिन प्रतिफल दिया॥

रु० १६—(१४२) हे विश्वासियो यदि तुम अधर्म्मियों का कहा मानोगे तो तुम्हें तुम्हारी एड़ियों पर फेर § देंगे और तुम हानि उठाने हारों में हो जाओगे। (१४३) वरन ईश्वर तुम्हारा सहायक है वह अच्छा सहायक है। (१४४) हम उन लोगों के हृदयों पर जो अधर्म्मी हुए शीघ्र भय डाल देंगे इस कारण कि उन्हों ने इस वस्तु को ईश्वर का साझी ठहराया जिस के विषय में कोई प्रमाण नहीं

---

* अर्थात् शहीद। † अर्थात जिहाद। ‡ यह आयत और सूरए ज़ुमर की ३१ अबूबकरने महम्मद साहब की मृत्यु के समय पढ़ी थीं जिस्तें उमर और दूसरे महम्मदियों को निश्चय होजाय कि महम्मद साहब भी दूसरे मनुष्यों के समान मृत्यु के वश में थे किसी किसी का विचार है कि इन आयतों का कथां अबूतार ही है नहद के युद्ध में महम्मद साहब की मृत्यु का समाचार लोगों ने उड़ा दिया था और महम्मदी निराश हुए जाते थे। § अर्थात् तुमको अधर्म्मी बना देंगे॥

उतरा उन का ठिकाना नर्क है बुरों का ठिकाना बुरा है। (१४५) निस्सन्देह ईश्वर ने तुम से सत्य बाचा की है जब कि तुम उन को उस की आज्ञा से काट रहे थे यहां लों कि जब तुम आप ही कायर हुए और तुम ने कार्य्य में उपद्रव * किया और आज्ञा उलंघन की तत्पश्चात ईश्वर ने तुम को वह कुछ दिखाया जो कुछ तुम चाहते थे। (१४६) तुम में से कुछ लोग हैं जो संसार को चाहते थे और कुछ वह हैं जो अंत † के दिन को चाहते थे जिस्तें तुम्हारी परिक्षा करे उस ने तुम को उन ‡ की ओर फेर दिया फिर भी उस ने तुम को क्षमा § किया क्यों कि ईश्वर विश्वासियों के निमित अनुग्रह से परि पूर्ण है। (१४७) और कि तुम वेग से भागे चले जाते थे और किसी की ओर मुड़ कर भी न देखते थे और तुम को प्रेरित पीछे से पुकार रहा था फिर तुम को दण्ड दिया शोक पर शोक जिस्तें जो कुछ तुम ने खो दिया अथवा जो तुम्हारे साम्हने है उस पर शोक न करो ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को जानता है। (१४८) फिर तुम पर उस शोक के पीछे शान्ति उतरी वह एक उँघाई थी कि तुम में से एक जत्था को घेर रही थी एक जत्था को अपने जी की चिन्ता पड़ रही थी वह ईश्वर के विषय में अज्ञानियों की नाईं अनर्थ दुर्विचार करता था और उन्हों ने कहा कि इसमें कुछ भी हमारे ¶ बस में नहीं था तू कहदे निस्सन्देह सब कार्य्य ईश्वर के हाथ में हैं वह अपने मनों में वह बातें छिपा रखते हैं जो तुझ पर प्रगट नहीं करते कहते हैं कि यदि कोई बात भी हमारे हात में होती तो हम यहां घात न होते तू कहदे यदि तुम घरों में भी होते तो जिनके लिये घात होना बदा था वह निश्चय अपने घात होने की जगह पर निकल कर आही जाते और यह सब इस कारण हुआ कि ईश्वर तुम्हारे मनों की बातों की परिक्षा करे और ईश्वर को तुम्हारे मनों के भीतर की बातों का ज्ञान है। (१४९) जो लोग तुम में से दोनों दलों के सनमुख होने के दिन पीठ फेर गए उन को दुष्टात्मा ने कुछ कार्य्यों के कारण बहका दिया ईश्वर ने उनके अपराध क्षमा किए निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा और कोमल स्वभाव है॥

रु०—१७ (१५०) हे विश्वासी लोगो उन लोगोंके समान मत होओ जो अधर्मी हुए और अपने भाइयों से जब कि वह यात्रा में अथवा युद्ध में थे कहा कि यदि वह

---

* लड़ाई के समय लूट एकत्र करना वर्जित था परन्तु महम्मदी न माने जिसका फल यह हुआ कि वह हार गए। † अर्थात जो भाग खड़े हुए वह संसारिक भवना चाहते थे और जो स्थिर रहे वह अन्त के दिन के इच्छुक थे। ‡ अर्थात् अधर्मियों की ओर। § अर्थात सब लोग मारे नहीं गए। ¶ अर्थात हम महम्मद साहब को इस लड़ाई में आने से रोकते थे परन्तु उन्हों ने हमारा कहा न माना और यह फल हुआ।

हमारे संग होते तो वह न मरते न घात होते ईश्वर ने इस बात से उनके मनों में शोक भर दिया जीवन और मृत्यु ईश्वर ही के हाथ में है ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को देखता है (१५१) और जब तुम ईश्वर के मार्ग में घात होजाओ अथवा मर जाओ तो ईश्वर की क्षमा और दया समस्त बटोरे हुए से उत्तम है (१५२) यदि तुम मरजाओ अथवा घात होजाओ तो तुम सब ईश्वरही के तीर पहुंचाए जाओगे (१५३) सो यह ईश्वर ही की दया है कि तु उनको नम्र मिला यदि तू बुरे स्वाभाव अथवा कठोर हृदय होता तो वह तेरे तीर से भागजाते सो तू उनको क्षमाकर दे और उनके निमित्त ईश्वर से क्षमा मांग और कार्य्य में उनसे परामर्श कर और जब इच्छा पक्की करले तो ईश्वर ही पर भरोसा रख निस्सन्देह ईश्वर भरोसा करने वालों को मित्र रखता है (१५४) यदि ईश्वर तुम्हें सहायता देगा तो तुम पर कोई प्रबल न होगा और यदि वह तुमको छोड़दे तो तुम्हारी सहायता कौन कर सकता है विश्वासियों को ईश्वर ही पर भरोसा रखना उचित है (१५५) किसी भविष्यद्वक्ता का यह कार्य्य नहीं कि चोरी * करे और जो कोई चोरी करे और जिस वस्तु की चोरी की है पुनरुत्थान में उसे साथ लाएगा फिर हर मनुष्य को उसके किएके समान पूरा बदला मिलेगा और किसी पर अनीति न होगी (१५६) भला जो मनुष्य ईश्वर की इच्छा पर चला क्या उसके समान होसकता है जिसने ईश्वर का कोप उपार्जन किया उसका ठौर नर्क है और वह बुरा ठिकाना है।। (१५७) उनकी पदविएँ ईश्वर के निकट हैं ईश्वर देखता है जो कुछ वह करते हैं। (१५८) निश्चय ईश्वर ने विश्वासियों पर बड़ा उपकार किया जबकि उसने उन्हीं में से एक प्रेरित भेजा जो उसकी आयतें उन्हें पढ़कर सुनाता है उन को पवित्र बनाता है उनको पुस्तक और बुद्धि सिखाता है और निस्सन्देह इससे पहिले प्रत्यक्ष भ्रमणा में थे। (१५९) क्या जब तुम पर कोई दुख पड़ा जिससे दुगना † तुम उनको पहुँचा चुकेहो तो कहते हो कि यह कहां से आया तू कह यह तुमको तुम्हारी ही ओर से आया निस्सन्देह ईश्वर सब बातों पर शक्तिवान है (१६०) और दोनों दलों के सन्मुख होने के दिन जो कुछ दुख तुमको पहुँचा वह ईश्वर की आज्ञा से जिसतें वह विश्वासियों और धर्म्म कपटियों को जानले और उनसे कहा गया कि आओ ईश्वर के मार्ग में लड़ो अथवा शत्रुओं को नाश करो वह बोले यदि हम युद्ध करनाही जानते तो तुम्हारा साथ ही न देते उस दिन वह

---

* महम्मद साहब पर दोष लगाया गया था कि उन्होंने लूट के धन में से कुछ छिपा रखा था
† अर्थात बदर के युद्ध में दोबार प्रबल रहने के विषय में है॥

विश्वास की सन्ती अधर्म्म के बहुतही निकट थे। (१६१) अपने मुँहसे वह ऐसी बातें बोलते थे जो उनके हृदयों में न थीं और जो कुछ वह छिपाते हैं ईश्वर भली भांति जानता है। (१६२) वह लोग जिन्हों ने अपने घर बैठकर अपने भाइयों से कहा यदि हमारा कहा मान लेते तो घात न होते तू कह तो फिर अब अपने प्राणों पर से अपनी मृत्यु को हटा दो यदि तुम सत्यवादी हो। (१६३) जो लोग ईश्वर के मार्ग में घात हुए उनको मृतक* मत गिनो वरन वह जीवते हैं और अपने प्रभुके यहां जीविका पाते हैं। (१६४) जो कुछ ईश्वर ने अपने अनुग्रह से दिया उसपर सन्तुष्ट हैं और उन लोगों का जो उनके †पीछे इनसे आकर नहीं मिले शुभ समाचार देते हैं उनको कुछ भय नहीं और न वह शोकित होंगे। (१६५) उनको ईश्वर के वरदान और अनुग्रह का सुसमाचार सुनाया जाता है और कि ईश्वर विश्वासियों का प्रति फल नहीं मेटता।

रु० १८—(१६६) जिन लोगों ने ‡ घाव पहुंचने के पीछे ही ईश्वर और प्रेरित को ग्रहण किया तो इन में से उन लोगों के निमित जिन्हों ने सुकर्म्म किए और संयम किया बहुत बड़ा प्रतिफल हैं। (१६७) वह लोग जिन से लोगों ने कहा था निस्सन्देह बहुत से लोग तुम्हारे विषय में इकट्ठे हुए हैं तुम उन से डरो इस वचन ने उन के विश्वास को बढ़ा दिया और उन्हों ने उत्तर दिया कि हमें ईश्वर ही बस है और वही अच्छा रक्षक है। (१६८) और वह वहां से ईश्वर के अनुग्रह और वरदान के साथ लौट आए उनको किसी बुराई ने छुआ भी नहीं वह ईश्वर की इच्छा के अनुगामी हुए ईश्वर बड़े अनुग्रह वाला हैं यह तो दुष्टात्मा § है जो अपने मित्रों से डराता है सो उन से मत डरो परन्तु मुझसे डरो यदि तुम विश्वासी हो। (१६९) जो लोग अधर्म्म के अनुगामी होकर दौड़ रहे हैं उन की ओर से शोकित न हो वह ईश्वर का कुछ बिगाड़ न सकेंगे ईश्वर चाहता है कि उन्हें अन्त के दिन में कुछ भी भाग न दिया जायगा और उन के निमित्त बड़ा दण्ड है। (१७१) निश्चय जो लोग विश्वास की सन्ती अधर्म्म मोल लेते हैं वह ईश्वर का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते उन के निमित दुख का दण्ड है। (१७२) अधर्म्मी यह विचार न करें कि हम जो औसर दे रहे हैं यह उन के निमित कुछ उत्तम है यह औसर तो केवल इस कारण है कि वह पाप में और भी बढ़ते जावें

* देखो सूरए बकर १४९। † अर्थात् जो शहीद होनेहारे हैं। ‡ ओहद के संग्राम में।
§ जान पड़ता है अबूसफ़ियान अथवा किसी और करैशी अध्यक्ष के विरुद्ध है॥

ग्रौर उन के निमित ग्रनादर का दण्ड है । (१७३) ईश्वर ऐसा नहीं है कि वह विश्वासियों को उसी दशा में छोड़दे जिस में ग्रब तुम हो यहांलों कि वह ग्रपवित्र को पवित्र से ग्रलग करदे । (१७४) ईश्वर तुम को गुप्त पर नहीं चितावेगा परन्तु वह ग्रपने प्रेरितों में से जिस को चाहता है छांट * लेता है सो ईश्वर पर ग्रौर उसके प्रेरितों पर विश्वास लाग्रो यदि तुम विश्वास लाग्रोगे ग्रौर संयम ग्रंगीकार करोगे तो तुम्हारे निमित बड़ा प्रति फल है । (१७५) ग्रौर वह लोग जो उस में कृपणता करते हैं जो ईश्वर ने ग्रपने ग्रनुग्रह से उन्हें दिया है विचार न करें यह उनके निमित ग्रच्छा है वरन यह उनके निमित ग्रति ही बुरा है । (१७६) जिस वस्तु में उन्हों नें कृपणता की है उसीका पट्टा पुनरुत्थान में उन को पहराया † जायगा स्वर्ग ग्रौर पृथ्वी का ग्रधिकारी ईश्वर ही है ईश्वर तुम्हारे कार्य्यों को जानता है ॥

रु० १९—(१७७) निस्सन्देह ईश्वर ने उन लोगों का कहना सुन लिया जिन्हों ने कहा कि ईश्वर तो भिखारी ‡ है ग्रौर हम धनवान हैं हम उनकी इस बात को लिखे रखते हैं ग्रौर उन्हों ने जो भविष्यद्वक्ताग्रों को ग्रकारण घात किया है ग्रौर हम कहेंगे चाखो दुख देने हारा दण्ड । (१७८) जो कुछ तुम्हारे हाथों ने ग्रागे भेजा है यह उसका पलटा है निस्सन्देह ईश्वर ग्रपने दासों पर ग्रन्याय करने हारा नहीं है । (१७९) वह लोग जिन्हों ने कहा कि निस्सन्देह ईश्वर ने हम से प्रतिज्ञा की है कि हम किसी प्रेरित पर विश्वास न लाए यहां लों कि वह ऐसी भेंट लेकर ग्राए जिसे ग्रग्नि खा जाय । (१८०) तू कह निस्सन्देह तुम्हारे तीर मुझ से पहिले प्रेरित तो ग्राए प्रत्यक्ष चिन्हों ग्रौर उसके साथ जो तुम कहते हो तुम ने किस कारण उन को घात किया यदि तुम सत्यवादी हो । (१८१) फिर यदि तुझ को झुठलाएं तो तुझ से पहिले भी बहुतेरे प्रेरित झुठलाए गए हैं जो खुले चिन्हों ग्रौर पुस्तकों ग्रौर प्रकाशित पुस्तकों के साथ ग्राए थे । (१८२) हर प्राणी मृत्यु का स्वाद चखने हारा है तुम को पुनरुत्थान के दिन पूरा प्रतिफल मिलेगा सो जो मनुष्य ग्रग्नि से बच गया ग्रौर बैकुण्ठ में पहुंचाया गया तो निस्सन्देह वह मनोर्थ को पहुंचा संसारिक जीवन तो कुछ है ही नहीं केवल

* यह उस मेहना का उत्तर है जो महम्मद साहिब पर किया गया था कि सच्चे ग्रौर झूठे विश्वासियों में पहचान न करसके । † ग्रर्थात माला बनाकर ॥ ‡ यह उस मेहना का उत्तर है जो महम्मदसाहब पर किया गया था कि ईश्वर के नाम से क़रमांगते हैं यह मेहना यहूदियों ने दिया था ।

घमंड की पूंजी है । (१८३) निस्सन्देह तुम अपने धनों और प्राणों से जांचे जाओगे और तुम निश्चय उन लोगों से जिनको पुस्तक दी गई और उन लोगों से जो साझी ठहराने हारे हैं बहुत ही दुख दायक बातें सुनो गे और यदि तुम धीरज धरोगे और संयमी हो जाओगे तो निस्सन्देह यह बड़े साहस के कार्यों में से है। जिस समय ईश्वर ने उन लोगों से वाचा ली जिन को पुस्तक दी गई थी कि लोगों पर उस को प्रगट करें गे और न छिपायें गे परन्तु उन्हों उस को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसकी सन्ती तुच्छ मूल्य लिया कैसा बुरा व्योपार किया। (१८५) जो लोग अपनी करतूतों पर * मगन हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन की बड़ाई की जाय मत विचार करो कि वह दण्ड से रहित हैं उन के निमित्त दुख दायक दण्ड है । (१८६) स्वर्ग और पृथ्वी का राज्य ईश्वर ही का है ईश्वर प्रत्येक वस्तु पर शक्ति मान है ॥

रु० २०—(१८७ निस्सन्देह स्वर्ग और पृथ्वी के रचने में और रात और दिन के बिभेद में बुद्धिवानों के निमित्त चिन्ह हैं। (१८८) जो ईश्वर को स्मर्ण करते हैं खड़े और बैठे और अपनी करवट पर लेटे हुए ध्यान करते हैं स्वर्गों और पृथ्वी की उत्पत्ति में हे हमारे प्रभु यह जो कुछ तूने उत्पन्न किया है अनर्थ नहीं है तू पवित्र है सो हमको अग्नि के दण्ड से बचा। (१८९) हे हमारे प्रभु निस्संदेह तू जिसको नर्क में डालदे निस्सन्देह तू ने उसे अनादर किया दुष्टों के निमित कोई सहायक नहीं। (१९०) हे हमारे प्रभु हमने प्रचारक को सुना कि प्रचार करता था कि अपने प्रभु पर बिश्वास लाओ सो हम विश्वास लाए। (१९१) हे हमारे प्रभु हमको हमारे पाप क्षमा कर और हमसे पाप हटादे और हमारी मृत्यु सुकर्म्मियों के साथ हो। (१९२) हे हमारे प्रभु हमको वह दे जिसको तू ने अपने प्रेरितों के द्वारा वाचा की और हमको पुनरुत्थान के दिन अनादर मत कर क्योंकि तेरा वचन विरुद्ध नहीं होता। (१९३) सो उनके प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनली मैं तुममें से किसी साधन † करने हारे पुरुष अथवा स्त्री ‡ के कार्य्य † न मेटूंगा कुछ § में से कुछ निकले हैं। (१९४) फिर जिन लोगों ने अपना देश छोड़ा और

---

* अर्थात यह कि उन्होंने महम्मद साहब के विषय में मूसा की भविष्यद्वाणी बदल कर जय प्राप्त की और इसको अपनी धार्मिकता विचारते हैं ॥ † अर्थात् अमल। ‡ कहते हैं महम्मद साहब की स्त्रियों में से एक ने पूछा कि क्या कारण है कि ईश्वर सदा देश छोड़नेहारे पुरुषों ही की प्रशंसा करता है और स्त्रियों का चर्चा भी नहीं करता उस समय यह आयत उतरी। § अर्थात् मनुष्य बिना स्त्री के उत्पन्न नहीं होता। .

अपने देश से निकाले गए और मेरे मार्ग में सताए गए और लड़े और घात हुए मैं उनके पाप उनसे हटादूंगा और मैं उन्हें बैकुण्ठों में पहुँचाऊंगा जिनके नीचे धाराएं बहती हैं। (१९५) यह ईश्वर के यहां से प्रतिफल मिलेगा और ईश्वर के यहां अच्छा प्रतिफल है। (१९६) तुझको अधर्मियों का बस्ती में आना * जाना धोका न दे यह ओछी पूंजी है उनका ठिकाना नर्क है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (१९७) परन्तु वह लोग जो अपने प्रभु से डरते हैं उनके निमित बैकुण्ठ हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं वह सदा उसमें रहेंगे और ईश्वर के यहां हर वस्तु उपस्थित पाएंगे जो कुछ ईश्वर के यहां है सो उत्तम है और वह सुकर्मियों के निमित है। (१९८) निस्सन्देह पुस्तकवालों मेंसे ऐसे मनुष्य हैं जो विश्वास लाए हैं ईश्वर पर और जो तुम पर और उनपर उतरा है और ईश्वर के सन्मुख दीनता करते हैं और ईश्वर की आयतों की सन्ती तुच्छ मूल्य नहीं लेते। (१९९) यही हैं जिनके निमित उनके प्रभु के तीर उनका प्रतिफल है निस्सन्देह ईश्वर शीघ्र लेखा लेने हारा है। (२००) हे विश्वासियो धीरज धरो और दृढ़ रहो और स्थिर रहो और ईश्वर से डरो जिस्तें तुम लाभ पाओ॥

सूरए † निसा (स्त्रिएं) मदनी रुकू २४ आयत १७५
अति दयालु और कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) हे लोगो अपने प्रभुसे डरो जिसने तुमको एक प्राणी से उत्पन्न किया और उससे उसकी पत्नी को उत्पन्न किया फिर दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्रिएँ बढ़ाईं और ईश्वर से डरो जिसके नाम से परस्पर प्रश्न करते हो और नाते का विचार रक्खो निस्सन्देह ईश्वर तुमको देख रहा है। (२) और अनाथों को उनका धन फेरदो और बुरी वस्तु की सन्ती अच्छी को मत बदलो अपने धन के संग मिलाकर उनका धन मत खाजाओ निस्संदेह यह बड़ा भारी पाप है। (३) और यदि तुम को इस बात का डरहो कि तुम अनाथ लड़कियों के विषय में न्याय न कर सकोगे तो उन स्त्रियों में से जो तुम्हें अच्छी लगें ब्याह

---

* उहद के युद्ध के पश्चात् मक्का के लोग बेरोकटोक एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यापार के हेतु आया जाया करते थे यह बात महम्मदियों को बुरी लगती थी उस समय यह आयत उतरी। † इस सूरत में जितना वृत्तान्त है यह सन् ३ हिजरी के अन्त और सन् ५ हिजरी के मध्य में हुए हैं॥

करो दो २ तीन २ चार २ फिर यदि तुमको डरहो कि न्याय न कर सकोगे तो केवल एकही अथवा वह जिसके तुम्हारे हाथ स्वामी * होचुके हैं यह उससे कुछ न्यून है कि तुम अनीति करो और स्त्रियों को उनका स्त्री धन † सहर्ष देदो फिर यदि वह उसमें से तुम्हें अपनी इच्छा से कुछ छोड़दें तो उसको आनन्द से खाकर पचा जाओ। (४) और निर्बुद्धियों को अपना वह धन मत दो जिसको ईश्वर ने तुम्हारी जीविका के हेतु बनाया है हां उसमें से उनको खिलाओ और और पहराओ और उनसे सुव्यवहार करो। (५) और अनाथों की जबकि वह विवाद के समयलों पहुँचे परीक्षा करो फिर यदि उनमें तुम्हें अच्छाई जान पड़े तो उनको उनका धन देदो और उड़ाके शीघ्रता से उनके धन मत खाजाओ। (६) कि वह सयाने हो जायँगे और जो धनवान हो तो कुछ भी न छुए और जो निर्धन हो तो न्याय से खाय। (७) और जब तुम उनका धन उनको सौंपदो तो किसी को उस पर साक्षी ठहरालो ईश्वर लेखेके हेतु बस है। (८‡) पुरुषों का माता पिता और कुटुम्बियों के छोड़े हुए धनमें से अंश है चाहे छोड़ा हुआ धन थोड़ा हो अथवा बहुत ठहरा हुआ भाग मिलेगा। (९) और जब बांट करने के समय कुटुम्बी और अनाथ और दीन उपस्थित हों तो उनको भी उसमें से कुछ देदो और उनसे भली § बात कहो। (१०) उचित है कि वह डरते रहें यदि वह भी निर्बल सन्तान छोड़ें तो उनपर दया की जाय सो ईश्वर से डरना उचित है और सुव्यवहार करना उचित है। (११) निस्संदेह जो अनाथों का धन अनीति से खाते हैं इसको छोड़ कुछ नहीं कि वह अपने पेटों में अंगारे भरते हैं और वह शीघ्र दहकती हुई अग्नि में जलेंगे।

रु० २—(१२) ईश्वर तुमको तुम्हारी सन्तान के विषय में यह आज्ञा देताहै पुरुष का भाग दो स्त्रियों के तुल्य फिर यदि स्त्री दो से अधिक हों तो उन सबके निमित्त छोड़े हुए सब धन की दो तिहाई और यदि एकही पुत्री हो तो उसके निमित्त सब धनका अर्धभाग है और उसके माता पिता का अर्ध भाग है उसके माता पिता के निमित्त इन दोनों में से प्रत्येक के निमित्त छोड़े हुए का छठा भाग है यदि उसके सन्तान न हो फिर यदि उसके कोई पुत्र न हो और माता पिता

* अर्थात दासिएं। † अर्थात मिहर। ‡ आयत ८ से १२ लों साबित के पुत्र औस की पत्नी उमकुहा के विषय में उतरीं जब उसका पति उहद के युद्ध में मारागया तो उसके चचेरे भाई सुवेद और उर्फ़ुजा सब धन लेगए उसकी पत्नी और तीनों पुत्रों में से किसी को कुछ न दिया जब उसने महम्मद साहब से कहा तो यह आयतें उतरीं। § अर्थात सुव्यवहार करो॥

अधिकारी हों तो उसके धनका तीसरा भाग है फिर यदि उसके भाई हों तो उसकी माता का छठा भाग है उसके पश्चात जो लेख पत्र में लिख दिया हो अथवा ऋण भर देने के पश्चात जो तुम्हारे माता पिता और तुम्हारी सन्तान में तुम नहीं जानते कि उनमें से तुम्हारे विषय में कौन अधिक लाभ दायक है सो इस कारण यह ईश्वर ने ठहरा दिया निस्सन्देह ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (१३) तुम्हारी स्त्रियों के छोड़े हुए धनमें से तुम्हारे निमित्त अर्ध भाग है यदि उनके कोई सन्तान न हो और यदि उनके सन्तान हो तो उनके छोड़े हुए में से तुम्हारा चौथा भाग है उसके पश्चात जो वह लिख गई हों और ऋण चुकाने के पश्चात। (१४) तुम्हारे छोड़े हुए धनमें से उनके निमित्त चौथा भाग है यदि तुम्हारे कोई सन्तान न हो और यदि तुम्हारे सन्तान हो तो उनको तुम्हारे धन का आठवां भाग मिलना उचित है उसके देने के पश्चात जो तुमने लिखा और तुम्हारे ऋण चुकाने के पश्चात। (१५) यदि कोई मनुष्य हो जिसका कुछ धन हो जिसके पिता और पुत्र न हो अथवा ऐसी ही कोई स्त्री हो और उसके एक भाई अथवा एक बहिन हो तो प्रत्येक का छठा भाग है और यदि एकसे अधिक हों तो एक तिहाई में सब साझी पश्चात लिखित के जो लिख दिया जाय अथवा ऋण चुकाने के पश्चात। (१६) यदि निश्चय औरों की हानि न हुई हो यह ईश्वर की आज्ञा है ईश्वर जानने हारा और कोमल स्वभाव है। (१७) यह ईश्वर की ठहराई हुई आयतें हैं जो कोई ईश्वर और उसके प्रेरित की सेवा करेगा वही वैकुण्ठ में प्रवेश होगा उसके नीचे धाराएं बहती हैं और उसमें सदा रहेंगे यह बड़ी विजय होगी। (१८) और जिसने ईश्वर की और उसके प्रेरित की आज्ञा उलङ्घन करके उसकी ठहराई हुई मर्यादें तोड़दीं वह अग्निमें पहुँचाया जायगा उसमें सदा रहेगा यह बहुत अनादरता का दण्ड है॥

रु०—३ (१९) तुम्हारी स्त्रियों में से जो कुकर्म करें तो उनपर अपने लोगों में से चार साक्षी लाओ और यदि वह साक्षी दें तो उन को घर में बन्दकर रक्खो यहां लों कि उनको मृत्यु उठावे अथवा ईश्वर उनके निमित्त कोई मार्ग निकाले (२०) और यदि पुरुष कुकर्म करे तो उन दोनों को दुख दो और यदि फिर वह पश्चाताप करें और अपना सुधार करें तो उनका पीछा छोड़ दो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है (२१) यह इसको छोड़ और कुछ नहीं कि ईश्वर उन्हीं का पश्चाताप ग्रहण करता है जो अनजाने बुराकर्म कर बैठते हैं और तुरन्त ही पश्चाताप करलेते हैं यह वही जन हैं जिन को ईश्वर

क्षमा करेगा ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (२२) उनका पश्चाताप नहीं है जो लोग लगातार पाप करते चले जाते हैं यहां लों कि उनमें से किसी को मृत्यु आ पकड़े और कहने लगे कि मैं पश्चाताप करता हूं और न उन लोगों के निमित है जो मरगये और वह अधर्मी थे यही लोग हैं जिनके निमित्त दुखदायक दण्ड है (२३) हे विश्वासियो यह लीन नहीं है कि तुम स्त्रियों को बरियाई से अधिकार में ले लो और उनको इस कारण मत रोक रक्खो कि जो कुछ तुम उन को दे चुके हो उसमें से कुछ लौटाकर ले लो परन्तु हां जब वह प्रगट में कुकर्म करें उनके साथ अच्छी रीति से निर्वाह करो यदपि वह तुमको न भावें हो सकता है कि तुम को एक वस्तु न भावे और ईश्वर उसी में बहुत सी भलाइयां उत्पन्न करे। (२४) यदि तुम्हारा मन चाहे एक स्त्री से दूसरी स्त्री को बदल लो और उस एक को बहुत सा धन दे चुके हो फिर उस में से कुछ भी न फेरलो क्या तुम मिथ्या दोष लगाकर और प्रत्यक्ष पाप करके लेने चाहते हो (२५) और तुम उसको कैसे ले सकते हो यदपि तुम एक दूसरे से भोग विलास कर चुके हो और उन्हों ने तुम से दृढ़ बाचा ले ली है (२६) उन स्त्रियों से जिन से तुम्हारे पिता विवाह कर चुके विवाह मत करो जो पहिले बीता सो बीता यह निर्लज्जता और अनुचित और बुरी रीति है॥

रु० ४ (२७) तुम पर तुम्हारी माएं और पुत्रियां और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फूपियां और तुम्हारी मौसियां और भतीजियां और भानजियां और तुम्हारी वहमाएँ जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया तुम्हारी दूध बहने तुम्हारी सासें तुम्हारी सौतेली बेटियां जो तुम्हारे पालन में हैं और जो तुम्हारी ऐसी स्त्रियों के पेट से हैं जिनसे तुमने प्रसंग किया है अलीन हैं फिर यदि तुमने उनसे प्रसंग न किया हो तो तुम पर कुछ पाप नहीं तुम्हारे उन पुत्रों की पत्नियां जो तुम्हारी पीठ से हैं और कि दो बहनों को एक साथ इकट्ठा करना अलीन है परन्तु जो हुआ सो बीत गया निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है॥

पारा.५. (२८) और सुहागन स्त्रियां तुम पर अलीन हैं वरन हां जो तुम्हारे हाथ का धन हो जाएं ईश्वर ने तुम्हारे निमित्त यह आज्ञा लिखदी है और इनको छोड़ तुम्हारे निमित्त लीन की गई यदि तुम अपना धन देकर उनको प्राप्त करो पवित्रताई की इच्छा से न कि काम व्याधि को शान्ति करने के निमित्त फिर जिस स्त्री से तुमने लाभ उठाया हो तो उसको उसकी ठहराई* हुई बनि

* शिया मुसलमान इससे मुता की शिक्षा सिद्ध करते हैं॥

देदो और जिस बात में तुम परस्पर प्रसन्न होजाओ उसमें तुम पर कुछ पाप नहीं निस्सन्देह ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (२९) और जो कोई तुममें से इसकी शक्ति न रखता हो कि निर्बन्ध विश्वासी स्त्रियों से विवाह कर सके तो फिर अपनी उन विश्वासी दासियों से करे जिनके तुम्हारे हाथ स्वामी बने ईश्वर तुम्हारे विश्वास को जानता है तुममें * से कोई काई में से हैं सो उनसे उनके स्वामियों की आज्ञा से विवाह करो और उनकी बनि उनको सहर्ष देओ यदि वह शुद्ध चरण हों व्यभिचारिणी न हों न गुप्त मित्र रखतीं हों। (३०) फिर जब वह विवाह में आ चुकें और कुकर्म्म करें तो उनके निमित उसमें से आधा दण्ड है जो निर्बंध स्त्रियों के निमित ठहरा है यह केवल उसके निमित है जिसको तुम में से पाप में पड़ने का भय हो नहीं तो धीरज † करना तुम्हारे निमित बहुत उत्तम है और ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है॥

रु० ५—(३१) ईश्वर चाहता है कि तुमको बतादे और तुमको उन लोगों के मार्ग की शिक्षा दे जो तुम से पहिले थे और तुम्हारी ओर अवहित हो ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (३२) ईश्वर चाहता है कि तुम्हारी ओर अवहित हो और जो कामाधीन हैं वह यह चाहते हैं कि तुम टेढ़ाई करो अधिक टेढ़ाई के साथ ईश्वर तो चाहता है कि तुम्हारे निमित बोझ हलका करदे क्योंकि मनुष्य बलहीन उत्पन्न किया गया है। (३३) हे विश्वासियो एक दूसरे का धन छल से मत खाओ हां यदि परस्पर मेल से व्यापार हो और परस्पर लोहू मत बहाओ ईश्वर तुम्हारे साथ दया करने हारा है। (३४) जिस मनुष्य ने अनीति से और अन्याय से ऐसा किया तो हम उसको शीघ्र अग्नि में डालेंगे और यह ईश्वर के निमित सुगम है। (३५) यदि तुम उन बड़ी बुरी बातों से बचोगे जिन से बरजे गए हो तो हम तुम्हारे पाप तुम से हटा देंगे और तुम को अच्छे ठौर पहुंचायेंगे। (३६) और जिस बात में ईश्वर ने तुम में से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है उसकी लालसा मत करो जो कुछ पुरुषों ने उपार्जन किया उन के निमित उनका भाग है और जो कुछ स्त्रियों ने उपार्जन किया उनके निमित उनका भाग है ईश्वर से अनुग्रह मांगो निस्सन्देह ईश्वर प्रत्येक बात का जानने हारा है। (३७) प्रत्येक के निमित हम ने उस के माता पिता और कुटुम्बियों ‡ के छोड़े हुए

---

* अर्थात स्त्री पुरुष से और पुरुष स्त्री से उत्पन्न होते हैं। † अर्थात कुवाँरे रहना। ‡ जब पहिले पहिल लोग महम्मद साहब पर विश्वास लाए तो उन लोगों के बहुधा नातेदार उनसे अलग होगए तो महम्मद साहब ने दोदो को परस्पर भाई बनाया जो अपने ही जीवन भर ऐसा नाता स्थिर रखसकते थे उनको एक दूसरे के छोड़े हुए धन में से भाग नहीं मिल सकता था हां यदि कोई किसी के निमित कुछ लिखकर जाय यह आयत इसी विषय में उतरी॥

धन में से भाग ठहरा दिए हैं और जिन लोगों से तुम ने वाचा बांधी है सो उन का भाग देदो निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु पर साक्षी है ॥

रु॰ ६—(३८) पुरुष स्त्रियों पर बड़ाई रखने हारे हैं इस कारण कि ईश्वर ने मनुष्यों में से एक को दूसरे पर बड़ाई दी और इस कारण भी कि वह अपने धन व्यय करते हैं पवित्र स्त्रिएं आज्ञा कारी रहती हैं और पीठ पीछे रक्षा करती हैं जैसा कि ईश्वर ने उन की रक्षा की और जिन स्त्रियों से तुम को विरुद्धता का भय हो तो उन्हें समझादो और उन को शयन ग्रह में छोड़ दो और उन को मारो फिर यदि वह आज्ञा कारी हो जांय तो उन पर कोई और दोष न ढूंढ़ो निस्सन्देह ईश्वर बड़े विभव वाला है । (३९) और यदि तुम को यह जान पड़े कि इन * दोनों के बीच में फूट है तो एक न्यायी पुरुष वालों में से और एक न्यायी स्त्री वालों में से ठहराओ और यदि वह परस्पर सुधार करना चाहेंगे तो ईश्वर उन में मेल उत्पन्न कर देगा निस्सन्देह ईश्वर को हर बात का ज्ञान और सुधि है । (४०) ईश्वर की स्तुति करो उस के साथ किसी को साझी मत जानो माता पिता के साथ भलाई करो नाते दारों अनाथों और दरिद्रियों के नातेदार पड़ोसियों और अनजान पड़ोसियों और निकट रहने हारे और बटोहियों के साथ और प्रत्येक के साथ जिस के स्वामी तुम्हारे हाथ हुए निस्सन्देह ईश्वर घमंडी और अहंकारियों को मित्र नहीं रखता । (४१) जो आपभी कृपणता करते और लोगों को भी कृपणता ही सिखाते हैं और जो कुछ ईश्वर ने अपने अनुग्रह से दिया उसे छिपा रखते हैं हम ने ऐसे मुकरने हारों के निमित तृष्कार का दण्ड ठहरा रखा है । (४२) और जो लोग अपना धन लोगों के दिखाने के निमित व्यय करते हैं और ईश्वर और अन्त के दिन पर विश्वास नहीं रखते और जिन का साथी दुष्टात्मा हुआ वह बहुत बुरा साथी है । (४३) इस में इन का क्या बिगड़ता है यदि वह ईश्वर पर और अंत के दिन पर विश्वास रखते और उस में से व्यय करते जो उनको ईश्वर ने दिया है और ईश्वर उन को जानता है । (४४) ईश्वर तो किसी पर कण भर अनीति नहीं चाहता यदि भलाई होती है तो उस को दुगना करता है और अपने तीर से बहुत बड़ा प्रतिफल देता है । (४५) तब क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक जाति से साक्षी बुलायंगे और तुझ को भी उन लोगों पर साक्षी देने को लायंगे और उस दिन वह लोग जो अधर्म्मी हुए और प्रेरित की आज्ञा उलंघन की इच्छा

---

* अर्थात् पुरुष और स्त्री के बीच में ।

करेंगे कि आह पृथ्वी उन पर समथर हो जाती परन्तु वह ईश्वर से कोई बात छिपा न सकेंगे ॥

रु० ७—(४६) हे विश्वासियो क्षीवता * की दशा में प्रार्थना के निकट मत जाओ जब लों कि तुम जानो कि क्या बोलते हो न ऐसी दशा में कि तुम अशुद्ध हो जबलों कि तुम स्नान न करलो केवल यात्रा के समय और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई मल मूत्र करके आवे अथवा तुम ने स्त्रियों से प्रसंग किया हो और जल न मिलसके तो शुद्ध मिट्टी से अपने मुंह और हाथों को शुद्ध करो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा है (४७) क्या उन लोगों को जिनको पुस्तक से कुछ भाग दिया गया तू ने नहीं देखा वह भ्रमणा को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी मार्ग से भटक जाओ ईश्वर तुम्हारे शत्रुओं को जानता है ईश्वर मित्रता के निमित्त बस है और ईश्वर सहायता के निमित्त बस है । (४८) और यहूदियों में से ऐसे हैं जो शब्दों को उनके ठौर से पलट देते हैं और कहते हैं कि हम ने सुना और न माना और तू सुन बिना सुने हुए और कहते हैं रआना अपनी जीभ ऐंठ कर और मत पर तुस्कार करते हैं। (४९) परन्तु यदि वह कहते कि हम ने सुना और हम ने माना सो तू सुन और हम पर दृष्टि कर तो यह उन के निमित्त अति उत्तम और ठीक है परन्तु ईश्वर ने इन के मुकरने के कारण उन पर श्राप किया सो वह विश्वास न लायेंगे परन्तु थोड़े लोग । (५०) हे लोगो जिन को पुस्तक दी गई विश्वास लाओ उस पर जो हम ने उतारा उस बात को सिद्ध करता है जो तुम्हारे तीर है इस से पहिले कि हम तुम्हारे मुखों को बिगाड़दें अथवा हम उन को पीठ की ओर फेरदें अथवा हम उन को धिक्कार करें जैसा कि हमने † सबूत वालों को धिक्कार किया और ईश्वर की आज्ञा पूरी हो के ही रहती है । (५१) निस्सन्देह ईश्वर इस को क्षमा नहीं करता कि उस के साथ साझी ठहराया जाय और इस के उपरान्त जिस को चाहे क्षमा कर देता है और जिस ने ईश्वर के साथ साझी ठहराया उस ने बड़ा झूठ उपार्जन किया और बड़ा पाप किया । (५२) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने आप को पवित्र ठहराते हैं वरन ईश्वर जिस को चाहता है पवित्र करता है और किसी पर सूक्ष्म डोरे के तुल्य भी अनीति न होगी । (५३) देख ईश्वर पर कैसा मिथ्या दोष बांधते हैं और यही प्रगट पाप बस है ॥

---

* बकर २१० बनी इसराएल ११०; १ करन्थी ११ : २१ । २. बकर ९८ ॥ † बकर ६१ ।

रु० ८—(५४) क्या तूने उन लोगों* को नहीं देखा जिन को पुस्तक में से एक भाग दिया गया वह पिशाच † और तागूतों को मानते हैं वह अधर्म्मियों से कहते हैं कि विश्वासियों की सन्ती यह अति अधिक मार्ग पर हैं। (५५) यही वह लोग हैं जिन पर ईश्वर ने श्राप किया है और जिस किसी पर ईश्वर ने श्राप किया है तू उसके निमित्त कोई सहायक न पावेगा। (५६) क्या उन के तीर देश का कोई खण्ड है तब तो वह लोगों को खजूर की गुठली की दरार के तुल्य भी न देंगे। (५७) क्या वह उन लोगों से डाह करते हैं जिन्हे ईश्वर ने अपने अनुग्रह से कुछ दिया है हम ने इबराहीम के वंश को पुस्तक और बुद्धि दी और उन को बड़ा राज दिया था। (५८) सो उन में से कोई तो विश्वास लाया और कोई रुक गया दहकता हुआ नर्क बस है। (५९) निस्सन्देह जो लोग हमारी आयतों से मुकरे हम उन को अग्नि में झोंक देंगे जब उन की एक खाल गल जायगी हम और खाल बदल देंगे जिस्तें दण्ड को चाखें निस्सन्देह ईश्वर बड़ा बुद्धि वान है। (६०) और जो लोग विश्वास लाए हैं और अच्छे कार्य्य किए हैं हम उनको बकुण्ठ बास देंगे जिन के नीचे धाराएं बहती हैं और सदा उस में रहेंगे और उन में इन के निमित्त शुद्ध स्त्रिएं हैं और हम उनको छांहहीं छांह में पहुंचावेंगे। (६१) निस्सन्देह ईश्वर तुमको आज्ञा देता है कि धरोहरें धरोहर हारों को पहुंचा दिया करो और जब लोगों में आज्ञा करने लगो तो न्याय के साथ निर्णय करो निस्सन्देह ईश्वर तुम को बहुत उत्तम उपदेश देता है निस्सन्देह ईश्वर सुनने हारा और देखने हारा है। (६२) हे विश्वासियो ईश्वर की सेवा करो और प्रेरित की सेवा करो और तुम में जो अध्यक्ष हों उन की भी सेवा करो यदि तुम किसी बस्तु में झगड़ो तो उस को ईश्वर और प्रेरित के निकट लेजाओ यदि तुम ईश्वर और अंत के दिन पर विश्वास रखते हो सो यह उत्तम बात है और इसका अन्त अच्छा है॥

रु० ९—(६३) क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जो अनुमान करते हैं कि वह उस पर जो तुझ पर उतरा विश्वास लाए हैं और उसपर जो तुझ से पहिले उतरा हो और चाहते हैं कि तागूत ‡ से निर्णय करादें यदपि उनको आज्ञा दी गई है कि उसको न मानों और दुष्टात्मा ‡ चाहता है कि उनको भरमाके दूर की भटकना में डालदे। (६४) और जब उनसे कहाजाता है कि ईश्वर की उतारी हुई आज्ञा की ओर और प्रेरित की ओर आओ तो तू धर्म्म कपटियों को देख रख

---

* कुछ यहूदी उस बैर के कारण जो उनको महम्मद साहब से था कुरैश जाति से जा मिले
† अर्थात खबीस॥ ‡ अशरफ के पुत्र काब के विषय में जो यहूदी था यह आयत है॥

कि वह तुझसे परे हटजाते हैं। (६५) सो क्या होगा कि यदि कोई दुख उनपर उनके कर्म्मों के कारण आपड़े फिर तेरे तीर ईश्वर की किरियापें खाते हुए आयंगे कि निस्सन्देह हमारा अभिप्राय केवल उपकार और भलाई के और कुछ न था। (६६) यही वह लोग हैं जिनको ईश्वर जानता है कि उनके मनों में क्या है सो उन्हें छोड़दे और उनको शिक्षा दे और उनके विषय में ऐसी बात कह कि वह उनके मनों में बैठ जाय। (६७) हमने किसी प्रेरित को केवल इस निमित नहीं भेजा कि ईश्वर की आज्ञा के अपेक्षा उसकी आज्ञा मानी जाय और यदि जब उन्हों ने अपने आप पर अनीति की और तेरे तीर आते और ईश्वर से क्षमा चाहते और प्रेरित भी उनके निमित क्षमा चाहता तो निश्चय ईश्वर को क्षमा करने हारा और दयालु पाते। (६८) फिर तेरे प्रभु की सौंह कि वह कभी विश्वास लाने हारे न होंगे-उस समय लौं कि वह तुझे उस बात में न्यायी न ठहराएं जिसमें वह झगड़ते हैं और अपने मनों में तेरे निर्णय को ग्रहण करने की रुकावट पाएं और उसको संपूर्ण रीति से ग्रहण करें। (६९) यदि हम उनके निमित यह आज्ञा लिख देते कि अथवा अपने आप को घात करो अथवा देश से निकल जाओ तो उनमें से थोड़ों को छोड़ इसको न मानते और यदि वह उसको मानते जिसकी उनको आज्ञा हुई तो उनके निमित अति उत्तम होता और बहुतही स्थिर होते। (७०) और उस समय निश्चय हम उनको अपने तीर से बहुत बड़ा प्रतिफल देते और निस्सन्देह हम उनको सीधे मार्ग की ओर अगुवाई करते और जिसने ईश्वर और प्रेरित की सेवा की उन लोगों की गिन्ती उनके साथ है जिनको ईश्वर ने अपने वरदान दिए अर्थात भविष्यद्वक्ताओं और सत्यवादियों और साक्षियों और सुकर्म्मियों के साथ उन लोगों की सङ्गति अच्छी है। (७२) यह अनुग्रह ईश्वर की ओर से है ईश्वर बहुत जाननेहारा है॥

रु०—१० (७३) हे विश्वासियो अपनी * रक्षा साथ ले लो फिर चाहे तुम अलग अलग होके निकलो अथवा इकट्ठे होके (७४) निस्सन्देह तुम्हारे बीच में ऐसे मनुष्य हैं जो निकलने में विलंब करते हैं फिर यदि कोई कष्ट पहुंचता है कहते हैं निस्सन्देह ईश्वर ने हम पर उपकार किया कि हम उनके संग उपस्थित न थे (७५) और यदि तुम पर ईश्वर का अनुग्रह होता है तो ऐसे बनकर कि जैसे तुम में और उसमें पहचानही न थी यह कहेगा आह मैं भी इनके संग होता तो

---

* अर्थात शस्त्र।

बड़ी विजय के साथ जैवान होता (७६) फिर उचित है कि ईश्वर के मार्ग में वह लोग लड़ें जो अपना संसारिक जीवन अनन्त के दिन की सन्ती वेंचते हैं और जो ईश्वर के मार्ग में लड़ता हुआ मारा जाय अथवा विजय पाए तो हम निस्सदेह बड़ा प्रति फल देंगे (७७) कौन वस्तु तुमको रोकती है कि तुम ईश्वर के मार्ग में नहीं लड़ते निर्बलों के हेतु पुरुषों के हेतु स्त्रियों और बच्चों के हेतु जो कहते हैं कि हे हमारे प्रभु हमको इस नग्र * से निकाल कि उसके वासी अनीति करने हारे हैं और हमारे निमित अपनी ओर से कोई सहायक खड़ा करदे और अपने यहां से किसी को हमारे निमित्त सहायक बनादे । (७८) जो लोग विश्वासी हैं वह तो ईश्वर के मार्ग में लड़ते हैं और जो अधर्मी हैं वह तागूत के मार्ग में लड़ते हैं सो दुष्टात्मा के मित्रों से लड़ो निस्सन्देह दुष्टात्मा का छल तुच्छ है ॥

रु०—११ (७९) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया कि तुम अपने हाथों को रोकलो और प्रार्थना करो दान दो फिर जब लड़ना लिखा गया तो एक जत्था इन में से ऐसा डरने लगा जैसा ईश्वर का डरहो और कहते हैं कि हे हमारे प्रभु तूने हमपर लड़ाई क्यों लिखदी तूने हमको और थोड़ी देर लौं औसर क्यों न दिया कहदे कि संसार का लाभ थोड़ा है और अन्तका उत्तम है उस मनुष्य के निमित्त जिसने संयम किया सूक्ष्म डोरे के समान भी उस पर अनीति न होगी (८०) तुम जहां कहीं होओगे मृत्यु तुम को वहीं आलेगी चाहे तुम दृढ़ गढ़ों में क्यों न हो जब उन्हें कुछ भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह ईश्वर की ओर से है और जब हानि पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तेरी ओर से है तू कह सब ईश्वर ही की ओर से है उन लोगों को क्या होगया कि इस बात को नहीं समझते (८१) जो कुछ तुझे भलाई पहुंचती है सो ईश्वर की ओर से है और जो कुछ तुझको बुराई पहुंचती है वह तेरी इच्छा की ओर से है हमने तुझ को लोगों के निमित्त प्रेरित बनाकर भेजा है ईश्वर की साची बस है (८२) जिस मनुष्य ने प्रेरित की सेवा की निस्सन्देह उसने ईश्वर की सेवा की और यदि कोई इससे फिर गया तो हमने तुझको उन पर रक्षक बना कर नहीं भेजा (८३) कहते हैं कि हम तो सेवा करते हैं और जब तेरे तीर से बाहर जाते हैं उनमें से एक जत्था जो कुछ तू कहता है उसके विरुद्ध विचार करता है ईश्वर उनके विचारों को लिख लेता है सो तू उनसे परे रह और ईश्वर ही पर भरोसा रख क्योंकि

---

* अर्थात मक्का।　　† अरबी भाषा में खजूर की गुठली के छिलके के समान।　　‡ अर्थात मन अथवा प्राण।

ईश्वर ही पूरा रक्षक * है (८४) सो क्या वह कुरान को नहीं समझते और यदि वह ईश्वर को छोड़ और किसी की ओर से होता तो उसमें बहुतायत बिभेद पाते (८५) जब उनके निकट कोई बात शान्ति अथवा भयकी आती है तो इसको प्रसिद्ध करते हैं और यदि इसको प्रेरितलों पहुँचाते अथवा अपने में से अधिकारी लोगों तक पहुँचाते इनमें से जो समझनेहारे हैं सो समझ लेते हैं यदि तुम पर ईश्वर का उपकार और उसकी दया न होती तो थोड़े लोगों को छोड़ सब दुष्टात्मा के अनुगामी होते। (८६) सो ईश्वर के मार्ग में लड़ तू केवल अपने ही आत्माका उत्तराकारी है विश्वासियोंको उकसा निकटहै कि ईश्वर दुष्टों की प्रचंडता को नाश करदेगा ईश्वर अति कठोर भयानक है और सबसे कठिन दण्ड देने हारा है। (८७) जो कोई भली बात की बिन्ती करता है उसका भी उसमें भाग होगा और जो कोई बुरी बात की बिन्ती करता है उसका भी उसमें भाग है ईश्वर हर वस्तु का रक्षक है। (८८) और जब तुमको नमस्कार † किया जाता है तो उससे उत्तम कुशल की आशीष देओ अथवा उसीको उलट के कहो निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु का लेखा लेनेहारा है। (८९) ईश्वर है कोई देव नहीं है परन्तु वह तुम सबको पुनरुत्थान के दिन जिसमें कुछ सन्देह नहीं एकत्र करेगा ईश्वर से अधिक सत्यबात कहने हारा और कौन है॥

रु० १२—(९०) तुम धर्म्म कपटियों के विषय में दो दल क्यों होगए ईश्वर ने तो उनको उनकी करतूतों के कारण दे पटका क्या तुम आशा रखते हो कि उसको शिक्षा दो जिसको ईश्वर ने भटकाया तुम उसके निमित्त कोई आशा न पाओगे। (९१) वह तो चाहते हैं कि तुम भी मुकरनेहारे होते जैसा कि वह मुकरनेहारे हैं जिस्तें तुम सब समान होजाओ और तुम उनमें से किसी को अपना मित्र मत बनाओ जबलों कि वह ईश्वर के मार्ग में देश ‡ छोड़ कर न निकलें और यदि वह न मानें तो उनको पकड़ो और जहां कहीं पावो घात करो इनमें से किसी को अपना मित्र अथवा सहायक न ठहराओ। (९२) उन लोगों को छोड़ जो उस जाति से जा मिलें जिसमें और तुममें बाचा होचुकी है अथवा तुम्हारे निकट आजायँ इस दशा में कि तुम्हारे साथ लड़ने अथवा अपनी जाति के साथ होकर लड़ने से निराश होचुके हैं यदि ईश्वर चाहता तो निस्सन्देह उनको तुम पर विजय देता और वह तुमसे लड़ते सो यदि वह तुमको छोड़दें

---

* अरबी भाषा में वकील॥　　† अर्थात सलाम।　　‡ अर्थात हिजरत न करें।

और न लड़ें और तुम्हारे तीर सन्धी का सन्देशा भेजें तो ईश्वर ने उनपर तुम्हारे निमित्त कोई मार्ग नहीं * निकाला। (६३) और तुम जाति गणों में ऐसे लोग भी पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी शान्ति में रहें और अपनी जातिसे भी और जब वह उत्पात के निमित्त बुलाए जाते हैं तो वह उस में साथ देते हैं सो यदि तुम्हारे सामने से अलग होवें और तुम्हारी ओर मिलाप का सन्देश न भेजें और अपने हाथों को न रोकें तो उनको पकड़ो और जहां कहीं पाओ उनको घात करो इन्हीं पर हमने तुमको प्रत्यक्षवाद प्रतिवाद दिया है॥

रु०—१३ (६४) विश्वासियों को उचित नहीं है कि किसी विश्वासी को घात करे केवल भूलसे और जो कोई किसी विश्वासी को भूलसे घात करे तो उसको विश्वासी दास निर्बन्ध करना चाहिए और उसके लोगों को लोहूका पलटा देना उचित है इसको छोड़ कि जो कुछ वह आप क्षमा करदें और यदि वह तुम्हारे रिपु जाति में से हो परन्तु विश्वासी हो तो वह विश्वासी दास निर्बन्ध करे और यदि वह ऐसी जाति में से हो कि तुममें और उनमें वाचा ठहर चुकी हो तो लोहूका पलटा मरे हुए के मित्रों को देना और विश्वासी दास निर्बंध करना उचित है सो जो मनुष्य ऐसा वित न रखता हो तो उसको लगातार दो मास लों उपवास करना ईश्वर से क्षमा मांगने के निमित्त उचित है ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (६५) और जो कोई विश्वासी को जान बूझ कर घात करे तो उसका दण्ड नर्क है जिसमें वह सदा रहेगा ईश्वर उस पर क्रोधित होगा और ईश्वर ने उसको श्राप दिया उसके निमित्त भारी दण्ड बना है। (६६) हे विश्वासियो जब तुम ईश्वर के मार्ग में मारे मारे फिरते हो तो पूछ लिया करो और जो तुमको प्रणाम करे उसको यह मत कहो कि तू विश्वासी नहीं क्या तुम इस संसार की अनित्य सामग्री के इच्छुक हो ईश्वर के तीर तो बहुतसी लूटें हैं तुमभी पहिले ऐसेही थे सो ईश्वर ने तुम पर उपकार किया तो पूछ लिया करो जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह ईश्वर उसे जानता है। (६७) वह विश्वासी जो बिना कारण के घर में बैठ रहे और जो ईश्वर के मार्ग में अपने प्राण और धन से युद्ध करते हैं दोनों समान नहीं ईश्वर ने प्राण और धनसे युद्ध करने हारों को बैठे रहने हारों पर अधिक पदवी दी है और सबसे ईश्वर ने अच्छे बरताव का वचन किया है परन्तु युद्ध करने हारों को बैठे रहने हारों पर अति अधिक

---

* अर्थात अब उनसे न लड़ो न उनको दुख दो॥

प्रति फल ठहराया है। (६८) उसने अपनी ओर से पदवीएँ दी हैं क्षमा और दया भी हैं ईश्वर क्षमा करने हारा और दया करने हारा है॥

रु० १४—(६६) जिन लोगों के प्राण दूत ऐसी दशा * में निकालते हैं कि वह अपने प्राणों पर अनीति कर रहे थे तो कहते हैं कि तुम किन में थे वह कहते हैं कि हम उस भूमि में बेबश थे वह कहते हैं कि क्या ईश्वर की पृथ्वी बड़ी न थी कि तुम अपना देश छोड़ कर वहां चले जाते तो यही लोग वह हैं जिनके रहने का ठौर नर्क है जो बहुत बुरा ठिकाना है। (१००) परन्तु पुरुषों स्त्रियों और बच्चों में से जो बलहीन हैं और जो कोई † कारण नहीं बता सकते और न उन को कोई मार्ग बताया गया उन्हें ईश्वर निस्सन्देह क्षमा करेगा क्यों कि ईश्वर क्षमा करने हारा है। (१०१) जो ईश्वर के मार्ग में देश छोड़ता है उन को पृथ्वी पर बहुत सी कुशल के ठौर रहने को हैं और जो कोई अपने घर से ईश्वर के और उस के प्रेरित के निमित्त देश छोड़ने को निकले और यदि फिर उस को मृत्यू आजाय तो उस का प्रतिफल देना ईश्वर के हाथ में है ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है॥

रु० १५—(१०२) और जब तुम देश में यात्रा करो तो तुम पर कुछ पाप नहीं यदि प्रार्थना को न करो यदि तुमको इस बात का भय हो कि दुष्ट तुमको दुःख देंगे निस्सन्देह दुष्ट तुम्हारे प्रत्यक्ष शत्रु हैं। (१०३) जब तू उनके बीच में हो और उनके निमित प्रार्थना की एक मण्डली खड़ी करे तो उचित है कि एक मण्डली उनमें से तेरे संग खड़ी हो और वह अपने शस्त्र अपने साथ रखें फिर जब दण्डवत कर चुकें तो अलग होजाएं और वह दूसरी मंडली जिसने प्रार्थना नहीं की आगे आकर तेरे संग प्रार्थना करें और उचित है कि वह अपना बचाव और अपने शस्त्र अपने संग रखें जो दुष्ट हैं वह यही चाहते हैं कि यदि तुम अपने शस्त्र और सामग्री से अचेत होजाओ तो फिर वह अचानक आ पड़ें यदि तुमको मेंह से दुख हो अथवा रोगी हो तो इसमें तुमपर कोई पाप नहीं कि अपने शस्त्र रखदो परन्तु तुम अपने बचाव का ध्यान रखो ईश्वर ने दुष्टों के निमित्त अनादर का दण्ड प्रस्तुत कर रखा है। (१०४) और जब तुम प्रार्थना कर चुको तो ईश्वर

---

* मक्का के कोई कोई लोग इसलाममलाने के पीछे अधर्मियों से मिले ही रहे और उनके देश में भाग गए कहते हैं कि यह लोग बदर के संग्राम में दूतों के द्वारा घात किए गए जान पड़ता है कि यह आयत उन्हीं के विषय में है और कोई दूतों से मुनकिर और नकीर समझते हैं जो समाधि में मृतकों के विश्वास को परखते हैं।
† अर्थात हीला।

को स्मर्ण करो खड़े हुए बैठे हुए लेटे हुए अपनी करवटों पर और जब तुम को कुशल हो जाय तो प्रार्थना को नियमानुसार करो निस्सन्देह प्रार्थना विश्वासियों पर ठहराई हुई घड़ियों में लिखी गई है। (१०५) उन लोगों का पीछा करने से न रुको * यदि इस से तुम को दुख होता है और तुम्हारी ही नाई उन को भी दुख होता है और तुम को तो ईश्वर से आशा है जो उन को नहीं ईश्वर जान ने हारा और बुद्धिवान है ॥

रु० १६—(१०६) निस्सन्देह हम ने तुझ पर सत्य पुस्तक उतारी है जिस्तें तू लोगों में उस के अनुसार जो ईश्वर तुझ को बताए आज्ञा कर और तू चोरों † का सहायक हो के मत झगड़ ईश्वर से क्षमा मांग निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (१०७) और तू उन लोगों की ओर से मत झगड़ जो अपने मनों में कपट रखते हैं निस्सन्देह ईश्वर कपट करने हारे पापी को मित्र नहीं रखता। (१०८) वह लोगों से छिपाते हैं परन्तु ईश्वर से नहीं छिपा सक्ते यद्यपि वह उस के निकट है जब कि रातों में बैठ कर ऐसी वार्ताओं में जो ईश्वर को नहीं भातीं परामर्श करते हैं और जो कुछ वह करते हैं ईश्वर का ज्ञान उस पर फैला हुआ है। (१०९) तुम तो संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ चुके परन्तु पुनरुत्थान के दिन उन के निमित्त ईश्वर से कौन झगड़ेगा अथवा उन का विचवाई कौन बनेगा। (११०) और जो कोई बुरा कर्म्म करे अथवा अपने आत्मा पर अनीति करे फिर ईश्वर से क्षमा मांगे तो उस के निमित्त ईश्वर क्षमा करने हारा और दया करने हारा होयगा (१११) और जो कोई पाप करता है सो अपने ही निमित्त बुरा करता है ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (११२) और जो कोई दोष अथवा पाप आप करता है और फिर किसी निर अपराध के सिर थोपता है तो वह बड़ा बन्धक और प्रत्यक्ष पाप करता है ॥

रु० १७—(११३) यदि तुझपर ईश्वर का अनुग्रह और उसकी दया न होती तो इनमें से एक दल ने ठहराही लिया था कि तुझको बहकावें—वह किसी को नहीं बहकाते बरन अपनेही आप को वह तुझको कुछ भी हानि नहीं पहुँचाते

---

* उहद के संग्राम के पश्चात् मुसलमान अधर्मियों का पीछा करने से हिचकिचाते थे उस समय यह आयत उतरी। † सन चार हिजरी में नामान के पुत्र क़तादा के चचा ज़ैद के पुत्र रफ़ाआ के घर से दो बख़्तर और कुछ आटा चोरी गया था सहील के बेटे लबेद पर दोष लगा परन्तु महम्मद साहब उसकी सम्ती बशीर को जिसको वह धर्म्म कपटी जानते थे दोषी ठहराते थे कि अवश्य बशीर ही ने चोरी की थी और वह लबेदपर दोष लगाता था उस समय यह आयत उतरी ॥

ईश्वर ने तुझ पर पुस्तक और बुद्धि उतारी है और तुझको वह बातें सिखाई हैं जिनका तुझको ज्ञान नहीं था और तुझपर ईश्वर का बहुत बड़ा अनुग्रह है। (११४) उनके बहुतेरे परामर्शों में कोई भलाई नहीं केवल इसके कि कोई दान देने अथवा भली बात बताने अथवा लोगों में सुधार करने के विषय में परामर्श करें और जो मनुष्य ऐसा करके ईश्वर की प्रसन्नता चाहे हम उसको बहुत शीघ्र और बहुत बड़ा प्रतिफल देंगे। (११५) और जिस मनुष्य ने शिक्षा प्रगट होने के पश्चात प्रेरित से बिरोध किया और विश्वासियों की रीतों के विरुद्ध चला तो फिर हम भी उसको उधरही फेरदेंगे जिस ओर वह फिरा है और हम उसे नर्क में पहुँचा देंगे और वह बहुत बुरा ठौर है॥

रु० १८—(११६) निस्सन्देह ईश्वर उसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साथी ठहराया जाय और उसके उपरान्त जिसको चाहेगा क्षमा करेगा और जिस किसी ने ईश्वर का साझी ठहराया तो वह मार्ग से भटक कर बहुत दूर की भ्रमता में जाय पड़ा। (११७) उसको छोड़कर निस्सन्देह स्त्रियों को पुकार रहे हैं और केवल दंगैत दुष्टात्मा के और किसी को नहीं पुकारते हैं। (११८) जिस को ईश्वर श्राप कर चुका उसने कहा कि मैं अवश्य तेरे सेवकों में से एक ठहराया हुआ भाग अपने निमित लूँगा और निस्सन्देह मैं उसे भटका दूंगा और उनमें इच्छा उत्पन्न करूंगा और मैं उन्हें आज्ञा दूंगा कि वह पशुओं के कानों को मेरे निमित चीरें* और मैं उन्हें सिखाऊँगा कि वह ईश्वर के उत्पन्न किए हुए को बदल दें और जिसने ईश्वर को छोड़ दुष्टात्मा को मित्र बनाया तो निस्सन्देह वह हानि में पड़ा और यह प्रत्यक्ष हानि है। (११९) वह उनको वाचा देता है और उनमें इच्छा उत्पन्न करता है दुष्टात्मा की वाचा कुछ नहीं है केवल धोखा। (१२०) यही लोग हैं जिनका ठौर नर्क है और वह उससे छुटकारा नहीं पायंगे। (१२१) जो लोग विश्वास लाए हैं और सुकर्म किए हैं हम उनको बैकुण्ठों में पहुँचावेंगे जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और वह सदा उसमें रहेंगे ईश्वर ने यह प्रतिज्ञा सत्य की है ईश्वर से अधिक सत्य कहने हारा कौन है। (१२२) न तो तुम्हारी भावनाओं पर न पुस्तक वालों की भावना पर परन्तु जो कोई कुकर्म्म करेगा उसका दण्ड पाएगा और ईश्वर के सन्मुख अपना कोई साथी और सहायक न पाएगा। (१२३) और जो कोई सुकर्म्म करे पुरुष हो या स्त्री और

* अर्थात देवियों को। † अर्थात अरब मूर्ति पूजकों की एक प्राचीन रीति के विषय में है॥

विश्वासी हो वह वैकुण्ठ में प्रवेश करेंगे और उन पर सूक्ष्म सूत के समान भी अनीति न होगी। (१२४) और इससे उत्तम मत किसका है जिसने अपना शीश ईश्वर के आगे नवाया और भलाई करता है और इबराहीम हनीफ़ का अनुगामी है और ईश्वर ने इबराहीम को अपना मित्र बनाया है। (१२५) ईश्वर ही का है जो स्वर्ग और पृथ्वी में है ईश्वर हर वस्तु पर फैला हुआ है।

रु० १९—(१२६) तुझसे स्त्रियों के विषय में पूछते हैं तू कहदे कि ईश्वर तुमको उनके विषय में आज्ञा देता है तो वह उन अनाथ स्त्रियों के विषय में है जिनका भाग तुम देना नहीं चाहते और उनसे विवाह करना चाहते हो और बेबश बच्चों के विषय में यह है कि तुम अनाथों के विषय में न्याय पर स्थिर रहो जो कुछ भलाई तुम करोगे ईश्वर सब जानता है। (१२७) यदि कोई अपने पति के बुरे स्वभाव अथवा असावधानी से डरती हो तो उन दोनों पर कुछ पाप नहीं कि वह परस्पर मेल करें मेल अति उत्तम बात है मनुष्य की इच्छा लोभ ही की ओर झुकी है और यदि तुम भलाई करो और ईश्वर से डरो तो निस्सन्देह वह तुम्हारे कर्मों को जानता है। (१२८) और स्त्रियों के बीच कभी न्याय न कर सकोगे चाहे कितनी ही इच्छा करो तो ऐसी असावधानी भी मत करो कि उसको अधर में लटकता हुआ छोड़ दो यदि तुम परस्पर प्रेम कर लोगे और ईश्वर से डरोगे तो ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१२९) और यदि वह परस्पर एक दूसरे से छूट जांय तो ईश्वर प्रत्येक को अपने फैलाव से धनी कर देगा क्योंकि ईश्वर बहुत बड़ा बुद्धि वाला है। (१३०) ईश्वर ही का है जो कुछ स्वर्गों में है और जो कुछ पृथ्वी में है हमने उन लोगों को जिन को तुम से पहिले पुस्तक दी और तुमको आज्ञा दी कि ईश्वर से डरो यदि तुम मुकर जाओ तो निस्सन्देह ईश्वर ही का है जो स्वर्गों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर धनी और महिमा युक्त है। (१३१) ईश्वर ही का है जो कुछ स्वर्गों में है और पृथ्वी में है और ईश्वर ही पूरा रक्षक है (१३२) यदि वह चाहे तो हे लोगो तुमको मेंट दे और औरों को उपस्थित करदे ईश्वर यह सब कुछ करने पर शक्तिवान है। (१३३) जो इस संसार में प्रतिफल चाहता है तो ईश्वर ही के तीर संसार और अन्त के दिन का प्रतिफल है ईश्वर सुनने हारा और देखने हारा है।

रु० २०—(१३४) हे विश्वासियो न्याय पर स्थिर रहो जब तुम ईश्वर के सन्मुख साक्षी दो चाहे तुम्हारा अपना अथवा माता पिता अथवा कुटुम्बियों की हानि ही क्यों न हो चाहे वह धनवान अथवा निर्धन ही क्यों न हो ईश्वर उनकी

अपेक्षा अधिक दयालु है और न्याय करने में तुम अपनी इच्छा के दास मतबनों परंतु यदि तुम कोई रोक डालो अथवा भूल करो तो ईश्वर उस सबको जो तुम करते हो जानता है। (१३५) हे विश्वासियो ईश्वर पर और उसके प्रेरित पर और उस पुस्तक पर जो उसने अपने प्रेरित पर उतारी और उस पुस्तक पर जो उससे पहिले उतारी विश्वास लाओ और जो ईश्वर से और दूतों से और पुस्तकों से और प्रेरितों से और अन्त के दिन से मुकरा वह अत्यन्त अमश में पड़गया। (१३६) जो लोग विश्वास लाए फिर मुकर गए और फिर विश्वास लाए फिर मुकर गये और फिर अधर्म्म में बढ़ते ही गए ईश्वर उनको कभी क्षमा न करेगा और न उनको मार्ग दिखायगा। (१३७) धर्म्म कपटियों को इसकी सूचना* करदे कि उनके निमित्त कठिन दुखदायक दण्ड है। (१३८) जो लोग विश्वासियों को छोड़ मुकरनेहारों को मित्र बनाते हैं तो क्या वह उनसे सन्मान चाहते हैं सब सन्मान तो ईश्वर ही के तीर है। (१३९) और वह तुम पर पुस्तक में यह आज्ञा उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि ईश्वर की आयतों से अनअङ्गीकार होरहा है अथवा उन पर ठट्ठा किया जारहा है तो उन लोगों के साथ उस समय लों न बैठो कि वह और बातका चर्चा न छेड़ें नहीं तो तुम भी उन्हीं के समान होजाओगे निस्सन्देह ईश्वर धर्म्म कपटियों और अधर्म्मियों को नर्क में इकट्ठा करेगा। (१४०) वह जो तुम्हारी ओर ताकते रहते हैं कि यदि ईश्वर की ओर से तुमको विजय प्राप्त हो तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे और जो धर्म्म हीनों को अवसर हाथ आजाय तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर जय न पाचुके थे और विश्वासियों से तुमको बचा नहीं लिया परन्तु ईश्वर पुनरुत्थान के दिन उनके बीच में निर्णय कर देगा ईश्वर अधर्म्मियों के निमित्त धर्म्मियों पर कोई मार्ग न निकालेगा॥

रु० २१—(१४१) निस्सन्देह धर्म्म कपटी तो मानों ईश्वर को धोखा देरहे हैं और ईश्वर उन्हें धोखा देरहा है जब प्रार्थना के निमित्त खड़े होते हैं तो अत्यंत आलस के साथ केवल लोगों को दिखाने के निमित्त, ईश्वर का चर्चा नहीं करते और यदि करते हैं तो बहुत न्यून। (१४२) वह दुबधे में हैं न इनकी ओर न उनकी ओर जिस किसीको ईश्वर भटका दे तू उनके निमित्त कोई मार्ग न पायगा। (१४३) हे विश्वासियो धर्म्मियों को छोड़ मुकरनेहारों को मित्र न बनाओ क्या

---

* इन्शकाक २४।

तुम अपने ऊपर ईश्वर का प्रत्यक्षवाद प्रतिवाद चाहते हो। (१४४) निस्सन्देह धर्म्म कपटी अग्नि के कारण से नीचे की श्रेणी में होंगे और तू उनके निमित्त कोई सहायक न पायगा। (१४५) परन्तु जिन लोगों ने पश्चाताप किया और अपना सुधार किया और ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ लिया और अपने मत को ईश्वर के निमित्त निष्कोट किया तो उनकी गिन्ती धर्म्मियों में है और ईश्वर धर्म्मियों को शीघ्र बड़ा प्रतिफल देगा। (१४६) ईश्वर तुमको दण्ड देकर क्या करेगा यदि तुम धन्यवादी और धर्म्मी बन जाओ ईश्वर उपकार-स्मृता और बुद्धिमान है॥

६. (१४७) ईश्वर को बुरी बात पुकार कर कहना नहीं भाता परन्तु जिस पर अनीति हुई ईश्वर सुनता और जानता है। (१४८) यदि तुम भलाई प्रगट करो अथवा उसे छिपाओ अथवा कोई पाप क्षमा करो तो निस्सन्देह ईश्वर भी क्षमा करने हारा और शक्तिवान है। (१४९) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर और उसके प्रेरितों से मुकरते हैं और ईश्वर और उसके प्रेरितों में बिभेद करते हैं और कहते हैं कि हमतो किसी को मानते हैं और किसी को नहीं मानते और वह इच्छुक हैं कि उसके बीच में एक और मार्ग निकालें (१५०) यही लोग निश्चय अधर्म्मी हैं और हमने अधर्म्मियों के निमित्त अनादरता का दण्ड रक्खा है। (१५१) जिन लोगों ने ईश्वर और उसके प्रेरितों को मानलिया और उनमें से किसी को भी अलग नहीं किया निकट है उनका प्रतिफल उनको दिया जाए ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है॥

रु० २२—(१५२) पुस्तकवाले तुझसे प्रश्न करते हैं कि तू उनपर स्वर्ग से कोई पुस्तक उतार वह तो मूसा से इससे बढ़कर प्रश्न करचुके हैं कि जब कहा कि हमको ईश्वर सन्मुख दिखादे फिर बिजली ने उनको उसकी आज्ञा के कारण आ पकड़ा और उन्होंने प्रत्यक्ष चिन्ह आने के पीछे बछड़ा बना लिया हमने उसको भी क्षमा किया और मूसा को उनपर हमने प्रत्यक्ष चिन्हदिए। (१५३) और हमने उनसे बचालेने के कारण तूर पर्ब्बत को उनपर ऊंचा* किया और उनसे कहा कि नग्र के फाटक में दण्डवत करते हुए प्रवेश करो और हमने कहा कि सबूत की आज्ञा उलंघन न करो और हमने उनसे बड़ी दृढ़ बाचा ली। (१५४) फिर हमने उनकी बाचा भंग करने के कारण और ईश्वर की आयतों से

* बकर १० ।

मुकरने के कारण और भविष्यद्वक्ताओं को अकारण घात करने के कारण और इस बात के कहने पर कि हमारे हृदयों पर पट * हैं और उनके अधर्म्म के कारण ईश्वर ने उनके हृदयों पर छाप लगादी सो थोड़े हैं जो विश्वास लाते हैं। (१५५) और उनपर उनके अधर्म्म के कारण और मरियम पर मिथ्या दोष लगाने के कारण। (१५६) और यह कहने के कारण कि हमने मरियम के पुत्र ईसा को जो ईश्वर का प्रेरित था घात करडाला परन्तु न उन्हों ने उसे घात किया और न उसे क्रूश पर चढ़ाया परन्तु उनके निमित्त सन्देह डाला गया और जो लोग उसके विषय में विवाद कररहे हैं वह उसकी ओर से आपही सन्देह में हैं उनको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं केवल अनुमान के अनुगामी हैं और उन्होंने उसको निश्चय घात नहीं किया वरन ईश्वर ने उसको अपने समीप उठा लिया ईश्वर बलवान बुद्धिवान है॥ (१५७) पुस्तक वालों में कोई ऐसा नहीं है परन्तु उसपर अपनी मृत्यू से पहिले विश्वास लायगा और पुनरुत्थान के दिन उसपर साक्षी होगा। (१५८) सो यहूदियों के अनीति के कारण हमनें कई पवित्र वस्तुएं जो उनपर लीन थी मलीन करदीं और उनके बहुतों को ईश्वर के मार्ग से रोकने के कारण से भी। (१५६) और उनके ब्याज़ खाने के कारण यदपि उनको वर्जित होचुका था और अकारण लोगों के धन खाजाने के कारण से ऐसेही मुकरने हारों के निमित्त हमने दुखदायक दण्ड उपस्थित कर रखा है। (१६०) परन्तु उनमें जो लोग विद्या में प्रवीण और धर्म्मी हैं वह उस पर जो तुझपर है और तुझसे पहिले उतरा विश्वास लाते हैं प्रार्थना करते और दान देते हैं और ईश्वर और अंत के दिन का विश्वास करते हैं ऐसे लोगों को हम शीघ्र बड़ा प्रतिफल देंगे॥

रु० २३—(१६१) हमने तेरी ओर इसी भांति प्रेरणा की है जैसा कि नूह की ओर और उसके पीछे भविष्यद्वक्ताओं की ओर भेजते आए हैं और हमने इबराहीम इसमाईल इसहाक और याकूब और उसकी सन्तान—ईसा, ऐयूब, यूनस और हारून और सुलेमान की ओर प्रेरणा भेजी थी और हमने दाऊद को स्तोत्र दिया। (१६२) और हमने कई प्रेरितों का वृत्तान्त तुझको पहले सुनाया और हमने कई प्रेरितों का वृत्तान्त तुझको नहीं सुनाया और ईश्वर ने मूसा से सन्मुख होकर वार्तालाप किया। (१६३) प्रेरितों को समाचार देने और भय सुनाने को भेजा जिसतें मनुष्यों को प्रेरितों के पीछे ईश्वर के विषय में कोई वाद विवाद न रहे ईश्वर बलवान बुद्धिवान है। (१६४) ईश्वर इस बात की साक्षी

* अर्थात खतना रहित॥

देता है कि जो कुछ उसने तुझपर उतारा है वह अपने ज्ञान से उतारा है और दूत गण भी साक्षी हैं और ईश्वर की साक्षी बस है। (१६५) निस्सन्देह जो लोग मुकरे और ईश्वर के मार्ग से रुक रहे वह अत्यन्त भ्रमणा में पड़गए। (१६६) निस्सन्देह जिन लोगों ने अधर्म और अनीति की सो ईश्वर उन्हें क्षमा न करेगा और न उनकी अगुवाई करेगा। (१६७) केवल नर्क के मार्ग के जिसमें वह सदा रहेंगे—और यह ईश्वर पर सुगम है (१६८) हे लोगो तुम्हारे तीर तुम्हारे ईश्वर की ओर से सत्य के साथ प्रेरित आ चुका सो विश्वास लाओ कि तुम्हारी भलाई हो और यदि मुकरोगे तो ईश्वरही का है जो कुछ स्वर्गों और पृथ्वी में है ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है (१६९) हे पुस्तकवालो अपने मत में वाक्य बाहुल्य न करो और ईश्वर के विषय में केवल सत्य बात के और कुछ मत कहो मसीह ईसा मरियम का पुत्र ईश्वर का प्रेरित है और उसका वचन जिसको उसने मरियम की ओर डाल दिया और आत्मा है उसमें से सो तुम ईश्वर और उसके प्रेरितों पर विश्वास लाओ और मत कहो कि तीन * हैं छोड़दो कि तुम्हारी भलाई हो ईश्वर तो केवल एकही है—ईश्वर इससे पवित्र है कि उसके कोई पुत्र हो जो कुछ स्वर्गों और पृथ्वी में है सब उसी का है ईश्वरही रक्षक † बस है ॥

रु० २४—(१७०) मसीह ईश्वर का सेवक होने से न झिझकेगा और न समीपी दूत गण। (१७१) और जो कोई ईश्वर की आराधना से रुकेगा और अभिमान करे तो ईश्वर उसको शीघ्र अपने तीर इकट्ठा करेगा। (१७२) सो जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनको पूरा प्रतिफल देगा और अपने अनुग्रह से उनको और भी अधिक देगा। (१७३) और वह ईश्वर के सम्मुख अपने निमित्त कोई साथी और सहायक न पाएंगे। (१७४) हे लोगो तुम्हारे तीर तुम्हारे प्रभु का प्रमाण आचुका है और हमने तुम्हारी ओर प्रत्यक्ष जोति उतारी सो जो लोग ईश्वर पर विश्वास लाए और उसे दृढ़ पकड़ रखा ईश्वर शीघ्र उनको अपनी दया और अनुग्रह में प्रवेश देगा और उनको अपनी ओर सीधा मार्ग दिखायगा। (१७५) तुझसे निर्णय पद पूछते हैं तू कह कि ईश्वर तुम्हें दूर के नातों के विषय में आज्ञा देता है कि यदि कोई पुरुष मर जाय और उसके वंश न हो और बहिन हो तो उसको उसके छोड़े हुए धन में से आधा मिलेगा और वह भाई भी

* अरबी भाषा में शब्द सलासतुन है जिसका अर्थ तिहरा अथवा तिलड़ा। † अर्थात वकील ॥

उसका अधिकारी होगा यदि उसके कोई वंश न हो और यदि दो बहनें हों तो उनके निमित छोड़े हुए धन की दो तिहाई है और यदि कई बहिन भाई पुरुष स्त्री हों तो एक पुरुष को दो स्त्रियों के बराबर भाग मिलेगा—ईश्वर तुम्हारे निमित्त उसको प्रगट करता है ऐसा न हो कि तुम भटक जाओ ईश्वर हर बात को जानता है।

---

५ सूरए मायदा (रसोई का थाल) मदनी रुकू १६ आयत १२०
अति दयालु और कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु०—१ (१) हे विश्वासियो अपनी बाचाओं को पूर्ण करो तुम्हारे निमित्त चरनेहारे पशु लीन किए गए केवल उनके जिनके विषय में तुमको आगे कहा जायगा परन्तु अहराम की दशा में अहेर तुम्हारे निमित्त लीन नहीं निस्सन्देह ईश्वर जो चाहता है उसकी आज्ञा देता है। (२) हे विश्वासियो न तो ईश्वर की ठहराई हुई रीतियों न पवित्र मासों न काबा को ले जाने हारे पशुओं न गले में पट्टा डाले हुए पशु न पवित्र घर के जाने हारों से छेड़छाड़ करो जो अपने प्रभु से अनुग्रह और प्रसन्नता चाहते हैं (३) और जब तुम अहराम * से निकलो तब अहेर करो उस जाति की शत्रुता जिसने तुमको † मस्जिद हराम में जाने से रोक दिया तुमको क्रोधित न करे कि तुम भी अनीति करो भलाई और संयम में एक दूसरे की सहायता करो पाप करने में और अनीति करने में एक दूसरे की सहायता न करो ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर कठिन दण्ड देने हारा है (४) और तुम पर मरा हुआ और लोहू और सुअर का मांस और वह जिस पर ईश्वर को छोड़ किसी और का नाम लिया गया अथवा गला घोंटा हुआ अथवा चोट से अथवा पटककर मारा हुआ अथवा छेदा हुआ अथवा पशुओं ‡ का खाया हुआ खाना तुम पर अलीन है केवल उस के जिसे तुम वध करो और पापाणों की देहरियों § पर अथवा जो तुम बाणों से चिट्ठी डालकर बांटो यह बड़ा पाप है जो मुकरते हैं आज तुम्हारे मत से निराश होकर चले गए सो उनसे मत डरो मुझी से डरो। (५) तुम्हारे निमित्त तुम्हारा मत आज सम्पूर्ण कर दिया और तुम पर अपना

---

* अर्थात जब हज की समस्त रीतिएं पूरी होजाएं और एहराम जो उन दिनों में पहिरी थीं उतार दो।
† सन हिजरी छः में जब महम्मद साहब काबा की यात्रा कररहे थे तो कुरैश ने हुदैब के स्थान पर १४०० मनुष्य भेज कर उनको रोका अन्त में दस वर्ष की सन्धि स्थिर हुई। ‡ अर्थात मांस खानेहारे पशु।
§ अर्थात देवतागण के सामहने ॥

वरदान पूरा कर दिया मैंने तुम्हारे निमित्त इसलाम का मत स्थापित कर दिया परन्तु हां जो भूख से विवश होके और जानबूझ पाप की ओर झुका नहीं है तो ईश्वर उसको क्षमा करने हारा और दयालु है (६) तुझसे प्रश्न करते हैं कि कौन वस्तु लीन की गई है तू कहदे कि तुम्हारे निमित्त पवित्र वस्तुएं लीन की गईं और तुम्हारे सधाए हुए आखेटी जन्तुओं का जिनको तुम ने वही सिखाया और जो कुछ उन्हों ने तुम्हारे निमित्त पकड़ रक्खा है खाओ उस पर ईश्वर का नाम लो ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर शीघ्र लेखा लेने हारा है (७) आज के दिन तुम्हारे निमित्त पवित्र वस्तुएं लीन कीगईं और पुस्तकवालों का भोजन तुम्हें लीन है और तुम्हारा खाना उनके निमित्त और विश्वासी धर्म्मी स्त्रिएं और जिनको तुमसे पहिले पुस्तक दी गई उनकी धर्मी स्त्रिएं भी तुम पर लीन हैं तुम उनके स्त्री-धन उनको देदो इस कारण से कि शुद्धाचरण रहो न कि काम व्याधि बुझाने को न छिपा मित्र रखने को और जो कोई विश्वास से मुकरे उसके साधन * मिटजायंगे और अन्त के दिन हानि उठाने हारों में से होगा।

रु० २—(८) हे विश्वासियो जब तुम प्रार्थना के निमित्त खड़े होओ तो अपने मुहँ और कुहनियों तक अपने हाथ धोलो और अपने सिरको मर्दन करो और अपने पाँव टखनों † तक धोओ। (६) और यदि तुम अशुद्ध होजाओ तो स्नान करलो और यदि तुम रोगी होओ अर्थात् यात्रा में होओ अथवा तुममें से कोई मल मूत्र करके आया हो अथवा तुमने स्त्रियों से प्रसंग किया हो और तुमको जल नहीं मिलता तो स्वच्छ मृत्तिका लेकर उससे अपने मुँहों और हाथों को मर्दन करो ईश्वर तुम पर कठिनाई करना नहीं चाहता वरन तुमको पवित्र करना चाहता है और तुम पर अपना वरदान पूरा करे जिस्तें तुम धन्यवादी बनो। (१०) ईश्वर के उन उपकारों को स्मर्ण करो जो तुम पर हुए और उस वाचा का भी चेत रक्खो जो तुमसे की है जब कि तुमने कहा कि हमने सुन लिया और मान लिया है ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर मनों के भेद जानने हारा है। (११) हे विश्वासियो ईश्वर के सन्मुख न्याय से ठीक साक्षी देने को खड़े होजाओ और किसी जाति का बैर तुम्हें इस बात पर तत्पर न करे कि न्याय छोड़दो वरन न्याय करो यही संयम के अधिक नियरे है ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर को उसका ज्ञान है जो कुछ तुम करते हो। (१२) और ईश्वर ने उन लोगों से जो

---

* अर्थात आमाल।　　† अर्थात घूटी॥

विश्वास लाए हैं और जिन्होंने सुकर्म्म किए हैं प्रतिज्ञा की है उन्हें क्षमा और बड़ा प्रतिफल देगा। (१३) जो लोग मुकरे और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग नर्कगामी हैं। (१४) हे विश्वासियो ईश्वर के उपकारों को अपने पर स्मरण करो कि जब एक जाति ने प्रयत्न किया था कि तुम पर अपना हाथ चलाए और हमने उनके हाथों को तुम पर से रोक दिया ईश्वर से डरो उचित है कि विश्वासी ईश्वरही पर भरोसा करें॥

रु० ३—(१५*) निस्सन्देह ईश्वर ने इसरायल जाति से वचन लिया और हमने उनमें बारह अध्यक्ष ठहराए ईश्वर ने कहा निस्सन्देह मैं तुम्हारे साथ हूँ यद्यपि तुम प्रार्थना की लाज करो और दान दो और मेरे प्रेरितों पर विश्वास लाओ और तुम उनको सहायता दो और तुम ईश्वर को ऋण दो अच्छा ऋण तो मैं निस्सन्देह तुम्हारे पाप मिटा दूंगा और मैं तुम्हें बैकुण्ठों में प्रवेश दूंगा जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और जो कोई तुम में से इसके पीछे मुकरेगा तो भटकनों के मार्ग की ओर भटक गया। (१६) फिर हम ने उनकी प्रतिज्ञा भंग करने पर उनको श्राप दिया और उनके मनों को हम ने कठोर कर दिया वह वचनों † को उनकी ठौर से फेर देते हैं और जिस बातकी शिक्षा उनको की गई थी उसका एक भाग भूल गये और सदा उनके किसी न किसी छलसे जान कार होता रहेगा बरन उन में से थोड़े हैं सो तू उनको क्षमा कर और छोड़ दे निस्सन्देह ईश्वर उपकारियों को मित्र रखता है। (१७) उन लोगों से भी जो कहते हैं कि निस्सन्देह हम नसारा हैं हमने वाचा ली थी और जो कुछ उनको शिक्षा कीगई थी उसका एक भाग बिसर गए सो हम ने उनमें पुनरुत्थान लों बैर और डाह डाल दिया और निकट है कि ईश्वर उनको उससे जो वह करते थे सचेत करेगा (१८) हे पुस्तक वालो तुम्हारे तीर तुम्हारा प्रेरित आया है और निस्सन्देह वह तुम्हारे निमित्त बहुत कुछ उस पुस्तक ‡ में से वर्णन करता है जो तुम छिपाते थे और बहुत बातें क्षमा करता है निस्सन्देह तुम्हारे तीर ईश्वर की ओर से ज्योति और पुस्तक आ चुकी है जिसमें ईश्वर कुशल के मार्ग की शिक्षा करता है उनको जो उसकी प्रसन्नता चाहते हैं और वह अपनी आज्ञासे उन्हें अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में ले आता है और उनको सीधे मार्ग की अगुवाई करता है।

---

* आयत १५ से १८ लों ख़ैबर विजय होने के थोड़े ही समय पहिले उतरीं और ख़ैबर सन हिजरी सात के आरम्भ में विजय हुआ। † अर्थात शब्दों को। ‡ अर्थात अल किताब॥

(१९) वह लोग निश्चय दुष्ट होगए जो कहते हैं मसीह पुत्र मरियम ही ईश्वर है तू कह ईश्वर के सामने किसी वस्तु का और कौन स्वामी हो सकता है यदि वह चाहे तो मसीह पुत्र मरियम को और उसकी माता को और उन सबको जो पृथ्वी पर हैं नाश करदे। (२०) स्वर्ग और पृथ्वी का राज ईश्वर ही का है और जो कुछ उनमें चाहता है रचता है ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिवान है। (२१) यहूदी और नसारा ने कहा कि हम ईश्वर के पुत्र और उसके दुलारे हैं तू कह दे कि फिर तुम्हे तुम्हारे पापों से क्यों दण्ड देता है वरन तुम भी उसकी सृष्टि में एक जीव* हो उसी भांति के जैसा उसनें बहुत से जीवों को सृजा जिसे चाहता है क्षमा करता है और जिसे चाहता है दण्ड देता है स्वर्गों और पृथ्वी का राज ईश्वर ही का है और जो कुछ उस में है उसी की ओर लौट जायगा। (२२) हे पुस्तक वालो तुम्हारे निकट हमारा प्रेरित उस समय कहता आया जब कि प्रेरितों में से कोई नहीं था जिसतें तुम यह न कहो कि हमारे तीर कोई सुसमाचार देने हारा और डर सुनाने हारा नहीं आया निस्सन्देह तुम्हारे निकट सुसमाचार देने हारा और डर सुनाने हारा आचुका और ईश्वर हर वस्तु पर सामर्थी है॥

रु० ४—(२३) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि हे जाति ईश्वर के उपकारों को स्मर्ण करो कि जब उसने तुम में भविष्यद्वक्ता उत्पन्न किए और तुम में राजा बनाए और तुमको वह दिया जो संसार के लोगों में से किसी को नहीं दिया। (२४) हे जाति पवित्र भूमि में प्रवेश करो जिसको ईश्वर ने तुम्हारे निमित लिख दिया है और अपनी पीठ मत फेरो यदि पलटोगे तो हानि उठानेहारों में होओगे। (२५) उन्हों ने कहा कि हे मूसा उस में तो शक्तिमान† जाति रहती हैं और निस्सन्देह जबलों वह निकल न जांय हम कभी उस में प्रवेश न करेंगे यदि वह निकल जांय तो निस्सन्देह हम प्रवेश करेंगे। (२६) उनमें से मनुष्यों‡ ने जो डरते और जिन पर ईश्वर ने उपकार किया था उन्होंनें कहा कि फाटक के मार्ग से प्रवेश करो और जब तुम उसमें प्रवेश कर चुकोगे तो निस्सन्देह तुम जय पाओगे यदि तुम विश्वासी हो तो ईश्वर ही पर भरोसा रखो। (२७) उन्हों ने कहा कि हे मूसा हम कभी उसमें प्रवेश न करेंगे जबलों कि वह उसमें हैं सो तू और तेरा प्रभु दोनों जाके उनसे संग्राम करो जबलों हम यहीं बैठे हैं। (२८) वह § बोला कि हे मेरे प्रभु मैं अपने प्राण और अपने भाई को छोड़ किसी

---

* अर्थात हस्ती। † अर्थात जब्बार। ‡ अर्थात यहोशू और कालिब। § अर्थात मूसा।

का स्वामी नहीं सो तू हम में और उस पापी जाति में अन्तर करदे। (२६) कहा गया कि निस्सन्देह वह देश उन पर अधीन किया गया चालीस वर्ष लौं पृथ्वी में मारे २ फिरेंगे सो तू उस पापी जाति के कारण मत कुढ़॥

रु० ५—(३०) और उनको आदम के दो * पुत्रों की वार्ता ठीक ठीक रीति से पढ़सुना जब वह दोनों ईश्वर की भेट के निमित्त कुछ भेट लाए तो एक † की तो ग्रहण होगई और दूसरे की ग्रहण न हुई उसने ‡ कहा कि निश्चय मैं तुझे मार डालूंगा उसने उत्तर दिया कि उसमें केवल इसके और कुछ नहीं कि ईश्वर भक्तों की ग्रहण करता है (३१) यदि तू मुझपर अपना हाथ उठायगा कि मुझको मारडाले तो मैं अपना हाथ तेरी ओर तुझे मारडालने को न उठाऊंगा निस्सन्देह मैं ईश्वर का डर रखता हूं जो सब सृष्टियों का प्रभु है (३२) मैं चाहताहूं कि तू मेरा और अपना पाप अपने ऊपर लादले और नर्कगामियों में होजा दुष्टों का यही दण्ड है। (३३) फिर उसको § उसकी इच्छा ने अपने भाई के लोहू बहाने पर प्रस्तुत किया फिर उसको मारडाला और इस भांति हानि उठाने हारों में होगया (३४) फिर ईश्वर ने एक कौवे को भेजा कि उसे धरती खोदकर बतावे कि किस भांति अपने भाई को गाड़े फिर बोला धिक्कार है मुझपर कि मैं इस योग्य भी नहीं हुआ कि इस कौवे की भांति जिस्से मैं अपने भाई को गाड़ देता और फिर वह पछतानेहारों में से होगया। (३५) इस कारण हमने इसरायल जाति पर यह लिख दिया कि जो कोई एक प्राण बिना प्राण के बदले अथवा देश में उत्पात हुए बिना घातकरे तो मानों सब लोगों को घात किया और जिस मनुष्य ने किसी को जीता रखा तो मानो उसने सब मनुष्यों को जीवता रखा (३६) और निस्सन्देह हमारे प्रेरित उनके तीर प्रत्यक्ष आयतें लेके आए फिर उनमें से बहुतेरे उसके पीछे भी देशमें अनीति करते हैं (३७) जो लोगों और ईश्वर और उसके प्रेरित से आग्रहना करते हैं और देश में उपद्रव मचाने का प्रयत्न करते हैं उनको यही दण्ड है कि वह घात करे जांय अथवा सूलीपर लटकाए जांय अथवा उनके हाथ पांव उलटी ¶ ओर से काटे जांय अथवा देश से मेट दिए जांय सन्सार में तो उनके निमित्त यही अनादर है और अन्तके दिन उनके निमित्त बड़ा भारी दण्ड है (३८) परन्तु हां जिन्होंने तुम्हारे औसर पाने से पहिले पश्चाताप किया स्मर्ण रखो कि ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है।

---

* अर्थात काइन और हाबील। † अर्थात हाबील की। ‡ अर्थात काइन ने।
§ अर्थात काइन को। ¶ अर्थात यदि दहिना हाथ काटा जाए तो बायां पांव॥

रु० ६—(३९) हे विश्वासियो ईश्वर से डरते रहो और उसलों पहुँचने की युक्ति ढूंढ़ो और उसके मार्ग में लड़ो जिससे तुम्हारा भला हो। (४०) निस्सन्देह जो मुकरते हैं यदि उनके तीर संसार भर की संपति और उसी की बराबर और हो और पुनरुत्थान के दिन उसे अपने छुटकारे के निमित देना चाहे तौभी वह ग्रहण न होगा उनके निमित सदा का दण्ड है। (४१) वह चाहेंगे कि अग्नि में से निकल जायं परन्तु वह निकलने न पायंगे उनके निमित सदा का दण्ड है। (४२) चोर पुरुष और चोर स्त्री के हाथ काट * डालो यह उनके उपार्जन किए का ईश्वर की ओर से दण्ड है ईश्वरही बली बुद्धि वाला है। (४३) फिर जिसने अपने अपराध के पीछे पश्चाताप किया और अपना सुधार किया तो ईश्वर उसको क्षमा करेगा निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (४४) क्या तुम नहीं जानते कि ईश्वरही का राज स्वर्गों और पृथ्वी में है वह जिसको चाहता है दण्ड देता है और जिसे चाहता है क्षमा करता है निस्सन्देह ईश्वर हर बात पर शक्तिवान है। (४५) हे प्रेरित जो लोग अधर्म्म में प्रयत्न करते हैं तुझको शोकित न करें वह उन लोगों में से हैं जो अपने मुहों से कहते हैं कि हम विश्वास लाए परन्तु उनके हृदय विश्वास नहीं लाए और उन लोगों में से हैं जो यहूदी हैं और झूठी बात के सुननेहारे हैं और दूसरे लोगों के निमित सुननेहारे † हैं जो तुझलों नहीं आए और बचनों को उनकी ठौरों से बदल डालते हैं और कहते हैं कि यदि यह तुमको कहा जाय तो उसको ग्रहण करलो और यदि न कहा जाय तो बचे रहो और जिस मनुष्य को ईश्वर ने भटकाने की इच्छा की उसके निमित तू ईश्वर से कुछ न पायगा यह वह लोग हैं कि ईश्वर ने नहीं चाहा कि उनके हृदयों को पवित्र करे सो उनके निमित इस संसार में अनादरता और अंतकाल में कठिन क्लेश है। (४६) वह मिथ्या के सुननेहारे हैं और अलीन ‡ खाने हारे और फिर यदि तेरे तीर आवें तो उनपर आज्ञा कर अथवा उनसे मुहँ फेरले और यदि तू उनसे मुहँ फेर लेगा तो वह कभी तुझको हानि न पहुंचा सकेंगे और यदि तू उनपर आज्ञा करे तो न्याय के साथ आज्ञा कर निस्सन्देह ईश्वर न्याय करनेहारों को मित्र रखता है। (४७) वह तुझको क्योंकर न्याई बनायंगे उनके निकट तो तौरेत है जिसमें ईश्वर की आज्ञा उपस्थित है और इसके उपरान्त फिर भी वह फिर जाते हैं वह कभी विश्वासी नहीं॥

---

* महम्मद साहब के विषय में कहा जाता है कि जब वह मक्का विजय करने को जारहे थे तो एक स्त्री को चोरी के दोष में इसी भांति दण्ड दिया सम्भव है कि आयत ३९ से ४४ लों इसी समय उतरी हों।
† अर्थात तेरे शत्रुओं के भेजे हुए भेदिए। ‡ अर्थात बियाज और घूस॥

रु० ७—(४८) निस्सन्देह हमने तौरेत उतारी उसमें शिक्षा और जोति है और भविष्यद्वक्ता जो ईश्वर के आधीन थे उसके अनुसार आज्ञा करते थे उन लोगों को जो यहूदी थे और रब्बी और याजक ईश्वर की पुस्तक के रक्षक ठहराए गए थे और जिसके वह साक्षी थे सो तुम उन लोगों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों पर तुच्छ मूल्य न लो और जो मनुष्य ईश्वर के उतारे हुए के अनुसार न करें वही लोग दुष्ट हैं। (४९) और हमने उनके निमित उसमें * लिख दिया कि प्राण की सन्ती प्राण और आंख की सन्ती आंख और नाक की सन्ती नाक और कान की सन्ती कान और दांत की सन्ती दांत और घावों का पलटा पूरा पूरा और यदि उसको क्षमा करे तो वह उसके निमित प्रायश्चित है और जो मनुष्य ईश्वर के उतारे हुए के अनुसार आज्ञा न करें वही लोग दुष्ट हैं। (५०) और हम उन्हीं के पद चिन्ह ईसा पुत्र मरियम को लाए जिसने उस वस्तु को जो उससे आगे थी और तौरेत को सिद्ध ठहराया उसको इंजील दी जिसमें शिक्षा और ज्योति थी और अपने से पहिले तौरेत को सिद्ध किया और डरने हारों को मार्ग बताती और उपदेश करती है। (५१) सो उचित है कि इंजील वाले उसी के अनुसार आज्ञा करें जो ईश्वर ने उसमें उतारी और जो कोई ईश्वर के उतारे हुए के अनुसार आज्ञा न करे वही लोग अनाज्ञाकारी हैं। (५२) और तुझ पर हमने पुस्तक उतारी है जो सिद्ध करती है अगली पुस्तकों को और उनकी रक्षा करती है सो उनपर उसके समान आज्ञा पर जो ईश्वर ने उतारी है उनकी इच्छाओं पर मत चल कि उसके विरुद्ध करे जो तुझ पर सत्यता से उतरा है हमने तुममें से प्रत्येक के निमित व्यवस्था और मार्ग ठहराया है। (५३) यदि ईश्वर चाहता तो सबको एकही मत † में कर देता परन्तु वह चाहता है कि तुम्हारी परिक्षा उसमें करे जो कुछ तुम्हें दिया है सो भलाई की ओर शीघ्र बढ़ो तुम सबको ईश्वर की ओर जाना है और जिस बात में तुम विभेद करते थे वह तुम्हें जता देगा। (५४) सो तू उनमें ईश्वर के उतारे हुए के अनुसार आज्ञा कर और उनकी इच्छाओं का अनुगामी न हो उनसे सचेत रह ऐसा न हो कि तुझको उन आज्ञाओं से भटकादें जो ईश्वर ने तुझ पर उतारी हैं और यदि वह फिरजायें तो जानलें कि इसको छोड़ कुछ नहीं कि ईश्वर उनको उनके कुछ अपराधों के कारण दण्ड देना चाहता है निस्सन्देह लोगों में बहुतेरे अनाज्ञाकारी हैं। (५५) क्या फिर अज्ञानता के समय की आज्ञा चाहते हैं परन्तु ईश्वर से बढ़के विश्वास रखने हारी जाति को और कौन आज्ञा देनेहारा है॥

---

* निर्गम २१। २३—२७ आयत लों। † उम्मत अथवा जाति अथवा मत॥

रु० ८—(५६) हे विश्वासियो यहूदी और नसारा * को मित्र मत बनाओ उनमें से कुछ कुछ के मित्र हैं और जो कोई तुम में से उनसे मैत्री रखे वह उन्हीं में का है ईश्वर दुष्ट जाति को मार्ग नहीं दिखाता। (५७) तू अब देखेगा कि जिनके हृदय में रोग है उनकी ओर दौड़े जाते हैं और कहते हैं कि हमें डर है कि हमको कोई दुख पहुँचे हो सकता है कि ईश्वर जयदे अथवा कोई और निर्णय अपने तौर से भेजे सो वह औरको अपने मनों में जो कुछ छिपा रखते हैं उस पर लज्जित होते हुए उठेंगे। (५८) और धर्म्मी कहेंगे कि क्या यह वही लोग हैं जिन्हों ने ईश्वर की किरिया अपनी पोढ़ी किरियाओं के संग खाई थी निस्सन्देह वह तुम्हारे साथ हैं उनके कर्म्म मिट गए और वह और को हानि उठाने हारों में होगए। (५६) हे विश्वासियो जो अपने मत से फिर गया तो ईश्वर शीघ्रही एक जातिको बुलायेगा जिसे वह मित्र रखता है और जो उसे मित्र रखती है और जो विश्वासियों के साथ नम्र हैं और मुकरनेहारों के साथ कठोर हैं वह ईश्वर के मार्ग में संग्राम करेंगे और उलाहना देनेहारों के उलाहने से भय न करेंगे यह ईश्वर का अनुग्रह है जिसको चाहता है दान करता है ईश्वर बड़े फैलाव वाला और बुद्धिवान है। (६०) तुम्हारा मित्र ईश्वर और उसका प्रेरित है और वह लोग जो विश्वास लाए हैं वह प्रार्थना करते हैं और दान देते हैं और दण्डवत करते हैं। (६१) और जो कोई ईश्वर को और उसके प्रेरित और विश्वासियों को मित्र रखें निस्सन्देह वह ईश्वर के दल हैं और उन्हीं की जय होगी।

रु० ६—(६२) हे विश्वासियो उन लोगों को जिनको तुमसे पहिले पुस्तक दीगई जो तुम्हारे मत की हँसी करते अथवा खेल समझते हैं और अधर्म्मियों को मित्र मत बनाओ परन्तु ईश्वर से डरो यदि तुम धर्म्मी हो। (६३) और न उन्हें जिन्हें जब तुम प्रार्थना के हेतु पुकारते हो तो उसको ठट्ठा अथवा खेल बनाते हैं निस्संदेह यह इसी कारण है कि वह ऐसी जाति है जिसको बुद्धि नहीं। (६४†) कहदे कि हे पुस्तकवालो क्या तुम हममें इसको छोड़ कोई और दोष निकालते हो कि हम ईश्वर पर और जो हम पर उतरा और उसपर जो हमसे पहिले उतरा हुआ था विश्वास लाए और तुममें से बहुत से अनाज्ञाकारी हैं। (६५) कहदे मैं

---

* उहद की हार के पश्चात यह आज्ञा दीगई क्योंकि उहद के संग्राम से पहिले शिक्षा हुई थी कि अधर्म्मियों के विरुद्ध यहूदी और ख्रिष्टियानों के संग मेल करलें। — † आयत ६४ से ८८ लों उस समय उतरीं जब महम्मद साहब और यहूदियों से शत्रुता पड़ चुकी थी इस विचार से सन हिजरी ४ और ८ के बीच किसी समय उतरीं॥

तुमको इससे अधिक बुरे दण्ड का ईश्वर की ओर से क्या समाचार दूँ कि जिस पर ईश्वर ने श्राप किया और जिस पर क्रोधित हुआ तो उनमें से बन्दर और सूअर और तागूत के पूजक कर दिए वही लोग बुरे ठौर में हैं और सीधे मार्ग से अत्यंत भटके हैं। (६६) जब तुम्हारे तीर आते हैं तो कहते हैं कि हम विश्वास लाए परन्तु वास्तव में वह अधर्म में पड़े हुए हैं और वह अधर्म ही में निकले हैं और जो कुछ वह अपने हृदयों में छिपाते हैं ईश्वर को उसका ज्ञान है। (६७) तू उनमें से बहुतों को देखता है कि वह पाप करते और बैर करते और मलीन खाने में प्रयत्न करते हैं निस्सन्देह जो कुछ वह करते हैं अत्यन्त बुरा है। (६८) उनके गुरु * और याजक उनको पाप करने और अपावन खाने से क्यों नहीं बर्जते निस्सन्देह जो कुछ उन्होंने किया अत्यंत बुरा है। (६९) यहूदी कहते हैं कि ईश्वर का हाथ बँध गया है उन्हीं के हाथ बंधजायंगे और उनके इस कहने पर धिक्कार है उसके † तो दोनों हाथ खुले हैं वह जिस भांति चाहता है व्यय करता है जो कुछ तेरे प्रभु की ओर से तुझपर उतारा गया—इससे उनको दुष्टता और मुकरना बढ़ेगा क्योंकि हमने उनमें बैर और डाह पुनरुत्थान लों डाल रखा है जब वह युद्ध के निमित आग सुलगाते हैं ईश्वर उसको बुझा देता है और जब देश में उपद्रव करने का प्रयत्न करते हैं परन्तु ईश्वर उपद्रवियों को मित्र नहीं रखता। (७०) और यदि पुस्तक वाले विश्वास लाते और डरते तो हम उनके अधर्म को ढांक देते और हम उनको वरदानों की बारियों में प्रवेश देते और यदि वह तौरेत और इंजील और जो कुछ उनपर उनके प्रभु की ओर से उतरा मानते तो अपने ऊपर ‡ और अपने नीचे § से खाते उनमें से एक दल ठीक मार्ग पर चलने हारा है और उनमें से बहुतेरे ऐसे हैं कि जो कुछ वह करते हैं वह अत्यंत बुरा है॥

रु० १०—(७१) हे प्रेरित उनको उसका संदेश दे जो तुझपर तेरे प्रभु की ओर से उतरा है और यदि ऐसा न करे तो तूने उसका संदेश नहीं पहुंचाया ईश्वर तुझे मनुष्यों से बचा लेगा ईश्वर अधर्मी जाति की अगुवाई नहीं करता (७२) कह हे पुस्तक वालो तुम किसी मार्ग पर नहीं जबलों तौरेत और इंजील और जो कुछ तुम पर तुम्हारे प्रभु की ओर से उतरा उस पर स्थिर न होओ

---

* अर्थात रब्बियों। † अर्थात् ईश्वर के। ‡ अर्थात् आकाश से। § अर्थात पृथ्वी से।

परन्तु जो कुछ तुझपर तेरे प्रभु की ओर से उतरा * है वह निस्सन्देह उनमें से बहुतों को अनाज्ञाकारी और अधर्म्म करने में अधिक करेगा सो तू दुष्ट जाति पर शोक न कर। (७३) निस्सन्देह जो विश्वासी हैं और जो यहूदी हैं और जो सायबी † हैं और नसारा हैं और जो ईश्वर पर और अंत के दिन पर विश्वास लाए और भले काम किए तो न उनको भय है न वह शोक करेंगे। (७४) निस्सन्देह हमने इसराएल सन्तान से वाचा ली थी और हमने उनके तीर प्रेरित भेजे और जब उनके निकट कोई ऐसा प्रेरित आया जो उनकी इच्छानुसार नहीं था तो कितनों को झुठलाया और कितनों को घात ‡ किया। (७५) उन्होंने विचार किया कि इसमें कोई उपद्रव न होगा सो वह अन्धे और बहरे होगए फिर ईश्वर ने उनकी ओर दृष्टि की फिर उनमें से बहुत से अन्धे और बहरे हुए और ईश्वर उनके कार्य्यों को देखता है। (७६) निस्सन्देह वह अधर्म्मी हुए जो कहते हैं कि ईश्वर वही मसीह पुत्र मरियम है परन्तु मसीह ने कहा कि हे इसराएल सन्तान ईश्वर की जो मेरा और तुम्हारा प्रभु है आराधना करो निस्सन्देह जिसने ईश्वर का साझी ठहराया उसपर ईश्वर ने वैकुण्ठ को मलीन कर दिया उसका ठिकाना अग्नि है दुष्टों का कोई सहायक नहीं। (७७) निस्सन्देह वह लोग अधर्म्मी हुए जिन्हों ने कहा कि निश्चय ईश्वर तीन में का तीसरा है केवल एक ईश्वर के और कोई देव नहीं और यदि वह उससे जो कहते हैं न रुकें तो उन लोगों को जो उनमें से अधर्म्मी हुए बहुत कठिन दण्ड होगा। (७८) क्यों नहीं वह ईश्वर की ओर फिर कर पश्चाताप करके पाप क्षमा करवाते ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है। (७९) मसीह पुत्र मरियम प्रेरित को छोड़ और कुछ नहीं उससे पहिले बहुत प्रेरित बीत चुके और उसकी माता पवित्र है और दोनों भोजन करते थे देख हम किस रीति उनपर अपने चिन्ह वर्णन करते हैं परन्तु देख वह कहां उलटे जारहे हैं। (८०) तू कह क्या तुम ईश्वर को छोड़ उसकी आराधना करोगे जो तुम्हारे निमित हानि और लाभ की सामर्थ्य नहीं रखता ईश्वरही सुनने और जानने हारा है। (८१) तू कह हे पुस्तक वालो तुम मत में केवल सत्य के वाक्य बाहुल्य न करो और उन लोगों की चाल पर जो पहिले भटक गए हैं और बहुतों को भटका गए और जो सीधे मार्ग से भटक गए मत चलो॥

---

* यहां से जान पड़ता है कि कुरान की शिक्षा यह है कि यहूदी तौरेत पर और ख्रिष्टियान इंजील पर विश्वास रखें और कुरान पर उस दशा में विश्वास लाएं जबलों वह इन दोनों को सिद्ध करता रहे।
† बकर ५९। ‡ १ थिसलोनियों २:१५॥

रु० ११—(८२) जो इसरायल वंश में से अधर्म्मी हुए-दाऊद* और ईसा पुत्र मरियम की जिभ्या से उनपर श्राप किया गया इस कारण कि उन्होंने अनाज्ञाकारी की और अनीति करते थे वह परस्पर एक दूसरे को बुरे कर्म्म से नहीं रोकते थे और जो कुछ वह करते थे निस्सन्देह वह बुरा था। (८३) तू उनमें से बहुतों को देखता है जो दुष्टों से मित्रता करते हैं उन्होंने अपने आगे बहुत बुराई भेजी है उन पर ईश्वर का कोप हुआ और सदा दण्ड में हैं। (८४) यदि वह ईश्वर पर और उस भविष्यद्वक्ता पर और जो कुछ उस पर उतरा है विश्वास लाते तो उनको कभी मित्र न बनाते परन्तु बहुतेरे उनमें अनाज्ञाकारी हैं। (८५) तू सब लोगों से अधिक विश्वासियों के विषय में शत्रुता में यहूदी और साझी ठहरानेहारों को पायगा और तू सबसे अधिक प्रेम में विश्वासियों के विषय में उन लोगों को पायगा जो कहते हैं कि हम नसारा हैं यह इस कारण है कि उनमें कसीस † और राहिब ‡ हैं और वह घमंड नहीं करते॥

(८६) और जिस समय सुनते हैं जो हमने उस प्रेरित पर उतारा तू देखता है कि उनके नेत्रों से आंसू की धारा चलती है यह इस हेतु है कि उन्होंने सत्य को जान लिया और कहते हैं कि हे हमारे प्रभु हम विश्वास लाए हैं हमको साक्षियों में लिख रख। (८७) हमको क्या हुआ कि हम ईश्वर पर विश्वास न लाए और जो हमारे तीर पहुंचा हमको आशा है कि हमारा प्रभु हमको भले मनुष्यों के संग प्रवेश देगा। (८८) तो उनको ईश्वर ने उनके इस कहने की सन्ती बैकुण्ठें दीं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं वह सदा उसमें रहेंगे भले काम करने हारों का यही प्रतिफल है और जो अधर्म्मी हुए और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग नर्कगामी हैं॥

रु० १२—(८९) हे विश्वासियो पवित्र वस्तुओं को अलीन मत करो जिनको ईश्वर ने तुम्हारे निमित्त लीन किया है अनीति मत करो निस्सन्देह ईश्वर अनीति § करने हारों को मित्र नहीं रखता। (९०) जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारे निमित लीन और पवित्र किया है उसको खाओ ईश्वर से डरो जिस पर तुम विश्वास लाए हो। (९१) ईश्वर तुमको तुम्हारी उन किरियाओं में जो व्यर्थ हैं नहीं पकड़ेगा निश्चय उन किरियाओं में पकड़ेगा जो तुमने बांधी हैं उसका प्रायश्चित्त दस दरिद्रियों को मध्यम श्रेणी का भोजन जो तुम अपने घरके लोगों को खिलाते हो खिलाना

---

* बकर ६१ मार्क ८:१० । † अर्थात् बिशप । ‡ अर्थात् खृष्टियान यती । § तहरीम २ आयत ८९ से ९१ लौं सन् हिजरी सात में उतरी॥

है अथवा बस्त्र बनवा देना अथवा दास निर्बन्ध करना परन्तु जिससे यह न बन पड़े तो तीन दिन उपवास करे यह तुम्हारी किरियाओं का प्रायश्चित है जब तुम किरिया खाचुको अपनी किरियाओं की रक्षा करो इस भांति ईश्वर तुम पर अपनी आयतें बर्णन करता है जिस्तें तुम धन्यवाद करो। (९२) हे विश्वासियो मदिरा जुआ और मूर्त्ति और पांसे और जो दुष्टआत्मा के अशुद्ध कर्म्म हैं उनसे बचते रहो कदाचित तुम्हारा भला हो (९३) दुष्टात्मा यही चाहता है कि तुम में मदिरा और जुआ के द्वारा शत्रुता और डाह डाले और तुमको ईश्वर चर्चा और प्रार्थना से रोके सो क्या तुम इससे रुक रहने हारे हो ईश्वर की आज्ञामानो और प्रेरित के आधीन होओ और चौकस रहो फिर यदि तुम फिरोगे तो जान रखो कि हमारे प्रेरित का काम तुमको संदेश पहुंचा देना है। (९४) उन पर जो विश्वास लाए और सुकर्म किए इस बात में कि पहिले जो कुछ खा चुके * कुछ पाप नहीं जब वह ईश्वर से डरे और विश्वास लाए और वह किया जो ठीक है और उससे डरे और विश्वास लाए और डरते रहे और सुकर्म किए ईश्वर सुकर्म करने हारोंको मित्र रखता है।

रु० १३—(९५) हे विश्वासियो ईश्वर तुम को अहेर करने में एक बात से जांचेगा जिसलौं तुम्हारे हाथ अथवा तुम्हारे भाले पहुंचे जिस्तें जानले कि कौन बे देखे उससे डरता है और जिसने अनीति की उसके निमित कठिन दण्ड है (९६ †) हे विश्वासियो जब तुम इहराम बांधे हो तो अहेर मत करो और जिसने जान बूझकर उसको घात किया तो उसीके समान जो घातहुआ बदले में देओ जैसा दो न्यायी ठहरादें उन पशुओं में से जो काबा में पहुंचनेहारे हैं अथवा उसका प्रायश्चित दारिद्रियों को भोजन कराना है अथवा उसकी बराबर उपवास करे जिस्तें वह अपने बुरे कर्म का स्वाद चाखे ईश्वर ने बीते हुए को क्षमा किया और जिसने फिर किया ईश्वर उससे बदला लेगा ईश्वर बली पलटा लेने हारा है (९७) समुद्र का अहेर और उसका भोजन करना तुम्हारे निमित्त लीन किया गया और यात्रियों के लाभार्थ और जबलौं कि तुम इहराम बांधे हो बनका अहेर तुम पर अलीन है ईश्वर से डरो जिसके तीर तुम सब इकट्ठे किए जाओगे। (९८) ईश्वर ने काबा को जो प्रतिष्ठित घर है लोगों के हेतु कुशल ‡ बनाया है और हराम का मास और भेट के पशुओं को और पट्टा डाले हुये पशुओं को और

---

* अर्थात् अलीन वस्तुएं लीन और अलीन के विचार से पहिले। † आयत ९९ से १०० लों हुदैबा के संग्राम के अन्त में उतरीं। ‡ अर्थात् कुशलस्थान॥

यह इस हेतु है जिस्ते तुम जान लो कि निस्सन्देह ईश्वर जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर सब कुछ जानता है और जान लो कि ईश्वर कठिन दण्ड देनेहारा है और कि ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है (९९) प्रेरित का केवल आज्ञा पहुंचाने के और कुछ कार्य नहीं है जो तुम प्रगट करते हो और जो तुम छिपाते हो ईश्वर उसे जानता है (१००) तू कह कि अपवित्र और पवित्र समान नहीं यद्यपि अपवित्र की अधिकता तुझे अच्छी लगे हे बुद्धिवानो ईश्वर से डरो जिस्तें तुम्हारा भला हो।

रु० १४—(१०१) हे विश्वासियो उन बातों के विषय में प्रश्न मत करो कि यदि वह तुम पर प्रगट करदी जांय तो तुमको दुख होगा परन्तु यदि तुम सम्पूर्ण कुरान उतरने के पश्चात उनके विषय में प्रश्न करोगे तो वह तुम पर प्रगट करदी जायँगी ईश्वर ने क्षमा किया ईश्वर क्षमा करने हारा और धीरजवान है निस्सन्देह तुमसे पहिले एक जाति ने उसके विषय में प्रश्न किया था फिर उन्हीं में से अधर्म्मी होगए। (१०२) ईश्वर ने बहीरा * सायबा † वसीला ‡ हाम § को नवीन नहीं ठहराया परन्तु अधर्म्मी ईश्वर पर झूठ बांधते हैं और इनमें से बहुतेरों में बुद्धि नहीं है। (१०३) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ ईश्वर ने उतारा है और उसके प्रेरित की ओर आओ तो कहते हैं कि हमको तो वही बस है जिस पर हमने अपने पितरों को पाया क्या तब भी यदि उनके पितर न जानते थे और न उन्हों ने अगुवाई पाई हो। (१०४) हे विश्वासियो तुम अपनी रक्षा आप करो नहीं तो तुमको कोई मनुष्य जो भटका हुआ है हानि पहुँचा देगा यद्यपि तुमने शिक्षा पाई तुम सबको ईश्वर की ओर फिर जाना है और तुमको बता देगा जो कुछ तुम करते थे। (१०५) हे विश्वासियो तुम में साक्षी होना उचित है जब तुम में से किसी को मृत्यु आवे और मृत्यु पत्र लिखने लगे तो तुममें से दो विश्वास योग्य मनुष्य साक्षी हों अथवा और दो बाहर वालों में से हों और यदि तुमने देश में यात्रा की हो और तुम पर मृत्यु का दुख आ पड़े तो उनको प्रार्थना के पीछे लौं ठहराए रखो और यदि तुम उन पर सन्देह करो ईश्वर की किरिया यह कहते हुए खायँ कि हम अपनी साक्षी धनके निमित्त नहीं बेचते यद्यपि वह हमारा कुटुम्ब ही हो और हम ईश्वर की साक्षी को नहीं छिपाएँगे नहीं तो निस्सन्देह हम भी पापियों में हो

---

* कान चिरा ऊंट। † अर्थात सांड़। ‡ वह बकरी जो बकरा के संग उत्पन्न हुई। § ऊंटनी जो दसबार ब्यायुकी हो॥

जायँगे। (१०६) फिर यदि जान पड़े कि यह दोनों पाप से सत्य को छिपा गए तो उन लोगों में से और दो मनुष्य खड़े हों जिनका भाग दबा है और यह समीपी नातेदार हों फिर यह दोनों ईश्वर की किरिया यह कहते हुए खायँ कि हमारी साक्षी उनकी साक्षी से अधिक सत्य है और हमने कुछ अनीति नहीं की है निस्सन्देह यदि हम ऐसा करेंगे तो हम दुष्टों में होयँगे। (१०७) यह रीति साक्षी के अधिक समीप है यह भय करेंगे कि पहिलों की किरिया के पश्चात् उनकी किरिया उलटी न पड़े ईश्वर से डरो और सुन रखो कि ईश्वर अनाज्ञाकारी जाति की शिक्षा नहीं करता॥

रु० १५—(१०८) जिस दिन ईश्वर प्रेरितों को इकट्ठा करेगा उनसे कहेगा तुमको किस रीति उत्तर मिला था वह कहेंगे हमको ज्ञान नहीं निस्सन्देह तूही गुप्त बातों का जानने हारा है। (१०९) और जब ईश्वर कहेगा हे ईसा मरियम के पुत्र अपने पर और अपनी माता पर मेरे उपकारों को स्मरण कर जब मैंने पवित्र आत्मा से तेरी सहायता की और तू लोगों से पालने में और बड़ा होके बोलता था। (११०) और जब तुझको पुस्तक और बुद्धि और तौरेत और इंजील सिखाई जब तू मट्टी से पक्षी का रूप उत्पन्न करता था और मेरी आज्ञा से उसमें फूंकता था जिससे वह पक्षी बन जाय तो वह मेरी आज्ञा से पक्षी होजाता था और जन्म अन्धों और कोढ़ी को मेरी आज्ञा से चंगा करदेता था और मेरी आज्ञा से मृतकों को जिलाता था जैसा मैंने इसराएल सन्तान को तुझसे रोका जब तू उनके तीर प्रत्यक्ष चिन्ह लेकर आया जो उनमें अधर्म्मी थे कहने लगे यह तो प्रत्यक्ष टोना है। (१११) और जब हमने हवारियों * पर प्रेरणा भेजी कि मुझ पर और मेरे प्रेरित पर विश्वास लाओ तो बोले कि हम विश्वास लाए और तू साक्षी रह कि हम मुसलमान † हैं। (११२) जब हवारियों ने कहा हे ईसा मरियम के पुत्र क्या तेरा प्रभु हम पर स्वर्ग से थाल ‡ उतार सकता है उसने कहा कि ईश्वर से डरो यदि तुम धर्म्मी हो। (११३) उन्हों ने कहा हम चाहते हैं कि उसमें से खायँ और हमारे हृदय शान्तिवान होजाएं और हमें जान पड़े कि तू ने हमसे सत्य कहा और हम उस पर साक्षियों में से हों। (११४) ईसा मरियम के पुत्र ने कहा कि हे ईश्वर हमारे प्रभु हम पर स्वर्ग से थाल उतार कि वह हमारे निमित पर्व्व § हो और तेरी ओर से हमारे पहिलों और पिछलों के निमित चिन्ह

---

* अर्थात् खृष्ट के प्रेरित। † अर्थात् विश्वासी हैं। ‡ अर्थात् भोजन भरा थाल। § अर्थात् ईद।

हो —हमें जीविका दे कि सर्वोत्तम जीविका देनेहारा है। (११५) ईश्वर ने कहा निस्सन्देह मैं उसको तुझपर उतारने हारा हूँ फिर जो मनुष्य उसके पश्चात तुममें से अधर्म्मी हो तो निस्सन्देह मैं उसे दण्ड दूंगा और वह दण्ड *, ऐसा होगा कि सन्सार के लोगों में से किसी को भी न दिया गया होगा॥

रु० १६—(११६) जब ईश्वर कहेगा कि हे ईसा मरियम के पुत्र क्या तूने लोगों को कहा कि मुझको और मेरी माता को ईश्वर के उपरान्त दो और ईश्वर मानो वह कहेगा कि तू पवित्र है मुझको क्या हुआ जिससे मैं कहता कि जिसका मुझको कुछ अधिकार नहीं यदि मैंने वह कहा होगा तो निस्सन्देह तू तो जानता है तुझे मेरे हृदय की बात का ज्ञान है और मुझे ज्ञान नहीं कि तेरे हृदय में क्या है निस्सन्देह गुप्त के भेदों का जाननेहारा तूही है। (११७) मैंने केवल उसको उनसे कुछ और नहीं कहा जो तूने आज्ञा की कि ईश्वर की आराधना करो जो मेरा और तुम्हारा प्रभु है और मैं जबलों कि उनमें था उनपर रक्षक था फिर जब तूने मुझे मृत्यु दी तो तूही उनका रक्षक था और हर बात पर साक्षी है। (११८) यदि तू उनको दण्ड दे वह तेरे दास हैं और यदि तू उनको क्षमा करे तो तूही बलवन्त बुद्धिवान है। (११९) ईश्वर ने कहा यह वह दिन है कि जिसमें सत्यवादियों को उनका सत्य लाभ देगा उनके निमित वैकुण्ठ हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और वह सदा उसमें रहेंगे ईश्वर उनसे प्रसन्न हुआ और वह उससे प्रसन्न हुए यही बड़ा मनोर्थ पाना है। (१२०) ईश्वरही का राज्य आकाशों और पृथ्वी में है और जो कुछ उसमें है और वह हर वस्तु पर शक्तिवान है॥

६ सूरए इनाम (पशु) मक्की रुकू २० आयत १६५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) सर्व महिमा ईश्वरही के निमित्त है जिसने आकाशों और पृथ्वी को रचा और अँधेरे और उजाले को ठहराया सो जो मुकरते हैं वह अपने प्रभु के संग उनको † उसके तुल्य ठहराते हैं। (२) वह वही है जिसने तुमको मट्टी से उत्पन्न किया और एक समय ठहराया और एक समय उसके तीर ठहराया हुआ है और

---

* १ करंथी ११:२७ जान पड़ता है कि महम्मद साहब प्रभुभोज की ओर सूचना करते हैं।
† अर्थात अपनी मूर्तों को।

तुम फिर भी सन्देह में हो। (३) वही ईश्वर आकाशों और पृथ्वी में है और तुम्हारे गुप्त और प्रगट को जानता है और जो कुछ तुम उपार्जन करते हो वह भी जानता है। (४) उनके निकट कोई आयत उनके प्रभु की आयतों में से ऐसी नहीं आई कि जिससे वह मुँह मोड़ते न रहे हों। (५) सो जब सत्य बात उनलों पहुँची उसको झुठलाया और निकट है कि उनके तीर उसका समाचार जिस पर वह हँसते थे आजायगा। (६) क्या उनको इस बात की सुध नहीं कि हमने उनसे पहिले कितनों को नाश कर दिया जिनको हमने देश में ऐसा बल दिया था जैसा तुमको नहीं दिया और उन पर आकाश से लगातार वर्षनेहारे मेघ भेजे और हमने उनके नीचे धाराएँ उत्पन्न करके बहादीं फिर हमने उनको पाप के कारण से नाश कर डाला और उनके पीछे और जाति * को खड़ा किया। (७) यदि हम तुझ पर पत्र पर लिखा हुआ उतारते और वह उसको अपने हाथों से छू भी लेते फिर भी जो अधर्मी होगये हैं यही कहते कि निस्सन्देह यह केवल प्रत्यक्ष टोना के और कुछ नहीं। (८) वह कहते हैं क्यों उस पर कोई दूत नहीं उतरा और यदि हम दूत उतारें तो काम ही पूरा होजाय और उनको अवसर न मिलता यदि हम उसे दूतही बनाते तौ भी वह मनुष्य ही के स्वरूप † में होता और हम इनमें वही सन्देह डालते कि जिस बात में वह अब सन्देह करते हैं। (१०) तुझसे पहिले भी प्रेरितों के साथ हँसी की गई और उसी ने उनको पलट कर घेर लिया जिस बात पर वह हँसते थे॥

रु० २—(११) तू कह समस्त पृथ्वी में फिरो और देखो कि झुठलाने हारों का क्या अन्त हुआ। (१२) और पूछ जो कुछ स्वर्गों और पृथ्वी में है किसका है कह कि ईश्वर का है जिसने अपने ऊपर दया लिख ली है निस्सन्देह तुम सबको वह पुनरुत्थान के दिन जिसमें कोई सन्देह नहीं इकट्ठा करेगा जिन लोगों ने अपने प्राणों को गँवाया है वह विश्वास न लायँगे। (१३) जो कुछ रात्रि और दिवस में बसता है उसका है वह सुनता और जानता है। (१४) तू कह क्या मैं ईश्वर के उपरान्त किसी और को सहायक बनाऊं वह तो स्वर्गों और पृथ्वी का सृजनहार है और सबको जीविका देता है और उसको कोई जीविका नहीं देता और कहदे निस्सन्देह मैं पहिला मनुष्य हूँ जिसको आज्ञा मिली और जिसने इसलाम ग्रहण किया और साझी ठहराने हारों में मत हो। (१५) कहदे निस्सन्देह मैं

---

* अर्थात् नव्यों को। † सूरए हम सजिदा आयत १६॥

यदि अपने प्रभु की आज्ञा न मानूं तो उस भयानक दिनके दण्ड से डरता हूँ। (१६) जिस मनुष्य से उस दिन यह टल गया तो निस्सन्देह ईश्वर ने उस पर दया की और यही प्रत्यक्ष सुदशा में हैं। (१७) और यदि ईश्वर तुझको कोई हानि पहुँचाए तो उसका हटानेहारा केवल उसके कोई नहीं और यदि वह तुझको भलाई पहुँचाये तो वह हर वस्तु पर सामर्थी है। (१८) वह अपने दासों पर सामर्थ्य रखने हारा है वह बुद्धिवान और जानने वाला है। (१९) तू कह सबसे बड़ी साची क्या है ईश्वर मेरे और तुम्हारे बीच में साची है यह क़ुरान जो तुझ-पर उतरा इस हेतु है कि मैं तुमको सचेत करदूं और उनको जिन तक यह पहुँचे क्या तुम साची देते हो कि ईश्वर के साथ और देव हैं कहदे कि मैं यह साची नहीं देता और कहदे निस्सन्देह वह अकेला ही ईश्वर है और निस्सन्देह मैं उस बात से रहित हूँ कि जिनको तुम उसके साथ साभी ठहराते हो। (२०) जिनको हमने पुस्तक दी है वह उसको ऐसा चीन्हते हैं जैसा अपने पुत्रों * को और जिन्हों ने अपने प्राणों को गँवाया वह कभी विश्वास न लाएँगे। (२१) उस मनुष्य से अधिक दुष्ट कौन है जिसने ईश्वर पर मिथ्या दोष लगाया अथवा उसके चिह्नों को मिथ्या ठहराया निस्सन्देह दुष्टों का भला नहीं † होता॥

रु० ३—(२२) और जिस दिन हम उन सबको इकट्ठे करेंगे हम उनसे जो साभी ठहराते हैं कहेंगे कि अब तुम्हारे साभी कहां हैं जिन पर तुम घमंड करते थे। (२३) फिर उनके तौर केवल इसके और कोई छल ‡ बल नहीं होगा बरन यह कहेंगे ईश्वर अपने प्रभुकी किरिया कि हम साभी ठहराने हारे न थे। (२४) देख कैसा झूठ अपने ऊपर बोले और जो बातें बनाते थे वह सब जाती रहीं। (२५) और कोई उनमें से तेरी ओर कान लगाते हैं हमने उनके हृदयों पर पट डाल दिए हैं कि उसको न समझें और उनके कानों में भारी पन है और यदि हमारे चिन्हों को देखें तो भी प्रतीत न करेंगे यहांलों कि जब तेरे निकट आएंगे तो कठोरता से विवाद करेंगे जो अधर्मी हैं वह कहते हैं कि यहतो कुछ नहीं परन्तु अगलों की कहावतें हैं। (२६) वह इससे रोकते हैं और उससे भागते हैं वह केवल अपने और किसी को नाश नहीं करते और फिर भी नहीं समझते। (२७) और यदि तू देखे उन्हें जब वह अग्नि पर धरे जायंगे तो वह कहते हैं आह! हम लौटादिए जायं तो हम अपने प्रभु के चिन्हों को न झुठलायं बरन

---

* रा८ २६। † इस प्रकार की भगकी क़ुरान के और ११ स्थानों में दीगई है। ‡ अर्थात् बहाना

हम विश्वासियों में होजायं। (२८) कुछ नहीं वरन अब तो उन पर प्रगट होगया जो कुछ वह इससे पहिले छिपाते थे और यदि यह फिर उलटे फेर दिए जायं तो वहीं करगे जिससे वह वर्जे गए थे वह तो सचमुच झूठे हैं। (२६) उन्होंने कहा सांसारिक जीवन को छोड़ और कुछ नहीं हम फिर कभी न उठेंगे। (३०) और यदि तू उन्हें देखे जब वह अपने प्रभु के सन्मुख खड़े किए जायंगे और उनसे कहेगा कि क्या यह बात सत्य नहीं है कहेंगे हाँ शपथ है अपने प्रभु की कहेगा सो चाखो अब दण्ड को उस अधर्म्म के बदले जो तुम करते थे॥

रु० ४—(३१) वह नाश हुए जिन्होंने ईश्वर से मिलना झूठ जाना जबलों कि वह घड़ी उन पर अचानक आपड़ेगी और कहनेलगें गे हाय शोक हमारे अपराध जो हमने उसमें किए और वह अपने बोझ अपनी पीठ पर उठाते हुए आयंगे और जो कुछ वह उठायंगे जानलो बहुत बुरा है। (३२) सन्सारिक जीवन तो खेल क्रीड़ा है परन्तु अन्त का घर डरनेहारों के निमित अच्छा है सो क्या तुम नहीं समझते। (३३) हम भली भांति जानते हैं कि निस्सन्देह जो कुछ वह कहते हैं उससे तुझको शोक * होता है परन्तु वह केवल तुझकोही नहीं झुठलाते वरन यह दुष्ट तो ईश्वर के चिन्हों से मुहँ फेरते हैं। (३४) और निस्सन्देह तुझसे पहिले भी प्रेरित झुठलाए गए और वह झुठलाए जाते और दुख पाने पर धीरज वान रहे यहांलों कि हमारी सहायता उनके निकट आपहुंची और कोई ईश्वर की बातों को बदल नहीं सकता और तुझको उसके प्रेरितों का वृत्तान्त पहुंच चुका है। (३५) यदि उनके मुंह फेरने से तू क्रुधित होता है तो यदि तुझसे होसके तो पृथ्वी में कोई सुरंग ढूंढ़ निकाल अथवा कोई सीढ़ी † स्वर्गलों फिर उनको एक चिन्ह ला दे यदि ईश्वर चाहता तो सबको एक मार्ग पर इकट्ठे कर देता सो तू मूर्खों में कभी न हो। (३६) वह मानते हैं जो सुनते थे और मृतकों को ईश्वर उठाएगा फिर उसकी ओर जायंगे। (३७) उन्होंने कहा क्यों उसपर कोई चिन्ह उसके प्रभु की ओर से न उतरा कहदे ईश्वर इस बात पर सामर्थी है कि कोई चिन्ह उतारे परन्तु बहुतेरे उनमें नहीं जानते। (३८) कोई पृथ्वी पर

---

* अबूजहल ने कहा था कि महम्मद साहब सच बोलते और वह कभी झूठ नहीं बोलते हैं परन्तु यदि क़ुस्सीबंश अब भी ज़ायरीन के रक्षक हैं और उसको पानी पिलाते है और काबा की कुंजियां भी उन्ही के अधिकार में हैं तो उचित है कि भविष्यद्वाक्य की पदवी भी उन्ही लोगों में नियत हो तो फिर क़ुरेश के तीर क्या रहजायगा। † सूरए नूर ११ सजामा का पुत्र बस्सी जो प्राचीन समय में काबा का द्वारपाल था उसने एक गर्गज पर सीढ़ी लगाई थी जिस्तें ईश्वर लों पहुँच कर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करे।

चलनेहारा पशु न कोई पक्षी जो दो पन्खों से उड़ता है ऐसा नहीं है कि उसके दल भी तुम्हारी नाईं * न हों और कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसको हमने पुस्तक में न लिखरक्खा हो फिर वह सब अपने प्रभु की ओर इकट्ठे किए जायंगे। (३९) वह जिन्होंने कहा कि हमारी आयतें मिथ्या हैं वह बहरे और गूंगे अंधकारों में हैं ईश्वर जिसको चाहता है भटकाता है और जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर डाल देता है। (४०) तू कह देखो तो यदि तुम पर ईश्वर का दण्ड आवे अथवा वह घड़ी आवे तो बताओ केवल ईश्वर के किसको पुकारोगे यदि तुम सत्य बोलते हो। (४१) वरन उसी को पुकारोगे और जिस दुख के निमित उसे पुकारोगे यदि चाहे तो वह उसको हटादेता है और जिनको तुम उसका साझी बनाते हो उसको भूल जाओगे॥

रु० ५—(४२) हमने तुझसे पहिले बहुत जातियों में प्रेरित भेजे फिर हमने उन को दण्ड और विपता में पकड़ा कि कदाचित वह अपनी दीनता प्रगट करें। (४३) फिर क्यों न उन्हों ने आधीनी की जब दण्ड उन पर पहुंचा परन्तु उन के हृदय कठोर होगये और दुष्टात्मा ने जो कुछ वह करते थे उन्हें भला कर के दिखाया। (४४) और जब वह उस को जिसकी उन को शिक्षा दी गई थी भूल गये और हमने उन पर हर वस्तु के द्वार खोल दिये यहां लों कि जब पाई हुई वस्तु से प्रसन्न हुये तो हमने उन को अचेती में पकड़ा और वह निराश हो गये। (४५) फिर इस जाति की जड़ जिस ने दुष्टता की काटी गई सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है जो समस्त सृष्टियों का प्रभु है। (४६) तू कह देखो यदि ईश्वर तुम्हारे कान और आंखें तुम से छीन ले और तुम्हारे हृदयों पर छाप कर दे तो ईश्वर को छोड़ और कौन ईश्वर है जो तुम्हें फेर दे देख हम किस रीति आयतें वर्णन करते हैं परन्तु वह फिर भी भागते हैं। (४७) कह क्या तुमने देखा है कि यदि तुम पर ईश्वर का दण्ड अकस्मात अथवा कह कर आवे तो कौन नाश होगा केवल दुष्ट जाति। (४८) हमने प्रेरितों को नहीं भेजा केवल इस के कि सुसमाचार दें और डरायें सो जो कोई विश्वास लाया और सुकर्म किये तो उन को न कुछ भय होगा न शोक। (४९) और जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं उन की अनाज्ञाकारी के कारण उन को दण्ड लगे गा। (५०) कह दे कि मैं तुम से नहीं कहता कि ईश्वर के भण्डार मेरे तीर हैं न यह

---

* नीति वचन ३० : २५—२६ ॥

कि मैं गुप्त को जानता हूं मैं तुमसे नहीं कहता कि निस्सन्देह मैं दूत हूँ मैं केवल उस के और का अनुगामी नहीं होता जो मुझ को प्रेरणा होती है तू कह दे कि क्या अन्धा और सुझांखा समान हैं क्या तुम इस पर ध्यान नहीं करते।

रु० ६—(५१) उन्हें सचेत कर दे उस से जो डरते रहेंगे वह अपने प्रभु के तीर इकट्ठे किये जायंगे उस को छोड़ उनका कोई सहायक नहीं और न कोई उनके निमित विन्ती करने हारा जिस्तें वह डरते रहें। (५२) उन लोगों को न निकाल दे जो अपने प्रभु को प्रातःकाल और संध्या काल पुकारते हैं और उसके दर्शन की अभिलाषा करते हैं तुझ पर उनके लेखे में से कुछ नहीं न तेरे लेखे में से उन पर न हो कि तू उन को हांक दे और तू दुष्टों में हो जाय। (५३) और इसी भांति हमने एक को एक से परिक्षा की कि वह कहें कि क्या यह वही लोग हैं जिन पर ईश्वर ने अनुग्रह किया है क्या ईश्वर को धन्यवाद मानने हारों का ज्ञान नहीं। (५४) और जिस समय वह लोग तेरे निकट आवें जो हमारी आयतों पर विश्वास रखते हैं तो तू कह तुम्हारी कुशल हो प्रभु ने उन पर दया लिख रखी है जो कोई तुम में से अनजाने बुरा कर्म करे फिर तत्पश्चात पश्चाताप करे और अपना सुधार करले निस्सन्देह उस के निमित वह क्षमा करने हारा और दयालु है। (५५) इसी भांति हम अपनी आयतें खोल कर वर्णन करते हैं जिस्तें पापियों के निमित मार्ग खुल जांय।

रु० ७—(५६) कह कि निस्सन्देह मुझको उनकी आराधना करना वर्जा गया है जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते हो और कहदे मैं तुम्हारी इच्छाओं के आधीन नहीं और यदि होऊं तो मैं निस्सन्देह भटक जाऊंगा और शिक्षा पाए हुओं में न रहूंगा (५७) कह कि मैं निस्सन्देह अपने प्रभु की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण रखता हूं और तुमने उसे झुठलाया मेरे तीर वह वस्तु नहीं जिसकी तुम शीघ्रता * करते हो ईश्वर के उपरान्त किसी की आज्ञा नहीं वह वर्णन करता है सत्य को वही उत्तम निर्णय करता है (५८) कह यदि मेरे तीर वह वस्तु होती जिसकी तुम शीघ्रता करते हो तो मेरे और तुम्हारे बीच में निर्णय हो चुकता और ईश्वर दुष्टों को भलीभांति जानता है (५९) गुप्त की कुंजियां उसीके तीर हैं केवल उसके कोई नहीं जानता वह जानता है कि क्या कुछ वन में है जो कुछ समुद्र में है और कोई पत्ता विना उसके ज्ञानके नहीं गिरता और न कोई बीज

* अर्थात पुनरुत्थान के दिन का दण्ड।

पृथ्वी के अंधकारों में न हरा न सूखा परन्तु वह सब उसकी वर्णन करनेहारी पुस्तक में है। (६०) वह वही है जो मार डालता है तुमको रात्री † में और जानता है जो कुछ तुमने दिन में उपार्जन किया और तुम्हें फिर उठाता है जिस्तें नियत समय पूरा किया जाय और फिर तुमको उसीकी ओर फिर जाना है और तब वह तुम से कहेगा कि तुमने क्या कुछ किया है।

रु० ८—(६१) वही अपने दासों पर प्रबल है और उन पर अपने रक्षक भेजता है यहां लौं कि जब तुम में से किसी को मृत्यु पहुंचे हमारे भेजे हुए उसे लेलेवें वह भूल नहीं करते। (६२) और ईश्वर के पास ले जाते हैं जो उनका यथार्थ स्वामी है यह उसीकी आज्ञा है वह शीघ्र लेखा लेने हारा है। (६३) कह कौन तुमको बनों और समुद्रों के अन्धकारों से छुटकारा देता है जिसको गिड़-गिड़ाते हुए चुपके चुपके पुकारते हो कह यदि वह हमको छुटकारा दे तो निश्चय हम उसका धन्यवाद करेंगे। (६४) कह ईश्वरही तुमको उससे और हर कठि-नाई से रहित कर सकता है और तुम फिर भी उसके साथ साझी ठहराते हो। (६५) कह उसको शक्ति है कि तुम पर ऊपर से दण्ड भेजे और तुम्हारे पावों के नीचे से अथवा तुम को गोष्टियों में करदे और एक गोष्टी को दूसरे की लड़ाई का स्वाद चखा दे देख हम क्योंकर अपने चिन्ह वर्णन करते हैं जिस्ते वह समझें (६६) तेरी जाति ने उसे झुठलाया यदपि कि वह सत्य है कहदे मैं तुहारा हितवादी नहीं हूं हर एक भविष्यद्वाणी का पूरा होने का समय है निकट है कि तुम उसे जानजाओगे। (६७) और जब तू उन लोगों को देखे कि अनुचित रीति से हमारी आयतों पर वार्तालाप करते हैं तो उन से अलग होजा यहांलौं कि उनको छोड़ और किसी विषय में बातचीत करने लगें और यदि दुष्ट आत्मा कभी तुझको भुला दे तो स्मरण होने पर दुष्टों के साथ मत बैठ। (६८) और जो संयमी है उसके सिर इसका लेखा नहीं है केवल शिक्षा करदेना जिस्तें वह संयमी बने (६९) उन लोगों से परे रह जिन्होंने अपना मत खेल अथवा क्रीड़ा बना रखा है और इस संसार के जीवन ने उनको धोखा दे रखा है और उन्हें स्मरण करा कि प्रत्येक प्राणी अपने किये के अनुसार पकड़ा जायगा केवल ईश्वर के न कोई सहायक है न हित वादी है यदपि वह कितनाही बदला उसके बदले में दे परन्तु वह ग्रहण न किया जायगा॥

---

† अर्थात निद्रा देखो जमर ४१॥

रु० ६—वही लोग हैं जो अपनी उपार्जना के कारण बिनाश में पड़े हैं उनके पीने के निमित खौलता हुआ पानी और कठिन दण्ड है क्योंकि उन्होंने अधर्म्म किया। (७०) कहदे क्या हम ईश्वर के उपरान्त उसे पुकारें जो हमको न तो लाभ पहुंचाता है न हानि और क्या उलटे पांव फिर जांय जबकि ईश्वर हमको मार्ग बता चुका है उस मनुष्य के समान जिसको दुष्टात्माओं ने पृथ्वी में बहका कर व्याकुल करदिया था उसके मित्र हैं जो उसे सीधे मार्ग पर बुलाते हैं कि हमारे तीर शीघ्र आ—तू कह निस्सन्देह ईश्वर ने शिक्षा दी है और हमको आज्ञा दीगई है कि हम सृष्टियों के प्रभु के आधीन हों। (७१) और यह कि प्रार्थना को स्थिर रखो और उससे डरते रहो यह वही है जिसके तीर इकट्ठे किए जाओगे। (७२) और यह वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को यथार्थ रीति से रचा और जिस दिन कहेगा कि हो और वह होजायगा। (७३) उसकी बात सत्य है राज्य उसी के निमित है जिस दिन तुरही फूंकी जायगी गुप्त और प्रगट का जानने हारा और वह बुद्धिवान है और उसको हर बात का ज्ञान है। (७४) जब इबराहीम ने अपने पिता आजर से कहा क्या तूने मूर्तों को देव ठहराया है निस्सन्देह मैं तुझको और तेरी जाति को प्रत्यक्ष भ्रम में देखता हूं। (७५) इसी भांति हम इबराहीम को आकाशों और पृथ्वी का राज्य दिखाते * थे जिस्तें वह प्रतीत करने हारों में होजाय। (७६) और जब उस पर रात्रि ने छाया की उसने एकतारे को देखा कहने लगा कि यही मेरा प्रभु है परन्तु जब वह छिप गया बोला कि मैं छिपने हारों को मित्र नहीं रखता। (७७) और जब चन्द्रमा को उदय होते देखा बोला यह मेरा प्रभु है और फिर जब वह अस्त होगया तो बोला यदि मेरा प्रभु मेरी अगुवाई न करे तो निस्सन्देह मैं दुष्ट जाति में होजाऊंगा। (७८) और जब उसने सूर्य्य को चढ़ते देखा तो बोला कि यही मेरा प्रभु है और यही सबसे बड़ा है और जब वह अस्त होगया तो बोला कि हे मेरी जाति निस्सन्देह मैं उससे रहित हूं जो तुम साझी ठहराते हो। (७९) निस्सन्देह मैंने अपना मुंह उसकी ओर फेरा जिसने स्वर्गों और पृथ्वी को उत्पन्न किया एक हनीफ के समान—मैं मूर्ति पूजकों में नहीं हूं। (८०) उसकी जाति ने उसके साथ झगड़ा किया उसने कहा क्या तुम मेरे साथ ईश्वर के बिरुद्ध लड़ते हो निस्सन्देह उसने मेरी अगुवाई की है और जिसको तुम उसके साथ साझी

---

* देखो उत्पत्ति १९ : ९ ॥

ठहराते हो मैं उससे भय नहीं करता केवल उसके यदि मेरा ईश्वर किसी बात को चाहे मेरे प्रभु का ज्ञान सर्व वस्तुन पर फैला हुआ है क्या तुम ध्यान नहीं करते। (८१) मैं क्योंकर उससे डरूं जिसको तुम साभी ठहराते हो जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि ईश्वर के साथ उसका साभी ठहराते हो जिसके निमित तुम्हारे तीर कोई प्रमाण नहीं आया सो दोनों जत्थाओं में से कौन अधिक शान्ति का विशेष अधिकारी है कहो यदि तुम जानते हो। (८२) जो लोग विश्वास लाए हैं उन्होंने अपने विश्वास में दुष्टता नहीं मिलाई यही लोग हैं जिनके निमित शान्ति है और वह शिक्षित हैं॥

रु० १०—(८३) यह प्रमाण है जो हमने इबराहीम को उसकी जाति पर बताए हम जिसकी चाहते हैं पदवी बढ़ाते हैं निस्सन्देह तेरा प्रभु बुद्धिवान और ज्ञानी है। (८४) और हमने उसको इसहाक और याकूब दिया और हर एक को हमने शिक्षा की और नूह को हमने उससे पहिले शिक्षा दी थी और उसकी सन्तान में से दाऊद और सुलेमान और ऐयूब और यूसफ और मूसा और हारून हम भलाई करने हारों को इसी भांति प्रतिफल देते हैं। (८५) और ज़करिया और यहिया और ईसा और इलियास यह सब भले मनुष्यों में से थे। (८६) इसमाईल और इलीशा यूनस और लूत इन सब को संसार के लोगों पर हमने बढ़ाई दी। (८७) और उनके पिताओं और उनकी सन्तानों और उनके भाइयों में से उनको चुनलिया और उन को सीधे मार्ग की शिक्षा की। (८८) यह ईश्वर की शिक्षा है शिक्षा करता है अपने दासों में से जिस को चाहता है और यदि वह साभी ठहराते हैं तो निश्चय जो कुछ उन्हों ने किया था क्षीण होजाता है। (८९) यह वह लोग हैं जिन को हमने पुस्तक और बुद्धि और भविष्यद्वादयदिया यदि यह लोग तुझ से मुकरें तो निस्सन्देह हम ने ठहराया है और एक जाति को जो इस के मुकरने हारे नहीं। (९०) और यह वह लोग हैं जिन को ईश्वर ने शिक्षा दी है सो उन्हीं की शिक्षा का अनुगामी हो कहदे कि मैं इस पर तुम से कुछ धनि नहीं मांगता यह केवल सृष्टियों के निमित्त शिक्षा के और कुछ नहीं है॥

रुकू ११—(९१) उन्हों ने ईश्वर की सार न जानी जैसा कि उसकी सार जानना उचित था कि जब उन्हों ने कहा कि ईश्वर ने किसी दास पर कोई वस्तु नहीं उतारी कहदे वह पुस्तक किसने उतारी जिसको मूसा लाया है वह लोगों के निमित्त ज्योति और शिक्षा है जिसको तुमने पत्र पत्र कर दिखाया और बहुत

कुछ छिपा रक्खा इसने तुमको यह सिखाया जो न तुम न तुम्हारे पुरखा जानते थे कहदे ईश्वर ने और फिर उनको उनके वाद विवाद में खेलने के निमित्त छोड़दे। (९२) यही वह पुस्तक है जिसको हमने आशीष सहित उतारा और सिद्ध करने हारी उसकी जो उनके हातों में है जिस्तें तू मक्काघालों * को और जो उनके आसपास हैं डरावे और जो लोग विश्वास लाए हैं अन्त के दिन पर वह इस पर भी विश्वास लाते हैं और अपनी प्रार्थनाओं की भली भांति रक्षा करते हैं। (९३) उस मनुष्य से अधिक दुष्ट कौन है जिसने ईश्वर पर झूठा बन्धक बांधा अथवा उसने कहा कि मुझपर प्रेरणा † आई है यद्यपि उसके निकट कुछ प्रेरणा नहीं आई उस मनुष्य से जिसने कहा कि अब मैं उतारूंगा उसके समान जो ईश्वर ने उतारा है और यदि तू दुष्टों को उनकी मृत्यु की कठिनाइयों में देखे कि दूत हाथ पसारे हुए हैं कि अब निकालो अपने प्राणों को आजके दिन तुमको उपहास करने हारे दण्ड से बदला दिया जायगा क्योंकि तुमने ईश्वर के विषय में वह कहा जो सत्य न था और उसकी आयतों से घमण्ड करते थे। (९४) निस्सं-देह तुम हमारे समीप वैसे ही अकेले आए हो जैसा कि हमने तुमको पहिलीवार उत्पन्न किया था और जो कुछ हमने तुमको दिया था उसको अपने पीछे छोड़ आए हो और हम तुम्हारे संग तुम्हारे निमित्त विन्ती करने हारों को नहीं देखते जिनके विषय में तुम्हारा विचार था कि निस्संदेह वह उसके ‡ साझी हैं निस्संदेह तुम्हारे सम्बन्ध कट गये और जिस पर तुमको घमण्ड था वह तुमसे खोगये॥

रु० १२—(९५) निस्सन्देह ईश्वर बीजों और गुठलियों को फाड़कर उगाने हारा है और जीवते को मृतक में से निकालने हारा है और जीवते से मृतक को निकालने हारा है यह ईश्वरही है सो कहां पलटे जाते हो। (९६) पौ फाड़ने हारा और रात्रिको विश्राम के निमित बनाया है सूर्य और चन्द्रमा लेखे के निमित्त ठहराया है बलवन्त जानने हारे ने (९७) यह वही है जिसने तुम्हारे निमित्त तारागण बनाए कि उनके द्वारा मार्ग पाओ बन और समुद्र के अन्धकारों में निस्सन्देह हमने अपनी आयतें क्रमशः उन लोगों के निमित्त जो जानते हैं वर्णन करदीं (९८) यह वही है जिसने तुमको एक प्राणी से उत्पन्न किया तुम्हारे निमित्त ठहरने का ठौर § है और विश्वास योग्य स्थान हमने

---

* विशेष कर नगरों की माता। † यह आयत मदीना में उतरी और मुसलमां असवद और अमसी और सादका पुत्र अबदुल्ला जो महम्मद साहब का लेखक था जो बहुधा कुरान के मूल में अदल बदल कर देता था इनमें से किसी के विषय में यह आयत उतरी। ‡ अर्थात ईश्वर के। § अर्थात माता का गर्भ॥

निस्सन्देह क्रमशः अपनी आयतें उन लोगों को कह सुनाई जो समझने हारे हैं। (९९) यह वही है जिसने आकाश से मेह बर्षाया और हमने उससे हर बस्तु उप जाई और फिर हमने उससे साग पात उगाए जिससे भरे हुए बीज निकालते हैं और खजूर के पेड़ के गाभे में से गुच्छे लटकते हुये और दाखों और जैतूनों और अनारों की बारीं परस्पर समान और असमान देखो उसके फलको जब फले और वह पके निस्सन्देह उसमें उन लोगों के निमित्त जो विश्वास लाए हैं चिन्ह हैं। (१००) उन्होंने ईश्वर के निमित्त जिन्नो को साझी ठहराया यदपि उसने उनको सृजा और बिना जाने उसके निमित्त पुत्र और पुत्रियां ठहराई हैं वह पवित्र है और जो कुछ वह उसके निमित्त ठहराते हैं वह उससे बहुत ऊंचा है। (१०१) वह स्वर्गों और पृथ्वी का सृजन हारा है उसके पुत्र कहां से हुआ उसके कोई स्त्री नहीं उसने हर बस्तु को उपजाया उसे हर बस्तु का ज्ञान है॥

रु० १३—(१०२) यही ईश्वर तुम्हारा प्रभु है कोई देव नहीं परन्तु वह हर वस्तुका उत्पन्न करने हारा है उसी की आराधना करो वह हर वस्तु का रक्षक है। (१०३) उसको दृष्टिं पा नहीं सकतीं परन्तु वह दृष्टियों को जान लेता है वह भेदी और जान ने हारा है। (१०४) निस्सन्देह इसमें तुम्हारे निकट तुम्हारे प्रभुकी ओर से प्रमाण हैं फिर जिसने उसको देखा कि उसने अपने निमित्त देखा परन्तु जो उससे अन्धा रहा यह उसके अपने ही निमित्त है मैं तुम्हारा रक्षक नहीं हूं। (१०५) इसी भांति से हम आयतों को भांति * भांति वर्णन करते हैं जिस्तें वह कहें कि तूने सीख लिया है और हम इनको उन लोगों के निमित्त वर्णन करें जो जानते हैं। (१०६) जो तुझ को तेरे प्रभुकी ओर से प्रेरणा की गई उसी की सेवाकर कोई देव नहीं है परन्तु वह और साझी ठहराने हारों से मुंह फेरले (१०७) यदि ईश्वर चाहता तो वह साझी नहीं ठहराते और हमने तुझको उनपर रक्षक नहीं ठहराया और न तू उनका हितवादी है (१०८) उन को दुर्वचन न कहो जो कोई ईश्वर को छोड़ † किसी और को पुकारते हैं वह भी ईश्वर को बे समझे दुर्वचन कहेंगे इसी भांति हमने हर जत्था को उसके कार्य भलेकर दिखाए हैं फिर उनको अपने प्रभु के तीर लौट जाना है और तब वह उनको जता देगा जो कुछ वह करते थे (१०९) उन्होंने अपनी कठिन किरि-याओं के साथ ईश्वर की किरियाएं खाई हैं कि यदि उनपर कोई चिन्ह प्रगट

* अर्थात फेर फेर कर। † निर्गमण २२ : २८ ॥

हो तो निस्सन्देह उस पर विश्वासलाएंगे तू कहदे कि चिन्ह तो ईश्वरही के हाथ में हैं तुम क्योंकर समझोगे निस्सन्देह जब वह आयंगे तब भी वह न मानेंगे। (११०) और हम उनके हृदयों को और दृष्टियों को पलटदेंगे जिस भांति वह उस पर पहिलीवार विश्वास नहीं लाए और हम उनको उनकी भ्रमणा में भटकते छोड़देंगे।

८. रु० १४—(१११) यदि हमने उनके तीर दूत भेजे होते और मृतक उन से बातें करते और हम हर वस्तु को उनके निमित्त उनके साम्हने इकट्ठी करते तब भी तो वह विश्वास ने लाते जबलों ईश्वर न चाहता परन्तु बहुतेरे उनमें मूर्ख हैं (११२) इसी भांति हमने हर भविष्यद्वक्ता के निमित्त शत्रुबना रखे हैं दुष्टात्मा मनुष्य और जिन्न इनमें से कोई को कोई सिखाते हैं चिकनी चुपड़ी बातों से छल देने के निमित्त यदि तेरा प्रभु चाहता तो वह ऐसा न करते सो उनको उनके झूठ में छोड़ दे (११३) जिस्तें उनके हृदय इस ओर झुकजांय जो अन्त के दिन का विश्वास नहीं रखते हैं और वह इसको ग्रहण करें और करते जावें जो कुछ दुष्टता वह करने हारे हैं (११४) क्या मैं ईश्वर को छोड़ और आज्ञाधिकारी ग्रहण करूं यह वह है जिसने तुम पर प्रत्यक्ष पुस्तक उतारी और वह जिन्हें हमने पुस्तक दी है जानते हैं कि निस्सन्देह वह तेरे प्रभुकी ओर से तुझपर यथार्थ उतरा है सो तू सन्देह करने हारों में मत हो (११५) तेरे प्रभुकी बातें सत्य और न्याय के साथ पूरी हुई उसकी बातों को बदलने हारा कोई नहीं वह सुनने हारा और जान ने हारा है (११६) और यदि तू पृथ्वी पर रहने हारों में से बहुधा का अनुगामी होगा तो वह तुझको ईश्वर के मार्ग से भटकादेंगे निस्सन्देह वह तो केवल अनुमान के अनुयाई हैं और अटकल दौड़ाते हैं (११७) निस्सन्देह तेरा प्रभु भलीभांति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटक रहा है और शिक्षितों को जानता है (११८*) जिस पर ईश्वर का नाम लिया गया उसको खाओ यदि तुम उसकी आयतों पर विश्वासलाने हारे हो (११९) क्या कारण है कि जिस पर ईश्वर का नाम लिया गया है उसे तुम न खाओ जब कि वह तुम्हें बता चुका कि तुम पर क्या मलीन है निश्चय जब तुम बेबश होजाओ निस्सन्देह बहुत से ऐसे हैं जो तुमको अज्ञानता वश अपनी शारीरिक भावना से बहकाते हैं निस्सन्देह तेरे प्रभुको

---

* आयत ११८ से १२१ लों इस स्थान पर बेजोड़ जान पड़ती हैं यदि १५४ के पश्चात रखी जांय तो ठीक जान पड़ती हैं।

अनीति करने हारों का ज्ञान है (१२०) गुप्त और प्रगट पाप छोड़ दे निस्सन्देह जो पाप उपार्जन करते हैं अपने उपार्जन के अनुसार प्रतिफल पायेंगे (१२१) जिस पर ईश्वरका नाम नहीं लिया गया उसे मत खाओ निस्सन्देह यह बहुत बुरा कर्म है और दुष्टात्मा अपने मित्रों को उभारता है कि वह तुम से झगड़ें और यदि तुम उनकी मानोंगे तो तुम भी साझी ठहराने हारे हो।

रु० १५—(१२२) वह मनुष्य जो मृतक* था हमने फिर उसको जीवता किया और उसके निमित्त ज्योति उत्पन्न की उसमें होके लोगों के साथ चलता है क्या वह उस मनुष्य की नाईं होसकता है जिसका दृष्टान्त ऐसा है कि अंधियारों में पड़ा है और वहां से निकलनेहारा नहीं इसी भांति अधर्म्मियों को जो कुछ वह करते थे भलाकर दिखाया (१२३) इसी भांति हमने हर गांव में पापियों के अध्यक्ष ठहराए कि वहां छल † किया करें और जो कुछ वह छल करते हैं अपने ही प्राण से करते हैं और वह नहीं समझते (१२४) और जब उन पर कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम कभी न मानेंगे जबलों हमको उसके समान न दिया जावे जैसा ईश्वर के प्रेरितों को दिया गया है ईश्वर इस बात को भलीभांति जानता है कि अपना सन्देश कहां रखे अब ईश्वर की ओर से पापियों को अनादर पहुंचेगा और कठिन दण्ड उस छल के निमित्त जो उन्हों ने किया (१२५) फिर जिसको ईश्वर चाहता है शिक्षा देता है उसका हृदय इसलाम के निमित खोल देता है और जिसको चाहता है उसको भटका देता है उसके हृदय को सकरा करदेता है मानोवेग से स्वर्ग की ओर चढ़ रहा है इसी भांति ईश्वर उन लोगों को जो विश्वास नहीं लाते दण्डदेगा (१२६) और यही तेरे प्रभु का सीधा मार्ग है हमने उन लोगों के निमित्त प्रत्यक्ष आयतें बर्णन करदी हैं जो शिक्षाको ग्रहण करने हारे हैं (१२७) उनके निमित उनके प्रभु के तीर कुशल का घर है और वह उनका मित्र है उस कर्म्म के कारण जो वह करते हैं। (१२८) और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा औ कहेगा हे जिन्नों की जत्था तुमने मनुष्यों में से बहुतों को वश में कर लिया और मनुष्यों में से उनके मित्र कहेंगे कि हे हमारे प्रभु हमको एक दूसरे से बहुत लाभ पहुँचा और हम अपने उस ठहराए समय को पहुँच गए जो तू ने हमारे निमित ठहराया था वह कहेगा अग्नि तुम्हारे रहने का

---

* ढंग से यह ज्ञान पड़ता है कि महम्मद साहब से अभिप्राय है जो भूल की दशा में मृतक थे परन्तु महम्मदी टीका करनेहारे हमज़ा के विश्वास लाने के विषय में बताते हैं। † अर्थात उपद्रव ॥

ठौर है उसी में सदा रहोगे केवल उसके जो तेरा ईश्वर चाहे निस्सन्देह तेरा प्रभु बुद्धिवान और जानने हारा है। (१२९) और इसी भांति हम कुछ दुष्टोंको कुछ पर प्रबल करते हैं उसके कारण जो कुछ उन्हों ने उपार्जन किया॥

रु० १६—(१३०) हे जिन्नों और मनुष्यों की जत्था क्या तुममें से तुम्हारे तीर प्रेरित नहीं आए जिन्हों ने तुम्हारे सन्मुख मेरी आयतें कह सुनाईं और तुमको डराते थे इस दिन के मिलने से वह कहेंगे कि हम अपने पर आप साक्षी देते हैं इस संसारिक जीवन ने उनको धोखा दिया है उन्हों ने आप अपने पर साक्षी दी कि वह मुकरते थे। (१३१) यह इस कारण है जिसतें तेरा प्रभु बसतियों को उनकी अनीति के कारण नाश न करे जिस समय कि उसके लोग अचेत हों। (१३२) हर मनुष्य के निमित्त पदविएं हैं उसके समान जो उन्हों ने किया तेरा प्रभु उनकी करतूतों से अचेत नहीं। (१३३) तेरा प्रभु धनी और दया करने हारा है यदि वह चाहे तो वह तुमको मेटदे और जिसको चाहे वह तुम्हारा उत्तराधिकारी करदे और तुमको भी बीती हुई जाति की सन्तान से उत्पन्न किया है। (१३४) निस्सन्देह जिस बातकी तुमसे प्रतिज्ञा की है आने हारा है और तुम कभी थकाने हारे नहीं हो। (१३५) कह हे मेरी जाति अपने बलके अनुसार अभ्यास करो निस्सन्देह मैं भी अभ्यास करने हारा हूँ कि तुम शीघ्र जान लोगे। (१३६) किस के निमित्त अन्त का घर है निस्सन्देह दुष्टों का भला न होगा। (१३७*) उन्हों ने ईश्वर के निमित्त उसकी उत्पन्न की हुई खेती और पशुओं में से भाग † ठहराया है और कहते हैं कि यह भाग ईश्वर का है अपने विचार में और यह हमारे साझियों का है परन्तु जो उनके साझियों का है सो ईश्वर को नहीं पहुँचता और जो ईश्वरका है वह उनके साझियों को पहुँचता है अत्यन्त बुरा है जो उन्हों ने किया है। (१३८) और इसी भांति उनके ठहराए हुए साझियों ने सन्तान को घात करना बहुत साझी ठहराने हारों को भला करके

---

* आयत १२७ से १४७ एक ऐसा भाग है जो इस सूरत की अगली और पिछली आयतों से अलग है और यहां बे जोड़ लगा दिया गया है।　　† ऐसा जान पड़ता है कि अरब मूर्ति पूजकों में ऐसा व्यवहार था कि अपनी खेती में से एक भाग ईश्वर सर्वशक्तिमान के निमित और दूसरा अपनी मूर्तियों के निमित अलग कर रखते थे यदि कुछ ईश्वर के भाग में से मूर्तों की सीमा में आयकर गिरता था तो वह मूर्तियों का धन समझा जाता था और यदि मूर्तों के भाग में से ईश्वर की सीमा में कुछ गिरजाय तो उसको उठाकर मूर्तों को दे दिया जाता था मूर्तियों का भाग उनके पुजारियों को मिलता था और वह इस बात पर रक्षक रहते थे फिर जब ईश्वर के भाग में से कुछ मूर्तियों की सीमा में आजाता तो वह यह कहके उसे लेलेते थे कि ईश्वर को इसकी क्या चिन्ता है वह तो धनी है॥

दिखाया जिस्तें वह उन्हें घात करें और उनका मत उन पर शंकनीय होजाय और यदि ईश्वर चाहता तो वह ऐसा न करते सो उनको छोड़दे और उसको जो कुछ मिथ्या करते हैं। (१३९) वह कहते हैं कि यह पशु और खेती अपावन हैं उसको कोई न खावे केवल उसके जिसको हम अपने विचार में चाहें और ऐसे भी पशु हैं जिनकी पीठ पर चढ़ना वर्जित है और ऐसे भी पशु हैं कि उन पर ईश्वर का नाम नहीं लेते यह उस पर दोष है कि वह उसके निमित्त दण्ड देगा उस असत्य का जो उन्हों ने बांधा। (१४०) और कहते हैं कि जो कुछ इस पशु के पेट में है सो केवल हमारे मनुष्यों ही के निमित्त है और हमारी स्त्रियों को अलीन है और यदि वह मरा हुआ हो तो हम सब उसमें साझी हैं वह उनको उनकी बातों का दण्ड देगा वह बुद्धिवान और जानने हारा है। (१४१) निस्सन्देह वह हानि उठाने हारों में हैं जिन्हों ने अपनी सन्तान को अज्ञानता से बेसमझे घात किया और उस जीविका को जो ईश्वर ने उन्हें दी थी मिथ्या करके अलीन ठहराया निस्सन्देह वह भटक गए और शिक्षित न हुए॥

रु० १७—(१४२) वह-वह है जिसने बारियों को छतनारी और छरहरी उपजाया और खजूर के पेड़ों को और अनेक भांति की खेती को और उसके फल भांति २ के हैं और जैतून और अनार को कि परस्पर समान भी हैं और असमान भी हैं जब वह फले उसके फल को खाओ और जिस दिन काटे उसका भाग दो और अनर्थ न उड़ाओ ईश्वर उड़ाउओं को मित्र नहीं रखता। (१४३) पशुओं में से कुछ तो असवारी के निमित है और कुछ बिछौने के हेतु हैं उस जीविका में से जो ईश्वर ने तुम्हें दी है खाओ दुष्ट आत्मा के अनुगामी मत बनो निस्सन्देह वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है (१४४) आठ जोड़े दो बकरियों में से और दो भेड़ों में से कहदे क्या दोनों नरों को मलीन किया अथवा दोनों नारियों को अथवा उसको जो दोनों * नारियों के गर्भ में है मुझको प्रमाण देकर बताओ यदि तुम सत्यवादी हो। (१४५) और ऊँट में से दो और बैलों में से दो कह क्या दोनों नरों को अपावन किया है अथवा जो दोनों नारियों के गर्भ में है क्या तुम साक्षी थे जब ईश्वर ने तुमको उनकी आज्ञा की फिर उससे अधिक दुष्ट कौन है जिसने ईश्वर पर बन्धक बांधा कि मनुष्यों को बिना ज्ञान भटकादे निस्सन्देह ईश्वर दुष्टों को शिक्षा नहीं करता॥

---

* मायदा १२० ॥

रु० १८—(१४६) कहदे मैं उस प्रेरणा में जो मेरी ओर आई है किसी वस्तु को किसी खाने हारे पर अपावन नहीं पाता जो उसको खाए हां यदि वह मृतक हो अथवा लोहू बहाया हुआ हो अथवा सुअर का मांस हो वह निस्सन्देह अपवित्र है अशुद्ध हो कि उसपर ईश्वर के उपरान्त और किसी का नाम लिया गया है परन्तु जो विवश होजाय और न जानबूझ कर न पाप की इच्छा से तो निस्सन्देह तेरा प्रभु क्षमा करने हारा और दयालु है। (१४७) उन लोगों पर जो यहूदी हैं हमने अपावन किया था हर नखधारी को बैल और भेड़ में से उनका मज्जा अपावन किया परन्तु हां जो पीठ पर लगा रहे अथवा भीतर की ओर हो अथवा अन्तड़ी में मिला हो अथवा जो हाड़ के साथ लिपटा हो उनको यह बदला उनकी अनाज्ञाकारी के कारण दिया गया और हम सत्य कहते हैं। (१४८) सो यदि वह तुझको झुठलाएँ तू कह कि तुम्हारा प्रभु अत्यंत दयालु है और उसका दण्ड अपराधियों पर से नहीं टरता। (१४९) जो लोग साझी ठहराने हारे हैं वह कहेंगे कि यदि ईश्वर चाहता तो हम साझी न करते न हमारे पिता न हम कोई वस्तु अपावन ठहराते उन्होंने उसी भांति उनको झुठलाया जो उनसे पहिले थे यहांलों कि उन्हों ने हमारे दण्ड का स्वाद चाखा कह कि यदि तुम्हारे तीर कोई प्रमाण है तो उसको हमारे साम्हने लाओ तुमतो केवल अनुमान के अनुयायी हो और अटकल दौड़ाते हो। (१५०) कहदे ईश्वर ही का प्रमाण दृढ़ है यदि वह चाहता तो तुम सबको शिक्षा करता। (१५१) कह अपने साक्षियों को लाओ जो इस बात पर साक्षी देते हैं कि ईश्वर ने इनको अशुद्ध किया है और यदि वह साक्षी दें तो तू उनका साथ मत दे न उन लोगों की इच्छाओं का अनुयायी हो जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो अन्त के दिन पर विश्वास नहीं रखते और जो अपने प्रभुके तुल्य औरों को करते हैं॥

रु० १९—(१५२) तू कह आओ मैं पढ़ सुनाऊं जो तुम्हारे प्रभु ने तुम पर अपावन किया है तुम उसका साझी मत ठहराओ अपने माता पिता के संग भली भांति व्यवहार करो और अपनी सन्तान को कंगाली के भय से घात मत करो हम तुमको भी जीविका * देते हैं और उनको भी और निर्लज्जता के कर्म† के तीर मत जाओ जो प्रगट हो अथवा गुप्त जिस प्राण को ईश्वर ने अपावन किया उसको घात मत करो परन्तु हां जब उचित हो यह बातें हैं जिनको तुमको

* सूरए बनी इसरायल ३१। † इसी सूरत की १२०।

आज्ञा दी है जिस्तें तुम समझदार बनो। (१५३) और अनाथ के धनके निकट मत जाओ परन्तु इस भांति कि वह सुइच्छा से हो जबलों कि वह अपनी पूरी बय को न पहुंचे और नाप और तौल को न्याय से पूरा करो हम किसी प्राणी को उसकी शक्ति से अधिक विवश नहीं करते और जब तुम कुछ बोलो तो न्याय से बोलो यदपि तुम्हारा नातेदार ही क्यों न हो और ईश्वर के नियम को पूरा करो यह वह बातें हैं जिनकी वह तुम्हें आज्ञा देता है कि तुम शिक्षित होओ॥ (१५४) और यह मेरा सीधा मार्ग है इस पर चलो और अनेक मार्गों पर मत चलो कि तुमको उसके मार्ग से भटकावें यह है जिसकी आज्ञा तुम्हें दी है जिस्तें तुम संयमी बनो। (१५५) और हमने मूसा को पुस्तक दी उस मनुष्य के पूरा करने के निमित जो सुकर्म्म करता है और हर वस्तु का निर्णय करने की शिक्षा और दया के हेतु कदाचित वह लोग अपने प्रभु से मिलने की प्रतीत करलें॥

रु० २०—(१५६) यह वह पुस्तक है जिसे हमने उतारी है यह एक आशीष है उसके अनुगामी हो और संयमी बनो जिस्तें तुम पर दया कीजाय। (१५७) इस हेतु कि न कहो कि पुस्तक तो हमसे पहिले केवल दोही जत्थाओं पर उतरी थी और हम उनके पढ़ने से अचेत थे। (१५८) अथवा तुम कहने लगो कि यदि हम पर कोई पुस्तक उतरी होती तो हम उनसे कहीं अधिक शिक्षित होते सो निस्सन्देह तुम्हारे प्रभु से शिक्षा और प्रमाण और दया आई है सो कौन अधिक दुष्ट उस मनुष्य से है जिसने ईश्वर की आयतों को झुठलाया और उन से फिर गया और हम शीघ्र दण्ड देंगे कठिन दण्ड से उन लोगों को जो हमारी आयतों से फिरे हैं उन के फिर जाने के कारण से। (१५९) क्या वह इस बात की बाट जोहते हैं कि उनके तीर दूत आवें अथवा तेरा प्रभु आवे अथवा तेरे प्रभु की कुछ आयतें आवें जिस दिन तेरे प्रभु की कुछ आयतें आयेंगी किसी मनुष्य को लाभ न देंगी जो इस से पहिले विश्वास न लाया था अथवा अपने विश्वास में कोई भलाई उपार्जन की हो तुम बाट जोहते रहो और हम भी बाट जोहते हैं। (१६०) निस्सन्देह जिन्हों ने अपने मत में बिभेद किया और जत्था जत्था हो गये तुझ को उन से कुछ प्रयोजन नहीं उसका लेखा ईश्वर के हाथ में हैं और फिर वह उन को बतला देगा जो कुछ वह करते थे। (१६१) जो मनुष्य धर्म्म लाया है उसको उस के समान दस [*] और मिलेंगे और जो मनुष्य अधर्म्म

---

[*] मती २५:२८॥

लाया है उसको उसी के समान बदला दिया जायगा क्योंकि उन पर अनीति न की जायगी। (१६२) कहदे कि निस्सन्देह मेरे प्रभु ने मुझ को सीधे मार्ग की और सीधे मत की शिक्षा दी है और इबराहीम हनीफ के मत की शिक्षा दी है क्यों कि वह साझी ठहराने हारों में न था। (१६३) निस्सन्देह मेरी प्रार्थनायें और आराधनायें और मेरा जीवन और मेरी मृत्यू ईश्वरही के निमित हैं जो समस्त सृष्टियों का प्रभु है उस का कोई साझी नहीं इसी की मुझको आज्ञा मिली है और मैं सब से पहिला मुसलमान हूं। (१६४) कह क्या मैं किसी दूसरे को ईश्वर के उपरान्त प्रभुमानूं वह तो हर वस्तु का प्रभु है जो कुछ कोई उपार्जन करता है वह अपनेही प्राण के निमित उपार्जन करता है दूसरे का बोझ कोई उठाने हारा नहीं तुम अपने प्रभु की ओर फिर जाओ गे और वह तुमको बतायेगा उस बात को जिस में तुम भिन्नता करते थे। (१६५) वह वही है जिसने तुम को पृथ्वी में दीवान बनाया और किसी को किसी से पदवी में बड़ा किया जिस्तें तुमको परखे उस बात में जो तुमको दी है निस्सन्देह तेरा प्रभु शीघ्र दण्ड देने हारा है और निस्सन्देह वह क्षमा करने हारा और दयालु है।

७ सूरए ऐराफ़* (पहचान) मक्की रुकू २४ आयत २०५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) अलमस—यह किताब तुझ पर उतारी गई है इस से तेरे हृदय में कोई शंका न उपजे कि उस से लोगों को ठहराये और विश्वासियों के निमित शिक्षा हो। (२) और जो कुछ तेरे प्रभु की ओर से उतरा है उस का अनुयाई हो केवल उस के और मित्रों का अनुयाई मतहो तुम थोड़ा ध्यान देतेहो। (३) बहुतसी बस्तियें हैं जिन्हें हमने नाश किया और हमारा दण्ड उनपर रात्रिही को आया अथवा जब कि वह मध्यान्ह को सो रहे थे। (४) उन की पुकार यही थी जब हमारा दण्ड उनपर आया वह केवल यह कहते थे कि निस्सन्देह हम दुष्ट हैं। (५) और हम को उन से प्रश्न करना है हमने उनके तीर प्रेरित भेजे थे और हमको प्रेरितों से भी प्रश्न करना है। (६) फिर हम अवश्य उनको उनका वृत्तान्त सुनायें गे हम अनुपस्थित न थे। (७) और उस दिन सत्य तौला जाता है और

---

* नर्क और बैकुण्ठ के बीच एक पुलका नाम है जान पड़ता है कि इस सूरत का प्रथम भाग उस समय सुनाया गया जब अरब लोग हज के निमित इकत्र हुए थे देखो इसी सूरत की २९ आयत को॥

जो तौल में भारी है वह भलाई पाये हुओं में से है। (८) और जो तौल में हलका है वही हानि उठाने हारों में से है उस के कारण कि हमारी आयतों से दुष्टता करते रहे।

रु० २—(९) हमने तुमको पृथ्वी में बसाया और उसी में तुम्हारी जीविकायें ठहरादीं तुम थोड़ा धन्यवाद करते हो। (१०) निस्सन्देह हमने तुमको सृजा और तुम्हारा स्वरूप बनाया और हमने दूतों से कहा कि आदम को दण्डवत करो उन सबने दण्डवत की केवल इबलीस के क्योंकि वह दण्डवत करनेहारों में से न था। (११) कहा किस वस्तु ने तुझको दण्डवत करने से बर्जा जब कि मैंने तुझे आज्ञा दी उसने कहा मैं इस से उत्तम हूं तूने मुझे अग्नि से उत्पन्न किया और इसको तूने मिट्टी से उत्पन्न किया (१२) कहा कि उन में से नीचे उतर तुझको उचित नहीं है कि इन में रहकर घमण्ड करे सो तू निकल तू तुच्छों में से है (१३) कहा मुझे उनके जी उठने के दिनलों अवसर दे (१४) निस्सन्देह तू उनमें है जिनको अवसर दिया गया (१५) कहा इस कारण कि तूने मुझे भटकाया मैं उसकी ताक में सीधे मार्ग पर भी बैठूँगा (१६) सो उन के आगे से उनके पीछे उनके दाहिने ओर से और उन के बाएँ ओर से उन पर आ पड़ूँगा और तू इनमें से बहुतों को धन्यवादी न पायगा (१७) कहा इनमें से तुच्छ और स्रापित होके निकल उन में से जो तेरे अनुगामी होंगे तो मैं नर्क को तुम सब से भरूँगा (१८) और हे आदम तू और तेरी पत्नी इस बैकुण्ठ में बसो और दोनों जहां से चाहो खाओ परन उस पेड़ के निकट कभी न जाओ नहीं तो तुम दुष्टों में होजाओगे (१९) फिर उनको दुष्टात्मा ने दुविधा में डालदिया और जो गुप्त था उन पर प्रगट कर दिया अर्थात् उनके लज्जित स्थान जो गुप्त थे और कहा तुम्हारे प्रभु ने इस पेड़ * से खाने को इसी कारण बर्जा है ऐसा न हो कि तुम दूत बनजाओ अथवा अमर हो जाओ (२०) और उन दोनों के सन्मुख किरिया खाई कि मैं तुम्हारा बड़ा शुभ चिन्तक हूँ (२१) फिर उनको अपने छल में गिरा लिया और जब उन दोनों ने उस पेड़ से खाया तो उन दोनों को अपनी लज्जा के अंग दिखाई दिए और वह बारी के पत्तों को सी के अपने आपको छिपानेलगे और उनके प्रभु ने उन्हें पुकारा कहा मैंने तुम दोनों को उस पेड़ से खाने को न बर्जा था और तुम्हें कह न दिया था कि निस्सन्देह दुष्टात्मा तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है (२२) उन

---

* सूरए तोय ११८ ॥

दोनों ने कहा कि हे हमारे प्रभु हमने अपने आप पर अनीति की यदि तू हमको क्षमा न करे और हम पर दया न करे तो अवश्य हम हानि उठाने हारों में हो जांयगे (२३) उसने कहा उतरो यहां से तुम में से एक एकका शत्रु * है पृथ्वी में तुम्हारे निमित ठौर है एक समय लों सामग्री (२४) उस ने कहा उसी में तुम जिओगे और उसी में तुम मरोगे और उसीसे फिर निकाले जाओगे ॥

रु० ३–(२५) हे आदम के वंश हम ने तुम्हारे निमित वस्त्र भेजे हैं जिस से अपने लज्जित अंग को ढांको और इससे शोभा होती है पवित्रता का वस्त्र सब से उत्तम है यह ईश्वर की आयतों में से हैं कदापि वह शिच्चित हों। (२६) हे आदम के सन्तान दुष्टात्मा तुमको मूर्खता में न डाले जैसा तुम्हारे माता पिता को वैकुण्ठ से निकाला उनके वस्त्र उन से उतरवाए उनके लज्जित अंग उन पर प्रगट कर दिए निस्सन्देह वह तुम्हें देखता है और उसकी जाति तुम्हें देखते हैं जहां से तुम उनको नहीं देख सकते हम ने दुष्टात्माओं को उनका एकाग्र अधिकारी बना दिया है जो बिश्वास नहीं लाते (२७) और जब वह कोई घिनित कर्म्म करते हैं तो कहते हैं हमने अपने पुरुखाओं को ऐसाही करते पाया और ईश्वर ने हमको उसकी आज्ञादी है कहदे निस्सन्देह ईश्वर घिनित कर्मकी आज्ञा नहीं देता क्या तुम ईश्वर के विषय में वह बात कहते हो जिसका तुमको ज्ञान नहीं (२८) कहदे मेरा प्रभु केवल न्यायों की आज्ञा देता है अपने मुहों को ठीक रखो हर मन्द्र † के ठौर और उसीसे मांगो और निष्कपट मन से उसके मत पर चलो और जिस भांति तुमको पहिले उठाया उसी भांति तुम फिर लौट जाओगे एक जत्था को उसने, शिक्षाकी और एक के निमित भ्रमणा ठहरादी निस्सन्देह उन्होंने ईश्वर को छोड़ दुष्टात्माओं को मित्र बनाया और समझते हैं कि निश्चिय वह शिक्षितों में हैं। (२९) हे आदम के सन्तान प्रत्येक मन्द्र के निकट अपनी शोभा लो और खाओ और पियो परन्तु उड़ाऊ मत बनो निस्सन्देह उड़ाउओं को वह ‡ मित्र नहीं रखता ॥

रु० ४—(३०) कहदे ईश्वर की उत्पन्न की हुई शोभा को किसने अपावन किया है जिसको उसने अपने दासों के निमित उत्पन्न किया है और खाने में से पवित्र वस्तुओं को कहदे यह उन लोगों के निमित हैं जो पुनरुत्थान के दिन पर बिश्वास लाए हैं संसारिक जीवन में इसी भांति हम अपनी आयतें उन लोगों के

* उत्पत्ति ३:१५। † अर्थात् मसजिद। ‡ अर्थात् ईश्वर ॥

निमित वर्णन करते हैं जो जानते हैं। (३१). कहदे मेरे प्रभु ने अवीत की है निर्लज्जता गुप्त और प्रगट पाप और अकारण विरोध और जो ईश्वर के साथ किसी वस्तु को साझी करें जिसके निमित उसने कोई प्रमाण नहीं भेजा अथवा ईश्वर के विरुद्ध वह कहो जिसका तुमको कुछ ज्ञान नहीं। (३२) हर जत्था के निमित एक समय नियत है और जब उनका समय आजाता है तो उसमें एक घड़ी न विलम्ब करते हैं न आगे बढ़ते हैं। (३३) हे आदम के सन्तान जब तुम्हारे निकट तुम में से प्रेरित आवें मेरी आयतें वर्णन करते हुए फिर जिसने डर माना और ठीक कार्य्य किए तो उन पर कुछ भय नहीं और न उनको कुछ शोक होगा। (३४) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे घमंड किया वही लोग अग्नि में रहने हारे हैं और सदा उसमें रहेंगे। (३५) उससे अधिक और कौन दुष्ट है जिसने ईश्वर पर झूठ बांधा अथवा हमारी आयतों को झुठलाया यह वही है जिसको उसका भाग प्रराद्य पुस्तक के अनुसार मिलेगा यहांलो कि उनके निकट हमारे भेजे हुए प्राण लेने को आयंगे और उनसे कहेंगे कहां हैं वह जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते थे कहेंगे वहतो हमसे खोगए और वह आपही अपने पर साक्षी देंगे कि वह अधर्म्मियों में थे। (३६) वह उनसे कहेगा उन जातियों के साथ अग्नि में प्रवेश करो जो तुमसे पहिले बीत गईं दोनों अर्थात जिन्न और मनुष्य जहां एक जाति प्रवेश हुई दूसरी को श्राप देने लगी जबलों उसमें सब पहुंच चुके उनमें से पिछली पहिली से कहेगी हे हमारे प्रभु इन्हीं ने हमको भटकाया इनको अग्नि का दूना दण्ड दे वह कहेगा सबको दूना है बस तुम नहीं जानते। (३७) और पहिली पिछली से कहेगी तुमको हम पर कुछ बड़ाई नहीं सो अब अपनी उपार्जना के बदले में दण्ड चाखो॥

रु० ५—(३८) निस्सन्देह जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन पर घमंड किया उनके निमित्त स्वर्ग के द्वार न खोले जायंगे और वह बैकुण्ठ में प्रवेश न होंगे जबलों कि ऊंट सुई के नाके * से न निकल जाय हम अपराधियों को इसी भांति बदला देते हैं। (३९) उनके निमित नर्क का बिछौना है और उनके ऊपर अग्नि का चँदेवा है हम इसी भांति दुष्टों को बदला देते हैं। (४०) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए हैं हम किसी को उसके वित से अधिक

दुख नहीं देते वही लोग बैकुण्ठ वाले हैं और उसमें सदा रहेंगे। (४१) और हम उनके हृदयों से सब क़ठोरता निकाल लेंगे उनके नीचे धाराएं बहती होंगी और वह कहेंगे कि ईश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमको शिक्षा दी हमतो इस योग नहीं थे कि हम शिक्षा पाते यदि ईश्वर शिक्षा न करता हमारे प्रभु के प्रेरित हमारे तीर सत्य लेकर आए और उन्हों से पुकार कर कहेगा कि यह बैकुण्ठ है जो तुम्हें भाग में मिला है उसके निमित जो कुछ तुमने किया है। (४२) और बैकुण्ठ वाले नर्क वासियों से पुकार कर कहेंगे कि हमको तो मिलगया जिसकी प्रतिज्ञा हमारे प्रभु ने हमसे की थी वह सत्य है क्या तुमको भी मिलगया जिसकी प्रतिज्ञा तुमसे तुम्हारे प्रभु ने की थी क्या वह सत्य है वह कहेंगे हां और एक चिल्लाने द्वारा उनमें से पुकार उठेगा कि दुष्टों पर ईश्वर का स्राप। (४३) जो लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकते थे और उस मार्ग को टेढ़ा करना चाहते थे और अंत के दिन से मुकरते थे। (४४) उन दोनों के बीच एक पट है और ऐराफ़ * जो प्रत्येक को उसके चिन्हों से जानते होंगे वह बैकुण्ठ वालों से पुकार कर कहेंगे तुम्हारा कल्याण हो और उन्हों ने अभी उसमें प्रवेश नहीं किया और वह आशा रखते हैं। (४५) और जब उनकी दृष्टि नर्क वासियों की ओर फेरी जायगी तो वह कहेंगे हे हमारे प्रभु हमको दुष्टों का साथी मत कर॥

रु० ६—(४६) और ऐराफ़ वाले उनको पुकार कर जिन्हें वह उनके चिन्हों से चीन्हते हैं कहेंगे तुम्हारा इकत्र किया हुआ अर्थ न आया जिस पर तुम घमंड करते थे। (४७) क्या यह वही लोग हैं जिनके विषय में तुम किरिया खाके कहते थे कि ईश्वर उन पर अपनी दया न करेगा तुम बैकुण्ठ में प्रवेश करो तुम्हारे निमित न कोई भय है और न तुम शोकित होगे। (४८) और नरक वासी बैकुण्ठ वासियों से पुकार कर कहेंगे कि हम पर थोड़ासा जल डालदो अथवा उसमें से जो कुछ तुमको ईश्वर ने दिया है † वह कहेंगे कि ईश्वर ने उन दोनों को अधर्मियों पर अलीन कर दिया है। (४९) जिन्होंने अपने मत को खेल क्रीड़ा ठहरा लिया उनको संसारिक जीवन ने धोका दिया आज के दिन हम उनको बिसार देंगे जैसा कि वह अपने मिलने के दिन को बिसर गये थे जो यही है इस कारण कि वह हमारी आयतों से मुकरे। (५०) निस्सन्देह हम उनके निमित पुस्तक लाए हमने उसमें विश्वासियों के हेतु प्रत्यक्ष अपना

---

* वह स्थान जहां से स्वर्गवासी और नर्कवासी देखपड़ेंगे अथवा परितोरिजम। † लूका १६ : १९॥

ज्ञान और शिक्षा और दया वर्णन की। (५१) अब वह किस बात की बाट जोह रहे हैं परन्तु यही कि वह ठीक पड़े और जिस दिन वह ठीक पड़ेगी वह लोग जो उसको पहिले भूल गए थे कहेंगे कि निस्सन्देह हमारे प्रभुके प्रेरित यथार्थ आए थे क्या हमारा कोई हितवादी है कि हमारे निमित्त विन्ती करे अथवा हम लौटाए जांय कि हम उसके विपरीति अभ्यास करें जो हम करते थे उन्होंने अपने को खो दिया और जिस मिथ्या * को वर्णन करते थे वह भी उनसे खोगई॥

रु० ७—(५२) निस्सन्देह हमारा प्रभु वह है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को छः दिन में सृजा और फिर सिंहासन बनाया और रातको ढांकता है दिनसे वह उसके पीछे दौड़ता हुआ लगा आता है सूर्य्य और चन्द्रमा और तारे उसके वशमें हैं जान लो कि उसीका उत्पन्न करना है और उसीका आज्ञा करना है ईश्वर समस्त सृष्टियों का प्रभु धन्य हो। (५३) अपने प्रभुको पुकारो आधीनी से और गुप्त में वह पापियों को मित्र नहीं रखता। (५४) पृथ्वी में सुधार होने के पश्चात् उपद्रव मत करो उसी को पुकारो डर और आशा से निस्सन्देह ईश्वरकी दया सुकर्म्मियों के निकट है। (५५) वह वही है जो पवनों को हर्ष का सन्देशके बनाकर अपनी दया के आगे भेजता है यहां लों कि वह भारी मेघों को उठाकर मृतक भूमि की ओर लेजाते हैं फिर हम उससे मेंह बर्षाते हैं उससे हर भांति के मेवे उगाते हैं इसी भांति हम मृतक निकालेंगे,जिस्तें तुम शिक्षित बनो। (५६) अच्छी भूमि अपनी हरियाली को अपने प्रभु की आज्ञा से उगाती है और जो बुरी है वह कुछ नहीं उगाती केवल थोड़ासा इसी भांति हम उलट फेर कर अपनी आयतों को उस जाति पर वर्णन करते हैं जो धन्यवादी हैं॥

रु० ८—(५७) निस्सन्देह हमने नूह † को उसकी जाति की ओर भेजा और उसने कहा हे मेरी जाति ईश्वर की आराधना करो तुम्हारे निमित्त ईश्वर को छोड़ के और कोई देव नहीं निस्सन्देह मुझे तुम्हारे विषय में कठिन दिनके दण्ड का भय है। उसी की जाति के अध्यक्षों ने कहा निस्सन्देह हम देखते हैं कि तू प्रत्यक्ष भ्रम में है। (५८) उसने कहा कि हे मेरी जाति मुझमें भ्रम नहीं है वरन मैं सर्व सृष्टियों के प्रभुकी ओर से प्रेरित हूँ। (६०) मैं तुमको अपने प्रभुका सन्देश पहुँचाता हूँ और तुम्हारे निमित्त भलाई चाहने वाला हूँ और मैं ईश्वर की

---

* अर्थात जिनको ईश्वर के उपरान्त ग्रहण किए हुए थे। † हूद ४० ॥

ओर से वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (६१) क्या तुम इसमें आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे तीर तुम्हारे प्रभुकी शिक्षा तुम्हीं में से एक मनुष्य के द्वारा जिस्तें वह तुमको डरावे आई जिस्तें तुम संयम करो और तुम पर दया की जाय। (६२) फिर उन्हों ने उसे झुठलाया और हमने उसको और जो उसके साथ नौका में थे बचाया और जिन लोगों ने हमारे चिह्नों को झुठलाया था उन्हें डुबा दिया निस्सन्देह वह अन्धी जाति थी ॥

रु० ६—(६३) और हमने आद की जाति के तीर उनके भाई हूद को भेजा उसने कहा कि हे मेरी जाति तुम ईश्वर की अराधना करो तुम्हारे निमित उसके उपरान्त और कोई ईश्वर नहीं क्या तुम नहीं डरते (६४) उस जाति के अध्यक्षों में से जो अधर्मी थे बोले निस्सन्देह हमें जान पड़ता है कि तू प्रत्यक्ष भ्रमणा में है और निश्चय हम तुझे असत्यवादियों में गिनते हैं (६५) उसने कहा हे मेरी जाति मुझ में कोई बुराई नहीं परन्तु मैं सृष्टियों के प्रभु की ओर से प्रेरित हूं। (६६) मैं तुम्हें तुम्हारे प्रभु का संदेशा सुनाता हूं और तुम्हारे निमित स्पष्ट शिक्षा करने हारा हूं (६७) क्या तुम इस से आश्चर्य्य करते हो कि तुम्हारे तीर तुम्हारे प्रभु की ओर से एक मनुष्य के द्वारा जो तुम्ही में से है शिक्षा आवे कि वह तुमको डरावे स्मरण करो जब कि उसने तुमको नूह की जाति का उत्तरा-धिकारी बनाया और तुम्हारी उत्पति में तुमको अति विशाल बनाया ईश्वर के वरदानों को स्मर्ण करो जिस्तें तुम्हारा भला हो (६८) उन्हों ने कहा क्या तू हमारे निकट इसी हेतु आया है कि हम केवल ईश्वर ही की आराधना करें और जिनको हमारे पुरुखा पूजते थे उनको छोड़दें सो उसको हमारे तीर ले आ जिस से तू हमको डराता है यदि तू सत्यवादियों में है (६९) उसने कहा निस्सन्देह तुम पर तुम्हारे प्रभु की ओर से विपत और कोप आ पड़ेगा क्या तुम मुझ से थोड़े नामों पर झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे मित्रों ने आपही रख लिया है क्योंकि ईश्वर ने उनके निमित कोई प्रमाण नहीं भेजा है सो बाट जोहते रहो और मैं भी तुम्हारे साथ बाट जोहता हूं (७०) और हमने उसको और उसके साथियों को अपनी दया से बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और विश्वासियों में न थे उनकी पिछाड़ी काट डाली।

रु० १०—(७१) और समूद जाति के तीर हमने उनके भाई सालेह को भेजा उसने कहा हे मेरी जाति ईश्वर की आराधना करो तुम्हारे निमित्त केवल उसके और कोई ईश्वर नहीं निस्सन्देह तुम्हारे निमित्त तुम्हारे प्रभु की ओर से

प्रत्यक्ष आयतें आई हैं यह ईश्वर की ऊँटनी तुम्हारे निमित्त चिह्न है सो इसको छोड़ दो कि ईश्वर की भूमि में चरती फिरे इसको कोई दुख न दे नहीं तो तुमको कठिन दण्ड होगा। (७२) और स्मर्ण करो क्योंकर तुमको दुष्ट जाति के पीछे पृथ्वी में उत्तराधिकारी ठहराया तुम उसकी भूमियों में भवन और पर्वतों को खोद कर घर बना लेते हो ईश्वर के वरदानों को स्मर्ण करो और पृथ्वी में उपद्रव मत करते फिरो। (७३) उसकी जाति के अध्यक्षों में से जो घमण्ड करनेहारे थे उनको जो इनमें से विश्वास लाए थे और जो बलहीन जाने जाते थे उनसे ऐसे कहा क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने प्रभु की ओर से भेजा गया है उन्होंने कहा निस्सन्देह हम उस पर और जो उसके साथ भेजा गया है विश्वास लाते हैं। (७४) उन लोगों ने जो घमण्ड करने हारे थे कहा कि निस्सन्देह हम उसको जिस पर तुम विश्वास लाए हो मुकरते हैं। (७५) फिर उन्हों ने उस ऊँटनी की कूंचें काटडालीं और अपने प्रभु की आज्ञासे विरुद्धता की और कहा हे सालेह तू उसको हमारे ऊपर ले आ जिसकी तू हमको धमकी देता है यदि तू प्रेरितों में से है (७६) सो उनको भूडोल ने पकड़ा और प्रात समय वह अपने घरों में औंधे पाए गए (७७) और वह उनसे फिर गया और कहा हे मेरी जाति मैंने तुमको अपने प्रभु का संदेश सुना दिया और तुमको अच्छी शिक्षा दी परन्तु तुम शिक्षा करने हारों को मित्र नहीं रखते (७८) और लूत ने जब अपनी जाति से कहा क्या तुम घिनित कर्म्म करते हो कि तुम से पहिले उसको किसी ने सृष्टियों में नहीं किया। (७९) तुम कामातुर इच्छा से पुरुषों के निकट होते हो स्त्रियों को छोड़कर तुम मर्याद से बाहर निकलनेहारे लोग हो। (८०) उन लोगों का कुछ उत्तर न था उन्होंने कहा कि इसको अपनी बस्ती से बाहर निकालदो निस्सन्देह यह वह लोग हैं जो पवित्र होने का अधिकार जताते हैं। (८१) परन्तु हमने उसको और उसके कुटुम्ब को बचा लिया उसकी स्त्री को छोड़ के जो पीछे *रहनेवालों में थी। (८२) और हमने उन पर मेंह बर्षाया सो देख अपराधियों का क्या अन्त हुआ।

रु० ११—(८३) और मदीन के लोगों के तीर हमने उनके भाई श्वएब को भेजा उसने कहा कि हे मेरी जाति ईश्वर की आराधना करो तुम्हारे निमित्त केवल उसके और कोई ईश्वर नहीं निस्सन्देह तुम्हारे निकट तुम्हारे प्रभु से

---

* तौरा १,१९, ॥

प्रमाण आया है सो नाप और तौल को पूरा करो और लोगों को उनकी वस्तुओं में घाट न दो और पृथ्वी में उपद्रव न करो उसके पीछे कि वह ठीक कीगई तुम्हारे निमित्त यह उत्तम है यदि तुम विश्वास लाओ। (८४) राह के किनारे घात में न बैठो और ईश्वर के मार्ग से उनको जो उस पर विश्वास लाते हैं डराते हुए न फेरो और टेढ़ाई करने की इच्छा न करो और स्मर्ण करो कि जब तुम थोड़े से थे और तुम को अधिक कर दिया और देखो उपद्रव करनेहारों का क्या अन्त हुआ (८५) यदि तुममें कोई जत्था ऐसी हो कि उसपर जो मुझ पर भेजा गया विश्वास न लावे तो धीरज करो यहां लों कि ईश्वर हम में न्याय करे ईश्वर उत्तम न्याय करने हारा है॥

पारा ९. (८६) उसकी जाति के अध्यक्षों में से जो घमण्डी थे कहा कि हम तुझको निकाल देंगे हे श्वएब अपनी बस्ती से और उनको जो तुझ पर विश्वास रखते हैं अथवा तू हमारे मत की ओर पलटआ वह बोला कि यदि हम उससे रोषित हों तौ भी। (८७) निस्सन्देह हम ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधेंगे यदि हम तुम्हारे मत में फिर आजावें इसके पश्चात कि ईश्वर ने हमको छुटकारा दिया और तुम्हारी ओर से नहीं होसकता कि हम फिर उसमें आजावें परन्तु हां यदि ईश्वर हमारा प्रभु चाहे हमारे प्रभु ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान से घेर लिया है हमारा भरोसा ईश्वर पर है हे हमारे प्रभु हममें और हमारी जाति में ठीक २ निर्णय करदे तू ही उत्तम प्रगट करने हारा है। (८८) और उन अध्यक्षों ने जो उसकी जाति में से अधर्मी थे उसकी जाति से कहा कि यदि तुम श्वएब के अनुयाई होओगे तो तुम हानि उठाने हारों में होओगे (८९) और उन्हें भूंडोल ने पकड़ा और भोर को अपने घरों में औंधे पाए गये। (९०) वह जिन्हों ने श्वएब को मिथ्यावी ठहराया था ऐसे होगए मानों उसमें बसेही नहीं थे जिन लोगों ने श्वएब को झुठलाया वही हानि उठाने हारों में होगए। (९१) श्वएब ने उनसे मुँह मोड़ लिया और कहा हे मेरी जाति निस्सन्देह मैंने तुमको अपने प्रभुका सन्देश सुनादिया और तुमको सिखादी सो मैं क्योंकर अधर्म्मियों की जाति पर शोक करूं।

रु० १२—(९२*) और हमने किसी बस्ती में कोई भविष्यद्वक्ता नहीं भेजा कि वहां के लोगों को क्लेश और दुख में न पकड़ा हो कि कदाचित वह आधीनी करें। (९३) और बुराई को हमने भलाई से पलट दिया यहां लों कि वह बढ़गए

---

* यह आयत उस दुर्भिक्ष की ओर सूचना करती है जो मक्का में पड़ा था देखो इसी सूरत की आयत १२७ को॥

और कहने लगे कि हमारे पितरों को भी दुख और हर्ष पहुँचता रहा और हमने उनको अकस्मात पकड़ लिया कि वह अचेत थे। (९४) यदि उस बस्ती के लोग विश्वास ले आते और डरते तो हम उन पर स्वर्ग और पृथ्वी की आशीषें खोल देते परन्तु उन्होंने झुठलाया इस कारण हमने उनको पकड़ा उसके कारण जो उन्होंने उपार्जन किया था। (९५) फिर क्या इन बस्तियों के रहनेहारे इस बात से निडर होगए कि उन पर हमारा दण्ड रात को अथवा सोते में न आयगा। (९६) क्या इन बस्तियों के रहनेहारे इस बात से निडर होगए कि उन पर हमारा दण्ड प्रात काल को अथवा उनके खेलते समय न आयगा। (९७) क्या वह ईश्वर के छल से निडर होगए ईश्वर के छल से कोई निडर नहीं केवल हानि उठानेहारी जाति के॥

रु० १३—(९८) क्या उनको शिक्षा नहीं हुई जिन्होंने पृथ्वी को अधिकार में लिया उसके रहने हारों के पीछे कि यदि हम चाहें तो हम उन्हें पकड़ें उनके पापों के साथ और उनके हृदयों पर छाप करदें कि वह न सुनें। (९९) यह बस्तियां हैं जिन के वृत्तान्त हम तुझे सुनाते हैं उनके तीर हमारे प्रेरित हमारे खुले चिन्हों के साथ आए परन्तु उन्होंने तनिक भी उनकी प्रतीत न की जिसको इससे पहिले झुठलाया इसी भांति ईश्वर ने अधर्म्मियों के हृदयों पर छाप करदी। (१००) और हमने उनमें से बहुतों को नियम पर स्थिर नहीं पाया और उनमें से बहुतों को अनाज्ञाकारी पाया। (१०१) और हमने उनके पीछे मूसा को अपने चिन्हों के साथ उठाया फिराऊन और उसके अध्यक्षों के साम्हने और उन्होंने उनके साथ दुष्टता की और देख उपद्रवियों का क्या अन्त हुआ। " (१०२) और मूसा ने कहा कि हे फिराऊन निस्सन्देह मैं सृष्टियों के प्रभु की ओर से एक प्रेरित हूं"। (१०३) मुझे उचित है कि मैं ईश्वर के विषय में केवल सत्य के और न कहूं मैं अपने प्रभु की ओर से तुम्हारे तीर प्रत्यक्ष चिन्हों के साथ आया हूं सो इसराएल सन्तान को मेरे साथ भेजदे उसने कहा यदि तू कोई चिन्ह लाया है तो उसको दिखा यदि तू सत्य बोलने हारों में है। (१०४) और उसने अपनी लाठी फेंकदी और वह तुरन्त अजगर होगया। (१०५) और उसने अपना हाथ निकाला और वह देखने हारों के निमित्त श्वेत दृष्टि आया॥

रु० १४—(१०६) फिराऊन की जाति के अध्यक्षों ने कहा निस्सन्देह यह मनुष्य प्रवीण टोनहा है। (१०७) वह चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकालदे तुमको क्या आज्ञा मिली है। (१०८) उन्होंने कहा कि उसे और उसके

भाई को कुछ आशा दो और देश में लोग इकत्र करने को मनुष्य भेजो। (१०९) जिस्ते तेरे निकट सब प्रवीण टोनहों को लेके आवें। (११०) फिराऊन के तीर टोनहा आए उन्होंने कहा यदि हम जीत जांय तो क्या हमारे निमित पारितोषिक है। (१११) उसने कहा हां निस्सन्देह तुम मेरे निकट समीपियों में होओगे। (११२) उन्होंने कहा हे मूसा अथवा तू डालदे अथवा हम डालदें। (११३) उसने कहा तुम डालो और जब उन्होंने डाला तो उन्होंने लोगों की आंखों पर टोना किया और उन्हें डराया और बड़ा टोना लाए। (११४) और हमने मूसा की ओर प्रेरणा की कि अपनी लाठी डालदे और जो कुछ उन्होंने दिखाया है उसको निगल जायगी। (११५) फिर सत्य प्रगट होगया और जो कुछ उन्होंने किया था वह मिथ्या ठहरा। (११६) सो उस स्थान से पराजित होके लज्जित होते हुए चले गए। (११७) और टोनहे दण्डवत करते हुए गिर गए। (११८) और कहने लगे कि हम सृष्टियों के प्रभु पर विश्वास लाए हैं। (११९) मूसा और हारून के प्रभु पर। (१२०) फिराऊन ने कहा कि पहिले इसके कि मैं तुम्हें आज्ञा दूं क्या तुम विश्वास लेआए यह छल है जो तुमने इस देश में फैलाया है जिस्ते उसमें से उसके बसनेहारों को निकालदो सो तुम्हें शीघ्र जान पड़ेगा। (१२१) निस्सन्देह मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उलटी और सीधी ओर से काटडालूंगा फिर तुम सबको क्रूस पर चढ़ा दूंगा। (१२२) उन्होंने कहा निस्सन्देह हम अपने प्रभु के तीर फिरजाने हारे हैं। (१२३) और तू हमको दण्ड नहीं देता परन्तु इस हेतु कि हम अपने प्रभु के चिन्हों पर कि जब वह हमारे निकट आए हम विश्वास लेआए हे हमारे प्रभु हमें धीरजदे और इसलाम की दशा में हमें मृत्यू दे॥

रु० १५—(१२४) फिराऊन की जाति के अध्यक्षों ने कहा क्या तू मूसा और उसके लोगों को छोड़ देगा कि वह देश में उपद्रव करें और तुझको और तेरे देवों को छोड़दें उसने कहा कि हम उनके पुत्रों को घात करेंगे और स्त्रियों को जीता रखेंगे और निस्सन्देह हम उन पर प्रबल होयंगे। (१२५) मूसा ने अपनी जाति से कहा कि ईश्वर से सहायता मांगो और धीरज धरो निस्सन्देह समस्त पृथ्वी ईश्वर ही की है और अपने दासों में से जिसको चाहता है उसको अधिकारी करता है और अन्त का दिन संयमियों के निमित है। (१२६) उन्होंने कहा हमको दुख दिया गया तेरे आने के पहिले और तेरे आने के पीछे भी उसने कहा कि निकट है कि तुम्हारा प्रभु तुम्हारे शत्रुओं को नाश करदे और तुम्हें

देश में उनका उत्तराधिकारी करदे और फिर देखे कि तुम किस भांति अभ्यास करते हो।

रु० १६—(१२७) हमने फिराऊन के लोगों को पकड़ा काल के वर्षों के साथ और फलों की हानि के साथ जिस्तें वह शिक्षित हों (१२८) और जब कोई उनके निमित्त भलाई करे कहा यह हमारे हेतु है और यदि कोई बुराई करे तो मूसा और उसके साथियों का अशकुन ठहराया जान रख इसके उपरान्त और कुछ नहीं है कि उनका अशकुन ईश्वर की ओर से है परन्तु उन में से बहुतेरे नहीं जानते। (१२९) उन्हों ने कहा तू चाहे कितने ही चिन्ह हमारे निकटला कि उन से हम पर टोना करदे हम फिर भी तुझ पर विश्वास न लायंगे। (१३०) तब हमने उनपर आंधी टीढ़ियां पिस्सू और मेंढ़क और लोहू के भिन्न भिन्न चिन्ह* भेजे उन्हों ने विरुद्धता की क्योंकि वह पापी जाति थी। (१३१) और जब उन पर कोई बिपत उतरी तो कहा हे मूसा हमारे निमित्त अपने प्रभु से प्रार्थना कर जिस भांति उस ने तुझ से वाचा की है निस्सन्देह यदि तू हम पर से विपति को दूर करेगा तो हम तुझ पर विश्वास लायंगे और निश्चय इसराएल सन्तान को तेरे साथ भेज-देंगे और जब हमने उन पर से विपति को एक ठहराए हुए समय के पीछे जिस में वह पहुंचने हारी थी हटा दिया तो फिर वह अपनी वाचा को उलंघन करते थे। (१३२) और हमने उन से पलटा लिया और हमने उन्हें समुद्र में डुबा दिया इस हेतु कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे भूल की। (१३३) और हम ने उस जाति को उत्तराधिकारी किया जो बल हीन समझी जाती थी पृथ्वी के पूर्वों और पश्चिमों का जिस में हमने आशीषदीथी तेरे प्रभु का वचन पूरा हुआ इसराएल सन्तान पर इस निमित कि उन्होंने धीरज किया हमने फिरा-ऊन और उसकी जाति के बनाए हुये को नाश किया और उसको जो उन्हों ने उस पर चढ़ाया था (१३४) और इसराएल सन्तान को समुद्र पार उतार दिया और वह एक ऐसी जाति के निकट जा पहुँचे जो अपनी मूर्तियों के चहुंओर बैठी रहती थी उन्होंने कहा हे मूसा हमारे निमित भी ऐसे ही देव बना दे जैसे कि इनके देव हैं उसने कहा निस्सन्देह तुम मूर्ख जाति में से हो (१३५) इस में कुछ सन्देह नहीं यह लोग नाश होने हारे हैं उस में जिस में वह हैं और जो कुछ वह

---

* सूरए बनी इसराएल और नमल में महम्मद साहब ने नौ विपतियों का चर्चा किया है धर्म्म पुस्तक में आंधी का चर्चा नहीं हुआ॥

करते हैं मिथ्या है (१३६) उसने कहा क्या मैं तुम्हारे निमित ईश्वर को छोड़ किसी और देवकी इच्छा करूं उसीने तुम को सृष्टियों में सर्वोत्तम किया है। (१३७) और जब हम ने तुम्हें फ़िराऊन के लोगों से छुड़ाया जो तुमको दण्ड देते थे तुम्हारे पुत्रों को घात करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवतारखते थे इस में तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारे निमित बड़ी परिचा थी।

रु० १७—(१३८) और हमने मूसा से तीस रात्रि की प्रतिज्ञा की और पूरा किया उनको दस के साथ और उसके प्रभु का नियत समय चालीस रात्रियों में पूरा हुआ और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे लोगों में मेरा उत्तराधिकारी हो और सुकर्म्म कारियों और उपद्रवियों के मार्ग का अनुयाई न होना। (१३९) और जब मूसा हमारे नियुक्त किये हुये पर आया और उसका प्रभु उससे बात करने लगा वह बोला हे मेरे प्रभु तू मुझे अपने आपको दिखा दे कि मैं तुझ पर दृष्टि करूँ उसने कहा तू मुझे कभी देख न सकेगा परन्तु उस पहाड़ की ओर दृष्टि कर और यदि पहाड़ अपने ठौर पर ठहरा रहे तो तू मुझे देख सकेगा परन्तु जब उसके प्रभु की ज्योति उस पहाड़ पर पड़ी उसने उसे चूर चूर कर दिया और मूसा मूर्छित होके गिर गया। (१४०) जब उसे चेत हुआ उसने कहा तू पवित्र है मैं तेरी ओर पश्चाताप करके आता हूँ मैं सब से पहिला विश्वास लानेहारा हूँ। (१४१) उसने कहा कि हे मूसा निस्सन्देह मैंने तुझे लोगों में से अपने बचन और समाचार के निमित चुन लिया है सो जो मैंने तुझे दिया है पकड़ रख और धन्यवादियों में हो। (१४२) और हमने उनके निमित पाटियों पर हर बात के विषय में खुली खुली शिचा लिखी उसको दृढ़ थाम्हे रह और अपनी जाति को आज्ञा कर कि उसको उसकी अच्छी शिचाओं सहित पकड़े रहें नहीं तो मैं शीघ्र तुमको अनाशकारियों का घर दिखाऊँगा। (१४३) निस्सन्देह हम अपने चिन्हों में से उनको फेर देंगे जो पृथ्वी में अनर्थ घमण्ड करते हैं यदि वह हर एक चिन्ह देखें तो उस पर विश्वास न लावेंगे और यदि वह भलाई का मार्ग देखें तो उस मार्ग को भलाई के निमित ग्रहण न करेंगे। (१४४) और यदि भटकने का मार्ग देखें तो उसको भलाई के मार्ग के निमित ग्रहण करेंगे यह इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों को मिथ्या ठहराया और वह उनसे अचेत थे। (१४५) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को अन्त के दिन के मिलने को झुठलाया उनके कार्य्य निष्फल हैं क्या उनको कुछ प्राप्त होगा केवल उस बदले के जो वह करते थे॥

रु० १८—(१४६) और मूसा के लोगों ने उसके पीछे अपने गहनों से अपने निमित एक सदेह बछड़ा बनाया जो शब्द करता था क्या उन्होंने नहीं देखा कि न तो वह उनसे बातें करता था न वह उन्हें किसी मार्ग की अगुवाई कर सकता था। (१४७) उन्होंने उसको ग्रहण किया और वह बुरे थे। (१४८) और जब अपने हाथों के किए से लज्जित हुए और जानगए कि निस्सन्देह वह भटकगए तो बोले यदि हमारा प्रभु हम पर दया न करे और हमको क्षमा न करे तो निस्सन्देह हम हानि उठानेहारों में होंगे। (१४९) और जब मूसा अपनी जाति के निकट लौट आया क्रोध भरा और शोक से बोला तुमने मेरे पीछे बुरा उत्तराधिकार किया अपने प्रभु की आज्ञा से शीघ्रता क्यों की दो पटियां फेंकदीं और अपने भाई को उसका सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटा उसने कहा कि हे मेरी माता के पुत्र निस्सन्देह इन लोगों ने मुझे अशक्त कर दिया और निकट था कि वह मुझे घात करें सो मेरे शत्रुओं को मुझ पर प्रसन्न होने का अवसर न दे और मुझको बुरों की जाति में न मिला। (१५०) उसने कहा कि हे मेरे प्रभु मुझको और मेरे भाई को क्षमा कर और हमको अपनी दया मे प्रवेश दे तू सब दया करनेहारों में बड़ा दया करनेहारा है॥

रु० १९—(१५१) निस्सन्देह जिन लोगों ने अपने निमित बछड़ा बनालिया उन पर उनके प्रभु का कोप पड़ेगा और संसार के जीवन में उपहास हम झूठों को इसी भांति बदला देते हैं। (१५२) और जिन लोगों ने बुरे कर्म किए और उसके पीछे पश्चाताप किया और विश्वास लेआए तो निस्सन्देह तेरा प्रभु उनको क्षमा करने हारा और दया करनेहारा है। (१५३) जब मूसा का क्रोध धीमा हुआ उसने पटियों को उठा लिया और उन पर शिक्षा और दया लिखी हुई थी उन लोगों के निमित जो अपने प्रभु से डरते हैं। (१५४) और मूसा ने अपनी जाति में से ७० मनुष्यों को चुनलिया हमारे नियुक्त ठौर के निमित फिर जब उनको भुंईडोल ने आ पकड़ा तो उसने कहा हे मेरे प्रभु यदि तू चाहता तो इसके पहिलेही मुझको और इनको घात करता क्या तू हमको इस के पलटे में घात करेगा जो हमारी जाति के मूर्खों ने किया यह कुछ नहीं परन्तु तेरी ओर से परिक्षा है जिस के द्वारा जिस को तू चाहता है भटका देता है और जिस को तू चाहे शिक्षा करता है तूही हमारा स्वामी है हमें क्षमा कर और हम पर दया कर क्यों कि तू सर्वोत्तम क्षमा करने हारा है। (१५५) और इस संसार में हमारे निमित भलाई लिख दे और अन्त में भी निस्सन्देह हम तेरी ओर शिक्षा

किए गए हैं उसने कहा कि मैं अपने दण्ड को उस पर डालूंगा जिस पर मैं चाहूंगा और मेरी दया हर वस्तु को घेरे हुए है और मैं उस को लिखदूँगा उन के निमित जो लोग डरते हैं और जो दान देते हैं और हमारी आयतों पर विश्वास लाते हैं। (१५६) जो प्रेरित के अनुयाई हैं अर्थात् उम्मी* भविष्यद्वक्ता के जिसे वह अपने तीर तौरेत और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं उनको भलाई की आज्ञा करता है और बुराई से बर्जता है और उन के निमित अच्छी वस्तु पावन करता है और बुरी वस्तुएं उनपर अपावन करता है और उनका बोझ और पट्टे जो उन-पर हैं उनपर से उतारता है फिर जो लोग उस पर विश्वास लाए उस को सहारा दिया और उस की सहायता की और उस ज्योति की आधीनी की जो उस पर उतारी गई वही भला होने हारों में हैं॥

रु० २०—(१५७) कहदे हे लोगों मैं सब के निमित ईश्वर का प्रेरित हूँ। (१५८) जिसके निमित ईश्वर का राज्य है कोई ईश्वर नहीं परन्तु वह वही जियाता है और वही मारता है सो ईश्वर पर विश्वास लाओ और उसके भेजे हुए उम्मी भविष्यद्वक्ता पर जो विश्वास लाता है ईश्वर और उसके वचन पर उसके अनुयाई हो जिस्तें तुम शिक्षा पाजाओ। (१५९) मूसा की जाति में एक जत्था ऐसी है जिसकी शिक्षा सत्यता की ओर हुई है और उसी के अनुसार विचार करती है (१६०) और हमने उनको बारह गोष्ठियों में बांट दिया जत्था जत्था और हमने मूसा की ओर प्रेरणा भेजी जब उसके लोगों ने उससे जल मांगा अपनी लाठी से चटान को मार फिर उसमें से बारह सोते फूट निकले और हर जत्था ने अपना अपना घाट जान लिया हमने उन पर मेघों से छाया की और उन पर मन्न और सलवा† उतारा पवित्र वस्तुओं में से जो हमने तुमको दी हैं खाओ वह तुम पर दुष्टता नहीं करते थे परन्तु अपनेही प्राणों पर दुष्टता करते थे। (१६१) जब उन्हें कहा गया इस बस्ती में रहो और इसमें से खाओ जहां से चाहो और हित्तुन कहते और दण्डवत करते हुए फाटक में घुसो और हम तुमको तुम्हारे पाप क्षमा करेंगे और सुकर्म्म करनेहारों को अधिक देंगे। (१६२) परन्तु वह जो उनमें दुष्ट थे उन्होंने उसको जो उनसे कहा गया था दूसरे शब्द से बदल दिया और हमने स्वर्ग से उन पर विपति उतारी उस दुष्टता की सन्ती जो वह करते थे॥

रु० २१—(१६३‡) और उनसे पूछ उस बस्ती के विषय में जो समुद्र के

---

* अनकबूत ४७, जिन २, बकर ७३, शब्द उम्मी उम्मत से है जिसका अर्थ जाति है॥
† अर्थात बटेरे। ‡ विचार किया जाता है कि आयत १६३ से १६९ लौं मदनी हैं॥

किनारे थी जबकि वह अनीति करते थे सबत के दिन जबकि उनकी मछलियां उनके तीर उनके सब्त के दिन आती थीं परन्तु उन दिनों में जब कि वह विचार नहीं करते थे वह उनको नहीं आईं इस भांति हम ने उनकी परिक्षाकी उस अनाज्ञाकारी * के निमित जो वह करते थे। (१६४) और जब एक जत्था ने उन में से कहा क्यों शिक्षा करते हो उन लोगों को जिन्हें ईश्वर नाश करने हारा और कठिन दण्ड से क्रुध देने हारा है उन्होंने कहा कि तुम्हारे प्रभु के तीर छलछिद्र करने को कदापि वह डरें। (१६५) और जब वह भूल गए उस शिक्षा को जो उन्हें दी गई थी हम ने उन लोगों को बचाया जो बुरे कर्मों से वर्जते थे और उन को दण्ड से पकड़ा जो दुष्टता करते थे इस कारण कि वह आज्ञा उलंघन करते थे। (१६६) उन्हों ने उन बातों के छोड़ने से विरुद्धता की जिनकी उन्हें आज्ञा दी गई थी हम ने उनको कहा तुम तुच्छ बंदर बनजाओ और जब तेरे प्रभु ने कह दिया तो वह अवश्य उन पर उस बात को डालेगा † जो उनको पुनरुत्थानलों कठिन दण्ड पहुंचाता रहे निस्सन्देह तेरा प्रभु शीघ्र पीछा करने हारा है परन्तु वह सचमुच क्षमा करने हारा और दयालु है। (१६७) और हमने उन्हें पृथ्वी में जत्था जत्था कर दिया उन में अच्छे भी हैं और नहीं भी हैं हम ने उन्हें अच्छी बातों और बुरी बातों से जांचा जिस्तें वह अब हित हो। (१६८) फिर उनके पीछे उन के ऐसे उतराधिकारी जो पुस्तक के अधिकारी हुए वह इस तुच्छ संसार की वस्तुओं को लेते और कहते हैं कि यह हमें क्षमाकर दिया जायगा और यदि उसी के समान उनके तीर वस्तुएं आवें तो वह उसे भी लेलेते हैं क्या उनसे पुस्तक के अनुसार बाचा नहीं लीगई कि वह ईश्वर के विषय में सत्य को छोड़ और कुछ न कहेंगे और जो कुछ इस में है उन्हों ने उसे पढ़ा है परन्तु अन्त का घर उनके निमित उत्तम है जो संयमी हैं क्या तुम नहीं समझते (१६९) जिन लोगों ने पुस्तक को दृढ़ थाम लिया है और प्रार्थना को स्थिर रखा है निश्चय हम सुकर्म करने हारों का प्रतिफल क्षीण न करेंगे (१७०) और जब हमने पहाड़ को उनके सिरों पर हिला ‡ दिया चंदेवा के समान तो उन्होंने अनुमान किया कि वह उन पर गिर पड़ेगा जो कुछ हमने तुमको दिया है दृढ़ता से थाम्हे रहो और स्मर्ण रखो जो कुछ इसमें है जिसतें तुम संयमी बनो ॥

रु० २२—(१७१) और जब तेरे प्रभु ने आदम बंश और उनकी पीठों से उनका बंश निकाला और उन्हीं को उन पर साक्षी ठहराया क्या मैं तुम्हारा प्रभु

---

* बकर ६१। † व्यवस्था विवरण २८। ४९—५०। ‡ निर्गमन १९। १७।

नहीं हूं बोले क्यों नहीं हम साक्षी हैं जिस्तें तुम पुनरुत्थान के दिन न कहने लगो कि निस्सन्देह हम इससे अचेत थे। (१७२) अथवा तुम कहो निस्सन्देह हमारे पितरों ने ईश्वर के साथ साझी ठहराया हमसे पहिले और हमतो केवल उनकी सन्तान थे उनके पीछे सो क्या तू हमको व्यर्थ करनेहारों के कर्म्म के निमित नाश करता है। (१७३) हम इसी भांति आयतों को लगातार कह सुनाते हैं जिसतें वह अवाहित हों। (१७४) और उनके साम्हने उस * मनुष्य की वार्ता पढ़ सुना जिसके सामने हम अपने चिन्ह लाए और वह उनसे फिर गया और दुष्ट आत्मा ने उनका पीछा किया और वह भटके हुओं में से था। (१७५) और यदि हम चाहते तो हम उसमें उसको ऊंचा करते वरन वह नीचेही की ओर जाता रहा और वह अपनी इच्छा के अनुगामी हुए उसका दृष्टान्त उस कुत्ते के समान है कि यदि तू उस पर आक्रमण † करे तो वह अपनी जीभ निकाल दे और यदि तू उसे छोड़ दे तौ भी अपनी जीभ निकाल दे यह दृष्टान्त उन लोगों का है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है यह वृत्तान्त उन्हें सुना कि कदाचित वह चेत करें। (१७६) उन लोगों का दृष्टान्त बुरा है जो कहते हैं कि हमारी आयतें मिथ्या हैं वह अपने आप पर दुष्टता कररहे हैं। (१७७) जिसकी ईश्वर शिक्षा करे वही शिक्षा पाता है और जिसको भटकावे वही लोग हानि उठानेहारों में हैं। (१७८) हमने बहुतेरे जिन्न और मनुष्यों में से नर्क के निमित उत्पन्न किए हैं उनके हृदय ऐसे हैं कि उनसे नहीं समझते और उनकी आंखें हैं कि उनसे नहीं देखते उनके कान हैं कि उनसे नहीं सुनते वह पशुओं के समान हैं वरन उनसे भी अधिक भटके यही लोग अचेत हैं। (१७९) ईश्वर के अच्छे ‡ नाम हैं और उसको उन्हीं से पुकारो और उनसे अलग होओ जो उसके नामों में नाते निकालते हैं उनको उनके किए के अनुसार प्रतिफल मिलेगा। (१८०) और उनमें से, जिनको हमने उत्पन्न किया एक जत्था है जिसकी अगुवाई सत्य की ओर हुई है वह उसके अनुसार न्याय करता है॥

रु० २३—(१८१) और जिन लोगों ने कहा कि हमारी आयतें झूठी हैं हम उन पर दण्ड ला डालेंगे क्रमशः उस ओर से कि वह न जाने। (१८२) और मैं उनको अवसर दूंगा निस्सन्देह मेरा छल दृढ़ है। (१८३) क्या वह विचार नहीं करते कि उनका § साथी बौड़हा नहीं वह केवल डरानेहारा है और कुछ नहीं

* बल आम कोई उस यहूदी के विषय में विचार करते हैं जिसने इसलाम मत त्याग दिया था।
† अर्थात रोगेदे। ‡ कुरान में ईश्वर के ९९ नाम हैं। § अर्थात महम्मद साहब॥

कि एक प्रत्यक्ष डरानेहारा। (१८४) क्या वह नहीं देखते कि स्वर्गों और पृथ्वी के राज्य और जो वस्तुएं ईश्वर ने उत्पन्न की हैं और न उस बात को कि कदाचित उन की मृत्यू निकट आगई हो फिर इस * के पीछे किस बात पर विश्वास लायेंगे। (१८५) ईश्वर जिसे भटकाता है उस के निमित कोई शिक्षक नहीं वह उनको उनकी भटकना में भटकता हुआ छोड़ देता है। (१८६) पुनरुत्थान के विषय में तुझ से पूछते हैं कि कब आयेगा कहदे कि उस का ज्ञान मेरे प्रभु को है कोई उसको प्रगट नहीं कर सकता और उस समय को परन्तु वह स्वर्गों और पृथ्वी में भारी है और तुम पर नहीं आयेगा परन्तु अचानक। (१८७) तुझ से ऐसे पूछते हैं जैसे तू उसकी खोज में है कहदे इस का ज्ञान केवल ईश्वरही को है परन्तु बहुत लोग नहीं जानते। (१८८) कहदे कि मुझको अपने निमित भी लाभ और हानि पहुंचाने की शक्ति नहीं है उसके उपरान्त जो ईश्वर चाहे और यदि मैं गुप्त की बातें जानता होता तो मैं अपने निमित बहुत सी भलाइयां इकट्ठ कर लेता और मुझे कोई बुराई न छू सकती मैं इसको छोड़ कुछ नहीं डरानेहारा और सुसमाचार देनेहारा उन लोगों के निमित जो विश्वासी हैं॥

रु० २४—(१८९) वह वही है जिसने तुमको एक प्राणी से उत्पन्न किया और उससे उसका जोड़ा बनाया जिस्तें कि उनके निकट रहे और जब उसने उसे ढांक लिया तो वह भारी होगई हलके से बोझ से फिर उसी के साथ चलती गई और जब वह भारी होगया तो दोनों ने ईश्वर अपने प्रभु को पुकारा कि हमको भलादे जिस्तें हम धन्यवादी हों। (१९०) और जब उसने उसे भला दिया तो उन्होंने उनमें जो उसने उन्हें दिया उसके निमित साझी ठहराया ईश्वर उससे उत्तम है जिसे वह उसके साथ भागी ठहराते हैं। (१९१) क्या वह उसको उसके साथ साझी करते हैं जो कुछ भी उत्पन्न नहीं करसकता वरन आपही उत्पन्न किए जाते हैं और जो अपने अनुयाइयों को कुछ भी सहायता नहीं देसकते और न आप अपनीही सहायता करसकते हैं। (१९२) यदि तुम उन्हें शिक्षा की ओर बुलाओगे तो वह तुम्हारे अनुयाई न होंगे उनके निमित समान है चाहे तू उनको बुला चाहे तू अपनी जीभ बन्द कर रख। (१९३) जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते हो वह तुम्हारे समान दास हैं उनको पुकारो वही तुमको उत्तर देंगे यदि तुम सत्य बोलने हारों में हो। (१९४) क्या उनके चलने को पांव हैं अथवा हाथ

---

* अर्थात क़ुरान।

पकड़ने को अथवा आंखें देखने को अथवा कान सुनने को कहदे पुकारो अपने साझियों को और मेरे साथ छल करो और मुझे अवसर न दो। (१९५) निस्सन्देह मेरा रक्षक ईश्वर है जिसने पुस्तक उतारी है और सुकर्म्म करनेहारों का रक्षक है। (१९६) और जो लोग ईश्वर के उपरान्त औरों को पुकारते हैं वह न तुम्हारी सहायता कर सकते न अपनी सहायता कर सकते हैं। (१९७) और यदि तुम उनको शिक्षा की ओर बुलाओ वह नहीं सुनते तू उन्हें अपनी ओर ताकते देखता है परन्तु वह नहीं देखते। (१९८) क्षमा कर और सुकर्म्म करने की आज्ञा कर और बुद्धिहीनों से अलग हो। (१९९) यदि दुष्टात्मा का उकसाव तुझे उभारे तो ईश्वर से शरण मांग निस्सन्देह वह सुनने हारा और जानने हारा है। (२००) निस्सन्देह जो लोग संयम करते हैं यदि दुष्टात्मा की ओर से उन्हें कोई दुविधा पहुंचे तो वह उस ईश्वर का नाम लेते हैं और वह देखते हैं। (२०१) और उनके भाई बन्धु उन्हें बुराई की ओर खींचते हैं और वह कमी नहीं करते और जब तू उनके तीर कोई आयत नहीं लाता वह तुझसे कहते हैं क्यों कोई आयत नहीं बनाई कहदे मैं केवल उसीही का आधीन हूं जो मेरे प्रभु की ओर से प्रेरणा होती है यह प्रमाण तुम्हारे प्रभु की ओर से हैं शिक्षा और दया बिश्वासियों के निमित हैं। (२०३) जब कुरान पढ़ा जारहा हो उसको सुनो और चुप रहो कदापि तुम पर दया हो। (२०४) अपने प्रभु को अपने हृदय में दीनता से और भय से स्मर्ण करो बिना चिल्लाए भोर और सांझ और अचेत रहनें हारों में मत हो। (२०५) निस्सन्देह जो तेरे प्रभु के साथ हैं वह अहंकार नहीं करते उसकी अराधना में वह उसकी स्तुति करते हैं और उसे दण्डवत करते हैं॥

८ सूरए इनफ़ाल (लूट का धन) मदनी रुकू १० आयत ७६।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) वह तुझसे प्रश्न करते हैं लूट के धन के विषय में कह दे युद्ध में हाथ लगा हुआ धन ईश्वर और प्रेरित का है सो ईश्वर से भय करो परस्पर मेल रखो ईश्वर और प्रेरित की आज्ञा मानो यदि तुम बिश्वासी हो। (२) बिश्वासी वही हैं जब ईश्वर का चर्चा किया जाय तो उनके हृदय कांप उठें और जब उसकी आयतें उन्हें पढ़ कर सुनाई जांय तो उनके बिश्वास को बढ़ा

देतों हैं और वह अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। (३) और वह लोग जो प्रार्थना में स्थिर हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसी में से देते हैं। (४) वही पक्के विश्वासी हैं उनके निमित उनके प्रभु के तीर पदवियें हैं और क्षमा और आशीषित जीविका। (५) जिस भांति तुझे तेरे प्रभुने तेरे घर * से सत्य के साथ निकाला यद्दपि विश्वासियों में से एक जथा इसको नहीं चाहता था। (६) तुझसे सत्य बात प्रगट होने के पीछे झगड़ते † हैं जैसे कि वह मृत्यु की ओर हांके जाते हैं और वह उसी की ओर ताक रहे हैं। (७) और जब ईश्वर तुझे दो ‡ जत्थाओं में से एक की प्रतिज्ञा करता था कि निस्सन्देह वह तुम्हारी है और तुम चाहते थे कि बिना विभव तुम्हारा हो और ईश्वर चाहता था कि अपनी आज्ञा से सत्य को सत्य कर दिखाए और अधर्म्मियों की पिछाड़ी काट दे। (८) जिस्तें सत्य को सत्य दिखावे और मिथ्या को मिथ्या यद्दपि अपराधी इस से प्रसन्न न हों। (९) और जब अपने प्रभु से तुमने पुकार की तो उसने तुम्हारे निमित इस बात को ग्रहण किया कि मैं तुम्हारी सहायता एक सहस्र § दूतों के साथ करूंगा और भी हैं उनके पीछे। (१०) और यह तो केवल ईश्वर ने सुसमाचार दिया है जिस्तें तुम्हारे हृदय को शान्ति हो विजय केवल ईश्वरही की ओर से है निस्सन्देह ईश्वर बलिष्ठ बुद्धिवान है॥

रु० २—(११) जब तुमपर निद्रा को डाल दिया यह उसकी ओर से शान्ति थी और तुझपर आकाश से पानी बर्साया था जिस्तें तुमको उससे पवित्र करे और तुममें से दुष्टात्मा के विचारों को निकाल दे और तुम्हारे हृदयों को दृढ़ करदे और तुम्हारे पाओं को स्थिर रखे। (१२) और जब तेरा प्रभु दूतों की ओर प्रेरणा भेजता था कि निस्सन्देह मैं तुम्हारे साथ हूँ और उन्हें स्थिर रखो जो विश्वास लाए हैं और मैं उनके हृदयों में जो अधर्म्मी हैं भय डालूंगा सो उस समय उनकी ग्रीवा पर मारो और उनकी उँगलियों की गांठ गांठ पर मारो। (१३) यह इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर और उसके प्रेरित से विरोध किया और

---

* अर्थात् मदीना से। † अर्थात् वाद विवाद करते हैं कि लड़ाई करना ऐसे में उचित है कि नहीं। ‡ महम्मद साहब ने ठहरा लिया था कि उस कुरैश के व्यापारियों के दल पर जो सूरिया से मक्का को आरहा था धाके आक्रमण करें अबू सफियान जो इस दल का सेनापति था वह इस बातको जान गया और मक्का से सन्देश भेजा वहां से एक सहस्र मनुष्य शस्त्र धारी चल पड़े इस कारण महम्मद साहब के साथियों में झगड़ा हुआ कोई २ तो आक्रमण और कोई २ इसके विरुद्ध थे § सूरए इमरान में दूतों की संख्या ३००० बताई गई।

जो कोई ईश्वर और उसके प्रेरित से विरोध करेगा तो निस्सन्देह ईश्वर उसको कठिन दण्ड देगा। (१४) यह है चाखो इसे अधर्म्मियों के निमित अग्नि का दण्ड है। (१५) हे विश्वासियो जिस समय तुम रण भूमि में उन लोगों के सन्मुख होओ जो अधर्म्मी हैं तो उनको पीठ न दिखाओ। (१६) और जो मनुष्य उस दिन उन्हें पीठ दिखायेगा केवल उसके कि लड़ने के निमित अथवा सैना को लड़ाता हो तो वह निस्सन्देह अपने ऊपर ईश्वर का कोप लगायगा और उसका ठिकाना नर्क है और वह जाने के निमित्त बुरा ठौर है। (१७) तुमने उन्हें घात नहीं किया परन्तु यह ईश्वर था जिसने उन्हें घात किया और तूने नहीं फेंका * जब कि तूने फेंका परन्तु यह ईश्वर था जिसने फेंका जिसतें विश्वासियों की उससे परीक्षा करें अपनी ओर से अच्छी परिक्षा से निस्सन्देह ईश्वर सुनता और जानता है। (१८) यह है ईश्वर अधर्म्मियों के छलको निष्फल कर देगा। (१९) यदि तुम निर्णय † चाहते हो तो निर्णय भी तुम्हारे निकट आचुका है और यदि तुम रुकजाओ यह तुम्हारे निमित उत्तम है और यदि तुम दूजी बार पलटोगे हम भी पलट जायँगे और तुम्हारी जत्था तुम्हारे किसी अर्थ न आयगी यद्यपि यह संख्या में अधिक हो क्योंकि ईश्वर विश्वासियों का साथी है॥

रु० ३—(२०) हे विश्वासियो अपने ईश्वर और उसके प्रेरित की सेवा करो और उससे मत फिरो जबकि तुम सुनते हो। (२१) उन लोगों के समान मत होओ जो कहते हैं हमने सुना यद्यपि उन्हों ने कुछ भी नहीं सुना। (२२) पृथ्वी पर चलने हारों में ईश्वर के निकट निस्सन्देह बहिरे और गूँगे और इससे भी अधिक हैं जो नहीं समझते। (२३) यदि ईश्वर उनमें कोई भलाई जानता वह उन्हें सुनने का अवसर देता है परन्तु यदि वह उन्हें सुनने का औसर न दे तो उलटे मुँह फेर कर भागें। (२४) हे विश्वासियो जब ईश्वर और उसका प्रेरित तुम्हें उस कार्य्य के निमित्त बुलाए जिसमें तुम्हारा जीवन है तो उत्तर देओ और जान रखो कि ईश्वर मनुष्य और उसके मनके बीचमें एक आड़ है और तुम उसकी ओर इकत्र किए जाओगे। (२५) और उस उपद्रव से डरो जो केवल उन्हीं लोगों लों नहीं पहुँचेगा जो तुममें दुष्ट हैं और जान लो ईश्वर कठिन दण्ड देने हारा है। (२६) स्मरण करो जब कि तुम थोड़े ‡ से थे और

* कहते हैं कि ईश्वर ने बदर के संग्राम में शत्रुओं की आँखों पर पत्थर बर्षाए यह आश्चर्य कर्म्मों में गिना जाता है। † अर्थात् जय॥ ‡ महम्मद साहब उन संगियों से बातें कर रहे हैं जो अपने घरों से मदीना को भाग गए थे आयत २६ और ३० कुरैश के उस परामर्श और मन्त्रना करती हैं जो उन्हों ने महम्मद साहब के विरुद्ध किया था।

पृथ्वी में यह हीन समझे जाते थे और डरते थे कि लोग तुम्हें झपट लेजायँगे तब उसने तुम्हें शरण दी और विजय के साथ तुम्हारी सहायता की और अच्छी वस्तुओं का आश्रय दिया जिस्तें तुम धन्यवाद मानने हारों में होओ। (२७) हे विश्वासियो ईश्वर और उसके प्रेरित से चोरी न करो और परस्पर की धरोहरों में जानकर चोरी न करो। (२८) जान लो तुम्हारी सम्पति और संतति उपद्रव को छोड़ कुछ और नहीं और ईश्वर के निकट बड़ा प्रतिफल है॥

रु० ४—(२९) हे विश्वासियो यदि तुम ईश्वर से डरो तो वह तुम्हारे बीच में पहिचान * कर देगा और तुमसे तुम्हारे पाप मिटा देगा ईश्वर क्षमा करेगा ईश्वर बड़ा अनुग्रहवाला है। (३०) जब उन्होंने जो अधर्मी हैं तुझे रोक रखने के निमित छल किया जिस्तें बन्धुवा बनावें अथवा तुझे घात करें अथवा देश से निकालदें वह छल करते थे और ईश्वर भी छल करता था ईश्वर सब छल करने हारों में उत्तम है। (३१) और जब हमारी आयतें उन्हें पढ़कर सुनाईजातीं थीं वह कहते थे हमतो यह सुन चुके और यदि चाहें तो ऐसाही कहलें यह कुछ नहीं परन्तु अगलों की कहानियां। (३२) और जब उन्होंने कहा कि हे ईश्वर यदि यह सत्य है और तेरी ओर से है तो हम पर स्वर्ग से पत्थर बरसा अथवा हम पर कोई दुख देनेहारा दण्ड लेआ। (३३) परन्तु ईश्वर उन्हें दण्ड नहीं देगा जबलों कि तू उनमें है और न ईश्वर उन्हें दण्ड देनेहारा था जबकि वह उससे क्षमा मांगते थे। (३४) उनको क्या हुआ है कि ईश्वर उनको दण्ड न देगा जब कि वह लोगों को मसजिदे हराम से रोकते हैं यद्यपि वह उसके रक्षक नहीं उसके रक्षक तो केवल संयमी पुरुष हैं परन्तु बहुतेरे उनमें से नहीं जानते। (३५) उनकी प्रार्थना इस घरके निकट सीठियां और ताली बजाने के उपरान्त और कुछ नहीं अपने अधर्म करने के कारण दण्ड को चाखो। (३६) निस्सन्देह जो लोग अधर्मी हुए अपने धन † इसी हेतु व्यय करते हैं कि लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकें जो कुछ वह व्यय करेंगे और फिर उसके निमित उन्हें शोक होगा और फिर पराजित होजायंगे। (३७) वह जो अधर्मी हैं नर्क में इकत्र किएजायंगे। (३८) जिस्तें ईश्वर पवित्र को और अपवित्र को अलग करदे और एक अपवित्र एक दूसरे पर तले ऊपर रखके ढेर लगादे तब उनको नर्क में डालदे यही लोग हानि उठानेहारों में हैं॥

---

* अर्थात् निर्णय। † कुरैश में से १२ अधर्मों ने ऊंटों और रुपया से मक्कावालों की सहायता की थी कि वह मुहम्मद साहब और उनके साथियों से लड़ें।

रु० ५—(३९) जो अधर्म्मी हैं उनसे कहदे कि यदि वह रुक जायं तो उनको जो बीत गया है क्षमा कर दिया जायगा और यदि फिर करें * तो अगलों का व्यवहार बीत चुका है। (४०) उनसे यहांलों लड़ो कि कोई उपद्रव शेष न रहजाय और मत समस्त रीति से ईश्वर का होजाय और यदि रुकजायं तो ईश्वर देखता है जो कुछ वह करते हैं। (४१) और यदि वह फिरजावें ‡ तो जानलो कि निस्सन्देह ईश्वर तुम्हारा सहायक है वह अच्छा स्वामी है और अच्छा सहायता करनेहारा है॥

पारा १०. (४२) और जान रखो कि जो कोई वस्तु युद्ध में तुम्हारे हाथ लगे तो उसका पांचवा † भाग ईश्वर और प्रेरित और नातेदारों और अनाथों और कंगालों और यात्रियों के निमित है यदि तुम ईश्वर पर विश्वास लाते हो और जो कुछ हमने अपने दास पर उतारा है और वह विचार ‡ के दिन जिस दिन दो जथाएं परस्पर इकत्र हुई थीं ईश्वर हर वस्तु पर सामर्थी है। (४३) और जिस समय तुम इधर के किनारे पर थे और वह उधर के निकारे पर और असवार तुमसे नीचे और यदि तुम प्रतिज्ञा करलेते तो निस्सन्देह तुम वाचा भंग करते परन्तु जिस्तें कि ईश्वर इस काम को जो करना था पूरा करदे (४४) जिस्तें वह नाश होय जो प्रत्यक्ष चिन्ह § स्थिर होने के पीछे नाश हुआ और जीवता रहे वह जो प्रत्यक्ष चिन्ह स्थिर होने के पीछे जीवता रहा निस्सन्देह ईश्वर सुननेहरा और जाननेहारा है। (४५) जब ईश्वर ने तुझे स्वप्न में उन्हें थोड़े करके दिखाया और यदि वह तुझे बहुत से करके दिखाता तो तुम कायरता करते और इस विषय में तुम निस्सन्देह झगड़ते परन्तु ईश्वर ने उसे बचा रखा क्योंकि ईश्वर निस्सन्देह हृदय के भीतर की बातों का जाननेहारा है। (४६) और जब उसने तुम्हें दिखाया जब कि तुम उनके सन्मुख हुए थोड़े से तुम्हारी आंखों में और तुमको थोड़े से उनकी आंखों में जिस्तें कि ईश्वर पूरा ¶ करे उस कार्य्य को जो करना था और सब कार्य्यों को ईश्वर ही की ओर फिरना है॥

रु० ६—(४७) हे विश्वासियो जब किसी जाति के सन्मुख होओ तो दृढ़ रहो और ईश्वर को भलीभांति स्मर्ण करो कदाचित तुम्हारा भला हो। (४८) और

---

* अर्थात धर्म्मियों से युद्ध करें। † अर्थात मुसलमान मतसे। ‡ अरब मूर्ति पूजकों में भी यह रीति थी कि लूट के धन में से चौथा भाग प्रधान के निमित अलग करते थे महम्मद साहब ने घटा के केवल पांचवां भाग ठहराया॥ § अंबिया ४९। ¶ जिबराईल ने महम्मद साहब से कह दिया था कि तुम्हारी जय होगी। इमरान ११।

ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा मानो न झगड़ा करो कि डरपोक होजाओ और तुम्हारी डाक जातीरहे धीरज करो ईश्वर धीरजवानों का साथी है। (४९) उन लोगों के समान मत होओ जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों के दिखाने को निकले हैं और उन लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं ईश्वर उनके कार्य्यों को घेरे हुए हैं। (५०) जब दुष्ट‡ आत्मा ने उनके कर्म्मों को भले कर दिखाए और कहा कि तुम पर आज के दिन मनुष्यों में से कोई प्रबल न होगा मैं तुम्हारा मित्र हूँ और जब दोनों सेनाएं आम्हने साम्हने होगईं तो अपनी एड़ियों पर उलटा भागा और कहने लगा निस्सन्देह मैं तुमसे अलग हूँ मैं वह देखता हूँ जो तुम‡ नहीं देखते निस्सन्देह मैं ईश्वर से डरता हूँ क्योंकि ईश्वर कठिन दण्ड देनेहारा है॥

रु० ७—(५१) और जब धर्म्म कपटी और वह जिनके हृदयों में रोग है कहने लगे कि उन लोगों को उन के मतने धोका दिया है और जो मनुष्य ईश्वर पर भरोसा करे तो निस्सन्देह ईश्वर बलवन्त और बुद्धिवान है। (५२) और यदि तू देखता जब दूत अधर्म्मियों के प्राण निकालते वह उनके मुँह पर और पीठों पर मारते हैं कि चाखो यह जलता हुआ दण्ड। (५३) यह उसके निमित है जो तुम्हारे हाथों ने उपार्जन करके भेजा है और निस्सन्देह ईश्वर दासों पर अनीति नहीं करता। (५४) यही दशा थी फिराऊन के लोगों की जो उनसे पहिले थे वह ईश्वर के चिन्हों से मुकर गए और ईश्वर ने उनके पापों के कारण उनको पकड़ा निस्सन्देह ईश्वर बलवन्त और कठिन दण्ड देने हारा है। (५५) यह इस निमित है कि ईश्वर अपने किसी बरदान को नहीं बदलता जो उसने लोगों को दिए हैं जबलों वह जो उनके हृदयों में है आपही उसे न बदलें और ईश्वर सब कुछ सुनता और जानता है। (५६) यही दशा फिराऊन के लोगों की जो उनसे पहिले थे हुई वह अपने प्रभु की आयतों से मुकरे सो हमने उनको उन के पापों में नाश किया और फिराऊन के लोगों को डुबा दिया और वह सबके सब दुष्ट थे। (५७) निस्सन्देह पृथ्वी पर चलने हारों में ईश्वर की दृष्टि में वह अत्यन्त बुरे हैं जो मुकरते हैं और विश्वास नहीं लाते। (५८) वह लोग जिन से तूने नियम बांधा है वह अपने नियम को हर बार भङ्ग करते हैं क्यों कि वह नहीं डरते।

---

* मलिक के पुत्र सुराका कनाना अध्यक्ष के विषय में है। † अर्थात महम्मद साहब की ओर से दूत लड़ रहे हैं॥

(५९) सो यदि तू उन्हें युद्ध में पकड़ पावे तो उनके साथ ऐसा व्यवहार कर कि वह आनेहारों के निमित दृष्टान्त हों जिस्तें वह शिक्षित हों। (६०) यदि तुझ को कभी किसी जाति से कपट का दुबिधा हो तू भी उनकी ओर उसी की बराबर फेंक दे निस्सन्देह ईश्वर कपट करनेहारों को मित्र नहीं रखता॥

रु० ८—(६१) जो लोग मुकरते हैं अनुमान करें कि वह जीत सके गे वह कभी हरा न सकेंगे। (६२) उनसे युद्ध के निमित तत्पर होओ कि जो कुछ शक्ति तुम उत्पन्न कर सको घोड़े बांधने से जिस्तें ईश्वर के और अपने शत्रुओं से औरों को जो उनके उपरान्त हैं उनसे भय दिखाओ तुम उन्हें नहीं जानते परन्तु ईश्वर उन्हें जानता है और जिस वस्तु में से तुम ईश्वर के मार्ग में कुछ व्यय करोगे वह तुम को पूरा मिलेगा और तुम पर अनीति नहीं की जायगी। (६३) और यदि वह मेल की ओर झुकें तो तू भी झुक पड़ ईश्वर पर भरोसा रख निस्सन्देह वह सुननेहारा और जाननेहारा है। (६४) और यदि वह तुझ से कपट करने की इच्छा करें तो निस्सन्देह तुझ को ईश्वरही बस है वह वही है जिस ने अपनी सहायता से तेरी सहायता की और विश्वासियों के और उनके हृदयों को परस्पर मिलाता है यदि तू सबकुछ व्यय कर डालता जो पृथ्वी पर उपस्थित है तो भी तू उन के हृदयों को मिला न सकता परन्तु ईश्वर ने उन के हृदयों को मिला दिया निस्सन्देह वह बलवान बुद्धिवान है। (६५) हे भविष्यद्वक्ता तेरे निमित ईश्वर बस है और विश्वासियों के निमित जो तेरे अनुयाई हैं॥

रु० ९—(६६) हे भविष्यद्वक्ता विश्वासियों को लड़ने के निमित उभारदे यदि तुममें बीस धीरजवान मनुष्य होंगे तो वह दोसौ पर प्रबल होंगे और यदि तुममें सौ होंगे तो वह सहस्र अधर्मियों पर प्रबल होंगे क्योंकि यह वह लोग हैं जो नहीं समझते। (६७) अब ईश्वर ने उसको तुम्हारे निमित हलका कर दिया है उसे ज्ञान है कि तुम्हारे बीच में निर्बलता है सो यदि तुम्हारे बीच में सौ धीरजवान होंगे तो दोसौ पर प्रबल रहेंगे और यदि तुममें सहस्र होंगे तो वह दोसहस्र * पर ईश्वर की आज्ञा से प्रबल रहेंगे ईश्वर धीरजवानों का साथी है। (६८) किसी भविष्यद्वक्ता के निमित उचित नहीं कि उसके समीप बन्धुवा हों जबलों कि वह पृथ्वी पर भली भांति लोहू न बहाए तुम इस संसार का धन चाहते हो और ईश्वर अन्त के दिन का इच्छुक है ईश्वर बलिष्ट बुद्धिवान है। (६९) यदि ईश्वर की ओर से पहिले से न लिखा † होता तो तुमको जो कुछ तुमने

* हे व्यवस्था २६:८. यहोशू २३:१०।

† अर्थात् बंधुओं के साथ मूल्य लेके छोड़ देना।

किया है उसके निमित कठिन दण्ड पहुंचाता। (७०) और युद्ध में के पाए हुए धन में से खाओ जो लीन और पवित्र है ईश्वर से डरो ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है॥

रु० १०—(७१) हे भविष्यद्वक्ता उन बन्धुवों को जो तुम्हारे हाथों में हैं कहदे कि यदि ईश्वर को तुम्हारे हृदयों में कोई भलाई जान पड़ेगी तो तुम्हें इससे उत्तम देगा जो कुछ तुमसे लिया गया है और तुम्हें क्षमा करेगा क्योंकि ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (७२) यदि वह तुम्हें धोका देने की इच्छा करें तो उन्होंने ईश्वर से पहिले कपट ‡ किया परन्तु उसने तुम्हें उन पर शक्ति दी है ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (७३) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर पर विश्वास लाए और देश त्यागा और अपने धनों और प्राणों से ईश्वर के मार्ग में युद्ध किया और जिन्होंने शरण * दी और सहायता की यह उन लोगों में से हैं जो एक दूसरे को अति प्रिय हैं परन्तु वह जो विश्वास तो लाए परन्तु देश नहीं त्यागा तो तुमको उसकी मित्रता † से कुछ सम्बन्ध नहीं उस समय लों कि वह देश न त्यागें और यदि वह मत में तुमसे सहायता के अभिलाषी हों तो तुम पर उनकी सहायता उचित है केवल उस जाति के कि तुम में और उसमें नियम बंध गया हो और ईश्वर उसको जो कुछ तुम करते हो देखनेहारा है। (७४) जो अधर्मी हैं वह परस्पर एक दूसरे के मित्र हैं और यदि तुम भी ऐसा न करोगे तो देश में उपद्रव और बड़ा उत्पात होगा। (७५) जो लोग विश्वास लाए और देश त्यागा और ईश्वर के मार्ग में लड़े और जिन्होंने शरण दी और सहायता की यह वही हैं जो विश्वासी हैं उनके निमित क्षमा और आशीषित जीविका है। (७६) जो लोग पीछे विश्वास लाए और देश त्यागा और तुम्हारे साथ युद्ध में साथी हुए वह भी तुममें से हैं परन्तु नातेदार ईश्वर की पुस्तक में अधिक समीपी हैं निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु का जाननेहारा है॥

---

‡ अर्थात् अधर्मी होगये।   § अर्थात् प्रेरित को शरण दी।   ¶ अर्थात् दाय भाग॥

९ * सूरए तौबा (पश्चाताप) मदनी रुकू १६ आयत १३०

रुकू १—(१) उन साझी ठहराने हारों को जिनसे तुमने नियम बांधा ईश्वर और उसके प्रेरित की ओर से खुला उत्तर है। (२) और चार† मासलों देश में घूमो और जानलो कि तुम ईश्वर को हरा न सकोगे और ईश्वर अधर्मियों का उपहास करता है। (३) ईश्वर और उसके प्रेरित की ओर से लोगों को सुना देना है बड़े ‡ हज के दिन ईश्वर साझी ठहराने हारों से अलग है और उसका प्रेरित भी सो यदि तुम पश्चाताप करो तो तुम्हारे निमित्त भलाई है और यदि तुम मुँह फेरोगे तो जान लो कि तुम ईश्वर को हरा नहीं सकते जो मुकरते हैं उन्हें कठिन दण्ड का सुसमाचार सुनादे। (४) केवल इन साझी ठहराने हारों के जिनके साथ तुमने नियम किया है और उनमें से जिन्हों ने उसको नहीं तोड़ा और न तुम्हारे विरुद्ध किसीको सहायता दी तो तुम भी उनका नियम नियत समय लौं पूरा करो निस्सन्देह ईश्वर संयमियों को मित्र रखता है। (५) जब आदर योग्य मास बीत जायँ तो साझी ठहराने हारों को घात करो जहां कहीं तुम उन्हें पावो उनको पकड़ो उनको घेरो और हर ठौर उनकी घातमें बैठो फिर यदि वह पश्चाताप करें और प्रार्थना पर स्थिर रहें और दान दें तो उनका मार्ग § छोड़दो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है। यदि कोई साझी ठहराने हारा तुझसे शरण मांगे तो उसको शरण दे जिस्तें वह ईश्वर का वचन सुने और उसको उसकी शान्ति के ठौर पहुँचादो यह इस हेतु है कि वह एक ऐसी जाति है जो ज्ञान नहीं रखती॥

रु० २—(७) साझी ठहराने हारों का नियम ईश्वर और उसके प्रेरित के साथ कैसे हो सकता है परन्तु जिनसे ¶ तुमने मसजिदे हराम के निकट नियम बांधा सो जबलों वह तुम्हारे साथ स्थिर रहें तुम भी उनके साथ स्थिर रहो

---

* यह सूरत किसी किसी के विचार के अनुसार महम्मद साहब की मृत्यु के थोड़ेही समय पहिले उतरी ख़लीफ़ा उसमान कहते हैं क्योंकि इसके निमित कोई शिक्षा नहीं दीगई इस कारण इसके आरम्भ में बिसमिल्लाह नहीं है किसी किसी का विचार है कि यह सूरत सूरए इनफ़ाल ही का भाग है इस कारण इसके आरम्भ में बिसमिल्लाह की आवश्यकता नहीं और किसी किसी का विचार है कि आयत १—१२ लौं और कोई कहते हैं १—४० लौं इनको हज़रत अली ने सन् ९ हिजरी में मक्का में तीर्थ यात्रियों को सुनाई थीं।
† महम्मद साहब के भविष्यद्वक्ता होने के पूर्व्व भी अरब लोगों में शव्वाल ज़ीक़द ज़िलहज और मुहर्रम इन चार मासों को पवित्र मास जानते थे। ‡ अर्थात योमउलहज्ज। § अर्थात उन्हें न सताओ। ¶ अर्थात हुदैबा के दिन॥

निस्सन्देह ईश्वर संयमियों को मित्र रखता है । (८) क्योंकि यदि वह तुम पर जय पाजायँ तो वह अपनी नातेदारी और अपने नियम का कभी विचार न करेंगे वह अपने मुँहकी बातसे तुमको प्रसन्न रखते हैं और उनके हृदय नहीं मानते इनमें बहुतेरे कुकर्म्मी हैं । (९) ईश्वर की आयतों पर तुच्छ मूल्य लेते हैं और लोगों को उसके मार्ग से रोकते हैं निस्सन्देह जो कुछ वह करते हैं बुरा है। (१०) किसी विश्वासी के साथ न नाते का न नियम का विचार करते हैं यही लोग हैं जो मर्य्याद से पार हो जाते हैं । (११) यदि वह पश्चाताप करें और प्रार्थना पर स्थिर रहें और दान दें तो वह तुम्हारे धर्म्म सम्बन्धी भाई हैं और हम अपनी आयतों को क्रमशः कह सुनाते हैं उन लोगों के निमित जो जानते हैं। (१२) और यदि अपने नियम के पीछे वह अपनी किरियाओं को तोड़दें और तुम्हारे धर्म्म पर मेहना करें तो अधर्म के अधध्यक्षों के साथ लड़ो निस्सन्देह इनका कोई धर्म्म नहीं कदाचित वह रुक रहें । (१३) क्या तुम ऐसी जाति † से न लड़ोगे जिन्होंने अपनी किरियाओं को तोड़ डाला और प्रेरित को निकाल देने की इच्छा की और पहिले उन्हों ही ने तुमसे पहल की क्या तुम उनसे डरते हो ईश्वर का भाग अधिक है कि तुम उससे डरो यदि तुम विश्वासी हो । (१४) उनको घात करो ईश्वर तुम्हारे हाथों से उन्हें दण्ड देगा और उपहास करेगा और उनके विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा और विश्वासियों के हृदयों को शान्ति देगा। (१५)उनके हृदयों से क्रोध दूर करेगा ईश्वर उसकी ओर अवहित होता है जिस पर उसकी प्रसन्नता होती है ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है । (१६) क्या तुम्हारा विचार है कि तुम छोड़ दिए जाओगे अभी तो ईश्वर को उन लोगों का जो युद्ध करते हैं ध्यान ही नहीं और किसी किसी ने ईश्वर और प्रेरित और विश्वासियों के उपरान्त किसी को भेदी नहीं बनाया ईश्वर को तुम्हारे सब कार्य्यों की सुधि है ॥

रु० ३—(१७) यह साक्षी ठहराने हारों का काम नहीं कि ईश्वर के मन्द्रों को बसावें और अपने ऊपर आपही अधर्म की साक्षी दें यह वह हैं जिनके कार्य्य अनर्थ हैं और वह सदा अग्नि में रहेंगे । (१८) केवल वह ईश्वर के मन्द्रों को बसावें जो ईश्वर और अन्त के दिन पर विश्वास लाता है और प्रार्थना में स्थिर है और दान देता है और केवल ईश्वर ही का भय रखता है आशा है कि यही लोग

---

* अर्थात मक्कावालों से ॥

शिक्षितों में होंगे। (१९) क्या तुमने यात्रियों को जल पिलाना और मसाजिदे हराम का बसाना उसके समान * ठहराया है जो ईश्वर पर और अन्त के दिन पर विश्वास लाया और ईश्वर के मार्ग में लड़ा ईश्वर की दृष्टि में वह समान हैं ईश्वर दुष्ट जाति की शिक्षा नहीं करता। (२०) जो विश्वास लाए और देश त्यागा और ईश्वर के मार्ग में अपने धन और प्राणों से लड़े उन्हीं के निमित्त ईश्वर के तीर बड़ी पदवी हैं और यही लोग मनोर्थ पाए हुए हैं। (२१) उनका प्रभु उन्हें अपने तीर से दया और प्रसन्नता का सुसमाचार सुनाता है उनके निमित वैकुण्ठ है जिसमें उनके निमित सदा के आनन्द है। (२२) उसमें सदा रहेंगे निस्सन्देह ईश्वर के समीप बड़ा प्रतिफल है। (२३) हे विश्वासियो अपने पितरों और अपने भाइयों को मित्र न बनाओ यदपि वह अधर्म्म से विश्वास की अपेक्षा अधिक प्रेम करते हैं और जो कोई तुममें से उनको मित्र बनाएगा वह दुष्टों में से हैं। (२४) कहदे यदि तुम्हारे पितर तुम्हारे पुत्र तुम्हारे भाई बन्धु और तुम्हारी स्त्रिएँ और तुम्हारे कुटुम्बी लोग और धन जो तुमने उपार्जन किया है और व्यापार जिसके बन्द होने से डरते हो और घर जिसको तुम ईश्वर और उसके प्रेरित की अपेक्षा अधिक प्रिय रखते हो और उसके मार्ग में लड़ने से सो ठहरे रहो जबलों कि ईश्वर अपनी आज्ञा लावे क्योंकि ईश्वर अनाज्ञाकारी लोगों की शिक्षा नहीं करता॥

रु० ४—(२५) निस्सन्देह बहुत ठौरों में ईश्वर ने तुम्हारी सहायताकी और हुनैन† के दिन जब तुम्हारी बहुतायत ने तुम्हें घमण्ड में डाला था परन्तु उस से तुमको कुछ लाभ न हुआ और पृथ्वी अपनी चौड़ाई के साथ तुम पर सकेत थी और तुम पीठ दिखाके फिरे। (२६) और ईश्वर ने अपने प्रेरित पर और विश्वासियों पर सकीना उतारा और सेना भेजी जिनको तुम न देखते थे और अधर्मियों को दुख दिया अधर्मियों का यही बदला है। (२७) फिर ईश्वर उसकी ओर जिसको चाहता है अवहित होता है क्योंकि ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (२८) हे विश्वासियो साझी ठहराने हारे ही अपवित्र हैं सो वह मसजिदे हराम के समीप इस वर्ष के पश्चात न आएं और यदि तुम अपनी कंगाली से डरते हो तो ईश्वर तुमको अपने अनुग्रह से यदि चाहे धनवान कर देगा

---

* जब महम्मद साहब के चचा अब्बास बंधुआ होकर आए तो उन्हों ने अपने अधर्मी होने के उजर में इन दो बातों का वर्णन किया। † अर्थात हुनैन के संग्राम में॥

ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (२९) उन्हें घात करो जो ईश्वर और अन्त के दिन पर विश्वास नहीं लाते और उसको अपावन नहीं ठहराते जिसे ईश्वर और उसके प्रेरित ने अपावन ठहराया है और नहीं ग्रहण करते वह सत्य धर्म उनमें से जिनको पुस्तकदी गई है जबलों कि वह अपने हाथों से कर न * दें और तुच्छ होकर रहें।

रु० ५—(३०) यहूदियों ने कहा कि उज़ैर † ईश्वर का पुत्र है और नसारा ने कहा कि मसीह ईश्वर का पुत्र है यह उनके मुंहका कहना है उन लोगों की कहावत के समान जो पहिले मुकरते थे ईश्वर उनको मारे कहां से पलटे जातेहैं। (३१) उन्हों ने अपने विद्यवानों और राहिबों को ईश्वर के उपरान्त प्रभु ठहराया और मसीह पुत्र मरियम को परन्तु उन्हें आज्ञादी गई थी कि एक ईश्वरकी अराधना करें कोई ईश्वर नहीं परन्तु वह पवित्र है उससे कि उसका साक्षी ठहराते हैं। (३२) वह चाहते हैं कि ईश्वरकी ज्योति ‡ को अपने मुहों से बुझादें परन्तु ईश्वर उसको न चाहेगा वह अपनी ज्योति को पूर्ण करेगा यद्यपि अधर्मी इसको बुराही मानें। (३३) यह वही है जिसने अपना प्रेरित शिक्षा और सत्यधर्म के साथ भेजा जिस्में कि उसको हरधर्म के ऊपर फैलावे यदपि साक्षी ठहराने हारे इसको बुराही मानें। (३४) हे विश्वासियो बहुत से याजक और राहब प्रगट में लोगों का धन खा जाते हैं और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं परन्तु वह जो स्वर्ण और रूपा इकत्र करते हैं और ईश्वर के मार्ग में व्यय नहीं करते उन्हें कठिन दण्ड का सन्देश सुनादें। (३५) जिस दिन नर्क की अग्नि में वह तपाया जायगा और उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें दग्धी जायँगी यहहै जिसको तुमने इकत्र करके रक्खा था चाखो जिसको तुमने इकत्र किया था। (३६) निस्सन्देह ईश्वर के निकट मासों की गिन्ती बारह मास हैं ईश्वर के चार मास आदर योग्य हैं यह ठीक धर्म है उन में अपने ऊपर अनीति न करो परन्तु सब इकत्र होके साक्षी ठहराने हारों से लड़ो जैसा वह तुम से इकत्र होकर लड़ते हैं जानलो कि ईश्वर उनके साथ है जो संयमी हैं। (३७) निस्सन्देह हटा देना और कुछ नहीं है परन्तु अधर्म में अधिकाई और उससे अधर्मी भटका दिए जाते हैं वह उसे एक वर्ष लीन और दूसरे वर्ष अलीन कर लेते हैं जिस्तें उसकी

---

* अर्थात महसूल। † अर्थात आज़र। ‡ अर्थात क़ुरान और महम्मद साहब का भविष्यद्वक्ता होना॥

संख्या पूरी करलें जो ईश्वर ने मलीन कर दिया है और लीन करते हैं जो ईश्वर ने मलीन ठहराया है उन के बुरे कर्म उनको अच्छे कर के दिखाए गए परन्तु ईश्वर अधर्मी जाति की शिक्षा नहीं करता।

रु० ६—(३८) हे विश्वासियो तुम्हें क्या होगया तुम से कहा गया कि ईश्वर के मार्ग में पयान करो तो तुम पृथ्वी में धंसे जाते हो क्या तुम अन्त के जीवन की अपेक्षा संसारिक जीवन को अधिक चाहते हो इस जीवन की पूंजी अन्त के जीवन की अपेक्षा तुच्छ † है। (३९) यदि तुम पयान न करोगे वह तुम को दण्ड देगा कठिन दण्ड से और तुम्हारी सन्ती एक दूसरी जाति को खड़ा करेगा तुम उस का कुछ न बिगाड़ सकोगे ईश्वर हर वस्तु पर समार्थी है। (४०) यदि उसकी सहायता न करोगे और ईश्वर ने उसकी सहायता की जब उसको उन लोगों ने जो अधर्मी हैं निकाला था दूसरा ‡ दो का जब वह दोनों खोह में थे जब उस ने अपने साथी से कहा शोक न कर निस्सन्देह ईश्वर हमारे साथ है और ईश्वर ने उस पर सकीना उतारा और उनकी सहायता सेनाओं से की जिनको तुम न देखते थे और अधर्मियों की बात को नीचा किया और ईश्वर की बात ऊंची की गई ईश्वर बलिष्ट बुद्धिवान है। (४१†) सो निकलो हलके और भारी हो कर और ईश्वर के मार्ग में अपने धन और अपने प्राणों से युद्ध करो यह तुम्हारे निमित उत्तम है यदि केवल तुम जानते। (४२) यदि धन समीप होता और यात्रा हलकी तो निस्सन्देह वह तेरे अनुयाई होते परन्तु उन के निमित अन्तर दूर ‡ था और वह ईश्वर की किरिया खायंगे कि यदि हम से हो सकता तो अवश्य हम तुम्हारे साथ जाते वह आप अपने को नाश करते हैं और ईश्वर जानता है कि वह झूठे हैं॥

रु० ७—(४३) ईश्वर क्षमा करे तूने क्यों उनको आज्ञा दी यहां लों कि प्रगट हो जाय तुझ पर जो वह सत्य कहते हैं और तू झूठों को जान लेता। (४४) जो विश्वास लाए हैं उस पर और अन्त के दिन पर वह तुझ से आज्ञा नहीं मांगते पीछे रहने की युद्ध करने से और अपने प्राण और अपने धनों से ईश्वर

---

* राद २६। † अर्थात महम्मद साहब और उनके साथी अबूबकर। ‡ आयत ४१ के विषय में कहा जाता है कि यह इस सूरत की आरम्भ की आयतों में से है। § तबूक का संग्राम जो सन ९ हिजरी में हुआ उसके विषय में है जो मदीना और दमिश्क के बीच में है उस समय ३०००० मनुष्यों के सेनापति थे ४२—४८ आयतें लों इस मार्ग की यात्रा में उतरीं॥

संयमियों को जानता है। (४५) यह केवल इस निमित कि जो ईश्वर पर और अन्त के दिन पर विश्वास नहीं आप वही तुझ से पीछे रहने की आज्ञा मांगते हैं और वह जिन के मनों में सन्देह है और उस सन्देह के कारण से सोच विचार करते हैं। (४६) यदि वह जाने की इच्छा रखते तो वह उसके निमित सामग्री प्रस्तुत करते परन्तु ईश्वर ने उनके पयान को ग्रहण न किया और उनको आलसी बनादिया और कहा बैठरहो बैठरहने हारियों के साथ। (४७) यदि वह तुम्हारे साथ निकलते तो केवल दुर्दशा के और कुछ तुम में नहीं बढ़ाते और तुम्हारे बीच उपद्रव करने के निमित इधर उधर दौड़ते और मांगते और तुम में से कोई कोई उनकी सुन भी लेते ईश्वर दुष्टों को जानता है। (४८) इस से पहिले भी उन्हों ने उपद्रव खड़ा करना चाहा था और तेरे कार्यों को उलट दिया था यहां लौं कि ईश्वर की आज्ञा सत्य आपके प्रगट हुई और वह अप्रसन्नही रहे। (४९) उनमें वह * भी है जो कहता है मुझे आज्ञा दो और विपति में न फंसाओ परन्तु वह तो विपति में फंसे हुए हैं और निस्सन्देह नर्क अधर्म्मियों को घेरे हुए है। (५०) यदि तुझे कोई भलाई पहुंचती है तो यह उनको बुरा जान पड़ता है और यदि कोई विपति तुझपर आपड़े तो कहते हैं कि हमने तो अपना काम पहिलेही ठीक कर रखा था और आनन्द मनाते हुए लौट जाते हैं। (५१) कह दे हम पर केवल उस के कुछ नहीं आसकता जो ईश्वर ने हमारे निमित लिख दिया वह हमारा स्वामी है और विश्वासियों को ईश्वरही पर भरोसा रखना उचित है। (५२) कह दे तुम हमारे निमित बाट जोहने हारे नहीं परन्तु दो † भलाइयों में से एक के निमित और हमभी तुम्हारे निमित बाट जोहते हैं अथवा ईश्वर तुम्हारे तुमको आप दण्ड देगा अथवा हमारे हाथों से सो बाट जोहते रहो और हम भी तुम्हारे साथ बाट जोहते हैं। (५३) चाहे तुम व्यय करो प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से यह तुम्हारे ओर से ग्रहण ‡ न किया जायगा निस्सन्देह तुम अनाज्ञा कारियों में से हो। (५४) और उनके व्यय किए हुए को ग्रहण करने के निमित कोई और बात रोकने का कारण न ठहरी केवल उसके कि उन्हों ने अधर्म्म किया ईश्वर और उसके प्रेरित के संग और प्रार्थना आलस के साथ की और दान नहीं देते परन्तु कुड़कुड़ाहट के साथ। (५५) तुझको उनकी सम्पति और उनकी संतति आश्चर्य्य में न डाले यह कुछ नहीं केवल इसके कि ईश्वर चाहता है कि उनको उन्हीं से

* अर्थात क़ैस के पुत्र जुन्द ने तबूक के संग्राम में घर जाने की आज्ञा मांगी थी। † अर्थात जय अथवा साक्षी। ‡ जुन्द ने अपना धन देने को कहा बरन आप जाने से नाह करता रहा॥

इस संसार के जीवन में दुख दे और उनके प्राण निकल जावें और वह अधर्म्मी ‡ ही रहें। (५६) वह ईश्वर की किरिया खाते हैं निस्सन्देह वह तुम में से हैं परन्तु वह तुम में से नहीं हैं वह ऐसे लोग हैं जो भय करते हैं। (५७) यदि इन्हें कोई शरण स्थान मिलता अथवा खोह अथवा कोई घुसने की ठौर वह शीघ्रही उधरको चलदेते। (५८) इनमें कुछ हैं जो तेरा उपहास करते हैं दान के विषय में यदि उसमें से कुछ उन्हें दियाजाय तो प्रसन्न हों और यदि उसमें से उनको न दिया जाय तो तत्काल क्रोध से भरजाते हैं। (५९) यदि वह इस से प्रसन्न होते जो ईश्वर और उसके प्रेरित ने उन्हें दिया और कहते हैं कि हमको ईश्वरही बस है और ईश्वर हमपर अपना अनुग्रह करेगा और उसका प्रेरित भी निस्सन्देह हम ईश्वर की ओर अवाहित हैं॥

रु० ८—(६०) दान केवल इनके निमित है कंगालों दीनों और वह जो उसके निमित कार्य्य करते हैं और वह जिनके हृदयों को प्रेम † दिखाना है और वह जो दासत्व में हैं वह जो ऋणी हैं और ईश्वर के मार्ग में व्यय करने के हेतु और बटोहियों के निमित यह ईश्वर ने उचित ठहराया है ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (६१) और उन में से कोई हैं जो भविष्यद्वक्ता को दुख देते हैं और कहते हैं वहतो कान * है कहदे वह कान है तुम्हारे भले को वह ईश्वर पर विश्वास रखता है और विश्वासियों की प्रतीत करता है। (६२) और तुम में से जो विश्वास लाए उसके निमित वह दया है और जो कोई ईश्वर के प्रेरित को दुख देते हैं उनके निमित दुखदाई दण्ड है। (६३) तुम्हें प्रसन्न करने के निमित वह ईश्वर की किरियाएं खाते हैं परन्तु ईश्वर और उसका प्रेरित अधिक अधिकारी हैं कि वह उन्हें प्रसन्न करें यदि वह विश्वासी हैं। (६४) क्या वह नहीं जानते कि जो ईश्वर और उसके प्रेरित की विपरीति करता है उसके निमित नर्क की अग्नि है सदा उसमें रहेगा वह बड़ी हंसाई है। (६५) धर्म्म कपटी डरते हैं कहीं ऐसा न हो कि उनकी विपरीति में कोई सूरत उतरे कि उससे चिता दिया जाय जो उनके हृदयों में है कहदे तुम ठट्ठा करलो निस्सन्देह ईश्वर उसको प्रगट करने हारा है जिससे तुम डररहे हो। (६६) परन्तु यदि तुम उनसे पूछो तो वह कहेंगे कि हमतो परस्पर हंसी ठट्ठा करते थे कहदे क्या तुम ईश्वर और

---

* इमरान १७२। † हुनैन के संग्राम के पश्चात महम्मद साहब ने छोटे छोटे अरब अध्यक्षों को लूट के धन में से देकर अपनी ओर करलिया था। ‡ अर्थात जो बिना जांचे हर कथन को सुनकर सत्य मानलेता है॥

उसकी आयतों और उसके प्रेरित के साथ ठठोली करते थे। (६७) छल * छिद्र मत करो तुम अपने विश्वास के पश्चात अधर्म्मी होगये यदि हम तुम में से एक जत्था को क्षमा करदें तो हम तुम में से दूसरी जत्था को दण्ड देंगे क्योंकि वह अपराधी थे ॥

रु० ९—(६८) धर्म्म कपटी पुरुष और स्त्रियें उनमें से एक दूसरे के पीछे चलते हैं बुराई की आज्ञा देते हैं और भलाई से वर्जते हैं और अपनी मुट्टियां शक्ति भर बंद करते हैं † वह ईश्वर को भूल गए और वह भी उन्हे भूल गया निस्सन्देह धर्म्म कपटी ही अनाज्ञाकारी हैं। (६९) ईश्वर ने धर्म्म कपटी पुरुषों और स्त्रियों और अधर्म्मियों से नर्क की अग्नि की प्रतिज्ञा की है उसमें सदा रहेंगे यह उनके निमित बस है और ईश्वर ने उन पर स्राप किया है और उनके निमित सदा रहने हारा दण्ड है। (७०) तुम उनके समान हो जो तुमसे पहिले थे वह तुमसे अधिक बलवान थे और सम्पति और सन्तति में अधिक उन्होंने अपने भाग से उस समय लाभ उठाया और तुम भी अपने भाग से लाभ उठाते हो जैसा उन्होंने अपने भाग से जो तुमसे पहिले थे लाभ उठाया तुमभी हंसी करने लगे जैसी उन्होंने हंसी की उनकी किरियाएं इस संसार में और अंत के दिन में अकार्थ हुई और वही हानि उठाने हारों में हैं। (७१) क्या उनको उनका सन्देश नहीं पहुंचा जो उनसे पहिले थे नूह की जाति और आद और समूद इबराहीम की जाति और मदीन के लोग और उलटी हुई बस्तियों ‡ के रहने हारे उनके प्रेरित उनके तीर प्रत्यक्ष चिन्हों के साथ आए क्योंकि ईश्वर उन पर अनीति करनेहारा न था वह अपने आप अनीति करते थे। (७२) विश्वासी पुरुष और स्त्रियों में से परसपर मित्र हैं वह सुकर्म्म की आज्ञा करते और कुकर्म्म से वर्जते हैं और प्रार्थना को स्थिर रखते हैं और दान देते हैं और ईश्वर और उसके प्ररित की सेवा करते हैं यह हैं जिन पर अपनी दया करेगा निस्सन्देह ईश्वर बलिष्ठ और बुद्धिवान है। (७३) ईश्वर ने विश्वासी पुरुष और स्त्रियों से बैकुण्ठ की प्रतिज्ञा की है जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और उसमें सदा रहेंगे और पवित्र घरों का अदन के बैकुण्ठ का और ईश्वर की प्रसन्नता इन सब से उत्तम है और यही बड़ा मनोर्थ प्राप्त करना है ॥

रु० १०—(७४) हे भविष्यद्वक्ता अधर्म्मियों और धर्म्म कपटियों से युद्ध कर और उनसे कठोरता कर उनका ठौर नर्क है और वह बुरा ठौर है। (७५) वह

---

* अर्थात् बहाना। † अर्थात् दान नहीं देते। ‡ अर्थात् लूत की जाति के नग्र ॥

ईश्वर की किरिया खाते हैं कि हमने नहीं कहा निस्सन्देह उन्होंने अधर्म्म की बात कही और इसलाम लाने के पश्चात अधर्म्मी हुए और उसके निमित ठाना जो उन्हें न मिला और यह सब उसी की सन्ती करते हैं कि उनको ईश्वर और उसके प्रेरित ने अपने अनुग्रह से धनवान * कर दिया यदि वह पश्चाताप करें तो उनके निमिन यह उत्तम है और यदि न मानेंगे तो ईश्वर उनको कठिन दण्ड देगा संसार और अंत के दिन में उनके निमित इस पृथ्वी पर कोई हितवादी और सहायक न होगा। (७६) इनमें से कुछ हैं जो ईश्वर से नियम करते हैं कि यदि वह हम पर अनुग्रह करेगा तो हम दान देंगे और हम भलों में होयंगे। (७७) और जब उसने उनको अपने अनुग्रह से दिया तो उसमें कृपणता करने लगे और पीठ फेर कर अलग होगए। (७८) सो उसने द्वैधिभाव को उनके हृदयों में दौड़ा दिया उस दिन लौं कि उससे आकर मिलें इस निमित कि जो उन्होंने ईश्वर से प्रतिज्ञा की थी उसके विपरीति क्रिया इस कारण कि वह झूठे थे। (७९) क्या उनको ज्ञान नहीं कि ईश्वर उनके भेदों और कानाफूसी को जानता है और ईश्वर को गुप्त की बातों का ज्ञान है। (८०) जो विश्वासियों पर दोष लगाते हैं कि वह जी से दान देते हैं और उन लोगों को जो अपने परिश्रम को छोड़ और कुछ नहीं पाते और उनसे ठट्ठा करते हैं ईश्वर उनसे ठट्ठा करेगा और उनके निमित कठिन दण्ड है। (८१) चाहे उनके निमित क्षमा मांग अथवा उनके निमित न मांग यदि तू उनके निमित सत्तर बार क्षमा मांगेगा ईश्वर फिर भी उनको क्षमा न करेगा और यह इस कारण कि वह ईश्वर और उसके प्रेरित से मुकरे और ईश्वर अनाज्ञाकारी जाति को शिक्षा नहीं देता॥

रु० ११—(८२) जो लोग पीछे छोड़ † दिए गयथे प्रसन्न हुए ईश्वर के प्रेरित के विरुद्ध पीछे रहने में और युद्ध करने से घिन करते थे अपने धन और प्राणों से ईश्वर के मार्ग में और कहते थे गृष्म ऋतु में न निकलो उनसे कह दे कि नर्क की अग्नि अधिक तप्त है यदि वह समझते होते। (८३) वह तनिक हंस लें और बहुत रोवें उसके बदले जो उन्हों ने उपार्जन किया। (८४) फिर यदि ईश्वर तुझको उनमें से किसी जत्था की ओर लौटा कर लेजाय तो फिर

---

* महम्मद साहब के घात करने का गुप्त प्रयत्न किया गया था परन्तु मदीना के लोगों ने यह कह कर उस कामको न होने दिया कि महम्मद साहब और उसके लोगों के हमारे बीचमें रहने से हमारे व्यापार को बहुत लाभ पहुंचा।

† अर्थात् तबूक के संग्राम में से पीछे छोड़े।

तुझसे निकलने के हेतु आज्ञा मांगते हैं कहदे कि तुम कभी मेरे साथ न निकलोगे और न मेरे साथ तुम किसी शत्रु से लड़ोगे तुम पहिली बार बैठ रहने के निमित प्रसन्न हुए सो अब बैठ रहो पीछे बैठ रहने हारों के साथ। (८५) और उनमें से किसी पर जो मरजाय प्रार्थना न कर और न उनकी समाधि पर खड़ा * हो निस्सन्देह उन्हों ने अधर्म्म किया ईश्वर और उसके प्रेरित से और कुकर्मीही मरगए। (८६) उनकी सम्पति और सन्तति तुम्हें आश्चर्य्य में न डाले ईश्वर चाहता है कि उनको सन्सार में उन्हीं से दण्ड दे और उनके प्राण निकलजायं और वह अधर्म्मीही रहें। (८७) और जब कोई सूरत उनपर उतारी जाती है कि तुम ईश्वर पर विश्वास लाओ और उसके प्रेरित के साथ मिलकर युद्ध करो और उनमें से जो सामर्थी हैं तुझ से आज्ञा मांगते हैं कि उन्हें छोड़दे जिस्तें बैठ-रहें बैठ रहने हारों के साथ। (८८) वह प्रसन्न हुए कि रहजायं पीछे बैठ रहने-हारियों के साथ उनके हृदय पर छाप करदी गई है और वह न समझेंगे। (८९) परन्तु प्रेरित ने और उन लोगों ने जो विश्वास लाए हैं उसके साथ अपने धन और अपने प्राणों से युद्ध किया यह लोग हैं जिन के निमित भलाइयां हैं और यही लोग भलाई पाने हारे हैं। (९०) ईश्वर ने उनके निमित बैकुण्ठ प्रस्तुत किए हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं उस में सदा रहेंगे और यही बड़ा मनोर्थ पाना है॥

रु० १२—(९१) जो कुछ मूर्ख अरबों में से आए जिस्तें छल छिद्र करें और जो बैठरहे उन्हों ने ईश्वर और उसके प्रेरित से झूठ बोला निस्सन्देह जो उनमें से अधर्म्मी हैं उनको दुखदायक दण्ड पहुंचेगा। (९२) कुछ पाप नहीं है बलहीनो पर और रोगियों पर और उनपर जिनको किसी वस्तु की शक्ति नहीं कि व्यय करें सो वह ईश्वर और उसके प्रेरित के हितैषी रहें भलाई करने हारों पर कोई दोषका मार्ग नहीं और ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है। (९३) और न उनपर है कि जब तेरे निकट आएं कि तू उन्हें वाहन दे तूने कहा कि मेरे तीर कुछ नहीं कि जिसपर तुमको असवार करूं सो वह फिर जाते हैं और उनकी आंखें शोक के मारे आंसुओं से भरी हुई हैं और उनको नहीं मिलता कि कुछ व्यय करें॥

---

* अर्थात महम्मद साहब से पहिले अरबों में मृतकों के निमित प्रार्थना मांगने की रीति थी॥

१. (६४) केवल उन्हीं पर दोष है जो लोग तुझसे आज्ञा मांगते हैं और वह धनवान हैं और प्रसन्न हैं उनके साथ रहने को जो पीछे बैठ रहने हारी हैं ईश्वर ने उनके हृदयों पर छाप करदी और वह नहीं जानते। (६५) तुम्हारे सन्मुख छल छिद्र करेंगे जब तुम लौट आओगे कहदेना छल छिद्र न करो हम तुम्हारी प्रतीत नहीं करते ईश्वर हमको तुम्हारे विषय में बता चुका ईश्वर तुम्हारे कर्म्मों को देखता है और प्रेरित भी और फिर तुम उसकी ओर पहुंचाए जाओगे जो गुप्त और प्रगट को जानता है और वह तुम्हें बतादेगा जो कुछ तुम करते थे। (६६) वह ईश्वर की किरियाएं खायेंगे तुम्हारे साम्हने जब तुम उनकी ओर लौट आओगे जिस्तें तुम उन्हें छोड़ दो उनसे मुँह फेरलो वह अशुद्ध हैं और उनका ठिकाना नर्क है उस दण्ड में जो वह उपार्जन करते थे। (६७) वह तुम्हारे साम्हने किरियाएं खायेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न होजाओ और यदि तुम प्रसन्न भी होजाओ तो निस्सन्देह ईश्वर आज्ञा उलंघन करने हारी जाति से प्रसन्न नहीं होता। (६८) अज्ञान अरब अधर्म्म और द्वेधिभाव में बहुत कठोर हैं और इस योग्य हैं कि जो मर्य्यादें ईश्वर ने अपने प्रेरित के निमित उतारी हैं उनको न जानें ईश्वर जानने हारा और बुद्धवान है। (६९) कोई अज्ञान अरब ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पड़ता है उसका बदला विचार करते हैं और बाट जोहते हैं तुम्हारे विषय में दुर्भाग्यता के हेतु उन्हीं पर दुर्भाग्यता आपड़ेगी ईश्वर सुनने हारा और जानने हारा है। (१००) और कोई अज्ञान अरब ऐसे हैं जो विश्वास लाते हैं ईश्वर और अन्त के दिन पर और जो कुछ वह व्यय करते हैं उसे ईश्वर के समीप होने का द्वारा जानते हैं और प्रेरित की प्रार्थनाओं का क्या यह उनके निमित समीपी होने का द्वारा नहीं है-ईश्वर उनको अपनी दया में प्रवेश देगा निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा और दयालु है॥

रु० १३—(१०१) आगे बढ़ने हारे और आरम्भ करनेहारे देश त्यागनेहारे और साथियों में से और वह लोग जो उनके अनुयाई हुए ईश्वर उनसे प्रसन्न हुआ और वह ईश्वर से प्रसन्न हुए उसने उनके निमित बैकुण्ठ प्रस्तुत किए हैं जिनके नीचे धाराएँ बहती हैं और वह सर्वदा उसमें रहेंगे यही बड़ा मनोर्थ प्राप्त करना है। (१०२) और उन लोगों में से जो तुम्हारे चहुँओर हैं अज्ञान अरबों में से कोई धर्म्म कपटी हैं और मदीना के रहनेहारे हैं और कोई द्वेधि भावपर

---

* अर्थात् अनसार।

अड़े हैं तू उन्हें नहीं जानता हम उन्हें जानते हैं हम उन्हें दुहरा दण्ड देंगे और फिर वह महादण्ड की ओर लौटाए जायँगे। (१०३) कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया है उन्होंने एक सुकर्म्म के साथ एक कुकर्म्म मिला लिया है कदाचित ईश्वर उनकी ओर देखे निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा और दयालु है। (१०४) उनके धनमें से दान लें*ले और उससे उन्हें पवित्र कर उनके निमित प्रार्थना कर निस्सन्देह तेरी प्रार्थना उनके निमित शान्ति है और ईश्वर सुनता और जानता है। (१०५) क्या वह नहीं जानते कि ईश्वर अपने दासों का पश्चाताप ग्रहण करता है दान लेता है और यह कि ईश्वरही पश्चाताप ग्रहण करनेहारा और दयालु है। (१०६) और कहदे कि तुम अभ्यास करो और ईश्वर और उसका प्रेरित और विश्वासी तुम्हारी क्रियाओं को देखेंगे और तुम उसके तीर पहुँचाए जाओगे जो गुप्त और प्रकठ कर्म्मों का जाननेहारा है और वह तुम्हें जता देगा जो तुम करते थे। (१०७) और कुछ लोग हैं कि उनका कार्य्य ईश्वर की आज्ञा से बन्द है अथवा उनको दण्ड दे अथवा उनको क्षमा करे क्योंकि ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (१०८†) और कुछ और लोग हैं जिन्होंने हानि पहुँचाने को मन्द्र बनाया है और अधर्म्म करने और विश्वासियों में भिन्नता डालने और उसके निमित घातमें बैठने को जिसने ईश्वर और उसके प्रेरित के विरुद्ध पहिले युद्ध किया और वह किरिया खाते हैं कि हमने सुइच्छा को छोड़ और कुछ नहीं किया परन्तु ईश्वर साक्षी है कि वह झूठे हैं। (१०९) उसमें कभी खड़ा नहो एक मन्दिर है जिसकी नेव पहिलेही दिनसे संयम पर रखी गई है यह अति उचित है कि तू उसमें खड़ा होवे उसमें ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को चाहते हैं क्योंकि ईश्वर पवित्रों को चाहता है। (११०) सो क्या वह मनुष्य जिसने अपने घरकी नेव ईश्वर के डर और उसकी प्रसन्नता पर धरी उत्तम है अथवा वह मनुष्य जिसने अपने घरकी नेव ढेजाने हारे रेतकी खाई के तट पर धरी जो उसके साथही नर्क की अग्नि में गिरजाती है ईश्वर दुष्ट जातिकी शिक्षा नहीं करता। (१११) जो घर उन्होंने बनाया है सदा उनके हृदयों में

---

* इन सात पुरुषों पर जो तबूक के युद्ध के समय में घर में बैठ रहेथे उनके धनका तीसरा भाग धन दण्ड की रीतिनुसार लेलिया गया था। † आयत १०८ से १११ लौं तबूक से लौटने और मदीना में प्रवेश करने के पहिले उत्तरी गमन सन्तान की जाति ने एक मन्द्र बनाया था और जब महम्मद साहब तबूक से लौट रहे थे तो उन्होंने विन्ती की कि आप हमारे मन्द्र को प्रार्थना करके स्थापन करें परन्तु महम्मद साहब जान गये कि इसमें यह भेद है कि गमन बंशी उमर बंशी व औफ सन्तान से बैर रखते हैं॥

सन्देह का कारण होगा जबलों कि उनके हृदय टूक टूक न होजाएँ ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है ॥

रु० १४—(११२) निस्सन्देह ईश्वर ने विश्वासियों से उनके प्राण और उनके धन मोल लिये उनके निमित बदले में उनको बैकुण्ठ है वह ईश्वर के मार्ग में युद्ध करेंगे वह घात होंगे और घात करेंगे सत्य प्रतिज्ञा है तौरेत में और इंजील में और कुरान में और ईश्वर से अधिक कौन अपने नियम को पूरा करने हारा है सो प्रसन्न होओ इस बनज पर जो तुमने उससे किया और यही बड़ा मनोर्थ पाना है। (११३) जो पश्चाताप करते हैं जो आराधना करते हैं जो स्तुति करते हैं जो यात्रा करते हैं जो झुकते हैं जो दण्डवत करते हैं और सुकर्म्म करने की आज्ञा करते हैं और कुकर्म्म से बर्जते हैं और ईश्वर की आज्ञाओं पर दृष्टि रखते हैं विश्वासियों को सुसमाचार दे। (११४) भविष्यद्वक्ता और विश्वासियों के निमित यह उचित नहीं कि साझी ठहरानेहारों के निमित क्षमा मांगें चाहे वह उनके नातेदारही क्यों न हों इसके पश्चात कि उनपर प्रगट होगया कि वह नर्क गामी लोग हैं। (११५) इबराहीम अपने पिता के निमित क्षमा न मांगता परन्तु एक बाचा के कारण जो उसने उससे की थी परन्तु जब यह उस पर प्रगट हुआ कि वह ईश्वर का शत्रु था तो उससे रोपित हुआ निस्सन्देह इबराहीम दयावन्त और नम्र था। (११६) ईश्वर किसी जाति को नहीं भटकाता पश्चात इसके कि उसने शिक्षा की हो यहां लों कि उन बातों को उन पर प्रगट करदे जिनसे उन्हें बचना है निस्सन्देह ईश्वर को हर वस्तु का ज्ञान है। (११७) निस्सन्देह स्वर्गों और पृथ्वी में ईश्वर ही का राज है वही जियाता है और वही मारता है तुम्हारे निमित ईश्वर को छोड़ कोई मित्र और सहायक नहीं। (११८) ईश्वर अवहित हुआ भविष्यद्वक्ता और देश त्यागी और सहायकों की ओर जिन्होंने सकेती के समय भविष्यद्वक्ता का साथ * दिया उसके पीछे उनमें से किसी के हृदयों में खटका हुआ फिर ईश्वर ने उन पर दृष्टि की निस्सन्देह वह उन पर कृपा करने हारा और दयालु है। (११९) इन तीन † पर भी जो पीछे छोड़े गए थे उन पर चौड़ाई सहित पृथ्वी सकेत हुई और उनके प्राण भी उनके निमित सकेत हुए और उन्होंने अनुमान किया कि उनके निमित ईश्वर से शरण नहीं परन्तु उसको

---

* देखो इसी सूरत की १०१। † अर्थात अनसार में से थे जो महम्मद साहब के साथ मदीना से तबूक को नहीं गए और लौटने पर उन पर कोप भड़का और पचास दिनके पीछे वह निरबंध किए गए ॥

समीप तब वह उन पर अवहित हुआ जिस्तें वह भी अवहित हों निस्सन्देह ईश्वर ही बड़ा पश्चाताप ग्रहण करनेहारा और दयालु है ॥

रु० १५—(१२०*) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो और सत्यवादियों के साथी होओ। (१२१) मदीना के जो लोग और उसके आस पास के गंवारों के उचित न था कि प्रेरित के संग जाने से पीछे रहजांय न यह कि अपने प्राणों की उसके प्राण से अधिक चिन्ता करें यह इस कारण कि न प्यास न परिश्रम न भूख उनको ईश्वर के मार्ग में सताते हैं और न ऐसे ठौर पर चलते हैं कि अधर्म्मियों को क्रोध दिखाएं न शत्रुओं से उनको पहुंचता † है केवल इसके कि उनके निमित जो सुकर्म्म लिखाजाता है निस्सन्देह भलों का प्रतिफल ईश्वर क्षीण नहीं करता। (१२२) और न व्यय करते हैं कोई छोटा अथवा बड़ा व्यय और न पार करते हैं कोई घाटी जो उनके निमित लिख नहीं लिया जाती जिस्तें ईश्वर उनको उत्तम प्रतिफल दे उससे जो इन्होंने किया। (१२३) यह ठीक नहीं है कि विश्वासी सबके सब एक साथ निकलपड़ें फिर उनकी हर जत्था में से क्यों न थोड़े से लोग निकलें जिस्तें अपने धर्म्म में समझ उपजावें और अपने लोगों को डरावें जब उनके तीर लौट आवें कि कदाचित वह बचते रहें ॥

रु० १६—(१२४) हे विश्वासियो अधर्म्मियों से जो तुम्हारे समीप हैं लड़ो उचित है कि वह तुममें कठोरता जानें और जानरखो कि ईश्वर संयमियों का साथी है। (१२५) जब कभी कोई सूरत उतरती है तो कोई कोई उनमें से कहते हैं तुममें से किसका विश्वास इस सूरत ने बढ़ा दिया जो विश्वासी हैं उनका विश्वास इससे बढ़जाता है और वह हर्ष करते हैं। (१२६) और वह लोग जिनके हृदय में रोग है उनमें यह अशुद्धता पर और अशुद्धता बढ़ाता है और वह अधर्म्मी ही मरजाते हैं। (१२७) क्या वह नहीं देखते कि वह प्रति वर्ष एक बार अथवा दोबार उपद्रव में डाले जाते हैं फिर भी पश्चाताप नहीं करते और न शिक्षा पकड़ते हैं। (१२८) जब कोई सूरत उतरती है तो कुछ लोग दूसरों की ओर देखते हैं क्या तुम्हें कोई देखता है फिर फिर जाते हैं ईश्वर ने उनके हृदयों को फेर दिया वह एक ऐसी जाति है जो नहीं समझती। (१२९) तुम्हारे तीर तुम्हीं में का एक प्रेरित आया है उसको तुम्हारा दुःख भारी जान पड़ता है वह तुम्हारी भलाई के हेतु चित ‡ बाहर चिन्तायमान है विश्वासियों के साथ कृपा करनेहारा

---

* आयत १२० से १२८ लौं तबूक से मदीना लौट आने पर उतरीं। † अर्थात् कुछ हानि।
‡ अर्थात् लोभी ॥

और दयालु है। (१३०) इस पर भी यदि वह फिर जायं तो कहदे ईश्वरही मुझे सर्वस्व है कोई ईश्वर नहीं परन्तु वह मैं उसी पर भरोसा करता हूं वही महा स्वर्ग का प्रभु है॥

१० सूरए यूनस मक्की रुकू ११ आयत १०९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) अलूरा. यह आयतें बुद्धि से भरी हुई पुस्तक में से हैं। (२) क्या लोगों को इस बात से आश्चर्य्य हुआ है कि हमने उन्हीं में से एक मनुष्य * की ओर प्रेरणा की कि लोगों को डरावे और विश्वासियों को सुसमाचार दे और उनका पद उनके प्रभु के यहां से सच्चाई † के साथ है अधर्म्मी कहने लगे निस्सन्देह यहतो टोनहा है। (३) तुम्हारा प्रभु ही ईश्वर है जिसने स्वर्गों और पृथ्वी को छः दिन में सृजा फिर स्वर्ग पर जा ठहरा और प्रबन्ध करता है हर कार्य्य का कोई विन्ती नहीं कर सकता केवल उसकी आज्ञा होने के यही ईश्वर तुम्हारा प्रभु है उसकी आराधना करो क्या तुम शिक्षित नहीं होते। (४) उसी की ओर तुम सबको फिर जाना है ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य है निस्सन्देह वही सृष्टि को उपजाता है फिर वही उसको दूजीबार करेगा जिस्तें कि विश्वासियों को और न्याय से सुकर्म्म करनेहारों को प्रतिफल दे और जिन्होंने अधर्म्म किया उनके निमित पीने को खौलता हुआ पानी और दुखदायक दण्ड है इस कारण कि उन्होंने अधर्म्म किया। (५) वह वही है जिसने सूर्य्य को प्रकाश और चंद्रमा को ज्योति के निमित और उनके ठौर ठहराई जिस्ते तुम वर्षों की गिन्ती और लेखा जानलो ईश्वर ने उनको नहीं उपजाया परन्तु यथार्थ जो लोग समझदार हैं उनके निमित खोल कर चिन्ह बर्णन करता है। (६) निस्सन्देह रात्रि और दिनके विभेद में और जो कुछ ईश्वर ने स्वर्गों और पृथ्वी में उत्पन्न किया संयमियों के निमित चिन्ह हैं। (७) निस्सन्देह जो लोग हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन में मगन हैं और उसी से उनको शांति है और जो लोग हमारे चिन्हों से अचेत हैं (८) यही लोग हैं कि जिनका ठौर अग्नि है उसके कारण जो वह करते

* अर्थात् लोग महम्मद साहब के भविष्यद्वक्ता होने से मुकरते थे। † अर्थात् उनकी क्रियाओं के निमित प्रतिफल है॥

थे (९) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनको उनका प्रभु उनके विश्वास के कारण शिक्षा करेगा और उनके नीचे धारायें बहती हैं हर्ष के बैकुण्ठों में (१०) उनकी प्रार्थना उस में यह होगी हे ईश्वर तू पवित्र है उनकी कुशल की प्रार्थना एक दूसरे के हेतु कल्याण होगी। (११) और उनकी प्रार्थना का अन्त यह होगा कि सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित जो सृष्टियों का प्रभु है।

रु०—२ (१२) और यदि ईश्वर लोगों पर शीघ्र * बुराई को पहुंचावे जैसा कि वह शीघ्र भलाई चाहते हैं उनका नियत समय निश्चय पूरा होगा सो हम उन लोगों को छोड़ रखते हैं जिनको हम से मिलने की आशा नहीं कि अपने विरोध में भटकते फिरें (१३) जब मनुष्य पर दुख आता है तो हमको पुकारता है लेटे हुए बैठे हुए अथवा खड़े खड़े फिर जब हम उससे इस दुख को दूर कर देते हैं तो चल देता है जैसे कि उसने पुकारा ही नहीं था उस दुख के निमित जो उस को पहुंचा था ऐसे ही भुलाकरके मर्याद से अधिक बढ़ने हारों को दिखाए गये उनको उनके कार्य जो वह करते थे। (१४) निस्सन्देह हमने तुम से पहिले के लोगों को नाश किया जब वह दुष्ट हो गए उनके तीर उनके प्रेरित प्रत्यक्ष चिन्ह लेके आए परन्तु उन्होंने प्रतीत नहीं की हम अपराधियों को इसी भांति दण्ड देते हैं। (१५) और हमने तुम्हें उनके पीछे पृथ्वी पर उनका उत्तराधिकारी बनाया कि देखें तुम क्या करते हो (१६) परन्तु जब हमारी खुली आयतें उन पर पढ़ी जाती हैं तो वह लोग जिनको हम से मिलने की आशा नहीं कहते हैं कि ला एक कुरान इसके उपरान्त अथवा उसको बदलडाल कह दे कि मेरा काम नहीं कि मैं अपनी ओर से इसको बदलडालूं मैं तो उसी बात के आधीन हूं जो मेरी ओर प्रेरणा होती है और यदि मैं अपने प्रभु की आज्ञालंघन करूँ तो उस भारी दिन के दण्ड से डरताहूं। (१७) यदि ईश्वर चाहता तो मैं तुम्हारे साम्हने नहीं पढ़ता और न तुमको उसका संदेश देता क्योंकि इससे पहिले मैं तुम में एक समय लों रह चुकाहूं क्या तुम नहीं समझते। (१८) उसमें बढ़के दुष्ट कौन है जो ईश्वर पर झूठा दोष बांधे अथवा उसकी आयतों को झुठलाए निस्सन्देह अपराधियों का भला न होगा। (१९) ईश्वर को छोड़ ऐसी वस्तु की अराधना करते हैं जो न उन्हें हानि पहुंचा सकती न लाभ पहुंचा सकती है और कहते हैं कि ईश्वर के यहां हमारे विन्ती करने हारे हैं कहदे क्या तुम ईश्वर को वह बताते हो जो वह

---

* लोग बार बार कहते थे जिस दण्ड से हमको डराते शीघ्र हम पर लेआओ॥

नहीं जानता आकाशों और पृथ्वी में वह पवित्र है और उत्तम है उससे जिसको वह साझी ठहराते हैं। (२०) लोग तो एक जाति * थे फिर भिन्न भिन्न होगए यदि एक वचन प्रभु की ओर से पहिले न कहा गया होता तो उनमें निर्णय कर दिया जाता उस बात में जिसमें वह विभेद करते थे। (२१) वह कहते हैं क्यों न उस पर कोई चिन्ह उतरा उसके प्रभु की ओर से कहदे गुप्त की बात को ईश्वर ही जानता है तुम भी बाट जोहते रहो और मैं भी तुम्हारे साथ बाट जोहने हारों में हूं।

रु० ३—(२२) जब हम लोगों को अपनी दया से चखाते हैं दुख के पीछे जो उन्हें पहुंचा † था ऐसे समय हमारी आयतों से छलछिद्र करने लगते हैं कहदे ईश्वर सब से शीघ्र छल कर सकता है निस्सन्देह हमारे दूत लिखते हैं जो कुछ छल तुम करते हो (२३) वह वही है जो तुमको जल और थल में यात्रा कराता है यहां लों कि तुम नौकाओं में होते हो और वह उन्हें लेचलती हैं समान पवन के सहारे और तुम इसीसे प्रसन्न होते हो फिर उन पर प्रचंड पवन आ पड़ती है और चहुंओर से उन पर लहरें आती हैं और वह जानलेते हैं कि हम घेर लिए गए तब वह ईश्वर को पुकारते हैं और उसकी आराधना निष्कपट हृदय के साथ करते हैं कि यदि तू हमको इससे बचाले तो निस्सन्देह हम गुणा-नुवाद करने हारों में होंगे। (२४) और जब उनको छुटकारा दे दिया उस समय पृथ्वी में अकारण द्रोह करने लगते हैं हे लोगो तुम्हारे द्रोह की उत्पात तुम्हारे ही प्राणों पर है संसार के जीवन से लाभ उठालो फिर इसके पश्चात् तुम को हमारे ही समीप आना है तब हम तुमको बतादेंगे जो कुछ तुम करते थे (२५) संसारिक जीवन का दृष्टान्त तो उस पानी के समान है जिसको हमने आकाश से उतारा फिर उससे पृथ्वी की वनस्पति मिल निकली उसको मनुष्य और पशु खाते हैं यहांलों कि जब पृथ्वी ने अपना सिंगार किया और बन सँवर गई और उनके लोगों ने जाना कि वह अब उसपर शक्तिवान हैं उसपर हमारी आज्ञा रातको अथवा दिनको आती है फिर हमने उसे काट कर ढेर करादिया जैसे कल यहां खेती थीही नहीं इसी भांति हम अपनी आयतों को खोलकर वर्णन करते हैं उनके निमित जो चिन्तायमान हैं। (२६) ईश्वर कुशल के घर ‡ की ओर बुलाता है जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर शिक्षा करता है।

---

* उत्पत्ति ११:१। † यह उस दुर्भिक्ष के विषय में है जो सात वर्ष को मक्का में रहा। ‡ अर्थात् बैकुण्ठ॥

(२७) उन लोगों के निमित जो भलाई करते हैं उनके निमित भलाई * और कुछ उस से अधिक है उनके मुँहों को कालख और हंसाई नढ़ांपेगी यही बैकुण्ठ वाले लोग हैं और वह सदा उसमें रहेंगे। (२८) जिन लोगों ने कुकर्म्म उपार्जन किए कुकर्म्म का बदला उसी के समान है उनपर हंसाई छा जायगी उनको ईश्वर से बचाने हारा कोई नहीं जैसे कि उनके मुँह अंधियारी रात के टुकड़ों से ढांप दिये गये यही लोग अग्नि में रहने हारे हैं और वह सदा उस में रहेंगे। (२९) और जिस दिन हम उन सबको इकत्र करेंगे हम उन लोगों को जो साझी ठहराते थे कहेंगे कि तुम अपनी अपनी ठौर खड़ेहो और तुम्हारे साझी भी और हम उन्हें अलग अलग करेंगे और उनके साझी कहेंगे कि तुम हमारी स्तुति नहीं करते थे। (३०) ईश्वरही साक्षी बस है हमारे और तुम्हारे बीच कि हमतो तुम्हारी आयतों से निपट अचेत थे। (३१) वहां जांचलेगा हर कोई जो कुछ उसने आगे भेजा और सब ईश्वर की ओर जो उनका यथार्थ स्वामी है लौटाए जायंगे और जो कुछ मिथ्या वह करते थे लोप होजायगा॥

रु० ४—(३२) कहदे तुमको जीविका कौन देता है आकाशों और पृथ्वी से और कान और आंखों का कौन स्वामी है और कौन है जो जीवते को मरे से निकालता है और मरे को जीवते से और कौन प्रबन्ध को ठीक रखता है तो बोल उठेंगे कि ईश्वर तू कह फिर भी तुम नहीं डरते। (३३) सो वही ईश्वर तुम्हारा प्रभु यथार्थ है फिर सत्य के पीछे भ्रमणा को छोड़ और क्या है तुम किधर फिरेजाते हो। (४३) ऐसेही तेरे प्रभुकी आज्ञा कुकार्म्मियों पर सत्य होकर रही कि वह विश्वास न लायंगे। (३५) पूछ कि क्या कोई तुम्हारे साझियों में से ऐसा है जो पहिले उत्पन्न करे फिर उसको दूजी बार करे कहदे ईश्वरही पहिले उसको उत्पन्न करता है फिर उसको वही दूजी बार भी करेगा सो कहां से फिरे जाते हो। (३६) पूछ क्या तुम्हारे साझियों में से कोई ऐसा भी है जो सत्य की शिक्षा करता है कहदे ईश्वरही सत्य की शिक्षा करता है जो सत्य की शिक्षा करे अथवा वह विशेष अधिकारी है कि उसके अनुयाई होएं अथवा उसके जो आप भी मार्ग नहीं पा सकता जबलों कि शिक्षा न की जाय तुम्हें क्या होगया कैसी आज्ञा देते हो। (३७) उनमें से बहुतेरे अनुमान के अनुयाई हैं परन्तु सत्य बात में अनुमान कुछ अर्थ नहीं आता ईश्वर जानता है जो वह करते हैं। (३८) यह कुरान

* आयत २७ और २८ दण्ड और प्रतिफल आप ठहराते हैं।

ऐसा नहीं है कि कोई ईश्वर के उपरान्त बना ले परन्तु सिद्ध करता है जो इस से आगे है और उस पुस्तक को जिस में कुछ सन्देह नहीं और निर्णय करता है और सृष्टियों के प्रभु की ओर से है। (३९) क्या वह कहते हैं कि उसने उसे बना लिया कहदे तो लाओ उसके समान एक सूरत और ईश्वर के उपरान्त जिसे बुलासको बुला लो यदि तुम सत्यवादी हो। (४०) परन्तु उन्हों ने उस वस्तु को झुठलाया जिसके समझने की उनको सामर्थ न थी अगलों उनपर उसका अर्थ प्रगट नहीं हुआ ऐसेही अगलों ने झुठलाया सो देख दुष्टों का क्या अन्त हुआ। (४१) इन में कुछ हैं जो उसपर विश्वास लायंगे और कुछ हैं जो उसपर विश्वास न लायंगे परन्तु तेरा प्रभु उपद्रवियों को भली भांति जानता है॥

रु० ५—(४२) यदि वह तुझको झुठलाएं तू कहदे मेरे निमित मेरी क्रिया और तुम्हारे निमित तुम्हारी क्रियाएं तुम उससे रहित हो जो मैं करता हूं और मैं उससे रहित हूं जो तुम करते हो। (४३ कुछ हैं जो तेरी ओर कान लगाते हैं क्या तू बहिरों को सुनायगा यदापि बुद्धि न रखते हों। (४४) और उनमें कुछ हैं जो तेरी ओर देखते हैं क्या तू अन्धों को मार्ग दिखायगा चाहे उनको दिखाई भी न देता हो। (४५) निस्सन्देह ईश्वर लोगों पर अनीति नहीं करता परन्तु लोग अपने ऊपर आपही अनीति करते हैं। (४६) और जिस दिन उनको इकत्र करेगा जैसे कि वह न रहे थे परन्तु एक घड़ी भर दिन परस्पर एक दूसरे को पहचान लेंगे निस्सन्देह हानि उठानेहारों में हुए जिन्होंने ईश्वर से मिलने को झुठलाया और वह शिक्षा पानेहारों में न थे। (४७) और यदि हम तुझको दिखावें उन प्रतिज्ञाओं में से कोई प्रतिज्ञा जो हम उनसे करते हैं अथवा हम तेरा प्राण लेलें अंत में उनको हमारे तीर फिर आना है ईश्वर उस पर साक्षी है जो वह करते हैं। (४८) हर जाति के निमित प्रेरित हैं और जब उनका प्रेरित आया उनके साथ न्याय से निर्णय होता है उन पर अनीति नहीं होती। (४९) वह कहते हैं कि यह प्रतिज्ञा कैसी है यदि तुम सत्यवादी हो। (५०) कहदे मैं अपने निमित भी बुरे और भले का अधिकारी नहीं परन्तु जो ईश्वर चाहे हर जाति का एक समय नियत है और जब उनका नियत समय आजाता है तो एक पल न पीछे रहते हैं न आगे बढ़ते हैं। (५१) कहदे भला देखो तो यदि तुम पर ईश्वर का दण्ड रात को अथवा दिनको आवे तो उसमें से पापी किसको शीघ्र चाहते हैं। (५२) क्या फिर जब वह आजायगा तब उस पर विश्वास लाओगे अब माना—तुम उसी की शीघ्रता मचाया करते थे। (५३) फिर उन लोगों

में से जो हुए थे कहा जायगा सदा का दण्ड चाखो और यह उसी का दण्ड पाते हो जो तुम उपार्जन करते थे। (५४) और तुझसे पूछते हैं कि क्या वह सत्य है कहदे मेरे प्रभु की सौंह निस्सन्देह वह सत्य है और तुम उसे कभी विफल न करसकोगे ॥

रु० ६—(५५) यदि हर एक प्राणी के तीर जिसने पाप किया जितना पृथ्वी में है और वह उसे अपने छुटकारे के निमित देडाले और अपनी लज्या को छिपाये जब कि दण्ड को देखे और उनमें न्याय से निर्णय कर दिया जायगा कि उन पर अनीति न हो। (५६) निस्सन्देह ईश्वरही का है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है क्या निस्सन्देह ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य नहीं है यदपि बहुतेरे उसे नहीं जानते। (५७) वही मारता है वही जियाता है और उसी की ओर फिरजाना है। (५८) हे लोगो निस्सन्देह तुम्हारे प्रभु से तुम्हारे निकट शिक्षा आई है और उसमें आरोग्यता है उस रोग की जो तुम्हारे हृदयों में है और विश्वासियों के निमित शिक्षा और दया है। (५९) कहदे कि ईश्वर के अनुग्रह से और उसकी दया से उचित है कि वह उसी पर आल्हाद करें यह उससे उत्तम है जो कुछ वह इकत्र करते हैं। (६०) कहदे तुमने देखा जो ईश्वर ने जीविका में से तुम्हारे निमित उतारा और फिर तुमने उसमें से अपावन और पावन ठहरा लिया कह कि ईश्वर ने तुमको आज्ञा दी है अथवा तुम ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधते हो। (६१) क्या विचार करते हैं वह लोग जो ईश्वर पर दोष लगाते हैं पुनरुत्थान के दिन का निस्सन्देह ईश्वर लोगों पर अनुग्रह करता है परन्तु बहुतेरे गुणानुवाद नहीं करते ॥

रु० ७—(६२) तू किसी दशा में क्यों न हो और कुरान में से कुछ भी क्यों न पढ़ता हो और तुम कुछही क्रिया क्यों न करते हो परन्तु हम तुम्हारे निकट उपस्थित होते हैं जब तुम आरम्भ करते हो उस कार्य्य को और तेरे प्रभु से रत्ती भर वस्तु गुप्त नहीं रहसकती पृथ्वी और आकाशों में न उससे कोई छोटी वस्तु और न बड़ी वस्तु परन्तु वह वर्णन करनेहारी पुस्तक में है। (६३) हां निस्सन्देह ईश्वर के मित्र वह हैं जिन्हें न कुछ भय है और न वह शोकित होंगे। (६४) जो विश्वासी हैं और संयम करते हैं। (६५) उनके निमित इस संसार का जीवन और अंत के दिन के निमित सुसमाचार है ईश्वर की बातों में अदल बदल नहीं है यही बड़ा मनोर्थ पाना है। (६६) उनका कहना तुझे

शोकित न करे निस्सन्देह समस्त आदर ईश्वरही का है वह सुनता और जानता है। (६७) क्या जो कुछ अकाशों और जो कुछ पृथ्वी में हैं ईश्वरही का नहीं वह किसके पीछे पड़लिए हैं जो ईश्वर को छोड़ और साझियों को पुकारते हैं यह तो केवल अनुमान के पीछे पड़े हैं वह केवल मिथ्या के कुछ नहीं बोलते (६८) वह वही है जिसने तुम्हारे निमित रात बनाई जिस्तें तुम विश्राम करो और दिन दिखाने द्वारा इसमें चिन्ह हैं उन लोगों के निमित जो सुनते हैं (६९) वह कहते हैं कि ईश्वर ने पुत्र बना रखा है वह पवित्र है वह धनी है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है उसीका है तुम्हारे तीर उसका कोई प्रमाण नहीं क्या तुम ईश्वर के विषय में वह कहते हो जो तुम नहीं जानते (७०) कहदे निस्सन्देह जो लोग ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधते हैं वह भलाई नहीं पाते। (७१) संसार में लाभ उठावें फिर उनको हमारी ओर लौट आना है फिर हम उन को कठिन दण्ड का स्वाद चखायंगे उस अधर्म की सन्ती जो वह करते थे।

रु० ८—(७२) और उनको नूह का वृतान्त पढ़ सुना जब उसने अपने लोगों से कहा कि हे मेरी जाति यदि मेरा रहना और ईश्वर की आयतों के विषय में मेरा समझाना तुम पर कठिन जान पड़ता है तो मैंने ईश्वर पर भरोसा कर लिया सो अब इकत्र होजाओ अपने कार्य्य पर अपने साझियों सहित और तुम्हारा कार्य्य तुम पर गुप्त न रहे और मुझ पर कर चलो और मुझे अवसर न दो। (७३) और यदि तुम फिरजाओ मैं तुमसे कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो ईश्वर ही से है मुझे आज्ञा है कि मैं आज्ञाकारी रहूं। (७४) फिर उन्हों ने उसे झुठलाया फिर हमने उसको और उनको जो उसके साथ नौका में थे बचा लिया और उनको उत्तराधिकारी ठहराया और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया उनको डुबादिया सो देख उनका क्या अन्त हुआ जो डराए गए थे। (७५) फिर उसके पश्चात हमने प्रेरित खड़े किए उनकी जाति के समीप और वह उनके निकट प्रकाशित प्रमाणों के साथ आए परन्तु वह विश्वास न लाए उस पर जिसको लोगों ने पहिले मिथ्या ठहराया था और हम इसी भांति मर्याद से अधिक बढ़नेहारों के हृदयों पर छाप लगा देते हैं। (७६) फिर हमने उनके पश्चात मूसा और हारून को फिराऊन और उसके अध्यक्षों के तीर अपने चिन्हों सहित भेजा तो उन्होंने अभिमान किया और वह लोग अपराधियों में से से थे। (७७) फिर जब उनके निकट हमारे सत्य चिन्ह आए तो वह बोले निस्सन्देह यह तो प्रत्यक्ष टोना है। (७८) मूसा ने कहा सत्य बात के विषय में ऐसा

कहतेहो जब कि तुम्हारे निकट आई क्या यह टोना है टोना करने हारे भलाई प्राप्त नहीं कर सकते। (७६) वह बोले क्या तू हमारे निकट इस हेतु आया है कि हमें उस से फेरदे जिसपर हमने अपने अपने पुरुखाओं को पाया और तुम्हीं दोनों का अधिकार इस देश में होजाय हम तुम्हारी प्रतीत करने हारे नहीं हैं। (८०) फ़िराऊन ने कहा मेरे समीप समस्त प्रवीण टोनहों को इकत्र करो और जब टोनहा आए मूसाने उनसे कहा कि डाल दो जो तुम डालते हो। (८१) और जब उन्हों ने डालदिया मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो टोना है निस्सन्देह अभी ईश्वर इसको मिटादेगा ईश्वर उपद्रवियों का कार्य्य नहीं संवारता। (८२) परन्तु ईश्वर अपने वचन से सत्य को स्थिर करेगा यद्यपि अपराधी उसको बुराही मानें॥

रु० ६—(८३) परन्तु मूसा पर कोई विश्वास न लाया केवल उसकी जाति के सन्तान के फ़िराऊन और उसके अध्यक्षों के भय के होने पर भी कि उनको दण्ड देगा और निस्सन्देह फ़िराऊन देश में अति अभिमानी और मर्य्याद से अधिक अनीति करने हारा था। (८४) और मूसा ने कहा हे जाति यदि तुम ईश्वर पर विश्वास लाए हो तो उस पर भरोसा करो यदि तुम आज्ञा कारी हो। (८५) उन्हों ने कहा कि हमने ईश्वर पर भरोसा किया है हमारे प्रभु हमको दुष्टों की जाति के निमित उपद्रव का कारण मतवना। और हमको अपनी दया से अधर्म्मियों की जाति से बचा। (८७) और हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रेरणा की कि तुम दोनों अपनी जाति के निमित मिसर में घर बनाओ और अपने घरों को क़िबला मुहान करो और प्रार्थना को स्थिर करो और विश्वासियों को सुसमाचार सुनाओ। (८८) मूसा ने कहा कि हे हमारे प्रभु निस्सन्देह तूने फ़िराऊन और उसके प्रधानों को ऐश्वर्य और इसी जीवन में संसार की सम्पति देरखी है हे प्रभु जिस्तें वह तेरे मार्ग से बहकाएँ हे प्रभु उनकी संपति को मिटादे और उनके हृदयों को कठोर करदे कि वह विश्वास न लाएं यहां लों कि दुख दायक दण्ड को देखें। (८९) कहा तुम दोनों की प्रार्थना ग्रहण हुई तुम दोनों दृढ़ रहो और निर्बुद्धियों के मार्ग पर न चलो। (९०) और हमने इसरायल सन्तान को समुद्र पार उतारा फिर उनका पीछा किया फ़िराऊन और उसके दलने क्रूरता और दुष्टता से यहां लों कि डूबने लों पहुँचे तो कहने लगा मैं प्रतीत करता हूँ कि कोई देव नहीं परन्तु वह जिस पर इसराएल सन्तान विश्वास लाए और मैं भी आज्ञा कारियों में हूं। (९१) परन्तु तू तो इससे पहिले विरोध कर

चुका और तू उपद्रवियों में था। (९२) सो आज के दिन हम तुझको तेरे शरीर * में बचा देंगे तू उनके निमित जो तेरे पीछे आएं चिन्ह हो निस्सन्देह लोगों में बहुतेरे हमारे चिन्हों से अचेत † हैं ॥

रु० १०—(९३) और हमने इसराएल सन्तान को सत्यता के स्थान में ठौर दिया और उन्हें खाने को पवित्र वस्तुएँ दीं फिर उन्हों ने विभेद न किया यहां लों कि उनके तीर ज्ञान आगया निस्सन्देह तेरा प्रभु पुनरुत्थान के दिन उनमें निर्णय करेगा जिन बातों में वह भिन्नता करते थे। (९४) सो यदि तू सन्देह में है उस बात में जो हमने तेरी ओर उतारी है तो पूछ ले उन लोगों से जो तुझसे पहिले पुस्तक ‡ पढ़ रहे हैं निस्सन्देह तेरे प्रभु की ओर से तेरे निकट सत्य बात आई है सो सन्देह करने हारों में मत हो। (९५) न उन लोगों में हो जिन्हों ने ईश्वर की आयतों को झुठलाया नहीं तो तू हानि उठाने हारों में होजायगा। (९६) निस्सन्देह उनपर तेरे प्रभु की आज्ञा हो चुकी है वह तो न मानेंगे। (९७) यदि उनके साम्हने हर एक चिन्ह आजावें जबलों कि दुख दायक दण्ड को न देखलें। (९८) सो कोई बस्ती क्यों नहो जिस्से विश्वास लेआती और उनका विश्वास लाना उनको लाभ देता परन्तु हां यूनस की जाति के लोग कि जब वह विश्वास ले आए हमने उनसे उपहास का दण्ड इस संसार में उठा लिया और एक समय लों उन्हें लाभ उठाने दिया। (९९) यदि तेरा प्रभु चाहता तो पृथ्वी में सबके सब एकट्ठा विश्वास लेआते सो क्या तू लोगों से बरियाई कर सकता है कि वह विश्वासी होजायँ। (१००) किसी मनुष्य के बश में नहीं कि विश्वास लेआवे केवल ईश्वर की आज्ञा के और वह लोगों पर अशुद्धता डालता है जो बुद्धि नहीं रखते। (१०१) कह दे देखो आकाशों और पृथ्वी में क्या कुछ है चिह्न और डरावे विश्वास न लानेहारों के कुछ अर्थ नहीं आते। (१०२) उन लोगों के समान बाट जोह रहे हैं जो उनसे पहिले बीते कहदे बाट जोहते रहो और मैं भी तुम्हारे साथ बाट जोहनेहारों में हूँ। (१०३) फिर हम अपने प्रेरितों और उनको जो विश्वास लाए हैं बचा लेते हैं ऐसे ही यह हमारे अधिकार में है विश्वासियों को बचा लेना ॥

---

* कहावत है कि इसराएल सन्तान को सन्देह हुआ कि फिराऊन भी डूबा कि नहीं इस पर जिबराईल ने नंगी लोथ को पानी के ऊपर तैरा दिया कहते हैं कि केवल फिराऊन की ही लोथ तैरती देख पड़ी और सब नीचे बैठ गईं और कोई कहता है कि लोथ को निकाल कर एक टीले पर डाल दिया जिस्से इसराएल सन्तान देखके धन्यवाद करे और शिक्षित हों। † निर्गमन १४ : ३०। ‡ अर्थात केवल पढ़नेहारों से ॥

रु० ११—(१०४) कहदे हे लोगो यदि तुमको मेरे धर्म्म में सन्देह है तो मैं उनकी अराधना तो नहीं करता जिनकी तुम अराधना करते हो ईश्वर के उपरान्त परन्तु मैं उस ईश्वर की अराधना करता हूँ जो तुमको मृत्यु देता है और मुझे आज्ञा हुई कि मैं विश्वासियों में होऊं। (१०५) और यह कि अपना मुँह हनीफ़ धर्म्म के निमित सीधा रखूं और साझी ठहरानेहारों में मत हो। (१०६) और ईश्वर को छोड़ किसी को मत पुकार जो न तुझे लाभ दे सकता है न हानि पहुँचा सकता है फिर यदि तूने ऐसा किया तो तू भी दुष्टों में होजायगा। (१०७) और यदि ईश्वर तुझको कोई दुःख पहुँचावे तो उसका दूर करने हारा केवल उसके और कोई नहीं और यदि तुझसे भलाई करना चाहे तो उसके अनुग्रह का कोई करनेहारा नहीं वह अपने सेवकों में से जिसे वह चाहता है उसे यह देता है वही क्षमा करनेहारा दयालु है। (१०८) कह दे हे लोगो तुम्हारे समीप तुम्हारे प्रभुकी ओर से सत्य आ पहुँचा तो अब जो कोई मार्ग पर आवे तो अपने ही निमित मार्ग पर आता है और जो भटका फिर तो बस भटकता फिरेगा अपनी हानि के निमित मैं तुम पर हितकारी नहीं। (१०९) जो प्रेरणा तुझपर भेजी जाती है उसपर चल और धीरज कर यहां लौं कि ईश्वर निर्णय करे वह सबसे उत्तम निर्णय करनेहारा है॥

११ सूरए हूद मक्की रुकू १० आयत १२३।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) अलरा. यह ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें परखली गई हैं फिर वह क्रमशः की गई हैं बुद्धिवान जाननेहारे की ओर से। (२) केवल ईश्वर के किसी की अराधना न करो मैं उसी की ओर से तुम्हे डराता और सुसमाचार सुनाता हूं। (३) अपने प्रभु से क्षमा मांगो और पश्चाताप करके उसकी ओर फिरो जिसतें तुमको लाभ पहुंचे अच्छा लाभ एक समय लौं और वह अपने अनुग्रह से प्रत्येक अनुग्रह करने हारों को देगा और यदि तुम फिर जाओगे तो मैं तुम्हारे निमित उस महा दिन के क्लेश से डरता हूं। (४) तुम सबको ईश्वर की ओर जाना है वह हर वस्तु पर शक्तिवान है। (५) वह अपने हृदयों को दुहरा नहीं करते जिसतें कि वह उससे छिपजायँ सुनो जिस समय।

(६) वह अपने वस्त्र ओढ़ते * हैं वह जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह खोलते हैं। (७) निस्सन्देह वह हृदय की गुप्त बातों का जाननेहारा है॥

पारा १२.

(८) पृथ्वी पर चलनेहारा ऐसा कोई, नहीं कि उसकी जीविका ईश्वर पर उचित न हो वह जानता है उसके ठहरने के ठौर को और उसके सौंपे जाने † की ठौर को यह सब कुछ वर्णन करनेहारी पुस्तक में है। (९) वह वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छः दिन में उत्पन्न किया और उसका सिंहासन जल ‡ पर था जिस्तें कि तुमको परखे कि तुममें से कौन सुकर्म्म करता है। (१०) और यदि तू कहे कि निस्सन्देह तुम मरने के पश्चात उठाए जाओगे तो वह जो अधर्म्मी हैं कहेंगे कि यहतो कुछ भी नहीं परन्तु प्रत्यक्ष टोना। (११) और यदि हम नियत समय लों दण्ड को रोके रहें तो कहेंगे कि किस वस्तु ने उसको रोक रखा है सुनो जिस दिन यह उन पर आन पड़ेगा तो उनपर से न टरेगा और उनको घेर लेगा वही जिसका वह उपहास करते थे॥

रु० २—(१२) और यदि हम मनुष्य को अपनी दया का स्वाद चखाएं और फिर यह उससे लेलें तो निस्सन्देह वह निराश और कृतघ्न होगा। (१३) और यदि हम उसको सुदशा दें दुख के पश्चात जो उसे पहुंचा हो तो निस्सन्देह वह कहने लगे कि मुझसे बुराइयां दूर होगई और निस्सन्देह वह हर्षित होता हुआ घमंड करे। (१४) परन्तु जिन्होंने धीरज किया और सुकर्म्म करे उनके निमित क्षमा और बड़ा प्रतिफल है। (१५) फिर कदाचित तू कुछ छोड़देनेहारा है उसमें से जो हमने तुझपर प्रेरणा की है तेरा हृदय इससे सन्देह में होगा कहीं ऐसा न हो कि वह कहें क्यों न उस पर कोई भण्डार उतरा क्यों न उसके साथ कोई दूत आया तू केवल डर सुनानेहारा है ईश्वर हर वस्तु को देखनेहारा है। (१६) क्या वह कहते हैं कि यह उसने गढ़ लिया है कहदे तुम उसके समान दस § सूरतें गढ़कर लेआओ और ईश्वर के उपरान्त जिसे चाहो बुलालो यदि तुम सत्य बोलनेहारे हो। (१७) सो यदि तुम्हारा कहना न करसकें

---

* महम्मद साहब के विरोधी घर में किसी बात का परामर्श करते और उसका उत्तर उनको कुरान के द्वारा मिल जाता था तो विचार करते थे कि हमारी बातों को सुनकर कोई महम्मद साहब से आकर कहदेता है सो जब कभी वह बात करते थे तो कपड़ा ओढ़ कर दोहरे होकर बात करते थे और जब महम्मद साहब के तीर से आ निकलते थे तो चुपके से छाती मोड़ कर चले जाते थे जिस्तें वह उन्हें देख न लें यह आयत उस समय उतरी। † अर्थात् समाधि के स्थान को। ‡ उत्पत्ति १:२। § इस सूरत की ३० आयत देखो बक़र २१ यह ललकार कुरान के वाक्य पटुटा के विषय में नहीं वरन उन शिक्षाओं के विषय में है जो कुरान में पाई जाती हैं अर्थात् ईश्वर का एक होना और पुनरुत्थान इत्यादि॥

तो जानलो कि यह ईश्वरही के ज्ञान से उतरा है और यह कि कोई देव नहीं उसके उपरान्त क्या अब भी तुम मुसलमान होते हो। (१८) जो संसारिक जीवन और उसके विभव के इच्छुक हैं हम उनके कर्म्मों का पूरा पूरा प्रतिफल सन्सार ही में देंयगे उसमें उनकी हानि न कीजायगी। (१९) यही वह लोग हैं जिनके निमित अन्त में केवल अग्नि के और कुछ नहीं और अनर्थ ठहरा जो कुछ उन्होंने किया था और मिथ्या होगया जो वह करते थे। (२०) क्या वह मनुष्य जो अपने प्रभु के खुले मार्ग पर हो और उसके साथही साथ उसके तीर से एक साक्षी हो और उससे पहिले मूसा की पुस्तक एक अगुवा के समान है तौभी लोग उस पर विश्वास नहीं लाते हैं और जो उससे जत्थाओं में से मुकरा उसको अग्नि की प्रतिज्ञा है सो तू उसमें किसी भांति सन्देह न कर निस्सन्देह यह तेरे प्रभु की ओर से सत्य है यद्यपि बहुतेरे मनुष्य नहीं मानते। (२१) उससे बढ़कर और कौन दुष्ट है जो ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधे यह लोग अपने प्रभु के सन्मुख किए जायंगे और साक्षी कहदेंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने प्रभु के विषय में मिथ्या कहा था हां ईश्वर का श्राप दुष्टों पर हो। (२२) जो लोग ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ाई के इच्छुक हैं और वही अन्त से मुकरने हारे हैं यह लोग पृथ्वी में विवश नहीं करसकते और ईश्वर को छोड़ उनका कोई हितैषी नहीं उनको दूना दण्ड होगा क्योंकि न वह सुन सकते न देखते थे। (२३) यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको हानि पहुंचाई और खोया होगया जो कुछ मिथ्या वह करते थे। (२४) निस्सन्देह वही अन्त के दिन हानि उठाने हारों में हैं। (२५) निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए और अपने प्रभु के साम्हने आधीनी की यही लोग वैकुण्ठ वासी हैं और सदा उसमें रहेंगे। (२६) इन दोनों जत्थाओं का दृष्टान्त ऐसा है जैसे अन्धा और बहिरा और देखनेहारा और सुननेहारा क्या दोनों की दशा समान होसकती है क्या तुम नहीं समझते॥

रु० ३—(३७) और हमने नूह को उसकी जाति के निकट पठाया कहा कि निस्सन्देह मैं तुमको प्रगट में डराने हारा हूं। (२८) ईश्वरको छोड़ और किसी की अराधना मत करो निस्सन्देह मुझको तुम्हारे निमित भय है एक दुख देने हारे दिन के दण्ड का। (२९) परन्तु प्रधानों में से जो उसकी जाति में से मुकरने हारे थे बोले कि हम तुझको कुछ नहीं देखते परन्तु अपने समान मनुष्य और

हम नहीं देखते कि कोई तेरे स्वाधीन हुआ हो केवल उनके जो हम में तुच्छ हैं और परामर्श में हेटे और तुझ में हम अपने ऊपर कोई बड़ाई नहीं देखते वरन हम तुझको मिथ्यावादी जानते हैं। (३०) बोला हे जाति देखो तो सही यदि मैं अपने प्रभु के खुले मार्ग पर होलिया और उसने अपने तीर से मुझे दया दी और वह तुम पर गुप्त रखी गई हो तो क्या हम तुमको उस पर विवश कर सकते हैं जब कि तुम उससे रोषित हो। (३१) और हे जाति मैं तुम से इस पर कुछ धन नहीं मांगता मेरा प्रति फल तो बस ईश्वर ही पर है और उनको जो विश्वास लाए हैं मैं ढकेल नहीं सकता निस्सन्देह वह अपने प्रभु से मिलने हारे हैं परन्तु मैं देखताहूं कि तुम मूर्खता करने हारे लोग हो। (३२) हे जाति गणों ईश्वर के विरुद्ध कौन मेरी सहायता करेगा यदि मैं उनको ढकेल दूं क्या तुम विचार नहीं करते। (३३) और मैं तुम से नहीं कहता कि ईश्वर के भण्डार मेरे तीर हैं न मुझे गुप्त का ज्ञान है न कहताहूँ कि मैं दूत हूं न उनके विषय में जो तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं यह कहता हूं कि ईश्वर उनको भलाई नहीं देगा ईश्वर जानता है जो उनके हृदयों में है यदि मैं ऐसा कहूं तो निस्सन्देह मैं दुष्टों में हूं (३४) वह बोले कि हे नूह तू हम से झगड़ा और बहुत झगड़ चुका है अब ले आ जिसकी तू हम से प्रतिज्ञा करता है यदि तू सत्य बोलता है। (३५) कहा बात यह है कि ईश्वर उस को तुम्हारे तीर लायगा यदि चाहे और तुम उसे विवश नहीं कर सकते। (३६) मेरी शिक्षा भी तुम्हारे अर्थ न आयगी यद्यपि मैं तुम्हें शिक्षा करने की इच्छा करूं यदि ईश्वर चाहता हो कि तुमको कुमार्ग चलावे वही तुम्हारा प्रभु है और तुम उसी की ओर लौट जाओगे (३७) क्या वह कहते हैं कि उसने झूठ गढ़ंत* करली है तो मेरा अपराध मुझ पर और मैं उससे रहित हूं जो अपराध तुम करते हो ॥

रु० ४—(३८) और नूह की ओर प्रेरणाकी गई कि निस्सन्देह तेरे लोगों में से विश्वास न लायेंगे केवल उनके जो विश्वास ला चुके हैं सो तू उन कर्मों पर शोक न कर जो वह कर रहे हैं। (३९) हमारे नेत्रों के साम्हने और हमारी प्रेरणा से नौका बना और अनीति करने हारों के विषय में मुझ से बात न कर निस्सन्देह वह डुबाए जायेंगे। (४०) और नूह नौका बना रहा था और जब उसकी जाति के प्रधान उसके निकट से होके जाते थे तो उसकी ठठोली करते थे उसने कहा यदि

* अर्थात् आपही कुरान बना लिया ॥

तुम हम पर ठट्ठा करते हो तो निस्सन्देह हम भी तुम पर ठट्ठा करेंगे जिस रीति तुम ठट्ठा करते हो फिर तुम भी जानलोगे। (४१) कि वह कौन है कि जिस पर ऐसा दण्ड आयगा जो उसकी हंसाई कर दे और उस पर सदा का दण्ड उतरे। (४२) यहां लों कि जब हमारी आज्ञा हुई और तन्दूर फिनाया हमने कहा नौका में चढ़ाले प्रत्येक जोड़े के दो और अपने लोगों को उसके उपरान्त जिस पर आज्ञा हो चुकी और उनको जो विश्वास ले आए हैं इस पर थोड़े के उपरान्त विश्वास न लाते थे। (४३) उसने कहा नौका पर चढ़ ईश्वर के नाम से उसका चलना और थमना है निस्सन्देह मेरा प्रभु क्षमा करने हारा और दयालु है। (४४) और नौका उन्हें लिए जा रही थी पर्वत समान लहरों में और नूह ने अपने पुत्रको पुकारा जो तट पर हो रहा था कि हे पुत्र हमारे साथ चढ़ आ अधर्मियों के साथ मत रह (४५) उसने कहा कि मैं किसी पर्वत से लग रहूंगा और वह मुझे जलसे बचालेगा कहा कि आजके दिन ईश्वर के दण्ड से कोई बचाने हारा नहीं है परन्तु जिस पर वही दया करे और उन दोनों के बीच एक लहर आगई फिर वह डूबने * हारों में हुआ। (४६) और आज्ञा दी गई कि हे पृथ्वी अपना जल निगल जा और हे आकाश थमजा और जल सुखा दिया गया और कार्य सब तज दिए गए और नौका जूदी पर्वत पर जाके ठहरी और कहा गया कि दूरहो दुष्टजाति। (४७) और नूहने अपने प्रभुको पुकारा फिर कहा कि हे मेरे प्रभु मेरा पुत्र तो मेरे लोगों में से है और निस्सन्देह तेरी वाचा सत्य है और तू प्रधानों में बड़ा प्रधान है। (४८) कहा हे नूह निस्सन्देह वह तेरे लोगों में से नहीं निस्सन्देह उसके कर्म भले नहीं सो मुझ से उसके विषय में मत पूछ जिसका तुझको ज्ञान नहीं निस्सन्देह मैं तुझे शिक्षा देता हूं कि तू मूर्खों से बचा रहे। (४९) कहा हे मेरे प्रभु निस्सन्देह मैं तेरी शरण मागता हूं इसी बात से कि मैं तुझ से पूछूं वह जिसका मुझे ज्ञान नहीं यदि तू मुझको क्षमा न करे और मुझ पर दया न करे तो मैं हानि उठाने हारों में होजाऊंगा। (५०) और कहा गया हे नूह कुशल के साथ हमारी ओर से उतर और हमारी आशीषों सहित जो तुझ पर और तेरे साथी गोष्ठियों पर हैं और गोष्ठियें होंगी जिनको हम लाभ पहुंचाएंगे और फिर उनको पहुंचेगा कठिन क्रुद्ध (५१) यह गुप्त के समाचार हैं कि हम उनको तेरी ओर प्रेरणा करते हैं न तो तू ही जानता था इसको न तेरी जाति जानती थी इससे पहिले तू धीरज धर निस्सन्देह अन्त का दिन संयमियों के निमित है॥

---

* जान पड़ता है कि यह वृत्तान्त उत्पत्ति ९।२० से लिया है॥

रु० ५—(५२) और हमने आद की ओर उनके भाई हूद को भेजा उसने कहा हे जाति ईश्वर की अराधना करो उसको छोड़ तुम्हारा कोई देव नहीं तुम निरा बन्धक बांध रहे हो। (५३) हे जाति मैं उसकी सन्ती तुम से कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो ईश्वर के तीर है जिसने मुझे उत्पन्न किया सो क्या तुम समझ नहीं रखते। (५४) हे जाति तुम अपने प्रभु से क्षमा मांगो और उसकी ओर पश्चाताप करके अवहित होओ और वह अति वर्षा के मेघों को तुम पर भेजेगा। (५५) और तुम्हारे बल में अति बल देगा और पापी होके मत फिरजाओ। (५६) उन लोगों ने कहा हे हूद तू हमारे निकट कोई प्रमाण लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने देवों को छोड़ने हारे नहीं और न हम तेरी प्रतीति करते हैं। (५७) हमतो यही कहते हैं कि हमारे देवों में से किसी ने तुझे बुराई से दबोच लिया है उसने कहा कि निस्सन्देह मैं ईश्वर को साक्षी लाता हूं और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उनसे रूपित हूं जिन्हे तुम साझी ठहराते हो। (५८) उसके उपरान्त तुम मेरे साथ बुराई करो सब मिलकर और मुझे अवसर न दो। (५९) मैंने ईश्वर पर भरोसा किया है जो मेरा और तुम्हारा प्रभु है कोई चलने हारा नहीं है परन्तु वह उसकी चोटी पकड़े हुए है निस्सन्देह मेरा प्रभु सीधे मार्ग पर है। (६०) फिर यदि मुह मोड़ोगे तो मैं तुम को पहुंचा चुका वह जिस के साथ मैं तुम्हारे तीर भेजा गया था और मेरा प्रभु तुम्हारी सन्ती दूसरों को तुम्हारा उतराधिकारी कर देगा तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे निस्सन्देह मेरा प्रभु प्रत्येक वस्तु का रक्षक है। (६१) और जब हमारी आज्ञा आचुकी तो हमने हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ विश्वास लेआए थे अपनी दयासे बचालिया और हमने उनको कठिन दण्ड से रहित किया। (६२) और यह आद के लोग थे कि उन्हों ने अपने प्रभुके चिन्हों को न माना और आज्ञा उलंघन की उसके प्रेरित की और अनुयाई हुए हर हठीले विरोधी के। (६३) और उनके पीछे इस संसार और पुनरुत्थान के दिन स्राप लगादिया गयाहो परे हो आद जो हूद की जाति थी॥

रु० ६—(६४) और समूद के तीर उनके भाई सालेह को भेजा उसने कहा कि हे जाति ईश्वर की अराधना करो केवल उसके तुम्हारा कोई देव नहीं वही है जिसने तुमको पृथ्वी से उपजाया और तुमको उस में बसाया सत्य क्षमा चाहो उस से और उस की ओर अवहित होओ निस्सन्देह मेरा प्रभु उत्तर देने में समीप है। (६५) उन्हों ने कहा हे सालेह इस से पहिले तू हमारे संग था और

तुझसे आशा करी जाती थी क्या तू हमको उसकी सेवा करने से वर्जता है जिस की हमारे पुरुखा सेवा करते थे हमको तो उस में सन्देह है जिसकी ओर तू हम को बुला रहा है। (६६) उसने कहा हे जाति देखो तो सही यदि मैं अपने प्रभु के खुले मार्ग पर पड़ लिया और उसने मुझे अपनी ओर से दया दी ईश्वर के विरुद्ध और कौन मेरी सहायता करसकता है यदि मैं उसकी आज्ञा उलंघन करूं और तुम मेरा कुछ न बढ़ाओगे केवल हानि और हे जाति यह ऊटनी तुम्हारे निमित एक चिन्ह है फिर उसको छोड़ दो कि ईश्वर की भूमि में चरती फिरे और उसको बुराई के साथ न छेड़ो नहीं तो तुमपर दण्ड पड़ेगा जो निकट है। (६८) फिर उन्हों ने उसकी कूंचें काट डालीं और उसने उनसे कहा अपने घरों में तीन दिन लों भली भांति आनन्द करो यह वाचा है जो मिथ्या न होगी। (६९) और जब हमारी आज्ञा आ पहुंची हमने सालेह और उसके लोगों को जो उसके साथ विश्वास लाए थे अपनी दया से उस दिन की हंसाई से बचा लिया निस्सन्देह तेरा प्रभु बलिष्ट और शक्तिवान है। (७०) और लोगों को जो दुष्ट थे एक महा शब्द ने आ पकड़ा और भोर को वह अपने घरों में औंधे पड़े रहगए। (७१) जैसे कि उस ठौर कभी बसेही न थे हां समूद ने अपने प्रभु के साथ अधर्म किया हां परेहो समूद॥

रु० ७—(७२) और हमारे भेजेहुए इबराहीम के तीर आए सुसमाचार देके बोले प्रणाम उसने कहा प्रणाम फिर विलंब न की और तलाहुआ बछड़ा ले आया। (७३*) फिर जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं आते तो उनसे बुराविचार किया और उनसे अपने जी में डरा वह बोले मत डर हम लूत की जाति की ओर भेजे गए हैं। (७४) और उसकी पत्नी खड़ी हुई थी वह हँस-पड़ी फिर हमने उनको इज़हाक का समाचार दिया और इज़हाक के पीछे याकूब का। (७५) बोली शोक मुझपर क्या मैं जनूंगी मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरा पति भी बूढ़ा है और निस्सन्देह यह एक अद्भुत बात है। (७६) उन्हों ने कहा क्या तू ईश्वर की आज्ञाओं का आश्चर्य करती है ईश्वर की दया और आशीषें तुमपर हैं हे घरवालो निस्सन्देह वह स्तुति और सराहने के योग्य है। (७७) और जब इबराहीम से भय जाता रहा और उसका सुसमाचार पहुंच चुका तो हमसे लूत की जाति के विषय में झगड़ने लगा † निस्सन्देह इबराहीम नम्र और कोमल

---

* यह वर्णन उत्पत्ति १८।८ के विरुद्ध है। † सूरए शोरा और नमल और ऐराफ़ में इस बातका चर्चा नहीं यद्यपि यह सूरतें इस सूरत से पहिले उतर चुकीं थीं॥

स्वभाव और अवग्रहित होनेहारा था। (७८) इबराहीम इसे छोड़दे तेरे प्रभु का वचन आचुका है जो उनपर आनेहारा है ऐसा दण्ड जो रुक नहीं सकता। (७६) जब हमारे भेजेहुए लूत के समीप आए तो उनके कारण शंकित हुआ और उनके कारण उदास हुआ और बोला आज का दिन बड़ा कठिन है। (८०) और उसके तीर उसकी जाति दौड़ती आई जो पहिले से कुकर्म्म कर रहे थे उसने कहा हे जाति यह मेरी पुत्रियां हैं और वह तुम्हारे निमित अधिक पवित्र हैं तुम ईश्वर से डरो और मुझे मेरे पाहुनों के विषय में लज्जित न करो क्या तुम में कोई भी भला मानुष नहीं। (८१) उन लोगों ने कहा तू जानता है कि हमको तेरी पुत्रियों में कोई भाग नहीं और निस्सन्देह तू जानता है कि हम क्या चाहते हैं। (८२) उसने कहा आह कि मुझको तुम्हारा साम्हना करने की शक्ति होती अथवा किसी बली टेक * की शरण लेता। (८३) कहागया हे लूत हम तेरे प्रभु के भेजे हुए हैं यह तुझलों कभी न पहुंच सकेंगे तू अपने घरैयों को लेकर कुछ रात रहे निकल जा और तुममें से कोई फिर कर न देखे परन्तु तेरी पत्नी कि निस्सन्देह उसको पहुंचने हारा है वह जो उनपर पहुंचेगा निस्सन्देह उसकी वाचा का समय भोर है क्या भोर नियरे नहीं। (८४) फिर जब हमारी आज्ञा आ पहुंची हमने उनके ऊंचे † स्थानों को नीचे स्थान करादिया और हमने उनपर पत्थर और खंगर लगातार वर्षाए जो तेरे प्रभु की ओर से चिन्ह किए ‡ हुए थे और वह उन दुष्टों से कुछ परे नहीं॥

रु० ८—(८५) और § मदीना के लोगों की ओर उनके भाई श्वएब को भेजा बोला हे जाति ईश्वर की सेवा करो उसको छोड़ तुम्हारा कोई देव नहीं नाप और तौल में घटती न करो मैं तुमको सन्तुष्ट देखता हूं मैं तुम्हारे विषय डर में हूं एक घेरनेहारे दिन के दण्ड से। (८६) हे जातिगण नाप और तौल को न्याय से पूरा किया करो और लोगों को उनकी वस्तुओं में से घाट न दिया करो और पृथ्वी में उपद्रव मचाते न फिरो। (८७) जो ईश्वर के देने से बच रहे वह तुम्हारे निमित उत्तम है यदि तुम विश्वासी हो। (८८) और मैं तुम्हारा रक्षक नहीं हूं। (८९) वह बोले हे श्वएब क्या तेरी प्रार्थना तुझको सिखाती है कि हम उनको तजदें जिनको हमारे पितृगण पूजते थे अथवा हम अपनी संपति के साथ वह न करें जो हम चाहें तू ही तो बड़ा कोमल स्वभाव और समझदार है।

---

* अर्थात् किसी सेना की। † अर्थात् बस्तियों को उलट दिया। ‡ हर अपराधी के निमित एक विशेष पत्थर जिसपर उसका नाम लिखा था। § ऐराफ़ १७६॥

(६०) वह बोला हे जातिगणा भला देखो तो सही यदि मैं अपने प्रभु के सीधे मार्ग पर पड़ लिया और उसने मुझको अपनी ओर से उत्तम जीविका दी और मैं तुमसे मेल नहीं करता जिससे मैं तुमको वर्जता हूं सुधार को छोड़ जहांलों हो सके मैं तुममें और कुछ नहीं चाहता मुझको किसी से सहायता नहीं है केवल ईश्वर के कि मैंने भरोसा किया और मैं उसी की ओर फिरता हूं। (९१) हे जातिगणा मेरी हठ में कोई ऐसा अपराध न कर बैठो कि तुम पर दुख आ पड़े उनके समान कि आ पड़ी थी नूह की जाति पर अथवा हूद की जाति पर अथवा सालेह की जाति पर और लूत की जाति पर यह तुमसे कुछ परे नहीं। (९२) अपने प्रभु से क्षमा चाहो पश्चाताप करो उसकी ओर निस्सन्देह तेरा प्रभु दया करने हारा और अति प्रेम करने हारा है। (९३) वह बोले कि हे श्वएब हम तेरी बहुत सी बातें तो समझनेही नहीं जो तू कहता है और हम देखते हैं तू हमसे निरा थोड़ा है और यदि तेरे कुटुम्बी न होते तो हम तुझको पथरवाह कर डालते तू हम पर कोई बलिष्ट नहीं। (९४) वह बोला हे जातिगणा क्या मेरे कुटम्ब का दबाव तुम पर ईश्वर की अपेक्षा से अधिक है तुमने ईश्वर को फेंक दिया अपनी पीठ पर निस्सन्देह मेरा प्रभु जो कुछ तुम कर रहे हो उसको घेरे हुए है। (९५) हे जातिगणा तुम अपने ठौर अभ्यास करते रहो और निस्सन्देह मैं भी अपनी ठौर पर अभ्यास कर रहा हूं और आगे तुमको जान पड़ेगा। (९६) कि किस पर दण्ड आता है कि उनकी हँसाई करे और कौन झूठा है सो बाट जोहते रहो निस्सन्देह मैं भी बाट जोहता हूं। और जब हमारी आज्ञा आ पहुंची तो हमने श्वएब को और उनको जो उसके साथ विश्वास लाए थे अपनी दया से बचा लिया और धर पकड़ा को अनीति करते थे एक महाशब्द ने और भोर को वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (९८) जैसे कि वहां कभी बसे ही नहीं थे हां पर हो मदीनवाले जिस भांति परे किए गए समूदवाले॥

रु० ९—(९९) और हमने मूसा को अपने चिन्हों सहित और प्रत्यक्ष प्रमाणों के साथ फिराऊन और उसके मध्यक्षों के तीर भेजा फिर वह फिराऊनही की आज्ञा के अनुयायी हुए और फिराऊन की आज्ञा ठीक न थी। (१००) पुनरुत्थान के दिन फिराऊन अपनी जाति के आगे आगे होगा और उनको अग्नि लों पहुंचा देगा बुरे घाट ला डाला। (१०१) उनके पीछे इस संसार में श्राप लगा दिया और पुनरुत्थान में भी बुरा पारितोषिक है जो उनको दिया गया है। (१०२) यह बस्तियों के समाचारों में से है जो हम तुझको सुनाते हैं कुछ इनमें से अबलों

खड़ी हैं और कुछ जड़से उखड़ गई हैं। (१०३) हमने उन पर अनीति नहीं की वरन अपने आप पर उन्हों ने अनीति की और उनके देव उनके कुछ अर्थ न आए जिनको वह ईश्वर के उपरान्त पुकारा करते थे जबकि मेरे प्रभुकी आज्ञा आ पहुंची तो उन्हों ने केवल नाश के कुछ न बढ़ाया। (१०४) ऐसेही तेरे प्रभु की पकड़ है जब वह वस्तुयों को पकड़ता है और वह दुष्ट होते हैं और निस्सन्देह उसकी पकड़ अति दुखदाई और कठिन है। (१०५) निस्सन्देह इसमें उनके निमित चिन्ह हैं जो अन्त के दिन से डरते हैं यह एक दिन है जिसमें मनुष्य इकत्र किए जायँगे यह दिन साक्षी * दिया हुआ है। (१०६) हम उसको रोक न रखेंगे हां नियत समय लों। (१०७) जिस दिन वह आ पहुँचेगा तो कोई प्राणी बोल न सकेगा केवल उसकी आज्ञा के और उनमें अभागे और सुभागे हैं। (१०८) फिर जो अभागे हैं वह अग्नि में होंगे उनको वहां चिल्लानां और दहाड़ना होगा। (१०९) सदा उसमें रहेंगे जबलों आकाश और पृथ्वी रहें परन्तु जो तेरा प्रभु चाहे निस्सन्देह तेरा प्रभु जो चाहता है कर डालता है। (११०) और जो भले हैं वह बैकुण्ठ में होंगे सदा उसमें रहेंगे जबलों आकाश और पृथ्वी रहें परन्तु जो तेरा प्रभु चाहे यह भलेका क्षमा है। (१११) तू इससे संदेह में मत हो जो यह पूजते हैं सो यह लोग तो वही पूजते हैं जो उनके पूर्व्व पुरुखा पूजते रहे और हम उनको बिना घटाए सम्पूर्ण भाग देना चाहते हैं॥

रु० १०—(११२) हमने मूसा को पुस्तक दी फिर उसमें विभेद किया और यदि एक बात पहिले से तेरे प्रभु की ओर से आ न चुकी होती तो उन में निर्णय कर दिया गया होता और निस्सन्देह यह इससे बड़े सन्देह में हैं और हिचकिचाते हैं। (११३) और उन सबको जब समय आयगा तेरा प्रभु उनकी क्रिया का फल संपूर्ण देदेगा उसको सब का ज्ञान है जो कुछ वह कर रहे हैं। (११४) और तू सीधा चला चल जिस भांति तुझे आज्ञा मिली है और जिन्हों ने तेरे साथ पश्चाताप किया है और तुम मर्याद से न बढ़ो जो कुछ तुम करते हो वह देखता है। (११५) जो दुष्ट हैं उनकी ओर न झुको कहीं ऐसा न हो कि अग्नि तुम को छुए तुम्हारा ईश्वर को छोड़ कोई सहायक नहीं और फिर कहीं भी और न पाओगे। (११६) प्रार्थना के दोनों † छोर स्थिर रखो और कुछ रात गए निस्सन्देह भलाइयां पापों को हटा देती हैं और यह स्मरण करने हारों के निमित स्मरण

---

* अर्थात् अगली पुस्तकों में। † अर्थात् भोर और सांझ॥

कराना है। (११७) धीरज कर निस्सन्देह ईश्वर भलाई करने हारों का प्रतिफल छीया नहीं करता। (११८) फिर अगले समय वालों में से जो तुम से पहिले बीते हैं ऐसे समझने हारे क्यों न हुये कि जो देश में झगड़ा मचाने को बर्जते थे परन्तु कुछ लोग ऐसे थे जिनको हमने बचा लिया उन में से जो दुष्ट लोग थे उसी मार्ग पर चले जिसमें भोग विलास पाया और वह पापी थे। (११९) तेरा प्रभु ऐसा नहीं कि बस्तियों को अनीति से नाश करदे और उनके लोग सुकर्म करने हारे हों। (१२०) यदि तेरा प्रभु चाहता तो समस्त लोगों को एक जत्था कर देता परन्तु वह विभेद करने से न मानेंगे परन्तु जिन पर तेरे प्रभु ने दया की इसी हेतु उन्हें उत्पन्न किया तेरे प्रभु का बचन पूरा हुआ कि मैं नर्क को जिन्नों और मनुष्यों से भरदूंगा। (१२१) और हर बात हम तुझ से बर्णन करते हैं प्रेरितों की बातों में से जिससे तेरे हृदय को शांति दें और इन्हीं में तेरे निकट सत्य बात और शिक्षा और स्मर्ण कराने हारी बिश्वासियों के निमित आई। (१२२) जो बिश्वास नहीं लाए उन से कहदे कि तुम अभ्यास किए जाओ अपनी ठौर और हम भी अपनी ठौर अभ्यास कर रहे हैं और तुम बाट जोहते रहो और निस्सन्देह हम भी तुम्हारे साथ बाट जोहते हैं। (१२३) ईश्वर ही गुप्त की बातों को जानता है जो आकाश और पृथ्वी में है और उसी की ओर समस्त कार्य लौट जाते हैं सो उसी की सेवा कर और भरोसा रख उस पर तेरा प्रभु इससे जो कुछ तुम करते हो अचेत नहीं॥

---

१२ सूरए यूसफ मक्की रुकू १२ आयत १११।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—अलरा (१) यह बर्णन करने हारी पुस्तक की आयतें हैं (२) निस्सन्देह हम ने उसे उतारा है अरबी में क़ुरान जिससे समझसको (३) हम तुझे उत्तम से उत्तम वार्ता सुनाते हैं और हमने तेरी ओर यह क़ुरान प्रेरणा किया और निस्सन्देह इससे पहिले तू अचेतों में था (४*) जिस समय यूसफ ने अपने पिता से कहा कि हे पिता मैंने ग्यारह तारों को और सूर्य और चन्द्रमा को देखा कि यह

---

* महम्मद साहब अपने अन्तिम समय में कहा करते थे कि सूरए हूद और उसकी दो बहनें अर्थात अर्थात् सूरए वाक़ुआ और क़ारया ने उनको बूढ़ा कर दिया अर्थात् उनके वृत्तान्तों ने॥

* जान पड़ता है कि महम्मद साहब इस दूसरे स्वप्न से अजान थे जिसका चर्चा उत्पत्ति ३७:९ में है॥

मुझे दण्डवत करते हैं। (५) कहा हे पुत्र अपने भाइयों से अपने स्वप्न वर्णन मत करना कि वह तेरे विषय में कपट से कोई छल न करें निस्सन्देह दुष्टात्मा मनुष्य का प्रगट में शत्रु है। (६) और इसी भांति तुझे तेरा प्रभु चुना हुआ ठहरायगा और तुझे बातों का अर्थ करना सिखायगा और तुझ पर अपना पारितोषिक पूरा करेगा और याकूब की सन्तान पर जिस भांति इससे पहिले तेरे पूर्व पित्रों इबराहीम और इसहाक् पर पूरे किए निस्सन्देह तेरा प्रभु जानने हारा और बुद्धिवान है॥

रु० २—(७) निस्सन्देह यूसफ और उसके भाइयों के वृतान्त में प्रश्न करने हारों के निमित चिन्ह हैं। (८) जब वह कहने लगे कि यूसफ और उसका भाई हमारे पिता को अति प्रिय हैं यदपि हम बलवान हैं निस्सन्देह हमारा पिता प्रत्यक्ष भ्रम में है। (९) यूसफ को घात करो अथवा उस को किसी देश में फेंकआओ कि तुम्हारे पिता का चित केवल तुम ही पर हो और उसके पीछे भले लोगों में होजाइयो। (१०) उन बोलनेहारों में से एक बोल उठा कि यूसफ को बध मत करो उसको किसी अंधेरे कुए में डालदो और उसको कोई बटोही उठालेजायगा यदि तुमको कुछ करनाही है। (११) वह कहने लगे कि हे पिता क्या कारण है कि तू यूसफ के विषय में हमारी प्रतीत नहीं करता निस्सन्देह हमतो उसके शुभचिन्तक हैं। (१२) उसको कल हमारे साथ भेजदे कि भलीभांति खाय और खेले और निस्सन्देह हम उसके रक्षक हैं। (१३) उसने कहा निस्सन्देह यह तो मेरे शोक का कारण है कि तुम उसको लेजाओ मैं डरता हूं कि उसको कोई भेड़िया खाजाय और तुम उससे अचेत रहो। (१४) बोले यदि भेड़िया खाजाय जबकि हम एक जत्था हैं तो निस्सन्देह हमने सब कुछ खोदिया *। (१५) और जब वह यूसफ को लेकर चले गए और सब इसपर एकत्रित हुए कि इसको किसी अंधे कुए में डालदें और हमने उसकी ओर प्रेरणा की कि तू निश्चय इनको इनके यह कर्म्म जतायगा और वह न जानेंगे। (१६) और सांझ को वह अपने पिता के समीप रुदन करते हुए आए। (१७) उन्होंने कहा हे हमारे पिता निस्सन्देह हम परस्पर दौड़ करने लगे और यूसफ को अपने असबाब के तीर छोड़ दिया और उसको भेड़िया खागया और तू कभी हमारे कहे की प्रतीत न करेगा यद्यपि हमतो सच्चे हैं। (१८) और उसके

* अर्थात् उसके दण्ड में हम तुझको सब कुछ देदेंगे॥

कुर्ता पर झूठा लोहू लगा लाए उसने कहा कि तुम्हारे हृदय ने तुम्हारे निमित एक बात बनादी है परन्तु धीरज आचुका है मैं ईश्वर से सहायता चाहता हूं उसपर जो तुम वर्णन करते हो। (१९) और व्यापारियों का एक दल आपहुँचा और उन्होंने अपना पनिहारा भेजा * तो उसने अपना डोल कुप में फांसा और बोल उठा सुसमाचार हो यहतो लड़का है और उसको धन समझ कर छिपा रखा और ईश्वर तो भलीभांति जानता है जो वह कररहे थे। (२०) और उसको तुच्छ मूल्य गिन्ती के कुछ रुपये के बदले बेच दिया और वह उससे रुपित होरहे थे॥

रु० ३—(२१) और उस मनुष्य ने जिसने मिस्र वालो में से उसे मोल लिया था अपनी स्त्री से कहा कि इसको सादर रखियो कदाचित हमको लाभ दे अथवा हम इसको पुत्र बनायें और ऐसे हमने यूसफ को उस देश में ठौर दिया जिस्तें हम उसको कहावतों के अर्थ करना सिखावें और ईश्वर अपने कार्य्यों पर शक्तिवान है परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते। (२२) और जब वह अपनी तरुणावस्था को पहुंचा हमने उसको बुद्धि और ज्ञान दिया और इसी भांति हम सुकर्म्मियों को प्रतिफल देते हैं। (२३) और उस स्त्री ने जिसके घर में वह रहता था उस से लगावट की अपने आपको वश करने से और द्वार मूंद दिए और कहा आओ मैं तेरे निमित हूं उसने कहा ईश्वर की शरण निस्सन्देह वह तो मेरा स्वामी है उसने मुझे भलीभांति रखा है निस्सन्देह दुष्ट भलाई नहीं पाते। (२४) उसका उसकी ओर मन लगा और वह भी उसकी ओर मन लगाही चुका था यदि उसने अपने प्रभु का प्रमाण न देखा होता सो ऐसाही हुआ कि हमने उससे बुराई और निर्लज्जता हटा रखी निस्सन्देह वह हमारे निष्खोट दासों में था। (२५) और दोनो द्वार की ओर भागे और स्त्री ने पीछे से उसका कुरता चीर दिया और वह दोनों उसके पति से द्वार पर भेंटे वह बोली उस मनुष्य को जो तेरी स्त्री से कुकर्म्म का इच्छुक हो केवल इसके कुछ दण्ड नहीं कि बन्धुवा किया जाय अथवा दुखदायक दण्ड हो। (२६) बोला यहतो आपही मेरी इच्छुक हुई और स्त्री के कुटुंब में से एक ने साक्षी दी कि यदि उसका कुर्ता साम्हने से फटा है तो स्त्री की बात सत्य है और वह झूठों में है। (२७) और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो वह झूठी है और वह सत्य-

---

* उत्पत्ति ३७:२४ से जान पड़ता है कि उस में पानी नहीं था।

बादियों में है। (२८) और जब उसने उसके कुर्ते को देखा कि पीछे से फटा है तो बोला निस्सन्देह यह तो स्त्रियों का छल है और निस्सन्देह तुम्हारा छल बड़ा है। (२९) हे यूसफ इस बात को जानेदे हे स्त्री तू अपने अपराध की क्षमा मांग निस्सन्देह तूही अपराधी थी ॥

रु० ४—(३०) और नग्र में स्त्रियें चर्चा करने लगीं कि अज़ीज़ की स्त्री अपने दास के मन और उसकी इच्छा को अपनी ओर लगाने चाहती है निस्संदेह उसके हृदय में उसकी प्रीति ठौर पकड़ गई निस्सन्देह हम देखते हैं कि वह प्रत्यक्ष भ्रमणा में है। (३१) और जब उसने उनके छल की बातें सुनीं उनको बुलवा भेजा और उनके निमित जेवनार सिद्ध की और उनमें से प्रत्येक को एक एक छुरी दी और उससे कहा कि अब निकल आ उनके साम्हने तो जब उन्हों ने देखा उन्हों ने उसे बड़ा जाना और अपने हाथ काट डाले और कहने लगीं ईश्वर क्षमा करे यह तो मनुष्य नहीं परन्तु कोई महान दूत है। (३२) उसने उनसे कहा यह तो वही है जिसके निमित तुम मुझे मेहनें देती थीं निस्सन्देह मैंने उससे कामेच्छा की है और यह बचा रहा है और यदि यह न करेगा जो मैं उससे कह रही हूं तो अवश्य बंधुआ किया जायगा और तुच्छों में होगा। (३३) वह बोला हे मेरे प्रभु मुझे बन्दीगृह इससे अधिक प्रिय है जो यह मुझसे चाहती हैं यदि तू उनके छलको मुझसे न फेर देगा तो मैं उनकी ओर झुक जाऊंगा और मूर्खों में होऊंगा। (३४) सो उसके प्रभुने उसकी प्रार्थना ग्रहण की और उनका छल उससे हटा दिया निस्सन्देह वही सुनने हारा और जानने हारा है। (३५) इन चिह्नों के देखने पर भी उन्हें यह भला जान पड़ा कि उसे एक समयलों बन्धुआ रखें ॥

रु० ५—(३६) और बन्दीगृह में उसके तीर दो तरुण पहुंचाये गए उनमें से एक ने कहा कि निस्सन्देह मैं अपने को मदिरा निचोड़ते हुए देखता हूं और दूसरे ने कहा कि निस्सन्देह मैं अपने को सिर पर रोटियां उठाए हुए देखता हूं जिसमें से पंछी खाते हैं हमको उसका अर्थ बता निस्सन्देह हम तुझको सुकर्म्म करनेहारों में देखते हैं। (३७) उसने कहा तुम्हारे तीर भोजन जो तुमको दिया जाता है न खानेपावेगा और मैं तुम्हें उसका अर्थ उससे पहिले कि वह तुम्हारे निकट आवे बताऊंगा यह उन्हीं में से है जो मुझको मेरे प्रभुने सिखाया है और

* फिराऊन के उस सरदारका नाम है जिसके यहां यूसफ रहता था ॥

मैं उस जाति का मत * जो ईश्वर पर विश्वास नहीं लाते और अन्त के दिन को भी मुकरते हैं छोड़ बैठा हूं। (३८) और मैं अपने पितरों इबराहीम और इज़्हाक़ और याक़ूब के मतका अनुगामी हूं हमें उचित नहीं कि किसी वस्तु को ईश्वर का साझी बनाएं यह ईश्वर का अनुग्रह है हम पर और सब लोगों पर परन्तु बहुधा मनुष्य गुणानुवादी नहीं न होते। (३९) हे मेरे बन्दीगृह के दोनों साथियो क्या बहुत से प्रभु अलग अलग अच्छे हैं अथवा अकेला बली ईश्वर। (४०) तुम लोग कुछ नहीं पूजते ईश्वर के उपरान्त वरन नामों को जो तुमने और तुम्हारे पितरों ने गढ़ रखे हैं जिनके निमित ईश्वर ने कोई प्रमाण नहीं दिया केवल ईश्वर के किसी का राज्य नहीं वह तुम्हें आज्ञा देता है कि उसी की आराधना करो यही सीधा मत है परन्तु लोग नहीं जानते। (४१) हे मेरे बन्दीगृह के दोनों साथियो तुममें से एकतो अपने स्वामी को मदिरा पिलायगा और दूसरा क्रूश पर चढ़ाया जायगा फिर खावेंगे पक्षी उसके सिर में से जिस कामका तुम तात्पर्य चाहते थे न्याय होचुका। (४२) और उसने उससे जिसके विषय में विचार था कि दोनों में से बच जायगा कहा कि अपने स्वामी से मेरा चर्चा कीजियो परन्तु उसको दुष्टात्मा ने अपने स्वामी से चर्चा करना भुला † दिया और वह कई वर्ष बन्दीगृह में और रहा॥

रु० ६—(४३) तब राजा ने कहा निस्सन्देह मैं सात मोटी गायें देख रहाहूं उनको सात दुबली गायें निगल गईं और सात अन्न की हरी बालें और दूसरी सूखी देखता हूं हे अध्यक्षो मेरे स्वप्न का अर्थ बताओ यदि तुम स्वप्नों के अर्थ बताया करते हो। (४४) वह कहने लगे यह तो विचित्र स्वप्न है और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ नहीं जानते। और वह जिसने उन दोनों मेंसे छुटकारा पाया था बोल उठा और बहुत समय बीते स्मरण किया मैं तुमको इसका अर्थ बताऊंगा निस्सन्देह मैं तुमको उसका अर्थ बताऊंगा सो मुझको भेजो। (४६) हे सत्य बोलनेहारे यूसफ़ हमें उत्तर दे सात मोटी गायों के सात दुबली गायों के खालेने के विषय में और सात हरी बालों और सात सूखी बालों के विषय में जिस्तें कि मैं लोगों के निकट लौट जाऊं जिस्तें वह जानलें। (४७) उसने कहा सात वर्ष लगातार खेती करो और फिर जो कुछ तुम काटो उसको उसकी बालों में छोड़दो

* आयत १७-१८ बड़ी चौंका देनेवाली हैं जो बात महम्मद साहब अपने श्रोताओं से कहा करते थे वह यहां यूसफ़ के मुंह से कहला रहे हैं। † अर्थात् दुष्टात्मा ने यूसफ़ को उभारा कि अपने प्रभु की अपेक्षा मनुष्य पर अधिक भरोसा रखे॥

थोड़े से के उपरान्त जो तुम खाओगे। (४८) फिर सात वर्ष घटती के आयंगे वह खावेंगे जो कुछ तुमने पहिले से उनके निमित बटोर के रखा है उस थोड़े से को छोड़ जो तुम बचा रखो। (४९) और उसके पीछे एक वर्ष मनुष्यों पर वर्षा वर्षाई जायगी वह उसमें निचोड़ेंगे * ॥

रु० ७ (५०) तब राजा ने कहा उसे मेरे निकट लेआओ † और जब उसके समीप भेजे हुए आए तो उसने कहा कि अपने स्वामी के निकट फिरजा और उससे पूछ कि उन स्त्रियों का क्या प्रयोजन था जिन्हों ने अपने हाथ काट लिए निस्सन्देह मेरा प्रभु उनके छलको जानता है। (५१) उसने पूछा तुम्हारा क्या प्रयोजन था कि तुमने यूसफ के कामकी इच्छा की वह बोलीं ईश्वर साक्षी है हमने उसमें कोई बुराई नहीं जानी और अज़ीज़ की स्त्री बोली अब सत्य बात खुलगई मैंने उसके कामकी इच्छा की निस्सन्देह वह सत्य बोलनेहारों में है (५२) यह इस निमित था कि वह जानले कि मैंने उसके अनहोते में उसकी चोरी नहीं की और यह कि ईश्वर चोरी करनेहारों के छलको नहीं चलने देता ॥

पारा१३. (५३) और मैं अपने आप को उस से रहित नहीं ठहराता शारीरिक इच्छा तो बुराई कीही आज्ञा देती है परन्तु जिस समय मेरा प्रभु दया करे निस्सन्देह मेरा प्रभु दया करने हारा क्षमा करने हारा कृपालु है। (५४) और राजा ने कहा उसको मेरे समीप लेआओ मैं विशेष उसको अपनेही निमित रखूं और जब उसने उस से वार्तालाप किया तो उसने कहा कि निस्सन्देह तूने आज मेरे निकट अमीन की पदवी पाई। (५५) उसने कहा कि मुझको देश के भंडारों † पर नियत कर निस्सन्देह मैं रक्षा करने और जानने ‡ हारा हूं। (५६) इसी भांति हमने यूसफ को उस देश में ठौर दिया कि वह जिस भाग में उसका जी चाहे रहे हम जिसको चाहते हैं अपनी दया पहुंचा देते हैं हम भलाई करने हारों का प्रतिफल खोया नहीं करते। (५७) और जो विश्वास लाते हैं और जो संयम करते हैं उनके निमित अन्त के दिन का प्रतिफल उत्तम है ॥

रु० ८—(५८) और यूसफ के भाई आए और उसके सन्मुख गए उसने उनको पहचान लिया परन्तु उन्हों ने उसे न चीन्हा। (५९) जब उनके निमित

---

* अर्थात दाख रस। † उत्पति ४१:१४ से जान पड़ता है कि यूसफ अर्थ बताने से पहिले बन्दीगृह से छुटकारा पागया था परन्तु कुरान अर्थ बताने के पीछे छुटकारे का चर्चा करता है। † उत्पति ४१:४१ मे लिखा है कि फिराऊन ने आपही उसको किया। ‡ अर्थात् गुणी हूं ॥

उनकी सामग्री सिद्ध करदी गई तो कहा मेरे तीर अपने भाई को जो तुम्हारे पिता से है लेआइयो क्या तुम नहीं देखते कि मैं नाप पूरा देता हूं और मैं उत्तम अतिथि सेवक हूं। (६०) फिर यदि तुम उसको मेरे निकट न लाए तो तुम्हारे निमित मेरे निकट कोई नपुआ नहीं और न तुम मेरे निकट आना। (६१) उन्हों ने कहा कि हम उसके निमित अपने पिता को फुसलायंगे और हमें यह अवश्य करना है। (६२) और उसने अपने सेवकों से कहादिया कि उनकी पूंजी उनके बोरों में रखदो कदाचित यह इसको चीन्हलें जब अपने लोगों की ओर लौट जायं और कदाचित अभी लौट आवें। (६३) और जब वह अपने पिताके निकट आए वह बोले हे पिता हमसे नपुआ* रोक दिया गया सो हमारे भाई को हमारे साथ भेज कि नपुआ ले आवें निस्सन्देह हम उसके रक्षक हैं। (६४) उसने कहा कि इसपर मैं तुम्हारी प्रतीत नहीं करता परन्तु जैसी पहिले इसके भाई के विषय में प्रतीत की थी सो ईश्वर उत्तम रक्षा करने हारा है वह सब दयालुओं में बहुत बड़ा दयालु है। (६५) और जब उन्हों ने अपनी अपनी सामग्री खोली अपनी पूंजी को पाया कि उन्हों को फेरदी गई वह बोले हे पिता और हमें क्या चाहिए हमारी पूंजी तो हमें फेरदी गई अपने लोगों के निमित अन्न लावेंगे और अपने भाई की रचा करेंगे और एक नपुआ ऊंट का और अधिक लावें यह नपुआ तो छोटा है। (६६) वह बोला मैं इसको कभी तुम्हारे साथ न भेजूंगा जबलों कि तुम ईश्वर की ओर से पक्की बाचा न करो कि तुम अवश्य इसको मेरे निकट लौ आओगे केवल इसके कि तुम आपही घिर जाओ फिर जब उन्हों ने उस को पक्की बाचा दी उसने कहा कि ईश्वर उसपर जो हम करते हैं रक्षक है। (६७) और उसने कहा कि हे मेरे बेटो कि तुम सब एकही द्वार से प्रवेश न करो और पृथक् पृथक् द्वारों से प्रवेश करो और मैं तुमको ईश्वर की आज्ञा से नहीं बचा सकता ईश्वर के उपरान्त किसी की कुछ आज्ञा नहीं मैंने उसी पर भरोसा करलिया है उचित है कि सब भरोसा करने हारे उसीपर भरोसा रखें। (६८) और जब उन्हों ने प्रवेश किया जिस भांति उनके पिता ने उन्हें आज्ञा दी थी यह उनको ईश्वर की आज्ञा से बचा नहीं सकता था परन्तु याकूब के हृदय में एक अभिलाषा थी जिसको उसने पूरा किया और निस्सन्देह उस वस्तु से कि हमने उसे सिखाई थी वह ज्ञानवान था परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते॥

---

* अर्थात् अन्न भर कर बोरी॥

रु० ९—(६९) और जब वह यूसफ के सन्मुख आए उसने अपने भाई को अपने निकट ठौर दिया और कहा कि मैं तो तेरा भाई हूं बस उससे जो यह करते * हैं शोक न कर। (७०) फिर जब उनकी सामग्री सिद्ध करदी गई तो उसने पानी पीनेका कटोरा अपने भाई की बोरी में रखदिया फिर एक पुकारनेहारे ने पुकारा कि हे व्यापारियो निस्सन्देह तुम चोर हो। (७१) वह उनकी ओर मुहँ कर के कहने लगे कि तुम्हारी कौनसी वस्तु खो गई। (७२) उन लोगों ने कहा कि हम राजा के कटोरे को खोया हुआ पाते हैं और जो कोई उसे लायगा एक ऊंट का भार † उसे मिलेगा और मैं उसका बिचवई हूं। (७३) उन्हों ने कहा कि ईश्वर की सोंह तुम जानते हो कि हम इस हेतु नहीं आए कि देश में उपद्रव ‡ करें और न हम कभी चोर थे। (७४) उन्हो ने कहा कि फिर इसका क्या दण्ड जो तुम झूठे हो। (७५) उन्हो ने कहा कि इसका दण्ड यह कि जिस के बोरे में पाया जाय वही उसके बदले में जावे हम इसी भांति दुष्टों को दण्ड देते हैं। (७६) तब उसने उनकी बोरियों को अपने भाई की बोरी से पहिले देखना आरम्भ किया और तब उसने अपने भाई की बोरी में से निकाला इस भांति हमने यूसफ के निमित छल से दाव किया नहीं तो वह अपने भाई को राजनीति से न लेसकता उपरान्त उसके कि ईश्वर चाहे हम जिसकी चाहते हैं पदवी ऊंची करते हैं हर जाननेहारे पर उत्तम जाननेहारा है। (७७) वह बोले यदि उसने चुराया है तो इसके एक भाई ने इससे पहिले चुराया है § फिर यूसफ ने इस बात को अपने हृदय में रखा और उन पर इसको प्रगट न किया कहा तुम दरजे में नीच हो ईश्वर भलीभांति जानता है जो कुछ तुम वर्णन करते हो। (७८) वह बोले हे अज़ीज़ निस्सन्देह इसका पिता बहुत बूढ़ा है हममें से एक को उसके बदले लेले हम देखते हैं कि तू सुकर्म्मियों में है। (७९) उसने कहा ईश्वर शरण दे कि हम किसी को पकड़रखें केवल उसके जिसके तीर हमने अपनी वस्तु पाई यदि ऐसा करें तो दुष्ट ठहरें॥

रु० १०—(८०) और जब वह उससे निराश होगए परामर्श करने को अलग हो बैठे इनमें का बड़ा बोला क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे ईश्वर की दृढ़ बाचा ली थी और उसके पहिले तुम यूसफ के विषय में अपराध कर चुके हो मैं तो इस देश से नहीं जाने का जबलों कि मेरा पिता मुझको आज्ञा न दे

---

* उत्पति ४५ : १। † अर्थात् अन्न। ‡ उत्पति ४२ : ९। § उत्पति ३१ : १९॥

अथवा ईश्वर मेरे निमित आज्ञा न करे क्योंकि वह उत्तम आज्ञा करनेहारा है। (८१) फिर जाओ अपने पिता के निकट और कहो हे हमारे पिता निस्सन्देह तेरे पुत्र ने चोरी की और हमने वही कहा जिसकी हमको सुध थी और हम गुप्त के रक्षक न थे। (८२) अब पूछले उस बस्ती से जिसमें हम थे और उस जत्था से जिसमें हम आए निस्सन्देह हम सच्चे हैं। (८३) बोला कुछ नहीं वरन तुम्हारे हृदयों ने एक बात बनाई है सो धीरज उत्तम है आशा है कि ईश्वर मेरे तीर उन सबको लेआवेगा निस्सन्देह वही जाननेहारा और बुद्धिवान है। (८४) और उनसे मुहँ मोड़ लिया और कहा शोक यूसफ पर और उसकी आंखें शोक के कारण श्वेत होगई क्योंकि उसने अपने को घोंट लिया। (८५) उन्होंने कहा ईश्वर की सोंह तूतो सदा यूसफ के स्मर्ण में रहेगा यहांलों कि रोगी होजायगा अथवा मरही जायगा। (८६) वह बोला कि मैं अपनी बेचैनी और शोक को ईश्वर से पुकार करता हूं मैं ईश्वर की ओर से वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते *। (८७) हे मेरे पुत्रो जाओ यूसफ और उसके भाई का खोज करो ईश्वर की दया से निराश न होओ निस्सन्देह ईश्वर की दया से निराश नहीं होते परन्तु वही लोग जो अधर्मी हैं। (८८) और जब वह उसके समीप पहुंचे उन्होंने कहा हे अज़ीज़ हमको और हमारे घरैयों को क्लेश पहुंचा और हम तुच्छ पूंजी लाए हैं हमको पूरा नपुआ देदे और हमें दान दे निस्सन्देह ईश्वर दान देने हारों को प्रतिफल देता है। (८९) कहा क्या तुम जानते भी हो कि तुमने युसफ और उसके भाई के साथ क्या क्या किया जब तुम अज्ञानों में थे। (९०) वह बोले क्या तू सचमुच यूसफ है उसने कहा मैं यूसफ हूं और यह मेरा भाई है। ईश्वर ने हम पर उपकार किया है और निस्सन्देह जो ईश्वर से डरता है और धीरज धरता है और निस्सन्देह ईश्वर भलाई करनेहारों का प्रतिफल नहीं मेटता। (९१) वह बोले ईश्वर की सोंह ईश्वर ने तुझे हम पर उत्तम किया है निस्सन्देह हम अपराधियों में थे। (९२) उसने कहा आज के दिन तुम पर दोष नहीं ईश्वर तुम्हें क्षमा करे और वह सब दयालुओं से अधिक दयालु है। (९३) मेरे इस कुर्ते को लेजाओ और उसको मेरे पिता के मुहँ पर डालदो कि वह दृष्टि पायगा और मेरे निकट सारे परिवार को लेआओ॥

रु० ११—(९४) जब जत्था नग्र से बाहर हुआ उनके पिता ने कहा मुझे यूसफ की सुगंध † आती है यदि तुम मुझे बहका हुआ न कहो।

* उत्पत्ति ४२ : १, अर्थात यूसफ जीता है। † अर्थात बू॥

(९५) लोगों ने कहा कि ईश्वर की सौंह तू तो अपनी उस पुरानी भूल में है। (९६) और जब सुसमाचार देनेहारा आया उसने उसके मुंह पर डालदिया* तो उसने दृष्टि पाई। (९७) कहा कि मैंने तुमसे न कहा था कि मैं ईश्वर की ओर से वह जानता हूं जो तुम नहीं जानते। (९८) वह बोले हे हमारे पिता हमारे निमित हमारे पापों की क्षमा मांग निस्सन्देह हम अपराधियों में थे। (९९) उसने कहा कि मैं तुम्हारे निमित अपने प्रभु से क्षमा मांगूंगा निस्सन्देह वह क्षमा करनेहारा दयालु है। (१००) और जब वह यूसफ के निकट पहुंचे तो यूसफ ने अपने माता पिता को अपने समीप ठौर दिया और कहा कि मिसर में प्रवेश करो यदि ईश्वर की इच्छा हो शान्ति व आनन्द से। (१०१) और अपने पिता को सिंहासन पर ऊंचा † बैठाया और वह उसके साम्हने दण्डवत करने को गिरगए और उसने कहा हे मेरे पिता यह मेरे पहिले स्वप्न का अर्थ है उसको मेरे प्रभु ने सत्य कर दिखाया और उसने मेरे संग उपकार किया जब मुझको बन्दीगृह से और तुमको चुटैल ठौर से लेआया इसके पीछे दुष्टात्मा ने मुझमें और मेरे भाइयों में झगड़ा डाल दिया था निस्सन्देह मेरा प्रभु जो चाहता है यत्न से करता है निस्सन्देह वही जाननेहारा और बुद्धिवान है। (१०२) हे मेरे प्रभु तूने मुझको राज्य दिया और कहावतों का अर्थ करना सिखाया हे आकाशों और पृथ्वी के उत्पन्न करनेहारे तूही मेरा प्रतिपालक इस संसार और अन्त के दिन में है मुझको इसलाम में मृत्यु दे और मुझको भलाई करने हारों में मिला। (१०३) यह गुप्त के समाचार हैं जिनको हम तेरी ओर प्रेरणा से भेजते हैं तू उनके निकट न था जब उन्होंने अपना परामर्श दृढ़ कर लिया और वह छल कररहे थे और बहुतेरे लोगों में से विश्वास लाने हारे नहीं चाहे तू अभिलाषाही करे। (१०४) और तू उनसे इस पर कुछ धनि नहीं मांगता सो यह तो सारी सृष्टियों के निमित शिक्षा है॥

रु० १२—(१०५) स्वर्गों और पृथ्वी में बहुतेरे चिन्ह हैं जो उनपर से बीत जाते हैं और उनपर कुछ ध्यान नहीं करते। (१०६) और उनमें के बहुतेरे ईश्वर पर बिना उसके साथ साझी ठहराए विश्वास नहीं लाते। (१०७) क्या वह इस बात से निडर होगए हैं कि उनपर ईश्वर के कोप से कोई विपत्ति आनपड़े अथवा पुनरुत्थान अचानक आपड़े और उनको जान भी न पड़े। (१०८) कह दे

---

* अर्थात कुर्त्ता। † उत्पत्ति ३७ : १९ से विदित होताहै कि यूसफ की माता मर चुकी थी परन्तु कुरान से जान पड़ता है कि उसकी माता जीती है॥

यही मेरे प्रभु का मार्ग है मैं ईश्वर की ओर से खुले प्रमाणों के संग बुलाता हूं और जितने मेरे वश में हैं ईश्वर पवित्र है मैं साझी ठहराने हारों में नहीं हूं। (१०९) हमने तुझ से पहिले केवल मनुष्यों के और किसी को न भेजा कि हम उनकी ओर प्रेरणा करते थे और बस्तियों के रहने हारे थे तो क्या यह लोग देश में नहीं फिरे कि देख लेते कि उनका क्या अन्त हुआ जो उनसे पहिले थे निस्सन्देह अंत के दिन का घर संयमियों के निमित उत्तम है सो क्या उनको समझ नहीं। (११०) यहां लौं कि प्रेरित निराश होगए और उन लोगों ने अनुमान न किया कि वह झूठे ठहरे तब उनके तीर हमारी सहायता आई और वह जिन को हमने चाहा बचाए गए परन्तु हमारा दण्ड पापी जाति से नहीं टरता। (१११) निस्सन्देह उनके इतहासों में समझनेहारों के निमित ताड़ना थी झूठी बात बनाई हुई नहीं थी बरन उनको जो उनसे पहिले हैं सिद्ध करती है और हर वस्तु को सिद्ध करती है जो लोग विश्वास लाए हैं उनके निमित शिक्षा और दया है॥

१३ सूरए रअद (कड़क) मक्की रुकू ६ आयत ४३।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) अ् ल् म्-यह पुस्तक की आयतें हैं और जो तुझपर तेरे प्रभु की ओर से उतरा सत्य है परन्तु बहुतेरे मनुष्य विश्वास नहीं लाते। (२) ईश्वर वह है जिसने आकाशों को ऊंचा किया बिना ऐसे खंभों के कि तुम उनको देख सको फिर स्वर्गपर स्थिर हुआ और सूर्य्य और चंद्रमा को वश में किया उनमें से प्रत्येक अपने नियत समय को चलता है और प्रत्येक कार्य्य का प्रबन्ध करता है और चिन्हों को निर्णय करता है जिसतें तुम अपने प्रभु से मिलने को निश्चय जानो। (३) और वही है जिसने पृथ्वी को फैलाया उन में पहाड़ और धाराएं बहाईं और प्रत्येक फलकी दोदो भांति पृथ्वी से उत्पन्न करदीं वह रात्रि को दिवस से ढांकता है उनमें उन लोगों के निमित चिन्ह हैं जो चिन्ता करने हारे हैं। (४) इसमें टुकड़े एक दूसरे के तीर तीर और दाख की बारीं और खेती और खजूर के पेड़ कोई कोई जड़ मिले हुए और कोई कोई बेमिले वह दोनों एकही पानी से सींचे जाते हैं और हम किसी को किसी पर स्वाद में बढ़ाई देते हैं निस्सन्देह इस में उन लोगों के निमित चिन्ह हैं जो बुद्धि रखते हैं। (५) और यदि तू आश्चर्य्य करे तो उन लोगों का यह कहना अद्भुत है कि क्या

जब हम धूर होजायंगे तो क्या फिर नए सिरे से उत्पन्न किए जायंगे । (६) वही वह लोग हैं जो अपने ईश्वर से मुकर गए और यही वह लोग हैं जिनकी ग्रीवा में पट्ट होंगे और यही लोग अग्नि में पड़नेहारे हैं और वह सदा उस में रहेंगे। (७) और तुझसे शीघ्र * मांगते हैं बुराई को भलाई से पहिले और निस्सन्देह उनसे पहिले ऐसे दृष्टान्त हो चुके हैं निस्सन्देह तेरा प्रभु लोगों को उनके पाप करने पर भी क्षमा करता है निस्सन्देह तेरा प्रभु कठिन दण्ड करनेहारा है। (८) और जो लोग मुकरते हैं और कहते हैं क्यों न इसपर कोई चिन्ह भेजा गया उसके प्रभु की ओर से तूतो डराने हारा है और हर जाति के निमित शिक्षा करने † हारा है ॥

रु० २—(९) ईश्वरही को ज्ञान है जो कुछ हर नारी उठाए ‡ हुए है और जो कुछ गर्भ में घटा देते हैं और जो कुछ बढ़ा देते हैं हर वस्तु उसके निकट माप से है। (१०) वह गुप्त और प्रगट का जानने हारा है और सब से बड़ा और महान है। (११) क्या एक समान है तुममें जो कोई चुपके से बात करे और जो कोई पुकार कर कहे जो छिपा बैठाहो रात को अथवा दिन के समय चला जा रहा हो। (१२) प्रत्येक के निमित पीछा § करनेहारे हैं उसके आगे और उसके पीछे और उसकी रक्षा करते हैं ईश्वर की आज्ञा से निस्सन्देह ईश्वर नहीं बदलता वह दशा जो किसी जाति की हो जब लो वह बदल न लें जो कुछ उनके हृदयों में है और जब ईश्वर किसी जाति की बुराई चाहे तो वह हट नहीं सकती और उनका उसके उपरान्त कोई सहायक नहीं। (१३) वह वही है जो तुम को बिजली दिखाता है डराने और आशा दिलाने को और वही भारी मेघों को उठाता है। (१४) और कड़क उसकी स्तुति ¶ करती है और दूत भी उसकेभय से वही भेजता है बिजली की लपटें और उनसे पकड़ लेता है जिसे वह चाहता है फिर भी वह ईश्वर के विषय में झगड़ते हैं परन्तु पकड़ दृढ़ है। (१५) उसी को पुकारना उचित है और वह जो उस के उपरांत दूसरों को पुकारते हैं उन्हें कोई उत्तर न दिया जायगा परन्तु जैसे कोई अपने हाथ पानी की ओर फैलाए जिसतें

---

* हारिस का पुत्र नज़र बहुधा कहा करता था कि जिस दण्ड से डराया जाता है वह आ क्यों नहीं जाता।
† अर्थात जाति ही में से एक मनुष्य।　　‡ अर्थात हर स्त्री के गर्भ में है।　　§ अर्थात रक्षक दूत ॥

¶ रबिया का पुत्र लबेद अमरी के भाई अरींद ने जो तफील के पुत्र आमिद को अपने संग महम्मद साहब को घात करने के निमित लाया था उसने उनसे पूछा *कि अपने प्रभु का कुछ बृत्तान्त सुनाओ कि यह* किस वस्तु का बना है चांदी सोने का अथवा कांसे का अथवा लोहे का उसी समय आकाश से बिजली गिरी और उसको नाश कर दिया और आमिर को ताड़न होगया ॥

वह उसके मुंह में पहुंचजाय परन्तु यह नहीं पहुंचेगा अधर्मियों की सब पुकार भटकना है। (१६) और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है वश विवश ईश्वर ही को दण्डवत करते हैं और उनकी परछाईं भोर और सांझ। (१७) पूछ आकाशों और पृथ्वी का प्रभु कौन है कहदे कि ईश्वर है कहदे सो क्या तुमने उसके उपरान्त सहायक बनारखे हैं जो अपनी हानि और लाभ के भी अधिकारी नहीं कहदे क्या अंधा और सुभाका समान हो सकता है क्या अंधकार और ज्योति समान ठहर सकते हैं अथवा उन्होंने ईश्वर के ऐसे साभी ठहरा रखे हैं जिन्होंने उत्पन्न किया है जैसा वह उत्पन्न करता है ऐसा कि उनकी दृष्टि में सृष्टि गड़बड़ होगई कहदे हर वस्तु का रचने हारा ईश्वर है और वही अकेला बली है। (१८) उसने आकाश से जल उतारा फिर उससे वह निकलीं नदीं अपने अपने अटकल अनुसार फिर उठाए भाड़ीने फेन जो ऊपर आगए और वह जो अग्नि में गहने अथवा और दूसरी वस्तुएं तपाते हैं उसमें भी वैसे ही फेन हैं ऐसे ही ईश्वर सत्य और असत्य का दृष्टान्त वर्णन करता है वह फेन चीण होजाता है और जो लोगों के अर्थ आता है वह पृथ्वी पर ठहरा रहता है ऐसेही ईश्वर दृष्टान्त वर्णन करता है जिन्हों ने अपने प्रभु का कहा माना उनके निमित भलाई और जिन्हों ने उसका कहा न माना यदि उनके निकट जो कुछ पृथ्वी में है सबका सब और इतनाही उसके साथ और भी हो तो यह लोग अपने बदले में उसको देडालें उनके निमित कठिन लेखा है और उनकी ठौर नर्क है और वह बुरा ठौर है।

रु० ३—(१९) भला जो मनुष्य इस बात को जानता है कि जो कुछ तुझ पर तेरे प्रभु की ओर से उतरा यथार्थ है उस मनुष्य के समान है जो दृष्टि विहीन है सो वही लोग शिक्षित होते हैं जो बुद्धिवान हैं। (२०) जो ईश्वर के नियम को पूरा करते और नियम को नहीं तोड़ते। (२१) और वह जो मिलाते हैं जिनके मिलाप * रखने की ईश्वर ने आज्ञा की है और अपने प्रभु से डरते हैं और लेखेकी टेढ़ाई का भय रखते हैं। (२२) वह लोग जिन्होंने धीरज किया अपने प्रभुकी प्रसन्नता चाहने को और प्रार्थना स्थिर रखी और हमारे दिए में से व्यय करते हैं गुप्त और प्रगट भलाई से बुराई को मेटते हैं यही लोग हैं जिनके निमित अन्त का घर है। (२३) उसमें सदा रहने को बैकुण्ठ हैं उसमें वह जायँगे और उनके पुरुखाओं और स्त्रियों और सन्तानों में से जो भलाई करने हारे हुए और दूत हर द्वारे से उनके निकट आयँगे। (२४) इसके सन्ती तुम्हारी कुशल हो कि तुमने धीरज

* अर्थात नाते. जान पड़ता है कि इसका यही तात्पर्य है कि जिसको ईश्वर ने जोड़ा उसे कोई न तोड़े।

किया सो भला मिला अन्त का घर। (२५) वह जो ईश्वर का नियम दृढ़ किए उपरान्त तोड़ते हैं और काटते हैं जिसके जोड़ने की आज्ञा ईश्वर ने दी और देशमें उपद्रव करते हैं यही लोग हैं जिनके निमित ईश्वर का श्राप है और उनके निमित बुरा घर है (२६) ईश्वर जिसको चाहता है जीविका बढ़ा देता है अथवा उसे घटा देता है और वह इस संसारिक जीवन में प्रसन्न हैं संसारिक जीवन कुछ नहीं अन्त के दिन की अपेक्षा परन्तु तुच्छ * वस्तु ॥

रु० ४—(२७) अधर्म्मी कहते हैं कि उस पर कोई चिह्न क्यों न उतरा उसके प्रभु की ओर से कहदे ईश्वर ही भटका देता है जिसे चाहता है और उसको जो फिरता है अपना मार्ग दिखाता है। (२८) और जो विश्वास लाए उनके हृदय ईश्वर के स्मर्ण से शान्ति पाते हैं हां ईश्वर की चर्चा से उनके हृदय आनन्द पाते हैं और जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित सुदशा है और उत्तम ठिकाना है। (२९) ऐसे ही हमने तुझको एक जाति के समीप भेजा कि बीत चुकी हैं उससे पहिले बहुत सी जातिएँ जिस्तें तू उनपर पढ़ सुनाए जो हमने तेरी ओर प्रेरणा की है वह रहमान † से मुकरते हैं कहदे वही मेरा प्रभु है उसको छोड़ कोई देव नहीं मैंन उसी पर भरोसा किया है और मैं उसीकी ओर फिरता हूँ। (३०) और यदि कोई कुरान ऐसा होता कि उससे पहाड़ चला ‡ दिए जाते अथवा पृथ्वी काटदी जाती अथवा मृतकों से वार्ता करादी जाती वरन ईश्वर के हाथ में सब कार्य्य हैं क्या विश्वासियों को जान नहीं पड़ा कि यदि ईश्वर चाहता तो सब लोगों को शिक्षा कर देता। (३१) और अधर्म्मियों को सदा उनके किए पर विपति पहुंचती रहेगी अथवा उनके घरके समीप आ उतरेगी यहां लो कि ईश्वर की प्रतिज्ञा उपस्थित हो निस्सन्देह ईश्वर प्रतिज्ञा भंग नहीं करता ॥

रु० ५—(३२) तुझसे पहिले भी प्रेरितों की हँसी कीगई फिर मैंने उनको जो अधर्म्मी हुए अवसर दिया फिर उनको घेर पकड़ा, फिर कैसा था मेरा दण्ड। (३३) भला जो प्रत्येक मनुष्य की क्रिया की सुधि रखता है और उन्होंने ईश्वर

---

* सूरए तौबा ३८। † जब साक्षी ठहरानेहारों से कहा जाता था कि रहमान को दण्डवत करो वह बोले कि हम तो रहमान को जानते ही नहीं इस पर यह आयत सन ६ हिजरी में उतरी देखो बनी इसराएल १०९। ‡ एक बार कुरेश ने महम्मद साहब से आकर कहा कि यदि हमको आपके मत का अनुयाई किया चाहते हो तो हमारे निमित इतने कार्य्य करो १ मक्का के पर्वतों को चला दो जिस्ते वह हट कर दूर होजायं और हमारे निमित खेतीवाड़ी के निमित खुली भूमि होजाय दूसरे पवन को वश में करो कि हम शाम देश में यात्रा करके व्यापार करें तीसरा हमारे पुरुखों में से किसी को जीवत करदो कि हम उनसे वार्तालाप करके तुम्हारा सत्यवादी होना जानलें

के साझी ठहराए कह उनके नाम तो लो अथवा तुम उससे ईश्वर को जताते हो जो वह नहीं जानता है पृथ्वी में अथवा यह ऊपरी बातें बनाते हो अधर्मियों के निमित्त उनका छल भला करके दिखा दिया गया मार्ग से रोके गए हैं जिसको ईश्वर भटकावे उसके निमित कोई मार्ग बताने हारा नहीं है। (३४) उनके निमित संसार के जीवन में दण्ड है और अन्त के दिनका दण्ड तो बहुत ही कठिन है और उनको कोई ईश्वर से बचानेहारा नहीं है। (३५) वैकुण्ठ का वृत्तान्त जिसकी प्रतिज्ञा संयमियों के निमित की गई है यह है उनके नीचे धाराएं बहती हैं उसके फल और उसकी छांह सदा की है जो संयमी हैं उनका यह फल है और अधर्मियों का अन्त अग्नि है। (३६) और जिनको हमने पुस्तकदी है वह उससे प्रसन्न होते हैं जो तेरी ओर उतारा गया है और कोई कोई जातिएं उसकी किसी किसी बातसे मुकरती हैं कहदे मुझको यही आज्ञा हुई है कि ईश्वर की सेवा करूं और उसका साझी न ठहराऊं मैं उसीकी ओर बुलाता हूं और उसीकी ओर मुझे फिर जाना है। (३७) और हमने ऐसेही एक आज्ञा उतारी अरबी में और यदि तू उनकी अभिलाषाओं का अनुयायी हुआ उसके पीछे कि तेरे पास ज्ञान आचुका तो ईश्वर के सन्मुख तेरा न कोई सहायक है न बचाने हारा है॥

रु० ६—(३८) और हमने तुझ से पहिले बहुतेरे प्रेरित भेजे और हमने उन को पत्नियें* और सन्तान दिईथीं और कोई प्रेरित चिन्ह नहीं ला सका केवल आज्ञा के हर समय के निमित एक लेख है (३९†) ईश्वर जो चाहता है मिटा देता है और जो चाहे रख छोड़ता है और उसके निकट पुस्तकों की माता है। (४०) यदि हम तुझको कोई वाचा प्रगट करदें जो हम उन से करते हैं अथवा तुझको मृत्यु देदें परन्तु तेरा कार्य्य केवल संदेश पहुंचा देना है और लेखा लेना हमारा कार्य है। (४१) क्या वह यह नहीं देखते कि हम पृथ्वी को सब ओर से घटाते हुए चले आते हैं और ईश्वर आज्ञा करता है और कोई उसकी आज्ञा को पीछे फेरने हारा नहीं और वह शीघ्र लेखा लेने हारा है। (४२) निस्सन्देह उन्होंने [illegible] इन से पहिले थे छल किया ईश्वर के हाथ में सब छल है और जो कुछ प्रत्येक [illegible] कमा रहा है वह जानता है और अधर्मी शीघ्र जान लेंगे कि अन्त का घर [illegible]सका है (४३) यह लोग जो अधर्मी बने कहते हैं कि तू भेजा हुआ नहीं है कह दे मेरे और तुम्हारे बीच ईश्वर साक्षी बस है।

---

* लोग महम्मद साहब के विषय में कहा करते थे कि इनको पत्नियों का अधिक अनुराग रहता है इस पर यह आयत उतरी। † लोग ने महम्मद साहब से कहा था कि तुम्हारे अधिकार में तो कुछ भी नहीं जो होना था सो होचुका॥

१४ सूरए इबराहीम मक्की रुकू ७ आयत ५२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १ मलरा. (१) यह पुस्तक जो हमने तुझ पर उतारी जिस्तें तू लोगों को उनके प्रभुकी आज्ञा से अंधकार से निकालकर प्रकाश में ले आवे और उसके मार्ग की ओर जो बली और महिमा योग्य हैं। (२) ईश्वर ही है जिसका है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है और अधर्मियों पर कठिन दण्ड का शोक हैं। (३ जिन्हों ने संसार के जीवन को अन्त के दिनकी अपेक्षा ग्रहण किया है और ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं और उस में टेढ़ाई करने का प्रयत्न करते हैं यही अत्यन्त भटकना में हैं। (४) हमने कोई प्रेरित नहीं भेजा केवल उसके कि वह अपने लोगों ही की भाषा * में बातें करता जिसतें उनको समझा दे फिर ईश्वर जिसको चाहता है भटकाता है और जिसको चाहता है शिक्षा करता है वह बलवान बुद्धिवान है। (५) और हमने मूसा को अपने चिन्ह देकर भेजा कि अपनी जाति को अंधयारों से ज्योति की ओर निकाल ले जाय और ईश्वर के दिनों † का स्मर्ण कराए निस्सन्देह उनमें चिन्ह हैं प्रत्येक धीरजवान और धन्यवादी के निमित। (६) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा ईश्वर के उपकार अपने ऊपर स्मर्ण करो जब तुमको फिराऊन के लोगों से छुड़ाया जो तुमको बड़ा दुख देते थे तुम्हारे पुत्रों को मारडालते थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीता छोड़ते थे इस में तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम्हारे निमित बड़ी परिक्षा थी।

रु० २—(७) जब तुम्हारे प्रभु ने सचेत कर दिया कि यदि तुम गुणानुवाद करोगे तो मैं तुमको और अधिक दूंगा और यदि कृतघ्नता की तो मेरा दण्ड कठिन है। (८) और मूसाने कहा यदि तुम अधर्मी होजाओ तुम और वह सब मिलकर जो पृथ्वी में हैं ईश्वर तो निश्चिन्त और महिमा योग्य है। (९) क्या तुम नहीं जानते उनको जो तुम से पहिले थें नूह की जाति आद और समूद की। (१०) और जो उनके पीछे हुए उनका ज्ञान ईश्वर ही को है उनके निकट उनके प्रेरित चिन्ह लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ मुहों में करलिए और बोले हम नहीं मानते जो तुम्हारे हाथ भेजा गया और हम बड़े सन्देह में पड़े हुए हैं उसके बिषय में जिसकी ओर तुम हमको बुलाते हो। (११) उनके प्रेरितों ने कहा क्या

---

* कुरेश कहते थे कि क्यों कुरान किसी और भाषा में नहीं आया इस पर यह आयत उतरी।
† अर्थात जब ईश्वर ने इसराएल सन्तान को उनके शत्रुओं पर विजयी किया॥

ईश्वर में सन्देह है जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया वह तुम को बुलाता है जिस्तें तुम्हारे पाप क्षमा करदे और तुमको एक नियत समयलों रहनेदे (१२) बोले तुम कुछ और नहीं हो केवल इसके कि हमारी नाई मनुष्य चाहते हो कि हमको उससे रोक दो जिनको हमारे पुरुखा पूजते थे सो हमारे तीर कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ। (१३) उनके प्रेरितों ने उनसे कहा हम और कुछ नहीं हैं परन्तु तुम्हारे जैसे मनुष्य परन्तु ईश्वर उपकार करता है अपने दासों में से जिस पर चाहे और हमारा कार्य नहीं कि तुम्हारे तीर कोई प्रमाण ले आवें (१४) केवल ईश्वर की आज्ञा के विश्वासी ईश्वर पर भरोसा रखें। (१५) और हमको क्या हुआ कि हम ईश्वर पर भरोसा न करें यदपि वह हमको हमारे मार्ग समझा चुका है और तुम्हारे दुःख पर हम धीरज करेंगे ईश्वर पर भरोसा करना भरोसा करनेहारों को उचित है॥

रु० ३—(१६) और कितनों ने जो अधर्मी हुए अपने प्रेरितों से कहा कि हम तुमको अवश्य निकाल देंगे अपनी भूमि से अथवा हमारे मत में पलट आओ फिर उनके प्रभु ने उन पर प्रेरणा की। (१७) कि हम दुष्टों को अवश्य नाश करेंगे और हम तुमको बसायंगे उनके पीछे इस भूमि में यह उनके निमित है जो मेरे सन्मुख खड़ा होने से डरा और जो मेरे दण्ड से डरता है। (१८) और उन्होंने विजयचाही और प्रत्येक विरोधी हठ करनेहारा निराश रहा। (१९) उनके पीछे नर्क है और उसको राधका पानी पिलाया जायगा। (२०) उसको घूंट पर घूंट पियेगा और गले से नहीं उतार सकेगा और उन पर हर स्थान से मृत्यू चली आती है और वह नहीं मरता और उसके पीछे कठिन दण्ड है उनका दृष्टान्त जो अपने प्रभु से मुकरे ऐसा है कि उनकी क्रिया जैसे राख है जिस पर प्रचण्ड वायु चले आंधी के दिन अपने किए हुए में से उनके कुछ हाथ न आयगा यही अत्यन्त भ्रमणा है। (२२) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश और पृथ्वी को यथार्थ † उत्पन्न किया यदि चाहे तो तुमको लेजाय और नवीन सृष्टि को लेआवे। (२३) और यह ईश्वर पर कुछ कठिन नहीं। (२४) और ईश्वर के सन्मुख सब उपस्थित होंगे फिर निर्बल लोग कहेंगे उन लोगों से जो अभिमानी थे कि निस्सन्देह हम तो तुम्हारी आज्ञा में थे क्या तुम अब हम पर से ईश्वर के दण्ड में से कुछ हटा सकते हो। (२५) वह कहेंगे यदि ईश्वर हमको शिक्षा करता तो हम तुमको शिक्षा करते अब हम पर समान है चाहे तड़पा करें अथवा धीरज धरें हमारे निमित छुटकारे का कोई ठौर नहीं॥

---

* सूरए यूनस ५॥

रु० ४—(२६) और दुष्टात्मा कहेगा कि जब कार्य्य चुक जायगा निस्सन्देह ईश्वर ने तुमसे सत्य प्रतिज्ञा की थी और मैंने भी तुमसे प्रतिज्ञा की थी सो प्रतिज्ञा भंग करने की मेरी तुम पर कुछ बरियाई तो थी ही नहीं। (२७) परन्तु मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरा कहा मान लिया सो मुझे दोष न दो दोष दो अपने आपको न मैं तुम्हारी पुकार को पहुँच सकता हूं और न तुम मेरी पुकार को पहुंच सकते हो मैंने अधर्म्म किया उससे कि साझी किया तुमने मुझको इससे पहिले निस्सन्देह जो दुष्ट हैं उनके निमित दुख दायक दण्ड है। (२८) विश्वासी और जितनों ने सुकर्म्म किए बैकुण्ठों में प्रवेश पावेंगे जिनके नीचे धाराएं बहती हैं अपने प्रभुकी आज्ञा से सदा उसमें रहेंगे उस ठौर परस्पर उनकी कुशल की प्रार्थना और प्रणाम है। (२६) क्या तू नहीं देखता कि ईश्वर कैसे दृष्टान्त वर्णन करता है पवित्र वचन मानो एक अच्छा पेड़* है जिसकी जड़ दृढ़ है और उसकी डालिएं आकाश में हैं। (३०) अपना फल अपने प्रभु की आज्ञा से हर समय देता है ईश्वर लोगों को दृष्टान्त बताता है जिस्ते बूझें। (३१) और अशुद्ध वचन का दृष्टान्त बुरे पेड़ कासा है कि पृथ्वी पर से उखाड़ फेंका गया और उसकी कुछ दृढ़ता नहीं। (३२) ईश्वर विश्वासियों को स्थिर रखता है दृढ़ वचन से संसार के जीवन मे और अन्त के दिनमें और ईश्वर दुष्टों को भटकाता है और ईश्वर जो चाहता है करता है॥

रु० ५—(३३†) क्या तूने उनकी ओर नहीं देखा जिन्हों ने ईश्वर के वरदान का बदला कृतघ्नता से दिया और अपनी जाति को विनाश के घर में उतारा। (३४) नर्क में कि वह उसमें प्रवेश होंगे वह बुरा ठौर है। (३५) उन्हों ने ईश्वर के निमित साझी ठहराये जिस्तें कि उसके मार्ग से भटकावें कहदे लाभ उठालो निस्सन्देह फिरतो तुमको अग्नि की ओर जाना है। (३६) मेरे दासों से कहदे जो विश्वास लाए हैं कि प्रार्थना को स्थिर रखें और हमारी दी हुई जीविका में से व्यय करते रहें गुप्त और प्रगट उससे पहिले कि वह दिन आए कि जिसमें न बेचना है न मित्रता। (३७) ईश्वर ही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और आकाश से पानी उतारा फिर लगाए उसके द्वारा फल कि वह तुम्हारी जीविका है और नौकाओं को तुम्हारे अधिकार में कर दिया जिसतें उसकी आज्ञा से समुद्र में चलें और नदियों को तुम्हारे वश में कर दिया और सूर्य्य और

* स्तोत्र १. । † बदर के संग्राम में अधर्म्मियों के विरुद्ध यह आयत उतरी॥

चन्द्रमा को तुम्हारे वश में कर दिया सदा परिक्रमा करनेहारे और दिन और रात्रि को तुम्हारे वश में कर दिया और तुमको हर वस्तु में से दिया जो तुम ने मांगा यदि तुम ईश्वर के वरदानों की गिन्ती करो तो पूरी गिन्ती न कर सकोगे निस्सन्देह मनुष्य दुष्ट और कृतघ्न है ॥

रु० ६—(३८) और जब इबराहीम ने कहा कि हे मेरे प्रभु इस नग्र * को शान्ति का ठौर करदे और मुझको और मेरी सन्तान को बचा कि मूर्तों को न पूजने लगें। (३६) हे मेरे प्रभु निस्सन्देह उन्हों ने बहुतों को भटका दिया मनुष्यों से जो मेरा अनुयाई हुआ वह तो मेरा है और जो मेरा अनुयाई न हुआ निस्सन्देह तू क्षमा करने हारा और दयालु है। (४०) हे हमारे प्रभु मैंने अपनी कुछ सन्तान बनमें बसाई जहां खेती नहीं तेरे पवित्र घरके निकट हे मेरे प्रभु जिस्तें यह प्रार्थना को स्थिर रखें फिर लोगों में से थोड़े हृदय ऐसे करदे कि उनकी ओर फिरें और उनको फलों की जीविका दे कि कदाचित वह गुणानुवाद करें। हे हमारे प्रभु तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम प्रगट करते हैं और ईश्वर पर कोई वस्तु छिपी नहीं रहती पृथ्वी में न आकाश में सब स्तुति ईश्वर ही के निमित है जिसने मुझको बृधापन में इसमाईल और इज़हाक दिए निस्सन्देह मेरा प्रभु प्रार्थना का सुनने हारा है। (४२) हे प्रभु मुझको प्रार्थना में स्थिर रख और मेरी सन्तान में से भी हे मेरे प्रभु मेरी प्रार्थना ग्रहण कर हे हमारे प्रभु मुझको और मेरे माता पिता को और सब विश्वासियों को क्षमा कर जिस दिन लेखा स्थिर हो ॥

रु० ७—(४३) और बिचार न कर कि ईश्वर अचेत है उन कामों से जो दुष्ट कररहे हैं सो उनको ईश्वर उस दिन लों अवसर देरहा है जब उनकी आंखें देखती की देखती रहजायंगी। (४४) अपने सिर उठाए हुए दौड़ते होंगे और उनकी दृष्टि उनकी ओर न लौटेगी और उनके हृदय उड़जायंगे मनुष्यों को उस दिन से डरा कि उन पर दण्ड आपड़ेगा। (४५) तब दुष्ट लोग कहेंगे कि हे हमारे प्रभु हमको थोड़े समय का अवसर दे। (४६) कि हम तेरा निमंत्रण मानलें और प्रेरितों के अनुयाई हों क्या तुम इससे पहिले किरिया नहीं खाया करते थे कि तुम्हारे निमित कोई घटती नहीं। (४७) तुम उन्ही के घरों में बसे थे जिन्होंने अपने ऊपर अनीति की थी और तुम पर प्रगट होचुका था कि हमने उनके साथ कैसा किया था और हमने तुम्हारे निमित दृष्टान्त वर्णन कर दिए

---

* अर्थात मक्का को।

और यह अपना छल करते रहे और ईश्वर के तीर उनका छल है यदि उनका छल था कि उससे पर्व्वत टर जाएं। (४८) ऐसा विचार न करना कि ईश्वर अपने प्रेरितों से वाचा के विपरीति करेगा निस्सन्देह ईश्वर बली और पलटा लेनेहारा है। (४९) जिस दिन पृथ्वी बदलदीजायगी और पृथ्वी से और आकाश भी और एक बली और अकेले ईश्वर के सनमुख जायंगे। (५०) और तू देखेगा उस दिन पापियों को साकरों में जकड़े हुए। (५१) उनके वस्त्र गंधक* अथवा रार के होंगे और उनके मुहों को अग्नि छिपालेगी जिसतें कि ईश्वर हर प्राणी को उसके किए का फल दे और ईश्वर शीघ्र लेखा लेनेहारा है। (५२) लोगों को यह संदेश देना है और जिसतें उनको उसके द्वारा डराया जाय और जिस्तें सब जानलें कि बस वही एक ईश्वर है जिस्तें बुद्धिवान लोग शिक्षित हों॥

१५ सूरए हजर† (पत्थर) मक्की रुकू ६ आयत ९९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—अलरा. (१) यह आयतें पुस्तक और ज्योतिमय कुरान की हैं। (२) जो अधर्म्मी हैं वह आश करेंगे कि आह वह मुसलमान होते॥

पारा.१४ (३) उनको छोड़दे कि वह खालें और लाभ उठालें और आशा किए हुए भूले रहें फिर आगे चलके उन्हें जान पड़ेगा। (४) हमने किसी बस्ती को नाश नहीं किया इसके उपरान्त कि उसका लिखा ठहराया हुआ था। (५) कोई जत्था अपने समय से आगे बढ़ती और न पीछे रहसकती है। (६) परन्तु वह कहते हैं कि हे तू कि जिस पर शिक्षा उतरी है निस्सन्देह तू बौड़हा है। (७) क्यों हमारे पास दूत नहीं लेआता यदि तू सत्यवादियों में है। (८) हम दूत नहीं उतारा करते परन्तु सत्य के साथ और उनको उस समय अवसर न दिया जायगा। (९) निस्सन्देह हमने शिक्षा उतारी है निस्सन्देह हमहीं उसके रक्षक हैं। (१०) और हम तुझसे पहिले अगली जत्थाओं में प्रेरित भेजचुके हैं। (११) और उनके समीप कोई प्रेरित नहीं आया परन्तु उन्होंने उसके संग हंसी की। (१२) हम पापियों के हृदय में इसी भांति इसको बैठाय देते हैं। (१३) वह उस पर बिश्वास नहीं लाते इसी भांति अगलों का व्यवहार चला आता है।

---

* अरबी भाषा में कितरान। † यह मदीना और सूरिया के बीच में एक घाटी है जो समूदवालों की बस्ती थी॥

(१४) यदि हम उन पर स्वर्ग से एक द्वार खोलदें और यह लगातार उसी में चढ़ते रहें। (१५) तबभी यही कहेंगे कि हमारे नेत्रों में दिठबंदी की है और हम टोना किए हुए लोग हैं ॥

रु० २—(१६) और हमने स्वर्ग में राशि चक्र बनाए हैं और उनको देखने हारों के निमित सिंगारा है। (१७) और हमने उनकी रक्षा की स्रापित दुष्टात्मा से (१८) परन्तु जो चोरी से सुन * गया उस के पीछे टूटता हुआ तारा † पड़ा। (१९) और हमने उनको बिथराया और उस में पर्वत डाल दिए और हमने उस में हर बस्तु यथोचित नाप से उगाई। (२०) और तुम्हारे निमित उस में जीविका बनादी और उनके निमित जिन्हें तुम जीविका नहीं देते। (२१) और कोई बस्तु नहीं परन्तु हमारे तीर सब के भण्डार हैं और हम उनको उतारते हैं ठहराए हुए अटकल से। (२२) और हमने बोझिल ‡ पवन बहाए फिर हमने आकाश से उतारा तुम को उस से पिलाया और तुम उसका भण्डार न रखते थे। (२३) निस्सन्देह हमही मारते और जियाते हैं और हमहीं उस के अधिकारी हैं। (२४) और निस्सन्देह हम जानते हैं तुम में से अगलों § को और हम जानते हैं तुम में से पिछलों को। (२५) और निस्सन्देह तेरा प्रभु उन सब को इकत्र करेगा निस्सन्देह वह बुद्धिवान और जानने हारा है ॥

रु० ३—(२६) और हमने मनुष्य को खनखनाते और काले गारे के गोंदे से बनाया। (२७) और हमने जिन्नों को पहिले अग्नि की तप्त पवन से उत्पन्न किया। (२८) और जब तेरे प्रभु ने दूतों से कहा कि मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने हारा हूं खनखनाते काले गारे के गोंदे से। (२९) और जब मैं उसे बना चुकूं और उस में आत्मा फूंक दूं तो तुम उस के आगे दण्डवत में गिर पड़ना। (३०) तब सब दूतों ने दण्डवत की एक साथ। (३१) ¶ परन्तु इबलीस ने नाह की और दण्डवत करने हारों में से होके मुकर गया। (३२) उस से कहा हे इबलीस तुझे क्या हुआ कि तू दण्डवत करने हारों में न हुआ। (३३) बोला कि मैं ऐसे जन को दण्डवत न करूंगा कि जिस को तूने खनखनाते काले गारे के गोंदे से उत्पन्न किया। (३४) कहा अच्छा निकल यहां से निस्सन्देह तू स्रापित है। (३५) और तुझ पर पुनरूत्थान के दिन लों स्राप है। (३६) उस ने कहा हे मेरे प्रभु मुझको

---

* सूरए साफ़ात ८। † अर्थात उल्का। ‡ अर्थात ऐसी बयार जिससे मेघ उठें और बर्षा हो और पृथ्वी फल फूल से सुसज्जित हो। § अगलों और पिछलों का अभिप्राय उन लोगों से है जो ब्यतीत हुए और जो आनेहारे हैं। ¶ बकर ३२ यह प्रश्नोत्तर ऐयूब और ईश्वर के प्रश्नोत्तर के समान है॥

उस दिन लों अवसर दे जब कि यह फिर उठाए जायं। (३७) कहा निस्सन्देह तुझको अवसर दिया गया। (३८) नियत समय के दिन लों। (३९) बोला हे मेरे प्रभु जैसा तूने मुझे मार्ग से भटकाया मैं भी उन सब को पृथ्वी की शोभाएं दिखाकर भटकाऊंगा। (४०) केवल तेरे उन दासों के जो विशेष तेरे हैं। (४१) कहा यही मार्ग मुझ लों सीधा है। (४२) निस्सन्देह जो मेरे दास हैं उन पर तेरा कुछ वश नहीं परन्तु हां जो तेरे पीछे होलें वह भटके हुओं में हैं। (४३) और निस्सन्देह नर्क उन की प्रतिज्ञा का ठौर है। (४४) उस के सात द्वार हैं और प्रत्येक द्वार के निमित उन में से एक भाग बांटा गया है॥

रु० ४—(४५) जो लोग संयमी हैं बैकुण्ठों और सोतों में होयंगे। (४६) कि उस में कुशल से प्रवेश करो। (४७) और उन के हृदयों में जो कुछ खोट होगा हम निकाल लेंगे भाई भाई होकर सिंहासनों पर साम्हने साम्हने बैठे हुए। (४८) वहां उन्हें कोई दुख न छुएगा न वह वहां से निकाले जायंगे। (४९) मेरे दासों को संदेश दे कि मैं ही क्षमा करने हारा दयालु हूं। (५०) और निस्सन्देह मेरा दगड वही दुख दायक दण्ड है। (५१) उन्हें इबराहीम के पाहुनों का समाचार दे। (५२) जब उस के घर में चले आए तो कहा प्रणाम वह बोला हम को तो तुमसे भय जान पड़ता है। (५३) वह बोले भय न कर हम तुझ को एक बुद्धिवान बालक का सुसमाचार सुनाते हैं। (५४) वह बोला कि देख अब मुझको बुढ़ापा आ लगा क्या तौभी तुम मुझको सुसमाचार सुनाते हो। फिर अब काहे का सुसमाचार देते हो। (५५) उन्हों ने कहा हमने तुझको सत्य समाचार दिया हैं तू निराश मत हो। (५६) बोला अपने प्रभु की दया से केवल भटके हुओं के और कौन निरास होता है। (५७) बोला हे भेजे हुओ तुम्हारा क्या प्रयोजन * है। (५८) बोले निस्सन्देह हम एक पापी जाति की ओर भेजे गए हैं। (५९) लूत के कुटुम्ब को छोड़ के कि निस्सन्देह हम उस को बचा देंगे। (६०) केवल उसकी स्त्री के हमने ठहरा लिया है कि वह अवश्य पीछे रहजाने हारों में है॥

रु० ५—(६१) और जब वह भेजे हुए लूतकी सन्तान के निकट आए। (६२) बोला कि निस्सन्देह तुम लोग बे जाने पहचाने हो। (६३) वह बोले हम तो तेरे निकट उस वस्तु के संग आए हैं जिसमें वह सन्देह करते थे (६४) और तेरे निकट सत्य बात लाए हैं निस्सन्देह हम सत्य बोलने हारे हैं। (६५) अपने

* अर्थात कार्य्य॥

कुटुम्ब को कुछ रात रहे लेकर निकल चल और तू उनके पीछे चल और तुम में से कोई पीछे फिरकर न देखे और चले जाओ जहां की तुमको आज्ञा है। (६६) और हम अन्तिम प्रेरणा कर चुके उनकी ओर इस बातकी कि भोर होते ही वह जड़ामूल से नष्ट कर दिए जायंगे। (६७) और इस नग्र के लोग सहर्ष आ उपस्थित हुए। (६८) बोला *, कि यह मेरे पाहुने हैं मेरा अपमान न करो। (६९) ईश्वर से डरो और मेरी हंसाई न करो। (७०) वह बोले क्या हमने तुझको न बरजा था संसार के लोगों † से। (७१) वह बोला ‡ यह मेरी पुत्रियां हैं यदि तुमको कुछ करना § ही है। (७२) तेरे जीवन की सौंह निस्सन्देह वह अपने मतवाले पन में चूर थे। (७३) फिर उनको सूर्य उदय होते ही एक घोर शब्द ने पकड़ा। (७४) फिर हमने उस बस्ती को उलटपुलट कर डाला और उन पर कंगर के पत्थर बर्षाए। (७५) निस्सन्देह इसमें पहचाननेहारों के निमित चिन्ह हैं। (७६) और निस्सन्देह वह सदा के मार्ग पर है। (७७) निस्सन्देह इसमें विश्वासियों के निमित चिन्ह हैं। (७८) निस्सन्देह बन ¶ के रहने हारे भी हुए थे (७९) और हमने उनसे पलटा लिया निस्सन्देह वह दोनों $ खुले हुए मार्ग के साम्हने हैं॥

रु० ६—(८०) और हजर ** के बसनेहारों ने प्रेरितों को झुठलाया। (८१) और हमने उनको अपने चिन्ह दिए तो उन्हों ने उनसे मुहं फेर लिया। (८२) और पर्ब्बतों के भीतर निर्भय रहने के विचार से घर खोदते थे। (८३) तो उनको भोर होते ही एक घोर शब्द *† ने धर पकड़ा। (८४) फिर उनके अर्थ न आया जो वह उपार्जन करते थे। (८५) और हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उन दोनों में है उत्पन्न नहीं किया परन्तु सत्यता से निस्सन्देह पुनरुत्थान की घड़ी आनेहारी है तू क्षमा कर क्षमा करना भला है। (८६) निस्सन्देह तेरा प्रभु ही उत्पन्न करनेहारा और जाननेहारा है। (८७) और हमने तुझको सात *‡ आयतें जो बारंबार *§ पढ़ीजाती हैं और कुरान ऊंची पदवी का दिया है। (८८) अपनी आंखें उन वस्तुओं की ओर न लगा जो हमने उनमें कई भांति के लोगों के लाभार्थ दी हैं उन पर शोक न कर अपनी भुजा *¶ विश्वासियों के निमित झुका। (८९) कहदे मैं तो प्रत्यक्ष डरानेहारा हूं। (९०) जिस भांति हमने उतारा *$

---

* अर्थात लूत। † अर्थात अपनी जाति को छोड़ और से हेलमेल न रख। ‡ अर्थात लूत। § अर्थात कुकर्म्म। ¶ शएब की जाति अर्थात मिदयानी। $ अर्थात सदूम और मिदियान के लोग। ** अर्थात समूद की जाति। *† देखो आयत ७३। *‡ अर्थात सूरए फ़ातिहा जो नमाज़ में बार बार पढ़ी जाती है। *§ नकल। *¶ अर्थात उनसे नम्रता और भलाई का व्यवहार कर शोरा २२५ *$ अर्थात दण्ड॥

उन अलग करनेहारों * पर। (९१) जिन्होंने कुरान को टूक टूक कर दिया। (९२) कि तेरे प्रभु की सौंह हम अवश्य उन सबसे प्रश्न करेंगे। (९३) उसके विषय में जो वह करते थे। (९४) फिर उस वस्तु को खोल कर बतादे जिसकी तुझे आज्ञा दीजाती है और साझी ठहराने हारों से अलग होजा। (९५) तेरी ओर से हंसी करनेहारों के निमित निस्सन्देह हमही बस हैं। (९६) जो ईश्वर के साथ दूसरा दैव ठहराते हैं उनको आगे चलकर जान पड़ेगा। (९७) निस्सन्देह हम जानते हैं कि उनकी बातों से तेरा हृदय संकेत होता है। (९८) अपने प्रभु का जाप स्तुति के साथ कर और दण्डवत करनेहारों में हो और अपने प्रभु की अराधना कर यहांलों कि तुझको निश्चय † होजाय॥

---

१६ सूरए नह्ल (मधुमांखी) मक्की रुकू १६ आयत १२८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) ईश्वर की आज्ञा आई चाहती है उसके निमित शीघ्रता मत करो वह पवित्र और उससे उत्तम है जिसको उसका साझी ठहराते हैं। (२) वह दूतों को आत्मा सहित अपनी आज्ञा से अपने दासों में से जिस पर चाहे उतारता है इससे डरा कि मेरे उपरान्त कोई ईश्वर नहीं और मुझसे डरो। (३) आकाशों और पृथ्वी को यथार्थ उत्पन्न किया वह उनके साझी बनाने से उत्तम है। (४) और मनुष्य को वीर्य्य से उपजाया और वह प्रत्यक्ष बखेड़ा करने हारा होगया। (५) और उसने पशु उत्पन्न किए उनमें तुम्हारे निमित जड़ावर और बहुत से लाभ हैं और किसी को तुम खाते हो। (६) उनमें तुम्हारे निमित शोभा है जब सांझ को फेर लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो। (७) और तुम्हारे भार बस्तियों को लेजाते हैं कि तुम उनलों बिना कठिन परिश्रम के न पहुंच सकते तुम्हारा प्रभु बड़ी करुणा करने हारा और दयालु है। (८) घोड़ों को और खच्चरों को और गदहों को भी जिसतें कि तुम उनपर सवार हो शोभा के निमित और उत्पन्न करता है वह जिनको तुम नहीं जानते। (९) और ईश्वर पर सीधा मार्ग पहुंचा है और कोई मार्ग टेढ़ा भी है यदि ईश्वर चाहता तो तुम सबको शिक्षा करता॥

---

* जान पड़ता है कि यहूदियों और ख़ृष्टियानों के विषय में है कि उन्होंने पुस्तकों में अदलबदल करदी अथवा यह कि जिन्होंने कुरान के कुछ भाग को तों माना और कुछ का ख़ण्डन करदिया। † अर्थात मृत्यु आजाय॥

रु० २—(१०) वह वही है जिसने आकाश से पानी उतारा जिसमें से तुम्हारे पीने के निमित है और उससे पेड़ उपजते हैं जिसमें तुम चराते हो। (११) तुम्हारे निमित उससे उपजाता है खेती और जैतून और खजूर और दाख और हर प्रकार के फल निस्सन्देह इसमें चिन्ह हैं उन लोगों के निमित जो विचार करते हैं। (१२) और तुम्हारे निमित रात्रि और दिन को उपयोगी बनाया और सूर्य और चंद्रमा और तारे उसकी आज्ञा से कार्य्य में लगे हैं इसमें उनके निमित जो बुद्धि रखते हैं चिन्ह हैं। (१३) और जो कुछ पृथ्वी में तुम्हारे निमित उपजाया उनके रंग भिन्न भिन्न हैं इसमें उन लोगों के निमित जो विचार करते हैं चिन्ह हैं। (१४) वह है जिसने समुद्र को वश में किया जिससे तुम उसमें से टटका मांस खाओ और उसमें से आभूषण निकालो जो तुम पहरते हो और तू देखता है नौकों को कि उसको चीरती हुई चली जाती हैं जिस्से कि तुम उसका अनुग्रह ढूंढो जिस्से कदाचित तुम गुणानुवाद करनेहारे होओ। (१५) और पृथ्वी पर भार डाल दिए जिस्से कहीं ऐसा न हो कि पृथ्वी तुमको लेके झुक पड़े—और धाराएं और मार्ग जिस्से कि तुम शिक्षा पाओ। (१६) और बहुतेरे चिन्ह और तारों से भी मार्ग पाते हैं। (१७) क्या जो उत्पन्न करता है वह उसके समान है जो उत्पन्न नहीं कर सकता क्या फिर भी शिक्षित नहीं होते। (१८) और यदि तुम ईश्वर के उपकारों की गिन्ती करो तो उनको पूरा न गिन सकोगे निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१९) ईश्वर जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो तुम प्रगट करते हो। (२०) और जिनको वह ईश्वर के उपरान्त पुकारते हैं वह तो कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकते हैं वह आपही उत्पन्न किए जाते हैं। (२१) वह मृतक हैं जीवते नहीं और नहीं जानते। (२२) कि कब उठाए जायेंगे॥

रु० ३—(२३) तुम्हारा ईश्वर अकेला ईश्वर है जो लोग प्रतीत नहीं करते उन के हृदय अन्त के दिन से मुकरते हैं और वह अहंकारी हैं। (२४) निस्सन्देह ईश्वर जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ प्रगट करते हैं। (२५) निस्सन्देह वह अहंकारियों को नहीं चाहता। (२६) जब उन से कहा जाता है वह क्या है जो तुम्हारे प्रभु ने उतारा है तो कहते हैं कि प्राचीनों की बातांएं। (२७) जिस्से वह पुनरुत्थान के दिन अपने पापों का सम्पूर्ण भार उठावें और उन लोगों के पापों का भी जिन को वह बिना ज्ञान पाए भर्माते हैं बुरा है जो वह उठाते हैं॥

रु० ४—(२८) जो उन से पहिले थे उन्हों ने छल किया परन्तु ईश्वर की आज्ञा उनके घरों की नीओं * पर आ पहुंची फिर उन पर छत गिर पड़ी और उन पर दण्ड आया जिधर से उनको ज्ञान † भी न था। (२९) फिर पुनरुत्थान के दिन उन का उपहास करेगा और कहेगा कि कहां हैं वह मेरे साझी जिनके विषय में तुम झगड़ा किया करते थे और जिन को ज्ञान दिया गया था वह लोग बोल उठेंगे कि आज के दिन अधर्म्मियों का उपहास और दुर्दशा है। (३०) और जिनके प्राण दूत ऐसी दशा में निकालते हैं कि वह अपने आप पर अनीति कर रहे हैं—तो वह कुशल से रहने के निमित कहेंगे कि हम कुछ बुराई नहीं करते थे परन्तु ईश्वर भली भांति जानता है कि तुमने क्या किया। (३१) सो नर्क के द्वारों से प्रवेश करो और सदा इसमें रहो सो अभिमानियों का बुरा ठौर है। (३२) और कहा गया उन लोगों से जो संयमी हैं कि तुम्हारे प्रभु ने क्या उतारा वह बोले भलाई जिन्होंने इस संसार में भलाई की उनके निमित भलाई निस्सन्देह संयमियों के निमित अच्छा घर है। (३३) सदा के वैकुण्ठ हैं जिनमें वह जायंगे उनके नीचे धाराएं बहती हैं और वहां उनके निमित जो कुछ वह चाहें उपस्थित है संयमियों को ईश्वर ऐसाही प्रतिफल देता है। (३४) जिनके प्राण को दूत ऐसी दशा में निकालते हैं कि वह शुद्ध हैं उनसे कहते हैं तुम्हारी कुशल हो वैकुण्ठ में प्रवेश करो उसके बदले जो तुम करते थे। (३५) क्या यह उसी की बाट जोहते हैं कि उनके निकट दूत आवें अथवा तेरे प्रभु की आज्ञा आपहुंचे उनके प्राचीनों ने भी ऐसाही किया था उन पर ईश्वर ने अनीती नहीं की परन्तु वह अपने पर आपही अनीति करते थे। (३६) फिर उनको बुराइयां पहुंचीं उसकी सन्ती जो वह करते थे और उसने उनको घेर लिया जिस पर वह हंसते थे॥

रु० ५—(३७) और उन लोगों ने कहा जो साझी ठहराते थे कि यदि ईश्वर चाहता तो उसके उपरान्त किसी वस्तुको न पूजते न हम न हमारे पूर्व पुरुखा और न हम उसके बिना कोई वस्तु अपावन ठहराते इसी भांति उनके प्राचीनों ने किया था प्रेरितों का और कुछ कार्य्य नहीं परन्तु स्पष्ट रीति से पहुँचा देना ‡। (३८) और निस्सन्देह हमने हर जाति में एक प्रेरित भेजा कि ईश्वरकी अराधना करो और मूर्तों से अलग रहो तो उनमें से किसी किसी को ईश्वर ने शिक्षा की और किसी किसी पर भटकना प्रमाणिक हुई सो पृथ्वी में फिरो फिर देखो झुठलाने हारों का क्या अन्त हुआ। (३९) यदि तू अभिलाषा करे उनको

---

* अर्थात बुनियाद। † उत्पति ११ : १—१० ॥ ‡ अर्थात सँदेश ॥

मार्ग पर जाने की निस्सन्देह ईश्वर शिक्षा नहीं करता जिसको भटकाना चाहता और उनका कोई सहायक नहीं। (४०) यह ईश्वर की किरिया खाते हैं कठिन किरियाओं के साथ कि ईश्वर नहीं उठायगा * उसको जो मरजाय क्यों नहीं उस पर वाचा नियत होचुकी है परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते। (४१) जिस्तें उन पर उस बातको खोलदे जिसमें यह बिभेद करते थे जिस्तें अधर्मी लोग जानलें कि झूठे थे ॥

रु० ६—(४२) सो हमारा कहना जब हम किसी वस्तु की इच्छा करते हैं। यही है कि कहदें कि होजा तो वह होजाती † है। (४३) जिन लोगों ने ईश्वर के निमित देश त्यागा पश्चात इसके कि उन पर अनीति की गई निस्सन्देह हम उनको इस संसार में उत्तम ठौर देंगे और अन्त के दिन का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है यदि वह जानते। (४४) जिन लोगों ने धीरज किया और अपने प्रभु पर भरोसा रखते हैं। (४५) और तुझ से पहिले भी हमने नहीं भेजे थे परन्तु मनुष्य और उनकी ओर प्रेरणा करते थे तुम चर्चा करने ‡ हारों से पूछलो यदि तुम नहीं जानते। (४६) प्रमाण और पुस्तक देकर हमने तेरी ओर चर्चा § उतारी है जिस्तें तू लोगों पर खोलदे जो उनकी ओर उतारा गया है कि कदाचित वह विचार करें। (४७) सो क्या निडर होगए वह लोग जो बुरे छल करते हैं कि ईश्वर उनको पृथ्वी में धँसा देवे अथवा उन पर दण्ड आपड़े जिस ओर का उनको ज्ञान नहीं। (४८) अथवा उनको घर पकड़े चलते फिरते क्योंकि वह अशक्त नहीं कर सकते। (४९) अथवा उनको आकर डर घर पकड़े निस्सन्देह तुम्हारा प्रभु करुणा मय दयालु है। (५०) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि जो कुछ ईश्वर ने उत्पन्न किया उस की परछाईं दहिने और बाएं ईश्वर को दण्डवत करती हुई गिरती है और वह बेबशों में हैं। (५१) ईश्वर ही को दण्डवत करते हैं जो आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है जीवधारी और दूत और वह अहंकार नहीं करते। (५२) अपने प्रभु से डरते हैं जो उनके ऊपर है और जिसकी आज्ञा पाते हैं वह करते हैं ॥

रु० ७—(५३) ईश्वर ने कहा दो ईश्वर मत ठहराओ ईश्वर एक ही है तुम मुझी से डरो। (५४) और उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो पृथ्वी में

---

* किसी मुसलमान पर कुछ ऋण था महाजन अपना धन मांगने आया। मुसलमान ने ईश्वर की किरिया खाई और कहा कि वह मुझको मरने के पश्चात उठायगा इस पर महाजन ने कहा कि तू फिर कभी न जीवता होगा और बड़ी बड़ी किरियाएं ईश्वर के नाम की खाई उस समय यह आयत उतरी।
† स्तोत्र ३३ : ९। ‡ अर्थात पुस्तकवालों से अर्थात ख्रीष्टियान। § अर्थात कुरान ॥

है और उसीकी उपासना सदा उचित है तो क्या ईश्वर के उपरान्त किसी दूसरे से डरते हो। (५५) और जो कुछ वरदान तुमको प्राप्त हैं वह ईश्वर ही की ओर से हैं फिर जब तुमको दुख पहुंचता है तुम उसीकी ओर पुकारते हो। (५६) और फिर जब वह तुम से बुराई को हटा देता है तो तत्काल तुम में से एक जत्था अपने प्रभु का साझी ठहराने लगता है। (५७) जिस्तें उसमें कृतघ्न हों जो हमने उनको दिया है सो लाभ उठालो परन्तु अन्त में तुम्हें जान पड़ेगा। (५८) वह अलग करते हैं उसके निमित्त जिसको वह नहीं जानते * एक भाग हमारी दी हुई जीविका में से ईश्वर की सौंहँ हम से उनके विषय में प्रश्न न होगा जो कुछ मिथ्या तुम करते थे। (५९) और ईश्वर के निमित बेटियां ठहराते हैं वह पवित्र है और अपने निमित जो उनका जी † चाहे। (६०) जब पृथ्वी में से किसी को बेटी का सुसमाचार दिया जाता है तो उसका मुहँ कालाहो जाता है और वह शोक से भरा होता है। (६१) और छिपा फिरता है अपनी जाति से उस घिनित बात के कारण जिसका उसको सुसमाचार दिया गया है कि उसको उपहास ग्रहण ‡ करके रहने दे अथवा उसको माटी में गाढ़ दे § जानलो जो कुछ निर्णय वह करते हैं बुरा है। (६२) उन लोगों के निमित जो अंत के दिन की प्रतीत नहीं करते बुरा दृष्टान्त है और ईश्वर के निमित उत्तम दृष्टांत है क्योंकि वह बली बुद्धिवान है॥

रु० ८—(६३) यदि लोगों को उनकी दुष्टता के कारण पकड़े तो पृथ्वी पर किसी चलने हारे को न छोड़े परन्तु वह उन्हें अवसर दे रहा है एक नियत समय लों फिर जब उसका समय आजाता है तो न एक घड़ी पीछे रहेंगे न आगे बढ़ेंगे। (६४) ईश्वर के निमित वह ठहराते हैं जिसे वह आप नहीं चाहते और उनकी जीभ मिथ्या कहती है कि उनके निमित भलाई है कुछ सन्देह नहीं उनके निमित अग्नि है और निस्सन्देह वह पहिले भेजे हुओं में हैं। (६५) ईश्वर की सौंह हमने तुझ से पूर्व जातियों की ओर प्रेरित भेजे परन्तु दुष्टात्माओं ने उनके कर्म उनको भले करके दिखाए वही आजलों उनका मित्र है उनके निमित दुख दायक दण्ड है। (६६) हमने तेरी ओर पुस्तक उतारी है जिस्तें तू उनके निमित वह बातें वर्णनकरे कि जिनमें यह बिभेद करते हैं और शिक्षा और दया उनके निमित है जो बिश्वासी हैं। (६७) और ईश्वर ने आकाशों से जल उतारा फिर उसने पृथ्वी को जीवता किया उसके मरजाने के पश्चात इसमें उन लोगों के निमित चिन्ह हैं जो सुनते हैं॥

---

* अर्थात मूर्त्तियों के निमित्त। † अर्थात पुत्र। ‡ लड़की पैदा होने के समाचार पर सोचता है कि उसको रहने दे अथवा मारडाले। § देखो सूरए तकवीर आयत ८ को॥

रु० ९—(६८) निस्सन्देह तुम्हारे निमित पशुओं में भी एक शिक्षा है हम तुमको पीने को देते हैं जो उनके पेटों में है गोबर और लोहू में से निष्खोट दूध रुचि से पीने हारों को। (६९) खजूर और दाख के फलों में से तुम बनाते हो उन से मदोत्पादक वस्तुएं और उत्तम भोजन निस्सन्देह इसमें उन लोगों के निमित चिन्ह हैं जो बुद्धि रखते हैं। (७०) और तेरे प्रभु ने मधु माखियों को प्रेरणा की कि पहाड़ों और पेड़ों में और छतनारे पेड़ों में घर बनाए। (७१) फिर हर फल में से खा फिर चल अपने प्रभु के मार्गों में उनके पेट में से पीने की वस्तु निकलती है वह [illegible] की होती है जिसमें मनुष्यों के निमित आरोग्यता है निस्सन्देह इसमें [illegible] के निमित चिन्ह है जो विचार करते हैं। (७२) ईश्वर ने तुमको उत्पन्न किया फिर वही तुमको मारडालेगा और तुम में से कुछ वृद्धावस्था को पहुंचते हैं जिस्से वह न जाने जानने के पीछे—निस्सन्देह ईश्वर जाननेहारा और शक्तिवान है। (७३) और ईश्वर ने तुममें से किसी को किसी पर जीविका में बड़ाई दी और जिनको बड़ाई दीगई है अपनी जीविका अपने दासों पर नहीं लौटा देते कि वह उसमें समान हों तो क्या यह लोग ईश्वर के वरदानों से मुकरते हैं॥

रु० १०—(७४) ईश्वर ने तुम्हारे निमित तुम्हीं में से पत्नियें उत्पन्न की और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे पुत्र और पोते और तुम्हें खाने को पवित्र जीविका दी सो क्या लोग मिथ्या की प्रतीत करते हैं और ईश्वर के उपकार से मुकरते हैं। (७५) और वह सेवा करते हैं ईश्वर के उपरान्त ऐसों की जो अधिकार नहीं रखते उनको जीविका देने का आकाशों और पृथ्वी से और न उनको कुछ पराक्रम है। (७६) ईश्वर के निमित दृष्टान्त * मत गढ़ो निस्सन्देह ईश्वर जानता है और तुम नहीं जानते। (७७) ईश्वर ने एक दृष्टान्त वर्णन किया है एक दास है जो पराए वश में है और कुछ करने की शक्ति नहीं रखता और एक ऐसा मनुष्य है कि हमने उसको अपनी ओर से जीविका दी उत्तम जीविका वह उसमें से व्यय करता है गुप्त और प्रगट क्या वह समान होसकते हैं सब महिमा ईश्वरही के निमित है परन्तु बहुतेरे उनमें से नहीं जानते। (७८) और ईश्वर ने एक दृष्टान्त वर्णन किया कि दो मनुष्य हैं एकतो गूंगा कुछ कार्य्य नहीं करसकता है वह अपने स्वामी पर भार है वह जहां कहीं उसको भेजे वह कुछ भलाई नहीं लाता क्या समान होसकता है यह और वह जो न्याय की आज्ञा करता है और आप भी सीधे मार्ग पर स्थिर है॥

---

* निर्गमण २०:४॥

रु० ११—(७६) ईश्वरही को आकाशों और पृथ्वी की बातों का ज्ञान है और पुनरुत्थान का कार्य्य तो बस ऐसा है जैसे पलक का झपकना अथवा उससे भी अधिक निकट निस्सन्देह ईश्वर हर बात पर शक्तिवान है। (८०) ईश्वर ने तुमको तुम्हारी माताओं के ओदर से निकाला और तुम कुछ भी न जानते थे और तुम्हारे निमित उत्पन्न किए कान और आखें और हृदय जिस्तें तुम धन्यवाद करने हारे बनो। (८१) क्या वह पक्षियों को नहीं देखते कि वह आकाश की अंतरिक्ष के बश में किए गए हैं उनको केवल ईश्वर के और कोई नहीं थांमे निस्सन्देह इसमें उन लोगों के निमित चिन्ह हैं जो विश्वासी हैं। (८२) ईश्वर ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे निमित बिश्राम का ठौर बनाया है और तुम्हारे नि—त पशुओं की खालों * के घर बनादिए जिनको तुम अपनी यात्रा के दिन और अपने पड़ाव के दिन हलका पाते हो और उनकी ऊन और उनके बालों और उनके रोएं से बहुत सी सामग्री और उपयोगी बस्तुएं एक नियत † समय लों। (८३) और ईश्वर ने तुम्हारे निमित उत्पन्न किई अपनी बनाई हुई बस्तुओं से छांह और तुम्हारे निमित पहाड़ों में छिपने का ठौर बनाया और उसने तुम्हारे निमित कुरते बनाए कि तुमको धूप से बचाएं और कुरते जो तुमको समर में बचाते हैं इसी भांति वह अपने उपकार तुमपर पूरे करता है जिससे कि तुम आधीन होजाओ। (८४) फिर यादि वह पीठ फेरें तो तेरा कार्य केवल स्पष्ट रीति से पहुंचा ‡ देना है। (८५) वह ईश्वर के उपकारों को पहचानते हैं और फिर उससे मुकरते हैं इनमें से बहुतेरे कृतघ्न हैं।

रु० १२—(८६) और जिस दिन हम प्रत्येक जाति से साक्षी उठाएंगे फिर मुकरने हारों को आज्ञा न मिलेगी और न उनके छलछिद्र ग्रहण किए जायंगे। (८७) जब वह लोग जो दुष्ट थे दण्डको देखेंगे तो न वह उनसे हलका किया जायगा और न उनको अवसर मिलेगा। (८८) और जब साझी ठहरानेहारे देखेंगे अपने साझियों को कहेंगे हे हमारे प्रभु यही हमारे वह साझी हैं जिनको हम पुकारा करते थे तेरे उपरान्त और वह उनकी बातमें बात डालेंगे कि निस्सन्देह तुम झूठे हो। (८९) और वह उस दिन ईश्वर के आगे कुशल के सन्देश की आज्ञा करेंगे और जो कुछ मिथ्या वह करते थे उनसे खोजायगा। (९०) और जो लोग मुकरने हारे हुए और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका हम उनके दण्ड में और दण्ड बढ़ावेंगे इस कारण कि वह उपद्रव करते थे। (९१) और जिस दिन हम उठा खड़ा करेंगे हर जाति में से उन्हीं में का एक साक्षी और तुझको उन § पर

* अर्थात तम्बू। † विशेष ऋतु। ‡ अर्थात आज्ञा। § अर्थात मक्कावालों पर॥

साक्षी लाएंगे और हमनें तुझ पर पुस्तक उतारी जो बर्णन करने हारी है हर बात का और शिक्षा दया और मुसल्मानों के निमित सुसमाचार है ॥

रु० १३—(९२, निस्सन्देह ईश्वर आज्ञा देता है न्याय और उपकार करने की और नाते दारों के देने की और वह बर्जता है निर्लज्जता और बुराई और द्रोह से तुमको शिक्षा करता है जिस्तें तुम शिक्षित होओ। (९३) और ईश्वर का नियम पूरा करो जब तुम परस्पर नियम बांधो और अपनी किरियाओं को दृढ़ किए पीछे मत तोड़ो तुम ईश्वर को अपना बिचवई बना चुके हो निस्सन्देह ईश्वर जानता है जो तुम करते हो। (९४) उस स्त्री के समान मत बनो जिसने तोड़ डाला अपना काता हुआ दृढ़ करने के पीछे टूक टूक अपनी किरियाओं को परस्पर उपद्रव का कारण बनाते हो इस कारण कि एक जत्था दूसरी से अधिक बढ़ी चढ़ी है निस्सन्देह उसीसे ईश्वर तुम्हारी परिक्षा कर रहा है परन्तु पुनरुत्थान के दिन वह तुम्हारे निमित उन बातों को खोल देगा जिनमें तुम विभेद करते थे। (९५) यदि ईश्वर चाहता तो तुम सबको एक ही जाति बना देता परन्तु वह भटका देता जिसे चाहता है और जिसे चाहता है शिक्षा करता है और अवश्य तुमसे उसके बिषय में पूछ पाछ होगी जो तुम करते थे। (९६) और अपनी किरियाओं को परस्पर उपद्रव का कारण न बनाओ कि तुम्हारे पाँव जमें पीछे फिसल जायँ और तुम बुराई चाखो उसकी सन्ती कि लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका और तुम्हारे निमित बहुत कठिन दण्ड है। (९७) ईश्वर के नियम की सन्ती तुच्छ मूल्य न लो निस्सन्देह जो कुछ ईश्वर के तीर हैं वही तुम्हारे निमित उत्तम है यदि तुम जानते। (९८) जो कुछ तुम्हारे तीर है वह समाप्त हो जायगा और जो ईश्वर के निकट है वह बच रहने हारा है हम धीरज [illegible] हारों को उनका प्रति फल देंगे और उनके उत्तम कर्मों का जो वह करते हैं प्रति फल। (९९) जिसने सुकर्म्म किया पुरुष हो अथवा स्त्री और कि वह विश्वासी है तो हम उसका जीवन भली भांति व्यतीत करायंगे और हम उनके उत्तम कर्मों पर जो वह करते हैं प्रति फल देंगे। (१००) जब तू कुरान पढ़ने [illegible] ईश्वर की शरण मांग स्रापित* दुष्टात्मा से। (१०१) जो विश्वासी हैं उन पर उस का कुछ बश नहीं और अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। (१०२) सो उस का बश तो उन्हीं पर है जो उस से मित्रता रखते हैं और वह वही हैं जो उसके † साथ साझी ठहराते हैं ॥

---

* इमरान ३४। † अर्थात ईश्वर के साथ ॥

रु० १४—(१०३) और जब हम एक आयत की सन्ती दूसरी बदल * देते हैं और ईश्वर भलीभांति जानता है जो वह उतारता है कहते हैं कि तू तो अपनी ओर से बना लाता है बरन बहुतेरे इनमें जानते हैं। (१०४) कह दे उस को पवित्र † आत्मा ने उतारा है तेरे प्रभु की ओर से सत्यता के साथ जिस्तें कि विश्वासियों को दृढ़ रखे और मुसलमानों के निमित शिक्षा और सुसमाचार है। (१०५) और हम जानते हैं कि वह कहते हैं कि उसको तो कोई सिखाया करता है और जिसकी ओर उनका बिचार है उसकी भाषा तो अजमी ‡ है और यह तो स्पष्ट अरबी है। (१०६) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर के चिन्हों पर विश्वास नहीं लाए ईश्वर उनकी शिक्षा नहीं करेगा और उनके निमित कठिन दण्ड है। (१०७) वही लोग झूठ बनानेहारे हैं जो ईश्वर के चिन्हों पर बिश्वास नहीं लाते वही हैं जो झूठे हैं। (१०८) जो कोई ईश्वर से मुकरा बिश्वास लाने के पीछे केवल उसके जो विवश ¶ किया जावे और उसका हृदय बिश्वास पर स्थिर रहे—परन्तु जो अपना हृदय अधर्म्म के निमित बढ़ाता है तो उस पर ईश्वर का कोप है और उनके निमित दण्ड है। (१०९) यह इस कारण है कि उन्होंने संसारिक जीवन को अंत के दिन से उत्तम जाना और ईश्वर अधर्म्मी जाति की शिक्षा नहीं करता। (११०) और यही वह लोग हैं कि ईश्वर ने उनके हृदयों और उनके कानों और उनकी आंखों पर छाप करदी और वही लोग अचेत हैं निस्सन्देह यही अन्त के दिन हानि उठाने हारों में होंगे। (१११) निस्स-न्देह उनके निमित जिन्होंने देश त्यागा उसके पश्चात कि दुख दिए गए फिर युद्ध किया और धीरज किया तेरा प्रभु इन बातों के पीछे क्षमा करने हारा दयालु है॥

रु० १५—(११२) जिस दिन हर एक मनुष्य अपने निमित झगड़ता हुआ आयगा और हर मनुष्य को पूरा दिया जायगा जो उसने उपार्जन किया और

* महम्मद साहब की बिपरीत आज्ञाओं को सुनके कुरैश तिरस्कार करते थे कि यह तो अद्भुत ठठोली है आज कुछ और और कल कुछ और सुनाते हैं इस पर यह आयत उतरी। † शोरा १९२, नजम ५, ‡ तकवीर २१। § यह सलमान फ़ारिसी के विषय में है। ¶ यह महम्मद साहब के देश त्याग ने के समय कुरैश ने बहुत से मुसलमानों को पकड़ कर दुख दिया इन्हीं में यासर का पुत्र अमार भी था इससे कुरैश ने इसलाम मत और महम्मद साहब के विरुद्ध बहुत कुछ कहलवाया मुसलमान अमार को अधर्म्मी जाननेलगे जब महम्मद साहब के सन्मुख किया गया तो उन्होंने उसकी शांति करदी और कह दिया यदि फिर विवश होजाय तो फिर ऐसाही करियो इसमें कोई दोष नहीं और यह आयत उतरी शिया मुसलमान इस आयत से तकैया की शिक्षा मानते हैं अर्थात किसी विपत्ति के समय अपनी मूल बात के बिपरीत वर्णन करना॥

उन पर अनीति नहीं कीजायगी। (११२) ईश्वर ने एक दृष्टान्त वर्णन किया कि एक वस्ती* थी शान्ति और निर्भय से उसके तीर उसकी जीविका बहुतायत से आती थी चहुंओर से फिर उसने कृतघ्नता की ईश्वर के उपकारों की तब ईश्वर ने उसको चखाया वस्त्र और भूख और भय से उसके बदले में जो वह करती थी। (११४) निस्सन्देह उनके तीर एक प्रेरित उन्हीं में का आया परन्तु उन्होंने उसे झुठलाया तब उनको दण्ड ने पकड़ा जब कि वह कुपन्थी थे। (११५) सो खाओ जो कुछ जीविका ईश्वर ने तुमको दी है– लीन और पवित्र और ईश्वर के बरदानों का धन्यवाद मानो यदि तुम उसकी अराधना करते हो। (११६) उसने तुमको केवल मृतक लोथ और लोहू और सूअर का मास और जिसपर ईश्वर को छोड़ किसी दूसरे का नाम लिया गया हो बरजा है केवल इसके जो बिवश किया जाय परन्तु आज्ञा उलंघन करने हारा न हो न मर्याद से बढ़नेहारा हो तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा † करने हारा दयालु है। (११७) और अपनी जीभों से झूठ बनाकर मत कहो कि यह लीन है और यह मलीन है ईश्वर पर झूठ बांधने लगो निस्सन्देह जो ईश्वर पर झूठ बांधते हैं उनका भला नहीं होता। (११८) इसमें थोड़ासा लाभ है और उनके निमित दुखदायक दण्ड है। (११९) और यहूदियों † पर हमने मलीन कर दिया था जो तुझको पहिले बता चुके हमने उन पर अनीति नहीं की वह आप अपने पर अनीति करते रहे। (१२०) फिर निस्सन्देह तेरा प्रभु उनके निमित जिन्होंने पाप किया अज्ञानता में फिर उसके पश्चात पश्चाताप किया और सुधार किया निस्सन्देह तेरा प्रभु उसके पश्चात क्षमा करने हारा दयालु है॥

रु० १६—(१२१) निस्सन्देह इबराहीम अगुआ था और हनीफ़ और ईश्वर की आज्ञा पालने हारा था और साझी ठहराने हारों में नहीं था। (१२२) उसके बरदानों का धन्यवाद करनेहारा उसने उसको चुन लिया और सीधे मार्ग पर चलाया। (१२३) हमने उसको संसार और अन्त के दिन भलाई दी और वह अन्त के दिन भले लोगों में है। (१२४) फिर हमने तेरी ओर प्रेरणा भेजी कि इबराहीम के मत का अनुगामी हो जो हनीफ़ था और साझी ठहराने हारों में न था। (१२५) सबूत उन्हीं के निमित नियत किया गया था जिन लोगों ने इसमें बिभेद किया निस्सन्देह तेरा प्रभु पुनरुत्थान के दिन उनमें निर्णय कर देगा उस विषय में जिसमें वह झगड़ते हैं। (१२६) अपने प्रभु के मार्ग की ओर बुद्धि और

---

* अर्थात मक्का। † इनाम ११९। ‡ इनाम १४७ जानपड़ता है कि आयत ११६, १२० और १२५ मदीना में मिलाई गईं॥

भली शिक्षा से बुला और उनके साथ उत्तम रीति से झगड़ तेरा प्रभुही भली भांति जानता है जो शिक्षित हैं। (१२७) यदि तुम पलटा लो तो उतनाही पलटा लो जितना तुमको दुख दिया गया और यदि धीरज धरो तो यह उत्तम है धीरज धरनेहारों के निमित। (१२८ तू धीरज धर तेरा धीरज ईश्वर के साथ है उन पर शोक न कर और न उनके छल से सकेती में हो निस्सन्देह ईश्वर उनके साथ है जो संयमी हैं और सुकर्म्म करनेहारे हैं॥

१७ सूरए बनीइसराएल मक्की रुकू १२ आयत १११।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१*) वह पवित्र है जो लेगया अपने दास को मसजिदे हराम से मसजिदे अक्सालों † जिसके चहुंओर हमने आशीषें धरीं जिस्तें कि हम उसे अपने चिन्हों में से दिखाएं निस्सन्देह वही सुनने हारा और देखने हारा है। (२) और हमने मूसा को पुस्तक दी और उसको इसराएल सन्तान के निमित शिक्षा ठहराया कि मेरे उपरान्त किसी और को हितवादी न बनाओ। (३) तुम उनकी सन्तान हो जिनको हमने नूह के साथ चढ़ाया निस्सन्देह वह गुणानुवाद करने हारा दास था। (४) और हम ने इसराएल सन्तान के निमित पुस्तक में स्पष्टता से कहदिया कि तुम देश में दो बार अवश्य उपद्रव करोगे और तुम अपनी अनीति ‡ में बढ़ते जाओगे। (५§) और जब उन दोनों बाचाओं में से पहिली आ गई हमने उन पर अपने दास घोर संग्राम करनेहारे पठाए और उन्हों ने तुम्हारे घरों में घुस कर ढूँढ़ा और ठहराई हुई बाचा तो पूरी करनी थी। (६) फिर हमने तुमको उन पर प्रबल ¶ किया और संपति और संतति से तुम्हारी सहायता की और हम ने तुम को बड़ा जत्था कर दिया। (७) यदि तुम भलाई करोगे तो अपने प्राणों के साथ भलाई करोगे और यदि बुराई करोगे

---

* प्रगट में इस आयत का सम्बन्ध इसकी पिछली आयतों से नहीं जानपड़ता निश्चय आयत ६२ में मेराज के विषय कुछ वर्णन है सम्भव है कि इसी बिचार से यह आयत इस सूरत के आरम्भ में रखदी गई मेराज के विषय में सूरए नजम आयत ११८ लों को भी देखो। † अर्थात यरूशलम का मन्दिर। ‡ अर्थात अपने अभिमान में। § टीका करनेहारों ने इसके विषय में भिन्न भिन्न कहावतें वर्णन की है कोई यशैयाह के बध और यरमियाह के बन्धुआ होने का चर्चा करते हैं और कोई कुछ और। ¶ अर्थात सन्हेरीब पर॥

तौ भी अपनेही साथ करोगे और जब दूसरी बाचा का समय आया जिस्तें कि तुम्हारे स्वरूपों को बिगाड़ दें और मसजिद में घुस * जायं जैसा कि उसमें पहिली बार घुसे थे और जिस स्थान पर प्रबल हों उसे नाश करदें पूरे उजाड़ के साथ। (८) कदाचित तुम्हारा प्रभु तुम पर दया करे और यदि तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही † करेंगे और हमने नर्क को बनाया है अधर्मियों के निमित बन्दीगृह। (९) निस्सन्देह यह कुरान शिक्षा करता है निपट सीधे मार्ग की ओर विश्वासियों के निमित सुसमाचार सुनाता है। (१०) जो भलाई करते हैं उनके निमित बड़ा प्रतिफल है। (११ और उनके निमित जो अंत के दिन पर विश्वास नहीं लाते हमने उनके निमित दुख दायक दण्ड उत्पन्न कर रखा है॥

रु० २—(१२) मनुष्य बुराई के निमित्त प्रार्थना करता है जिस भांति वह भलाई के निमित प्रार्थना करता है और मनुष्य बड़ा शीघ्रता करने हारा है। (१३) हमने रात्रि और दिवस को दो चिह्न बनाए फिर हम रात्रि का चिह्न मिटा देते हैं और दिनका चिह्न बना देते हैं दीखने हारा जिससे कि तुम अपने प्रभुका अनुग्रह ढूंढ़ो और बर्षों की गिन्ती और लेखा जानो और हमने हरबात अर्थ सहित कहदी। (१४) और हमने हर मनुष्य का पत्ती ‡ उसके कण्ठ में बांध दिया है और हम उसके निमित पुनरुत्थान के दिन निकाल लायेंगे एक पुस्तक और उसे खुलीहुई दी जायगी। (१५) आप पढ़ अपनी पुस्तक आज के दिन तू अपना लेखा लेने हारा आपही बस है। (१६) जो शिक्षा को ग्रहण करता है वह अपने प्राण के निमित ग्रहण करता है और जो बहकता है वह अपने ही बुरेके निमित बहकता है और कोई बोझी दूसरे का बोझ नहीं उठायगा और न हम उस समय लों दण्ड देते हैं जबलों कोई प्रेरित न भेजलें। (१७) और जब हम किसी बस्ती के नाश करने की इच्छा करते हैं तो हम उसके भोग विलासियों को आज्ञा ¶ करते हैं और वह उसकी आज्ञा उलंघन करते हैं तब उन पर क्रिया सत्य ठहरती है और हमने उसको जड़से उखाड़ फेंका। (१८) और हमने नूह के पीछे कितनी ही जातियों को नाश किया तेरा प्रभु अपने दासों के पाप जानने और देखने को बस है। (१९) और जो कोई इस संसार के जीवन का इच्छुक हो हम देते हैं उसे शीघ्र इसमें जितना चाहें और जिसे चाहें और फिर हम उसके निमित नर्क रखते हैं जिसमें वह प्रवेश करेगा हँसाई और दुर्दशा से। (२०) और

---

* योहन और पृष्ट के बध के कारण रोमियों ने नगर को नाश कर दिया। † अर्थात तुम अधर्मी बनोगे तो हम भी दण्ड देनेहार बनेंगे। ‡ अर्थात प्रारब्ध। ¶ अर्थात प्रेरित के आधीन होओ।

जिसने अन्त के दिन की इच्छा की और उसके निमित प्रयत्न किया और ऐसा प्रयत्न जो उचित था और वह विश्वासी रहे यही हैं जिनके प्रयत्न अच्छा होंगे। (२१) प्रत्येक को इनको और उनको तेरे प्रभु की क्षमा पहुँचती है और तेरे प्रभुकी क्षमा समाप्त नहीं होती। (२२) देख हमने किस भांति बड़ाई दो किसी को किसी पर निश्चय अन्त के दिन पदवियों में बढ़के हैं और बढ़के हैं बड़ाई में। (२३*) ईश्वर के साथ दूसरे को ईश्वर मत ठहरा नहीं तो तू बैठ रहेगा बुरी दशा † और विपति में पड़ाहुआ॥

रु० ३—(२४) तेरे प्रभु ने ठहरा दिया कि उसके उपरान्त किसी की आराधना न करो और माता पिता के साथ भलाईकरो यदि तुम्हारे साथ बुढ़ापे को पहुंचजायं उन दोनों में का एक अथवा दोनों उन से निरादर वचन न कहो और न उनको भिड़को आदरकी बात कहो। (२५) और उनके आगे नम्रता से दया के साथ अपनी बाहों को झुकादे और कह हे मेरे प्रभु उन पर दयाकर जैसा उन्हों ने मुझे छोटे से पाला। (२६) तुम्हारा प्रभु जानता है जो कुछ तुम्हारे हृदयों में है यदि तुम भले होओगे। (२७) सो निस्सन्देह वह पश्चाताप करने हारों के निमित क्षमा करने हारा है। (२८) और नातेदार को उसका भागदे और दीन को और यात्री को और उड़ाऊ मत हो। (२९) निस्सन्देह उड़ाऊ दुष्टआत्माओं के भाई हैं और दुष्टात्मा अपने प्रभु का बड़ा अधर्म करने हारा है। (३०) और तू अपने प्रभु की दया के अभिलाषा में जिसकी तुझको आशा हो उनसे मुंह ‡ फेरे तो उनसे दीनता के साथ बातकर। (३१) और अपना हाथ अपनी ग्रीवा से बंधा हुआ मत रख और न उसको सम्पूर्ण रीति से चौड़ा खोल दे कहीं ऐसा न हो फिर बैठ रहे धिक्कार किया हुआ और दरिद्रता में। (३२) निस्सन्देह तेरा प्रभु जिसकी चाहे जीविका बढ़ाता है और वही घटाता है निस्सन्देह वह अपने दासों को जानता और देखता है॥

रु० ४—(३३) और अपनी सन्तान दरिद्रता के विचार से घात ¶ न करो हम तुमको और उनको जीविका देते हैं निस्सन्देह उसका मारडालना बड़ा अपराध है। (३४) व्यभिचार के निकट न जाओ निस्सन्देह वह निर्लज्जता और बुरा मार्ग है। (३५) उस प्राण को वध न करो जिसको ईश्वर ने बरजा है परन्तु नीति से और जो मनुष्य अनीति से घात किया जाय तो हमने उसके स्वामी को

* आयत २१ से ४१ की मदीना की बताई जाती हैं। † देखो यशैयाह ५१ । १। ‡ अर्थात कंगाल और दरिद्री की विन्ती से। ¶ यमाम १५१, तकबीर १८, इमरान १८॥

प्रबलता दी फिर वह घात करने में अनुचित* न करे निस्सन्देह उसको सहायता दीगई है। (३६) और अनाथ की सम्पति के निकट न जाओ परन्तु भलाई की रीति पर यहांलों कि वह अपनी तरुणावस्थाको पहुंच जाय और नियम को पूरा करो निस्सन्देह नियम की जांच होगी। (३७) जब नापो तो पूरा नपुआ भरदो और ठीक तुला से तोलो यह उत्तम है और उसका अन्त भला है। (३८) उस बात के पीछे मत पड़ जिसका तुझको ज्ञान नहीं निस्सन्देह कान और आंख और हृदय इन सब से पूछगछ की जायगी। (३६) और पृथ्वी पर ऐंठता हुआ मत चल निस्सन्देह तू पृथ्वी को चीर न डालेगा और पर्वतों की लम्बाई को न पहुँचेगा। (४०) यह सब बातें बुरी हैं और तेरे प्रभुकी दृष्टि में अशुद्ध हैं। (४१) यह उनमें से हैं जो तेरी ओर तेरे प्रभु ने बुद्धि से प्रेरणा की ईश्वर के साथ दूसरा देव न ठहरा नहीं तो नर्क में ढकेल दिया जायगा धिक्कारा हुआ और उपहास किया हुआ। (४२) क्या तुमको तुम्हारे प्रभु ने पुत्रों के निमित्त किया और आप अपने निमित दूतों में से पुत्रियां लीं निस्सन्देह तुम बड़ा † बोल बोलते हो॥

रु० ५ (४३) और हमने इस कुरान में भांति भांति से समझाया कि वह चिन्तित हों परन्तु उनकी घिन बढ़तीही रही। (४४) कहदे कि यदि उसके साथ और ईश्वर होते जैसा वह कहते हैं तो इस समय अवश्य स्वर्ग के ईश्वरलों कोई मार्ग ढूंढ़ निकालते। (४५) वह पवित्र है महान है उससे जो वह कहते हैं बहुत परे है। (४६) सातों आकाश ‡ और पृथ्वी और जो उनमें है उसी का जाप करते हैं और कोई वस्तु नहीं जो उसका जाप महिमा सहित न करती हो परन्तु तुम उसके जाप को नहीं समझते निस्सन्देह वह कोमल स्वभाव और क्षमा करने हारा है। (४७) और जब तू कुरान पढ़ता है तो हम तेरे और उन लोगों के बीच जो अंत के दिन की प्रतीत नहीं करते एक गुप्त पट डाल देते हैं। (४८) और हम उनके हृदयों पर पट डालदेते हैं कहीं ऐसा न हो कि वह समझसकें और उनके कानों में भारीपन। (४९) और जिस समय तू अपने प्रभुको कुरान में एकान्त में स्मर्ण करता है वह अपनी पीठ की ओर फिर जाते हैं घिन करके। (५०) हम इस बातको भली भांति जानते हैं कि वह सुनते हैं जिस समय वह तेरी ओर कान धरते हैं और जिस समय काना फूसी करते हैं और जिस समय वह दुष्ट कहते हैं कि तुम तो अनुयाई नहीं होते परन्तु एक मनुष्य के जिस पर टोना कर दिया गया है। (५१) देख वह किस भांति तेरे निमित दृष्टांत गढ़ते हैं वह तो भटक गए

* अर्थात एक की सन्ती दो न घात करें। † गायदा १६, ९९, ६० । ‡ दूसरा करंथी १२ : २॥

सो मार्ग नहीं पा सकते। (५२) और कहते हैं कि क्या जब हम सड़े हाड़ होजायंगे क्या हम उठा खड़े किए जावेंगे फिर से उत्पन्न करके। (५३) कहदे चाहे तुम पत्थर होजाओ अथवा लोहा अथवा इसी भांति की कोई और सृष्टि जो तुम्हारे विचार* में बड़ी जान पड़े वह कहेंगे कौन हमें फिर उत्पन्न करेगा कहदे वही जिसने तुमको पहिले उत्पन्न किया वह अपने सिरों को हिलायँगे और कहेंगे फिर यह कब होगा कहदे यह निकटही है। (५४) जिस दिन वह तुम्हें बुलायगा तो तुम उसकी स्तुति करते हुए चले आओगे और विचार करोगे कि तुम थोड़ेही समयलों ठहरे॥

रु० ६—(५५) मेरे दासों से कहदे कि वही बात कहें जो उत्तम हो दुष्टात्मा लोगों में फूट डालता है निस्सन्देह दुष्टात्मा मनुष्य का खुला शत्रु है। (५६) तुम्हारा प्रभु तुमको भली भांति जानता है यदि चाहे तो तुम पर दया करे और यदि चाहे तो तुमको दण्ड दे हमने तुझको हितवादी बनाकर नहीं भेजा। (५७) तेरा प्रभु भली भांति जानता है उसको जो स्वर्गों में है और जो पृथ्वी में है और निस्सन्देह हमने कुछ भविष्यद्वक्ताओं को किसी को किसी पर बड़ाई दी है और हमने दाऊद को ज़बूर दिया। (५८) कहदे उन लोगों को बुला लाओ जिन पर तुम ईश्वर को छोड़ घमंड करते हो और वह तुमसे तुम्हारे दुख हटा न सकेंगे और न बदल सकेंगे। (५९) और वह जिनको यह पुकारते हैं अपने प्रभु लों सहारा ढूढ़ने को कि कौनसा दास अधिक समीपी † है और आशा करते हैं उसकी दया की और उसके दण्ड से डरते हैं निस्सन्देह तेरे प्रभु का दण्ड डरनेही की वस्तु है। (६०) और कोई बस्ती नहीं कि हम उसको पुनरुत्थान के पहिले नाश न करेंगे अथवा उसको कठिन दण्ड से दुख न देंगे यह पुस्तक में लिखा है। (६१) हमको इस बात से किसी ने न बर्जा कि हम चिन्ह भेजदें परन्तु यह कि उनको अगलों ने झुठलाया हमने समूद ‡ को ऊटनी दिखाई देती हुई दी फिर उन्होंने उस पर दुष्टता की हम चिन्ह नहीं भेजते केवल डराने के निमित। (६२) और जिस समय हमने तुझसे कहा कि निस्सन्देह तेरे प्रभु ने लोगों को घेर लिया और वह स्वप्न § जो हमने तुझे दिखाया वह लोगों के निमित उपद्रव ठहराया तो वह पेड़ $ जिस पर कुरान में श्राप किया गया और हम उनको भय दिखाते हैं परन्तु अब उनका बड़ा दण्ड बढ़ताही जाता है॥

* अर्थात हृदय में। † जान पड़ता है कि यह उनके विरुद्ध है जो पवित्रों को अपने निमित बिन्ती कराने का सहारा जानते थे। ‡ एराफ ७१। § अर्थात मेराज के विषय में। $ अर्थात

रु० ७—(६३) स्मर्ण करो जब हमने दूतों से कहा कि आदम को दण्डवत करो तो सबने दण्डवत की परन्तु इबलीस बोला क्या मैं उसको दण्डवत करूं जिसको तूने मट्टी से बनाया। (६४) बोला तू देख रख उस मनुष्य को जिसे तूने मुझपर बड़ाई दी निस्सन्देह यदि तू मुझको पुनरुत्थान के दिन लौं अवसर दे तो नाश कर दूंगा उसकी सब संन्तान को केवल थोड़ों के। (६५) कहा परे हो जो कोई उनमें से तेरा अनुयाई होगा तो नर्क तुम सबका दण्ड है भरपूर दण्ड। (६६) उनमें से बहकाले जिनको तू बहका सके अपने शब्द से और उन पर चढ़ाला अपने सवार और पैदल और उनकी संपति और संतति में साझा लगा और उनसे प्रतिज्ञा कर दुष्टात्मा उनसे केवल कपट के और कोई प्रतिज्ञा नहीं करता। (६७) निस्सन्देह मेरे दासों पर तेरा कोई अधिकार नहीं तेरा प्रभु उनका रक्षक बस है। (६८) तुम्हारा प्रभु वह है जो तुम्हारे निमित समुद्र में नाव चलाता है जिस्तें तुम उसका अनुग्रह ढूंढ़ो निस्सन्देह वह तुम पर दयालु है जब तुमको समुद्र में दुख पहुंचता है तो उसके उपरान्त वह खो जाते हैं जिनको तुम पुकारा करते थे। (६९) और फिर जब तुमको बचा लाया है सूखी भूमि की ओर तुम पीठ फेर लेते हो क्योंकि मनुष्य अति कृतघ्न है। (७०) क्या तुम निडर होगए हो कि वह तुमको सूखी भूमि में धंसा देवे अथवा तुम पर पत्थर बर्षानेहारी आंधी भेजदे और फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ। (७१) तो क्या तुम उससे निडर होगए हो कि तुमको दूसरी बार लेजाय और फिर तुम पर आंधी का प्रचंड झोंका भेजे और तुमको तुम्हारे अधर्म के कारण डुबादे और फिर तुम अपने निमित हमारे सन्मुख कोई अधिकारी न पाओ। (७२) और हमने मनुष्य सन्तान पर दया की उनको सूखी भूमि अथवा समुद्र में वाहन दिया और उनके भोजन को पवित्र वस्तुएं दीं और अपनी सृष्टि में बहुतों पर बड़ाई दी॥

रु० ८—(७३) जिस दिन हम सब मनुष्यों को जिलायंगे उनके अगुवाओं के साथ तो जिसे उसकी पुस्तक * दाहिने हाथ में दीगई फिर वह लोग अपनी पुस्तक पढ़ेंगे और एक डोरे के तुल्य भी उन पर अनीति न होगी। (७४) जो इस संसार में अन्धा है वह अन्त के दिन में भी अन्धा होगा और मार्ग से अत्यन्त भटका हुआ। (७५) और यह लोग तो तुझको डिगमिगाने ही लगे थे उस बात

* अर्थात कर्मपत्र॥

से जो हमने तेरी ओर प्रेरणा की कि तू हम पर बंधक बांधलाव उसके उपरान्त और उस समय वह तुझको सच्चा मित्र बनालेते। (७६) और यदि ऐसा न होता कि हम तुझको दृढ़ रखते तो निकट था कि तू उनकी ओर थोड़ासा झुक जाता। (७७) और यदि ऐसा होता तो हम दूना जीवन का और दूना मृत्यु * का चखाते फिर तू हम पर किसी को सहायक न पाता। (७८) और वह तो तुझको डिगमिगाने ही लगे थे इस पृथ्वी से जिस्तें तुझको इसमें से हांकदें और उस समय वह न रहने पायेंगे तेरे पीछे परन्तु थोड़े दिन। (७९) और यही व्यवहार चला आया है उन प्रेरितों का जिन्हें हमने तुझसे पहिले भेजा और तू हमारे व्यवहारों में अदल बदल न पायगा॥

रु० ६—(८०) प्रार्थना में दृढ़ रह सूर्य्य के ढलने से रात्रि के अँधेरे लों और प्रातःकाल को कुरान पढ़ निस्सन्देह प्रभात के कुरान के साक्षी हैं। ८१) रात्रि के कुछ भागमें तहज्जुद¶ पढ़ तेरे निमित अधिक निकट है कि तुझे तेरा प्रभु प्रतिष्ठा† के स्थान पर ऊंचा करे। (८२) कह हे मेरे प्रभु मुझे प्रवेश दे अच्छा प्रवेश करना और मुझको निकाल अच्छा निकालना और मेरे निमित अपने तीर से प्रबलता दे और सहायक बना। (८३) और कह दे कि सत्य मत आगया और असत्य मत मिट गया निस्सन्देह मिथ्या तो मिटनेही के निमित था। (८४) और हम कुरान में से वह उतारते हैं जो विश्वासियों के निमित आरोग्यता और दया हैं और दुष्टों की तो इससे हानिही बढ़ती है। (८५) और जब हम मनुष्य पर बरदान भेजते हैं तो मुहँ फेरता है और करवट बदलता है और जब उसको दुख पहुँचता है तो आशा छोड़ देता है। (८६) कहदे प्रत्येक अपने व्यवहारानुसार अभ्यास करता है फिर हमारा प्रभु भली भांति जानता है कि कौन अधिक शिक्षा के मार्ग पर है॥

रु० १०—(८७) तुझसे आत्मा के विषय ‡ में पूछते हैं कहदे आत्मा मेरे प्रभु की आज्ञा से है तुमको तो केवल थोड़ासा ज्ञान दिया गया है। (८८) यदि हम चाहें तो उठा लेजायं जो तेरी ओर प्रेरणा की है और तू हमपर कोई हितवादी न पायगा। (८९) परन्तु तेरे प्रभुकी दया निस्सन्देह उसका अनुग्रह तुझपर बड़ा है। (९०) कहदे यदि मनुष्य और जिन्न एकठौर इकत्र हों उस बात के निमित

---

* अर्थात दुगना दण्ड।   ¶ अर्थात आधीरात के पीछे।   † अर्थात मुकाम महमूद।
‡ राजाओं की पहिली पुस्तक २२ : २१. बकर ८९।

कि इस कुरान के समान वे भावें न ला सकेंगे उसके समान यदि उनमें कोई कोई के सहायक हों। (६१) और निस्सन्देह हमने भांति भांति से लोगों के निमित इस कुरान में हर दृष्टान्त में से वर्णन किया है सो बहुतेरे लोग अधर्म्म किए विना न रहे। (९२) और बोले हम तो तेरी प्रतीत कभी न करेंगे यहांलों कि तू हमारे निमित पृथ्वी से एक सोता बहादे। (९३) तेरे निमित खजूरों और दाखों की एकबारी हो और तू उसमें सोते बहावे। (९४) अथवा आकाश को हमपर टूक टूक करदे गिरादे जैसा तू कहा करता है अथवा ईश्वर और दूतों को सन्मुख ले आवे। (९५) अथवा तेरे निमित कंचन भवन हो जाय अथवा तू स्वर्ग पर चढ़ जाय और तेरे चढ़जाने को हम कभी न मानेंगे यहांलों कि तू हमपर एक पुस्तक उतार लावे और हम उसको पढ़लें कहदे मेरा प्रभु पवित्र है और मैं तो कुछ नहीं परन्तु एक भेजा हुआ मनुष्य॥

रु० ११—(९६) मनुष्यों को विश्वास लाना वर्जित नहीं है जब उनके तीर शिक्षा आचुकी परन्तु यही बात कि क्या ईश्वर ने मनुष्य को प्रेरित बनाकर भेजाहै (९७) कहदे यदि पृथ्वी पर दूत चलते होते तो निस्सन्देह हम उन पर स्वर्ग से दूतको प्रेरित बनाकर भेजते। (९८) कहदे मेरे और तुम्हारे बीच ईश्वरही साक्षी बस है निस्सन्देह वही अपने दासों की सुधि रखनेहारा और देखने हाराहै (९९) जिसको ईश्वर शिक्षा करता है फिर वही शिक्षा पानेहारा है और जिसको भटकावे फिर तू उनके निमित उसको छोड़ कभी सहायक न पायगा और हम उनको पुनरुत्थान के दिन उनके मुँह के बल उठायँगे—अन्धे गूंगे और बहरे हैं उनका ठिकाना नर्क है और जब वह बुझने लगेगा तो हम उनपर अधिक भड़का देंगे। (१००) यह दण्ड उनका इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों से अधर्म्म किया और बोले कि क्या जब हम सड़े हाड़ होजायँगे तो क्या हम उठा खड़े किए जायँगे नए सिरेसे। (१०१) क्या उन्हों ने यह नहीं देखा कि जिस ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया उस पर भी शक्ति रखता है कि उत्पन्न करदे उनके समान और उसने उनके निमित एक समय नियत कररखा है जिसमें तनिक भी सन्देह नहीं दुष्ट बिना अधर्म्म किए न रहेंगे। (१०२) कहदे यदि तुम मेरे प्रभु की दया के भण्डारों के अधिकारी होते तब तो तुम व्यय हो जाने के भय से अवश्य कृपणता करते क्योंकि मनुष्य सकेती करने हारा है॥

रु० १२—(१०३) निस्सन्देह हमने मूसा को प्रत्यक्ष चिन्ह दिए तू इसराएल सन्तान से पूछ जब वह उनके निकट आया फिरऊन ने उससे कहा हे मूसा

निस्सन्देह मैं बिचार करता हूं कि तू टोना किया हुआ है। (१०४) उसने कहा निस्सन्देह तूने जान लिया है कि उनको किसी ने नहीं भेजा परन्तु आकाशों और पृथ्वी के प्रभु ने प्रगट होने के निमित और निस्सन्देह मैं बिचार करता हूं हे फ़िराऊन तू नाश होनेहारों में है। (१०५) फिर इच्छा की कि उनको पृथ्वी से निकालदे तो हमने उसको और उन सबको जो उसके साथ थे डुबा दिया। (१०६) और उसके पश्चात हमने इसराएल सन्तान से कहा कि इस भूमि में बसो और जब अंत के दिन की प्रतिज्ञा आयगी हम तुमको इकत्र करके लेआयंगे और हमने उसको सत्य उतारा है और उतरा है सत्य के साथ और हमने तुझको नहीं भेजा परन्तु उपदेश देनेहारा और डर सुनाने हारा। (१०७) और हमने कुरान थोड़ा थोड़ा करके उतारा जिस्तें तू उसको लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ै और हमने उसको धीरे धीरे उतारा। (१०८) कहदे उस पर विश्वास लाओ—इसको मानो अथवा न मानो—जिन लोगों को इससे पहिले ज्ञान दिया गया जब वह इसको सुनते हैं तो दण्डवत में ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और कहते हैं कि हमारा प्रभु पवित्र है निस्सन्देह हमारे प्रभु की बाचा अवश्य होके रहेगी। (१०९) और रोते हुए ठोड़ियों के बल गिरते हैं और उनकी आधीनी अधिकही होती रहती है। (११०) कहदे पुकारो ईश्वर को अथवा पुकारो रहमान * को जो कह कर पुकारोगे उसके सब नाम भले हैं और अपनी प्रार्थना पुकार कर न कर और न उसको धीरे कर उसके बीच बीच में मार्ग ढूंढ़। (१११) कह सब महिमा ईश्वरही के निमित है जिसने अपने निमित कोई पुत्र नहीं लिया न उसके राज्य में उसका कोई साझी है न उसका कोई सहायक है और न उपहास से बचाने को उसका कोई मित्र है और उसकी पूरी बड़ाई कर॥

---

१८ सूरए कहफ़ (खोह) मक्की रुकू १२ आयत ११०।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है जिसने अपने दास पर पुस्तक उतारी और उसमें कोई टेढ़ाई नहीं रखी। (२) स्थिर किया जिस्तें उसकी ओर से कठिन दण्ड से डरावे और बिश्वासियों को और भले कर्म्म करनेहारों को इस बात का सुसमाचार सुनादे कि उनके निमित उत्तम प्रतिफल है जिसमें

* नहल ९२. फ़ुरक़ान ६१. स्तोत्र ७०:१८. निर्गमण १४:६॥

वह सदा रहेंगे। (३) और उनको डराए जो कहते हैं कि ईश्वर ने पुत्र लिया है। (४) उनको न उसका कुछ ज्ञान है न उनके पितरों को यह एक बड़ा बोल है जो उनके मुहों से निकलता है निस्सन्देह वह केवल झूठ बोलते हैं। (५) कदाचित तू अपने प्राण शोक के मारे घोंट डालेगा उनके पीछे यदि वह इस बात को न मानेंगे। (६) निस्सन्देह हमने जो कुछ पृथ्वी पर सृजा वह उसकी शोभा है जिस्तें हम लोगों की परिच्छा करें कि इनमें से कौन सुकर्म्म करता है। (७) और निस्सन्देह हम उसको जो उसमें है छांटकर स्पष्ट भूमि करेंगे। (८) क्या तू विचार करता है कि असहाबे कह्फ * और रक़ीम † वाले हमारे अद्भुत चिन्हों में से थे। (९) जब वह मनुष्य खोह में जा बैठे फिर कहा हे हमारे प्रभु हमको अपनी ओर से दयादे और हमारे कार्य्यों को सुधार। (१०) और हमने उनके चोट ‡ लगाई इस खोह में गिन्ती के वर्षों लौं। (११) फिर हमने उनको उठाया जिसतें जानें कि दोनों जत्थाओं में से किसने ठहरने का समय स्मर्ण रखा॥

रु० २—(१२) हम तुझसे उनका वृत्तान्त सचमुच वर्णन करते हैं निस्सन्देह वह थोड़े से तरुण थे जो अपने प्रभु पर विश्वास लाये और हमने उनको अधिक शिच्छा दी थी। (१३) और हमने उनके हृदयों में गांठ लगादी जब वह खड़े हुए तो बोले कि हमारा प्रभु आकाशों और पृथ्वी का प्रभु है हम उसको छोड़ किसी ईश्वर को न पुकारेंगे नहीं तो हम असत्यवादी होंगे। (१४) हमारी जाति ने उसे छोड़ दूसरे ईश्वर ले रखे हैं क्यों नहीं लाते उनके निमित कोई प्रत्यक्ष प्रमाण फिर उससे बढ़के दुष्ट कौन है जिसने ईश्वर पर मिथ्या दोष बांधा। (१५) जब तुम उनसे अलग हुए और उनसे जिन्हें वह ईश्वर के उपरांत पूजते थे तो अब चल बैठो इस खोह में जिस्तें तुम्हारा प्रभु तुम पर अपनी दया को फैलाये और तुम्हारे कार्य्य में तुम्हें लाभ दे। (१६) और तूने देखा होता सूर्य को कि जब उदय होता है उनकी खोह से बच कर दहनी ओर को और जब अस्त होता है तो उनसे बाई ओर को कतरा जाता है और वह उसकी ओट † में चौड़े स्थान में है यह ईश्वर के चिन्हों में से है—जिसे ईश्वर शिच्छा दे वही शिच्छित है और जिसे वह भटकावे तो कभी तू उसके निमित कोई मित्र मार्ग बताने हारा न पायगा॥

रु० ३—(१७) तू तो उनको जाग्रत दशाही में विचार करे यदपि वह सोते हैं और हम उनकी करवटें बदलाते हैं दहिने और बाएं और उनका कुत्ता ‡

---

* अर्थात उनको सुलादिया। † अर्थात खोह की॥ ‡ मुसलमानों का विचार है कि कुत्ता बैकुण्ठ में प्रवेश करेगा और उसका नाम कतमीर बताते हैं।

अपने अगले पावं चौखट पर फैलाए हुए है और यदि तू उनको झांक कर देखे तो निश्चय तू पीठ फेर कर भाग खड़ा हो और तुझ में उनकी ओर से भय समाय जाय। (१८) और इसी भांति हमने उनको जगा उठाया जिस्तें परस्पर पूछपाछ करें उनमें से एक बोलने हारा बोला तुम कितने समय यहां रहे—वह बोले हम एक दिन रहे अथवा एक दिन से घाट-कहा तुम्हारा प्रभुही भली भांति जानता है जितना रहे हो—सो अब अपने में से एक को अपना यह मुद्रा देके नगरकी ओर भेजो और वह देखे कि किसके तीर * अच्छा भोजन है फिर तुम्हारे तीर उसमें से ले आए और वह चुप † चाप जाय और किसी को तुम्हारा भेद न दे। (१९) यदि वह तुम्हारा भेद पा जायंगे तो निस्सन्देह तुमको पत्थर वाह करेंगे अथवा तुमको अपने धर्म में फेर लेजायंगे फिर तुम्हारा कभी भला नहीं होगा। (२०) और इसी भांति हमने लोगों को चिता दिया जिस्तें जानलें कि ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य है और पुनरुत्थान में निस्सन्देह कुछ सन्देह नहीं जब वह परस्पर में अपनी बात पर झगड़ रहे थे वह बोले कि उनके ऊपर एक घर बनाओ उनका प्रभु उनके विषय में भली भांति जानता है और वह जो उसके विषय में प्रबल रहे बोले कि अवश्य हम उनके ऊपर एक मन्द्र बनायंगे। (२१) अब यह कहेंगे तीन में चौथा उनका कुत्ता कहेंगे पांच में छठा उनका कुत्ता वे देखे अटकल दौड़ाते हैं कोई कहेंगे वह सात हैं और आठवां उनका कुत्ता--कहदे उनकी संख्या मेरा प्रभुही भली भांति जानता है—उन्हें कोई नहीं जानता परन थोड़े मे। (२२‡) सो उनके विषय में न झगड़ केवल हलकी बात चीत के और उनमें से उनके विषय किसी से प्रश्न न कर॥

रु० ४—(२३) और कभी न कह किसी कार्य को कि अवश्य यह मैं कल करदूँगा परन्तु यह कि यदि ईश्वर § चाहे और अपने प्रभु को स्मर्णकर जब भूल जाय और कह कि कदाचित मेरा प्रभु मेरी शिक्षा करे उससे अधिक निकट भलाई के मार्ग की। (२४) वह इस खोह मे तीनसौ नौवर्ष रहे। (२५) कहदे ईश्वर ही भली भांति जानता है जितने समय वह रहे आकाशों और पृथ्वी में समस्त अनदेखी वस्तुएं उसीकी हैं वही देखने हारा और सुनने हारा है दासों का उसको छोड़ कोई मित्र नहीं और वह अपनी आज्ञा में किसी को साझी नहीं करता।

---

* अर्थात किसकी दुकान में। † अर्थात्त कहीं झगड़ा बखेड़ा न करे। ‡ यहूदियों ने असहाब कहफ की संख्या महम्मद साहब से पूछी थी उन्हों ने बाचा की थी कि कल सबेरे बताऊँगा यह आयत उसीके विषय में उतरी। § याकूब ४ : १३—१५लों॥

(२६) अब पढ़ जो तेरी ओर प्रेरणा हुई तेरे प्रभुकी पुस्तक से उसकी बातों को कोई बदलने हारा नहीं और तू उसके उपरांत कहीं शरण स्थान न पायेगा। (२७) अपने प्रभुको उनके साथ थामे रख जो अपने प्रभु को भोर और सांझ पुकारते हैं और उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं और तेरी आंखें उनसे न हटें कि तू संसार की शोभा मांगने लगे—और उसका कहा न मान जिनके हृदय को हमने अपनी सुर्ति से अचेत कर दिया और वह अपनी अभिलाषा के पीछे पड़ा है और उसका कार्य्य मर्य्याद से अधिक बढ़ा हुआ है। (२८) और कह तुम्हारे प्रभु की ओर से यह सत्य है सो जो चाहे माने जो चाहे न माने निस्सन्देह हमने दुष्टों के निमित अग्नि उद्यत कर रखी है और उनको उसकी भीतों ने घेर रखा है और यदि वह पुकार करेंगे तो उनकी पुकार ऐसे पानी से सुनी जायगी* जो पिघले हुए तांबे के समान है जो उनके मुहों को भूंज देगा कैसा बुरा पीना है और क्या बुरा विश्राम। (२९) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए हम उसका प्रतिफल खोया नहीं करते जिसने सुकर्म्म किया। (३०) यही हैं जिनके निमित्त सदा के बैकुण्ठ हैं उनके नीचे धाराएँ बहती हैं उनको वहां सोने के आभूषण पहिराए जायँगे और वहां हरे झीने रेशम के वस्त्र पहरेंगे वहां सिंहासनों पर ओसीसा लगाए बैठे होंगे कैसा अच्छा प्रतिफल है और कैसा अच्छा विश्राम॥

रु० ५—(३१) और उनसे उन दो मनुष्यों का दृष्टान्त वर्णन कर जिनमें से एक को हमने दाख की बाड़ी दीं उनके चारों ओर खजूरों के पेड़ उत्पन्न किए और दोनों के बीच में खेती उगाई और दोनों बारियों में फल आए और अपने फलों में कुछ न्यूनता नहीं की। (३२) और हमने दोनों के बीच धारा बहाई और उसके निमित्त बहुत सा फल था और वह अपने पड़ोसी से बोला और उससे कह रहा था कि मैं तुझसे अधिक धनवान हूँ और शक्तिवान जत्था के लेखे से। (३३) वह अपनी बारी में गया और अपने आप पर अनीति कररहा था वह बोला कि मैं विचार नहीं करता कि यह बारी कभी जाती रहे। (३४) और मैं विचार नहीं करता कि पुनरुत्थान होनेहारा है और यदि मैं अपने प्रभु की ओर लौटा दिया गया तो वहां पहुंचकर इससे उत्तम पाऊंगा। (३५) उसके पड़ोसी ने उससे कहा और वह उससे बातें कररहा था कि क्या तू उससे मुकरने हारा होगया जिसने तुझको माटी से उत्पन्न किया फिर वीर्य्य से फिर तुझको मनुष्य बनाया। (३६) परन्तु मेरा प्रभु तो ईश्वरही है और मैं उसके साथ किसी को

* अर्थात उनकी पुकार का उत्तर इस भांति दिया जायगा॥

साक्षी नहीं करता। (३७) और जब तूने अपनी बारी में प्रवेश किया तो तूने क्यों न कहा कि जो ईश्वर चाहे—कोई शक्ति नहीं परन्तु ईश्वर की दीहुई यदि तू मुझको देखता है कि मैं तुझसे संपति और संतति में घाट हूं। (३८) इसमें क्या अचंभा है कि मेरा प्रभु मुझको मेरी बारी से उत्तम देदे और तेरी बारी पर स्वर्ग से कोप भेजदे और वह चटील भूमि होकर रहजाय। (३९) इसका जल सूख जाय और तू किसी भांति लौटा न सके। (४०) और उसके फलों को घेर लिया गया और वह हाथ मलता हुआ रहगया उस मूल्य पर जो उसने लगाया था वह बारी अपनी टट्टियों पर गिरी पड़ी थी और वह मनुष्य कहता था हाय! कि मैं अपने प्रभु के साथ किसी को साक्षी न करता। (४१) उसकी कोई जत्था ऐसी न थी जो ईश्वर को छोड़ उसकी सहायता करती और न वह बदला लेनेहारा हुआ। (४२) इसी स्थान में ईश्वर की संगति है वही उत्तम प्रतिफल और उत्तम पलटा देनेहारा है॥

रु० ६—(४३) उनसे वर्णन कर कि संसार का जीवन पानी के समान है जिसे हमने आकाश से उतारा और उसके साथ पृथ्वी की बनस्पति मिली हुई है और वह चूरचूर होगई और पवन उसे उड़ाए फिरती है ईश्वर हर बस्तु पर शक्ति रखता है। (४४) संपति और संतति इस संसार के जीवन की शोभा है यदि तेरे प्रभु के तीर शेष रहने हारी भलाइयां और धर्म के निमित उत्तम हैं और आशा के लेखे से उत्तम हैं। (४५) और जिस दिन हम पर्वतों को चलादेंगे * तू पृथ्वी को स्पष्ट निकलते हुए देखेगा हम उनको फिर इकत्र करें और उनमें से कुछ न छोड़ें। (४६) और तेरे प्रभु के सन्मुख पांति पांति खड़े किए जायंगे अब तुम हमारे निकट आपहुंचे जैसा कि हमने तुमको पहिली बार उत्पन्न किया था परन्तु तुम तो यह विचार करते रहे कि हम तुम्हारे निमित कोई प्रतिज्ञाही नियत न करेंगे। (४७) और पुस्तक रखदी जायगी और तू अपराधियों को देखेगा डर रहे हैं उससे जो कुछ उसमें है और वह कहेंगे हाय शोक हम पर यह कैसी पुस्तक है न छोटे को छोड़ती है न बड़े को परन्तु यह कि प्रत्येक को व्यवहारानुसार गिन लिया है और उसमें उपस्थित होगा जो कुछ उन्होंने किया तेरा प्रभु किसी पर अनीति नहीं करेगा॥

रु० ७—(४८) और जब हमने दूतों से कहा कि आदम को दण्डवत करो केवल इबलीस के जो जिन्नों † में से था सभोंने दण्डवतकी सो अपने प्रभु की आज्ञा से

* यशैयाह ४०:४।

† इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि महम्मद साहब इबलीस को जिन्नों में से बताते हैं॥

निकल भागा सो क्या तुम उसको और उसकी सन्तान को मेरे उपरान्त मित्र बनाते हो वह तो तुम्हारे शत्रु हैं दुष्टों के निमित बुरा प्रतिफल है। (४६) मैंने उनको आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न करते समय साक्षी नहीं बनाया और न उनके ही उत्पन्न करते समय मैं भर्मानेहारों को अपना सहायक बनानेहारा नहीं हूं। (५०) और जिस दिन वह कहेगा बुलाओ मेरे उन साझियों को जिन पर तुम अभिमान करते थे और वह उन्हें पुकारेंगे परन्तु यह उन्हें उत्तर भी न देंगे और हम उनके बीच में एक घाटी स्थिर करेंगे। (५१) और अपराधी अग्निको देखेंगे और जान जायंगे कि इसमें गिरने हारे हैं और उससे बचने का कोई ठौर न पायेंगे।

रु० ८—(५२) और हमने इस कुरान में मनुष्यों के निमित सब भांति की कहावत फेर कर सुनाई और मनुष्य हर वस्तु से अधिक झगड़ा करने हारा है। (५३) लोगों को इस बात से नहीं रोका किसी वस्तुने कि वह विश्वास ले आवें जब उनके तीर शिक्षा आगई और अपने प्रभु से पाप क्षमा करालें परन्तु इस बात में कि उन पर आ पहुंचे पहिले लोगों की भांति अथवा दण्ड उनके सन्मुख आ प्रगट हो। (५४) और हम प्रेरित इस कारण भेजा करते हैं कि सुसमाचार सुनायें और डरायें परन्तु अधर्मी मिथ्या के साथ झगड़ते हैं और उससे सत्यको मेटना चाहते हैं उन्होंने मेरी आयतों को हँसी ठहराया और उसको जिससे डराया गया। (५५) उससे अधिक दुष्ट कौन है जिसको उसके प्रभुकी आयतों से शिक्षा की गई तो उसने मुंह मोड़ लिया और जो कुछ उनके हाथों ने आगे भेजा उसको भूलगए हमने उनके हृदयों पर पट डाल दिए कहीं ऐसा न हो कि वह समझें और उनके कानों को भारी कर दिया। (५६) यदि तू उन्हें शिक्षा की ओर बुलाए तो निश्चय कभी मार्ग पर न आयंगे। (५७) तेरा प्रभु क्षमा करने हारा और दया का स्वामी है यदि उनको उनके किए पर पकड़ता है तो उन पर शीघ्र दण्ड लेआता है पर उनके निमित एक समय नियत है जिसके इधर कहीं शरण नहीं पा सकते। (५८) और यह बस्तियां हैं जिनको हमने नाश कर दिया जब वह दुष्ट बनगईं और हमने उनके नाश के निमित एक समय ठहरा रखा था।

रु० ९—(५९) और जब मूसाने अपने तरुण * से कहा कि मैं न मानूंगा जबलों कि दोनों नदियों के संगम स्थानलों न पहुंचलूँ न रुकूंगा अथवा वर्षों लों चलता रहूँगा। (६०) जब दोनों नदियों के संगमलों आपहुँचे वह अपनी मछली

---

* अर्थात् यहोशू से।

भूलगए और इसने अपना मार्ग सुरंग निकाल के नदी में लिया। (६१) फिर जब आगे बढ़गये मूसाने अपने तरुण से कहा हमारा भोजन हमारे निकट ले आ हमने इस यात्रा में कष्ट उठाया। (६२) वह बोला * तूने देखा जब हमने उस पत्थर के निकट विश्राम किया तो मैं मछली भूल गया और बुधारमाही ने मुझे भुलादिया कि कहीं ऐसा न हो कि मैं सुरति रखूँ और मछली ने अपना मार्ग जल में अनोखी भांति से कर लिया। (६३) उसने † कहा यही तो है जिसको हम ढूंढ़ते थे फिर दोनों उलटे फिरे और अपने पावों के चिन्ह पर खोज लगाते हुए चले। (६४) फिर उन्होंने हमारे दासों में से एक ‡ दासको पाया जिस पर हमने अपनी ओर से दया की थी और अपनी विद्या में से विद्या सिखाई थी। (६५) मूसा ने उससे कहा मैं तेरे संग इस पैज पर रहूँ कि तू मुझे सिखादे उस ठीक मार्ग में से जो तुझे सिखाया गया है। (६६) वह बोला निस्सन्देह तू मेरे संग कभी धीरज न कर सकेगा। (६७) उस वस्तु पर तू कैसे धीरज धर सकता है जिसका समझना तेरे अधिकार में नहीं। (६८) उसने ¶ कहा यदि ईश्वर चाहे तो तू मुझको धीरजवान पायगा और मैं तेरी आज्ञा के विरुद्ध न करूंगा। (६९) वह बोला यदि तू मेरे साथ चलताही है तो मुझ से किसी बात के विषय में प्रश्न न करना यहां लौं कि मैं आपही उसका चर्चा आरम्भ करूं।

रु० १०—(७०) फिर दोनों चले यहांलों कि जब नाव पर चढ़े उसमें उसने § छेदकर दिया वह $ बोला क्या तूने इसमें इस कारण छेद किया जिस्तें नाव के लोगों को डुबादे तूने तो एक अनोखी बात उपजाई। (७१) वह बोला कि क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ कभी धीरज न धर सकेगा। (७२) उसने @ कहा कि मेरी चूक न पकड़ और मुझ पर कठिन आज्ञा का बोझ न डाल। (७३) फिर दोनों चले यहांलों कि जब एक लड़के से भेंटे और उसने उसे घात किया—वह** बोला क्या तूने एक निष्पाप आत्मा को घात किया बिना प्राण *† के तूने तो एक अनहोनी बात उपजाई है।

पारा १६.

(७४) वह बोला मैंने तुझसे न कहा था कि तू मेरे साथ कभी धीरज न धर सकेगा। (७५) उसने कहा यदि मैं तुझसे इसके पीछे कुछ भी पूछूं तो मुझे अपने साथ न रखना और तू मेरी ओर से प्रत्युत्तर *‡ को पहुंच चुका।

---

* अर्थात् तरुण। † अर्थात मूसा ने। ‡ टीका करनेहारे इसको ख्वाजाखिजर बताते हैं। ¶ अर्थात् मूसा ने। § अर्थात् खिजर ने। $ अर्थात् मूसा। @ अर्थात मूसा ने। ** अर्थात मूसा। *† बिना प्राण के मारे। *‡ अर्थात् बहाने की मर्य्याद लौं॥

(७६) फिर दोनों चले यहांलों कि एक बस्ती के लोगों के निकट पहुंचे वहां के लोगों से भोजन मांगा परन्तु उन्होंने उनकी पहुनई से इनकार किया फिर उन्होंने उसमें एक भीत देखी जो गिरा चाहती थी उसने उसको सीधा खड़ा कर दिया वह * बोला यदि तू चहता तो इस पर कुछ बनिले लेता। (७७) उसने कहा मेरा और तेरा साथ अब नहीं होसकता और मैं तुझको इन बातों का भेद अब बताए देता हूं जिन पर तू धीरज न धर सका। (७८) वह नाव कंगालों की थी जो समुद्र में परिश्रम करते थे सो मैंने चाहा कि उसमें दोष उत्पन्न करदूं और उनसे परे एक राजा था जो नौकाओं को बरियाई से लेलेता था। (७९) और वह लड़का जो था उसके माता पिता विश्वासी थे और हमें सन्देह हुआ कि वह उन पर विरुद्धता और अधर्म्म न ला डाले। (८०) सो हमने चाहा कि उनका प्रभु उनको उसकी सन्ती उत्तम बदलदे जो पवित्रता में उत्तम और प्रेम में अधिक निकट हो। (८१) और वह भीत जो थी वह दो अनाथ बच्चों की थी जो इस बस्ती में बसते थे और उसके नीचे उन दोनों के निमित धन का भण्डार था और उनका पिता सुकर्म्म करने हारा था और उनके प्रभु ने चाहा कि वह दोनों अपनी तरुणावस्था को पहुँचें और अपना भंडार निकाल लें यह तेरे प्रभु की ओर से दया थी और यह सब मैंने अपने अधिकार से नहीं किया था यह अर्थ है उन बातों का जिन पर तू धीरज नहीं धरसका॥

रु० ११—(८२) हम तुझसे ज़ीकर † नैन के बिषय में प्रश्न करते हैं उनसे कहदे मैं उसका चर्चा तुम्हारे साम्हने पढ़ सुनाता हूं। (८३) हमने उसको पृथ्वीपर अधिकार दिया था और हमने हर प्रकार की वस्तुएं दी थीं और फिर वह एक कारण ‡ के पीछे हो लिया। (८४) यहां लों कि सूर्य्य अस्त होने के ठौर पर पहुँचा तो उसने देखा कि वह एक काले कीचड़ के कुण्ड में डूबता है और उसके निकट एक जाति को पाया। (८५) हमने कहा हे ज़ीकरनैन चाहे तू उनको दण्ड दे अथवा उनके साथ भलाई करे। (८६) वह बोला जो कोई अनीति करेगा मैं उसको दण्ड दूंगा और वह अपने प्रभुकी ओर लौटा दिया जायगा और वह अनसुने दण्ड से दण्ड देगा। (८७) और जो विश्वासी है सुकर्म्म करे तो उसके निमित उत्तम प्रतिफल है और हम उसको अपनी ओर से सहज आज्ञा देंगे। (८८) फिर वह एक कारण ‡ के पीछे चला।

* अर्थात मूसा। † लोगों का विचार है कि इसका अभिप्राय सिकन्दर आज़म से है। ‡ अर्थात यात्रा॥

(८९) यहां लों कि सूर्य्य के उदय होने के ठौर पर पहुँचा और देखा कि वह एक ऐसी जाति पर उदय होता है जिनके निमित हमने उसके बचाव के निमित कोई आड़ नहीं बनाई। (९०) वह ऐसी भांति था और हमको उसका पूरा ज्ञान है जो कुछ उसके तीर था। (९१) फिर एक कारण * के पीछे चला। (९२) यहांलों कि दो भीतों के बीच पहुंचा और उसके उधर एक जाति देखी जो किसी बात को न समझती थी। (९३) उन्होंने कहा हे ज़ीक़रनैन निस्सन्देह याजूज † माजूज पृथ्वी में उपद्रव करते रहते हैं सो क्या हम तुझे कर ‡ दें इस बाचा पर कि तू हमारे और उनके बीच भीत बनादे। (९४) उसने कहा कि मेरे प्रभु ने जो मुझको शक्ति दी है मेरे निमित उत्तम है सो तुम मेरी सहायता बलसे § करो मैं तुम्हारे और उनके बीच बना दूंगा। (९५) मेरे निकट लोहे की सिलें लेआओ यहां लों कि खोह के दोनों तटों के अन्तर को भर दिया और कहा कि उनको धोंको जबलों कि यह आग्नि होजायँ फिर उसने कहा कि मेरे निकट पिघला हुआ तांबा लाओ जिस्तें मैं इस पर डालदूँ। (९६) फिर न वह इसपर चढ़ सकेंगे न सेंध दे सकेंगे। (९७) बोला कि यह मेरे प्रभु की दयासे है। (९८) और जब मेरे प्रभुकी बाचा आयगी वह उसे कण समान कर देगा और मेरे प्रभु की प्रतिज्ञा सत्य है। (९९) और हम उस दिन किसी को किसी में गंडमग कर देंगे और तुरही फूंकी जायगी फिर हम उन सबको एक ठौर करेंगे। (१००) और उस दिन हम अधर्म्मियों के आगे नर्क लायँगे। (१०१) जिनकी आंखें मेरे स्मरण से पट में थीं और जो सुन न सकते थे॥

रु० १२—(१०२) सो क्या अधर्म्मियों ने विचार कर लिया है कि मुझे छोड़ कर मेरे दासों को नाथ बनालें हमने अधर्म्मियों के निमित नर्क की आग्नि वर्षाने के हेतु उद्यत कर रखी है। (१०३) तू कहदे मैं तुम्हें बता दूँ कि किन कर्म्मों के कारण से बहुत नाश होने हारे हैं। (१०४) जिनका प्रयत्न इस संसार के जीवन में नाश हुआ और वह समझते रहे कि सुकर्म्म कर रहे हैं। (१०५) यही लोग हैं जिन्हों ने अपने प्रभु की आयतों और उसके मिलने को न माना उनके कर्म्म अकार्थ होगए और हम पुनरुत्थान के दिन उनके बचन स्थिर न रखेंगे। (१०६) इस कारण कि उन्हों ने अधर्म्म किया और हमारी आयतों और प्रेरितों से ठट्ठा किया। (१०७) जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनकी पहुनई के निमित फिर दौसकी वाटिकाएँ हैं। (१०८) जिनमें वह सदा रहेंगे और वह

---

* अर्थात् यात्रा। † हिज़क़िएल ३८:१।२। ‡ अंबिया ९६।४। § अर्थात् बनिहारों को इकत्र कर के पहुंचाओ॥

उसको बदलना न चाहेंगे। (१०९) कहदे यदि समुद्र स्याही हों मेरे प्रभु की बातों * के निमित तो अवश्य समुद्र खाली होजायं इससे पहिले कि संपूर्ण हों तेरे प्रभु की बातें यदि हम वैसाही सहायता को एक ओर पहुँचादें†। (११०) कह दे मैं भी तो तुमहीसा एक मनुष्य हूं मेरी ओर यह प्रेरणा आई है कि तुम्हारा ईश्वर अकेला ईश्वर है और जिसको अपने प्रभु से मिलने की आशाहो तो उचित है कि सुकर्म्म करे और अपने प्रभुकी सेवा में किसी को साझी न करे॥

१९ सूरए मरियम मक्की रुकू ६ आयत ९८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—कहय्अस् (१) यह तेरे प्रभु की दया का चर्चा है जो उसके दास जकरिया पर हुआ। (२) जब उसने अपने प्रभु को गुप्त शब्द से पुकारा। (३) बोला हे मेरे प्रभु मेरे हाड़ सिथिल होगए बृद्धापन के कारण मेरा सिर भड़क ‡ उठा। (४) और मैं तुझसे प्रार्थना करके हे मेरे प्रभु निराश नहीं रहा। (५) मैं अपने पीछे अधिकारियों से डरता हूं मेरी पत्नी बांझ है—सो मुझको अपने तौर से एक अधिकार दे। (६) जो मेरा और याकूब के बंश का अधिकारी बने और हे मेरे प्रभु उसको अपने ग्रहण योग्य बना। (७) हे जकरिया हम तुझे सुसमाचार सुनाते हैं एक पुत्र का उसका नाम यहिया § होगा। (८) और उससे पहिले हमने किसी को उसका नामाराशि नहीं किया। (९) वह बोला कि हे मेरे प्रभु मेरे यहां लड़का क्योंकर होसकता है मेरी स्त्री तो बांझ है और मैं बुढ़ापे की मर्याद को पहुंच चुका। (१०) कहा गया तेरे प्रभु ने इसी भांति कहा है मुझपर यह कार्य्य सहज है मैंने तुझको पहिले उत्पन्न किया जब कि तू कुछ भी नहीं था। (११) वह बोला हे मेरे प्रभु मुझे एक चिन्ह दे कहागया तेरे निमित यह चिन्ह है कि तू लोगों से बात न करसकेगा तीन रात्रि आरोग्य¶। (१२) फिर वह अपने लोगों के तौर कोठरी में से निकल कर आया और उनसे कह दिया जाप किए जाओ भोर और सांझ। (१३) हे यहिया पुस्तक को दृढ़ता से थामें ♢ रह और हमने उसको बालापनही से आज्ञा†† दी। (१४) और हमने

* अर्थात् लिखने के निमित बस न हों। † अथवा एक और उत्पन्न करदें योहन २१:२५। ‡ अर्थात श्वेत होगया। § लूका १:६१. राजाओं की दूसरी पुस्तक २५:२३. तवारीख पहिली पुस्तक २५:१,१. आज़्रा ८:१,२. यरमियाह ४०:८.। ¶ अर्थात तुझको कोई रोग न होगा तो भी तू न बोल सकेगा। ♢ इमरान १०। †† अर्थात व्यवस्था॥

उसको अपनी ओर से दया दी और आत्मा की शुद्धता और वह संयमी था और माता पिता का आज्ञाकारी और विरोधी और आज्ञा खंडन करनेहारा नहीं था। (१५) और उसको प्रणाम हो जिस दिन उत्पन्न हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन फिर जीवता उठाया जायगा॥

रु० २—(१६) और पुस्तक में मरियम का वर्णन कर जब वह अपने लोगों से पूर्व्व की ओर अलग जा बैठी। (१७) और उसने उनकी ओर से ओट करली और हमने उसकी ओर अपनी आत्मा को भेजा तो वह उसके सन्मुख अच्छा * मनुष्य सा बनके आया। (१८) कहनेलगी मैं तुझसे रहमान की शरणा मांगती हूं यदि तू सुकर्म्म करनेहारा है। (१९) वह बोला मैं तो केवल तेरे प्रभु का भेजा हुआ हूं जिस्तें तुझको एक पवित्र बालक देजाऊं। (२०) वह बोली भला मेरे बालक क्योंकर होगा यदपि इस समय लों मुझको किसी मनुष्य ने नहीं छुआ और न मैं कभी कुकर्म्मी थी। (२१) वह बोला मेरे प्रभु ने इसी भांति कहा है कि मुझपर यह सहज है और हम उसको मनुष्यों के निमित्त चिन्ह और अपनी ओर से दया बनायंगे और यह कार्य्य ठहर चुका है। (२२) फिर उसने उसको गर्भ † में लेलिया और उसको लेकर दूर स्थान में अलग जा बैठी। (२३) और उसको गर्भ की पीड़ें एक खजूर की जड़ के तीर लेआईं बोली यदि कि मैं इससे पहिले मरजाती और भूली बिसरी होजाती। (२४) फिर,उसके नीचे से उसको गुहराया कि शोक न कर तेरे प्रभु ने तेरे नीचे एक सोता उत्पन्न कर दिया। (२५) और खजूर की पेड़ी को हिला तो उससे तुझपर टटकी टटकी खजूरें गिरेंगी (२६) अन्न खा और पी और नेत्र शीतल कर और जो तू किसी मनुष्य को देखे। (२७) तो कह देना कि निस्सन्देह मैंने रहमान के निमित्त उपवास रखने की मनौती मानी है सो मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूंगी। (२८) फिर उसको अपनी जाति के निकट गोद में उठाए हुए लाई वह बोले हे मरियम यहतो तू एक अनोखी वस्तु लाई। (२९) हे हारून की बहिन ‡ नतो तेरा पिता बुरा मनुष्य था और न तेरी माता कुकर्म्मी थी। (३०) उसने उसकी ¶ ओर सैन कर दिया वह बोले हम गोद के बालक से कैसे बात करें। (३१) वह § बोला निस्सन्देह मैं ईश्वर का दास हूं उसने मुझे पुस्तक दी उसने मुझे भविष्यद्वक्ता किया।

---

* इनाम ६। † इमरान ५२. बकर ८९. और इसी सूरत की २१ आयत से यह जान पड़ता है कि महम्मद साहब ने इस बात को मान लिया कि ख्रीष्ट ईश्वरीय पराक्रम की इच्छा से उत्पन्न हुआ। ‡ इमरान ९। ¶ अर्थात बालक की ओर। § अर्थात बालक मायदा १०९॥

(३२) और मुझको आशीषित बनाया जहां कहीं मैं रहूं और मुझको आज्ञा दी प्रार्थना और दान की जबलों कि मैं जीता रहूं। (३३) और मुझको अपनी माता का आधीन बनाया और मुझे विरोधी और अभागी नहीं किया। (३४) और मुझ पर प्रणाम है जिस दिन मैं उत्पन्न हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन जीवता उठाया जाऊंगा। (३५) यह है मरियम पुत्र ईसा की सत्य वार्ता जिसमें लोग झगड़ते हैं। (३६) ईश्वर के निमित उचित नहीं कि अपने निमित पुत्र ले वह पवित्र है जब किसी कार्य्य की इच्छा करता है तो उसको कह देता है कि होजा और वह होजाता है। (३७) और निस्सन्देह * ईश्वर मेरा प्रभु है और तुम्हारा भी प्रभु है उसी की आराधना करो वही सीधा मार्ग है। (३८) और जत्थाएं परस्पर विभेद करती रहीं अधर्म्मियों के निमित दुर्दशा है जब उस बड़े दिन में उपस्थित होयंगे। (३९) क्या कुछ सुनते होंगे और क्या कुछ देखते होंगे जिस दिन हमारे सनमुख उपस्थित होंगे परन्तु यह दुष्ट तो आज खुली भ्रमणा में हैं। (४०) और उनको उस आह भरनेहारे दिन से डरादे जब हर बात का निर्णय करदिया जायगा और वह लोग अचेती में पड़े हैं और विश्वास नहीं लाते। (४१) निस्सन्देह हमही पृथ्वी के अधिकारी होयंगे और उनके भी जो उसपर हैं वह हमारीही ओर लौटा दिए जायंगे॥

रु०—३ (४२) पुस्तक में इबराहीम का चर्चा कर निस्सन्देह वह सत्यबादी भविष्यद्वक्ता† था। (४३) जब उसने अपने पिता से कहा ऐसी वस्तु को क्यों पूजता है जो न सुने और न देखे। (४४) और न हमारे किसी अर्थ में आवे हे पिता मेरे तीर एक ऐसी आज्ञा पहुँची है जो तुम्हारे निकट नहीं पहुंची तू मेरे मार्ग पर चल मैं तुझे सीधा मार्ग दिखा दूंगा। (४५) हे पिता दुष्टात्मा की सेवा न कर निस्सन्देह दुष्टात्मा रहमान का विरोधी है। (४६) हे पिता मुझको सन्देह है कि तुमको रहमान की ओर से दण्ड पहुँचे तो तू दुष्टात्मा के साथियों में होजाय। (४७) वह बोला तू मेरे देवों का विरोधी है हे इबराहीम निस्सन्देह यदि तू न मानेगा तो मैं अवश्य तुझको पथरवाह करूंगा तुझ से बहुत काल लौं के निमित दूर हो। (४८) वह बोला तेरा कुशल हो मैं तेरे निमित अपने प्रभु से क्षमा मागूंगा निस्सन्देह मेरा प्रभु तुझ पर दयालु है। (४९) मैं तुझ से और उन वस्तुओं से जिनको तू ईश्वर को छोड़ पुकारता है अलग होजाऊँगा और मैं अपने प्रभु को पुकारूंगा

* यह ईसाने कहा ॥ † कुरान में भविष्यदवक्ता का शब्द इबराहीम इज़हाक और याकूब परबोला गया है हूदसालह और श्वएब के निमित प्रेरित उपयुक्त हुआ है मूसा ईसा महम्मद इत्यादि के निमित भविष्यदवक्ता और प्रेरित दोनों उपयुक्त किए गए हैं॥

और मैं अपने प्रभु को पुकार के निराश न रहूंगा। (५०) और जब हम उनसे और उनकी मूर्तों से जिनको वह ईश्वर के उपरान्त पूजते थे अलग हुआ तो हमने उसको इजहाक और याकूब दिया और प्रत्येक को भविष्यद्वक्ता बनाया। (५१) और हमने उनको अपनी दया से दिया और उनकी चर्चा को ऊंचा किया॥

रु० ४—(५२) पुस्तक में मूसा का वर्णन कर वह मुख्य दास था और पठाया हुआ भविष्यद्वक्ता था। (५३) और हमने उसे तूर की दहनी ओर से गुहराया और हमने उसे निकट बुला लिया भेद बताने को। (५४) और उसको अपनी दया से उसका भाई हारून भविष्यद्वक्ता बनाकर दिया। (५५) और पुस्तक में चर्चा कर इस्माईल का वह बाचा का सच्चा था और पठाया हुआ भविष्यद्वक्ता था। (५६) और अपने घर वालों को प्रार्थना और दान की आज्ञा देता था और अपने प्रभु के निकट गृहीत था। (५७) और चर्चा कर पुस्तक में *इदरीस का वह बड़ा सत्यवादी भविष्यद्वक्ता था। (५८) और हमने उसे ऊंची ठौर पर उठा लिया। (५९) यह वह लोग हैं जिन पर ईश्वर ने उपकार किया भविष्यद्वक्ताओं में आदम के वंश में जिनको हमने नूह के साथ चढ़ा लिया और इबराहीम और इसराईल के वंश में से और उनमें से जिनको हमने शिक्षा दी और चुन लिया जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं तो दण्डवत में रोते हुए गिर पड़ते थे। (६०) और उनके पश्चात् उनके कपूत आए जिन्हों ने प्रार्थना को खोया किया और शारीरिक इच्छा के पीछे पड़ लिए सो अब श्यवह भ्रमणा को देखेंगे। (६१) परन्तु जिसने पश्चात्ताप किया और विश्वास लाया और सुकर्म किए तो वह वैकुण्ठ में प्रवेश होंगे और उन पर कुछ अनीति न होगी। (६२) सदा के वैकुण्ठों में जिनकी प्रतिज्ञा रहमान ने गुप्त में अपने दासों से की है निस्सन्देह उसकी प्रतिज्ञा अवश्य आयगी। (६३) और वहां मिथ्या न सुनेंगे केवल प्रणाम के और उन लोगों को वहां भोर और सांझ जीविका मिलेगी। (६४) यह वह वैकुण्ठ जिसका हम उसके दासों में से उस मनुष्य को अधिकारी बनाएंगे जो संयमी होगा। (६५) हम नहीं उतरते परन्तु तेरे प्रभु की आज्ञा से उसी का है जो हमारे आगे पीछे है और जो हमारे पीछे है और जो कुछ उनके बीच में है तेरा प्रभु उसको बिसरने हारा नहीं है। (६६) वह प्रभु आकाशों का और पृथ्वी

* अर्थात् हनूक॥

का और जो कुछ उनके बीच में है तू उसी की सेवा कर और उसीकी सेवा पर संतुष्ट रह क्या तू उसके किसी नामाराशि को जानता है ॥

रु० ५—(६७) और मनुष्य कहता है क्या जब मैं मरजाऊंगा तो फिर जीवता होकर निकाला जाऊंगा। (६८) क्या यह मनुष्य नहीं जानता कि हमने उसको पहिले उत्पन्न किया जब कि वह कुछ भी नहीं था। (६९) तेरे प्रभु की सौंह हम अवश्य इकत्र करेंगे उनको और दुष्टात्माओं को भी और हम उनको नर्क के सामने लाखड़ा करेंगे घुटनों पर गिरे हुए। (७०) और फिर हम अलग खड़ा करेंगे हर जत्था में से उस मनुष्य को जो रहमान पर अधिक अकड़ प्रगट करता था। (७१) और हम भलीभांति जानते हैं जो उनमें प्रवेश * होने के अधिक योग्य हैं। (७२) और तुममें ऐसा कोई नहीं जो उसमें प्रवेश न हो यह प्रतिज्ञा तेरे प्रभु पर उचित और नियत है। (७३) फिर हम संयमियों को बचा लेंगे और दुष्टों को उसीमें औंधे गिरे छोड़ देंगे। (७४) और जब उन पर हमारी प्रत्यक्ष आयतें पढ़ीजाती हैं तो अधर्मी विश्वासियों से कहते हैं कि दोनों जत्थाओं में से किसका घर उत्तम और किसकी सभा अच्छी है। (७५) कहदे जो भ्रम में रहा उनसे पहिले हम बहुतेरी जातियों को नाश कर चुके जो अपने विभव और दिखाव में इनसे उत्तम थे। (७६) कहदे जो भ्रम में रहा तो उसको रहमान अवसरही देता चला जाता है। (७७) यहांलों कि वह बात देखलें कि जिसकी प्रतिज्ञा उनसे कीजाती है चाहे दण्ड अथवा वह घड़ी † तो उस समय उनको ज्ञान पड़ेगा कि किसकी पदवी बुरी है और किसका दल बलहीन। (७८) और ईश्वर शिक्षा वालों को शिक्षा में बढ़ाता जाता है। (७९) और तेरे प्रभु के यहां शेष रहनेहारी भलाइयां उत्तम हैं प्रतिफल में और उत्तम हैं अन्त में। (८०) तूने उसे देखा जिसने ‡ हमारी आयतों के साथ अधर्म्म किया और कहा कि मुझे अवश्य संपति और संतति मिलेगी। (८१) क्या उसे गुप्त का ज्ञान होगया अथवा रहमान से उसने नियम कर रखा है। (८२) कभी नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख रक्खेंगे और हम उसके दण्ड को बढ़ातेही जायंगे। (८३) और हम उसे अधिकारी करेंगे उसका जो वह कहता और वह हमारे समीप अकेलाही आयगा। (८४) उन्होंने ईश्वर को छोड़ और देव बनारखे हैं कि वह उनके सहायक हों। (८५) कभी नहीं वह उनकी सेवा से मुकरेंगे और उनके विरोधी होजायंगे ॥

---

* अर्थात नर्क में। † अर्थात पुनरुत्थान हज ५४। ‡ बालके आसके विरुद्ध ॥

रु० ६—(८६) क्या तूने नहीं देखा कि हमने अधर्म्मियों पर दुष्टात्माओं को छोड़ रखा है कि वह उनको भटकाते रहते हैं। (८७) सो तू उन पर शीघ्रता मत कर बस हमतो उनकी गिन्ती पूरी कररहे हैं। (८८) जिस दिन हम संयमियों को रहमान के निकट पाहुनों के समान इकत्र करेंगे। (८९) और पापियों को नर्क की ओर प्यासे हांकदेंगे। (९०) उनको बिन्ती कराने का अधिकार न रहेगा परन्तु हां जिसने रहमान से नियम करलिया हो। (९१) वह कहते हैं कि रहमान ने पुत्र लेरखा है यह तो तुम ऐसी भारी बात लाए हो। (९२) निकट है कि आकाश फट पड़े उसके कारण और पृथ्वी फटजाय और पर्व्वत कांप कर गिर पड़ें। (९३) रहमान के निमित बेटा प्रमाणिक किया है यद्यपि रहमान को उचितही नहीं कि अपने निमित पुत्र ले। (९४) निस्सन्देह प्रत्येक वस्तु जो आकाशों और पृथ्वी में है रहमान के सन्मुख दास होके उपस्थित होंगी उसने उनको घेर रखा है और गिन्ती कर रखी है उनकी गिन्ती को। (९५) और उनमें से प्रत्येक पुनरुत्थान के दिन उसके सन्मुख अकेला आयगा। (९६) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित रहमान प्रीत उपजायगा। (९७) हमने इसको * इस हेतु तेरी जीभ के निमित सहज कर दिया जिस्तें तू उसके द्वारा संयमियों को सुसमाचार सुनाए और उपद्रवी जाति को डराए। (९८) उनसे पहिले हमने कितनीही जातियों को नाश कर दिया क्या तू उनमें से किसी एक की भी आहट पाता है अथवा उनमें से किसी की भनक सुनता है॥

२० सूरए तोय (त) मक्की रुकू ८ आयत १३५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) त–हमने तुझ पर कुरान इस हेतु नहीं उतारा कि तू कष्ट उठावे। (२) परन्तु जो डरता है उसके निमित शिक्षा है। (३) उसीने उतारा है जिसने पृथ्वी और ऊंचे आकाशों को उत्पन्न किया है। (४) रहमान ने जो स्वर्ग पर स्थिर † है। (५) उसीका है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वीमें है और जो उन दोनों के बीच में है और जो कुछ पृथ्वी के नीचे ‡ है। (६) और यदि तू टेर कर बात करे तो निस्सन्देह वह गुप्त भेदों का जाननेहारा है। (७) ईश्वर है कि उसके उपरान्त

* अर्थात कुरान को। † अर्थात बैठा है। ‡ अर्थात पाताल॥

कोई देव नहीं सब अच्छे नाम उसी के हैं। (८) क्या तुझको मूसा की कहावत पहुँची। (६) जब उसने अग्नि देखी और अपने कुटुंबियों से कहा ठहरो निस्संदेह मैं अग्नि देखरहा हूँ। (१०) आशा है कि मैं उसमें से तुम्हारे तीर चिनगारी ले आऊं अथवा उस अग्नि से मार्ग का खोज पाऊँ। (११) और जब वह उसके निकट आया तो शब्द हुआ हे मूसा। (१२) निस्सन्देह मैं तेरा प्रभु हूँ अपने पाओं से पनहीं उतार डाल निस्सन्देह तू पवित्र घाटी तवी में है। (१३) और मैंने तुझको चुन लिया है तू कान लगा कर सुन जो कुछ तुझ पर प्रेरणा की जाती है। (१४) निस्सन्देह मैं ही ईश्वर हूँ मेरे उपरान्त कोई देव नहीं मेरीही सेवा कर और प्रार्थना में स्थिर रह मेरा स्मर्ण करने को। (१५) निस्सन्देह वह घड़ी आनेहारी है और मैं उसको गुप्त रखना चाहता हूँ। (१६) जिस्तें हर मनुष्य को उसके प्रयत्न का प्रतिफल मिले। (१७) ऐसा न हो कि तुझे वह मनुष्य रोकदे जो इसकी प्रतीत नहीं करता और जो अपनी शारीरिक इच्छा के पीछे पड़ा है कहीं ऐसा न हो कि तू नष्ट होजाय। (१८) हे मूसा तेरे दाहिने हाथ में यह क्या है। (१९) वह बोला यह मेरी लाठी है मैं इस पर टेक लगाता हूँ और अपने खेड़ के निमित इससे पत्ती झाड़ता हूँ और इससे मैं और बहुत से कार्य्य करता हूँ। (२०) कहा हे मूसा उसको डालदे। (२१) उसने उसे डाल दिया तो तत्काल वह सर्प बनगई जो दौड़ रहा था। (२२) कहा गया उसे पकड़ ले और न डर हम उसको उसकी पूर्व्व दशा में करदेंगे। (२३) और अपना हाथ अपनी कांख में रख तो वह वहां से श्वेत निकलेगा बिना दोष के यह दूसरा चिह्न है। (२४) कि तुझे अपने बड़े चिह्नों में से दिखाएं। (२५) फिराऊन के निकट जा कि निस्सन्देह वह विरोधी है॥

रु० २—(२६) वह बोला मेरे प्रभु मेरे निमित मेरे हृदय को फैलादे। (२७) और जो कुछ मुझे आज्ञादी जाती है मेरे निमित सहज कर। (२८) और मेरी जिह्वा की गांठ खोलदे। (२६) जिस्तें वह मेरी बात समझलें। (३०) और मेरे कुटुंब में से मेरे हेतु मन्त्री नियत कर। (३१) मेरा भाई हारून। (३२) उसके द्वारा मेरी कटि दृढ़ कर। (३३) और उसको मेरे कार्य्य में भागी कर। (३४) कि हम दोनों बहुतायत से तेरा जाप करें और बहुतायत से तुझे स्मर्ण करें। (३५) निस्सन्देह तू हमारी दशा को भलीभांति देख रहा है। (३६) कहा गया हे मूसा तेरा प्रश्न ग्रहण हुआ। (३७) और निस्सन्देह हमने तुझपर दूसरीबार

उपकार किया। (३८) जब हमने तेरी माता को प्रेरणा की जो कुछ हमें प्रेरणा करना था। (३६) कि उसको तावूत* में रखके नदी में डालदे और फिर नदी उसको तट पर लाडाले और उसे मेरा और उसका एक शत्रु लेले और मैंने अपनी ओर से तुझमे प्रीति उपजाई। (४०) जिस्तें मेरी दृष्टि में तू बने। (४१) जब तेरी बहिन चली और कहने लगी कि आ मैं तुमको एक ऐसी बताऊँ जो उसको पाले † फिर हमने तुझको तेरी माता के निकट पहुँचाया जिस्तें उसके नेत्र शीतल‡ रहें और शोक न करे और तूने एक मनुष्य को घात किया फिर हमने तुमको उस शोक से रहित किया और हमने तेरी परिक्षा करने के निमित तुझे परिश्रम में डाला। (४२) और तू कुछ समयलों मिदियान के लोगों में रहा फिर हे मूसा जब तू अपने ठहराए¶ हुए को पहुँचा। (४३) और मैंने तुझे विशेष अपने निमित चुना है। (४४) तू और तेरा भाई मेरे चिन्हों सहित जा और मेरे स्मर्ण में आलस न करना। (४५) तुम दोनों फिराऊन के निकट जाओ वह विरोधी होरहा है। (४६) उससे नम्रता से वार्तालाप करो कदाचित वह समझे अथवा डरे। (४७) वह दोनों बोले हे हमारे प्रभु निस्सन्देह हमको भय है कि वह हमसे अनीति करे अथवा विरोध करे। (४८) कहा गया मत डरो मैं तुम्हारे संग हूँ सुनता और देखता हूँ। (४९) सो उसके निकट जाओ और कहो कि हम तेरे प्रभु के पठाए हुए हैं तू इसरायल सन्तान को हमारे संग पठा दे और उनको दुख न दे निस्सन्देह हम तेरे निकट तेरे प्रभु की ओर से चिन्ह लेकर आए हैं और जो शिक्षा का अनुयाई होता है उसके निमित कुशल है। (५०) निस्सन्देह हमारी ओर प्रेरणा की गई है कि झुठलाने हारे और मुहं मोड़ने हारें पर दण्ड होगा। (५१) उसने पूछा हे मूसा तुम दोनों का प्रभु कौन है। (५२) उसने उत्तर दिया हमारा प्रभु वह है जिसने हर वस्तु को उसका रूप दिया है और फिर शिक्षादी। (५३) उसने पूछा इससे पूर्व जातियों का क्या हुआ। (५४) उत्तर दिया उनका ज्ञान मेरे प्रभु के तीर पुस्तक में है मेरा प्रभु बहकता है न भूलता है। (५५) जिसने तुम्हारे निमित पृथ्वी को बिछौना बना दिया और उसमें तुम्हारे निमित मार्ग बना दिए और आकाश से जल उतारा फिर हमने उससे अनेक प्रकार की भिन्न भिन्न बनस्पाति उगाई। (५६) जिस्तें खाओ और अपने पशुओं को चराओ निस्सन्देह सबमें बुद्धिवानो के निमित चिन्ह हैं।

---

* मंजूषा। † कसस ११—१२। ‡ मरियम २६। ¶ अर्थात नियत समय॥

रु० ३—(५७) उसीमें से हमने तुमको भी उत्पन्न किया और तुमको फिर उसी में लौटा लेजायंगे और उसी में से तुमको दूजीबार निकालेंगे। (५८) और हमने उसको अपने सब चिन्ह दिखाए परन्तु उसने उसे झुठलाया और उनसे मुकर गया। (५९) बोला हे मूसा क्या तू हमको हमारे देश से निकालने आया अपने टोना के बल से। (६०) सो हमभी तेरे साम्हने ऐसाही टोना लायंगे तू अपने और हमारे बीच एक नियम नियत कर जिसके विरुद्ध न हम करें न तू एक खुली भूमि में। (६१) वह बोला तुम्हारे निमित्त उत्सव का दिन नियत किया लोग दिन चढ़े इकत्र कर लिए जायं। (६२) फिर फिराऊन लौट गया और उसने अपने सब छल * इकत्र किए और फिर आया। (६३) मूसा ने उनसे कहा शोक है तुम पर ईश्वर पर मिथ्या बंधक न बांधो। (६४) नहीं तो वह तुम्हें दण्ड से नाश करेगा निस्सन्देह बंधक बांधनेहारा निराश होगा। (६५) और वह परस्पर इस विषय में झगड़ते रहे और गुप्त में सोच बिचार करते रहे। (६६) और कहने लगे यह तो दोनों टोनहे हैं और तुमको तुम्हारे देश से अपने टोना के बल से निकालना चाहते हैं जिस्तें कि तुम्हारी उत्तम रीतों को मलियामेट करदें। (६७) सो तुम अपने सब टोना इकत्र करो और पांति बांधकर आओ और आज के दिन उसी का मनोर्थ सिद्ध है जो प्रबल हो। (६८) वह बोले हे मूसा अथवा तू प्रथम डालदे अथवा हम प्रथम डालदें। (६९) वह बोला कि नहीं तुम डालो सो उनकी रस्सियां और लाठियां दौड़ती हुई दिखाई दीं। (७०) तब मूसा अपने मनमें भयभीत हुआ। (७१) हमने कहा मत डर निस्सन्देह तूही प्रबल रहेगा। (७२) और डालदे जो कुछ तेरे हाथ में है कि जो कुछ उन्होंने बनाया है उसे निगल जाय यह तो केवल टोना का छल है और टोनहा जहां कहीं जायं जय नहीं पाता। (७३) फिर टोनहे दण्डवत करने लगे और कहने लगे कि हम हारून और मूसा के प्रभु पर विश्वास लाए। (७४) उसने † कहा क्या तुम विश्वास लेआए इसके पहिले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूं निस्सन्देह वह तुम्हारा गुरू है जिसने तुमको टोना सिखाया सो अब मैं निश्चय तुम्हारे हाथ और पाँव उलटे और सीधे ओर से कटवाऊंगा और अवश्य तुमको क्रूश पर चढ़ाऊंगा खजूर की पेड़ियों पर और तुमको जान पड़ेगा कि हममें से किसका दण्ड कठिन और स्थायित है। (७५) वह बोले हमतो तुझको इस पर कभी अधिक उपमा न देंगे हम पर जो प्रत्यक्ष चिन्ह आचुके और उस पर जिसने हमको सृजा है जो तुझे करना है सो

---

* अर्थात टोनहे।   † अर्थात फिराऊन ने॥

करले तूतो इसी संसार के जीवन में आज्ञा करसकता है निस्सन्देह हम अपने प्रभु पर विश्वास लाचुके हैं जिस्तें वह हमारे अपराध क्षमा करे और वह—वह टोना भी क्षमा करदे जिसके करने के निमित तूने हमको वेवश किया और ईश्वर उत्तम और अधिक स्थायिन है। (७६) निस्सन्देह जो अपने प्रभु के सन्मुख अपराधी वनकर जायगा उसके निमित नर्क है जिसमें न मरता है न जीता है। (७७) परन्तु जो उसके सन्मुख विश्वासी होके आता है और उसने सुकर्म्म किए हैं तो वही लोग हैं जिनके निमित उच्च पदविएं हैं। (७८) और सदा के वैकुण्ठ हैं उनके नीचे धाराएं वहती हैं उनमें सदा रहेंगे यह उसके निमित प्रतिफल है जो पवित्र रहा॥

रु० ४—(७६) और हमने मूसा की ओर प्रेरणा की कि मेरे दासों के संग रात्रि को यात्रा कर और उनके निमित समुद्र में सूखा मार्ग बनादे। (८०) न तुझ को पकड़े जाने का दुविधा है न भय। (८१) फिर फिराऊन अपनी सेनाओं के संग उनके पीछे चल पड़ा और उनको घेर लिया समुद्र ने और कैसा कुछ घेरा और फिराऊन ने अपनी जाति को भटकाया और शिक्षा न दी। (८२) हे इसराएल सन्तान हमने तुमको तुम्हारे शत्रुओं से छुड़ाया और तुम से तूर के दहनी ओर की वाचा की और हमने तुम पर मन्न और सलवा उतारा। (८३) खाओ पवित्र वस्तुएं जो हमने तुमको दीं और इसमें मर्याद से न बढ़ना ऐसा न हो कि तुम पर मेरा कोप भड़के जिस किसी पर मेरा कोप भड़का तो वह अवश्य नाश होगया। (८४) और मैं बड़ा क्षमा करने हाराहूं उस मनुष्य को पश्चाताप करे और विश्वास लाए और धर्म के कर्म करे और अगुवाई पर स्थिर रहे। (८५) हे मूसा तूने किस कारण अपनी जाति से शीघ्रता की। (८६) बोला वह यह मेरे पीछे हे मेरे प्रभु मैं शीघ्र तेरी ओर आया जिस्तें तू प्रसन्न हो। (८७) कहा हमने तेरी जाति को तेरे पीछे विपति में डाल दिया और उनको सामरी ने भटका दिया। (८८) मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध से भरा और शोकित लौट आया। (८६) बोला हे जाति क्या तुम्हारे प्रभु ने तुम से उत्तम वाचा की प्रतिज्ञा न की थी फिर क्या तुम पर समय बढ़गया अथवा तुमने यह इच्छा की कि तुम पर तुम्हारे प्रभु का कोप आवे और तुमने मेरी वाचा के विरुद्ध किया। (९०) वह बोले हमने तेरी वाचा को अपनी शक्ति से भंग नहीं किया परन्तु हम से उस जाति के आभूषणों की गठरियां उठवाई गई और हमने उन्हें फेंक दिया और फिर इसी भांति सामरी ने डाल दिया और उसने उसमें से एक शरीर धारी बछड़ा निकाला जो शब्द * करता था और

* निर्गमन ३२ : २४ ॥

वह बोला यही तुम्हारा ईश्वर है और मूसा का ईश्वर वरन वह भूल गया। (९१) भला यह इतना भी न देख सकते थे कि न तो वह उनको उलट कर किसी बात का उत्तर देता न लाभ और हानि की शक्ति रखता है।

रु० ५—(९२) और हारून ने उनसे पहिले कहा था कि हे जाति तुम इससे परख जाते हो निस्सन्देह तुम्हारा प्रभु रहमान है तुम मेरे कहे पर चलो और मेरा वचन मानो। (९३) वह बोला कि हम निरन्तर उसी पर रुके रहेंगे जब लों मूसा हमारे निकट लौट कर न आए। (९४) उसने* कहा हे हारून किस बात ने तुझे मेरा अनुयाई होने से रोका जो तूने इन्हें भटकते हुये देखा क्या तूने मेरी आज्ञा का उलंघन किया। (९५) वह बोला हे मेरी माता के पुत्र मुझे मेरी दाढ़ी और मेरे सिर से न पकड़ निस्सन्देह मैं इस बात से डर गया कहीं ऐसा न हो कि तू कहे कि तूने इसरायल सन्तान में फूट डालदी और मेरा वचन स्मर्ण न रखा। (९६) फिर कहा हे सामरी तेरा प्रयोजन क्या था वह बोला मैंने वह देखा जो वह न देखते थे तब मैंने एक मुट्ठी भरधूर भेजे † हुए के पांव के नीचे से ले ली और उसे डाल दिया मेरे मन ने मुझे ऐसीही सुझाई। (९७) उसने कहा चल परे हो जीवन में तो तेरा यही दण्ड है कि कहता फिरे कि मुझे न छूना और तेरे निमित एक बाचा और भी है जिसके कभी विरुद्ध न होगा और देख अपने देव की ओर जिस पर तू झुका बैठा था हम उसको फूँक देंगे और फिर उसको बिखेर देंगे नदी में बहाकर। (९८) तुम्हारा ईश्वर ही केवल ईश्वर है उसके उपरान्त कोई ईश्वर नहीं और उसके ज्ञानके फैलाव में सब वस्तु हैं। (९९) इस रीति हम तुझको उनके वृत्तान्त जो पहिले होगए सुनाते हैं और हमने तुझको अपने तीर से चर्चा ‡ दी है। (१००) और जिस ने इससे मुख फेरा निस्सन्देह पुनरुत्थान के दिन भार उठायगा। (१०१) और वह सदा उसे उठाए रहेंगे और पुनरुत्थान के दिन उनके निमित यह बुरा बोझ होगा। (१०२) जिस दिन तुरही फूंकी जायगी और हम पापियों को घेर लायंगे उस दिन उनकी आंखे नीलीं होंगी। (१०३) और परस्पर चुप के चुपके कहेंगे कि बस तुम दस दिन ठहरे होओगे। (१०४) हम भली भांति जानते हैं जो यह कहते हैं जब उनमें अच्छे मार्ग वाला कहेगा कि बस एक दिन ठहरे ¶ होओगे।

---

* अर्थात मूसा ने। † अर्थात जिबराईल। ‡ अर्थात कुरान। ¶ सूरए मोमनून ११९।

रु० ६—(१०५) वह तुझ से पर्वतों के विषय में प्रश्न करते हैं कहदे मेरा प्रभु उन्हें उड़ा कर बिखेर * देगा। (१०६) और उन्हें समथर भूमि करके छोड़ेगा कि तू उसमें न कहीं मोड़ देखेगा न टीला। (१०७) उस दिन मनुष्य पुकार ने वालों के पीछे दौड़ेंगे जिसमें टेढ़ाई नहीं और रहमान के सन्मुख बोलना बन्द हो जायगा और तू केवल फुसफुस के और कुछ न सुनेगा। (१०८) उस दिन विन्ती काम न आयगी परन्तु जिसे रहमान ने आज्ञा दी है और जो उसके सन्मुख अपने वचन में गृहीत है। (१०९) वह जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है और वह उसके ज्ञान को घेर नहीं सकते। (११०) और उस दिन जीवते और सदा रहनेहारे के सन्मुख मुँह झुक जायंगे निस्सन्देह जिसने अनीति का भार लादा वह निष्फल हुआ। (१११) और जो सुकर्म्म करेगा और वह विश्वासी भी हो तो न उसे अन्याय का भय है न हानि का। (११२) ऐसेही हमने कुरान को अरबी में उतारा और भिन्न भिन्न उसमें डर सुनाए कि लोग संयमी बनें अथवा उनके निमित शिक्षा का कारण हो। (११३) सो ईश्वर सत्यवादी राजा का पद उच्च है और तू कुरान में शीघ्रता † मत कर जबलों उसकी प्रेरणा का निर्णय न होचुके और कह दे मेरे प्रभु मुझे और अधिक ज्ञान दे। (११४) और हमने उससे पहिले आदम से बाचा लीथी परन्तु वह भूल गया और हमने उसमें स्थिरता न पाई॥

रु० ७—(११५) जब हमने दूतों से कहा कि आदम को दण्डवत करो तो सबने दण्डवत की परन्तु इबलीस ने न माना और फिर हमने कह दिया कि हे आदम यह तेरा और तेरी पत्नी का शत्रु है ऐसा न हो कि तुम दोनों को बैकुण्ठ से निकलवादे और फिर तू बिपता में जापड़े। (११६) निस्सन्देह यहां तू भूखा है न नंगा। (११७) और न यह कि प्यासा रहे और न धूप खाय। (११८) तो दुष्टात्मा ने उसमें दुविधा डाला कहा कि हे आदम मैं तुझे सर्वदा जीते ‡ रहने का पेड़ और ऐसा राज्य जो कभी पुराना न हो बताऊं। (११९) फिर वह उसमें से खागए और उन पर उनके लज्या स्थान प्रगट होगए और अपने ऊपर बैकुण्ठ के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने प्रभु की आज्ञा उलंघन की और भटक गया। (१२०) फिर उसके प्रभु ने उसे चुन लिया और उसकी ओर प्रवाहित

* सूरए हाक़ा मुज़ंमिल मुरसलात में पहाड़ों को चूर चूर करने की धमकी है सूरए नबा में सूक्ष्म भाप मारिज और कारया में धुनी हुई रुई वाकया और तकवीर में प्र्व्वत चला देने का वर्णन हुआ है।
† सूरए कयामत १६—१९ लों। ‡ ऐराफ १९. उत्पति २:९. ३:५

हुआ और उसे शिक्षा दी। (१२१) और कहा कि यहां से दोनों उतरो एक का एक वैरी फिर जब तुम्हारे तीर मेरी ओर से शिक्षा आवे। (१२२) तो जो मेरी शिक्षा पर चलेगा वह न भटकेगा और न विपता में पड़ेगा। (१२३) और जो मेरे सुमरण से मुहँ फेरेगा निस्सन्देह उसके निमित सकेती की जीविका है। (१२४) और हम उसको पुनरुत्थान के दिन अन्धा * उठायंगे। (१२५) और वह कहेगा हे मेरे प्रभु तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया यदपि मैं तो सुझाखा था। (१२६) उत्तर मिलेगा इसी प्रकार तेरे निकट हमारी आयतें आईं पर तूने उनको बिसरा दिया इसी प्रकार तू भी आज बिसार दिया गया। (१२७) हम उसको ऐसेही दण्ड दिया करते हैं जो अनीति करता है और जो अपने प्रभु की आयतों की प्रतीत नहीं करता अन्त के दिन का दण्ड अति कठिन और स्थायिन है। (१२८) क्या उनको इससे सिक्षा नहीं हुई कि हमने कितने संतानों को उनसे पूर्व्व नाश कर दिया यह उन्हीं के निवासस्थान में फिरते हैं निस्सन्देह उनमें बुद्धिमानों के हेतु चिन्ह हैं॥

रु० ८—(१२९) यदि एक बचन पहिले तेरे प्रभु की ओर से न होचुका होता और बाचा नियुक्त न हुई होती तो दण्ड उचित होता। (१३०) जो कुछ वह कहते हैं उस पर धीरज धर और अपने प्रभु की स्तुति में जाप कर सूर्य्य के उदय और अस्त होने के पहिले और रात्रि के समय में भी जाप कर और दिन के सिरों पर भी जिस्तें तू प्रसन्न रहे। (१३१) और तू अपने नेत्र उन वस्तुओं की ओर न फाड़ जो हमने बर्तने के निमित उसमें से थोड़ों को दी हैं जगत का सिंगार उनकी परिक्षा के हेतु तेरे प्रभु की दी हुई जीविका उत्तम और स्थायिन है। (१३२) और अपने कुटुम्ब को प्रार्थना की आज्ञा कर और आप भी उस पर स्थिर रह हम तुझसे जीविका का प्रश्न नहीं करते बरन आपही तुझे जीविका देते हैं संयमियों का अन्त अच्छा है। (१३३) वह कहते हैं कि अपने प्रभु के निकट से क्यों कोई चिन्ह नहीं लाता है क्या जो पूर्व्व पुस्तकों में प्रत्यक्ष शिक्षा है वह, उनके तीर नहीं आई। (१३४) यदि हम उनको पहिलेही किसी दण्ड से नाश कर देते तो कहते हे हमारे प्रभु तूने क्यों न हमारे तीर कोई प्रेरित भेजा कि हम तेरे बचन के अनुगामी होते पहिले इसके कि हम तुच्छ और निन्दित हों। (१३५) कहदे हर एक बाट जोहता है सो तुम भी बाट जोहते रहो आगे चल कर तुम्हें जान पड़ेगा कि सीधे मार्ग पर कौन है और किसने मार्ग पाया है॥

* सूरए ज़िमर ६९।

२१ सूरए अंबिया मक्की रुकू ७ आयत ११२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

पारा१७. रुकू १—(१) मनुष्यों का लेखा निकट आगया और वह अचेतीही में पड़े हुए मुख फेर रहे हैं। (२) उनके निकट उनके प्रभु की ओर से कोई शिक्षा नहीं आई कि वह उसको सुनकर उसको हँसी में न डालते हों। (३) उनके मन खेल में लगे हुए हैं और उन दुष्टों ने चुपके चुपके काना फूसी की कि यह क्या है केवल इसके कि तुम्हारे जैसा मनुष्य फिर टोने के समीप देखते हुए क्यों आते हो। (४) मेरा प्रभु जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में कहाजाता है जानता है और वह सुनने हारा और जाननेहारा है। (५) परन्तु वहतो कहते हैं कि यह बेहेतू विचार हैं और उसने उसे गढ़ लिया है* वरन वह कवि † है सो वह हमारे निकट ऐसा चिन्ह लावे जिस भांति अगले पठाए हुए लाए थे। (६) उनसे पहिले जिस बस्ती को हमने नाश किया बिश्वास न लाई यह अब क्योंकर विश्वास लाएंगे। (७) हमने तुझसे पहिले भी मनुष्यही भेजे थे और हम उनकी ओर प्रेरणा करते थे सो चर्चा ‡ करनेहारों से पूछलो यदि तुम नहीं जानते। (८) हमने उनको ऐसा शरीर नहीं दिया था जो भोजन न करता हो और वह सदा रहनेहारे न थे। (९) फिर हमने उनको बाचा सत्य कर दिखाई और हमने उनको और जिसको चाहा बचा लिया और मर्याद से बढ़नेहारों को नाश कर दिया। (१०) और हमने तुम्हारी ओर पुस्तक उतारी है जिसमें तुम्हारे निमित्त शिक्षा है क्या तुमको बुद्धि नहीं॥

रु० २—(११) और कितनी ही बस्तियां जो दुष्ट थीं हमने नाश करदीं और उनके पीछे दूसरे मनुष्य खड़े किए। (१२) और जब उन्होंने हमारे दण्ड की आहट पाई वह उससे भागने लगे। (१३) मत भागो लौट जाओ जहां तुमको भोग बिलास मिला था और अपने घरों को कदाचित तुम्हारी कुछ पूछ हो। (१४) वह बोले हम पर शोक निस्सन्देह हम दुष्ट थे। (१५) फिर वह बराबर यही चिल्लाते रहे यहां लों कि हमने उनको जड़से काटे और बुझे हुए के समान कर दिया। (१६) और आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनमें है हमने खेल के निमित नहीं रचा। (१७) यदि हम चाहते कि खेल रचें तो हम अपनेही निमित रचते यदि हम को ऐसा करना होता। (१८) वरन हम सत्य को असत्य

* अर्थात कुरान। † अर्थात शाअर। ‡ अर्थात पुस्तकवालों से॥

पर फेंक मारते सो वह उसको तोड़ डालता है और वह तत्काल मिट जाता है शोक है जो तुम वर्णन * करते हो । (१९) उसी का है जो कोई आकाशों और पृथ्वी में है और जो उसके निकट है वह उसकी आराधना से अहंकार नहीं करते और न थकते हैं । (२०) वह रात और दिन जाप में लगे रहते हैं और बस † नहीं करते (२१) क्या उन्हों ने पृथ्वी में ऐसे ईश्वर बना रखे हैं जो उठा ‡ खड़ा करेंगे । (२२) यदि दोनों § में ईश्वर को छोड़ और ईश्वर होते तो अवश्य दोनों में उपद्रव होजाता पवित्र है ईश्वर स्वर्गों का प्रभु इससे जो वह वर्णन करते हैं । (२३) उससे उस बात का प्रश्न न होगा जो वह करता है परन्तु उनसे पूछ गछ होगी । (२४) क्या उन्हों ने ईश्वर को छोड़ और ईश्वर बना रखे हैं कहदे अपना प्रमाण तो वर्णन करो यह उनका चर्चा $ है जो मेरे साथ हैं और उनका चर्चा जो मुझसे पहिले थे परन्तु उनमें बहुत से सत्य को जानतेही नहीं और वह मुख फेरते हैं । (२५) और हमने तुमसे आगे कोई प्रेरित नहीं भेजा परन्तु उसकी ओर यही प्रेरणा की कि मेरे उपरान्त कोई ईश्वर नहीं और तुम मेरी ही अराधना करो । (२६) कहते हैं कि रहमान ने पुत्र ¶ लिया है वह पवित्र है वरन वह तो उत्तम दास हैं । (२७) वह उससे वार्तालाप में पहल नहीं कर सकते और वह उसकी आज्ञा पर कार्य्य करते हैं । (२८) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है और वह विन्ती नहीं करते । (२९) केवल उसके निमित जिससे वह प्रसन्न है और वह उसके भय से कांपते रहते हैं । (३०) जो कोई उनमें से यह कहे निस्सन्देह मैं ईश्वर के ठौर ईश्वर हूँ तो उसको हम नर्क का दण्ड देंगे दुष्टों को हम इसी भांति दण्ड देते हैं ॥

रु० ३—(३१) क्या अधर्म्मियों ने नहीं देखा कि आकाश और पृथ्वी दोनों बन्द थे तो हमने उनको खोल दिया और हमने जलसे हर जीवधारी वस्तु को जीवता किया सो क्या वह विश्वास नहीं लाते । (३२) और हमने पृथ्वी में पर्व्वत उत्पन्न किए कहीं ऐसा न हो कि वह लोगों को लेकर चल पड़े और उसमें चौड़े मार्ग बनाए जिस्तें वह मार्ग पाएँ । (३३) और हमने आकाश को छत बना दिया जो रक्षित है और वह हमारे इन चिन्हों से मुँह मोड़ते हैं । (३४) वह वही है जिसने रात्रि और दिन को उत्पन्न किया और सूर्य्य और चन्द्रमा को इनमें से प्रत्येक आकाश में तैरता है । (३५) और हमने तुमसे पूर्व्व किसी मनुष्य को

---

* अर्थात ईश्वर के साथ साझी ठहराते हो । † प्रकाशित वाक्य ४ : ८ । ‡ अर्थात मृतकों को जिलावें । § अर्थात आकाश और पृथ्वी में । $ अर्थात पुस्तक । ¶ अर्थात दूतों में से ॥

अमर * नहीं किया यदि तू मरजाय तो क्या वह सदालों जीते रहेंगे। (३६) हर एक प्राणी † मृत्यू का स्वाद चाखेगा और तुमको बुराई और भलाई दोनों से जांचते हैं परिक्षा के समान और तुमको हमारे तीर फिर लौट आना होयगा। (३७) और जब अधर्म्मी तुझको देखते हैं तो वह तुझे हँसी बनालेते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे ईश्वरों का चर्चा करता है और आप यह लोग रहमान की चर्चा से मुकरने हारे हैं। (३८) मनुष्य शीघ्रता करने हारा उत्पन्न किया गया है मैं तुमको अपने चिन्ह दिखाऊँगा मुझसे शीघ्रता न करो। (३९) और वह कहते हैं कि यह वाचा कब होगी यदि तुम सत्य बोलते हो। (४०) आह यह अधर्म्मी जानें कि जब अग्नि को अपने मुँह से झाड न सकेंगे न अपनी पीठ से और न उन्हें कोई सहायता मिलेगी। (४१) वरन वह उन पर एक संग उपस्थित होगा और उनको व्याकुल कर देगा और वह उसको रोक न सकेंगे न उनको अवसर मिलेगा। (४२) तुझसे आगे भी प्रेरितों के साथ ठट्ठा किया गया परन्तु जिस बात का वह ठट्ठा किया करते थे वही ठट्ठा करनेहारों पर आ गिरा॥

रु० ४—(४३) कह कौन तुम्हारी रक्षा कर सकता है रात्रि को और दिनको रहमान से वरन यह लोग तो अपने प्रभुकी चर्चा से मुख मोड़ते हैं। (४४) क्या इनके और ईश्वर हैं जो उन्हें बचा सकते हैं वह तो अपनी भी सहायता नहीं कर सकते और न हमारी ओर से उनकी संगति होती है। (४५) बरन हमने उनको और उनके पुरुषों को लाभ पहुँचाया यहांलों कि उनका जीवन अधिक होगया सो क्या वह लोग नहीं देखते कि हम पृथ्वी को हर ओरसे घटाते हुए चले जारहे हैं तो क्या अब वह प्रबल होनेहारे हैं। (४६) कहदे मैं तो केवल प्रेरणा से डर सुनाता हूँ और बहिरे किसी के पुकारने को नहीं सुनते जब कि उनको डर सुनाया जाय। (४७) यदि उनको तेरे प्रभुके दण्ड का झोंका आ लगे तो वह निश्चय कहने लगें कि शोक हम पर निस्सन्देह हम दुष्ट थे। (४८) और हम पुनरुत्थान के दिन न्याय की तुला रखेंगे कि किसी पुरुष पर रतीभर अन्याय न होगा यदि राई के दाने के तुल्य भी किसी का होगा तो हम उसको प्रगट करेंगे और हम लेखालेने को बस हैं। (४९) और हमने मूसा और हारून को फ़ुरकान दिया था और ज्योति और शिक्षा डरने हारों के निमित। (५०) और जो अपने प्रभु से गुप्त में डरते हैं और जो उस घड़ी से कांपते हैं। (५१) और यह आशीषित चर्चा है जो हमने उतारी सो क्या तुम इसको नहीं मानते॥

* इमरान १८२. अनकबूत ५७। † मती १६ : २८. इबरी २ : ९॥

रु० ५—(५२) और हमने इबराहीम को इससे पूर्व्व ठीक मार्ग दिया और हम उसको जानते थे। (५३) जब उसने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि यह मूर्त्ते क्या हैं कि जिन पर तुम जमें बैठे हो। (५४) वह बोले हमने अपने पितरों को इन्हीं की अराधना करते पाया। (५५) उसने कहा निस्सन्देह तुम और तुम्हारे पुरुखा भटके हुए हैं। (५६) वह बोले क्या तू हमारे निकट सत्य वार्ता लेकर आया है अथवा तू हंसी करता है। (५७) वह बोला नहीं—बरन तुम्हारा प्रभु आकाश और पृथ्वी का प्रभु है जिसने उनको उत्पन्न किया और मैं उसका साक्षी हूं। (५८) ईश्वर की सौंह मैं तुम्हारी मूर्त्तों से एक छल करूंगा उसके पश्चात तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (५९) फिर उसने सब मूर्तों को खण्ड खण्ड कर डाला केवल बड़ी मूर्ति के जिस्तें वह उनकी ओर अवहित हों। (६०) वह बोले किसने यह कर्म्म हमारी मूर्त्तियों से किया है निस्सन्देह वह दुष्टों में है। (६१) बोले कि हमने एक तरुण को उनका चर्चा करते सुना है जिसको इबराहीम करके गुहराते हैं। (६२) बोले कि उसको लोगों के साम्हने लेआओ कि उस पर साक्षी दें। (६३) उन्होंने पूछा हे इबराहीम क्या हमारी मूर्तों के संग यह तूने किया है। (६४) उसने कहा नहीं—बरन इनके इस बड़े ने किया है इन्हीं से पूछ देखो यदि यह बोलते हैं। (६५) इस पर वह अपने मनमें सोचने लगे और कहने लगे निस्सन्देह तुमही दुष्ट हो। (६६) फिर उन्होंने सिर नीचे करके कहा निस्सन्देह तू जानता है कि यह बात नहीं कर सकते। (६७) उसने कहा तो क्या तुम ईश्वर के उपरान्त ऐसे की सेवा करते हो जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके न बुरा लाज है तुम पर और उस पर जिसकी तुम ईश्वर के उपरान्त सेवा करते हो क्या तुमको कुछ बुद्धि नहीं। (६८) वह परस्पर में कहने लगे कि इसको जलादो और अपने ईश्वरों की सहायता करो यदि तुमको कुछ करना है। (६९) और हमने कहा हे अग्नि तू इबराहीम पर शीतल और कुशल होजा। (७०) उन्होंने उससे छल करना चाहा परन्तु हमने उन्हीं को हानि उठाने हारों में कर दिया। (७१) हमने उसे और लूत को कुशल से निकाल दिया उस भूमि की ओर जिसमें हमने समस्त सृष्टि के निमित आशीष दी है। (७२) और हमने उसे दिया इसहाक और याकूब एक नवीन पारितोषिक और इन सबको हमने भला बनाया। (७३) और हमने उनको अगुआ बनाया वह हमारी आज्ञानुसार शिक्षा करते थे और हमने उनकी ओर सुकर्म्म करने और प्रार्थना स्थिर रखने और दान देने की प्रेरणा की और वह हमारी अराधना में लिप्त रहे।

(७४) और-हमने लूत को बुद्धि और आज्ञा दी और हमने उसको उस बस्ती से रहित किया जो कुकर्म करती थी निस्सन्देह वह लोग दुष्ट और कुकर्मी थे। (७५) और हमने उसको अपनी दया में लेलिया निस्सन्देह वह उत्तम दासों मेसे था॥

रु० ६—(७६) और नूहने जब पहिले पुकारा और हमने उसे उत्तर दिया और उसे बचा लिया और उसके कुटुम्बियों को बड़ी बिपति से। (७७) और हमने उसकी सहायता की उन लोगों पर जो हमारी आयतें झुठलाते थे निस्सन्देह वह दुष्ट लोग थे और हमने उन सब को डुबा दिया। (७८) और दाऊद और सुलेमान जब दोनों एक खेत के बिषय में न्याय करचुके जब रात को उसमें कुछ लोगों की बकरियां चर गईं और उनका न्याय हमारे सन्मुख था। (७९) और हमने सुलेमान को न्याय समझा दिया और हमने सबको आज्ञा दी थी और हमने पर्वतों को उसके बश में कर दिया कि वह जाप किया करते थे और पक्षियों को यह सब कुछ हमही करने हारे थे। (८०) और हमने दाऊद को तुम्हारे निमित बख्र * बनाने की विद्या सिखाई थी जिस्से युद्ध में तुम्हारी रक्षा करे क्या तुम धन्यबाद करने हारे हो। (८१) और हमने सुलेमान के बशमें बेग बायु करदी उसकी आज्ञानुसार चलती थी उस भूमि की ओर जिसमें हमने आशीषें रखी हैं और हमको हर बस्तु का ज्ञान है। (८२) और कुछ दुष्टात्माएं † जो उनके निमित डुबकी लगातीं और इसके उपरान्त कुछ और कार्य भी करतीं और हम उनकी चौकसी करते थे। (८३) और ऐयूब ने जब अपने प्रभु को पुकारा कि मुझे कष्ट पहुंचा है और तू समस्त दया करनेहारों से अधिक दयालु है। (८४) हमने उसकी सुनली और जो कष्टथा उसको दूर कर दिया हमने उसको परिवार दिया और इतना ही अधिक उसके साथ दया के कारण स्तुति करनेहारों के निमित स्मरणार्थ। (८५) इसमाईल और इदरीस ‡ और जुलकिफ़ल यह सब धीरजवानों में थे। (८६) हमने उनको अपनी दया में प्रवेश दिया यह सब धर्म्मियों में थे। (८७) और जुलनून जब क्रोधित होके चल दिया और उसने बिचार किया कि हम उसको कठिनाई में न डालेंगे और वह अन्धकार में चिल्लाया कि तेरे उपरान्त कोई ईश्वर नहीं तू पवित्र है निस्सन्देह मैं दुष्टों में था। (८८) तो हमने उसकी सुनली और शोक से छुड़ाया हम बिश्वासियों को इसी रीति बचा लिया करते हैं। (८९) जकरिया ने जब अपने प्रभु को पुकारा कि हे मेरे प्रभु मुझे अकेला न छोड़ तू सब से उत्तम

* जिरहबख्तर अर्थात युद्धबस्त्र। † स्वाद ३७। ‡ मरियम ५५-५६।

अधिकारी * है । (९०) और हमने उसकी सुनली और उसे यहिया दिया और हमने उसकी पत्नी को उसके हेतु भलाचंगा करदिया निस्सन्देह यह धर्म के कार्य्यों में शीघ्रता करते थे और हमको आशा और भय से पुकारा करते थे और हमारे सन्मुख आधीनी करते थे । (९१) और वह † जिसने अपने लज्जा स्थान की रक्षाकी और हमने उसमें अपनी आत्मा फूँक दी और हमने उसे और उसके पुत्रको सृष्टियों के निमित चिन्ह ‡ बनाया । (९२) तुम सबका मत एक ही मत है मैं तुम्हारा प्रभुहूं तुम मेरी ही अराधना करो । (९३) और लोगोंने आज्ञा को परस्पर टुकड़े कर डाला सबको हमारी ओर पलट आना है ॥

रु० ७ – (९४) जो मनुष्य सुकर्म्म करे और विश्वासी हो उसका प्रयत्न तुच्छ नहीं है और हम उसको लिखते जाते हैं । (९५) जिस बस्ती को हमने नाश कर दिया उनके ऊपर लौट आना अलीन है । (९६) यहां लों कि याजूज § और माजूज निर्बंध कर दिए जायँ और वह हर ऊँचे स्थान से दौड़ते चले आवें । (९७) सत्य बाचा निकट होरही है और अधर्म्मियों की आंखें खुली रहगईं हम पर शोक कि हम इससे अचेत रहे वरन हमतो दुष्ट थे । (९८) निस्सन्देह तुम और जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पूजते हो नर्क का ईंधन होंगे और तुम भी उसमें जाओगे । (९९) यदि यह ईश्वर सत्य होते वह उसमें न डाले जाते और यह सदा सब उसीमें रहेंगे । (१००) उनको वहां चिल्लाना है परन्तु उनकी वहां सुनी न जायगी । (१०१) निस्सन्देह जिनके निमित हमारी ओर से पहिले भलाई नियत होचुकी वह उससे दूर रखे जायंगे । (१०२) वह तनिक भी गुहार वहां न सुनेंगे और वह अपने शारीरिक स्वादों में सदा रहेंगे । (१०३) और उनको बड़ा भारी भय शोकित न करेगा उनको दूत लेने आयँगे यही तो तुम्हारा वह दिन है जिसकी तुमसे बाचा की थी । (१०४) जिस दिन हम आकाशों को पत्रों की पोथी कीनाईं लपेटेंगे ¶ जिस भांति हमने पहिलीबार उसे उत्पन्न किया उसी भांति दूसरीबार करेंगे यह बाचा हम पर उचित है हमको करना है । (१०५) और हमने शिक्षा के पीछे स्तोत्र $ लिख दिया है कि मेरे धर्म्मीदास पृथ्वी के अधिकारी होयँगे । (१०६) निस्सन्देह इसमें सन्देश है उन लोगों के निमित जो मेरी अराधना करते हैं । (१०७) और हमने तुझे सृष्टियों के निमित दया बनाकर पठाया है । (१०८) कह मुझे तो केवल इस बात की प्रेरणा

---

* इमरान ५१. मरियम ५. क़सस ५८ । † अर्थात मरियम । ‡ तहरीम १२ । § कहफ ९१ प्रकाशित वाक्य २० : ८, हिजकियेल ३८ : ४४, गणना ११ : २९ । ¶ यशैयाह ३४ : ४ । $ स्तोत्र ३७:२९ ॥

होती है कि तुम्हारा ईश्वर एक ही ईश्वर है सो क्या तुम ग्रहण करते हो। (१०९) सो यदि वह मुख मोड़ें कहदे मैंने तुमको एकसां सन्देश देदिया मैं नहीं जानता कि निकट हैं अथवा दूर हैं जिसकी तुमसे बाचा कीजाती है। (११०) निस्सन्देह वह जानता है जो तुम पुकार कर कहते हो और जानता है जो तुम छिपाते हो। (१११) और मैं नहीं जानता कदाचित इसमें तुम्हारी परिक्षा हो और तुमको एक समय लों लाभ पहुँचाना है। (११२) कह हे प्रभु सत्य के साथ निर्णय करदे हमारा प्रभु रहमान है और उससे उन बातों पर सहायता मांगते हैं जो तुम वर्णन करते हो॥

---

२२ सूरए * हज मदनी रुकू १० आयत ७८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) हे लोगो अपने प्रभु से डरो—निस्सन्देह उस घड़ी † का भूचाल भारी बात है। (२) जिस दिन तुम उसको देखोगे कि वह दूध पियाने हारी अपने दूध पीते बालक को बिसर जायगी और हर गर्भणी अपना गर्भ गिरा देगी और तू लोगों को मतवाला देखेगा यद्यपि वह मतवाले नहीं हैं परन्तु ईश्वर का दण्ड कठिन है। ३) कोई ‡ कोई मनुष्य ऐसे हैं कि ईश्वर के विषय में अज्ञानता से झगड़ते हैं और द्रोही दुष्टात्मा के चेला होजाते हैं। (४) जिसके निमित यह लिख दिया कि जो उसको मित्र बनायगा तो यह उसको भटकायगा और उसको दहकते दण्डकी ओर लेजायगा। (५) हे लोगो यदि तुमको जी उठने में सन्देह है तो हमने तुमको मट्टी से उत्पन्न किया फिर वीर्य से फिर लोहू के लोथड़े से फिर रूपावली बोटी से जिस्तें तुम पर प्रगट करें और जो कुछ हम चाहते हैं गर्भ में ठहरा रखते हैं नियत समयलों और तुम्हे बालक बनाकर निकालते हैं कि तुम तरुणावस्था को पहुंचो और तुममे से किसी को मृत्यू आती है और तुममे से कोई कोई जीते रहते हैं वृद्धावस्था § लों ऐसा कि समझने के पीछे कुछ न समझे और तुम देखते हो कि पृथ्वी सूखी पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बर्षाते हैं तो लहलहाने लगती है और उभर उठी और हर भांति की उत्तम बस्तुएं उपजाती

---

* यह सूरत सब के निकट मक्की है परन्तु १-२४. ४३-५६. ६०-६५. ६७-७५ लों अवश्य मक्का में उतरी हैं। † अर्थात पुनरुत्थान मती २४ : ७। ‡ यह अबूजहल के विषय में है बरन किसी का विचार है कि हारिस के पुत्र के विषय में है अथवा होसकता है कि किसी और के विषय में हो आयत ८ और ११ में भी ऐसा वर्णन है। § अर्थात निकम्मी उमू लों॥

हैं। (६) यह सब इसी निमित है कि ईश्वर वही सत्य है और निस्सन्देह वही मृतकों को जिलाता है वह हर वस्तु पर शक्तिमान है। (७) और यह कि वह घड़ी आनेहारी है उसमें कुछ सन्देह नहीं है और यह कि ईश्वर उठा खड़ा करेगा उन्हें जो समाधियों में हैं। (८) और कोई मनुष्य ऐसे भी हैं जो ईश्वर के विषय में अज्ञानता से झगड़ते हैं बिना शिक्षा और बिना प्रकाशित पुस्तक के। (९) मुख मोड़े हुए जिस्तें ईश्वर के मार्ग से भटकावें—उसके निमित संसार में हंसाई है और हम उसको पुनरुत्थान के दिन जलानेहारा दण्ड चखायंगे। (१०) यही है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा है और यह कि ईश्वर अपने दासों पर अनीति नहीं करता॥

रु० २—(११) और मनुष्यों में कोई कोई ऐसा भी है जो ईश्वर की एकान्त में अराधना करता है और जब उसे कोई भलाई पहुंचती है तो उससे उसको शान्ति होजाती है और यदि उस पर कोई विपति पहुंचे तो मुख मोड़कर उलटा फिरजाता है और ऐसेही संसार भी गँवाता है और अन्त का दिन भी और यह प्रत्यक्ष हानि है। (१२) और ईश्वर के उपरान्त ऐसे को पुकारता है जो न उसे हानि पहुंचा सकता है और न उसे लाभ पहुंचा सकता है यही बड़ी दूर की भटकना है। (१३) और वह उसको पुकारता है जिसकी हानि लाभ से अधिक निकट है स्वामी भी बुरा और मित्र भी बुरा। (१४) ईश्वर उन लोगों को जो विश्वासी हैं और धर्म्म के कार्य्य किए बैकुण्ठों में पहुंचायगा कि उनके नीचे धाराएं बहती हैं निस्सन्देह ईश्वर जो चाहता है सो करता है। (१५) और जो कोई यह अनुमान रखता हो कि ईश्वर उसकी सहायता कभी न इस जगत में न अंत के दिन में करेगा तो वह एक ऐसी रस्सी छतलों ताने फिर उसको काटडाले फिर देखे कि उसकी इस युक्ती ने उसके क्रोध को दूर कर दिया। (१६) और हमने इसी भांति प्रत्यक्ष आयतें उतारीं निस्सन्देह ईश्वर शिक्षा करता है जिसको चाहता है। (१७) निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और जो यहूदी हैं और जो सायबी * हैं और नसारा और ओतपी और जो मूर्ति पूजक हैं निस्सन्देह पुनरुत्थान के दिन ईश्वर उन सब में निर्णय करेगा निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु को जानता है। (१८) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर को दण्डवत करते हैं जो आकाशों में हैं और जो पृथ्वी में हैं और सूर्य्य और चंद्रमा और तारागण और पर्व्वत और पेड़ और पशु और बहुत मनुष्य और बहुतेरे ऐसे हैं जिन पर दण्ड प्रमाणिक

† अर्थात माथा नाड़े बैठे। * बक़र ५९॥

होचुका। (१९) और जिसका ईश्वर अनादर करे उसे कोई आदर देनेहारा नहीं और निस्सन्देह ईश्वर जो चाहता है सो करता है। (२०) यह दोनों * जत्था परस्पर विरुद्ध हैं जो अपने प्रभु के विषय में झगड़ते हैं सो जिन्होंने अधर्म किया उनके निमित अग्नि के वस्त्र ब्योंतेगए हैं और उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जायगा। (२१) और उससे जो कुछ उनके पेटों में है गल जायगा और उनकी खालें भी और उनके निमित लोहे के गदा हैं। (२२) और जब वह उसमें से कष्ट के मारे निकल भागने की इच्छा करेंगे तो फिर उसी में लौटा दिए जायंगे कि चखते रहो जलता हुआ दंड ॥

रु० ३—(२३) निस्सन्देह ईश्वर उन लोगों को जो बिश्वास लाए और सुकर्म्म किए वैकुण्ठों में पहुंचायगा कि उनके नीचे धाराएं बहती हैं और उन्हें वहां स्वर्ण और मोतियों के कंगन पहराए जायंगे और उनका वस्त्र रेशम का होगा। (२४) और उनको भली बात की शिक्षा कीगई और महिमा किए हुए मार्ग की ओर उनकी अगुआई कीगई। (२५) निस्सन्देह जो लोग अधर्म्मी हुए और ईश्वर के मार्ग से बर्जते रहे और मसजिद हराम से जो हमने समस्त लोगों के निमित समान बनाई है वहां का बसनेहारा और बाहरी। (२६) और जो क्रूरता से टेढ़ाई करना चाहे हम उसे कठिन दण्ड देयंगे ॥

रु० ४—(२७) और जब हमने इबराहीम के निमित घरका ठौर † नियत किया कि मेरे संग किसी को साझी न कर और मेरे घरको पवित्र रख परिक्रमा करने हारों और खड़े रहनेहारों और झुकनेहारों और दण्डवत करनेहारों के निमित। (२८) और लोगों में यात्रा के निमित पुकारदे कि वह तेरी ओर आएं पैदल और सवार होकर दुबले पतले ऊंटों पर जो दूर के मार्गों से चले आएं। (२९) जिस्तें वह अपने लाभों को देखें और ईश्वर का नाम थोड़े जाने हुए दिनों में लें उन पर जो ईश्वर ने उन्हें दिया है पशु और ढोरों में इसमें से खाओ और दुखी कंगालों को खिलाओ। (३०) उचित है कि अपनी अशुद्धता को दूर करें और वह अपनी मनौती पूरी करें और इस प्राचीन घर का परिक्रमा करें। (३१) और जो ईश्वर के आदर योग्य बस्तुओं का आदर करे तो यह उसके प्रभु के निकट उत्तम है और तुम्हारे निमित पशु पावन करे गए केवल उसके जो तुम पर पढ़ी जाती हैं तुम मूर्तियों की अशुद्धता से बचते रहो और मिथ्या बोलने से

* अर्थात मुसलमान और अन्य मतावलम्बी। † अर्थात काबे का घर।

भी बचो। (३२) ईश्वर के निमित हनीफ़ होकर रहो उसका साझी न ठहराओ और जो ईश्वर का साझी ठहरावे वह मानो आकाश से गिर पड़ा अथवा उसको पक्षी झपट लेजाते हैं अथवा उसको वायु लेजाके किसी दूर स्थान में डालदेती है। (३३) और जो ईश्वर के चिन्हों का आदर करता है तो निस्सन्देह यह हृदयों की पवित्रता से है। (३४) इनमें तुम्हारे निमित एक नियत समय लों लाभ हैं और उसको फिर इसी प्राचीन घरलों पहुंचना है॥

रु० ५—(३५) हर जाति के निमित हमने रीतें नियत करदीं जिसतें वह ईश्वर का नाम लें उस पर जो उसने उन्हें दिया है पशु और ढोरों में से—तुम्हारा ईश्वर अकेला ईश्वर है उसी की आज्ञा पालन हार बनो नम्रता करनेहारों को सुसमाचार सुनादे। (३६) जब ईश्वर की चर्चा कीजाती है तो उनके हृदय डरजाते हैं और जो धीरजवान हैं उन पर जो कठिनाई आपड़े और वह जो प्रार्थना में स्थिर हैं और हमारे दिए हुए में से व्यय करते हैं। (३७) शरीरधारी * को हमने तुम्हारे निमित ईश्वर के चिन्हों में से ठहराया है इसमें तुम्हारे हेतु लाभ है उन पर ईश्वर का नाम लो खड़े † रख कर फिर जब उनकी कोखें पृथ्वी पर गिर पड़ें तब उसमें से खाओ और खिलाओ न मांगने हारों और मांगनेहारे दरिद्री को और इसी भांति उनको तुम्हारे बश में कर दिया जिस्तें तुम धन्यबाद करने हारे बनो। (३८) उनका मांस ईश्वर को नहीं पहुंचता है न उनका लोहू परन्तु उसलों तुम्हारा संयम पहुंचता है इसी रीति हमने उनको तुम्हारे बश में कर दिया जिस्तें तुम ईश्वर की महिमा करो कि उसने तुमको शिक्षा दी सुकर्म्म करने हारों को सुसमाचार सुनादे। (३९) निस्सन्देह ईश्वर विश्वासियों की शिक्षा करता है निस्सन्देह ईश्वर किसी कपटी और कृतघ्न को मित्र नहीं रखता॥

रु० ६—(४०) उनको आज्ञा है जो इस कारण लड़ते हैं कि उन पर अन्याय किया गया निस्सन्देह ईश्वर उनकी सहायता करने पर शक्तिमान है। (४१) वह जो अपने घरों से अकारण निकाले गये केवल यह कहने पर कि हमारा प्रभु ईश्वर है और यदि ईश्वर एक को दूसरे से मेट न दिया करे तो तकिए और पाठशाले गिरजे और मन्दिर और मसजिदें जहां ईश्वर का नाम अधिकता से लिया जाता है ढादिए जाते निस्सन्देह ईश्वर उसकी सहायता करेगा जो ईश्वर की सहायता

---

* अर्थात ऊंट। † भेट के ऊंट पांव बांधे खड़े हों और बध करने का मंत्र पढ़ कर उन्हें बध करो गिरा कर बध न करो॥

करता है निस्सन्देह ईश्वर बली और प्रबल है। (४२) और यदि हम उनको पृथ्वी में अधिकार देदें तो वह प्रार्थना को स्थिर रखें और दान दें और सुकर्म की आज्ञा करें और कुकर्म से बरजें हर एक कर्म का अन्त ईश्वर ही के अधिकार में है। (४३) और यदि यह तुझे झुठलाएं तो इनसे आगे नूह की जाति झुठलाचुकी और आद और समूद और इबराहीम की जाति और लूतकी जाति और मदीन के लोग और मूसा भी झुठलाया जा चुका है और हमने अधर्मियों को अवसर दिया फिर उनको धर पकड़ा और कैसा बड़ा परीवर्त्तन हुआ। (४४) सो बहुतेरी बस्तियां हैं कि हमने उनको नाश कर दिया और वह दुष्टही रहीं और अब वह अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं और कितने कुए बे अर्थ पड़े हैं और कितने पक्के भवन। (४५) क्या यह लोग देश में नहीं चले फिरे क्या उनके मन ऐसे नहीं हैं कि समझें अथवा ऐसे कान जिनसे सुनते निस्सन्देह यह नहीं कि नेत्र अंधे परन्तु मन अंधे होजाया करते हैं जो उनके अन्तःकरणों के भीतर हैं। (४६) वह तुझ से दण्ड की शीघ्रता करते हैं परन्तु ईश्वर कभी बाचा के बिपरीत न करेगा और निस्सन्देह तेरे प्रभु के निकट एक दिन सहस्र * बर्षों के तुल्य है जो तुम गिना करते हो। (४७) अनेक बस्तियां हैं कि मैंने उनको औसर दिया और वह अनाज्ञाकारी थीं फिर मैंने उन्हें धर पकड़ा और मेरी ओर पलटकर आना था॥

रु० ७—(४८) कहदे लोगो मैं तुमको प्रत्यक्ष डर सुनाने हारा हूँ। (४९) सो जो लोग विश्वास लाए और धर्म के कार्य किए उनके निमित क्षमा और आदर की जीविका है। (५०) और जो हमारी आयतों के हराने का प्रयत्न करते हैं वही लोग नर्कगामी हैं (५१) और हमने तुझ से पूर्व कोई प्रेरित और कोई भविष्यद्वक्ता नहीं भेजा कि जब उसने कुछ इच्छा की तो दुष्टात्माने उसकी इच्छा में कुछ न डाल दिया और जो कुछ वह डाल देता है तो ईश्वर उसको मेट देता है फिर ईश्वर अपनी आयतों को दृढ़ करता है और ईश्वर सब कुछ जानने हारा और बुद्धिमान है। (५२) जिस्तें उसको जो दुष्टात्मा डालता है उन में परिक्षा के निमित है जिनके मनों में बिकार है और जिनके हृदय कठोर हैं और निस्सन्देह दुष्ट लोग अत्यन्त फूट में पड़े हैं। (५३) जिस्तें वह लोग जिनको ज्ञान दिया गया है जानलें कि वह प्रेरणा तेरे प्रभु की ओर से यथार्थ है सो उस पर विश्वास लावें और उनके हृदय ईश्वर के सन्मुख नम्रता करें और कुछ सन्देह नहीं कि ईश्वर बिश्वासियों की शिक्षा सीधे

---

* सिजदा ४॥

मार्ग की ओर करने हारा है। (५४) परन्तु वह जो अधर्मी हैं सन्देह करने से न रुकेंगे यहां लों कि उन पर वह घड़ी अचानक आपहुंचे अथवा उन पर दण्ड* का दिन। (५५) राज्य उस दिन ईश्वर ही का है वह उनमें निर्णय करदेगा जो विश्वास लाए और धर्म के कार्य किए वरदानों के बैकुण्ठों में होयंगे। (५६) और जिन्हों ने अधर्म किया और हमारी आयतों को भुठलाया उन्हीं के निमित उपहास का दण्ड है॥

रु० ८—(५७) और जिन्होंने ईश्वर के मार्ग में देश त्यागा फिर घात किए गए अथवा मर गए ईश्वर उनको उत्तम जीविका देगा निस्सन्देह ईश्वर सब से उत्तम जीविका देने हारा है। (५८) और उनको ऐसे स्थान में प्रवेश देगा जिससे वह प्रसन्न होयंगे निस्सन्देह ईश्वर जानने हारा और कोमल स्वभाव है। (५९) और यह कि जिसने उतना ही पलटा लिया जितना उसको कष्ट दिया गया तो ईश्वर अवश्य उसकी सहायता करेगा निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा है। (६०) यह इस हेतु है कि ईश्वर रात्रि को दिन में जोड़ता है और दिनको रात्रि में जोड़ता है निस्सन्देह ईश्वर सुननेहारा औरदेखनेहारा है। (६१) यह इस निमित कि ईश्वर ही यथार्थ है और जिनको वह ईश्वर के उपरान्त गुहराते हैं वही असत्य हैं और ईश्वर ही ऊंचा और बड़ा है। (६२) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश से जल उतारा और प्रातःकाल को पृथ्वी हरीभरी होगई निस्सन्देह ईश्वर दयालु और अति ज्ञानी है। (६३) उसीका है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है निस्सन्देह ईश्वर धनी और स्तुति योग्य है॥

रु० ९—(६४) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने लोगों के वश में कर दिया जो कुछ पृथ्वी में है और नौका जो समुद्र में उसकी आज्ञा से चलती है और वही आकाश को थामे रखता है पृथ्वी पर गिरने से—वरन उसकी आज्ञा से निस्सन्देह ईश्वर लोगों पर बड़ी कृपा करने हारा और दयालु है। (६५) और वही है जिसने तुमको जीवता किया फिर वही तुमको मारता है वही तुमको फिर जीवता करेगा निस्सन्देह मनुष्य कृतघ्न है। (६६) हर जाति के निमित हमने एक रीति नियत की है कि वह उस पर चलते हैं वह इसके विपरीति तुझसे न झगड़ें तू अपने प्रभु की ओर बुलाए जा निस्सन्देह तू सीधे मार्ग पर है। (६७) और यदि वह तुझसे झगड़ें तू कह कि ईश्वर भली भांति जानता है

---

* अरबी में नाम है॥

जो तुम करते हो। (६८) ईश्वर तुममें पुनरुत्थान के दिन निर्णय करेगा जिस बात में तुम बिभेद कर रहे हो। (६९) क्या तू नहीं जानता कि ईश्वर जानता है जो आकाश और पृथ्वी में है और जो कुछ पुस्तक में है और कुछ सन्देह नहीं कि यह सब ईश्वर पर सहज है। (७०) और वह ईश्वर के उपरान्त ऐसी वस्तु की अराधना करते हैं जिसके निमित उसने कोई प्रमाण नहीं दिया और जिसका इनको कुछ ज्ञान भी नहीं और इन दुष्टों का कोई सहायक नहीं। (७१) और जब उन पर हमारी प्रत्यक्ष आयतें पढ़ी जाती हैं तो तू अधर्म्मियों को मुख मलीन देखता है और निकट होते हैं कि उन लोगों पर चढ़ाई करें जो हमारी आयतें उन पर पढ़ते हैं कहदे क्या मैं तुम्हें उससे अधिक बुरी वस्तु का संदेश दूं अर्थात अग्नि ईश्वर ने इसकी अधर्म्मियों से वाचा की है और वह बुरा ठौर है॥

रु० १०—(७२) हे लोगो तुम पर एक दृष्टान्त कहाजाता है इसको श्रवण करो निस्सन्देह जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त गुहराते हो वह एक मक्खी भी उत्पन्न नहीं कर सकते यदपि उसके निमित वह समस्त इकत्र होजायं और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन लेजाय तो उससे इसको छुड़ा नहीं सकते चाहत करने हारा और चाहत किया हुआ दोनों निर्बल हैं। (७३) उन्होंने ईश्वर की सार न जानी जैसा कि उचित था निस्सन्देह ईश्वर बली और बलवन्त है। (७४) ईश्वर दूतों में से प्रेरित को चुनता है और मनुष्यों में से भी निस्सन्देह ईश्वर सुनता और देखता है। (७५) जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है और सर्व कार्य्य ईश्वरही की ओर लौटाए जाते हैं। (७६) हे विश्वासियो झुको और दण्डवत करो और अपने प्रभु की अराधना करो और भलाई के कार्य्य करो जिस्तें तुम्हारा भला हो। (७७) और ईश्वर के निमित युद्ध करो जैसा कि युद्ध करना उचित है उसने तुम्हें चुन लिया और धर्म्म के विषय में कठिनाई नहीं की तुम्हारे पिता इबराहीम का धर्म्म उसी ने प्रथम तुम्हारा नाम मुसलमान धरा। (७८) और इसने* —जिस्तें प्रेरित तुम लोगों पर साक्षी बने प्रार्थना को स्थिर रखो और दान देते रहो और ईश्वर को दृढ़ता से गहे रहो वही तुम्हारा स्वामी है कैसा अच्छा स्वामी और कैसा अच्छा सहायक॥

---

* अर्थात कुरान ने॥

२३ सूरए मोमनून मक्की रुकू ६ आयत ११८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

पारा १८.

रुकू १—(१) विश्वासी सुफल हुए। (२) जो अपनी प्रार्थना में दीनता* करते हैं। (३) जो अनर्थ शब्दों से परे रहते हैं। (४) और जो दान देते हैं। (५) जो अपने लज्जित अङ्गों की रक्षा करते हैं। (६) वरन अपनी पत्नियों और अपने हाथ के धन† पर तो उन पर कोई दोष नहीं। (७) फिर जो इसके उपरान्त इच्छा करे तो वही मर्याद से बढ़नेहारे हैं। (८) जो अपनी धरोहरों? और अपने नियमों का पालन करते हैं। (९) और जो अपनी प्रार्थनाओं की रक्षा करते हैं। (१०) वही अधिकारी हैं। (११) फिरदौस‡ को दाय भाग में पाएंगे और उसमें सदा रहेंगे। (१२) और हमने मनुष्य को सानी हुई माटी से बनाया। (१३) फिर हमने उसको वीर्य बना के ठहरने§ के स्थान में रखा। (१४) फिर हमने इस वीर्य को लोथड़ा बनाया और फिर हमने इस लोथड़े को बोटी बनाया और बोटी की हड्डियां बनाईं और हड्डियों पर मास चढ़ाया फिर हमने उसको एक नवीन स्वरूप में बनाकर खड़ा किया ईश्वर धन्य¶ है जो सब से उत्तम सृजनहार है। (१५) फिर तुम इसके पीछे अवश्य मरोगे। (१६) फिर तुम पुनरुत्थान के दिन उठा खड़े किए जाओगे। (१७) और हमने तुम्हारे ऊपर सात सड़कें $ बनाईं और हम सृष्टि से अचेत नहीं हैं। (१८) और हमने आकाश से एक नाप से जल उतारा फिर उसको पृथ्वी में ठहरा दिया और हम उसको लेजाने की भी शक्ति रखते हैं। (१९) फिर हमने इस जल से तुम्हारे निमित खजूर और दाखकी बाटिका उगाईं जिसमें तुम्हारे निमित बहुत से फल हैं और उन्हीं में से तुम खाते हो। (२०) और वह वृक्ष@ जो सीना पर्वत से निकलता है जो तेल और खाने हारों के निमित रस** उत्पन्न करता है। (२१) और निस्सन्देह तुम्हारे निमित पशुओं में शिक्षा है हम तुमको पीने को देते हैं जो उनके पेटों में है और तुम्हारे निमित इनमें अधिक लाभ हैं और उनमें से किसी को तुम खाते हो। (२२) और उन पर और नौकाओं पर चढ़कर तुम फिरते हो॥

---

* उपदेशक ५ : १. मती ६ : ७। † अर्थात दासियों पर। ‡ यह शब्द कुरान में दोबार आया है जिसका अर्थ बाटिका अथवा ऐसी भूमि है जिसमें बहुत से वृक्ष लगे हों। § अर्थात माता के गर्भ में। ¶ यह शब्द महम्मद साहब के लेखक अबदुल्ला ने कहे थे और महम्मद साहब ने अपनी प्रेरणा में लिख लिए। $ अर्थात सात आकाश। @ जैतून का वृक्ष। ** भाजी या सालन।

रु० २— २३) और हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा उसने कहा हे जाति गण ईश्वर की अराधना करो उसके उपरान्त तुम्हारा कोई ईश्वर नहीं सो क्या तुम नहीं डरते। (२४) उसकी जाति के अधर्मी प्रधान बोले यह तो तुम्हारी नाई मनुष्य है जो चाहता है कि तुम पर बड़ाई प्राप्त करे और यदि ईश्वर चाहता तो दूतों को उतारता और हमने तो अपने पूर्व पुरुखाओं से यह नहीं सुना (२५) वह कुछ नहीं एक बौड़हा मनुष्य सो उसकी एक समय लों बाट जोहो। (२६) यह बोला कि हे प्रभु मेरी सहायता कर कि उन्हों ने मुझे झुठलाया। (२७) और हमने उसकी ओर प्रेरणा की कि हमारे नेत्रों के सन्मुख और हमारी आज्ञानुसार एक नौका बना और फिर जब हमारी आज्ञा आ पहुंचे तन्दूर उफन* ने लगे। (२८) तू नाव में हर भांति के दो दो का जोड़ा बैठाले और अपने कुटुम्बियों को उसको छोड़के † जिसकी प्रथम आज्ञा हो चुकी और मुझ से दुष्टों के विषय में कुछ मत कह यह अवश्य डुबाए जायंगे। (२९) और जब तू और वह लोग जो तेरे संग हैं नौका में बैठलें तो कह ईश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमें दुष्ट जाति से छुड़ाया। (३०) और कह हे मेरे प्रभु मुझको आशीषित स्थान में उतार क्योंकि तू ही उत्तम उतारने हारा है। (३१) निस्सन्देह इस में बहुत चिन्ह हैं और निस्सन्देह हम उनकी परिक्षा कर रहे हैं। (३२) फिर हमने उसके पीछे दूसरी सन्तानें निकालीं। (३३) और फिर हमने उन्हीं में का एक प्रेरित भेजा कि ईश्वर की स्तुति करो उसके उपरान्त तुम्हारा कोई ईश्वर नहीं सो क्या तुम नहीं डरते॥

रु० ३—(३४) और उसकी जाति के अधर्म्मी प्रधान बोले जो अन्त के दिन में मिलने को नकारते थे और हमने उनको इस संसार के जीवन में तृप्तता दी थी सो यहतो तुम्हारीही नाई एक मनुष्य है जो खाता है जैसा तुम खाते हो। (३५) और पीता है जो तुम पीते हो। (३६) यदि तुम अपने समान मनुष्य के आज्ञाकारी होओगे तो अवश्य हानि उठाने हारों में हुए। (३७) क्या यह तुमसे बाचा करता है कि जब तुम मरजाओगे और धूर होजओगे और हाड़ तो फिर निकाले जाओगे। (३८) दूर है दूर है ऐसा होना जिसकी तुमसे बाचा कीजाती है। (३९) सो हमारा इसी संसार का जीवन है मरते हैं और जीते और फिर हमें उठना नहीं है। (४०) वह तो कुछ नहीं केवल एक मनुष्य जिसने ईश्वर पर एक मिथ्या बंधक बांधा है हम तो उसकी मानने हारे नहीं। (४१) वह बोला हे मेरे प्रभु

---

* हूद ४२। † अर्थात नूह का एक पुत्र॥

मेरी सहायता कर कि उन्होंने मुझे झुठलाया। (४२) उसने कहा निकट है कि यह लोग लज्जित हों। (४३) उनको एक भयानक घोर शब्द ने सत्य बाचा के अनुसार आ पकड़ा और हमने उनको चूरा कर दिया दुष्ट लोगों पर धिक्कार है (४४) फिर हमने उनके पीछे और सन्तान उत्पन्न किए। (४५) कोई जाति अपने समय से न आगे बढ़सकती है न पीछे रह सकती है। (४६) फिर अपने प्रेरितों को लगातार भेजते रहे जब किसी जाति के तीर उसका प्रेरित आया तो उन्होंने उसे झुठलाया हम एक को दूसरे के पीछे करते * रहे और उनको कहानियां बना दिया धिक्कार है उन पर जो विश्वास नहीं लाते। (४७) फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को अपनी आयतें और प्रत्यक्ष प्रमाण देकर भेजा। (४८) फिराऊन और उनके प्रधानो के तीर और वह घमंड करने लगे और वह विरोधी जाति से थे। (४९) और कहने लगे कि क्या हम अपने समान दो मनुष्यों पर विश्वास लाएं यद्यपि उनकी जाति हमारी दास है। (५०) सो उन्होंने झुठलाया और नाश होनेहारों में होगए। (५१) और हमने मूसा को उन लोगों की अगुवाई के हेतु पुस्तक दी। (५२) और हमने मरियम के पुत्र और उसकी माता को चिन्ह बनाया और हमने दोनों को एक ऊंचे स्थान † पर ठहराया जो रहने योग्य और जल धारा का स्थान था॥

रु० ४—(५३) हे प्रेरितो पवित्र वस्तुएं खाओ और सुकर्म्म करो और जो कुछ तुम करते हो निस्सन्देह मैं उसे जानता हूं। (५४) और निस्सन्देह यह तुम्हारी जाति एकही ‡ जाति और मैं तुम्हारा प्रभु हूं सो मुझसे डरो। (५५) फिर उन्होंने अपनी बात में फूट डाल कर आज्ञा को टूक टूक कर लिया और हर एक जत्था के तीर जो है वह उसमें प्रसन्न है। (५६) उन्हे छोड़दे उनकी अचेती में एक समयलों। (५७) क्या यह लोग ऐसा विचार करते हैं कि हम जो उनकी सहायता किए जाते हैं संपति और संतति से। (५८) उनके निमित्त शीघ्रता कररहे हैं भलाइयों में नहीं बरन यह लोग समझतेही नहीं। (५९) निस्सन्देह जो लोग अपने प्रभु के भय से डरते हैं। (६०) और जो लोग अपने प्रभु की आयतों की प्रतीत करते हैं। (६१) और जो लोग अपने प्रभु के साथ साझी नहीं करते। (६२) और जो लोग देते हैं जो कुछ वह देते हैं और उनके हृदय कांपते हैं कि उनको अपने प्रभु की ओर पलट जाना है। (६३) यही लोग सुकर्म्मों में

* अर्थात नाश। † मरियम २२। ‡ अम्बिया ९२. इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा मत एकही मत है॥

शीघ्रता करते हैं और वही उसके निमित आगे बढ़नेहारे हैं। (६४) और हम किसी मनुष्य पर भार नहीं डालते परन्तु उसके चित समान और हमारे तीर पुस्तक * है जो सत्य बोलती है और उन पर अनीति न होगी। (६५) उनके मन उन बातों की ओर से अचेत हैं और उनके और बहुत से कर्म्म हैं उनके उपरान्त जो वह कररहे हैं। (६६) यहांलों कि जब हम धर पकड़ेंगे उनके तृप्त लोगों को दण्ड से तो यह तत्काल चिल्ला उठेंगे। (६७) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम्हारी सहायता न कीजायगी। (६८) मेरी आयतें तुम पर पढ़ीजाती थीं और तुम अपनी एड़ियों पर उलटे भागते थे। (६९) घमंड करते थे उसको † कहानी बताकर अनर्थ बकवास करते थे। (७०) तो क्या उन्होंने इस बात में विचार नहीं किया अथवा उनके तीर ऐसी बात आई थी जो उनके प्राचीनों और पुरखाओं के तीर न आई थी। (७१) अथवा उन्होंने अपने प्रेरित को नहीं चीन्हा वह उससे मुकरते हैं। (७२) अथवा कहते हैं कि उसके साथ जिन्न हैं—नहीं वहतो सत्य के साथ उनके तीर आया उनमें से बहुतों को सत्य से घिन है। (७३) और, यदि ईश्वर उनकी इच्छानुसार चले तो उपद्रव मचजाय आकाशों और पृथ्वी में और जो कुछ उनमें है वरन् हमने तो उनको शिक्षा पहुंचादी और वह अपनी शिक्षा से मुँह मोड़ते हैं। (७४) क्या तू उनसे कुछ धनि मांगता है तेरे प्रभु का प्रतिफल तेरे निमित उत्तम है और वह सर्वोत्तम जीविका देनेहारा है। (७५) और तूतो उनको सीधे मार्ग की ओर बुलाता है। (७६) निस्सन्देह जो अन्त के दिन की प्रतीत नहीं रखते वह मार्ग से भटके हुए हैं। (७७) और यदि हम उन पर दया करें और जो क्लेश उन पर है दूर करदें तो अवश्य अपने विरोध में लगे रहें। (७८) और हमने उनको दण्ड में पकड़ा था फिर यह अपने प्रभु के आगे दीन न हुए और न नम्रता की। (७९) यहांलों कि जब हमने उन पर कठिन दण्ड का द्वार खोल दिया तो वह तुरन्त निराश होगए॥

रु० ५—(८०) वही है जिसने तुम्हारे निमित श्रवण और नेत्र और हृदय उत्पन्न कर दिए तुम बहुत ही न्यून धन्यवाद करते हो। (८१) और वही है जिसने तुमको पृथ्वी में फैला दिया और उसीकी ओर इकत्र होकर जाओगे। (८२) और वही जिलाता और मारता है और उसीका काम रात और दिनका बदलना है सो क्या तुम नहीं समझते हो। (८३) वरन यह भी वही कहते हैं जो उनके प्राचीनो ने कहा था। (८४) कहते हैं क्या जब हम मरजायंगे और माटी और हाड़ हो

* अर्थात लोगों के कर्म्मपत्र। † अर्थात कुरान अथवा काबा॥

जायंगे तो हम फिर उठा खड़े किए जायंगे। (८५) वाचा मिलचुकी है हमको और हमारे पुरुखों को इसी भांति पहिले से सो यह तो प्राचीन लोगों की कहानी हैं। (८६) तू कह किसकी है पृथ्वी और जो उसमें हैं यदि तुम जानते हो। (८७) वह कहेंगे कि ईश्वर का है कहदे फिर क्या तुम विचार नहीं करते। (८८) तू कह सात आकाशों और बड़े विमर्श के स्वर्ग का स्वामी कौन है। (८९) वह कहेंगे कि ईश्वर का है कहदे फिर क्या तुम नहीं डरते। (९०) कह कौन है जिसके हाथ में हर वस्तु का अधिकार है और वह शरण देता है और उसके विपरीत कोई शरण नहीं दे सकता यदि तुम जानते हो। (९१) और वह कहेंगे कि ईश्वर का है कहदे फिर तुम पर कहांसे टोना होजाता है। (९२) वरन हमने उनको सत्य बात पहुंचा दी और निस्सन्देह वह झूठे हैं। (९३) ईश्वर ने कभी पुत्र नहीं बनाया न उसके साथ कोई ईश्वर है नहीं तो हर एक ईश्वर अपनी सृष्टि को लेके चढ़ाई करता एक दूसरे पर ईश्वर पवित्र है उससे जो यह लोग बर्णन करते हैं। (९४) वह गुप्त और प्रगट का जाननेहारा है वह बढ़कर है उससे जिनको यह उसका साझी बनाते हैं॥

रु० ६—(९५) कह हे मेरे प्रभु यदि तू मुझको दिखाए जिससे उनको डराया जा रहा है। (९६) हे मेरे प्रभु मुझे उन दुष्ट लोगों में मत मिलाइयो। (९७) निस्सन्देह हम उस पर शक्ति रखते हैं कि तुझको दिखादें जिसकी उनसे प्रतिज्ञा कर रहे हैं। (९८) बुराई को उससे मेटदें जो भलाई के स्वभाव से है हम भली भांति जानते हैं जो लोग बर्णन करते हैं। (९९) कह हे मेरे प्रभु मैं तुझ से शरण चाहता हूं दुष्टात्मा के धोखों से। (१००) हे मेरे प्रभु तेरी शरण मांगताहूं इससे कि वह मेरे तीर आवें। (१०१) यहांलों कि जब उनमें से किसी को मृत्यू आपहुंचे कहेगा हे मेरे प्रभु मुझे फिर लौटा दे। (१०२) कदाचित मैं उस*में धर्म के कार्य करूं जिसे मैं पीछे छोड़ आयाहूँ कभी नहीं यह तो एक बात है जो वह कहता है और उनके परे एक पट है उस दिनलों कि वह उठा खड़े किए जायंगे। (१०३) फिर जब तुरही फूंकी जायगी तो उस दिन न उनमें नातेदारियां हैं न एक दूसरे को पूछेगा। (१०४) फिर जिनका पलरा भारी हुआ तो वही लोग भलाई पानेहारों में हैं। (१०५) जिनका पलरा हलका होगा वही लोग हैं जिन्होंने आप अपनी हानि की और सदा नर्क में रहेंगे। (१०६) और उनके मुहों को आग

---

* अर्थात जगत में॥

झुलसदेगी और वह वहां कुरूप होकर बसेंगे। (१०७) क्या मेरी आयतें तुमपर न पढ़ी जाती थीं फिर तुम उनको झुठलाते थे। (१०८) वह कहेंगे हे हमारे प्रभु हमको हमारी दुर्दशा ने घेर लिया और हम लोग भटके हुए लोगों में रहे। (१०९) हे हमारे प्रभु हमको यहां से निकाल यदि फेर करें तो हम दुष्टों में हैं। (११०) वह कहेगा दूर हो उसी में रहो और मुझ से न बोलो। (१११) निस्सन्देह एक जत्था मेरे दासों की ऐसी भी थी जो कहा करती थी हे हमारे प्रभु हम विश्वास लाए हमें क्षमाकर और हम पर दयाकर तू सब से उत्तम दया करने हारा है। (११२) और तुमने उनकी हंसी बनाई यहांलों कि तुमने मेरा स्मरण भुला दिया और तुम उनसे हंसते ही रहे। (११३) निस्सन्देह मैंने आज उनको उनके धीरज का बदला दिया और वही मनोर्थ को पहुंचेंगे। (११४) कहेगा तुम कितने समय लों पृथ्वी में रहे बर्षों के लेखे से। (११५) वह कहेंगे एक दिन अथवा एक दिन से भी घाट रहे तू गिनती करने हारों से पूछ*। (११६) कहेगा निस्सन्देह तुम थोड़ी ही बेर रहे यदि तुम जानते होते। (११७) सो क्या तुमने विचार किया था कि हमने तुमको व्यर्थ उत्पन्न किया था और यह कि तुम हमारी ओर लौटकर न आओगे महान है ईश्वर सत्यराजा उसके उपरान्त कोई ईश्वर नहीं वह ऊँचे स्वर्ग का स्वामी है जो ईश्वर के संग दूसरे ईश्वर को पुकारे जिसका उसके तीर कोई प्रमाण नहीं निस्सन्देह उसका लेखा उसके प्रभु के संग है अधर्मियों का भला न होगा। (११८) कह हे मेरे प्रभु मुझे क्षमाकर और मुझ पर दया कर तू सब से उत्तम दया करने हारा है॥

---

२४ सूरए नूर (ज्योति) मदनी रुकू ९ आयत ६४।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) यह एक सूरत है जिसको हमने उतारा है और उसको उचित किया है उसमें खुली खुली आयतें उतारीं जिस्तें तुम विचार करो। (२) व्यभिचारिणी† स्त्री और व्यभिचारी पुरुष उनमें से प्रत्येक के सौ सौ कोड़े लगाओ और उन दोनों पर ईश्वर के मत में तुमको दया न आवे यदि तुम ईश्वर और अन्त के दिन को माननेहारे हो और विश्वासियों की एक जत्था उनके दण्ड

---

* अर्थात दूतों से। † यह आयत और आयत ६ से ९ तक आयशा पर व्यभिचार के दोष पर उतरी थीं॥

को श्र.के देखे। (३) व्यभिचारी केवल व्यभिचारिणी अथवा साझी ठहरानेहारी स्त्री से विवाह करे और व्यभिचारिणी केवल व्यभिचारी अथवा साझी ठहरानेहारे पुरुष से विवाह करे और यह साझी ठहरानेहारों पर अधीन है। (४) और जो लोग शुद्धाचरण स्त्रियों पर दोष लगाएं और फिर चार साची न लाएं तो उनको अस्सी कोड़े मारो और अन्त लों उनकी साची ग्रहण न करो यही लोग कुकर्मी हैं। (५) परन्तु जो उसके पीछे पश्चाताप करें और सुधार करलें तो ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (६) और जो अपनी पत्नियों पर दोष लगावें और उनके उपरान्त उनका कोई साची न हो तो उनमें से एक की साची यह है कि चार बार ईश्वर की किरिया खाकर साची* दे कि वह सत्य है। (७) और पांचवीं बार उस पर ईश्वर का धिक्कार यदि वह सत्य हो। (८) और स्त्री से इस भांति दण्ड टलता है कि यदि वह चार बार ईश्वर की किरिया खा के साची दे कि वह झूठा है और पांचवींबार ईश्वर का कोप उस† पर हो यदि वह सत्य है। (९) और यदि ईश्वर का अनुग्रह और उसकी दया तुम पर न होती। (१०) और यह कि ईश्वर अपराहित करनेहारा और बुद्धिवान है।

रु०२—(११) निस्सन्देह जिन लोगों ने इसे उठाया‡ है तुमही में एक जत्था है उसको अपने निमित बुरा न समझ बरन अच्छा समझ इनमें से प्रत्येक मनुष्य को मिलेगा जो कुछ पाप उसने उपार्जन किया है और जिसने उसमें बड़ा भाग लिया उसके निमित कठिन दण्ड है। (१२) क्यों न ऐसा हुआ जब तुमने इसको सुना कि विश्वासी पुरुष और स्त्रियों ने अपने मनमें शुद्ध विचार न किया और यह न कहा कि यह तो प्रत्यक्ष बन्धक है। (१३) क्यों वह इस पर चार साची न लाए सो जब कि वह साची नहीं लाए तो ईश्वर की दृष्टि में वही असत्यवादी § हैं। (१४) यदि तुम पर ईश्वर का अनुग्रह और दया संसार और अन्त में न होती तो तुम पर इसका चर्चा करने में कोई कठिन दण्ड आ पड़ता जब तुम इसको अपनी जीभों पर लेने लगे और अपने मुँह से ऐसी बात बकने लगे जिसकी तुमको सुध नहीं तुम इसको हलकी बात समझते हो यद्यपि वह ईश्वर के निकट बहुत बुरी बात है। (१५) ऐसा क्यों न हुआ जब तुमने इसको सुना था तो बोल उठते कि हमें उचित नहीं कि ऐसी बात बोलें तू पवित्र है यह तो बड़ा बन्धक है। (१६) और ईश्वर तुमको शिक्षा देता है फिर कभी ऐसा न करना

---

* गणना ५:११, ३१। † अर्थात उस स्त्री पर। ‡ अर्थात आयशा पर व्यभिचार का दोष।
§ यह आयतें सन हिजरी ५ में उतरीं आयत ४–२६ लों आइशा पर व्यभिचार के दोष में है॥

यदि तुम विश्वासी हो। (१७) और ईश्वर प्रत्यक्ष वर्णन करता है कि तुम्हारे निमित आयतें हैं और ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (१८) जो लोग चाहते हैं कि कुकर्म का चर्चा विश्वासियों में हो उनके निमित दुःखदायक दण्ड है। (१९) संसार और अन्त के दिन में और ईश्वर जानता है उसको जो तुम नहीं जानते। (२०) यदि ईश्वर का अनुग्रह और उसकी दया न होती और यह कि ईश्वर दयालु और कृपालु है॥

रु० ३—(२१) हे विश्वासियों दुष्टात्मा के पीछे मत चलो और जो दुष्टात्मा के पीछे चलता है वह तो कुकर्म ही की आज्ञा देगा यदि तुम पर ईश्वर का अनुग्रह और उसकी दया न होती तो तुममें से कभी कोई पवित्र न होता परन्तु ईश्वर जिसको चाहे पवित्र करता है और ईश्वर सुनने और जानने हारा है। (२२) तुममें से धनाढ्य पुरुष किरिया न खा बैठें इस बात की कि वह नातेदारों और कंगालों और ईश्वर के मार्ग में देश छोड़ने हारों को कुछ * न देंगे उनको उचित है कि उनको क्षमा करें क्या तुम नहीं चाहते कि ईश्वर तुमको क्षमा करे और ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (२३) निस्सन्देह जो मनुष्य शुद्धाचरण स्त्रियों पर दोष लगाते हैं जो निश्चिन्त और विश्वासी है तो वह लोग धिक्कारी हैं संसार और अन्त के दिन में और उनके निमित दुःखदायक दण्ड है। (२४) जिस दिन उन पर उनकी जीभें और उनके हाथ और पांव साक्षी देंगे उनके कर्मों की जो यह † करते थे। (२५) उस दिन ईश्वर उनको उनका सम्पूर्ण दण्ड देगा और वह जानलेंगे कि ईश्वर ही है और वही सत्य को प्रगट करनेहारा है। (२६) दुराचारी स्त्री दुराचारी पुरुष के निमित और दुराचारी पुरुष दुराचारी स्त्री के निमित और पवित्र स्त्रियां पवित्र पुरुषों के निमित और पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के निमित वह उससे रहित है जो यह लोग बकते फिरते हैं उनके निमित क्षमा और आदर की जीविका है॥

रु० ४—(२७) हे विश्वासियो अपने घरों को छोड़ पराए घरों में जबलों आज्ञा न पाओ प्रवेश न करो उस घर वालों को प्रणाम किया करो यह तुम्हारे निमित उत्तम है कदाचित तुम ध्यान न करो। (२८) फिर यदि घरों में तुम किसी को न पाओ तो उनमें प्रवेश न करो जबलों कि तुमको आज्ञा न मिले और यदि तुमसे कहाजाय कि लौट जाओ तो लौट जाओ—यह तुम्हारे निमित पवित्र

* अबूबकर ने किरिया खाई थी कि वह मुस्तः को जिसने आयशा पर दोष लगाया था कुछ न देंगे।
† यरमियाह ४३ : १२॥

हैं और जो कुछ तुम करते हो ईश्वर सब जानता है। (२९) इसमें तुम पर कुछ अपराध नहीं कि शून्य घरों में जिनमें तुम्हारा असबाब रखा हो प्रवेश करो ईश्वर जानता है जो तुम प्रगट करते हो और जो तुम गुप्त करते हो। (३०) विश्वासी पुरुषों से कहदे कि अपनी दृष्टिएं नीची रखा करें और अपने लज्जित स्थानों की रक्षा करें यह उनके निमित अधिक पवित्र है निस्सन्देह ईश्वर जानता जो यह करते हैं। (३१) विश्वासी स्त्रियों से कहदे कि अपनी दृष्टिएं नीची रखें और अपने लज्जित स्थानों की रक्षा करें और अपना शृंगार न दिखाएं केवल उसके जो खुला रहता है और उनको उचित है कि अपनी ओढ़नी अपने ऊपर ओढ़लें और अपना शृंगार प्रगट न करें केवल अपने पतियों अथवा पिता अथवा ससुर अथवा पुत्रों अथवा अपने सौतेले पुत्रों अथवा अपने भाइयों अथवा अपने भतीजों अथवा अपने भानजों अथवा अपनी स्त्रियों * अथवा अपने हाथ के धन अथवा टहलुवा पुरुष जो निष्काम † हैं अथवा बालकों पर जो स्त्रियों के लज्जित अंगों को नहीं जानते और अपने पांव भूमि पर धमक ‡ के न धरें जिस्तें उनकी शोभा जान पड़े जो वह गुप्त रखती हैं हे सब विश्वासियो ईश्वर के सन्मुख पश्चाताप करो जिससे तुम्हारा भला हो। (३२) और अपनी विधवाओं और धर्म्मी दासों और दासियों के विवाह कर दिया करो यदि यह निर्धन होयंगे तो ईश्वर अपने अनुग्रह से उनको धनाढ्य कर देगा क्योंकि ईश्वर फैलाव वाला और जाननेहारा है। (३३) फिर वह लोग बचे रहें जो विवाह की शक्ति नहीं रखते यहांलों कि ईश्वर उनको अपने अनुग्रह से धनी करदे और तुम्हारे दासों में से जो लेख पत्र मांगे तो उनको लिख देओ यदि उनमें तुमको भलाई जान पड़े और जो संपति § ईश्वर ने तुमको दी है उसमें से उनको देओ और अपनी दासियों को कुकर्म्म के हेतु न दबाओ यादि वह पवित्र रहना चाहें और तुम संसार के जीवन की सामग्री उपार्जन किया चाहो जो उन पर दबाव डालेगा तो निस्संन्देह ईश्वर उनके दबैल होने के पीछे क्षमा करनेहारा और दयालु है। (३४) और हमने तुम्हारी ओर खुली खुली आयतें उतारीं और उन लोगों के दृष्टान्त जो तुमसे पहिले बीत गए और संयमियों के निमित शिक्षा हैं॥

रु० ५—(३५) ईश्वर आकाशों और पृथ्वी की ज्योति है उसकी ज्योति का दृष्टान्त ऐसा है जैसे एक आरे में एक दीपक धरा है और दीपक कांचकी हांड़ी में धरा है और

---

* अर्थात नातेदार स्त्रियों और सहेलियों। † अर्थात खोजा अथवा नपुंसक। ‡ यशैयाह ३:१६,१८।
§ व्यवस्था विवरण १९:१२—१९॥

कांच मानों चमकता हुआ तारा है उसमें एक धन्य पेड़ जैतून का तेल है जो जलाया गया है जो न पूरब का है न पच्छिम का है निकट है कि उसका तेल बरउठे यद्पि अग्नि उसको न भी छुए जो ज्योति पर ज्योति है ईश्वर जिसको चाहता है अपनी ज्योति की अगुवाई करता है और लोगों के निमित दृष्टान्त बर्णन करता है और ईश्वर हर वस्तु का जाननेहारा है। (३६) ऐसे घरों में ईश्वर ने उसके सुधार करने की आज्ञादी है जहां उसका नाम लिया जाय उसमें ईश्वर का जाप भोर और सांझ करते रहते हैं। (३७) ऐसे मनुष्य जिनको ईश्वर के सुमरण करने से बनिज और लेन देन अचेत नहीं करते और न प्रार्थना स्थिररखने और न दानदेने से वह लोग उस दिन से डरते हैं जिस दिन हृदय और नेत्र उलट जायेंगे। (३८) जिसतें ईश्वर उनको प्रतिफल दे उनके अच्छे से अच्छे कर्मों का और उनको अपने अनुग्रह से और अधिक दे और ईश्वर जिसे चाहता है अलेख जीविका देता है। (३९) जो लोग अधर्मी हैं उनके कर्म जंगल की बालू * की नाईं हैं कि प्यासा उसको पानी समझता है यहांलों कि जब उसके निकट आया उसको कुछ भी न पाया और ईश्वर को अपने निकट पाया फिर उसने उसका पूरा पूरा लेखा चुका दिया और ईश्वर शीघ्र लेखा लेनेहारा है। (४०) अथवा अंधेरियों की नाईं गहरी नदियों में कि उसको लहर ढांके लेती हैं लहर पर लहर और उसके ऊपर अंधेरे मेघ कुछ कुछ के ऊपर हैं जब अपना हाथ निकाले तो वह उसको देख नहीं सकता जिसको ईश्वर ही ज्योति न दे उसके निमित कहीं ज्योति नहीं है॥

रु० ६--(४१) क्या तूने नहीं देखा जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है और पक्षी जो पांति बांधे फिरते हैं ईश्वरही का जाप करते हैं प्रत्येक अपनी अपनी प्रार्थना और जाप को जानता है और जो कुछ वह करते हैं ईश्वर जाननेहारा है। (४२) ईश्वर के निमित आकाशों और पृथ्वी का राज्य है और ईश्वर की ओर लौट जाना है। (४३) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर मेघ को हांकता है फिर उनको परस्पर जोड़ता फिर उनको पर्त के पर्त रखता है फिर तू देखता है कि जल मेघ के मध्य में से निकलता है और वह आकाश पर से उतरता है पर्वतों से ओरे और वह उनको बर्षाता है जिस पर चाहता है और हटा देता है जिस पर से चाहता है निकट है कि बिजली की चमक नेत्रों को लेजाय। (४४) ईश्वर रात और दिन को बदलता रहता है निस्सन्देह इसमें उनके निमित ताड़ना है जिनके नेत्र हैं और ईश्वर ने हर जीवधारी को जल † से उत्पन्न किया फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल

* अर्थात मृगतृष्णा। † उत्पत्ति २० : १२

चलता है और कोई दो पाओं पर चलता है और कोई उनमें से चार पाओं से चलता है ईश्वर जो चाहता है उत्पन्न करता है निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिमान है। (४५) हमने खुली आयतें उतारीं ईश्वर जिसे चाहता है सीधे मार्ग की ओर अगुआई करता है। (४६) कहते हैं कि हम ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वास लाए और आज्ञा पालक हुए फिर इनमें से एक जत्था उसके पीछे उससे फिर जाता है * और यह लोग विश्वासी नहीं। (४७) और जब उनको ईश्वर और उसके प्रेरित की ओर पुकारा जाता है कि वह उनमें झगड़ा चुकादें तो उनमें से एक जत्था अचानक मुंह मोड़ता है। (४८) और यदि सत्य उनकी ओर है तो उसकी ओर दौड़ते चले आते हैं। (४९) क्या उनके मनों में रोग है अथवा सन्देह में पड़े हुए हैं अथवा उस बात से डरते हैं कि उन पर ईश्वर और उसका प्रेरित अन्याय करेगा नहीं वरन यह आपही दुष्ट हैं॥

रु० ७—(५०) जब उनको ईश्वर और प्रेरित की ओर बुलाया जाता है जिस्तें उनमें निर्णय करदें यही है जो वह कहदेते हैं हमने सुना और स्वीकार किया यही लोग भलाई पानेहारे हैं। (५१) जो ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा माने और ईश्वर से डरता रहे और बचकर चले तो वही लोग मनोर्थ पाने हारे हैं। (५२) ईश्वर की कठिन सौगंद की सौगंद खाते हैं कि यदि तू आज्ञादे तो अवश्य घरबार छोड़ के बाहर निकलेंगे कहदे सौगंद न खाओ रीति अनुसार आज्ञा को पालन करो निस्सन्देह जो कुछ तुम करते हो। (५३) कहदे ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा को पालन करो यदि तुम उससे पीठ फेरोगे तो उसके † अधिकार में वही है जो भार उस पर रखा गया और तुम्हारे अधिकार में वह है जो तुम पर भार रखा गया और यदि उसकी आज्ञा को पालन करो तो मार्गपाओ और प्रेरित के अधिकार में तो बस यही है कि खोलकर वर्णन करदे। (५४) ईश्वर ने उन लोगों को बाचादी है जो तुम में से विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उन को अवश्य पृथ्वी में दीवान बनायगा उनसे अगलों को दीवान बनाया था और उनके निमित मतको स्थापित करेगा जिसको उनके निमित प्रसन्न किया और उनको उनके भय के पीछे शान्ति देगा और वह मेरी आराधना किया करेंगे और किसी को मेरा साझी न ठहरायंगे और जो कोई उसके पीछे कृतघ्नता करे वही अनाज्ञाकारी हैं। (५५) प्रार्थना को स्थिर रखो दान दो और प्रेरित की आज्ञा पालन

---

* आयत ४५ से ५६ लों उहद के संग्राम के अन्त और खन्दक के संग्राम के मध्य में उतरीं।
† अर्थात प्रेरित के॥

करो जिस्तें तुम पर दयाकी जाय। (५६) ऐसा विचार न करो कि यह अधर्मी पृथ्वी में भागकर हरादेंगे उनका ठिकाना अग्नि है और वह जाने के निमित बुरा स्थान है॥

रु० ८—(५७) हे विश्वासियो वह जो तुम्हारे हाथ का धन * है और वह जो तुममें से अपनी तरुणाई को नहीं पहुंचे तुम से आज्ञा लेकर आयाकरें तीन समय प्रातःकालकी प्रार्थना से पहिले और दोपहर को जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारकर रखा करते हो और सन्ध्या की प्रार्थना के पीछे यह तीन समय तुम्हारे आड़ करने के हैं इनके पीछे तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं कि कोई कोई की ओर आते जाते हैं इसी रीति ईश्वर तुम्हारे निमित अपनी आयतें वर्णन करता है और ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (५८) और जब तुम्हारे बालक तरुणाई को पहुँचें तो उचित है कि इसी भांति आज्ञा ले लियाकरें जैसे उनके अगले आज्ञा लेते रहे और इसी भांति ईश्वर अपनी आयतें तुम्हारे निमित वर्णन करता है और ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है । (५९) जो स्त्रिएं बहुत बूढ़ी होगईं और जिनको बिवाह की आशा न रही उन पर कोई दोष नहीं यदि वह अपने वस्त्र उतार कर रख दिया करें और इससे उनकी इच्छा सिंगार दिखाने की न हो और यदि वह इससे भी बची रहें तो उनके निमित उत्तम है और ईश्वर सुनने हारा और जानने हारा है। (६०) कोई रोक नहीं है अंधेके निमित कोई रोक नहीं है लंगड़े के निमित कोई रोक नहीं है रोगी के निमित न तुमहीं पर इस विषय में कि अपने घरों में से खाओ अथवा अपने पिता के घरों से अथवा अपनी माता के घरों से अथवा अपने भाइयों के घरों से अथवा अपनी बहनों के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामुओंके घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा उनके घरों से जिनकी कुंजियां तुम्हारे अधिकार में हैं अथवा अपने मित्रों के घरों से इसमें तुम पर कोई रोक नहीं कि सब मिलके खाओ अथवा अलग अलग। (६१) और जब अपने घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को प्रणाम करो और ईश्वरकी ओर से आशीर्वाद दो जो आशीषों से भरी और पवित्र है इसी भांति ईश्वर तुम्हारे निमित अपनी आयतें वर्णन करता है जिस्तें तुम समझो॥

रु० ९—(६२) निस्सन्देह विश्वासी तो वही हैं जो ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वास लाए और जब वह उसके संगमें किसी ऐसे कार्य के निमित

* अर्थात दास॥

जिसके निमित इकत्र होने की आवश्यक्ता है तो लौट नहीं जाते जबतों उससे आज्ञा न लेलें निस्सन्देह जो तुझ से आज्ञा लेते हैं यह वही हैं जो विश्वास लाए हैं ईश्वर और उसके प्रेरित पर और जब वह तुझ से अपने किसी कार्य के निमित आज्ञा मांगाकरें तो उनमें से जिसे तू चाहे आज्ञा दे दियाकर और उनके निमित ईश्वर से क्षमा मांग निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (६३) परस्पर प्रेरित के गोहराने को ऐसा न समझो जैसा तुम में से एक दूसरे को गोहरावे * ईश्वर उनको जानता है जो तुम में से आंख बचाकर खिसक जाते हैं सो जो लोग उसकी आज्ञा की विरुद्धता करते हैं इस बात से डरते रहें कि उनपर कोई विपति और दुख दायक दण्ड न आपड़े। (६४) सचेत रहो निस्सन्देह जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है वह ईश्वर के निमित है और जिस पर तुमहो उसको वह जानता है और जिस दिन वह उसकी ओर लौटाए जायंगे तो वह उनको बता देगा जो कुछ उन्होंने किया है ईश्वर प्रत्येक वस्तुको जानता है।

२५ सूरए फ़ुरक़ान मक्की रुकू ६ आयत ७७।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) धन्य है वह जिसने अपने दास पर फ़ुरक़ान उतारा जिस्तें सृष्टियों के निमित डराने हारा होजाय। (२) उसके निमित आकाशों और पृथ्वी का राज है उसने कोई पुत्र नहीं लिया और उसके राज में उसका कोई साझी नहीं उसीने हर वस्तु को उत्पन्न किया फिर उसके नियम नियुक्त किए। (३) और उन्होंने उसके उपरान्त ऐसे ईश्वर नियत किए जो कुछ उत्पन्न नहीं कर सकते और वह आपही उत्पन्न हुए हैं। (४) और अपने प्राणों के निमित—हानि और लाभ का अधिकार भी नहीं रखते न मृत्यु और जीवन का और न जी उठने का। (५) अधर्मी कहते हैं निस्सन्देह यह तो निरा झूठ है जिसको उसने गढ़ लिया है और इस गढ़ने में दूसरे लोगों ने उसकी सहायता † की परन्तु अन्याय और मिथ्या पर आए हुए हैं। (६) कहते हैं यह प्राचीनों की कहानियां हैं जिन्हें उसने लिख लिया है सो वही उस पर भोर और सांझ पढ़े जाते हैं। (७) कहदे यह उसने उतारा है जो आकाशों और पृथ्वी के गुप्त भेदों को जानता है निस्सन्देह

* अर्थात प्रेरित के विषय में आदर के साथ वार्तालाप किया करो। † नहल १०५॥

वह क्षमा करने हारा दयालु है। (८) कहते हैं कि यह कैसा प्रेरित है भोजन करता है हाटों में फिरता है क्यों न उसकी ओर कोई दूत पठाया कि वह भी उसके संग डराने को रहता अथवा उसकी ओर कुछ भण्डार फेंका जाता। (९) अथवा उसके तीर एक वारी होती उसमें से खाया करता और दुष्टों ने कहा कि निस्सन्देह तुमतो एक टोना किए हुए मनुष्य के पीछे पड़े हो। (१०) देख वह तेरे निमित कैसे दृष्टान्त वर्णन करते हैं सो भटक गए अब मार्ग नहीं पा सकते॥

रु० २—(११) धन्य है वह यदि वह चाहे तो तेरे निमित उत्तम वारी बनादे कि उनके नीचे धाराएं बह रही हों और तेरे निमित भवन बनादे। (१२) कुछ नहीं परन्तु उन्होंने उस घड़ी को झुठलाया और हमने उसके निमित अग्नि उद्यत की है जो उस घड़ी को झुठलाता है। (१३) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो यह उसका झुंझलाना और चिल्लाना सुनेंगे। (१४) और जब वह उसमें दण्ड बांध के उसके सकरे स्थान में डार दिए जायंगे वहां मृत्यु के निमित चिल्लायंगे। (१५) आज एक मृत्यु को मत पुकारो वरन बहुत सी मृत्युओं को पुकारो। (१६) कहदे यह उत्तम है अथवा सदा रहने का वैकुण्ठ जिसकी वाचा संयमियों से कीगई है वह उनका प्रतिफल है और पलट जाने का स्थान है। (१७) वहां उनके निमित वह होगा जिसकी इच्छा करेंगे और उसमे सदा रहेंगे तेरे प्रभु की वाचा होचुकी जिस पर प्रश्न होसकता है। (१८) और जिस दिन उनको और जिन्हें वह ईश्वर के उपरान्त पूजते रहे इकत्र करेगा उनसे कहेगा क्या तुमने मेरे दासों को भटकाया था अथवा वह आपही मार्ग से भटक गए। (१९) कहेंगे तू पवित्र है हमको नहीं सजता कि तेरे उपरान्त दूसरे स्वामी बनालें परन्तु तूने उनको और उनके पुरखों को लाभ पहुंचाए यहांलों कि सुरति भुला बैठे यह भुलाने हारे लोग थे। (२०) यहतो तुमको तुम्हारी बातोंओं में झुठला चुके अब तुम न फिर सकते हो न सहायता पा सकते हो। (२१) और जो तुममें दुष्टता करेगा हम उसको बड़ा दण्ड चखायंगे। (२२) और हमने तुझसे पहिले ऐसे प्रेरित नहीं भेजे जो भोजन न करते थे और हाटों में न फिरते थे और हमने तुममें कोई को कोई के निमित परिक्षा बनाया है क्या तुम धीरज करते हो तेरा प्रभु देखरहा है॥

रु० ३—(२३) और उन्होंने जो हमसे मिलने की आशा नहीं रखते कहा कि क्यों न हम पर दूत उतरे अथवा हम अपने प्रभु को देखें यह लोग अपने मनों में बड़ा घमंड कररहे हैं और मर्याद से बहुतही बढ़ गए हैं। (२४) जिस दिन वह

दूतों को देखेंगे अपराधियों के निमित उस दिन कोई हर्ष नहीं और वह कहेंगे रुक जाय किसी आड़ से। (२५) और हम उनके कार्य्यों की ओर अवाहित होयंगे जो उन्होंने किए तो हमने उसको बना दिया उड़ाई हुई धूर के समान। (२६) बैकुण्ठ वासी उस दिन रहने के उत्तम स्थान में होयंगे और मध्यान्ह के समय उत्तम स्थान में। (२७) और जिस दिन आकाश मेघ के ऊपर से हट जायगा दूत उतारे जायंगे। (२८) उस दिन यथार्थ राज रहमान का होगा और वह दिन अधर्मियों के निमित कठिन होगा। (२९) जिस दिन दुष्ट अपने हाथों को काट काट खायंगे कहेगा * कि आह कि मैंने प्रेरित के संग में मार्ग ग्रहण किया होता (३०) मुझ पर शोक कि मैं अमुक मनुष्य को मित्र न बनाता। (३१) उसने तो मुझको शिक्षा से बहका दिया उसके पीछे कि मेरे निकट आचुकी थी और दुष्टात्मा मनुष्य का संग छोड़ने हारा है। (३२) उसने कहा कि हे मेरे प्रभु मेरी जाति ने तो इस कुरान को व्यर्थ ठहराया है। (३३) और हमने इसी भांति हर भविष्यद्वक्ता के शत्रु अपराधियों में से बना दिए तेरा प्रभु शिक्षा देने और सहायता करने को बस है। (३४) जो अधर्म्मी हैं कहते हैं कि इस पर सारा कुरान एक संग क्यों न उतारा गया—ऐसेही जिससे तेरे हृदय को स्थिर रखें और हमने इसको ठहर ठहर के सुनाया। (३५) और वह तेरे तीर कोई ऐसा दृष्टान्त नहीं लाए जिसको हम तुझसे यथार्थ उत्तर और उत्तम वर्णन नहीं करते। (३६) वह जो नर्क में इकत्र किए जायंगे वही लोग बुरे ठिकाने में हैं और बहुत भटके हैं॥

रु० ४—(३७) और हमने मूसा को पुस्तक दी और उसके भाई हारून को मन्त्री बनाया। (३८) फिर हमने कहा कि तुम दोनों उन लोगों के निकट जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया फिर हमने उन लोगों को दे पटका। (३९) और नूह की जाति कि जब उन्होंने प्रेरितों को झुठलाया हमने उनको डुबा दिया और उन्हें लोगों के निमित चिन्ह ठहराया और हमने दुष्टों के निमित दुख दायक दण्ड उद्यत कर रखा है। (४०) और आद और समूद और अलरस † के बासी और बहुत से जाति गणों को उनके मध्य में। (४१) और हमने सब ही से दृष्टान्त वर्णन करे और हमने हर एक को मेट दिया। (४२) और निस्सन्देह यह उस ग्राम में होआए हैं जिस पर बुराई की वर्षा बरसाई गई थी तो उन्होंने न

* अकबा से बेजने ने कहा था॥ † कोई कोई इससे मिदियान वालों को समझता है और अलरस का अर्थ कुएं का है।

देखा बरन यह लोग तो जी उठने की आशाही नहीं रखते। (४३) और जब तुझको देखते हैं तो तेरी हंसाई करते हैं कि क्या यही मनुष्य है जिसको ईश्वर ने प्रेरित बनाकर खड़ा किया है। (४४) यह तो छल था जिस्तें कि हमको हमारे देवों से भटका दे यदि हम दृढ़ता से स्थिर न रहते आगे चलकर यह जानलेंगे कि जिस समय दण्ड देखेंगे कि कौन अधिक भटका है। (४५) भला देखो तो जिस मनुष्य ने अपनी चेष्टा को अपना ईश्वर ठहरा लिया सो क्या तू उसका उत्तरवादी हो सकता है। (४६) अथवा तू विचार करता है कि उनमें से बहुतेरे सुनते और समझते हैं निस्सन्देह वह तो पशुओं के समान हैं बरन और भी अधिक भटके हैं॥

रु० ५—(४७) क्या तूने अपने प्रभु की ओर नहीं देखा कि उसने कैसे छाया फैलादी * और यदि चाहता तो उसको स्थिर कर देता और हमने उस पर सूर्य्य को स्थिर † किया। (४८) और फिर हमने उसको अपनी ओर धीरे २ समेटा। (४९) वही है जिसने तुम्हारे निमित रात्रि को पट और निद्राको सुख बनाया और दिन चलने फिरने के निमित। (५०) वही है जिसने पवनों को अपनी दया के आगे आगे समाचार देने के निमित भेजा और हमने आकाश से पवित्र जल उतारा। (५१) जिस्तें उससे मृतक नग्रको जीता करदे और उसे पिलाएं अपने सृजे हुए बहुतेरे पशुओं और मनुष्यों को। (५२) और निस्सन्देह हमने इसको भांति भांति से उनमें बांट दिया जिस्तें वह शिक्षाको ग्रहण करें यदपि बहुत मनुष्य कृतघ्नता किए बिना न रहे। (५३) यदि हम चाहते तो हर ग्राममें एक भय सुनाने हारा उठा खड़ा करते। (५४) सो अधर्मियों का कहा न मान और उनके संग युद्धकर बड़ी युद्ध ‡ के संग। (५५) वही है जिसने दो नदियों को मिला ¶ दिया यह तो मीठा और मन भावन है और यह खारी और कड़ुवा है और उनके मध्य में एकपट है और दृढ़आड़। (५६) वही है जिसने जल § से मनुष्य को उत्पन्न किया फिर उसके निमित लोहू के नाते बिवाह के नाते ठहराए तेरा प्रभु शक्तिमान है। (५७) वह ईश्वर के उपरान्त ऐसी बस्तुको पूजते हैं जो न उनको लाभ पहुंचा सकती है न हानि और अधर्मी अपने प्रभु के बिरुद्ध सहायता देता है। (५८) हमने तुझको सुसमाचार और भय सुनाने हारा करके भेजा है। (५९) कहदें कि मैं तुमसे इस पर कुछ बनि नहीं मांगता परन्तु जो चाहे अपने प्रभु की ओर मार्ग गहे। (६०) और तू उस जीवते पर आशाकर जिसको मृत्यू नहीं और उसकी महिमा

---

* राजाओं की दूसरी पुस्तक २० : ९—११। † अर्थात प्रमाण। ‡ ज़कारियाह १४ : ८। ¶ नूर ४४। § कुरानानुसार।

में जानकर और वह अपने दासों के अपराधों को भलीभांति जानता है जिसने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनमें है छः दिनमें उत्पन्न किया फिर स्वर्ग पर जा विराजा वह बड़ा दयालु है तू उसके विषय में किसी जानकार से पूछले। (६१) और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को दण्डवत करो तो वह कहते हैं कि रहमान क्या वस्तु है क्या हम उसको दण्डवत करने लगें जिसको तू कहे और उनकी घिन बढ़ती ही गई ॥

रु॰ ६—(६२) धन्य है वह जिसने आकाश में राशि* चक्र बनाए और उसमें दीपक रखदिया और चमकता हुआ चन्द्रमा। (६३) वही है जिसने रात्रि और दिनको एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनाया उसके निमित जो विचार करना चाहे अथवा धन्यवाद की इच्छा करे। (६४) रहमान के दास वह हैं जो पृथ्वी पर धीरे से चलते हैं और जब उनसे मूर्ख लोग बात करते हैं कहदेते हैं प्रणाम। (६५) और जो लोग अपने प्रभु के सन्मुख दण्डवत में और खड़े रहने में रात्रि व्यतीत करते हैं। (६६) और वह जो कहते हैं कि हे हमारे प्रभु हमसे नर्क का दण्ड परे रख निस्सन्देह उसका दण्ड तो अवश्य होनेहारा है निस्सन्देह वह बुरा बिश्राम स्थान है और बुरा ठौर है। (६७ और वह लोग जब वह व्यय करने लगें तो न उड़ाऊ बनें न कंजूस परन्तु जो दोनों के मध्य में ठहरा रहे। (६८) और वह जो ईश्वर के उपरान्त दूसरे ईश्वर को नहीं पुकारते और किसी प्राण का केवल उचित के बोहू नहीं बहाते जिसको ईश्वर ने बर्जा है और न व्यभिचार करते हैं और जो ऐसा करेगा वह बड़ा क्लेश पायगा। (६९) उसे पुनरुत्थान के दिन दुगना दण्ड होगा और सदा उसमें अनादर से रहेगा। (७०) परन्तु जिसने पश्चाताप किया और विश्वास लाया और धर्म्म के कार्य्य किए तो यही लोग हैं कि ईश्वर उनके अपराधों को भलाई से बदल देगा ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (७१) और जिसने पश्चाताप किया और धर्म्म के कार्य्य किए निस्सन्देह वह ईश्वर की ओर पश्चाताप सहित लौटता है। (७२) और जो झूठी साक्षी नहीं देते और जब कुठौर से निकले तो आदर अनुसार निकल जाते हैं। (७३) और वह लोग कि जब उनको शिक्षा कीजाती है उनके प्रभु की आयतों से तो उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। (७४) और वह जो कहते हैं कि हे हमारे प्रभु हमको हमारी पत्नियों और हमारी सन्तान की ओर से आंखों को ठंढक दे और हमको संयमियों का

* रा॰ १५. बनी इसराएल १०६ ॥

अगुआ बना। (७५) उनको ऊंचे स्थान पर प्रतिफल दिया जायगा इस कारण कि उन्होंने धैर्य्य किया और वहां उनका स्वागत कुशल की प्रार्थना और प्रणाम से होगा। (७६) उनमें सदा रहेंगे अच्छा स्थान टिकने का ठौर है। (७७ *) कहदे तेरा प्रभु तुम्हारी चिन्ता नहीं करता यदि तुम उसको न पुकारो तुमतो झुठला चुके अब उसका दण्ड अवश्य होगा॥

---

२६ सूरए शोरा (कवी) मक्की रुकू ११ आयत २२८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १ तूसम—(१) यह आयतें प्रकाशित पुस्तक की हैं। (२) कदाचित तू अपने प्राण को घोंटने हारा है इस बात पर कि वह विश्वास नहीं लाते। (३) यदि हम चाहें तो उन पर आकाश से एक चिन्ह उतारें फिर उनकी ग्रीवें झुकी रहजायं। (४) और उनके तीर रहमान की ओर से कोई नवीन बात शिक्षा की नहीं पहुंचती कि जिससे मुँह न मोड़ते हों। (५) सो यह झुठला चुके अब उन पर इस बात की सत्यता आपहुंचेगी जिस पर ठट्ठा किया करते थे। (६) क्या उन्होंने पृथ्वी को नहीं देखा कि हमने उसमें कितनी भांति भांति की वस्तुएं उगाईं। (७) निस्सन्देह इसमें चिन्ह हैं और उनमें बहुतेरे विश्वास लाने हारे नहीं। (८) निस्सन्देह तेरा प्रभुही बली और बुद्धिवान है॥

रु० २—(९) और जब तेरे प्रभु ने मूसा को गुहराया कि पापी जाति के सन्मुख आ। (१०) फ़िराऊन की जाति के समीप क्या यह डरते हैं। (११) वह बोला हे मेरे प्रभु मैं डरता हूं कि वह मुझे झुठलायंगे। (१२) मेरी छाती सकरी है और मेरी जिह्वा नहीं † चलती तू हारून को भेज। (१३) उनका मुझ पर एक अपराध ‡ है और मैं डरता हूं कि वह मुझको घात करेंगे। (१४) कहा कभी नहीं तुम हमारे चिन्ह लेकर जाओ निस्सन्देह हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे। (१५) और फ़िराऊन के तीर जाओ और कहो निस्सन्देह हम सृष्टियों के प्रभु के पठाए हुए हैं। (१६) इसराएल सन्तान को हमारे साथ भेजदे। (१७) और उसने कहा क्या हमने तुझको अपने यहां बालक की नाईं नहीं पाला और तू हममें

---

* किसी किसी का विचार है कि यह आयत इस ठौर अनमेल है कहते हैं कि यह आयत सूरए तौब की १२४ आयत के पश्चात उतरी॥ † निर्गमण ४:१०—१६ लों। ‡ अर्थात मिसरी को घात किया

अपनी आयु के वर्षों रहा। (१८) और तू ने अपना वह कर्म्म * किया जो किया–तू कृतघ्न है। (१९) उसने कहा कि मैंने वह कर्म्म उस समय किया जब मैं भटके हुओं में से था। (२०) तो मैं तुममें से भाग खड़ा हुआ जब मुझे तुमसे डर लगा फिर मुझे मेरे प्रभु ने आज्ञा दी और मुझे प्रेरितों में से बनाया। (२१) और यह उपकार है जिसका तू मुझ पर उपकार रखता है कि तूने इसराएल संन्तान को दास बना लिया। (२२) फ़िराऊन ने कहा कि सृष्टियों का प्रभु क्या है। (२३) उत्तर दिया आकाशों और पृथ्वी का और जो कुछ उन दोनों में है उसका प्रभु है यदि तुम प्रतीत करो। (२४) वह अपने चहुंओर के लोगों से बोला क्या तुम नहीं सुनते। (२५) उत्तर दिया तुम्हारा प्रभु और तुम्हारे पुरखों का प्रभु है। (२६) वह बोला निस्सन्देह तुम्हारा प्रेरित जो तुम्हारे निकट भेजा गया अवश्य सिड़ी है। (२७) उत्तर दिया वही पूर्व्व और पच्छिम का और जो कुछ उन दोनों में है प्रभु है यदि तुम बुद्धि रखते हो। (२८) वह बोला यदि तूने मेरे उपरान्त कोई और ईश्वर ठहराया † तो मैं तुझको अवश्य बन्धुओं में करदूंगा। (२९) उत्तर दिया यद्यि मैं तेरे सन्मुख कोई खुली वस्तु लाऊं। (३०) वह बोला लेआ उसको यदि तू सत्यवादियों में है। (३१) और उसने अपनी लाठी फेंकदी और देखो यह प्रत्यक्ष सर्प बन गया। (३२) और उसने अपना हाथ निकाला और वह देखनेहारों की दृष्टि में श्वेत था॥

रु० ३—(३३) वह अपने निकट के प्रधानों से बोला कि निस्सन्देह यहतो कोई प्रवीण टोनहा है। (३४) और चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से अपने टोना के बल से निकाल बाहर करे सो अब तुम क्या कहते हो। (३५) वह बोले उसको और उसके भाई को अवसर दे और नगरों में बुलाने हारे भेज। (३६) जिस्तें तेरे निकट सब टोनहा आएं। (३७) फिर ठहराए हुए दिन पर सब टोनहा इकत्र किए गए। (३८) और लोगों से कहा गया कि तुम भी इकत्र होते रहो। (३९) कदाचित हम टोनहे के पीछे होलें यदि वही प्रबल रहें। (४०) और जब टोनहा आए तो फ़िराऊन से कहने लगे क्या निस्सन्देह हमें कुछ बनि मिलेगी यदि हम प्रबल रहें। (४१) वह बोला हां और तुम मेरे समीपियों में होओगे। (४२) और मूसा ने कहा डालदो जो तुम डालने हारे हो। (४३) सो उन्होंने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियां डालदीं और बोले कि फ़िराऊन के प्रताप से हमहीं प्रबल रहेंगे। (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डालदी और देखो वह

* कसस १५। † कसस ३८॥

निगलने लगी झूठे धोखे को जो वह बनारहे थे। (४५) और टोनहा दगडवत करने लगे। (४६) और कहने लगे कि हम सृष्टियों के प्रभु पर विश्वास लेआए। (४७) मूसा और हारून के प्रभु पर। (४८) बोला क्या तुम उस पर विश्वास लेआए प्रथम इसके कि मैं तुमको आज्ञा दूं निस्सन्देह यह तुम्हारा बड़ा है जिसने तुमको टोना सिखाया * है अब तुमको जान पड़ेगा। (४९) निस्सन्देह मैं तुम्हारे हाथ और पांव उलटी ओर से काटूंगा और तुम सबको फूस दूंगा। (५०) वह बोले कुछ चिन्ता नहीं हमको अपने प्रभु की ओर लौटजाना है। (५१) हम आशा रखते हैं कि हमारा प्रभु हमारा अपराध क्षमा करदेगा इसी कारण हम पहिले विश्वास लेआए॥

रु० ४—(५२) और हमने मूसा की ओर प्रेरणा की कि मेरे दासों को लेके रात में निकल और निस्सन्देह तुम्हारा पीछा किया जायगा। (५३) और फ़िराऊन ने नगरों में बुलाने हारे भेजे (५४) निस्सन्देह यह थोड़े से लोग हैं। (५५) और निस्सन्देह उन्होंने हमको क्रोधित किया। (५६) और हम शस्त्रधारी † जत्था हैं। (५७) फिर हमने उनको निकाला बारियों और सोतों से। (५८) धनागारों और उत्तम भवनों से। (५९) और ऐसे हमने इसराएल वंश को उन सबका अधिकारी किया। (६०) और उन्होंने उनका पीछा सूर्य्योदय होतेही किया। (६१) जब एक दूसरे को दोनों जत्थाएं देखने लगीं मूसा की जत्था कहने लगी निस्सन्देह हमतो पकड़ लिए गए। (६२) उसने कहा कभी नहीं मेरे संग मेरा प्रभु है वह हमको मार्ग दिखायगा। (६३) फिर हमने मूसा की ओर प्रेरणा की कि अपनी लाठी समुद्र पर मार तो नदी फटगई और हर टुकड़ा एक भारी पर्ब्बत के समान होगया। (६४) और दूसरों ‡ को भी हमने उस स्थान पर पहुंचा दिया। (६५) और हमने मूसा और उन सबको जो उसके संग थे बचा लिया। (६६) फिर दूसरों को डुबा दिया। (६७) और यह चिन्ह है परन्तु बहुतेरे उनमें से विश्वास लाने हारे नहीं। (६८) निस्सन्देह तेरा प्रभु बलवंत और दयालु है॥

रु० ५—(६९) और उनको इबराहीम की कहानी सुना। (७०) जब उसने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुम क्या पूजते हो। (७१) वह बोले हम मूर्तियों को पूजते हैं और हम इन्हीं पर जमें बैठे रहते हैं। (७२) उसने

* कसस २८। † अर्थात चौकसी करनेहारे लोग। ‡ अर्थात फ़िराऊन के लोगों पर॥

कहा जब तुम उनको पुकारते हो क्या वह सुन सकते हैं। (७३) अथवा तुमको लाभ अथवा हानि पहुंचा सकते हैं। (७४) वह बोले नहीं—परन्तु हमने अपने पुरखों को ऐसाही करते पाया। (७५) उसने कहा भला तुम देखते हो जिनको तुम पूजते हो। (७६) और तुमसे पहिले तुम्हारे पुरखा पूजते रहे। (७७) निस्सन्देह वह मेरे वैरी हैं--परन्तु सृष्टियों का प्रभु। (७८) जिसने मुझे उत्पन्न किया और मेरी शिक्षा करता है। (७९) और जो मुझे खिलाता और पिलाता है। (८०) और जब मैं रोगी होता हूं तो वही मुझको आरोग्य करता है। (८१) जो मुझको मारेगा और फिर जियावेगा। (८२) और वह कि जिससे हमको आशा है प्रतिफल देने के दिन मेरा अपराध क्षमा करेगा। (८३) हे मेरे प्रभु मुझको बुद्धि दे और मुझको धर्म्मी दासों में मिला। (८४) और पिछलों में मेरे निमित सच्ची बात * रख। (८५) और मुझको वैकुण्ठ के वरदान के अधिकारियों में कर। (८६) और मेरे पिता को क्षमा कर कि वह भटके हुओं में से था। (८७) और उठा खड़े किए जाने के दिन मेरी हंसाई न करियो। (८८) जिस दिन न धन लाभ देता है न पुत्र। (८९) परन्तु केवल वह जो ईश्वर के तीर शुद्ध हृदय लेकर आये। (९०) और संयमियों के निकट वैकुण्ठ लाया जायगा। (९१) और भटके हुओं के सन्मुख नर्क ला खड़ा किया जायगा। (९२) और कहा जायगा वह कहां हैं जिनकी तुम पूजा किया करते थे। (९३) ईश्वर के उपरान्त क्या वह तुम्हारी सहायता कर सकते हैं अथवा बदला लेसकते हैं। (९४) और उसमें सब भटके हुए औंधे मुँह डाल दिए जायंगे। (९५) और दुष्ट आत्मा की सैना सबकी सब। (९६) वह कहेंगे जब उसमें झगड़ते होंगे। (९७) ईश्वर की सोंह हमतो प्रत्यक्ष भ्रमणा में थे। (९८) जब हम तुमको सृष्टियों के प्रभु के समान जानते थे। (९९) और हमको तो इन अपराधियों ने भ्रमाया। (१००) हमारे हेतु बिन्ती करनेहारा कोई नहीं। (१०१) और न कोई सच्चा मित्र। (१०२) यदि हमको लौट कर जाना हो तो हम विश्वासियों में होजायं। (१०३) निस्सन्देह इस कहानी में एक चिन्ह है परन्तु इनमें बहुतेरे विश्वास लाने हारे नहीं। (१०४) और निस्सन्देह तेरा प्रभुही बलवन्त और दयालु है॥

रु० ६—(१०५) नूह की जातिने कहा कि प्रेरित झूठे हैं। (१०६) जब उनके भाई नूह ने उनसे कहा क्या तुम न डरोगे। (१०७) निस्सन्देह मैं तुम्हारे निमित विश्वास योग्य प्रेरित हूँ। (१०८) ईश्वर से डरो और मेरी मानो। (१०९) मैं

* मरियम ४२।

इस पर तुम से कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो सृष्टियों के प्रभु के तीर है। (११०) सो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानों। (१११) वह बोले क्या हम तेरी प्रतीत करें तेरे पीछे तो तुच्छ लोग चलते हैं। (११२) उसने कहा मैं क्या जानू जो वह करते रहे। (११३) उनका लेखा लेना तो मेरे प्रभुका कार्य है यदि तुम समझो। (११४) और मैं विश्वासियों को बिड़ारने हारा नहीं। (११५) मैं तो बस खोलकर डर सुनाने हारा हूं। (११६) वह बोले कि हे नूह यदि तू न मानेगा तो अवश्य पथरवाह किया जायगा। (११७) वह बोला हे मेरे प्रभु निस्सन्देह मेरी जाति ने मुझे झुठलाया। (११८) सो तू मेरे और उनके मध्य में एक खोलना * खोलदे और मुझको और उनको जो मेरे संग विश्वासी हैं बचाले। (११९) बचा लिया उसको और उनको जो उसके संग भरी हुई नौका में थे। (१२०) और फिर हमने उसके पीछे रहे हुओं को डुबा दिया। (१२१) निस्सन्देह इसमें चिन्ह है और उनमें से बहुतेरे विश्वास लाने हारे नहीं। (१२२) निस्सन्देह तेरा प्रभु ही बलवन्त और दयालु है॥

रु० ७—(१२३) आदने † प्रेरितों को झुठलाया। (१२४) जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुम न डरोगे। (१२५) निस्सन्देह मैं तुम्हारे निमित एक विश्वास योग्य प्रेरितहूं। (१२६) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१२७ और मैं इस पर तुम से कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो सृष्टियों के प्रभु के तीर से है। (१२८) क्या तुम हर ऊँचे स्थान पर एक चिन्ह खेलने ‡ के निमित बनाते हो। (१२९) और अपने निमित निर्माण § से उद्यत करते हो कदाचित तुम सदालों रहो। (१३०) और जब हाथ डालते तो दुष्ट बनकर पकड़ते हो। (१३१) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१३२) और उससे डरो जिसने तुम्हारी सहायता उस से की जिसको तुम जानते हो। (१३३) और तुम्हारी सहायता पशुओं और संतान से। (१३४) बारियों और सोतों से। (१३५) निस्सन्देह मुझे तुम्हारे निमित बड़े दिनके दण्ड का भय है। (१३६) वह बोले हमारे निमित समान है चाहे तू शिक्षा करे अथवा शिक्षा न करने हारों में बने। (१३७) कि निस्सन्देह यह तो अगलों का स्वभाव ¶ ही रहा। (१३८) और हम पर तो विपति न आयगी। (१३९) और उन्होंने उसे झुठलाया तो हमने उन्हें नाशकर दिया निस्सन्देह इसमें एक चिन्ह

---

* अर्थात ठीक निर्णय करदे। † ऐराफ. हूद। ‡ उत्पति ११:१—१० फ़जर ६।
§ अर्थात बड़े दृढ़ गढ़ बनाते हो। ¶ अर्थात कहानियां गढ़कर सुनाना॥

है और बहुतेरे उनमें विश्वास लानेहारे नहीं। (१४०) निस्सन्देह तेरा प्रभु बलवन्त और दयालु है॥

रु० ८—(१४१) समूद ने प्रेरितों को झुठलाया। (१४२) जब उनके भाई सालह ने उनसे कहा क्या तुम नहीं डरते। (१४३) मैं तुम्हारे निमित विश्वास योग प्रेरित हूं। (१४४) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१४५) मैं तुमसे इस पर कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो सृष्टियों के प्रभु के तीर है। (१४६) क्या तुम यहां निर्भय छोड़ दिए जाओगे। (१४७) बारियों और सोतों। (१४८) खेतों और खजूरों के संग जिनका गुच्छा टूटा पड़ता है। (१४९) और तुम पर्वतों के भीतर निर्माण से घर बनाते हो। (१५०) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१५१) मर्याद से बढ़ने हारों का कहा न मानो। (१५२) और जो पृथ्वी में उपद्रव मचाते हैं और सुधारका कर्म नहीं करते। (१५३) वह बोले तुझ पर तो किसीने टोना कर दिया है। (१५४) तू भी हमारी नाईं एक मनुष्य है यदि तू सत्यवादी है तो लेआ कोई चिन्ह। (१५५) उसने कहा कि यह ऊँटनी है एक बारी उसके पानी पीने की है और एक दिन तुम्हारे पानी पीने का नियत है। (१५६) तुम उस को कुइच्छा से हाथ न लगाना नहीं तो तुमको बड़े दिन का दण्ड आपकड़ेगा। (१५७) उन्होंने उसके पांव काटडाले सो प्रभात को लज्जित देख पड़े। (१५८) फिर उनको दण्डने धर पकड़ा निस्सन्देह इसमें चिन्ह है और बहुतेरे विश्वास लाने हारे नहीं। (१५९) और निस्सन्देह तेरा प्रभु बलवन्त और दयालु है॥

रु० ९—(१६०) और लूतकी जातिने प्रेरितों को झुठलाया। (१६१) जब उनके भाई लूतने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। (१६२) मैं तुम्हारे निमित विश्वास योग प्रेरित हूं। (१६३) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१६४) मैं तुम से इस पर कुछ बनि नहीं मांगता मेरी बनि तो सृष्टियों के प्रभु के तीरसे है। (१६५) क्या तुम संसार के लोगों में से पुरुषों पर गिरे पड़ते हो। (१६६) और अपनी पत्नियों को त्यागे हुए हो जो तुम्हारे प्रभु ने तुम्हारे निमित उत्पन्न करदीं नहीं बरन तुम मर्याद से बढ़ने हारे लोग हो। (१६७) वह कहने लगे हे लूत यदि तू न मानेगा तो अवश्य तू निकाले हुए लोगों में से होगा। (१६८) उसने कहा निस्सन्देह मैं तो तुम्हारे कर्मों से दुखीहूं। (१६९) हे मेरे प्रभु मुझे और मेरे कुटुंबियों को इन क्रियाओं से जो यह करते हैं बचाले। (१७०) फिर हमने उसको और उसके कुटुंबियों को बचा लिया। (१७१) एक बुढ़िया को छोड़ जो रहने हारों में से थी। (१७२) फिर हमने दूसरों को नाशकर दिया। (१७३) और हमने बर्षाई उन पर एक वर्षा और जिन

लोगों को डराया गया था उनके निमित यह बुरी वर्षा थी। (१७४) इसमें चिन्ह हैं परन्तु वहुतेरे बिश्वास लाने हारे नहीं। (१७५) निसन्देह तेरा प्रभु ही वलवन्त और दयालु है॥

रु० १०—(१७६) मदीन * के लोगों ने प्रेरितों को झुठलाया। (१७७) जब उनसे उनके भाई श्वयब ने कहा क्या तुम नहीं डरते। (१७८) मैं तुम्हारे निमित विश्वास योग्य प्रेरित हूं। (१७९) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१८०) मैं इस पर तुम से कुछ धनि नहीं मांगता मेरी धनि तो सृष्टियों के प्रभु के तीर से है। (१८१) अपना नपुआ पूरा भर दिया करो और हानि देने हारों में न बनो। (१८२) और ठीक तुला से तौला करो। (१८३) लोगों को वस्तुएं घाट न दिया करो और पृथ्वी में उपद्रव न मचाते फिरो। (१८४) उससे डरो जिसने तुम को और पूर्व रचना को रचा। (१८५) वह बोले तुझपर किसी ने टोना कर दिया है। (१८६) और तू भी हमारी नाई मनुष्य है और हमारे विचार में तू निश्चय झूठा है। (१८७) यदि तू सत्यवादी है तो आकाश से हम पर कोई टुकड़ा गिरादे। (१८८) वह बोला कि मेरा प्रभु भली भांति जानता है जो तुम करते हो (१८९) सो उन्होंने उसे झुठलाया और छाया करनेहारे दिनके दण्ड ने उन्हें आपकड़ा और निस्सन्देह वह एक बड़े दिनका दण्ड था। (१९०) निस्सन्देह इस में एक चिन्ह है और उनमें बहुतेरे विश्वास लाने हारे नहीं। (१९१) निस्सन्देह तेरा प्रभु ही बलवन्त और दयालु है॥

रु० ११—(१९२) निस्सन्देह † इसे सृष्टियों के प्रभु ने उतारा है। (१९३) और रूहउलअमीन ‡ इसे लेकर उतरा। (१९४) तेरे हृदय पर जिस्तें तू सुनानेहारों में हो। (१९५) प्रत्यक्ष अरबी भाषा में। (१९६) निस्सन्देह यह प्राचीनों की पुस्तक § में है। (१९७) क्या उनके निमित चिन्ह नहीं कि इसको इसरायल वंश के विद्वान जानते हैं। (१९८) और यदि हम उसको उतारते अजमियों में से किसी पर। (१९९) यदि वह उन पर पढ़ सुनाता तौ भी यह विश्वास नहीं लाते। (२००) इसी रीति हमने इस मार्ग को चलाया अपराधियों के मनों में। (२०१) और वह इस पर विश्वास न लायँगे जबलों कठिन दण्ड को न देखलें। (२०२) सो वह उन पर अकस्मात आपड़ेगा और उनको जान भी न पड़ेगा। (२०३) और कहने लगेंगे कि क्या हमको कुछ अवसर मिल सकता है।

---

* अर्थात ऐका। † अर्थात कुरान। ‡ तकवीर १९। § राद ३६. इस आयत के विषय कहाजाता है कि मदीना में उतरीं॥

(२०४) क्या वह हमारे दण्ड के निमित शीघ्रता करते हैं। (२०५) देखो तो सही यदि हम उनको थोड़े वर्षों लों लाभ उठाने दें। (२०६) फिर उन पर आ प्रगट होगा जिसकी वाचा कीगई थी। (२०७) वह उनके कुछ अर्थ न आयगा जिससे वह लाभ उठाते हैं। (२०८) हम कभी किसी ग्राम को नाश नहीं करते परन्तु उसके निमित डरानेहारे थे। (२०९) स्मर्ण कराने के निमित और हम निर्दई नहीं हैं। (२१०) निस्सन्देह वह तो उसके सुनने से भी अलग* रखे गए हैं। (२११) ईश्वर के संग किसी दूसरे ईश्वर को न पुकारना नहीं तो दण्ड में पड़ जायगा। (२१२) और अपने समीपी कुटुम्बियों को डरा। (२१३) और अपनी भुजा उनके निमित झुका जो विश्वासी तेरे पीछे हो लिए हैं। (२१४) फिर यदि वह तेरा कहना न मानें तो कहदे जो कुछ तुम करते हो मैं उससे दुखित हूँ। (२१५) और ईश्वर बलवन्त दयालु पर भरोसा रख। (२१६) जो तुझको देखता है जब तू उठता है। (२१७) और दण्डत करनेहारों में तेरा फिरना। (२१८) निस्सन्देह वह सुननेहारा और जाननेहारा है। (२१९) मैं तुमको बताऊं कि दुष्टात्माएं किस पर उतरती हैं। (२२०) वह झूठ अपराधियों पर उतरती हैं। (२२१) सुनी हुई बात को ला डालते हैं और उनमें बहुतेरे झूठे हैं। (२२२) और कवियों के पीछे भटके हुए ही चलते हैं। (२२३) क्या तूने नहीं देखा कि वह हर भूमि में मारे मारे फिरते हैं। (२२४) और वह वह कहते हैं जो आप नहीं करते। (२२५) परन्तु हां जो विश्वासलाए और धर्म के कार्य किए और ईश्वर की चर्चा बहुतायत से की। (२२६) और उसके पीछे पलटा लिया कि उन पर अनीति कीगई और अनीति करनेहारे शीघ्र जानलेंगे कि वह किस स्थान में लौट कर जायंगे॥

२७ सूरए नमल (चिऊंटी) मकी रुकू ७ आयत ९५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १ तस—(१) यह आयतें कुरान और प्रकाशित पुस्तक की हैं। (२) शिक्षा और सुसमाचार विश्वासियों के निमित। (३) जो प्रार्थना को स्थिर रखते हैं और दान देते हैं और अंत के दिन की भी प्रतीत रखते हैं। (४) निस्सन्देह जो अंत के दिन की प्रतीत नहीं रखते हमने उनके कर्म भले कर दिखाए

* साफात ७—८॥

और वह भटकते फिरते हैं। (५) यहीं हैं जिनके निमित बड़ा दण्ड है और वही अंत में हानि उठाने हारों में हैं। (६) निस्सन्देह यह कुरान एक बुद्धिवान और जाननेहारे की ओर से सिखाया जाता है। (७) जब मूसा ने अपने घर के लोगों से कहा निस्सन्देह मैं अग्नि देख रहा हूं मैं तुम्हारे निमित वहां से कुछ समाचार लाऊंगा अथवा सुलगता हुआ अंगार जिस्तें तुम तापो। (८) फिर जब उसके निकट पहुंचा उसको शब्द सुनाई दिया धन्य है वह जो अग्नि में है और जो उसके चहुंओर है और सृष्टियों का प्रभु ईश्वर पवित्र है। (९) हे मूसा निस्सन्देह मैं ईश्वर हूं बली और बुद्धिवान। (१०) तू अपनी लाठी डालदे फिर जब उसने उसको रेंगते देखा मानो वह सांप है वह पीठ फेर कर भागा और पीछे भी न देखा हे मूसा शंका न कर मेरे सन्मुख प्रेरित शंका नहीं करते। (११) परन्तु जिसने दुष्टता की फिर उसके बदले में बुराई के पश्चात भलाई की तो निस्सन्देह मैं क्षमा करने हारा दयालु हूं। (१२) अपना हाथ अपनी कांख में डाल और बिना किसी दोष के श्वेत निकलेगा यह उन नौ चिन्हों में से फ़िरऊन और उसके लोगों के निमित हैं निस्सन्देह वह लोग कुकर्म्मी हैं। (१३) जब उनके निकट हमारे प्रकाशित चिन्ह आए तो कहने लगे यहतो प्रत्यक्ष टोना है। (१४) और उनसे मुकर गए अन्याय और अहंकार के कारण यद्यपि उनके मन प्रतीति कर चुके थे परन्तु देख उपद्रवियों का क्या अंत हुआ॥

रु० २—(१५) और हमने दाऊद और सुलेमान को ज्ञान दिया और वह दोनों बोले सर्व स्तुति ईश्वर ही को है जिसने हमको अपने बहुतेरे बिश्वासी दासों पर बड़ाईदी। (१६) और दाऊद का अधिकारी सुलेमान हुआ उसने कहा हे लोगो मुझको पक्षियों की भाषा * सिखाई गई है मुझको हर वस्तु में से दिया गया है निस्सन्देह यही प्रत्यक्ष अनुग्रह है। (१७) और सुलेमान के निमित उसकी सैना इकत्र हुई जिन्नों और मनुष्यों और पक्षियों में से और वह जत्था जत्था खड़े किए गए। (१८) यहांलों कि चिऊंटियों की वादी में पहुंचे तो एक चिऊंटी ने कहा कि हे चिऊंटियो तुम अपने घरों में प्रवेश करो ऐसा न हो कि सुलेमान और उसकी सैना तुम्हें कुचल डाले और उन्हें इसका ज्ञान भी न हो। (१९) और उसकी बात से वह हंसी के साथ मुसकुराया और कहा हे मेरे प्रभु मेरी सहायता कर कि तेरे बरदानों का धन्यवाद करूं जो तूने मुझको और मेरे माता पिता को दिए हैं और यह कि मैं सुकर्म्म करूं जो तुझको भावें और मुझे अपनी दया से

* राजाओं की पहिली पुस्तक ४ : ३३, १० : १—१०; नीति वचन ६ : ६; समोपदेशक १ : ८॥

अपने भले दासों में प्रवेश दे। (२०) और उसने पक्षियों का अविलोकन किया कहा क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं पाता कि वह उनमें से अनुपस्थित है। (२१) मैं उसको कठिन दण्ड देऊंगा अथवा वध करूंगा अथवा वह मेरे तीर प्रत्यक्ष प्रमाण लावे। (२२) सो थोड़ाही समय बीता था और उसने कहा मैंने वह जान लिया जिसको तूने नहीं जाना और मैं सबा से तेरे निमित प्रतीत योग्य समाचार लेकर आयाहूं। (२३) मैंने वहां पर एक स्त्री को पाया जो वहां की प्रधान है उसको हर भांति की सामग्री दी गई है और उसके समीप उसके निमित एक अति ऊंचा सिंहासन है। (२४) वह और उसकी जाति ईश्वर को छोड़ कर सूर्य की दण्डवत करते हैं और दुष्टात्मा ने उनके कर्मों को अच्छा करके दिखाया और उनको मार्ग से रोक दिया सो वह शिक्षा ग्रहण करने हारे नहीं हुए। (२५) वह ईश्वर को दण्डवत नहीं करते जो आकाशों और पृथ्वी की गुप्त वस्तुओं को निकालता है और जो कुछ वह गुप्त करते और जो कुछ वह प्रगट करते हैं सब कुछ वह जानता है। (२६) ईश्वर है कोई ईश्वर नहीं परन्तु वह ऊंचे स्वर्ग का प्रभु है (२७) कहा मैं देखूंगा कि तू सत्य कहता है अथवा झूठ बोलने हारों में है। (२८) लेजा मेरा यह पत्र और इसको उनके सन्मुख फेंकदे फिर उनके तीर से परे हटजा और देख कि वह क्या उत्तर देते हैं। (२९) वह बोली हे अध्यक्षो निस्सन्देह मेरी ओर एक बड़ा पत्रडाला गया है। (३०) यह सुलेमान की ओर से है और निस्सन्देह यह इस भांति है आरम्भ करता हूं ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त कृपालु है और बड़ा दयालु है। (३१) मेरे विरुद्ध विरोध न कर और मेरे निकट मुसलमान होकर चलीआ॥

रु० ३—(३२) उसने कहा हे सभासदो मेरे विषय में सम्मति देओ मैं कोई काम नहीं ठहराती जबलों तुम उपस्थित न होओ। (३३) हम बलवन्त और घोर संग्राम करने हारे हैं तेरे हाथ में आज्ञा है सो विचारकरले जो कुछ तू आज्ञा करती है। (३४) वह बोली कि निस्सन्देह जब राजा किसी नगर में प्रवेश करते हैं तो उसको विनाश करदेते हैं उसके माननीय पुरुषों का अनादर करते हैं यही है जो वह करते हैं। (३५) और मैं उसकी ओर भेंट भेजती हूं और बाट जोहती रहूंगी कि भेजे हुए क्या उत्तर लाते हैं। (३६) सो जब वह सुलेमान के निकट आए उसने कहा क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो जो कुछ ईश्वर ने मुझको दिया है उससे उत्तम है जो तुमको दिया है अपनी भेंटों से तुम ही आनंद भोगो। (३७) उनकी ओर लौट जाओ निस्सन्देह हम उनके निकट सैना सहित पहुंचेंगे कि

वह उनका साम्हना न करसकेंगे और उनको दुर्दशा के साथ निकालदेंगे और वह तुच्छ होयंगे। (३८) कहा हे मंत्रियो तुम में से कौन उसका सिंहासन मेरे निकट ले आयगा उससे पहिले कि वह मुसलमान होकर मेरे निकट आवे। (३९) जिन्नों में से एक देवने कहा कि मैं उसको तेरे निकट ले आऊंगा इससे पहिले कि तू अपने ठौर से उठे निस्सन्देह मैं उसके निमित बली और विश्वास योग्य हूं। (४०) एक मनुष्य जिसके तीर पुस्तक का ज्ञान था बोला मैं उसको तेरे तीर उससे पहिले लेआऊंगा कि तेरी आंख झपके जब उसने उसको अपने निकट धरा हुवा देखा कहा कि यह मेरे प्रभु के अनुग्रह से है जिस्तें मुझको परखे कि मैं धन्यवाद करता हूं अथवा कृतघ्नता और जो धन्यवाद करे वह अपने निमित करता है और जो कृतघ्नता करे तो मेरा प्रभु चिन्ता रहित और करुणा करनेहारा है। (४१) उसने कहा इसके सिंहासन का रूप बदल दो कि देखें वह शिक्षित है अथवा अशिक्षितों में है। (४२) जब वह आई कहा गया कि ऐसाही तेरा सिंहासन है वह बोली यह तो मानो वही है और हमको तो इससे पहिले ही ज्ञान होगया और हम मुसलमान होचुके थे। (४३) और उसको रोक लिया था उस वस्तु ने जिसे वह ईश्वर के उपरान्त पूजा करती थी निस्सन्देह वह अधर्म्मी जातियों में से थी। (४४) उससे कहा गया कि भवन में प्रवेश कर और जब उसने उसे देखा उसने समझा कि गहिरा पानी है और उसने अपनी पिंडलियां खोलदीं वह बोला यह तो एक भवन है जिसमें कांच जड़े हैं। (४५) वह बोली हे मेरे प्रभु मैंने अपने ऊपर अनीति की मैं सुलेमान के संग विश्वास लाई ईश्वर सृष्टियों के प्रभु पर॥

रु० ४—(४६) और हमने समूद के तीर उसके भाई सालेह को भेजा कि ईश्वर की अराधना करो सो वह अकस्मात दो जत्था होकर विवाद करने लगे। (४७) वह बोला हे मेरी जाति भलाई से पहिले बुराई की क्यों शीघ्रता करते हो ईश्वर से क्षमा क्यों नहीं मांगते जिसतें तुम पर दया कीजाय। (४८) वह बोले हमने तुझ में और तेरे संगियों में अशुभता पाई है वह बोला तुम्हारा भाग ईश्वर के निकट है तुम उपद्रव में पड़ने हारे हो। (४९) और नग्र में नौ मनुष्य थे जो पृथ्वी में उपद्रव मचाते और सुधार नहीं करते थे। (५०) वह बोले कि परस्पर ईश्वर की किरिया खाओ कि हम अवश्य रात्रि को उस पर और उसके घरैयों पर जा टूटेंगे फिर हम उसके अधिकारी से कह देंगे कि हमतो उपस्थित न थे उसके घरैयों के नाश होते समय और निस्सन्देह हम सत्य बोलते हैं। (५१) और उन्होंने छल किया और हमने भी एक छल किया और वह जानते भी न थे।

(५२) सो देख उनके छल का क्या अंत हुआ हमने उनकी समस्त जाति को नाश कर दिया। (५३) फिर उनके घर जो उनकी अनीति के कारण गिर पड़े हैं निस्सन्देह इसमें जाननेहारे लोगों के निमित चिन्ह है। (५४) और हमने उनमें से उनको बचा लिया जो विश्वास लाए और संयम किया। (५५) और लूत ने जैसा अपनी जाति से कहा था कि तुम जान बूझ कर अशुद्ध कर्म करते हो। (५६) क्या तुम स्त्रियों को छोड़के पुरुषों से दुष्कर्म करते हो तुमतो अज्ञान जाति हो। (५७) सो उसकी जाति का उत्तर कुछ और न था परन्तु यही—वह बोले लूत के वंश को अपने नग्र से निकालदो कि वह पवित्र हैं। (५८) और हमने उसको और उसके घरैयों को बचा लिया केवल उसकी स्त्री के जिसको हमने पीछे रहजाने * हारों में नियत कर दिया था। (५९) और हमने उन पर एक वर्षा वर्षाई और जिनको डराया गया था उनके निमित यह वर्षा बुरी थी॥

रु० ५—(६०) कह सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है और उसके दासों पर जिसको उसने चुन लिया प्रणाम ईश्वर उत्तम है अथवा वह जिनको वह उसके साथ साझी ठहराते हैं॥

(६१) उसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और तुम्हारे निमित पारा२०. आकाश से पानी उतारा फिर हमने इससे सिंगारी हुई वस्तु उपजाई और तुम्हें बूता न था कि उनके पेड़ उगाते क्या ईश्वर के साथ कोई और ईश्वर है—कभी नहीं वह टेढ़ी जाति हैं। (६२) भला किसने पृथ्वी को विश्राम का ठौर बनाया और उसमें धाराएं बहाई और उसके निमित अटल पर्व्वत बनाए और दो नदियों के बीच † आड़ बनादी क्या ईश्वर के साथ कोई और ईश्वर है—कभी नहीं—बरन बहुतेरे इनमें अज्ञान हैं। (६३) भला कौन है जो दुखी की उसकी प्रार्थना के समय सुनेगा और दुःखको दूर करेगा और तुमको पृथ्वी का दीवान बनायगा क्या ईश्वर के साथ कोई और ईश्वर है तुम बहुतही न्यून विचार करते हो। (६४) भला कौन है जो तुमको सूखी भूमि और जल के अंधेरों में मार्ग बताता है और कौन पवनों को भेजता है अपनी दया के आगे सुसमाचार देता हुआ—क्या ईश्वर के साथ कोई और ईश्वर है ईश्वर उससे उत्तम है जो वह साझी करते हैं। (६५) भला कौन है जो पहिली बार उत्पन्न करता है फिर उसको दूजीबार उत्पन्न करेगा और कौन तुमको आकाश और पृथ्वी से जीविका देता है क्या ईश्वर के

* आरा १,३१। † फ़ुरकान ५५॥

साथ कोई और ईश्वर है कहदे कि प्रमाण लाओ यदि तुम सत्य बोलने हारों में हो। (६६) कहदे आकाशों और पृथ्वी में जो है ईश्वर के उपरान्त कोई गुप्त को नहीं जानता और न वह जानते हैं। (६७) कि कब उठाए जायंगे। (६८) बरन उनका ज्ञान अंत के दिन के बिषय में समाप्त होगया बरने वह उसके बिषय में सन्देह में पड़े हैं बरन वह अन्धे हैं॥

रु० ६—(६९) और जिन लोगों ने अधर्म्म किया उन्हों ने कहा क्या जब हम और हमारे पुरखा मिट्टी होजायँगे हम फिर निकाले जायँगे। (७०) यही बाचा हमको और हम से पूर्व्व हमारे पुरुषाओं को दीगई थी यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। (७१) कहदे कि उनमें फिर के देखो कि अपराधियों का अन्त क्या होता है। (७२) तू उन पर शोक न कर और उन्हों के छल पर संकेत न हो। (७३) और वह कहते हैं कि यह प्रतिज्ञा कब होगी यदि तुम सच्चे हो। (७४) कहदे कि कदाचित तुम्हारे पीछे उसमें से कुछ आ लगा हो जिसकी तुम शीघ्रता करते हो। (७५) तेरा प्रभु लोगों पर अनुग्रह करनेहारा है परन्तु उनमें से बहुतेरे धन्यबाद नहीं करते। (७६) निस्सन्देह तेरा प्रभु जानता है जो कुछ उनके हृदय छिपा रखते हैं और जो प्रगट करते हैं। (७७) आकाश और पृथ्वी में कोई बस्तु गुप्त नहीं परन्तु यह कि वह वर्णन करनेहारी पुस्तक में है। (७८) निस्सन्देह यह कुरान तो इसराएल बंश पर बहुधा बातें प्रगट करता है जिनमें वह विभेद करते हैं। (७९) और निस्सन्देह विश्वासियों के निमित शिक्षा और दया है। (८०) निस्सन्देह तेरा प्रभु उनके बीच अपनी आज्ञा से न्याय करता है कि वह बली ज्ञानवान है। (८१) सो ईश्वर पर भरोसा कर निस्सन्देह तू प्रत्यक्ष सत्य पर है। (८२) निस्सन्देह तू मृतकों को सुना नहीं सकता न बहरों को पुकारना सुना सकता है जब वह पीठ फेर कर मुँह मोड़ें। (८३) न तू नेत्र हीनों को उनकी भ्रमणा से शिक्षा करनेहारा है सो तू तो उसीको सुनाता है जो हमारी आयतों का बिश्वास रखता है सो वह लोग तो आज्ञा पालन करनेहारे हैं। (८४) और जब उन पर बाचा पूरी होगी तो हम पृथ्वी में से एक पशु * निकालेंगे जो उनसे वार्तालाप करेगा कि मनुष्य हमारी आयतों की प्रतीत नहीं करते थे॥

रु० ७—(८५) और जिस दिन हम एक जाति में से जो हमारी आयतों को झुठलाती हैं एक जत्था उठा खड़ा करेंगे और वह पांति पांति होंगे। (८६) यहांलों

* कहते हैं कि पुनरुत्थान के निकट एक विचित्र पशु निकलेगा जो मनुष्यों से अरबी भाषा में बोलेगा और बतला देगा कि कौन अधर्म्मी है और कौन बिश्वासी॥

कि सन्मुख आयंगे उनसे कहेगा क्या तुमने मेरी आयतों को मिथ्या समझा यद्यपि तुमको इसका ज्ञान न था अथवा तुम क्या कर्म्म किया करते थे। (८५) और उनकी अनीति के कारण उन पर वाचा प्रमाणिक हुई और वह बोल न सकेंगे। (८८) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात्रि बनाई कि उसमें बिश्राम करें और दिन को देखने के निमित्त निस्सन्देह इसमें लोगों के निमित चिन्ह हैं जो बिश्वास लाते हैं। (८६) और जिस दिन तुरही फूंकी जायगी तो जो आकाशों और पृथ्वी में हैं व्याकुल होंगे केवल उसके जिसको ईश्वर चाहे और सब उसके सन्मुख दीनता करते हुए उपस्थित होयंगे। (६०) और तू पर्व्वतों को देखता है और विचार करता है कि वह अपने ठौर जमे हैं मेघों के समान दौड़ते फिरेंगे यह ईश्वर का निर्माण है जिसनें हर बस्तु को दृढ़ बनाया निस्सन्देह वह उसे जानता है जो तुम करते हो। (९१) और जो कोई भलाई लेकर आयगा उसके निमित उससे उत्तम है और वह उस दिन की व्याकुलता से आनन्द में होयंगे। (६२) और जो बुराई लेकर आया वह औंधे मुंह अग्नि में गिराया जायगा क्या तुमको वही बदला न दिया जायगा जो तुम करते हो। (६३) मुझको तो यही आज्ञा दीगई है कि मैं इस नग्र* के प्रभु की अराधना करूं जिसने उसको आदर दिया है और उसीके निमित हरएक वस्तु है और मुझको आज्ञा मिली है कि मैं मुसलमान रहूं। (६४) और यह कि कुरान पढ़ूं फिर जो कोई मार्ग पर आगया तो वह अपने ही भले को मार्ग पर आता है और जो भटका हो तो कहदे मैं तो भय सुनानेहारों में से हूं। (६५) और कह सब महिमा ईश्वर ही को है वह तुमको अपने चिन्ह दिखाता रहेगा और तुम उनको पहचानलोगे तेरा प्रभु उन कर्म्मों से जो वह करते हैं अचेत नहीं॥

---

२८ सूरए क़सस (कहानियां) मक्की रुकू ६ आयत ८८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—तुसम (१) यह आयतें प्रकाशित पुस्तक की हैं। (२) और हम तुझको मूसा और फ़िराऊन का सत्य बृत्तान्त पढ़ कर सुनाते हैं उन लोगों के निमित जो विश्वास लाते हैं। (३) निस्सन्देह फ़िराऊन पृथ्वी में द्रोही होगया था और वहां के लोगों की कई जत्था कर दी थीं उनमें से एक जत्था बलहीन कर

---

* अर्थात मक्का॥

दिया गया था उनके लड़कों को घात करवा देता था और उनकी स्त्रियों को जीता रखता था निस्सन्देह वह उपद्रवियों में था। (४) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर जो पृथ्वी पर बल हीन थे उपकार करके उनको अध्यक्ष * बनाएं और उनको अधिकारी करें। (५) और उनको देश में जमादें और फ़िराऊन और हामान और उनकी सेनाओं को दिखादें कि जिनका वह भय मानते थे। (६) और हमने मूसा की माता को प्रेरणा की कि उसको दूध पियाएजा फिर जब तुमको उसके विषय में भय हो तो उसको नदी में डालदे और कुछ भय और शोक न कर निस्सन्देह हम फिर उसको तेरे निकट पहुंचावेंगे और उसे प्रेरितों में बनाएंगे। (७) सो उसको फ़िराऊन के लोगों ने उठा लिया जिस्तें वही उनका शत्रु और शोक का कारण बने निस्सन्देह फ़िराऊन और हामान और उनकी सेना अपराधियों में थे। (८) और फ़िराऊन की स्त्री बोली कि यह मेरे और तेरे नेत्रों की शीतलता का कारण बने इसको बध मत कर कदाचित इससे हमको लाभ † पहुंचे अथवा हम उसको पुत्र बनालें वह ठीक भेद का ज्ञान न रखते थे। (९) और मूसा की माता का हृदय प्रातःकाल को व्याकुल होगया निकट थी कि सब कुछ प्रगट कर बैठे यदि हम उसके हृदय में गांठ न लगा देते जिस्तें वह विश्वासियों में बनी रहे। (१०) और उसने उसकी बहन से कहा कि उसके पीछे चलीजा और वह उसको दूर से देखती रही और उनको यह जान न पड़ी। (११) और हमने उस पर धाया ? का दूध पहिलेही अपावन ‡ कर दिया था और वह बोली क्या मैं तुमको एक कुटुम्ब का पता बताऊं जो तुम्हारे निमित इस बालक को पाले और उसके बड़े शुभचिन्तक रहेंगे। (१२) सो हमने उसको उसकी माता लों पहुंचादिया कि उसके नेत्र शीतल हों और शोकित न हो और जानले कि ईश्वर की वाचा सत्य है परन्तु बहुतेरे लोग नहीं जानते ॥

रु० २—(१३) और जब वह अपनी तरुणाई को पहुंचा और दृढ़ हुआ तो हमने उसको बुद्धि और विद्या दी और हम इसी भांति भलाई करनेहारों को बदला देते हैं। (१४) और वह नग्र में ऐसे समय घुसा कि वहां के लोग अचेत थे और वहां दो मनुष्यों को पाया जो परस्पर लड़रहे थे एकतो उसकी जाति में का था और दूसरा उसके शत्रुओं में से और जो उसकी जाति का था उसने उससे उस मनुष्य पर जो उसके शत्रुओं में से था सहायता मांगी मूसा ने उसके

* बकर ५८। † मरियम २८. निर्गमण २ : ५—१०। ‡ अर्थात बन्द कर रखा था.
-निर्गमण २ : ७ ॥

घूंसा मारा और उसको घात कर डाला वह बोला यह तो दुष्टात्मा का कर्म्म है निस्सन्देह वह शत्रु और प्रत्यक्ष भटकाने हारा है। (१५) कहा हे मेरे प्रभु निस्सन्देह मैंने अपने ऊपर अनीति कर डाली मुझको क्षमा कर और उसको क्षमा कर दिया वह क्षमा करने हारा और दयालु है। (१६) हे प्रभु जैसा तूने मुझ पर अनुग्रह किया सो मैं अब अपराधियों का सहायक कभी न होऊंगा। (१७) और भोर को नग्र में भयातुर और बाट जोहता हुआ उठा और देखा वही मनुष्य जिसकी कल सहायता की थी अपनी सहायता के निमित पुकार रहा है मूसा ने उससे कहा निस्सन्देह तू प्रत्यक्ष कुकर्म्मी है। (१८) फिर जब उसने चाहा कि उसको पकड़े जो उन दोनों का शत्रु था—वह चिल्लाया कि हे मूसा क्या तू चाहता है कि मुझको भी घात करे जैसे कल एक मनुष्य को घात कर चुका है क्या तू यही चाहता है कि देश में बरियाई करता फिरे और नहीं चाहता है कि मेल करने हारों में होजाय। (१९) और एक मनुष्य नग्र के किनारे से दौड़ता हुआ आया उसने कहा कि हे मूसा अध्यक्ष तेरे विषय में परामर्श कर रहे हैं कि तुझको घात कर डालें—तू यहां से भागजा निस्सन्देह मैं तेरा शुभ-चिन्तक हूं। (२०) सो वह नग्र से बाट जोहता हुआ चिन्ता में निकल गया और बोला हे प्रभु मुझे दुष्ट जाति से बचा॥

रु० ३—(२१) और जब उसने मदीन की ओर मुंह किया तो कहा कि आशा है कि मेरा प्रभु मुझको सीधे मार्ग की ओर लेजाय। (२२) और जब मदीन के पानी के निकट पहुंचा तो उसने देखा कि लोगों का एक जत्था पानी पिलाय रहा है। (२३) और उन से इधर दो स्त्रियों को देखा कि रोके खड़ी * हैं पूछा कि तुम्हारी क्या दशा है वह बोलीं कि हम पानी नहीं पिलासकतीं जबलों झुण्ड वाले न पिलाचुकें और हमारा पिता बहुत बूढ़ा है। (२४) सो उसने उनके निमित पानी पिला दिया और छाया की ओर हट गया और कहा कि हे मेरे प्रभु निस्स-न्देह मैं इसका इच्छुक † हूं जो तू मेरी ओर भलाई में से उतारे। (२५) फिर उन में से एक उसकी ओर लाजवंत होके आई कहने लगी मेरा पिता तुझे बुलाता है जिस्तें तुझको उसकी बनि दे जो तूने हमारे निमित पानी पिलाया और जब उसके निकट आया उससे अपना वृत्तान्त बर्णन किया उसने कहा भय न कर तू दुष्ट लोगों में से बचकर निकल आया। (२६) उन दोनों में से एक बोली कि हे पिता इसको नौकर रखले निस्सन्देह अच्छा मनुष्य वही है जिसको तू नौकर रखना

* अपने रेवड़ को. निर्गमन २:१६—१७। † अर्थात पत्नी का॥

चाहे कि वह बली और विश्वास योग्य है। (२७) वह उससे बोला निस्सन्देह मैं चाहताहूँ कि अपनी इन पुत्रियों में से एकको तेरे विवाह में इस होड़ परदूं कि तू आठ वर्षलों मेरी चाकरी कर और यदि तू दस वर्ष पूरेकर तो वह तेरी ओर* से है क्योंकि मैं तुझ पर कठिनाई नहीं करना चाहता यदि ईश्वर चाहे तो तू मुझको भले लोगों में पायगा। (२८) वह बोला मेरे और तेरे बीच यह नियम होचुका इन दोनों समयों में से जौनसा मैं पूरा करदूं फिर मुझ पर अनीति न हो और जो हम कह रहे हैं उस पर ईश्वर साक्षी है॥

रु० ४—(२९) फिर जब मूसा समय पूरा कर चुका और अपनी स्त्री को लेकर तूर की ओर चला अग्नि देखी अपने घरैयों से कहा ठहरजाओ मैंने अग्नि देखी है कदाचित तुम्हारे निकट वहां से कोई संदेशलाऊं अथवा अग्नि की एक चिनगारी जिस्तें तुम तापो। (३०) फिर जब अग्नि के निकट पहुंचा भूमि के दाहिने किनारे पवित्र घाटी में वृक्ष से शब्द † हुआ कि हे मूसा मैं सृष्टियों का प्रभु ईश्वर हूं। (३१) और यह कि अपनी लाठी को डालदे और जब उसने देखा कि वह ऐसी हिलती है मानों सर्प है पीठ फेरकर फिरा और पीछे न देखा और कहा गया कि हे मूसा आगेआ और भय न कर निस्सन्देह तू निर्भयों में है। (३२) अपना हाथ अपनी कांख में डाल बिना किसी रोग के श्वेत निकलेगा और भय से अपनी भुजा अपने शरीर से मिला यह तेरे प्रभु की ओर से फ़िराऊन और उसके अध्यक्षों के निमित दो प्रमाण हैं निस्सन्देह वह आज्ञा उलंघन करनेहारे लोग हैं। (३३) वह बोला कि हे मेरे प्रभु मैंने तो उनमें से एक मनुष्य को घातकर दिया डरताहूं कि वह मुझको घात न करदें। (३४) मेरा भाई हारून मुझसे अधिक वाक्यपटु ‡ है उसको मेरे संग मेरी सहायता के निमित भेज कि वह मेरी दृढ़ता करता रहे निस्सन्देह मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठलाएँ। (३५) कहा मैं अवश्य तेरी भुजा को तेरे भाई की सहायता से बली करूँगा और तुम दोनों को अपने चिन्हों से प्रबल करूँगा तो वह तुम्हें हाथ न लगा सकेंगे सो तुम दोनों और जो तुम्हारे अनुगामी हों वही प्रबल रहनेहारे हैं। (३६) सो जब मूसा उनके तीर हमारे चिन्हों सहित पहुँचा तो वह बोले कि यह तो केवल एक बनावटी टोना है और हमने अपने पूर्व्व पुरखाओं में ऐसा नहीं सुना। (३७) मूसा ने कहा कि हे मेरे प्रभु तू जानता है कि कौन उसके तीर से शिक्षा सहित आया है और अन्त का घर किसका है और निस्सन्देह वह दुष्टों का भला नहीं करता। (३८) फ़िराऊन ने

* उत्पत्ति २९:१५—३१। † निर्गमन ३ पर्ब्ब। ‡ अर्थात उत्तम बोलनेहारा॥

अपने प्रधानों से कहा मुझे तुम्हारे निमित मेरे उपरान्त कोई ईश्वर देख नहीं पड़ता हे हामान तू मेरे निमित माटी को अग्नि* दे और मेरे हेतु एक भवन बना जिस्तें मैं मूसा के प्रभुको देखूं मैं तो उसको झूठाही जानता हूँ। (३९) फ़िराऊन और उसकी सैना देश में अनर्थ घमराड करने लगे और उन्होंने विचार किया कि हमारी ओर लौटकर आना न होगा। (४०) फिर हमने उसको और उसकी सैनाके पुरुषों को धर पकड़ा और नदी में फेंक मारा सो देखले दुष्टोंका कैसा अन्त हुआ। (४१) और हमने उनको अगुआ बनाया कि अग्निकी ओर बुलाते हैं और पुनरुत्थान के दिन उनकी सहायता न की जायगी और हमने इस संसार में उनके पीछे श्राप लगा दिया और पुनरुत्थान के दिन उनकी बुरी दशा होगी॥

रु० ५—(४३) और हमने मूसा को पुस्तक दी इसके पीछे कि हम पूर्व जातियों को नष्ट करचुके जिसमें लोगों के निमित प्रमाण और शिक्षा और दया है जिस्तें वह शिक्षापावें। (४४) और तू पश्चिम की ओर उपस्थित न था जब हमने मूसाकी ओर आज्ञा भेजी और न तू साक्षियों में से था। (४५) परन्तु हमने बहुतेरी जातिएं उत्पन्न कीं और उनकी वएं उनके निमित बड़ी हुईं और तू मदीनवालों में न रहता था कि उन पर हमारी आयतें पढ़ता परन्तु हम प्रेरित भेजते रहे। (४६) और तू तूरके निकट न था जब हमने गुहराया परन्तु यह तेरे प्रभु की कृपा है कि तू लोगों को डरावे जिनके निकट पहिले कोई डरानेहारा नहीं आया जिस्तें वह शिक्षापावें। (४७) और यदि यह बात न होती कि उसकी करतूतों के बदले जो उनके हाथ आगे भेज चुके उन पर कष्ट आपड़े फिर कहने लगे हे हमारे प्रभु तूने हमारी ओर कोई प्रेरित क्यों न भेज दिया जिस्तें हम तेरी आयतों को ग्रहण करते और विश्वासियों में होजाते। (४८) फिर जब उनके तीर हमारी ओर से सत्य आपहुंचा तो कहने लगे उसको क्यों न मिला जैसा मूसा को मिला था क्या यह उसको अनंगीकार नहीं करचुके जो मूसा को पहिले मिला था वह कहते हैं दोनों टोना हैं एक दूसरे के अनुसार और कहने लगे कि हम दोनों को नहीं मानते। (४९) कहदे अच्छा तुम कोई पुस्तक ईश्वर की ओर से ले आओ जो शिक्षा में इन दोनों से उत्तम हो कि मैं उसका अनुगामी होऊँ यदि तुम सत्यवादी हो। (५०) सो यदि यह लोग तेरे कहे अनुसार न करलावें तो जानले कि वह अपनी अभिलाषाओं के पीछे पड़े हुए हैं और उससे अधिक कौन भटका है जो ईश्वर का

---

* हिज़्क़िएल २०:३. मोमिन ३८—३९॥

मार्ग बताए विना अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ लिया है निस्सन्देह ईश्वर दुष्टों को मार्ग नहीं दिखाता ॥

रु० ६—(५१) और हम उनके निमित अपनी आज्ञा पहुँचाते रहे जिस्तें वह शिक्षा पकड़ें। (५२) जिन लोगों को हमने इससे पहिले पुस्तक दी वह इस * पर विश्वास लाते हैं। (५३) और जब उन पर पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हमने इसकी प्रतीत की निस्सन्देह यह हमारे प्रभु की ओर से सत्य है—निस्सन्देह हम इससे पहिले मुसलमान थे। (५४) यही हैं जिनको उनका दुगना प्रतिफल दिया जायगा इस हेतु कि उन्हों ने धैर्य्य किया और बुराई को भलाई से मेटते हैं और हमारे दिए हुए में से व्यय करते हैं। (५५) और जब कुबचन सुनते हैं तो उससे अलग होजाते हैं कह देते हैं हमारे निमित हमारे कर्म्म और तुम्हारे निमित तुम्हारे कर्म्म तुमको प्रणाम है हम मूर्खों की संगति नहीं चाहते। (५६) तू शिक्षा नहीं देसकता जिसको चाहे परन्तु ईश्वर जिसको चाहे देसकता है और शिक्षा पर आनेहारों को वही भलीभांति जानता है। (५७) कहने लगे कि यदि हम तेरे संग शिक्षा को ग्रहण करें तो हम अपने देश से झपट लिए जायं क्या हमने उनको शान्ति के पवित्र स्थान में ठौर नहीं दिया कि जिसमें हमारी ओर से हर बस्तु के फल अहार के निमित खिंचे चले आते हैं परन्तु बहुतेरे इनमें नहीं जानते। (५८) और हमने बहुतसी बस्तियां नाश कर मारीं जो अपनी जीविका में इतरा चली थीं अब यह इनके घर हैं इनमें कोई भी उनके पीछे बसा केवल थोड़ों के और हमहीं अधिकारी हुए। (५९) तेरा प्रभु किसी बस्ती को नाश करनेहारा नहीं जबलों कि वह उनके बड़े नग्र में कोई प्रेरित न भेजे जो हमारी आयतें उन पर पढ़ सुनाए और हम बस्तियों को नाश नहीं करते जब लों वहां के बासी दुष्ट न हों। (६०) और जो कुछ भी तुम्हें दिया गया है संसारिक जीवन के लाभ के हेतु और यहां की शोभा के निमित है और जो ईश्वर के यहां है वह उत्तम और शेष रहनेहारा है क्या तुम नहीं समझते ॥

रु० ७—(६१) भला वह पुरुष जिससे हमने उत्तम बाचा की और वह उसको मिलने हारा है क्या वह उसके समान होसकता है जिसको हमने संसारिक जीवन की सामग्री दी है फिर वह पुनरुत्थान के दिन उपस्थित किया जायगा। (६२) और उस दिन वह † उन्हें पुकारेगा और कहेगा कहां हैं मेरे

* अर्थात क़ुरान पर। † अर्थात ईश्वर ॥

वह साक्षी जिन पर वह घमंड करते थे। (६३) और जिन लोगों पर बाचा स्थिर होगई कहेंगे हे हमारे प्रभु यह हैं जिनको हमने बहकाया हमने इन्हें बहकाया जैसे हम आप बहके थे हम तेरे सन्मुख रूषित हुए यह लोग हमको नहीं पूजते थे। (६४) कहा जायगा पुकारो अपने साक्षियों को सो वह उनको पुकारेंगे तो वह उनको उत्तर भी न देंगे और दण्ड को देखलेंगे आह! वह शिक्षित होते। (६५) और वह एक दिन उनको पुकारेगा और पूछेगा कि तुमने प्रेरितों को क्या उत्तर दिया था। (६६) सो उनके निमित समाचार उस दिन गड़बड़ होजायंगे और वह परस्पर पूछ पाछ न करेंगे। (६७) सो जिसने पश्चाताप कर लिया और विश्वास लेआया और धर्म्म के कार्य्य किए तो आशा है कि वह भलाई पानेहारों में है। (६८) और तेरा प्रभु जो चाहता है सो करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है उनके हाथ में कुछ अधिकार नहीं ईश्वर पवित्र है और उससे उत्तम है जो वह साक्षी बताते हैं। (६९) तेरा प्रभु जानता है जो कुछ उनके हृदय गुप्त करते हैं और जो कुछ वह प्रगट करते हैं। (७०) वही ईश्वर है उसके उपरान्त कोई ईश्वर नहीं संसार और अन्त के दिन में उसी की महिमा है और आज्ञा उसी के हाथ में है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (७१) कहदे भला देखो तो सही यदि ईश्वर तुम पर पुनरुत्थान के दिन लों सदा रात बनाए रखे ईश्वर के उपरान्त कौन ईश्वर है जो तुम्हारे समीप प्रकाश लेआए सो क्या तुम नहीं सुनते। (७२) कह भला देखो तो सही यदि ईश्वर पुनरुत्थान के दिनलों तुम पर सदा दिन बनाए रखे तो ईश्वर को छोड़ और कौन ईश्वर है जो तुम्हारे निकट रात्रि लेआवे सो क्या तुम नहीं देखते। (७३) और अपनी दया से उसने तुम्हारे निमित रात्रि और दिन बना दिए कि तुम उसमें विश्राम भी करो और उसके अनुग्रह * का खोज भी करो जिस्तें कि तुम धन्यवाद करो। (७४) और जिस दिन उनको पुकारेगा सो कहां हैं वह मेरे साक्षी जिन पर तुम्हें घमंड था। (७५) और हम हर जाति में से एक साक्षी को निकाल लेंगे और कहेंगे अपना प्रमाण इस समय वर्णन करो और वह जान लेंगे कि ईश्वरही सत्य पर है और उनसे वह बातें जो वह करते थे खोजायंगी॥

रु० ८—(७६) निस्सन्देह क़ारून मूसा की जाति में से था फिर वह उन पर अनीति करने लगा और हमने उसको इतना भंडार देरखा था कि उसकी कुंजियों से कई बलवान मनुष्य थकते थे जब उसकी जाति ने उससे कहा कि तू

* अर्थात अपनी जीविका प्राप्त करो॥

मत अकड़ निस्सन्देह ईश्वर अकड़ने हारों को मित्र नहीं रखता। (७७) और जो कुछ ईश्वर ने तुझको देरखा है उससे अंत के घर की इच्छा कर और संसार में अपना भाग मत भूल तू भी उपकार कर जैसा ईश्वर ने तेरे साथ उपकार किया है और संसार में उपद्रव मचाने हारा मत हो निस्सन्देह ईश्वर उपद्रव करनेहारे को मित्र नहीं रखता। (७८) वह बोला मुझको तो यह एक विद्या के द्वारा मिला है जो मेरे तीर है क्या उसने नहीं जाना कि ईश्वर इससे पहिले बहुतेरी जातियों को नाश कर चुका जो शक्ति में उससे अधिक थीं और वह अधिक धन वाली थीं पापियों से उनके पाप के विषय में प्रश्न किया जायगा। (७६) और वह लोगों के बीच अपनी शोभा के साथ निकला वह लोग जो संसार के जीवन के इच्छुक थे बोले कि आह! हमको भी मिले जैसा क़ारून को मिला है निस्सन्देह वह बड़ा भाग्यवान है। (८०) परन्तु जो उनमें ज्ञानी थे कहने लगे कि तुम पर शोक जो विश्वास लाया और भले कर्म्म किए उसके निमित ईश्वर का प्रतिफल उत्तम है और यह उन्हीं को मिलता है जो धीरज धरनेहारे हैं। (८१) फिर हमने क़ारून को और उसके घर को पृथ्वी में धंसा दिया और उसके निमित कोई जत्था न था जो ईश्वर के उपरान्त उसकी सहायता कर सकता और न वह आपही पलटा लेसका। (८२) बिहान को वह लोग जो उसकी पदवी की व्यतीत सांझ को इच्छा करते थे कहने लगे हाय! हाय!! ईश्वर अपने दासों में से जिसकी चाहता है जीविका अधिक करता है और घटा देता है यदि ईश्वर हम पर उपकार न करता तो अवश्य हमको भी धंसा देता हाय! हाय!! अधर्म्मी भलाई नहीं पाते॥

रु० ९—(८३) वह अन्त का घर है जो हम उनको देंगे जो देश में घमराड और उपद्रव नहीं करना चाहते और संयमियों का अन्त यही है। (८४) जो मनुष्य भलाई लेकर आवे उसके निमित उससे उत्तम है और जो कोई बुराई लेके आवे जिन लोगों ने कुकर्म किए हैं उसीका प्रतिफल पायंगे जो कुछ वह किया करते थे। (८५) वह जिसने तुझपर क़ुरान उचित किया है वह तुझको पहिले स्थान में फिर लानेहारा है कहदे मेरा प्रभु भली भांति जानता है कि कौन शिक्षा लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष भ्रम में पड़ा है। (८६) तुझको आशा न थी कि तेरी ओर पुस्तक डाली जायगी परन्तु तेरे प्रभुकी दयासे सो तू अधर्मियों का सहायक न बन। (८७) और ऐसा न हो कि वह तुझको ईश्वर की आयतों से रोकदें इसके पीछे कि वह तेरी ओर आचुकीं अपने प्रभुकी ओर बुला और साक्षी ठहरानेहारों

में न हो। (८८) ईश्वर के साथ दूसरा ईश्वर न पुकार केवल उसके कोई ईश्वर नहीं उसको छोड़ सब नाशमान हैं उसी का राज्य है और उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे ॥

२९ सूरए* अनकबूत (मकड़ी) मक्की रुकू ७ आयत ६९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—अ्लम् (१) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि इतनाही कहकर छूटजायंगे कि हम विश्वासलाए और उनकी परिक्षा न कीजायगी। (२) और हमने उन लोगों की जो उनसे पहिले थे परिक्षा की थी ईश्वर जान लेगा उन लोगों को जो सच्चे हैं और अवश्य झूठों को भी जानलेगा। (३) क्या बुराई करनेहारों ने यह समझ रखा है कि वह हमसे बढ़जायंगे कैसा बुरा न्याय करते हैं। (४) जो मनुष्य ईश्वर से मिलने की आशा रखता है ईश्वर की वाचा आनेहारी है वह सुनने और जाननेहारा है। (५) जो मनुष्य परिश्रम करता है तो अपने ही निमित परीश्रम करता हैं निस्सन्देह ईश्वर संसार के लोगों से धनी है। (६) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए हम उनके अपराध उनसे दूरकरदेंगे और उनको उनके कर्मो का उत्तम प्रतिफलदेंगे। (७) और हमने मनुष्य को अपने माता पिता के संग भलाई करने की आज्ञा दी और यदि वह तेरे संग प्रयत्न करें कि तू मेरे संग ऐसी वस्तु को साझी ठहराए जिसका † तुझे ज्ञान नहीं तो उनका कहा न मानना तुझको मेरी ओर लौटकर आना है और मैं तुमको बतादेऊँगा जो कुछ तुम किया करते थे। (८) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म किए हम उनको भले दासों में प्रवेशदेयंगे। (९) और कोई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं हम ईश्वर पर विश्वासलाए फिर जब उसको कष्ट पहुंचता है ईश्वर के मार्ग में तो लोगों के कष्ट देने को ईश्वर के दण्ड के समान ठहरालेता है और यदि तेरे प्रभु की ओर से सहायता आजाय तो कहने लगें निस्सन्देह हम तो तुम्हारी ओर थे भला क्या ईश्वर उसको भली भांति नहीं जानता जो संसारियों के हृदयों में है। (१०) और ईश्वर उन लोगों को जो विश्वासलाए अवश्य जानलेगा और धर्म कपटियों को भी

---

* इस सूरत की पहिली १० आयतें बदर और उहद के युद्ध के पश्चात मदीना में उतरीं।

† लैव्यव्यवस्था १९·१ ॥

अवश्य जानलेगा। (११) अधर्मी विश्वासियों से कहने लगे कि तुम हमारे मार्ग के अनुगामी हो और हम तुम्हारे अपराध उठा लेंगे यद्यपि वह उनके अपराधों में से कुछ भी नहीं उठासकते निस्सन्देह वह झूठे हैं। (१२) परन्तु वह निश्चय अपने भार उठायँगे और अपने बोझों के संग और बोझ भी निस्सन्देह पुनरुत्थान के दिन उनसे उन बातों के विषय में जो वह बनाया करते थे प्रश्न किया जायगा॥

रु० २—(१३) हमने नूहको उसकी जाति की ओर भेजा वह उनमें पचास घाट सहस्र बर्ष रहा फिर उन लोगों को प्रलय ने आपकड़ा और वह दुष्ट थे। (१४) और हमने नूहको और नौकावालों को बचालिया और हमने नावको सृष्टियों के निमित चिन्ह ठहराया। (१५) और इबराहीम को जब उसने अपनी जाति से कहा कि ईश्वर की अराधना करो और उससे डरो यह तुम्हारे निमित अच्छा है यदि तुम जानते हो। (१६) तुम तो ईश्वर के उपरांत मूर्तों की अराधना करते हो और झूठी बातें बनाते हो निस्सन्देह जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पूजते हो वह तुम्हारी जीविका के अधिकारी नहीं तुम ईश्वर से अहार मांगो और उसकी अराधना और धन्यवाद करो उसी की ओर तुम लौट जाओगे। (१७) और यदि तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहिले बहुतेरी जातिएं झुठलाचुकी हैं प्रेरित का काम तो केवल खुला खुला पहुंचा देना है। (१८) क्या उन्होंने नहीं देखा कि ईश्वर किस रीति से प्रथम बेर सृष्टिको उत्पन्न करता है फिर उसको दूजीबार उत्पन्न करेगा निस्सन्देह यह ईश्वर पर सहज है। (१९) कहदे * देश में फिरके देखो कि ईश्वर ने किस रीति से रचना को आरम्भ किया फिर ईश्वर ही अंतिम उठाना उठायगा निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिमान है। (२०) जिसे चाहे दण्ड दे और जिस पर चाहे दयाकरे तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे। (२१) और तुम पृथ्वी और आकाश † में विवश नहीं करसकते हो न तुम्हारे निमित ईश्वर को छोड़ कोई हितवादी है और न सहायक॥

रु० ३—(२२) और जिन्होंने ईश्वर की आयतों और उसके मिलने की प्रतीति न की वही लोग मेरी दया से निराश हुए और वही हैं जिनके निमित दुखदायक दण्ड है। (२३) परन्तु उसकी जाति का केवल यही उत्तर था कि इसको घात करो अथवा इसको जलादो सो ईश्वर ने उसको अग्नि से बचा लिया निस्सन्देह इसमें उन लोगों के निमित जो विश्वास लाए हैं चिन्ह हैं। (२४) और

* यह कथन ईश्वर की ओर से जिबराईल और महम्मद साहब दोनों के विषय समझा जाता है।
† स्तोत्र १३९:७॥

उसने कहा तुमने ईश्वर के उपरान्त मूर्ति बना रखी हैं संसारिक जीवन में परस्पर प्रेम के कारण फिर पुनरुत्थान के दिन एक दूसरे से मुकर जायगा और एक दूसरे को धिक्कारेगा और तुम्हारा ठिकाना अग्नि है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं। (२५) लूत उस * पर विश्वास लेआया और कहा मैं अपने प्रभु की ओर यात्रा † करता हूं निस्सन्देह वही बलवन्त और दयालु है। (२६) और हमने उसको इसहाक ‡ और याकूब दिया और उसके वन्श में भविष्यद्वाक्य और पुस्तक रखी और हमने उसको इसका प्रतिफल सन्सार में दिया और निस्सन्देह वह अन्त के दिन में धर्म्मी लोगों में से है। (२७) और लूत को जब उसने अपनी जाति से कहा कि निस्सन्देह तुम ऐसी निर्लज्जता करते हो जो तुमसे पहिले किसी ने संसार के लोगों में से नहीं की। (२८) क्या § तुम लोग पुरुषों पर दौड़ते हो और तुम बाट मारते हो और तुम अपनी सभा में असभ्य कर्म्म करते हो तो उसकी जाति के तीर कोई उत्तर न था केवल इसके कि कहने लगे कि लेआ हम पर ईश्वर का दण्ड यदि तू सत्यवादी है। (२९) वह बोला हे मेरे प्रभु इस द्रोही जाति से मेरी सहायता कर॥

रु० ४—(३०) और जब हमारे भेजे हुए इबराहीम के तीर सुसमाचार लेकर आए तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगों को नाश करनेहारे हैं निस्सन्देह उसके लोग दुष्ट हैं। (३१) इबराहीम ने कहा निस्सन्देह इसमें तो लूत है वह बोले हमको भलीभांति सुध है जो कोई उसमें है हम अवश्य उसको और उसके कुटुम्बियों को बचा लेंगे केवल उसकी पत्नी के जो रहजाने हारों में रहेगी। (३२) और जब हमारे भेजे हुए लूत के तीर पहुंचे अप्रसन्न हुआ और उनके कारण सकेत मन हुआ वह बोले भय न कर और उदास न हो हम तुझको और तेरे परिवार को बचा लेंगे परन्तु तेरी पत्नी रहजानेहारों¶ में रहेगी। (३३) हम आकाश से इस बस्ती वालों पर एक विपत्ति उतारनेहारे हैं इस कारण कि वह कुकर्म्म करते हैं। (३४) और हमने छोड़ रखा था इसका प्रगट चिन्ह उन लोगों के निमित जो बुद्धि रखते हैं। (३५) और हमने मदीन की ओर उनके भाई श्वएब को भेजा उसने कहा हे जाति ईश्वर की अराधना करो और अन्त के दिन की आशा करो और अपने देश में उपद्रव करते न फिरो। (३६) सो उन्होंने उसको झुठलाया

* अंबिया ७१। † अर्थात हिजरत। ‡ बकर १२७, इनाम ८४, मरियम ५०, अंबिया ७२, यूसफ ६ और इसी सूरत की ३८ इन स्थानो से जान पड़ता है कि महम्मद साहब इबराहीम की सन्तान का कितना भिन्न भिन्न वृत्तान्त सुनाते हैं। § सूरए हजर और ज़ारियात में यह वृत्तान्त नहीं है॥
¶ हूद ८१॥

तो उनको एक भुईं डोलने धर पकड़ा और वह भोर को अपने घरों में औंधे पड़े रहगए। (३७) और आद को और समूद को उनके घर तुम्हारे निमित प्रगट हैं दुष्टात्मा ने उनके कर्म उनके निमित भलेकर दिखाए उनको मार्ग से रोक दिया और वह चतुर लोग थे। (३८) और कारून और फिराऊन और हामान को उनके समीप मूसा खुले चिन्ह लेके आया तो वह देश में घमण्ड करने लगे और वह आगे बढ़ने हारे न थे। (३९) तो प्रत्येक को हमने उसके पाप पर धरपकड़ा उनमें कोई तो वह थे जिन पर हमने पत्थरों की वर्षा भेजी और कोई उनमें वह थे जिनको चिन्घाड़ ने धर पकड़ा और उनमें से किसी को हमने पृथ्वी में धँसा दिया और उनमें से किसी को डुबादिया और ईश्वर ऐसा न था कि उन पर निर्दयता करे परन्तु वह आप अपने ऊपर निर्दयता करते थे। (४०) उन लोगों का दृष्टांत जिन लोगों ने ईश्वर को छोड़ कर दूसरे स्वामी बनाए हैं मकड़ी के समान है कि उसने एक घर बना लिया निश्चय समस्त घरों में निर्बल मकड़ी का घर है आह! यह लोग बूझते (४१) निस्सन्देह ईश्वर जानता है जिस किसी वस्तु को उसके उपरान्त पुकारते हैं वह तो बलवन्त बुद्धिवान है। (४२) हम लोगों के निमित दृष्टान्त वर्णन करते हैं और उन को वही समझते हैं जिनको समझ है। (४३) ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को यथार्थ उत्पन्न किया निस्सन्देह इसमें विश्वास करनेहारों के निमित चिन्ह हैं॥

रु० ५—(४४) जो पुस्तक तेरी ओर प्रेरणा की जाती है उसको पढ़ और प्रार्थना को स्थिर रख निस्सन्देह प्रार्थना निर्लज्जता के काम और बुराई से रोकती है ईश्वर का सुमरण सब से बड़ी बात है और ईश्वर जानता है जो तुम करते हो। (४५) पुस्तक वालों से झगड़ा न करो परन्तु ऐसी रीति से कि वह बहुत उत्तम हो निश्चय जो लोग उनमें से दुष्टता करें और कहो हम मानते हैं जो हमारी ओर उतरा और तुम्हारी ओर उतरा हमारा और तुम्हारा ईश्वर एक ही है और हम उसी के निमित मुसलमान हैं। (४६) इसी रीति हमने तेरी ओर पुस्तक उतारी जिनको हमने पुस्तक दी है वह उसको मानते हैं और उनमें * से भी कुछ लोग मानते हैं और हमारी आयतों से वही मुकरते हैं जो अधर्मी हैं। (४७) और तू इससे पहिले कोई पुस्तक न पढ़ता था और न अपने दहने हाथ से लिखता था तब तो यह झूठे लोग अवश्य सन्देह करते। (४८) परन्तु यह खुली आयतें हैं उन लोगों के हृदयों में जिनको ज्ञान दिया गया है हमारी आयतों से वही मुकरते हैं जो दुष्ट हैं। (४९) कहते हैं क्यों उस पर उसके प्रभु की ओर से चिन्ह नहीं

* अर्थात मक्का वालों में से॥

उतरे कहदे चिन्ह तो ईश्वर ही के तीर हैं और मैं तो केवल खुला भय सुनाने हारा हूं। (५०) क्या इनको यह बस नहीं कि हमने तुझ पर पुस्तक उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है निस्सन्देह उसमें विश्वास लानेहारों के निमित दया और शिक्षा है॥

रु० ६—(५१) कहदे मेरे और तुम्हारे बीच में ईश्वरही साक्षी बस है। (५२) वह जानता है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है और जो लोग असत्य पर विश्वास लाए और ईश्वर को नकारा वही लोग हानि उठाने हारे हैं। (५३) तुझसे दण्ड के हेतु शीघ्रता करते हैं यदि एक समय नियत न होता तो उन पर अवश्य दण्ड आजाता और वह उन पर अकस्मात आएगा और उनको सुध भी न होगी। (५४) तुझसे दण्ड के निमित शीघ्रता करते हैं निस्सन्देह नर्क अधर्मियों को घेररहा है। (५५) जिस दिन दण्ड उनको ढांक लेगा उनके ऊपर से और उनके नीचे से और उनसे कहेगा चाखो जैसा तुम किया करते थे। (५६) हे मेरे दासो जो विश्वास लाए हो मेरी पृथ्वी चौड़ी है सो मेरी अराधना करो। (५७) हर प्राणी मृत्यु को चाखेगा फिर हमारी ओर लौटाए जाओगे। (५८) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए हम उनको बैकुण्ठ के उच्च स्थान में ठौर देंगे उनके नीचे धाराएं बहती हैं वह सदा वहां रहेंगे कैसा अच्छा प्रतिफल है अभ्यास करने हारों को। (५९) जिन्होंने धैर्य्य किया और अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। (६०) बहुतेरे पशु हैं कि अपनी जीविका लादे नहीं * फिरते ईश्वरही तुमको और उनको जीविका देता है वह सुनने और जानने हारा है। (६१) यदि तू उनसे प्रश्न करे कि किसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और सूर्य्य और चन्द्रमा को वश में तो वह निश्चय कहेंगे कि ईश्वर ने फिर कहां भटके जाते हैं। (६२) ईश्वर अपने दासों में से जिसकी चाहता है जीविका अधिक करता है अथवा सकेत कर देता है निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु को जानता है। (६३) यदि तू उनसे प्रश्न करे कि आकाशों से जल किसने उतारा और उससे पृथ्वी को मरे पीछे जिलाया तो वह अवश्य कहेंगे ईश्वर कहदे सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है तथापि बहुतेरे उनमें बुद्धि नहीं रखते॥

रु० ७—(६४) इस संसार का जीवन क्रीड़ा को छोड़ और कुछ नहीं और निस्सन्देह अंत का घरही जीवन है आह! यह लोग बुद्धि रखते होते। (६५) और

---

* मती ६ । २६. लूका १२ । २४॥

जब नौका पर सवार होते हैं तो ईश्वर को अपना मत निष्कपट करके पुकारते हैं जब इनको बचा कर भूमि पर लेआता है तो उस समय साझी ठहराने लगते हैं। (६६) जिस्तें हमारे दिए हुए चिन्हों से मुकरें और कुछ लाभ उठालें परन्तु यह शीघ्र जान जायंगे। (६७) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने हरम * को शान्ति का ठौर बनाया और उसके चारों ओर से लोग उचक लिए जाते हैं सो क्या यह लोग झूठ पर बिश्वास लाते और ईश्वर के वरदान की कृतघ्नता करते हैं। (६८) बससे अधिक दुष्ट कौन है जो ईश्वर पर मिथ्या दोष लगाए या सत्य को झुठलाए जब कि वह उसके निकट आचुका क्या अधर्म्मियों के ठहरने का स्थान नर्कही नहीं। (६९) और जिन लोगों ने हमारे मार्ग में युद्ध किया हम निस्सन्देह इन्हें अपने मार्ग की अगुवाई करेंगे निस्सन्देह ईश्वर सुकर्म्मियों का साथी है॥

---

३० सूरए रूम मक्की रुकू ६ आयत ६०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १ अलम—(१) रूम वाले पराजित हुए। (२) निकट के किसी देश में परन्तु पराजित होने के पीछे प्रबल होंगे। (३) थोड़े बर्षों में ईश्वरही के अधिकार में पहिले और पीछे है और उस दिन बिश्वासी प्रसन्न होजायंगे। (४) ईश्वर की सहायता से—और वह जिसकी चाहता है सहायता करता है वह बली दयालु है। (५) ईश्वर ने बाचा की अपनी बाचा के बिरुद्ध नहीं करता परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते। (६) यह संसार के प्रगट जीवन को जानते हैं परन्तु अंत के दिन से निपट अचेत हैं। (७) क्या उन्होंने अपने हृदय में बिचार नहीं किया कि ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच में है उत्पन्न किया है परन्तु सत्य सहित और एक नियत समय पर और निस्सन्देह बहुतेरे मनुष्य अपने प्रभु के मिलने से मुकरते हैं। (८) क्या लोग देश में नहीं फिरे कि देखते कि उनसे अगलों का कैसा अंत हुआ वह उनसे बल में अधिक थे उन्होंने प्रथ्वी को जोता और उसको बसाया था उससे अधिक जितना यह लोग करते हैं उनके तीर हमारे प्रेरित आश्चर्य्य कर्म्म लेकर आए ईश्वर तो ऐसा न था कि उन पर निर्दयता करता परन्तु वह आपही अपने ऊपर निर्दयता करते थे।

---

* अर्थात काबा॥

(९) फिर जिन्होंने बुरा किया उनका अंत बुराही हुआ इस कारण कि उन्होंने ईश्वर की आयतों को झुठलाया और उनकी हंसी किया करते थे ॥

रु० २—(१०) ईश्वर पहिली बेर उत्पन्न करता है और फिर वही उसको दूजी बेर करेगा फिर उसकी ओर तुम लौटाए जाओगे। (११) और जिस दिन वह घड़ी * नियत हो जायगी अपराधी निराश होजायंगे। (१२) और उनका उनके साझियों में कोई सहायक न होगा और वह अपने साझियों से मुकर जायंगे। (१३) और जिस दिन वह घड़ी नियत होजायगी उस दिन वह छिन्न भिन्न होजायंगे। (१४) सो जो विश्वास लाए और सुकर्मकरें वह बारी में आनन्द करेंगे। (१५) और जिन्हों ने अधर्म किया और हमारी आयतों और अंत के दिन से मिलने को झुठलाया तो वह दण्ड में पकड़े आयंगे। (१६) ईश्वर का जाप करो जब तुमको सांझहो और जब तुमको भोरहो। (१७) उसकी स्तुति आकाशों और पृथ्वी में है और तीसरे पहर और जब तुमको दुपहर हो। (१८) वही जीवते को मृतक में से निकालता है और मृतक को जीवते में से और पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवता करता है और ऐसे ही तुम भी निकाले जाओगे ॥

रु० ३—(१९) उसके चिन्हों में से यह भी है कि उसने तुमको माटी से उत्पन्न किया और देखो तुम मनुष्य होके फैले हुए हो। (२०) और उसके चिन्हों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे निमित तुमही में से पत्नियें उत्पन्न करदीं कि उनके तीर तुमको शांति आवे और तुममें परस्पर प्रेम और कृपा उत्पन्न की इसमें निस्सन्देह उनके निमित चिन्ह है जो विचार करते हैं। (२१) और उसके चिन्हों में से आकाशों और पृथ्वी का उत्पन्न करना और तुम्हारी भाषाओं और वर्णों का भिन्न भिन्न होना भी है निस्सन्देह इसमें समझनेहारों के निमित चिन्ह है। (२२) और उसके चिन्हों में से तुम्हारा रात्रिको सोना और दिन के समय तुम्हारा उसके अनुग्रह † के निमित इच्छा करना भी है निस्सन्देह इसमें उनके निमित चिन्ह हैं जो सुनते हैं। (२३) और उसके चिन्हों में से यह भी है कि वह तुमको डराने को बिजली दिखाता है और आशा ‡ दिलाने को आकाश से पानी उतारता है और फिर उससे पृथ्वी को मरे पीछे जीवता करदेता है निस्सन्देह इसमें उनके निमित चिन्ह हैं बुद्धिवानों के निमित। (२४) और उसके चिन्हों में से यह भी है कि आकाश और पृथ्वी उसकी आज्ञा से स्थिर हैं और फिर जब तुमको पृथ्वी से

---

* अर्थात पुनरुत्थान स्तोत्र ५० : ३० । † अर्थात जीविका । ‡ स्तोत्र १३५ : ७ ॥

बुलायगा तुम उसी समय निकल पड़ोगे। (२५) जो आकाशों और पृथ्वी में हैं उसीके हैं और सब उसी के आज्ञा पालक हैं। (२६) वही है जो पहिली बेर उत्पन्न करता है और वही उसको दूजी वार करेगा और यह तो उस पर अधिक सहज है और आकाशों और पृथ्वी में उसीका प्रताप * उच्च है और वह बलवन्त बुद्धिवान है॥

रु० ४—(२७) और उसने तुम्हारे निमित तुम्हारी ही दशा से एक दृष्टान्त बर्णन किया कि जिनके तुम्हारे हाथ स्वामी हैं क्या उनमें कोई तुम्हारा साझेदार है उसमें जो हमने तुमको दिया कि तुम सब समान होओ और उनसे वैसाही डरने लगो जैसा अपनों से डरते हो बुद्धिवानों के निमित हम इसी भांति खोलकर आयतें बर्णन करते हैं। (२८) परन्तु यह दुष्ट बिना समझे अपनी कुइच्छाओं के पीछे हो लिए जिसको ईश्वर ने भटकाया तो कौन उसको शिक्षा दे उनकी सहायता कोई नहीं कर सकता। (२९) सो तू अपना मुंह मत में सीधा रख एक हनीफ़ के समान यही ईश्वर का ठहरा हुआ है जिस पर मनुष्य को उत्पन्न किया ईश्वर के बनाए हुओं में अदल बदल नहीं यही सत्य मत है यदपि बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते। (३०) उसकी ओर फिरो और उससे डरो और प्रार्थना में स्थिर रहो और साझी ठहरानेहारों में न होजाओ। (३१) जिन्होंने अपने मत को भिन्न २ करलिया और भिन्न २ गोष्ठिए बनगए और प्रत्येक गोष्ठी जो उनके समीप है उसी में प्रसन्न हैं। (३२) और जब लोगों को क्लेश पहुंचता है तो अपने प्रभुकी ओर फिरकर पुकारने लगते हैं और जब वह उन्हें अपनी दया में से चखाता है तो कुछ लोग उनमें से अपने प्रभु के संग साझी ठहराते हैं। (३३) जिस्तें उसका गुणानुवाद न करें जो हमने उनको दिया है अच्छा प्रसन्न हो लो आगे चलकर तुम्हें जान पड़ेगा। (३४) क्या हमने उनपर कोई अधिकार पत्र उतारा है कि वह उनसे बर्णन करता है जो यह साझी करते हैं। (३५) जब हम लोगों को अपनी दया से चखाते हैं तो वह उससे प्रसन्न होते जाते हैं और यदि उनपर कोई कठिनाई आपड़े तो उसके कारण जो उनके हाथ आगे भेजचुके हैं तो तुरन्त आशा तोड़ बैठते हैं। (३६) क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिसकी ईश्वर चाहे जीविका अधिक करदेता है और जिसकी चाहे सकेत करदेता है इसमें उनके निमित चिन्ह हैं जो बिश्वास लाते हैं। (३७) सो नातेदार को उसका अंश देदे और दरिद्री को और बटोही को यह उनके निमित अच्छा है जो ईश्वर के मुंह के अभिलाषी हैं

* अर्थात दृष्टान्त।

और यही भलाई पानेहारे हैं । (३८) तुम ब्याज देते हो कि लोगों का धन अधिक हो परन्तु वह ईश्वर के यहां अधिक * नहीं होता और जो कुछ दान देते हो और ईश्वर के मुख के अभिलाषी होते हो तो यही लोग दुगना करते हैं । (३९) ईश्वर वह है जिसने तुमको उत्पन्न किया फिर तुमको जीविका दी फिर तुमको मारेगा फिर तुमको जीवता करेगा तुम्हारे साझियों में कोई ऐसा है जो इन में से कुछ करसके वह पवित्र है और उससे उत्तम है जो कुछ उसके संग साझी करते हैं ।

रु० ५—(४०) थल और जल में उपद्रव लोगोंही के उपार्जन किए हुए के कारण प्रगट हुआ इन्हे उनमें से जो यह कररहे हैं कुछ चखाएं जिस्तें वह लौट आवें । (४१) देश में फिरके देखो कि उन लोगों का जो तुमसे पहिले व्यतीत हुए क्या अन्त हुआ उनमें बहुतेरे साझी ठहरानेहारे थे । (४२) अपना मुंह मत पर सीधा रख इससे पहिले कि वह दिन आ जाय जिसका ईश्वर की ओर से टरना नहीं है उस दिन वह अलग अलग होजायंगे । (४३) जो अधर्म्मी हुआ उस पर उसके अधर्म्म की विपति और जिसने सुकर्म्म किए निस्सन्देह वह अपनेही निमित ठिकाना बनाते हैं । (४४) जिस्तें वह उनको अपने अनुग्रह से प्रतिफलदे वह अधर्म्मियों को नहीं चाहता । (४५) उसके चिन्हों में से यह भी है कि वह पवनों को भेजता है जो सुसमाचार लानेहारे हैं जिस्तें तुमको उसकी दया में से चखाएं और नौकाओं को उसकी आज्ञा से चलाएं जिस्तें तुम उसके अनुग्रह का खोज करो और कि तुम गुणानुवाद करो । (४६) तुझसे पहिले बहुत से प्रेरित उनकी जाति की ओर भेजे वह उनके तीर चिन्ह लेकर आए फिर हमने उन लोगों से पलटा लिया जिन्हों ने पाप किया और हम पर विश्वासियों की सहायता उचित थी । (४७) ईश्वर वही है जो पवनों को भेजता है फिर वह मेघों को उठाते हैं फिर उनको आकाश में फैला देता है जैसा चाहता है और उनको तले ऊपर करदेता है फिर तू देखता है कि उनमें से जल बर्षता है फिर उसको अपने दासों में से जिसको चाहता है पहुँचा देता है फिर वह प्रसन्न होने लगते हैं । (४८) यदपि वह लोग इससे पहिले कि उन पर बृष्टि होवे पहिले ही से निराश होरहे थे । (४९) सो ईश्वर के दया के चिन्ह की ओर देख वह कैसे पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवता करता है निस्सन्देह वह मृतकों को जीवता करनेहारा है वह हर वस्तु पर शक्तिवान है । (५०) यदि हम पवन भेजदें फिर वह उस खेती

---

* स्तोत्र १५ : ५ ॥

को पीला भया हुआ देखें तो वह अवश्य उसके पीछे कृतघ्नता करनेलगें। (५१) निस्सन्देह तू मृतकों को नहीं सुना सकता जब कि वह पीठ फेरकर भागें। (५२) और तू अन्धों को उनकी भ्रमता में मार्ग नहीं दिखा सकता तू तो केवल उन्हीं को सुना सकता है जो हमारी आयतों पर विश्वास लाते और आज्ञा पालनेहारे हैं ॥

रु० ६—(५३) ईश्वर वही है जिसने तुमको निर्बल दशा में उत्पन्न किया और फिर निर्बलता के पीछे बल दिया और बल के पीछे निर्बलता और बुढ़ापा जो चाहता है उत्पन्न करता है वह जाननेहारा और शक्तिवान है। (५४) जिस दिन वह घड़ी स्थिर होगी अपराधी किरियाएं खायँगे। (५५) कि वह एक घड़ी से अधिक नहीं ठहरे वह इसी भांति भटकाए जाते हैं। (५६) और वह लोग जिनको ज्ञान और विश्वास दिया गया कहेंगे ईश्वर की पुस्तक के अनुसार तुम जी उठने के दिनलों ठहरे रहे सो यह तो जी उठने ही का दिन है परन्तु तुम नहीं जानते। (५७) उस दिन दुष्टों को उनका टालमटोल लाभ न देगा न उनसे पश्चाताप चाहा जायगा। (५८) और हमने इस कुरान में हर भांति का दृष्टान्त उन लोगों के निमित वर्णन करदिया है यदि तू उनके तीर कोई चिन्ह लाए तो अधर्म्मी अवश्य कहेंगे कि तुम झूठे हो। (५९) बुद्धि हीनों के हृदयों पर ईश्वर इसी भांति छाप करदिया करता है। (६०) तू धीरज कर निस्सन्देह ईश्वर की बाचा सत्य है और प्रतीत न करनेहारे तेरा अपमान न करें॥

३१ सूरए लुक़मान मक्की रुकू ४ आयत ३४।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १ अ्लम् (१) यह आयतें बुद्धिवाली पुस्तक की है। (२) धर्म्मियों के निमित शिक्षा और दया है। (३) जो प्रार्थना को स्थिर रखते और दान देते और अंत के दिन की प्रतीत रखते हैं। (४) वही अपने प्रभुकी ओर से शिक्षा पर हैं और वही हैं जिनको भलाई मिलनेहारी है। (५) और लोगों में एक * ऐसा है जो खेल की कहावतों को मोल लेता है जिस्तें ईश्वर के मार्ग से विना जाने भटकादे और उसकी हंसी करता है वही हैं जिनके निमित उपहास का दण्ड है। (६) और जब उसपर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह अहंकार से अपनी पीठ फेर

* हारिस के पुत्र नसर के विषय में है॥

लेता है मानो कि उसने उसको सुना ही नहीं जैसे कि उसके दोनों कानों में ढट्ठी है उसे दुख दायक दण्ड का सुसमाचार सुना। (७) निस्सन्देह जो लोग बिश्वास लाए और सुकर्म किये उनके निमित वरदानों वाले बैकुण्ठ हैं। (८) उनमें सदा रहेंगे ईश्वर की बाचा सत्य है और वह बलवन्त बुद्धिवान है। (९) उसने आकाशों को बिना खंभों के बनाया जैसा कि तुम उसको देख रहे हो और पृथवी में बोझ डाल दिए ऐसा न हो कि वह तुमको लेकर बैठ * जाय और उसने हर भांति के जीवधारी फैला दिए और हमने आकाश से पानी उतारा और उससे पृथ्वी में हर भांति की उत्तम वस्तु उगाई। (१०) यह ईश्वर की रचना है अब तुम मुझको दिखाओ कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया जो उसके उपरान्त हैं बरन दुष्ट तो प्रत्यक्ष भ्रम में हैं।

रु० २—(११) और हमने लुक़मान को बुद्धि दी कि ईश्वर का गुणानुबाद करे और जो गुणानुबाद करता है वह अपने ही निमित गुणानुबाद करता है और जो कृतघ्नता करता है तो निस्सन्देह ईश्वर धनी और स्तुति योग्य है। (१२) और जब लुक़मान ने अपने पुत्र से जब वह उसको शिक्षा करता था कहा कि हे पुत्र ईश्वर का साझी न ठहराना निस्सन्देह साझी ठहराना बड़ा दोष है। (१३) और हमने मनुष्य को उसके माता पिता के विषय में आज्ञा की और उसकी माता उसे थक थक कर उठाए फिरती है उसका छुड़ाना† दो बर्ष में है मेरा और अपने माता पिता का धन्यबादी रह मेरी ही ओर लौटकर आना है। (१४) यदि वह दोनों तुझ से इस बात पर झगड़ें कि तू ऐसी वस्तु को मेरा साझी ठहराए जिसका तुझे कुछ ज्ञान नहीं तो उनका कहा न मानना और संसार में भली भांति से उनका संग दे और जो मेरी ओर आता है उसके मार्ग का अनुगामी हो फिर मेरी ही ओर तुमको लौट आना होगा और जो कुछ तुम करते थे मैं तुमको बतादूं। (१५) हे पुत्र निस्सन्देह यदि कोई वस्तु राई के बीज के समान हो और वह किसी पत्थर के भीतर हो अथवा आकाशों में अथवा पृथ्वी में ईश्वर उसको भी उपस्थित करेगा निस्सन्देह ईश्वर सूक्ष्म ‡ जाननेहारा है। (१६) हे पुत्र प्रार्थना को स्थिर रख सुकर्म्म करने की आज्ञा दे कुकर्म को बरज और जो बिपति तुझको पहुंचे उसपर धैर्यकर निस्सन्देह यह साहस के कर्म हैं। (१७) लोगों से गाल न फुला और भूमि पर अकड़कर न चल निस्सन्देह ईश्वर अकड़नेहारे और घमण्डी को मित्र नहीं रखता।

* स्तोत्र १०४ : ५। † अर्थात दूध। ‡ अरबी में लतीफ़॥

(१८) अपनी चाल में साधारण रह और अपना शब्द मध्यम रख निस्सन्देह बुरे से बुरा गदहों का शब्द है ॥

रु० ३—(१९) क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है ईश्वर ने उसको तुम्हारे वश में कर रखा है और अपने प्रगट और गुप्त वरदानों को तुम पर पूरा किया है और लोगों में से एक ऐसा है जो ईश्वर के विषय में झगड़ता है बिना ज्ञान और बिना प्रकाशित पुस्तक के। (२०) और जब उनको कहा जाय कि जो ईश्वर ने उतारा है उसके पीछे चलो तो वह कहते हैं कि हम तो उसी के पीछे चलते हैं जिस पर हमने अपने पुरखों को पाया क्या फिर भी यदि दुष्टात्मा उनको नर्क की ओर बुलाता रहा हो। (२१) और वह जो ईश्वर की ओर फिरता है और भलाई करने हारा बने तो उसने दृढ़ कड़ा पकड़ लिया और ईश्वरही की ओर हर कार्य्य का अंत है। (२२) और जो अधर्म्म करे तो उसका अधर्म्म तुझको शोकित न करे उनको हमारी ओर लौट आना है हम उनको बता देंगे जो वह करते थे निस्सन्देह ईश्वर हृदयों के भेद जानता है। (२३) हम उनको थोड़े दिनों लों लाभ देंगे फिर उनको कठिन दण्ड की ओर पकड़ बुलायंगे। (२४) यदि तू उनसे पूछे कि किसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया तो वह अवश्य कहेंगे कि ईश्वर ने कहदे सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है परन्तु उनमें बहुतेरे नहीं जानते। (२५) जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है ईश्वरही का है निस्सन्देह ईश्वरही निश्चिन्त और महिमा योग्य है। (२६) यदि सब पेड़ जो पृथ्वी में हैं लेखनी बन जाएं और समुद्र इसके पीछे कि सात समुद्र उसकी सहायता करें तो ईश्वर की बातें समाप्त न होंगी निस्सन्देह ईश्वर बलवन्त बुद्धिवान है। (२७) तुम्हारा उत्पन्न करान और जिया उठाना एकही प्राणी * के जैसा है निस्सन्देह ईश्वर सुनता और देखता है। (२८) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर रात्रि को दिन में प्रवेश देता है और दिनको रात्रि में प्रवेश देता है और उसने सूर्य्य और चंद्रमा को आज्ञाकारी कर रखा है प्रत्येक नियत समयलों चलता है और निस्सन्देह ईश्वर उसको जो तुम करते हो जानता है। (२९) ईश्वरही यथार्थ है जो वह ईश्वर के उपरान्त पुकारते हैं वृथा है निस्सन्देह ईश्वरही उच्च और महान है ॥

रु० ४—(३०) क्या तूने नहीं देखा कि नदी में ईश्वर के वरदान से नौकाएं चलती हैं जिस्तें तुमको अपने चिन्ह दिखाए निस्सन्देह इसमें धीरज धरनेहारों

---

* जैसा एक मनुष्य को उत्पन्न करना और मारना है वैसाही समस्त सृष्टि को उत्पन्न करना और मारना है यह दोनों बातें ईश्वर के निकट समान हैं ॥

और धन्यवाद करने हारों के निमित चिन्ह हैं। (३१) जब उनको छाया करनेहारे की नाईं लहर ढांप लेती है तो वह ईश्वर को अपने मत में सांचे मन होकर पुकारते हैं और जब वह उनको थल की ओर बचालाता है तो उनमें कोई साधारण होते हैं और हमारी आयतों को वही नकारते हैं जो वाचा के झूठे और कृतघ्न हैं। (३२) हे लोगो अपने प्रभु से और उस दिन से डरो· जिस दिन पिता अपने पुत्र का सहायक न होगा। (३३) निस्सन्देह ईश्वर की वाचा सत्य है सो तुमको संसारिक जीवन धोका न दे और तुमको ईश्वर के विषय में वह कपटी छल न दे। (३४) निस्सन्देह ईश्वर ही है जिसको उस घड़ी का ज्ञान है और वही वर्षा वर्षाता है और जानता है जो कुछ माता के गर्भ में है और कोई पुरुष नहीं जानता कि भोर क्या कार्य्य करेगा और कोई पुरुष नहीं जानता कि किस देश में मरेगा निस्सन्देह ईश्वर जाननेहारा और बूझनेहारा है॥

---

३२ सूरए सिजदा मक्की रुकू ३ आयत ३० ।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १ अलम—(१) इस पुस्तक का उतरना निस्सन्देह सृष्टियों के प्रभु की ओर से है। (२) क्या वह कहते हैं कि इसको आपही बना लिया है नहीं वहतो तेरे प्रभु की ओर से यथार्थ है जिस्तें उन लोगों को डरावे जिनके समीप तुझसे पहिले कोई डराने हारा नहीं आया जिस्तें वह मार्ग पर आजायें। (३) ईश्वर वह है जिसने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनमें है छः दिन में उत्पन्न किया फिर स्वर्ग पर विराजमान हुआ उसके उपरान्त तुम्हारा कोई स्वामी और हितवादी नहीं सो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते। (४) वह सर्व कार्यों का प्रबंध आकाश से पृथ्वी लों करता है और फिर वह उसकी ओर एक दिन में चढ़ जाता है जिसकी माप एक सहस्र * वर्ष है तुम्हारी गणना के लेखे से। (५) वही गुप्त और प्रगट का जाननेहारा बलवन्त और कृपालु है। (६) और जिसने हर वस्तु भली भांति बनाई और मनुष्य की रचना माटी से आरंभ की। (७) फिर उत्पन्न किया उसके वंश को एक निचुड़े हुए तुच्छ जल से। (८) फिर उसको संवारा और उसमें अपनी आत्मा फूंकी और तुम्हारे निमित कान और

---

* हज ४१, स्तोत्र ९० : ४ ।

नेत्र और हृदय उत्पन्न कर दिए तुम बहुतही न्यून धन्यवाद करते हो। (९) और यह कहते हैं जब हम भूमि में मिल जायंगे तो क्या हम नवीन रचना में आयंगे। (१०) नहीं परन्तु वह अपने प्रभु के मिलने को नकारते हैं। (११) कहदे कि यमदूत तुम्हारी आत्मा को निकालेगा जो तुम पर नियत किया गया है अपने प्रभु की ओर लौटा दिए जाओगे॥

रु० २—(१२) और यदि तू देखे जब अपराधी अपने प्रभु के सन्मुख अपने सिर झुकाए होंयगे कि हे हमारे प्रभु हमने देख लिया और सुन लिया है प्रभु हमको फिर लौटादे कि हम सुकर्म्म करें निस्सन्देह हमको निश्चय होगया। (१३) यदि हम चाहते तो हर मनुष्य को इसकी शिक्षा कर देते परन्तु मेरी ओर से मेरी बात सत्य ठहरे कि मैं नर्क को भरूंगा जिन्नों और मनुष्यों और सबसे। (१४) सो अब तुम चाखो जैसे तुमने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था निस्सन्देह हमने भी तुमको भुला दिया और तुम सदा का दण्ड चाखो उसके बदले जो तुम करते थे। (१५) हमारी आयतों पर तो वही लोग विश्वास लाते हैं कि जब उनको उनके द्वारा शिक्षा दीजाती है तो दण्डवत में गिरपड़ते हैं और जाप करते हैं अपने प्रभु की स्तुति के साथ और वह घमंड नहीं करते। (१६) और उनके अंग बिछौनों से अलग रहते हैं और अपने प्रभु को भय और आशा सहित पुकारते हैं और हमारे दिए हुए में से व्यय करते हैं। (१७) कोई मनुष्य नहीं जानता कि उसके नेत्रों के निमित शीतलता गुप्त रखी गई उसका बदला जो वह करते थे। (१८) क्या जो मनुष्य विश्वासी हैं वह अनाज्ञाकारी के तुल्य हैं कभी तुल्य नहीं होसकते। (१९) जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित रहने को वैकुण्ठ हैं पहुनई के समान जो वह करते थे। (२०) और जो लोग अनाज्ञाकारी हैं उनका ठिकाना अग्नि है जब चाहेंगे कि उससे बाहर निकलें तो उसमें लौटादिए जायंगे और उनसे कहा जायगा कि अग्नि का दण्ड चाखो जिसको तुम झुठलाया करते थे। (२१) और निस्सन्देह हम उस बुरे दण्ड के इधर ही निकट का दण्ड चखायंगे जिस्तें वह पलटें। (२२) और उससे अधिक दुष्ट कौन है जिसको उसके प्रभु की आयतों से शिक्षा कीगई जिसने उनसे मुंह फेर लिया निस्सन्देह हम अपराधियों से बदला लेनेहारे हैं॥

रु० ३—(२३) और हमने मूसा को पुस्तक दी थी सो तू उसके मिलने से सन्देह में न पड़ और हमने उसको इसराएल बंश के निमित्त शिक्षा का कारण ठहराया। (२४) और उनमें से हमने अगुवा बनाए कि हमारी आज्ञानुसार शिक्षा

करते थे जब उन्होंने धैर्य किया और हमारी आयतों की प्रतीत रखते थे। (२५) मेरा प्रभु पुनरुत्थान के दिन उनके बीच में उन बातों में निर्णय करदेगा जिनमें वह भिन्नता करते हैं। (२६) क्या उनको इससे शिक्षा न हुई कि उनसे पहिले हमने कितनी जातिएं नष्ट करडालीं यह लोग उनके घरों में चलते फिरते हैं निस्सन्देह इस में बहुतेरे चिन्ह हैं क्या वह नहीं सुनते। (२७) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटील भूमि की ओर हांकदेते हैं फिर उससे खेती उगाते हैं जिसमें से उनके पशु और वह आप खाते हैं क्या वह नहीं देखते। (२८) और कहते हैं कि यह जय कब होगी यदि तुम सत्यवादी हो। (२९) कहदे जय के दिन अधर्मियों को उनका विश्वास लाना कुछ अर्थ न आयगा और न उनको अवसर मिलेगा। (३०) सो तू उनसे मुंह फेरले और बाटजोह निस्सन्देह वह भी बाट जोहते हैं॥

३३ सूरए अहज़ाब* (फ़ौज़) मदनी रुकू ९ आयत ७३।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) हे भविष्यद्वक्ता ईश्वर से डर और अधर्मियों और धर्म्म कपटियों का कहा न मान निस्सन्देह ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (२) जो प्रेरणा तुझपर तेरे प्रभुकी ओर से आई उसीका अनुगामी हो जो कुछ तुम किया करते हो ईश्वर उसको जानता है। (३) ईश्वर पर भरोसाकर और ईश्वर ही हितवादी बस है। (४) ईश्वर ने किसी के भीतर दो हृदय नहीं बनाए और उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिनको तुम ज़ुहार† कर बैठे हो तुम्हारी माता नहीं बनाया और न उसने तुम्हारे पोष्य पुत्रों को तुम्हारा पुत्र बनाया.यह तुम्हारे मुंह के कहने की बात है ईश्वर सत्य बोलता और वही मार्ग बताता है। (५) उन्हें उन के पिताओं के नाम से पुकराया करो ईश्वर के निकट यह अधिक उत्तम है. फिर यदि तुमको उनके पिता का ज्ञान न हो तो वह तुम्हारे धर्म के भाई और तुम्हारे मित्र हैं और तुम पर कुछ पाप नहीं जिससे तुम भूल चूककरजाओ परन्तु उसमें जिसको तुम मन से ठानलो और ईश्वर क्षमा करनेहारा कृपालु है। (६) विश्वासियों पर भविष्यद्वक्ता विशेष अधिकार रखता है उनके अपने प्राणों से भी और

* जिस समय यह सूरत उतरी मदीना घिरा हुआ था सन ५ हिजरी में पहिली ९ आयतें मुहम्मद साहब का विवाह ज़ैनब के संग की ओर सूचना करती हैं। † अर्थात तेरी पीठ मुझको मेरी माता की पीठ के तुल्य है. मुजादला १॥

भविष्यद्वक्ता की पत्नियें विश्वासियों की मातायें हैं और ईश्वर की पुस्तक में नातेदार एक दूसरे के विशेष अधिकारी हैं विश्वासी और देश त्यागियों * की अपेक्षा परन्तु यह कि अपने मित्रों के साथ उपकार करना चाहो यह पुस्तक में लिखा है। (७) जब हमने भविष्यद्वक्ताओं से नियम बांधा तुझसे और नूह से और इबराहीम से और मूसा से और मरियम के पुत्र ईसा से। (८) और हमने उन से दृढ़ नियम बांधा जिस्तें वह सत्यवादियों से उनका सत्य पूछें और अधर्मियों के निमित दुखदायक दण्ड प्रस्तुत किया है॥

रु० २—(९†) हे विश्वासियो अपने ऊपर ईश्वर का उपकार स्मर्ण करो जब तुम पर सैनायें आचढ़ीं तो हमने उन पर पवन और वह सैनायें भेजीं जिनको तुमने नहीं देखा और ईश्वर देखता है जो कुछ तुम करते हो। (१०) जब वह तुम पर आचढ़ीं तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से और जब आंखें फिर गईं और हृदय गलों में आगए और तुम ईश्वर की ओर भांति भांति के अनुमान करते थे। (११) उस समय विश्वासियों की परिक्षा कीगई और अति वेग से कँपकँपाए‡ गए। (१२) और जब धर्म्म कपटी और वह लोग जिनके हृदयों में रोग था कहते थे कि जो कुछ बाचा ईश्वर और उसके प्रेरित ने हम से की थी वह तो धोखा ही निकली। (१३) और जब उनमें से एक जत्था कहने लगा कि हे यसरबवालो तुमको ठहरने का ठौर नहीं लौट चलो और उनमें से कुछ भविष्यद्वक्ता से आज्ञा मांगने लगे कि हमारे घर सूने पड़े हैं यद्यपि वह सूने न थे उनका विचार तो केवल भागने ही का था। (१४) और यदि उन पर उसकी दिशाओं से प्रवेश§ होजाती और उनसे उपद्रव के विषय में कहा जाता तो अवश्य ऐसा करते और उसमें थोड़ा ही ठहरते। (१५) और वह पहिले से ईश्वर से नियम बांध चुके थे कि पीठ न दिखायेंगे और ईश्वर के नियम की पूछपाछ होनी है। (१६) कहदे भागना तुमको कभी लाभदायक न होगा यदि मृत्यु अथवा घात होने से भागोगे फिर भी कुछ लाभ न पाओगे वरन थोड़ा सा। (१७) कहदे कौन तुमको ईश्वर से बचालेगा यदि वह तुम्हारे विषय में बुरा ही चाहे अथवा दया करने का विचार करे वह ईश्वर को छोड़ किसी को अपना स्वामी और

---

* यह आयत सूरए इनफ़ाल की ७२ आयत को खण्डन करती है। † आयत ९ से २२ लों सन ५ हिजरी के इतहास का बर्णन करती हैं। ‡ मदीना की भीतों के नीचे बारा सहस्र शत्रु तीन सहस्र मुसलमानों को घेरे पड़े थे उस समय एक प्रचण्ड पवन ने समस्त सैना में गड़बड़ी डालदी और मुसलमानों की जय हुई। § मदीना की सैना की दिशा से॥

सहायक न पायेंगे। (१८) ईश्वर उनको जानता है जो तुममें से रोकनेहारे हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे तीर चले आओ और वह लड़ाई में नहीं आते परन्तु थोड़े से। (१९) तुमसे बहुत कृपणता करते हैं और जब भय पहुंचे तो तू उनको देखता है वह तेरी ओर दृष्टि करते हैं उनकी आंखें उसी की ओर फिरती हैं जिस पर मृत्यु आरही हो फिर जब भय जातारहे तो तुम पर तीक्ष्ण जिह्वाओं से अशुभ वचन बोलते हैं धन का लोभ करते हुए यह लोग तो विश्वास ही नहीं लाए उनके कर्मों को ईश्वर ने अकार्थ करादिया और यह ईश्वर पर सहज है। (२०) वह विचार करते हैं कि सेनाएं अभी नहीं गई और यदि सेनाएं उपस्थित हों तो इच्छा करें आह कि गांव में बनवासी होते और तुम्हारे समाचार पूछा करते यदि वह तुममें होते तो युद्ध न करते परन्तु थोड़ा सा॥

रु० ३—(२१) तुम्हारे निमित प्रेरित में उत्तम दृष्टान्त उपस्थित है उस मनुष्य के निमित जो ईश्वर और अन्त के दिन पर आशा रखता है और अधिकता से ईश्वर का स्मर्ण करता है। (२२) और जब विश्वासियों ने सेनाओं को देखा तो बोल उठे यह तो वही है जिसकी बाचा हमसे ईश्वर और उसके प्रेरित ने की थी ईश्वर और उसका प्रेरित सत्य हैं इससे उनका विश्वास और आज्ञा पालन ही बढ़ा। (२३) विश्वासियों में कुछ पुरुष ऐसे हैं जिन्हों ने उस नियम को सत्य कर दिखाया जो ईश्वर से बांधा था उनमें कोई ऐसा है जो अपना कार्य* पूरा करचुका और कोई बाट जोह रहे हैं और उन्होंने उसमें तनिक भी अदल बदल नहीं किया। (२४) जिस्तें ईश्वर सत्य बोलनेहारों को उनके सत्य का प्रतिफल दे और धर्म कपटियों को दण्ड दे यदि चाहे अथवा उनको पश्चाताप का अवसर दे निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (२५) और ईश्वर ने उन अधर्मियों को क्रोध में भरे हुए लौटा दिया उनको कुछ भी भलाई हाथ न लगी और विश्वासियों की ओर से युद्ध के निमित ईश्वर बस था ईश्वर बलवन्त और प्रबल है। (२६) और उसने उन पुस्तकवालों को जिन्होंने उनकी सहायता की थी उनकी गढ़ियों से नीचे उतार लाया और उनके मनों में भय डाल दिया एक जत्था को तुमने वध† किया और एक को बंधुआ किया। (२७) और तुमको उनकी भूमि और घरों और धन का और एक ऐसी भूमि का जिसमें तुमने पग नहीं रखा था अधिकारी किया ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिमान है॥

* अर्थात ईश्वर के मार्ग में प्राण दिया। † मदीना के संग्राम के पश्चात महम्मद साहब ने कुरैजा के यहूदियों पर चढ़ाई की॥

रु॰ ४—(२८) हे भविष्यद्वक्ता अपनी पत्नियों से कहदे यदि तुम संसारिक जीवन और उसकी शोभा चाहती हो तो आओ मैं तुमको कुछ लाभ पहुंचाऊं और तुमको अच्छी रीति से विदा करदूं। (२९) और यदि तुम ईश्वर और उसके प्रेरित और अन्त के घर की चाहनेहारी हो तो ईश्वर ने तुममें से सुकर्म्मियों के निमित बड़ा प्रतिफल उपस्थित किया है। (३०) हे भविष्यद्वक्ता की स्त्रियो जो कोई तुममें से प्रत्यक्ष कुकर्म्म करे उसको दुहरा दुगना दण्ड दिया जायगा और यह ईश्वर पर बहुत सहज है॥

(३१) और जो तुममें से ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा पालन करे और सुकर्म्म करेगी तो हम उसको दुहरा प्रतिफल देंगे और हमने उसके निमित आदरनीय जीविका उपस्थित कररक्खी है। (३२) हे भविष्यद्वक्ता की पत्नियो तुम और स्त्रियों के समान नहीं हो यदि तुम संयमी हो तो लोच के साथ वार्त्ता लाप न करो कि वह पुरुष जिसके मन में रोग है लालच करने लगे वरन उचित बात कहा करो। (३३) और अपने घरों में बैठी रहो और अज्ञानता के समय के बनाव की नाईं अपने बनाव सिंगार दिखाती न फिरो और प्रार्थना को स्थिर रक्खो और दान दो और ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा को पालन करो ईश्वर तो यही चाहता है कि तुमसे अशुद्धता दूर करदे हे घर वालियो * तुमको भलीभांति पवित्र और स्वच्छ बनाए। (३४) और सुमरण करो जो कुछ तुम्हारे घर में ईश्वर की आयतें और बुद्धि पढ़ी जाती हैं निस्सन्देह ईश्वर भेद जाननेहारा और सचेत है॥

रु॰ ५—(३५) निस्सन्देह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रिएं विश्वासी पुरुष और विश्वासी स्त्रिएं और आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारी स्त्रिएं और सत्य वादी पुरुष और सत्यवादी स्त्रिएं और धीरज धरनेहारे पुरुष और धीरज धरने हारी स्त्रिएं और आधीनी करने हारे पुरुष और आधीनी करनेहारी स्त्रिएं और दान देने हारे पुरुष और दान देनेहारी स्त्रिएं और उपवास करनेहारे पुरुष और उपवास करनेहारी स्त्रिएं और अपने लज्जित स्थान की रक्षा करने हारे पुरुष और रक्षा करनेहारी स्त्रिएं और अत्यन्त ईश्वर का स्मर्ण करने हारे पुरुष और स्मर्णकरने हारी स्त्रियें ईश्वर ने उनके निमित क्षमा और बड़ा प्रतिफल उपस्थित किया है। (३६) न किसी विश्वासी पुरुष न किसी विश्वासी स्त्री को उचित है कि जब ईश्वर

* शिया लोग इसके विषय में प्रमाण देते हैं कि 'घर" इससे अलीफ़ातमा और बनरे

और उसका प्रेरित कोई बात ठहरावे तो उनको इस विषय में कुछ अधिकार रहै और जो ईश्वर और उसके प्रेरित के विरुद्ध विरोध करे तो वह प्रत्यक्ष भ्रम में भटक गया। (३७) और जब तू उस पुरुष* से जिस पर ईश्वर ने अपना उपकार किया और तूने भी उस पर उपकार किया तू कहने लगा कि अपनी पत्नी को अपने संग रहने दे और ईश्वर से डर और तू अपने हृदय में उस बातको गुप्त करता था जिसे ईश्वर प्रगट करने हारा था और तू मनुष्यों से भय करता था और ईश्वर अधिक विशेष अधिकारी है कि तू उससे भयकरे और जब ज़ैद उससे अपनी इच्छा पूरीकर चुका तो हमने तेरा विवाह उसके संगकर दिया जिस्तें विश्वासियों पर उनके आप पुत्रों की पत्नियों के विषय में जब कि वह उनसे अपनी इच्छा पूरी कर चुके रोक न हो और ईश्वर की आज्ञा होके ही रहती है। (३८) भविष्यद्वक्ता के निमित्त इस बात में कोई रोक नहीं जो ईश्वर ने उसके निमित ठहराई यही ईश्वर का व्यवहार होता रहा उनके संग जो पहिले बीत चुके और ईश्वर की स्थापित आज्ञा नियत हो चुकी है। (३९) और जो ईश्वर का सन्देश पहुँचाते हैं और उससे भय करते हैं और ईश्वर के उपरान्त किसी और से डर नहीं करते और ईश्वर यथेष्ट लेखा लेनेहारा है। (४०) तुम्हारे पुरुषों में से मुहम्मद किसी का पिता नहीं परन्तु ईश्वर का प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं की छाप है ईश्वर हर वस्तु को जानता है॥

रु० ६—(४१) हे विश्वासियो ईश्वर का बहुतायत से सुमरणकरो और भोर और सांझ उसका जापकरो। (४२) वही है जो तुमपर दया † भेजता है और उसके दूत भी जिस्तें तुमको अन्धकारों से प्रकाश की और ले आवें और वह विश्वासियों पर दयालु है। (४३) उनकी प्रार्थना कुशल की है जिस दिन वह उनसे मिलेंगे प्रणाम है और उसने उनके निमित उत्तम बदला उपस्थित कर रखा है। (४४) हे भविष्यद्वक्ता निस्सन्देह हमने तुझे साक्षी देनेहारा और सुसमाचारसुनाने हारा और डर सुनाने हारा करके भेजा है। (४५) ईश्वर की ओर बुलाने को उसकी आज्ञा से और चमकता हुआ दीपक। (४६) और विश्वासियों को सुसमाचार सुनादे उनके निमित ईश्वर की ओर से बड़ा अनुग्रह है। (४७) अधर्म्मियों और धर्म्म कपटियों के पीछे न चल उनके दुख देने से निश्चिन्त रह ईश्वर पर भरोसा कर वह यथेष्ट हितवादी है। (४८) हे विश्वासियो जब तुम विश्वासी स्त्रियों से विवाह करो और उनको छूने से प्रथम त्याग दो तो तुम पर

* ज़ैद और अबूबकर नाम सहित कुरान में वर्णित है। † अर्थात प्रार्थना करता है॥

कोई नियत समय नहीं जिसकी तुमको गिन्ती पूरी करनी पड़े सो उनको कुछ देदो और उनको अच्छी रीति बिदा करदो। (४९) हे भविष्यद्वक्ता निस्सन्देह हमने तुझको तेरी वह पत्नियें ठीक कीं जिनका तू नियत धन देचुका और जो तेरे हाथ का धन * हों जो ईश्वर तेरी ओर लाया तेरे चाचा की पुत्रियां तेरी फूफी की पुत्रियां और तेरे मामू की पुत्रियां और तेरी मौसियों की पुत्रियां जिन्होंने तेरे संग अपना देश छोड़ा और कोई विश्वासी स्त्री जो अपना तन भविष्यद्वक्ता को दे यदि भविष्यद्वक्ता उससे विवाह करना चाहे यह विशेष तेरेही निमित है न और विश्वासियों के निमित। (५०) हम जानते हैं जो हमने उन पर उचित कर दिया उनकी पत्नियों और उनके हाथ के धन के विषय में जिस्तें तुझ पर सकेती न हो और ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (५१) जिसे तू चाहे पीछे रखदे और जिसे चाहे अपने तीर ठौर दे अथवा जिसको चाहे तू बुलावे उनमें से जिनसे तू अलग होचुका था तो तुझ पर इसमें कुछ दोष नहीं यह उनके नेत्र शीतल रखने को अधिक निकट है और शोकित न होंगी और जो कुछ तूने उनको दिया है उस पर संतुष्ट हैं ईश्वर जानता है जो कुछ तुम्हारे मनों में है और ईश्वर जानने हारा और कोमल स्वभाव है। (५२) तेरे निमित इसके उपरान्त स्त्रियें ठीक नहीं और न उनको पत्नियों से बदल यदपि तुझको उनका यौवन भावे केवल अपने हाथ के धन के और ईश्वर हर वस्तु को देखने हारा है॥

रु० ७—(५३) हे विश्वासियो भविष्यद्वक्ता के गृहों में प्रवेश न करो केवल इसके कि तुमको आज्ञा दीजाय खाने के निमित उसके पकने की बाट न जोहा करो परन्तु जब तुम बुलाए जाओ तब जाओ फिर जब खा चुको तो उठ आओ और जमकर बातों में न लगे रहो निस्सन्देह यह बात भविष्यद्वक्ता को दुखदायक है सो वह तुमसे लाज करता है परन्तु ईश्वर सत्य बात कहने से लाज नहीं करता और जब तुम उनसे † कोई वस्तु मांगो तो पट के पीछे से मांगो यह तुम्हारे और उनके मनों को अधिक पवित्र करनेहारा है तुम्हें यह उचित नहीं कि ईश्वर के प्रेरित को दुख देओ अथवा यह कि उसके पीछे उसकी स्त्रियों से कभी विवाह करो निस्सन्देह यह ईश्वर के निकट बुरी बात है। (५४) यदि तुम किसी वस्तु को प्रगट करो अथवा उसे छिपाओ निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु को जानता है। (५५) उन ‡ पर कुछ दोष नहीं यदि अपने पितरों और अपने पुत्रों और अपने भ्राताओं और अपने भतीजों और अपने भानजों और स्त्रियों से और अपने हाथ के

* अर्थात दासियां। † अर्थात भविष्यद्वक्ता की स्त्रियों से। ‡ भविष्यद्वक्ता की स्त्रियों पर॥

धन से ओट न करें और वह ईश्वर से डरें निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु पर साक्षी है। (५६) निस्सन्देह ईश्वर और उसके दूत भविष्यद्वक्ता पर आशीष भेजते रहते हैं हे विश्वासियो तुम भी उस पर आशीष भेजो और आशीष देके आशीरवाद देओ। (५७) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर और उसके प्रेरित को क्लेश देते हैं ईश्वर उनको इस संसार और अन्त में धिक्कारेगा और उनके निमित उपहास का दण्ड उपस्थित किया है। (५८) और जो लोग विश्वासी पुरुष और विश्वासी स्त्रियों को निर्दोष कष्ट देते हैं तो उन्होंने बंधक बांधा और प्रत्यक्ष पाप किया।

रु० ८—(५९) हे भविष्यद्वक्ता अपनी पत्नियों और अपनी पुत्रियों * और विश्वासियों की पत्नयों से कहदे कि अपनी ओढ़निएं अपने ऊपर लटकालिया करें यह उनके अधिक निकट है कि वह पहचानली जायें तो कष्ट न दिया जाय और ईश्वर क्षमा करनेहारा और दयालु है। (६०) यदि धर्म कपटी और वह जिनके मनों में रोग है और मदीना में झूठा समाचार उड़ानेहारे न मानें तो हम तुझको उनके पीछे लगायदेंगे फिर वह नग्र में तेरे समीप न ठहर सकेंगे परन्तु बहुत थोड़ा। (६१) अर्थात् जहां कहीं पाएजायं पकड़े जायं और भली भांति वधकरे जायं। (६२) ईश्वर का व्यवहार उनके संग जो पहिले व्यतीत हो चुके यही रहा और तू ईश्वर के व्यवहार में परिवर्तन न पायगा। (६३) लोग तुझ से प्रश्न करते हैं उस घड़ी के विषय में कहदे कि उसका ज्ञान तो ईश्वर ही को है तू क्या जाने कदाचित वह घड़ी निकट ही हो। (६४) निस्सन्देह ईश्वर ने अधर्मियों को धिक्कारा और उनके निमित धधकता † हुआ उपस्थित कर रखा है। (६५) सदा उसी में रहेंगे और कोई स्वामी और सहायक न पायंगे। (६६) जिस दिन उनके चेहरे अग्नि में उलटे पलटे जायंगे कहेंगे आह! हम ईश्वर और उसके प्रेरित का कहा मानते। (६७) और कहेंगे हे हमारे प्रभु हमने अपने प्रधानों और अपने बड़ों का कहना माना सो उन्हों ने हमें मार्ग से भटका दिया। (६८) हे हमारे प्रभु उनको दुगना दण्ड दे और उन पर अधिक धिक्कार कर॥

रु० ९—(६९‡) हे विश्वासियो उनके समान न बनो जिन्होंने मूसा को कष्ट¶ दिया फिर ईश्वर ने उसको उनकी बातों से रहित करदिया वह ईश्वर के निकट आदर योग्य था। (७०) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो और सीधी बात कहा करो।

---

* यह आयत सन आठ हिजरी से पहिले उतरी होगी क्योंकि उस समय महम्मद साहब की पुत्री उमकुलसूम जीती थी। † अर्थात लपट। ‡ इस आयत में उस बात का बर्णन जान पड़ता है जो महम्मद साहब पर लूट का धन बांटने के विषय में कष्ट पड़ा था ¶ गणना १२। १॥

(७१) वह तुम्हारे निमित तुम्हारे आर्य्यों को सुधार देगा और तुमको तुम्हारे पाप क्षमा करदेगा जो ईश्वर और उसके प्रेरित का कहा मानता है तो निस्सन्देह उसने बड़ा मनोर्थ प्राप्त किया। (७२) निस्सन्देह हमने आकाशों और पृथ्वी और पर्वतों पर उनके सन्मुख व्यवस्था रखी परन्तु वह उसके बोझ उठाने से रुके और उससे भयभीत हुए परन्तु उसको मनुष्य ने ग्रहणाकर लिया. निस्सन्देह वह बड़ा दुष्ट मूर्ख है। (७३) जिस्तें ईश्वर धर्म कपटी पुरुषों और धर्म कपटी स्त्रियों को और साझी ठहरानेहारे पुरुषों और साझी ठहरानेहरी स्त्रियों को दण्ड दे और विश्वासी पुरुषों और विश्वासी स्त्रियों की ओर अवहित हो और ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है॥

---

३४ सूरए सबा मक्की रुकू ६ आयत ५४।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है उसीका है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है उसीकी महिमा अन्त के दिन में है और वही समस्त बुद्धिवाला और सब कुछ जानने हारा है। (२) वह जानता है जो कुछ पृथ्वी में आता है और जो कुछ उसमें से निकलता है और जो आकाश पर से उतरता है और जो उस पर चढ़ता है वही कृपालु क्षमा करनेहारा है। (३) कहते हैं कि वह घड़ी हम पर न आयगी कहदे निस्सन्देह मेरे प्रभु की सौंह वह अवश्य तुम पर आयगी उसी सर्व्व ज्ञाता की सौंह जिससे आकाशों और पृथ्वी की कोई वस्तु रत्तीमात्र भी गुप्त नहीं न इससे कोई वस्तु छोटी न बड़ी सब खुली पुस्तक में है। (४) जिस्तें उनको जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए प्रतिफल दे उन्हीं के निमित क्षमा और उत्तम जीविका है। (५) और जिन्होंने हमारी आयतों के हराने का प्रयत्न किया वही हैं जिनके निमित दण्ड और दुख की मार है। (६) और जिनको ज्ञान दियागया वह उसको जो तेरी ओर तेरे प्रभु की ओर से उतरा है देखते हैं कि वह सत्य है और शिक्षा करता है उसी के मार्ग की जो बलवन्त महिमा योग्य है। (७, अधर्मी कहने लगे क्या हम तुमको उस मनुष्य का खोज बताएं जो तुमको समाचार देता है फिर जब तुम फटकर खण्ड खण्ड होजाओगे तो फिर निस्सन्देह तुमको फिरसे उत्पन्न होना है। (८) उसने ईश्वर पर झूठा बन्धक बांधा है उसको सिर्रं है परन्तु वह लोग जो अंत के दिन पर विश्वास

नहीं रखते वह दण्ड में हैं और भूल में पड़े हैं। (९) क्या उन्होंने दृष्टि नहीं की जो कुछ उनके सन्मुख है और जो कुछ उनके पीछे है आकाश और पृथ्वी में यदि हम चाहें तो उनको पृथ्वी में धसादें अथवा उन पर आकाश के टुकडे डालदें * निस्सन्देह उसमें प्रत्येक अवहित होने हारे दास के निमित चिन्ह हैं॥

रु० २—(१०) और हमने दाऊद को अपने तीर से दया दी है हे पर्व्वतो उसके संग हो और हे पक्षियो पुकारो और हमने उसके निमित लोहे को नर्म कर दिया उससे झिलम बना और कड़ियों को भली भांति जोड़ और सुकर्म्म करो निस्सन्देह जो तुम करते हो मैं देख रहा हूं। (११) और सुलेमान के निमित पवन उसकी भोर की यात्रा एक मांस का मार्ग था और उसकी सांझ की यात्रा एक मांस का मार्ग था और हमने उसके निमित पिघले हुए तांबे का एक सोता बहा दिया और जिन्नों में से उसके निमित कार्य्य करते थे उसके प्रभु की आज्ञा से और जो उनमें हमारी आज्ञा से फिरजाय हम उसको धधकता हुआ दण्ड चखायेंगे। (१२) और वह उसके निमित गढ़ और मूर्ति और थाल ताल की नाई और अटल देगें उसकी इच्छानुसार बनाते थे हे दाऊद के सन्तान सुकर्म्म करो और धन्यवादी बनो मेरे दासों मे थोड़ेही धन्यवादी हैं। (१३) और जब हमने उसके निमित मृत्यु की आज्ञा की तो हमने जिन्नात को उसके मरने का समाचार न दिया परन्तु पृथ्वी के एक कीड़े † ने कि उसकी लाठी खाता रहा सो जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों ने जान लिया और यदि उनको गुप्त का ज्ञान होता तो उपहास के दण्ड में न पड़ते। (१४) सबा की जाति के निमित उनके घरों में एक चिन्ह था दो बारीं थीं एक दहने और एक बाएं हाथ पर कि अपने प्रभु के अहार में से खाओ और उसका धन्यवाद करो एक अच्छा नग्र और क्षमा करनेहारा प्रभु। (१५) फिर उन्होंने मुँह फेरा और हमने उन पर बड़े बेग की बढ़िया भेजी और हमने उनकी दोनों बारियें ऐसी दोबारियों से बदलदी जिनके फल स्वाद में बुरे थे और झाऊ और कुछ थोड़े से बेर के पेड़ थे। (१६) और वह दण्ड हमने उनकी कृतघ्नता का दिया और हम उसी को दण्ड देते हैं जो कृतघ्न हैं। (१७) और हमने उनमें और उनके नग्रों के बीच में जिनको हमने आशीश दी थी बहुतसी बस्तियां रखीं जो प्रगट थीं और हमने उनमें चलने के हेतु विश्राम स्थान ठहरा रखे थे कि रातों और दिनों में निर्भय चलो फिरो। (१८) सो कहने लगे हे हमारे प्रभु हमारे विश्राम स्थानों में अन्तर करदे उन्होंने आप अपने ऊपर दुष्टता

---

* रुग ४८ बनी इसरायल ९४। शोरा १८७। २०८। † घुन अथवा दीपक॥

की फिर हमने उनको कहानी बना दिया और हमने उनको चीर कर टूक टूक कर डाला निस्सन्देह इसमें हर एक धीर्य्य धरनेहारे गुणानुवादी के निमित चिन्ह हैं। (१६) और दुष्टात्मा ने उन पर अपने विचार को सत्य कर दिखाया सो यह उसके पीछे होलिए परन्तु विश्वासियों का एक जत्था है। (२०) और उस पर उनका कुछ बश न था केवल इसके कि हमको प्रगट होजाय कि कौन अंत के दिन पर विश्वास लाता है और कौन उनमें से सन्देह में पड़ा हुआ है और तेरा प्रभु हर वस्तु का रक्षक है॥

रु० ३—(२१) कह बुलाओ उनको जिन पर तुम ईश्वर के उपरान्त घमंड करते थे वह आकाशों और पृथ्वी में रतीमात्र भी अधिकार नहीं रखते न इनका इनमें कोई साझी है न इनमें से उसका कोई सहायक है। (२२) और न उसके यहां उनकी विन्ती अर्थ आती है परन्तु हां उसी को जिसके निमित वह आज्ञा दे यहांलों कि जब उनकी घबराहट उनके हृदयों से दूर कीजाती है तो पूछते हैं कि तुम्हारे प्रभु ने क्या कहा कहते हैं उसने सत्य कहा वही ऊंचा और सबसे बड़ा है। (२३) पूछ आकाशों और पृथ्वी से तुमको कौन जीविका देता है कहदे ईश्वर और निस्सन्देह हम अथवा तुम अवश्य शिक्षा पर हैं अथवा प्रत्यक्ष भ्रम में हैं। (२४) कहदे तुमसे उसके विषय में न पूछा जायगा जो पाप हमने किए हैं और हमसे उनके विषय में न पूछा जायगा जो तुम करते हो। (२५) कहदे यदि हमारा प्रभु हम सबको इकत्र करेगा तो हमारे बीच में यथार्थ निर्णय कर देगा क्योंकि वही खोलनेहारा है जो जानता है। (२६) कि तुम मुझे उन्हें दिखाओ जिनको तुम उसके संग साझी करके मिलाते हो कभी नहीं वरन वही ईश्वर बली बुद्धिवान है। (२७) हमने तुझको सब लोगों के निमित सुसमाचार सुनानेहारा और डर सुनानेहारा बनाकर भेजा है परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते। (२८) और वह कहते हैं कि वह बाचा कब होगी यदि तुम सच्चे हो। (२९) कि तुम्हारे निमित एक दिन की बाचा है कह न तुम उससे एक घड़ी पीछे रहसकते हो न आगे बढ़सकते हो॥

रु० ४—(३०) अधर्म्मी कहने लगे कि हम तो इस कुरान पर कभी विश्वास न लायेंगे और न उस पर जो उससे पहिले है और यदि तू देखे जब यह दुष्ट अपने प्रभु के सन्मुख खड़े किए जायँगे तो एक दूसरे की बात को खण्डन करता होगा निर्बल लोग विरोधियों से कहेंगे कि यदि तुम न होते तो हम अवश्य विश्वासी होजाते। (३१) अभिमानी निर्बलों से कहेंगे क्या हमने तुमको शिक्षा से

रोक रखा था इसके पीछे कि वह तुम्हारे समीप आई परन्तु तुमहीं अपराधी थे। (३२) और निर्बल लोग अभिमानियों से कहेंगे हमें बरन रात दिन के छल ने भर्माया जैसा तुम उसकी हमको आज्ञा करते थे कि ईश्वर को न मानें और उसके साक्षी ठहरायें और जब दण्ड को देखेंगे तो लाज के मारे लज्जित होयँगे और हम उनके गलों में पट्टा डालेंगे और उनको उसीका दण्ड मिलेगा जो कार्य्य वह करते थे। (३३) और हमने किसी बस्ती में कोई डर सुनानेहारा नहीं भेजा कि वहां के तृप्त लोग यह न कहने लगे हों कि हमतो उसको जो तुम्हारे हाथ भेजा गया नहीं मानते। (३४) और कहने लगे हम सम्पति और सन्तति में तुमसे अधिक हैं और हमको दण्ड न दिया जायगा। (३५) कहदे निस्सन्देह मेरा प्रभु जिसकी चाहता है जीविका अधिक कर देता है और जिसकी चाहता है सकेत कर देता है परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं जानते॥

रु० ५ –(३६) परन्तु न तुम्हारी सम्पति न तुम्हारी सन्तति ऐसे हैं कि तुमको पदवी में हमारे निकट समीपी बनादें परन्तु वह जो विश्वास लाया और जिसने सुकर्म्म किया सो उन्हीं को उनके कर्म्मों के निमित दुहरा बदला है, और वह अटारियों* पर निश्चिन्त बैठे होंगे। (३७) और वह जो हमारी आयतों के हराने का प्रयत्न करते हैं दण्ड में पकड़े आयंगे। (३८) कि मेरा प्रभु अपने दासों में से जिसकी चाहता है जीविका अधिक करदेता है और जिसकी चाहता है सकेत कर देता है और जो कुछ तुम व्यय करते हो उसके बदले में वह और देता है और वह सब से अच्छी जीविका देनेहारा है। (३९) और जिस दिन वह सब को इकत्र करेगा तब वह दूतों से कहेगा क्या यह वही लोग हैं जो तुमहीं को पूजा करते थे। (४०) वह कहेंगे तू पवित्र है तू ही हमारा स्वामी है उनके उपरान्त परन्तु वह तो जिन्नों को पूजा करते थे उनमें से बहुतेरे उन पर विश्वास लाए हैं। (४१) परन्तु आज के दिन वह एक दूसरे के लाभ और हानि के स्वामी नहीं और हम दुष्टों से कहेंगे कि तुम इस अग्निदण्ड को चाखो जिसको तुम झुठलाते थे। (४२) और जब हमारी खुली खुली आयतें उन पर पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं यह क्या है परन्तु केवल एक मनुष्य जो चाहता है तुमको उसकी अराधना से रोके जिसको तुम्हारे पुरखा पूजा करते थे, और वह कहते हैं यह † तो केवल झूठ उसने गढ़ लिया है और अधर्म्मियों ने जब उनके समीप

---

* अर्थात बैकुण्ठ।   † अर्थात कुरान॥

सत्य आया तो कहा निस्सन्देह यह तो प्रत्यक्ष टोना है। (४३) और हमने उनको पुस्तकें नहीं दी कि जिनको वह पढ़ते न तुम्हसे पहिले उनके तीर कोई डर सुनाने द्वारा भेजा। (४४) और उनके अगलों ने भी झुठलाया था और यह तो अभी उसके दशांश को भी नहीं पहुंचे जो कुछ हमने उनसे पहिलों को दिया था उन्हों ने मेरे प्रेरितों को झुठलाया फिर कैसा मेरा दण्ड हुआ॥

रु० ६—(४५) कह मैं तो तुमको केवल एक बात की शिक्षा करता हूं यह कि तुम ईश्वर के हेतु दो दो एक एक उठ खड़े होओ और चिन्ता करो कि तुम्हारे इस मित्र को कुछ सिरंपन तो नहीं वह तो तुमको एक कठिन दण्ड के आने से पहिले चितानेहारा है। (४६) कह मैं इस पर तुमसे कुछ बनि नहीं मांगता और यदि हो तो वह तुमहीं को हो मेरी बनि तो ईश्वर ही के तीर से है और वह हर वस्तु पर साक्षी है। (४७) कह मेरा प्रभु सत्य को डाल जाता है और वही अन-देखे को भलीभांति जानता है। (४८) कहदे सत्य आ पहुंचा और असत्य से न पहिले कुछ हुआ न पीछे होगा। (४९) कह यदि मैं भटका हूं तो बस मैं अपने ही बुरे के निमित भटका हूं और यदि मैं शिक्षा पर हूं तो इस कारण कि मेरे प्रभु ने मेरी ओर प्रेरणा की है निस्सन्देह वह सुननेहारा और अधिक निकट है। (५०) और यदि तू देखे जब यह लोग घबड़ायंगे और फिर भाग न सकेंगे और तीर ही से पकड़े चले आयंगे। (५१) और कहने लगेंगे कि हम इस * पर विश्वास ले आए परन्तु अब इतने अन्तर से उनका कहां हाथ पहुंच सकता है। (५२) और यह पहिले तो उसको मुकर चुके और दूर स्थान से बेदेखे अटकल दौड़ाते रहे। (५३) और आड़ करदीगई उनके और उन वस्तुओं के बीच में जिनकी यह इच्छा करते हैं। (५४) जैसा उन्हीं के समान लोगों के संग उनसे पहिले किया गया निस्सन्देह वह अत्यन्त सन्देह में हैं॥

३५ सूरए मलायक अथवा फ़ातिर (दूत) मक्की रुकू ५ आयत ४५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) सर्व्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जिसने आकाशों और पृथ्वी को सृजा और जो दूतों को उत्पन्न करता है संदेश पहुंचानेहारे जिनके पंख हैं दो दो और तीन तीन और चार चार उत्पति में जो चाहे अधिक कर

* अर्थात कुरान पर॥

सकता है निस्सन्देह ईश्वर हर बात पर शक्तिवान है। (२) ईश्वर अपने दासों के निमित जो दाया खोले तो उसको कोई बन्द नहीं कर सकता और जिसको वह बन्द करता है तो उसके पीछे उसको कोई खोलनेहारा नहीं और वह बलवन्त दयालु है। (३) हे लोगो तुम ईश्वर के उस उपकार को स्मर्ण करो जो तुम पर है क्या ईश्वर के उपरान्त कोई और भी सृजनहार है जो तुमको आकाशों और पृथ्वी से जीविका देता है उसके उपरान्त कोई ईश्वर नहीं सो तुम कहां भटके जाते हो। (४) और यदि यह लोग तुझको झुठलाएं तो तुझसे पहिले भी प्रेरित झुठलाए जाचुके हैं समस्त कार्य्य ईश्वर ही की ओर लौटाए जायंगे। (५ हे लोगो निस्सन्देह ईश्वर की बाचा सत्य है सो तुमको संसारिक जीवन छल न दे और ईश्वर के विषय में वह कपटी * तुम्हें धोका न दे। (६) निस्सन्देह दुष्टात्मा तुम्हारा शत्रु है और तुम उसको शत्रु ही समझते रहो सो वह तो अपनी जत्था को बुलाता है जिस्तें वह ज्वालावालों में होजायं। (७) जो लोग अधर्म्मी हैं उनके निमित कठिन दण्ड है। (८) और जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित क्षमा और बड़ा प्रतिफल है॥

रु० २—(९) भला वह मनुष्य कि उसका बुरा कर्म्म उसे भला करके दिखाया गया फिर उसने उसको अच्छा ही देखा निस्सन्देह ईश्वर जिसे चाहता है भ्रमाता है और जिसे चाहता है शिक्षा देता है सो तेरा प्राण उन पर शोक से भर भर कर जाता न रहे निस्सन्देह ईश्वर जानता है जो वह करते हैं। (१०) ईश्वर वह है जिसने पवन चलाए और वह मेघों को उठालाते हैं फिर हम उनको मरेहुए नग्रों की ओर लेजाते हैं और फिर उससे पृथ्वी को उसके मरे § पीछे सरजीव करते हैं और इसी रीति जी उठना है। (११) जो आदर चाहता है सर्व आदर ईश्वर ही के निमित है उसीकी ओर पवित्र बातें और सुकर्म्म चढ़ते हैं वह उनको ऊंचा करता है और वह जो दुर विचार करते हैं उनके निमित कठिन दण्ड है और उनका छल मिट जायगा। (१२) ईश्वर ने तुमको माटी से उत्पन्न किया फिर वीर्य्य से फिर तुमको जोड़े जोड़े बनाया और कोई नारी जाति बिना उसकी आज्ञा के गर्भ नहीं रखती है न जनती है और न कोई वृद्धायु पाता है और न किसी की आयु घटाई जाती है केवल इसके कि पुस्तक में लिखा होता है निस्सन्देह यह बात ईश्वर पर सहज है। (१३) और दो नदी समान नहीं होतीं कि

---

* अर्थात दुष्टात्मा। † अर्थात नर्क। ‡ इमरान १८। § अर्थात बुढ़ापा॥

एक तो मीठा है प्यास बुझाती है उसका पानी मनभावन है और यह दूसरी खारी कड़ुवी है और तुम दोनों में से टटका मांस खाते हो और आभूषण निकालते हो जिन्हें तुम पहरते हो और तू देखता है कि नौकाएं नदी में फाड़ती चली जारही है जिस्तें तुम ईश्वर का अनुग्रह खोजो और धन्यवादी बनो। (१४) रात को दिन में प्रवेश करता है और दिन को रात में प्रवेश करता है सूर्य्य और चन्द्रमा को आज्ञाकारी बनाया प्रत्येक नियत समय लों चलता है यह है ईश्वर तुम्हारा प्रभु उसी का राज्य है और जिनको तुम उसके उपरान्त पुकारते हो वह एक तिनके के भी स्वामी नहीं हैं। (१५) यदि तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारे पुकारने को न सुन सकेंगे और यदि सुनलें तो तुम्हारी पुकार को न पहुंच सकेंगे और पुनरुत्थान के दिन तुम्हारे साझी ठहराने से मुकर जायंगे परन्तु तुझको कोई न बतासकेगा इस सन्देश देनेहारे के समान।

रु० ३—(१६) हे लोगो तुम ईश्वरही के आधीन होओ और ईश्वर वह है जो धनी और महिमा योग्य है। (१७) यदि चाहे तो तुमको लेजाय और नवीन रचना को लेआए। (१८) और यह ईश्वर पर कुछ कठिन नहीं। (१९) और कोई बोझ उठाने हारा किसी का दूसरे का बोझ न उठायगा परन्तु वह मनुष्य जिस पर भारी बोझ है पुकारे अपना बोझ उठाने को उसका कुछ भी बोझ घटाया न जायगा यदपि वह नातेदार ही क्यों न हो तू तो केवल उन्ही को डर सुनाता है जो बिन देखे अपने प्रभु से डरते हैं और प्रार्थना में स्थिर हैं और जो कोई सुधरता है तो अपनेही निमित सुधरता है ईश्वरही की ओर यात्रा करना है। (२०) अन्धा और सुझाखा समान नहीं होता न अन्धकार और न प्रकाश और न छाया और न धूप। (२१) और सजीव और निर्जीव समान नहीं होते निस्सन्देह जिसको ईश्वर चाहता है वह सुनता है और तू उनको सुना नहीं सकता जो समाधियों मे हैं सो तू तो डराने हारा है। (२२) निस्सन्देह हमने तुझको सत्य देकर सुसमाचार सुनाने हारा और डराने हारा करके भेजा कोई जाति ऐसी नहीं जिसमें डराने हारा न बीता हो। (२३) और यदि वह तुझको झुठलायं तो वह लोग भी झुठलाए जाचुके हैं जो उनसे पहिले थे उनके तीर उनके प्रेरित खुले चिन्ह और पत्र और ज्योतिवान पुस्तक लेके आए थे। (२४) फिर मैंने अधर्म्मियों को धर पकड़ा और फिर मेरा दण्ड कैसा हुआ॥

रु० ४—(२५) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश से पानी उतारा और फिर उससे भांति भांति के फल उपजाए रंग बिरंग के और पर्वतों में श्वेत

और रक्तवर्ण घाटियां हैं उनके रंग भिन्न भिन्न हैं और काले भुजंग और मनुष्यों और ढोरों के कई भांति के उनके रंग हैं इसी रीति ज्ञानवानों के उपरान्त ईश्वर से उसके दासों में कोई नहीं डरता निस्सन्देह ईश्वर बलवन्त क्षमा करनेहारा है। (२६) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर की पुस्तक पढ़ते हैं और प्रार्थना में स्थिर हैं और उसमें से व्यय करते हैं जो हमने उनको गुप्त और प्रगट में दिया है और अपने व्यापार में ऐसे आशावान हैं कि वह कभी नष्टही न होगा। (२७) जिस्तें उनको पूरा पूरा उनका प्रतिफल दे और अपने अनुग्रह से उनको अधिक भी दे निस्सन्देह वह क्षमा करने हारा उपकारस्मृता है। (२८) और जो कुछ हमने तेरी ओर पुस्तक सहित प्रेरणा की वही यथार्थ है जो अपने से अगिले को सिद्ध करती है निस्सन्देह ईश्वर अपने दासों को जानता है और देख रहा है। (२९) फिर हमने उन लोगों को पुस्तक का अधिकारी बनाया जिन्हें हमने अपने दासों में से चुन लिया था फिर कुछ तो उनमें से अपने निमित दुष्टता करने हारे हैं और कुछ उनमें से मध्यम हैं और कुछ उनमें से सुकर्म्मियों में ईश्वर की आज्ञा से आगे बढ़नेहारे हैं और यही बड़ा अनुग्रह है। (३०) सदा के वैकुण्ठ जिनमें वह प्रवेश करेंगे वहां उनको स्वर्ण के कंगन और मोती पहराए जायंगे और वहां उनका वस्त्र रेशम का होगा। (३१) और कहेंगे ईश्वर का धन्यवाद हो जिसने हमसे शोक को दूर कर दिया निस्सन्देह हमारा प्रभु क्षमा करनेहारा उपकारस्मृता है। (३२) जिसने हमको अपने अनुग्रह से सदा रहने के घर में उतारा हमको वहां कोई क्लेश न पहुंचेगा और न हमको वहां कोई थकावट होगी। (३३) और जिन्होंने अधर्म्म किया उनके निमित नर्क की अग्नि है और उनके निमित आज्ञा न कीजायगी कि वह मरही जायं न उन पर से कुछ दण्ड हलका किया जायगा हम कृतघ्नों को इसी भांति दण्ड देते हैं। (३४) और वह वहां चिल्लायंगे कि हे हमारे प्रभु हमको निकाल कि हम सुकर्म्म करें उसके उपरान्त जो हम करते रहे थे क्या हमने तुमको इतनी अवस्था न दी थी जिसमें सोच लेते जिसको सोचना हो और तुम्हारे समीप डराने हारा पहुंचा था। (३५) सो अब चाखो दुष्टों का कोई सहायक नहीं॥

रु० ५—(३६) ईश्वर आकाशों और पृथ्वी की गुप्त वस्तुओं का जानने हारा है निस्सन्देह वह हृदयों के गुप्त भेदों को जानता है। (३७) वही है जिसने तुमको पृथ्वी में दीवान बनाया सो जो कोई अधर्म करे तो उसके अधर्म्म की विपाति उसी के सिर पर है और अधर्म्मियों के निमित उनका अधर्म्म उनके प्रभु के कोप

को अधिक ही करता है और अधर्म्मियों के विषय में उनका अधर्म्म हानि ही बढ़ाता है। (३८) कहदे भला अपने साझियों को तो देखो जिन्हें तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते हो दिखाओ तो मुझको उन्होंने पृथ्वी में क्या उत्पन्न किया है अथवा आकाशों में उनका कुछ भाग है अथवा हमने उन्हें कोई पुस्तक दी है कि यह उसका प्रमाण रखते हैं कुछ भी नहीं बरन दुष्ट जो एक दूसरे से प्रतिज्ञा करते हैं सब धोका है। (३९) निस्सन्देह ईश्वर आकाशों और पृथ्वी को थांभे हुए है कि कहीं टर न जायं और यदि वह टर जायं तो उनको उसके उपरान्त कोई थांभ भी न सके निस्सन्देह वह कोमल चित्त क्षमा करनेहारा है। (४०) वह ईश्वर की शपथ खाया करते हैं बड़ी पक्की शपथों के साथ कि यदि उनके समीप कोई डराने हारा आयगा तो अवश्य प्रत्येक जाति से अधिक मार्ग पानेहारे होयंगे और जब उनके समीप डराने हारा आया तो उनकी घृणा ही बढ़ी। (४१) इस हेतु कि पृथ्वी में अहंकार करते और बुराई के यत्न सोचते और बुराबिचार की किसी पर विपत्ति नहीं पड़ती केवल बुराविचार करने हारों के सो यह क्या अगलोंही के व्यवहार की बाट जोहते हैं सो तू ईश्वर के व्यवहार में कभी परिवर्तन न पायगा। (४२) और वह ईश्वर के व्यवहार में कभी हेर फेर न पायंगे। (४३) क्या यह पृथ्वी में नहीं चले कि फिर कर देखें कि उनका क्या अंत हुआ जो उनसे पहिले थे और वह इनसे अधिक बलवान थे ईश्वर ऐसा नहीं है कि उसको आकाशों और पृथ्वी में कोई बात हरादे निस्सन्देह वह जानने हारा और शक्तिवान है। (४४) और यदि ईश्वर मनुष्यों को उनके दण्ड में धर पकड़े जो उन्होंने उपार्जन किया है तो पृथ्वी पर किसी जीवधारी को न छोड़े परन्तु वह उन्हें नियत समयलों अवसर देता है। (४५) फिर जब एक समय आ पहुंचा निस्सन्देह ईश्वर अपने दासों को देखरहा है ॥

---

३६ सूरए यस * मक्की रुकू ५ आयत ८३।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १ यस—(१) बुद्धिवान कुरान की सौंह। (२) तू सचमुच प्रेरितों में से है। (३) और सीधे मार्ग पर है। (४) जो उतारा हुआ है बलवन्त दयालु का। (५) जिस्तें तू डराए उन लोगों को जिनके पुरखा नहीं डराए गए और वह आप

* इस सूरत को महम्मद साहब ने कुरान का हृदय बताया है ॥

भी अचेत हैं। (६) उनमें से बहुतेरों पर बात * प्रमाणिक † होचुकी सो वह नहीं मानेंगे। (७) निस्सन्देह हमने उनके गलों में पट्टे डाल दिए हैं सो वह ठोड़ियों लों अड़ गए हैं और उनके सिर ऊपर को उठे हुए हैं। (८) और हमने उनके आगे एक भीत बनादी है और उनके पीछे एक भीत फिर ऊपर से उनको ढांक दिया है अब उनको सूझता नहीं। (९) उनके निमित एक समान है तू उनको डरा अथवा न डरा वह विश्वास नहीं लायंगे। (१०) बस तू उसको डराता है जो इसका ‡ अनुगामी हो और अन देखे रहमान से डरे तू उसको क्षमा और आदर के प्रतिफल का सुसमाचार सुनादे। (११) निस्सन्देह हमही मृतकों को जिलाते हैं और लिख रखते हैं जो कुछ उन्होंने आगे भेजा और उनके पगों के चिन्हों को और हर वस्तु को हमने प्रत्यक्ष § पुस्तक में गिन रखा है॥

रु० २—(१२) उनके निमित गांव ¶ के रहने हारों का एक दृष्टान्त बर्णन कर जब प्रेरित वहां आए। (१३) जब हमने उनकी ओर दो प्रेरित भेजे तो उन्होंने उन्हें झुठलाया सो हमने बल दिया तीसरे से वह बोले कि निस्सन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं। (१४) वह कहने लगे तुमतो हमारी ही नांई मनुष्य हो रहमान ने तो कोई वस्तु नहीं उतारी सो तुम झूठ हो। (१५) वह बोले हमारा प्रभु जानता है कि निस्सन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं। (१६) और हमारा कार्य्य केवल खोल कर पहुंचा देना है। (१७) वह बोले हमने तो तुमको अशुभ पाया यदि तुम न मानो तो हम अवश्य तुमको पत्थरवाह करेंगे और अवश्य तुमको हमारी ओर से कठिन दण्ड पहुंचेगा। (१८) वह बोले तुम्हारी अशुभता $ तुम्हारे साथ है यदि इससे तुमको स्मर्ण कराया गया परन्तु नहीं तुम मर्याद से अधिक बढ़ने हारे लोग हो। (१९) और नग्र के दूसरी ओर से एक मनुष्य दौड़ता@हुआ आया और कहने लगा हे मेरी जाति इन प्रेरितों के अनुगामी होओ। (२०) इन प्रेरितों के अनुगामी होओ वह तुमसे कुछ बनि नहीं मांगते और वह मार्ग पाए हुए हैं॥

(२१) मुझे क्या हुआ कि मैं उसकी स्तुति न करूं जिसने मुझे उत्पन्न किया है और उसी की ओर मुझे लौट जाना है। (२२) क्या मैं उसके उपरान्त

पारा२३.

* दण्ड। † स्वाद ८५। ‡ अर्थात कुरान का। § अर्थात रचित पाटी, लौहे महफूज़। ¶ अन्ताकिया नग्र यह वृत्तान्त और असहाब कहफ का वृत्तान्त कुरान में होने से पाया जाता है कि महम्मद साहब को खुष्टियान मंडलियों का कुछ ज्ञान था यहां पर पवित्र पितर का अन्ताकिया में जाने का वृत्तान्त है। $ नमल ४८. ऐराफ १२८। @ अर्थात हबीब बढ़ई जिसकी समाधि अन्ताकिया में आज लों मुसलमानों की यात्रा का स्थान है॥

दूसरे ईश्वर बनालूं यदि रहमान चाहे तो मुझे कष्ट में डाले तो उनकी विन्ती मेरे कुछ भी अर्थ न आय और न वह मुझको छुड़ा सकें। (२३) यदि ऐसा करूं तो मैं प्रत्यक्ष भ्रम में हूं। (२४) निस्सन्देह मैं तुम्हारे प्रभु पर विश्वास ले आया। (२५) कहा गया कि बैकुण्ठ में प्रवेश कर कहने लगा कि आह मेरी जाति भी जानले। (२६) फिर मुझको मेरे प्रभु ने क्षमा कर दिया और मुझको आदर वालों में कर दिया। (२७) और हमने उसकी जाति पर उसके पीछे आकाश से कोई सैना नहीं उतारी और न हम उतारने हारे थे। (२८) सो वह तो एक चिन्घाड़ थी और वह सब उसी समय बुझकर रहगए। (२९) शोक है दासों पर कोई प्रेरित उनके समीप नहीं आता परन्तु वह उसकी हंसी ही उड़ाते हैं। (३०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहिले हम कितनी ही पीढ़ियों को नष्ट कर-चुके। (३१) निस्सन्देह वह उनकी ओर लौट न आयंगे। (३२) और जितने हैं सबके सब हमारे सन्मुख किए जायंगे॥

रु० ३—(३३) और उनके निमित मृतकभूमि में ही एक चिन्ह है कि हमने उसको सजीव किया और उसमें से अन्न निकाला और उसमें से वह खाते हैं। (३४) और हमने उसमें खजूरों और दाखों की वारियां उपजाईं और हमने उसमें सोते बहादिए। (३५) जिस्तें उसके फलों में से खायं और यह उनके हाथों ने नहीं बनाए सो क्या धन्यवाद नहीं करते। (३६) वह पवित्र है जिसने हर वस्तु के जोड़े उत्पन्न किए जो पृथ्वी उगाती है और उनकी जाति में से भी जिनको वह नहीं जानते। (३७) और उनके निमित रात्रि एक चिन्ह है जिसमें से हम दिन को खींचलेते हैं और वह अंधेरे में होजाते हैं। (३८) और सूर्य्य अपने नियत मार्ग पर चला जाता है और यह बलवन्त जाननेहार का नियत* किया हुआ है। (३९) और चन्द्रमा के निमित हमने ठहरने के स्थान ठहरा दिए हैं यहां लों कि पुरानी टहनी† के समान होजाय। (४०) और सूर्य्य से यह नहीं होसकता कि वह चन्द्रमा को आ पकड़े और न रात्रि दिवस से आगे बढ़ती है और सब अन्तरिक्ष में तैर रहे हैं। (४१) और एक चिन्ह उनके निमित यह है कि हमने उनके वंश को भरी हुई नौका में उठा लिया। (४२) और हमने उनके निमित उसीके समान वाहन‡ उत्पन्न किया। (४३) यदि हम चाहें तो हम उनको डुबादें फिर उनकी

---

* अर्थात कूता हुआ। † अर्थात जिस भांति खजूर की सूखी टहनी धनुषाकार होजाती है।
‡ अर्थात ऊंट॥

पुकार को कोई न पहुंचे और न वह बचाए जायं । (४४) परन्तु हमही ने अपनी ओर से दया और एक समय लों लाभ पहुंचाए । (४५) और जब उनसे कहा जाता है कि उससे * डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पाछे है कदाचित तुम पर दया हो । (४६) और उनके समीप उनके प्रभु के चिन्हों में से कोई चिन्ह नहीं आया परन्तु यह कि वह उससे मुंह ही फेरते रहे । (४७) और जब उनसे कहा जाता है कि जो कुछ ईश्वर ने तुमको दिया है उसमें से व्यय करो तो अधर्म्मी विश्वासियों से कहते हैं तो क्या हम ऐसे को खिलाएं जिसको यदि ईश्वर चाहता तो खिला देता तुमतो प्रत्यक्ष भ्रम में पड़गए हो । (४८) और कहते हैं कि यह बाचा कब होगी यदि तुम सत्य कहते हो । (४६) सो वह लोग एक घोर शब्द की बाट जोह रहे हैं कि वह उनको आ पकड़े जब परस्पर झगड़ रहे हों । (५०) फिर न कुछ मृत्युपत्र करसकेंगे न अपने घरों की ओर लौट जायंगे।

रु० ४—(५१) फिर तुरही फूंकी जायगी और वह तत्काल समाधियों में से अपने प्रभु की ओर दौड़ेंगे । (५२) हाय हम पर शोक हमको निद्रा स्थान से उठा दिया यही है जिसकी रहमान ने बाचा की थी और प्रेरितों ने सत्य कहा था । (५३) वह तो केवल एक चिन्घाड़ § होगी फिर वह सब हमारे सन्मुख खड़े किए जायंगे । (५४) फिर उस दिन किसी प्राणी पर कुछ निर्दयता न होगी तुम उसीका प्रतिफल पाओगे जो किया करते थे । (५५) निस्सन्देह बैकुण्ठवाले उस दिन आनन्द उठाने में लगे होगें । (५६) वह और उनकी पत्निएं छायों में सिंहासनों पर ओसीसा लगाए होंगे । (५७) उनके निमित उसमें फल होंगे और उनके निमित वहां है जो कुछ वह चाहें । (५८) कृपालु प्रभु की ओर से प्रणाम कहा जायगा । (५६) आज के दिन हे अपराधियो अलग होजाओ । (६०) हे इसराएल सन्तान क्या मैंने तुम्हारे संग यह नियम न बांधा था कि दुष्ट आत्मा को मत पूजो जो तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है निस्सन्देह वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है । (६१) और यह कि मेरी अराधना करना यही सीधा मार्ग है । (६२) और उसने तुममें से भटका दिया बहुतेरे मनों † को सो क्या तुम बुद्धि नहीं रखते थे । (६३) यही वह नर्क है जिसकी तुमसे बाचा की जाती थी । (६४) आज हम उनके मुहों पर छाप लगा देंगे और हम से उनके हाथ बातें करेंगे और उनके पांव साक्षी ‡ देंगे जो वह उपार्जन करते थे । (६५) और यदि हम चाहें तो हम

---

* अर्थात दण्ड से । § पहिला थिसलोनियों ४ : १६ । † अर्थात जातियों अथवा मुष्टियों को।
‡ यशैयाह ४३ : १२ हम सिजदा १९—२० ॥

उनके नेत्र चौपट करदें और फिर यह मार्ग की ओर दौड़ें तो कहांसे देखेंगे। (६६) और यदि हम चाहें तो उनके स्थान पर उनका रूपान्तर*करदें फिर यह न तो आगे चलसकें न पीछे फिर सकें॥

रु० ५—(६७) और जिसको हम अधिक अवस्था देते हैं उसको डील † में झुकादेते हैं सो क्या यह नहीं समझते। (६८) और हमने उसको कविताई ‡ नहीं सिखाई और न उसको उचित है यह तो एक शिक्षा है और खुला कुरान है। (६९) जिस्तें उसको जो सजीव हैं डरावे और अधर्मियों पर प्रमाण प्रमाणिक होजाय। (७०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनके निमित अपने हाथ से पशु बनाए जिनके वह स्वामी बन रहे हैं। (७१) और हमने उनको उनका आज्ञाकारी बनाया और उनमें से कोई वाहन के निमित हैं और किसी को खाते हैं। (७२) और उनमें उनके निमित बहुत लाभ हैं और पीने की वस्तुएं हैं सो क्या वह धन्यवादी न होयंगे। (७३) उन्होंने ईश्वर के उपरान्त दूसरे ईश्वर ठहरा रखे कदाचित उन से उनको सहायता पहुंचे। (७४) और वह उनकी सहायता न करसकेंगे फिर भी वह § उनकी सेना बनके उपस्थित हैं। (७५) तुझको उनकी बातें शोकित न करें निस्सन्देह हम जानते हैं जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह प्रगट करते हैं। (७६) क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसको वीर्य से उत्पन किया फिर वह अकस्मात उपाधि होगया। (७७) और वह हमारे निमित दृष्टान्त वर्णन करता है और अपनी उत्पत्ति को भूल गया कहने लगा कौन हाड़ों को सजीव करेगा जब कि वह सड़गल गएहों। (७८) कहदे वही सजीवकरेगा जिसने उनको पहिले निकाला वह सब कुछ उत्पन्न करना जानता है। (७९) जिसने तुम्हारे निमित हरे पेड़§ से अग्नि उत्पन्न करदी फिर तुम उससे तुरन्त अग्नि जला लेते हो। (८०) क्या वह जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया इस बात पर शक्तिवान नहीं कि उनके समान उत्पन्न करदे निस्सन्देह वही उत्पन्न करनेहारा और जाननेहारा है। (८१) जब किसी वस्तुको उत्पन्न करना चाहता है तो उसकी आज्ञा यही है कि हो जा तो वह होजाता है। (८२) सो वह पवित्र है जिसके हाथ में हर वस्तु का अधिकार है और उसीकी ओर तुम लौटाए जाओगे॥

---

* अर्थात मनुष्य से पशु अथवा पत्थर बनादें। † शोरा २२९। ‡ अर्थात मूर्तिपूजक मूर्तियों की सहायता के निमित। § अरब देश में मर्ख और अफारा दो ऐसे पेड़ हैं जिनकी डारें परस्पर रगड़ने से अग्नि उत्पन्न होजाती है॥

३७ सूरए साफ़ात (सैनाओं की पांति) मक्की रुकू ५ आयत १८२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) पांतिन में पांति * बाधने हारों की सोंह। (२) फिर धमका कर डांटने हारों की। (३) फिर चर्चा † पढ़ने हारों की। (४) निस्सन्देह तुम्हारा ईश्वर एक है। (५) आकाशों और पृथ्वी का प्रभु और उस सब का जो कुछ उन दोनों के बीच में है और पूर्वों का प्रभु। (६ निस्सन्देह हमने निचले आकाश को संवारा और तारों से सजाया। (७) और हर विरोधी दुष्टात्मा से उसकी रक्षा की। (८) वह बड़ी‡सभा की बातें नहीं सुन सकते उन पर चहुँओर § से अंगार फेंकेजाते हैं। (९) भगाने के निमित और उनके निमित सदा का दण्ड है। (१०) परन्तु जो कोई झपाके से बात ले भागता है उसके पीछे दहकता हुआ अंगार पड़ता है। (११) अब उनसे पूछ कि उनका बनाना अधिक कठिन है अथवा जो हम उत्पन्न कर चुके हमने उनको लेसदार माटी से उत्पन्न किया। (१२) बरन तूने आश्चर्य किया और वह ठट्ठा करते हैं। (१३) जब उनको समझाया जाता है तो वह चिन्ता नहीं करते। (१४) और जब वह कोई चिन्ह देखते हैं तो उसकी हंसी उड़ाते हैं। (१५) और कहते हैं यह तो प्रत्यक्ष टोना है। (१६) क्या जब हम मरजायंगे और धूर और हाड़ होजायंगे क्या हम फिर उठा खड़े किए जायंगे। (१७) क्या हमारे अगले पुरखे भी। (१८) कहदे कि हां और तुम उपहास योग्य होओगे। (१९) बस वह तो एक डांट है फिर तुरन्त वह देखने लगेंगे। (२०) और कहेंगे हम पर शोक यह तो प्रतिफल का दिन है। (२१) यही वह न्याय का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे॥

रु० २—(२२) दुष्टों और उनके संगियों ¶ को इकत्र करो और उनको जिनके यह भजन करते थे। (२३) ईश्वर के उपरान्त और उन्हें नर्क के मार्ग की ओर चलाओ। (२४) और उन्हें खड़ा रखो उनसे पूछगछ होगी। (२५) क्यों तुम एक दूसरे की सहायता नहीं करते। (२६) नहीं आज वह घींच झुकाए हुए हैं। (२७) और कोई कोई की ओर अग्रवर्त्ति होके प्रश्न करेंगे। (२८) कहेंगे निस्सन्देह तुमहीं हमारे तीर दहनी ओर से आए थे। (२९) वह कहेंगे कभी नहीं तुमतो विश्वास लाने हारे ही न थे और न हमारा तुम पर कोई अधिकार था परन्तु

---

* अर्थात दूत जो महिमा और स्तुति के निमित पांति बांधते हैं। † अर्थात कुरान। ‡ अर्थात स्वर्गवासियों जत्था। § हजर १८। ¶ इसका अर्थ पत्नियां भी होसकती हैं॥

तुमतो बिरोधी लोग थे। (३०) सो हम पर हमारे प्रभु का वचन सत्य ठहरा सो हमको अवश्य उसमें * से चखना होगा। (३१) हमने तुमको बहकाया हमतो आपही बहके हुए थे। (३२) सो वह आज के दिन दण्ड में समभागी हैं। (३३) निस्सन्देह हम अपराधियों के साथ ऐसाही करते हैं। (३४) निस्सन्देह जब उनसे कहा गया कि ईश्वर को छोड़ कोई ईश्वर नहीं तो वह अहंकार में भर जाते हैं। (३५) और कहते हैं क्या हम अपने ईश्वरों को एक बौड़हे कवि के पीछे छोड़दें। (३६) बरन वह तो सत्य लेकर आया है और प्रेरितों ने सत्य कहा है। (३७) तुमतो कठिन दण्ड को अवश्य ही चाखोगे। (३८) सो तुम उसके अनुसार दण्ड पाओगे जो तुम करते थे। (३९) परन्तु जो ईश्वर के निष्खोट दास हैं। (४०) यही हैं कि जिनके निमित जीविका नियत है। (४१) उनके निमित फल हैं और उनका आदर किया जायगा। (४२) और वह वरदान वाले बैकुण्ठ में होंगे। (४३) आमने सामने सिंहासनों पर बैठे होंगे। (४४) और उनमें स्वच्छ कटोरे का चक्र चल रहा होगा। (४५) श्वेत और पीनेहारों के निमित स्वादित। (४६) न उसमें मतवालापन है और न वह उससे बहकेंगे। (४७) और उनके निकट स्त्रियें होंगी नीची निगाह और बड़े नेत्र वाली मानो अण्डे छिपाए हुए हैं। (४८) उनमें से कोई कोई से पूछेंगे। (४९) उनमें से एक कहनेहारा कहेगा निस्सन्देह मेरा एक मित्र था (५०) जो कहा करता था कि क्या तू भी सिद्ध करने हारों में से है। (५१) क्या जब हम मरगए और धूल और हाड़ होगए क्या सच-मुच हमारा लेखा होगा। (५२) उसने कहा क्या तुम उसको झांक के देखना चाहते हो। (५३) सो उसने झांका और उसे नर्क के बीच में देखा। (५४) उसने कहा ईश्वरकी सौंह निकट था कि तू मुझे नाशकरदेता। (५५) यदि मेरे प्रभु का उपकार न होता तो मैं दण्ड में पकड़आता। (५६) सो क्या यही बात नहीं कि हम न मरेंगे। (५७) केवल प्रथम मृत्यु के और हमको दण्ड न दिया जायगा। (५८) यह तो बहुत बड़ी सफलता है। (५९) निस्सन्देह इसीके † निमित चाहिए कि अभ्यास करनेहारे अभ्यासकरें। (६०) क्या उत्तम जेवनार ज़क्कूम‡ का पेड़। (६१) हमने उसको दुष्टों के निमित परिक्षा ठहराया। (६२) वह एक पेड़ है जो नर्क की जड़ में से निकलता है। (६३) और उसके गुच्छे ऐसे हैं जैसे दुष्टात्मा के सिर। (६४) सो वह उस में से खायँगे और उससे अपने पेट भरेंगे। (६५) और ऊपर से खौलता हुआ पानी मिलौनी किया हुआ पिलाया जायगा (६६) निस्सन्देह

* यस ६। † अर्थात ऐसीही सुदशा। ‡ कोई थूहर और कोई सेंहुड बताते हैं॥

उनको नर्क की ओर लौटकर जाना है। (६७) उन्होंने अपने पुरखों को भटका हुआ पाया। (६८) और वह उन्ही के पगों पर दौड़ते रहें। (६९) और उनसे पहिले बहुतेरे अगले लोग भटक चुके थे। (७०) और हमने उनमें डरानेहारे भेजे थे। (७१) और देख जिनको डराया गया था उनका क्या अन्त हुआ। (७२) ईश्वर के निष्खोट दास।

रु० ३—(७३) निस्सन्देह नूह ने हमको पुकारा और हम बहुत अच्छे उत्तरदाता ठहरे। (७४) और हमने उसे और उसके कुटुम्ब को बड़े कठिन दुख से बचा लिया। (७५) और हमने उसके बंशही को शेष रहनेहारों में रखा। (७६) और हमने उसे रख छोड़ा पिछले लोगों के निमित। (७७) समस्त संसारियों में नूह पर प्रणाम है। (७८) हम सुकर्म्मियों को इसी भांति प्रतिफल दिया करते हैं। (७९) निस्सन्देह वह हमारे विश्वासी दासों में से था। (८०) फिर हमने दूसरों को डुबा दिया। (८१) और निस्सन्देह उसही की जत्था में से इबराहीम था। (८२) जब वह अपने प्रभु के समीप अच्छे मनसे आया। (८३) और जब उसने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुम किसकी अराधना करते हो। (८४) क्या झूठ से ईश्वर के संग दूसरे ईश्वर चाहते हो। (८५) सृष्टियों के प्रभु के विषय में तुम्हारा क्या विचार है। (८६) दृष्टि उठाकर तारों को देखा। (८७) निस्सन्देह मैं रोगी हूं। (८८) और वह उससे अपनी पीठ फेर कर भाग गए। (८९) और वह चुपके से उनकी मूर्तों मे जा घुसा और बोला क्या तुम खाते नहीं। (९०) क्या हुआ तुम बोलते नहीं। (९१) और फिर उनकी ओर प्रवृत्त हुआ दहने हाथ से मारता हुआ। (९२) और वह * उसकी ओर दौड़ते हुए आए। (९३) वह बोला क्या तुम ऐसों की स्तुति करते हो जिनको आपही बनाते हो। (९४) यदपि ईश्वर ने तुमको और उन वस्तुओं को जिनको तुम बनाते हो उत्पन्न किया है। (९५) वह लोग परस्पर कहने लगे कि इसके निमित एक घर बनाओ फिर इसको अग्नि के ढेर में फेंक देओ। (९६) सो उन्होंने उसके साथ छल करना चाहा और हमने उन्हीं को नीचा दिखाया। (९७) वह बोला निस्सन्देह मैं अपने प्रभु के निकट जाता हूं वह मुझे मार्ग दिखायगा। (९८) हे मेरे प्रभु मुझे भलों में से भला दे † (९९) और हमने उसे कोमल चित पुत्र का समाचार सुनाया। (१००) फिर जब वह तरुण होकर उसके संग दौड़ने लगा। (१०१) कहा हे पुत्र निस्सन्देह मैंने स्वप्न देखा कि मैं तुझे बध कररहा हूं

---

* अर्थात उसकी जाति के लोग † अर्थात पुत्र ॥

विचार कर कि तेरा परामर्श क्या है। (१०२) कहा हे मेरे पिता जो कुछ तुझे आज्ञा दीगई है कर डाल यदि ईश्वर चाहे तो तू मुझे धीरज धरने हारा पायगा। (१०३) सो जब दोनों ने आज्ञा मानी और जब उसने उसे माथे के बल पछाड़ा। (१०४) और हमने उसको पुकारा हे इबराहीम। (१०५) तूने अपना स्वप्न सत्य कर दिखाया निस्सन्देह हम सुकर्म्मियों को इसी भांति प्रतिफल देते हैं। (१०६) निस्सन्देह यही खुली परिच्छा है। (१०७) और हमने उसका बदला एक भारी भेंट से दिया। (१०८) और हमने आनेहारे लोगों के निमित उसे रख छोड़ा। (१०९) इबराहीम पर प्रणाम है। (११०) इसी रीति हम सुकर्म्मियों को प्रतिफल देते हैं। (१११) निस्सन्देह वह हमारे विश्वासी दासों में था। (११२) और हमने उसको इसहाक का सुसमाचार सुनाया जो भविष्यद्वक्ता और सुकर्म्मियों में से होगा। (११३) और हमने उसको और इसहाक को आशीष दी और उसके वंश में से भले भी हैं और अपने निमित प्रत्यक्ष बुरा करने हारे भी॥

रु० ४—(११४) और निस्सन्देह हमने मूसा और हारून पर उपकार किया (११५) और हमने उनको और उनकी जाति को बुरे क्लेश से रहित किया। (११६) और उसकी सहायता की फिर वही प्रबल रहे। (११७) और हमने उन दोनों को स्पष्ट पुस्तक दी। (११८) और उनकी सीधे मार्ग की ओर अगुवाई की। (११९) और उनको आनेहारे लोगों के निमित रख छोड़ा। (१२०) मूसा और हारून पर प्रणाम। (१२१) हम सुकर्म्मियों को इसी भांति प्रतिफल देते हैं। (१२२) और वह हमारे विश्वासी दासों में से थे। (१२३) और निस्सन्देह इलियास भी प्रेरितों में से था। (१२४) जब कि उसने अपनी जाति से कहा कि तुम क्यों नहीं डरते। (१२५) और तुम बाल * को पुकारते हो और उत्तम उत्पन्न करने हारे को त्यागते हो। (१२६) ईश्वर तुम्हारा प्रभु है और तुम्हारे पुरखों का प्रभु और उनसे पहिलों का। (१२७) परन्तु उन्होंने उसे झुठलाया निस्सन्देह वह सन्मुख किए जायंगे। (१२८) केवल ईश्वर के निष्कपट दासों के। (१२९) और हमने उसे आने हारे लोगों के निमित रख छोड़ा। (१३०) और इलियासों † पर प्रणाम हो। (१३१) हम भलाई करनेहारों को इसी भांति प्रतिफल देते हैं। (१३२) निस्सन्देह वह हमारे भले दासों में से था। (१३३) निस्सन्देह लूत भी प्रेरितों मे से था। (१३४) जब कि हमने उसे और उसके कुटुम्ब को बचा लिया

---

* अर्थात एक देवता का नाम।

† जान पड़ता है इलियास और उसके कुटुम्बियों से अभिप्राय है अथवा इलियास और उसके चेलों से॥

(१३५) एक बुढ़िया को छोड़ जो पीछे रहने हारों में थी। (१३६) फिर औरों को हमने नाश किया। (१३७) निश्चय तुम उन पर भोर को चलते हो। (१३८) और रात्रि को भी सो क्या तुमको बुद्धि नहीं॥

रु० ५—(१३९) निस्सन्देह यूनस भी प्रेरितों में से था। (१४०) जब कि भगकर भरी नौका की ओर आया। (१४१) और उसने चिठ्ठियां डलवाईं और हारने हारों में होगया। (१४२) फिर उसको एक मछली ने निगल लिया क्योंकि वह लज्जा योग्य था। (१४३) और यदि वह जाप करनेहारों में न होता (१४४) तो वह उसके पेट में उस दिन लों पड़ा रहता कि लोग उठा खड़े किए जायँगे। (१४५) और हमने उसे चटील भूमि में डाल दिया और वह रोगी था। (१४६) और हमने उस पर एक बेलदार वृक्ष उगादिया। (१४७) और हमने उसको एक लक्ष अथवा अधिक मनुष्यों की ओर भेजा। (१४८) फिर वह विश्वासलाए तब उनको एक समयलों लाभ उठाने दिया। (१४९) उनसे पूछ क्या तुम्हारे प्रभु के निमित पुत्रियां हैं और उनके निमित पुत्र। (१५०) और हमने दूतों को स्त्रिएं उत्पन्न किया और वह साक्षी थे। (१५१) क्या यह उनका झूठ नहीं जब वह कहते हैं। (१५२) कि वह ईश्वर ने जना है निस्सन्देह वह झूठे हैं। (१५३) क्या उसने अपने निमित पुत्रों पर पुत्रियां ग्रहण की हैं। (१५४) तुम्हें क्या होगया कैसा न्याय करते हो। (१५५) क्या तुम विचार न करोगे। (१५६) अथवा तुम्हारे तीर कोई खुला प्रमाण है। (१५७) ले आओ अपनी पुस्तक यदि तुम सच्चे हो। (१५८) उन्हों*ने उनके और जिन्नों के बीच नाता ठहराया है यदपि जिन्न जानते हैं कि वह उसके सन्मुखलाए जायंगे। (१५९) ईश्वर इन बातों से पवित्र है जो वह वर्णन करते हैं। (१६०) केवल ईश्वर के धर्मी दासों के। (१६१) निस्सन्देह तुम और तुम्हारे ईश्वर (१६२) उसके विषय में किसी को बहका नहीं सकते। (१६३) वरन उसीको जो नर्क में जाने हारा है। (१६४) और हममें से हरएक के निमित एकठौर नियत है। (१६५) और हम पांति बांधे रहनेहारे हैं। (१६६) हम जाप करनेहारे हैं। (१६७) और वह कहा करते थे। (१६८) यदि हमारे तीर अगलों में से कोई शिक्षा होती। (१६९) तो हम अवश्य ईश्वर के सत्य दासों में होते। (१७०) सो फिर उसीका अधर्म करने लगे आगे चलकर यह जान जायंगे। (१७१) परन्तु हमारी आज्ञा हमारे भेजे हुए दासों पर हो चुकी है। (१७२) कि अवश्य वही प्रबल रहा

* अर्थात अधर्मियों ने ईश्वर और जिन्नों के मध्य में॥

करेंगे। (१७३) और निस्सन्देह हमारी सेना प्रबल रहा करेगी। (१७४) सो उन से कुछ काललों अलग होजा। (१७५) और उनको देखता रह सो आगे चलकर वह भी देखलेंगे। (१७६) क्या वह हमारे दण्ड के निमित शीघ्रता करते हैं। (१७७) फिर जब दण्ड उनकी भूमि में आयगा तो जिनको डराया गया उनकी भोर बहुत अशुभ होगी। (१७८) सो उनसे कुछ काललों अलग होजा। (१७९) और उनको देखता रह आगे चलकर वह भी देखलेंगे। (१८०) तेरा प्रभु आदरवाला और उन बातों से जो वह करते हैं पवित्र है। (१८१) प्रेरितों पर प्रणाम हो। (१८२) सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जो सृष्टियों का प्रभु है॥

---

३८ सूरए स्वाद मक्की रुकू ५ आयत ८८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—स (१) कुरान शिक्षा करनेहारे की सौंह परन्तु अधर्मी विरुद्धता और सामहना करने में लगे हैं। (२) और हमने उनसे पहिले बहुत से वंशों को नाश कर डाला और वह चिल्लाते रहे और छुटकारे का समय न रहा था। (३) और वह आश्चर्य करते हैं कि उनके निकट एक डरानेहारा उन्हीं में से आया अधर्मी कहते हैं वह तो एक झूठा टोनहा है। (४) क्या उसने सब ईश्वरों को एक ईश्वर बना दिया निस्सन्देह यह तो बड़ी अनोखी बात है। (५) और उनमें अध्यक्ष निकल खड़े हुए चलो और अपने ईश्वरों पर जमे रहो निस्सन्देह इसमें कुछ अभिप्राय है। (६) हमने किसी और जाति में यह बात नहीं सुनी निस्सन्देह यह तो केवल झूठी गढ़ंत है। (७) क्या हममें से केवल उसी पर यह शिक्षा उतरी है नहीं बरन वह मेरी शिक्षा के विषय में सन्देह करते हैं. नहीं अभी उन्होंने मेरा दण्ड नहीं चाखा। (८) क्या उनके तीर भण्डार हैं तेरे बलवन्त प्रभु दया करनेहारे के। (९) अथवा उनका राज आकाशों और पृथ्वी में है और उन वस्तुओं में जो उन दोनों के मध्य में है सो वह रस्सियां तानकर चढ़जायं। (१०) उन सेनाओं में से एक सेना है जो वहां हार गई। (११) उनसे पहिले नूह की जाति आद और फिराऊन खूंटों * वाला झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की जाति और ऐका के लोग और जितनी और जत्थाएं। (१३) इन सब ने प्रेरितों को झुठलाया सो उन पर मेरा दण्ड सत्य ठहरा॥

---

* कहते हैं कि फ़िराऊन इसरायलसंतान को खूंटों में बांधकर क्लेश देता था फ़जर ९॥

रु० २—(१४) और यह लोग वाट नहीं जोहते केवल एक घोर चिन्घाड़ की जो बीच में सांस न लेगी। (१५) और कहते हैं कि हे प्रभु हमको लेखे के दिन से हमारा भाग देदे। (१६) उनकी बातों पर जो यह बकते हैं धीरज धर और हमारे दास दाऊद बल दिए हुए को स्मर्ण कर निस्सन्देह वह हमारी ओर अवहित होनेहारा था। (१७) और हमने पर्व्वतों* को उसके वश में कर दिया था उसके संग प्रातःकाल और सन्ध्याकाल जाप किया करते थे। (१८) और पक्षियों को जो एकत्र होके सब उसके संग उत्तर देनेहारे बनते थे। (१९) और उसके राज्य को दृढ़ कर दिया था और उसको बुद्धि और न्याय चुकाने का वचन दिया था। (२०) भला तुझको झगड़नेहारों † का समाचार पहुंचा जब वह वृतखण्ड की भीत को फांद कर। (२१) दाऊद के निकट पहुंचे तो वह उनसे डर गया वह बोले कि भय न कर हम परस्पर दो झगड़नेहारे हैं हम में से एक ने दूसरे पर अनीति की है तू हमारे मध्य में न्याय से निर्णय करदे और हम पर अनीति न कर और हमको सीधे मार्ग पर लगावे। (२२) निस्सन्देह यह मेरा भाई है इसके पास निन्नानवें भेड़ें हैं और मेरे तीर एक भेड़ है यह कहता है मुझे वह भेड़ देडाल और मुझसे बातचीत में कठोरता करता है। (२३) उसने कहा निस्सन्देह यह तुझ पर भेड़ मांगने में दुष्टता करता है कि अपनी भेड़ों में मिलावे निस्सन्देह बहुतेरे साझी एक दूसरे पर दुष्टता करते हैं परन्तु जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए और ऐसे बहुत थोड़े हैं और उसने विचार किया कि हम उसकी परिक्षा करते हैं और उसने अपने प्रभु से क्षमा चाही और दण्डवत में गिर पड़ा और पश्चाताप किया। (२४) और हमने उसे क्षमा किया और निस्सन्देह उसके निमित हमारे यहां पदवी और अच्छा ठिकाना है। (२५) हे दाऊद निस्सन्देह हमने तुझे देश में दीवान बनाया सो तू लोगों में न्याय से आज्ञा कर और शारीरिक इच्छा का अनुगामी न हो ऐसा न हो कि वह तुझको ईश्वर के मार्ग से भटका दे निस्सन्देह जो लोग ईश्वर के मार्ग से भटक जाते उनके निमित कठिन दण्ड है इस कारण कि उन्होंने लेखे के दिनों को झुठला दिया॥

रु० ३—(२६) हमने आकाश और पृथ्वी को और जो वस्तुएं उनके बीच में हैं व्यर्थ उत्पन्न नहीं कीं इन अधर्म्मियों का ऐसा ही विचार है परन्तु अधर्म्मियों के निमित अग्नि का शोक है। (२७) क्या हम उन लोगों को जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके समान करदेंगे जो पृथ्वी में उपद्रव करते फिरते हैं

* स्तोत्र १४८: ९—१०। † पहिला समुएल १२ पर्व्व॥

अथवा हम संयमियों को कुकर्म्मियों के समान करदेंगे। (२८) हमने तुझ पर एक धन्य पुस्तक उतारी है जिस्तें लोग उसकी आयतों पर विचार करें और बुद्धिवान लोग शिक्षित हों। (२९) और हमने दाऊद को सुलेमान दिया कैसा अच्छा जन था निस्सन्देह वह हमारी ओर अवहित होनेहारा था। (३०) जब उसके सन्मुख सांझ के समय वेग से चलनेहारे घोड़े लाए गए। (३१) उसने कहा मैं अपने प्रभु की स्तुति से धन की प्रीति को अधिक चाहता रहा यहां लों की सूर्य्य ओट* में होगया। (३२) उन्हें मेरे समीप लौटा लाओ फिर उनकी पिंडलियों और घींचों पर हाथ चलाया †। (३३) और हमने सुलेमान की परीक्षा की हमने उसके सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया फिर वह अवहित हुआ। (३४) बोला हे मेरे प्रभु मुझे क्षमा कर और मुझको ऐसा राज्य दे जैसा मेरे पीछे किसी का न हो निस्सन्देह तू बड़ा देनेहारा है। (३५ हमने पवन को उसके वश में कर दिया उसकी आज्ञा से चलती थी। जहां पहुंचना चाहता था। (३६) समस्त थवई और पनडुब्बी दुष्टात्माएं उसके वश में करदीं। (३७) और दूसरे भी जो बेड़ियों में जकड़े हुए हैं। (३८) यह हमारा दान है सो तू उपकार कर अथवा बिना लेखे के रख छोड़। (३९) और निस्सन्देह उसके निमित हमारी संगत और अच्छा ठिकाना है॥

रु० ४—(४०) और हमारे दास अयूब को स्मर्ण कर जब उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मुझको दुष्टात्मा ने कष्ट और दुख सहित छुआ। (४१) पृथ्वी पर अपना पांव मार यह नहाने और पीने के निमित शीतल है। (४२) और हमने उसको कुटुम्बी दिए और उन्हीं के समान और भी अपनी ओर से दयानुसार और बुद्धिवानों के निमित स्मर्णार्थ ‡। (४३) अपने हाथ में सींकों का एक मुट्ठा ले और उसे मार और अपनी किरिया न तोड़ निस्सन्देह हमने उसको धैर्य्यवान पाया। (४४) और एक उत्तम जन था निस्सन्देह वह अवहित होने हारा था। (४५) और हमारे दास इबराहीम और इसहाक और याकूब हाथों ¶ और आखों § वालों को स्मर्ण कर। (४६) निस्सन्देह हमने उनको चुन लिया विशेष करके अन्त के दिन के स्मर्णार्थ। (४७) निस्सन्देह वह हमारे निकट प्रसन्न योग्य धर्म्मी थे। (४८) और इसमाईल और इलीशा और जुलकिफ्ल $ को स्मर्ण कर क्योंकि वह धर्म्मियों में थे। (४९) यह एक शिक्षा है और निस्सन्देह संयमियों के निमित

* राजाओं की पहिली पुस्तक १०: २८। † अर्थात उनको मारडाला॥ ‡ अर्थात चितौनी अथवा ताड़ना। ¶ अयूब १:९। § अर्थात हाथों से दान करते और आखों से ईश्वर का पराक्रम देखते थे। $ अंबिया ८५॥

अच्छा ठिकाना है। (५०) सदा के बैकुण्ठ उनके द्वार खुले रहेंगे। (५१) वह औसीसा लगाए बैठे होयंगे और अधिकता से फल और मदिरा मंगाते होयंगे। (५२) और उनके निकट नीची आंख वाली और उन्हीं की आयु समान स्त्रियें होंगी। (५३) यह है जिसकी बाचा तुमसे लेखे के दिन के निमित की जाती है। (५४) और निस्सन्देह यह हमारी दी हुई जीविका है जो कभी समाप्त न होगी। (५५) यह है निस्सन्देह दुर्जनों के निमित बुरा ठिकाना है। (५६) नर्क है जिसमें वह डाले जायेंगे वह कैसा बुरा बिछौना होयगा। (५७ यह है सो वह उसको चाखें औलता हुआ पानी और पीप। (५८) और दूसरी वस्तुएं उसी भांति की। (५९) यह एक जत्था है जो तुम्हारे संग प्रवेश करनेहारी है उनको आनन्द प्राप्त न होयगा—निस्सन्देह यही अग्नि में जानेहारे हैं। (६०) वह कहेंगे कि तुमको आनन्द प्राप्त हो तुमहीं तो यह विपति हमारे सन्मुख लाए कैसा बुरा स्थान रहने को है। (६१) कहेंगे हे हमारे प्रभु जो पुरुष यह विपति हमारे सन्मुख लाया है उसे अग्नि में दुहरा दण्ड दे। (६२) और कहेंगे कि हमको क्या होगया कि हम उन मनुष्यों को नहीं देखते जिनको हम दुर्जनों में गिनते थे। (६३) जिनकी हम हँसी करते थे अथवा हमारे नेत्र उनसे चूक * गए। (६४) निस्सन्देह नर्कगामियों का परस्पर झगड़ा करना यथार्थ है॥

रु० ५—(६५) कहदे मैं तो केवल डरानेहारा हूं और कोई ईश्वर नहीं परन्तु ईश्वर अकेला बलवन्त। (६६) आकाशों और पृथ्वी का और उन वस्तुओं का जो उनके मध्य में है प्रभु है और बलवन्त क्षमाकरने हारा। (६७) कहदे यह बहुत बुरा संदेश † है। (६८) तुम उससे मुंह मोड़ते हो। (६९) और मुझे उत्तम ‡ सभा की सुध न थी जब वह परस्पर विवाद करते थे। (७०) निस्सन्देह मेरी ओर तो यही प्रेरणा की जाती है कि मैं खुला खुला डरानेहारा हूं। (७१) जब तेरे प्रभु ने दूतों से कहा कि मैं मनुष्य को माटी से बनाया चाहता हूं। (७२) और जब मैं उसको सँवारदूं और उसमें अपनी आत्मा फूंकदूं तो तुम उसके आगे दण्डवत में गिर पड़ो। (७३) फिर सब दूतों ने एक साथ दण्डवत की। (७४) परन्तु इबलीस ने घमण्ड किया और वह अधर्मियों में से होगया। (७५) पूछा हे इबलीस तुझे किस वस्तु ने रोका उस वस्तुको दण्डवत करने से जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया। (७६) क्या तूने अहंकार किया अथवा तू उच्च पदवीवालों में से है।

---

* अर्थात वह हमको यहां दिखाई नहीं देते। † अर्थात पुनरुत्थान के विषय में। ‡ अर्थात दूतों के विषय में॥

(७७) बोला कि मैं उससे उत्तमहूं * तूने मुझे अग्नि से बनाया और उसे तूने माटी से उत्पन्न किया। (७८) कहा गया अच्छा तू यहां से निकल निस्सन्देह तू स्रापित हुआ। (७९) निस्सन्देह तुझ पर प्रतिफल के दिनलों मेरा स्राप † है। (८०) बोला हे प्रभु मुझे उस दिनलों अवसर दे जबलों वह उठा खड़े किएजायं। (८१) कहा गया अच्छा तुझको अवसर है। (८२) उसी ठहराए हुए समय के दिनलों। (८३) उसने कहा तेरे आदर की सौंह मैं इन सबको भरमाऊँगा। (८४) केवल उनके जो तेरे चुने हुए दास हैं। (८५) कहा सत्य बात तो यह है और मैं सत्य ही कहा करताहूं मैं तुझसे और तेरे सँग उनको जो उनमें से तेरे अनुगामी हों सब से नर्क भरदेऊंगा। (८६) कहदे मैं इस पर तुम से कुछ बनि नहीं मागता और न मैं उन में से हूं जो बनावट करते हैं। (८७) यह तो केवल सृष्टियों के निमित शिक्षा है। (८८) और कुछ समय के पीछे निस्सन्देह तुमको ज्ञान पड़ेगा॥

---

३९ सूरए ज़िमर (सैना) मक्की रुकू ८ आयत ७५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) इस पुस्तक का उतरना ईश्वर की ओर से है जो बलवन्त बुद्धिवान है। (२) निस्सन्देह हमने तेरी ओर सत्य सहित यह पुस्तक भेजी है सत्यमत के साथ ईश्वर की अराधना कर। (३) निस्सन्देह सत्यमत ईश्वर ही के निमित है। (४) और जिन्होंने उसको छोड़ दूसरे स्वामी बना लिए हैं कि हम तो उनकी स्तुति केवल इस कारण करते हैं जिस्तें वह पदवी में हमको ईश्वर के निकट करदें निस्सन्देह ईश्वर उनकी इस बात में जिसमें वह विभेद करते हैं न्यायकर देगा। (५) निस्सन्देह ईश्वर झूठे और कृतघ्नकी शिक्षा नहीं करता। (६) यदि ईश्वर पुत्र बनाना चाहता तो अपनी रचना में से जिसको चाहता छांट लेता वह पवित्र है वही अकेला ईश्वर जयवंत है। (७) उसीने आकाशों और पृथ्वी को यथार्थ उत्पन्न किया और वह रात्रि को दिन पर लपेटता है दिनको रात्रि पर और सूर्य्य और चन्द्रमा को बश में किया है जो प्रत्येक ठहराए हुए समयलों चलता है जानलो वही बलवन्त क्षमा करनेहारा है। (८) उसने तुमको एक ही प्राण से उत्पन्न किया है फिर उससे उसका जोड़ा बनाया और तुम्हारे निमित

---

* स्तोत्र १०४:४। † हजर ३४॥

आठ प्रकारके पशु उतारे वह तुमको तुम्हारी माताओं के उदर में एक भांति के पश्चात दूसरी भांति तीन * अन्धकारों में बनाता है यही ईश्वर तुम्हारा प्रभु है उसी का राज्य है उसके उपरान्त कोई देव नहीं सो कहां फिरे जाते हो। (९) यदि तुम कृतघ्नता करोगे तो ईश्वर उससे निश्चित है और वह अपने दासों की कृतघ्नता नहीं चाहता यदि तुम धन्यवाद करोगे तो उससे वह तुम पर प्रसन्न होगा और कोई किसी का बोझ न उठायगा फिर तुमको अपने प्रभु के तीर जाना है और जो तुम करते थे वह तुमको बता देगा। (१०) निस्सन्देह वह अन्तःकरणों के भेद को जानता है। (११) और जब मनुष्य को कष्ट पहुंचता है तो अपने आपको उसी की ओर अवहित होके पुकारता है और जब वह उसको अपना वरदान देता है तो जिसके निमित पहिले पुकारता था उसको भूल जाता है और ईश्वर के निमित साझी ठहराता है उसके मार्ग से बहकाने के निमित तू कह अपने अधर्म में थोड़े दिन आनन्द करले फिर निस्सन्देह तू अग्निवालों में होगा। (१२) वह मनुष्य जो अराधना में लवलीन है रात की घड़ियों में दण्डवत करता हुआ खड़े होकर डरता है अन्त के दिन से सचेत है और अपने प्रभु की कृपा की आशा रखता है कहदे जाननेहारे और न जाननेहारे कहीं समान होते हैं सो वही विचार करते हैं जो बुद्धिवान हैं॥

रु० २ (१३) कहदे कि हे मेरे विश्वासी सेवको अपने प्रभु से डरो जिन्होंने इस संसार में भलाई की है उनके निमित अच्छा बदला है और ईश्वर की भूमि † चौड़ी है धीरज धरनेहारोंही को उनका बदला अलेख दिया जायगा। (१४) कह निस्सन्देह मुझे आज्ञा हुई है कि मैं ईश्वर की भक्ति करूं उसके सांचे मत में और मुझे आज्ञा हुई है कि मैं सबसे पहिले मुसलमान बनूं। (१५) कह मैं उस बड़े दिन के दण्ड से डरता हूं यदि अपने प्रभु की आज्ञा उलंघन करूं। (१६) कह मैं ईश्वर की उसके सांचे मत में भक्ति करता हूं। (१७) उसके उपरान्त तुम जिसकी चाहो आराधना करो कहदे हानि में वह हैं जो अपने आपा और घर को पुनरुत्थान के दिन खोबैठे देखो वही सबसे बड़ा टोटा है। (१८) उनके ऊपर अग्नि की छांह होगी और नीचे भी छाई होगी जिसका ईश्वर अपने दासों को डर बताया करता है हे मेरे दासो मुझसे डरो। (१९) जो लोग तागूत से बचे रहे और उनकी सेवा न की और ईश्वर की ओर फिरे उनके निमित सुसमाचार

* इसका अभिप्राय पेट और और झिल्ली से है जिसमें बालक लिपटा रहता है। † अनकबूत ५६॥

होगा मेरे दासों को सुसमाचार सुना जो बात को सुनते और उसमें से उत्तम के अनुगामी हैं यही हैं जिनकी ईश्वर ने शिक्षा की है और यही बुद्धिवान लोग हैं। (२०) फिर क्या जिसको दण्ड की आज्ञा हो चुकी तू उसको अग्नि से रहित कर सकेगा। (२१) परन्तु वह जो अपने प्रभु से डरते उनके निमित अटारियें हैं कि जिन पर और अटारियें बनाई गई हैं जिनके नीचे धारें बहती होंगी ईश्वर की वाचा है और ईश्वर वाचा के विपरीत नहीं करता। (२२) क्या तूने नहीं देखा कि ईश्वर आकाश से पानी उतारता है फिर उसको पृथ्वी के सोतों में लाता है फिर उससे नानाप्रकार की खेती उपजाता है और फिर वह सूखजाती है फिर तुम उसको पीली हुई हुई देखते हो फिर उसको वह चूर चूर करदेता है निस्सन्देह इसमें बुद्धिवानों के निमित शिक्षा है॥

रु० ३—(२३) फिर क्या वह पुरुष जिसका अन्तःकरण ईश्वर ने इसलाम के निमित खोल दिया फिर वह अपने प्रभु की ओर से प्रकाश में है—दुर्दशा है उनकी जिनके हृदय ईश्वर के सुमरण के निमित कठोर हैं और यही प्रत्यक्ष भ्रम में हैं। (२४) ईश्वर ने उत्तम वृत्तान्त उतारा एक पुस्तक सदृश दुहराई हुई उसके सुनने से उनकी खालों पर रोमटे खड़े होजाते हैं जो अपने प्रभु से डरते हैं और फिर उनकी खालें और उनके मन ईश्वर के सुमरण के निमित कोमल होजाते हैं यह ईश्वर की शिक्षा है जिसे चाहता है उसे देता है और जिसे ईश्वर भटकाय उसकी कोई अगुवाई करने हारा नहीं। (२५) फिर जो पुरुष बुरे दण्ड को पुनरुत्थान के दिन अपने मुँह पर रोकता है और दुष्टों से कहा जायगा चाखो जो तुमने उपार्जन किया है। (२६) जो उनसे पहिले थे वह झुठला चुके उन पर दण्ड ऐसी ओर से आ उतरा जिधर से वह जानते न थे। (२७) तो ईश्वर ने उनको जगत के जीवन में उपहास चखाया और अंत के दिन का दण्ड तो बहुतही बड़ा है आह यह लोग जानते होते। (२८) और हमने लोगों के निमित इस कुरान में हर भांति का दृष्टान्त बर्णन किया है कदाचित वह शिक्षित हों। (२९) कुरान अरबी भाषा में निर्दोष कदाचित वह संयमी बनजायं। (३०) ईश्वर ने एक मनुष्य का दृष्टान्त बर्णन किया कि उसके निमित बुरे स्वभाव वाले पुरुष साझी* हैं और एक पुरुष की जो संपूर्ण दूसरे † का है क्या उन दोनों की दशा समान होसकती है सर्व महिमा ईश्वरही के निमित है परन्तु बहुतेरे नहीं जानते।

* अर्थात एक पुरुष अनेक स्वामियों का दास। † अर्थात एकही स्वामी का दास है॥

(३१) निस्सन्देह तुझको भी मरना है और निस्सन्देह वह भी मरनेहारे हैं। (३२) फिर निस्सन्देह तुम पुनरुत्थान के दिन अपने प्रभु के सन्मुख परस्पर झगड़ा करोगे ॥

रु० ४—(३३) फिर उससे अधिक दुष्ट कौन है जो ईश्वर पर झूठ बोलता है और सत्य को झुठलाता है पश्चात इसके कि वह उसके निकट आपहुंचे क्या अधर्म्मियों का ठिकाना नर्क नहीं है। (३४) और जो सत्य लेकर आया फिर उस पर विश्वास लाए वही लोग संयमी हैं। (३५) उनके प्रभु के निकट उनके निमित हैं जो कुछ वह चाहें सुकर्म्मियों का यह प्रतिफल हैं। (३६) जिस्तें ईश्वर उनकी बुराइयों को उनसे दूर करदे जो उन्होंने की हैं और उन्हें उनके सुकर्म्मों का प्रतिफल देदे जो वह करते थे। (३७) क्या ईश्वर अपने दासों के निमित बस नहीं और यह तुझे उनसे डराते हैं जो ईश्वर के उपरान्त हैं और जिसको ईश्वर भटकावे उसके निमित कोई अगुआ नहीं है। (३८) और जिसको ईश्वर शिक्षा करे उसे कोई भटका नहीं सकता है क्या ईश्वर बलवन्त पलटा लेनेहारा नहीं है। (३९) और यदि तू उनसे पूछे कि आकाशों और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया तो अवश्य उत्तर देंगे कि ईश्वर ने कहदे भला देखो तो सही * जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पूजते हो यदि ईश्वर मुझे कोई हानि पहुंचाना चाहे तो क्या वह उसकी हानि को दूर कर सकेंगे अथवा यदि वह मुझे अपनी दया से देना चाहे तो क्या वह उसकी दया को रोकरहेंगे कहदे मुझको तो ईश्वर बस है और भरोसा करने हारे उसी पर भरोसा करते हैं। (४०) कहदे कि हे मेरे जातिगणों तुम अपने ठौर पर अभ्यास करेजाओ और मैं भी अभ्यास कररहा हूं आगे चलकर तुमको जान पड़ेगा। (४१) कि किसपर दण्ड आता है वह उसका परिहास करेगा और उस पर अनन्त दण्ड पड़ेगा। (४२) और हमने तुझपर लोगों के निमित सत्य सहित पुस्तक उतारी सो जो कोई मार्ग पागया तो अपनेही भले के निमित और जो कोई भटक गया है अपनेही बुरे को भटकता है और तू उनका रक्षक नहीं है ॥

रु० ५—(४३) मरते समय ईश्वर अपने समीप प्राणों को निकाल लेता है और जो नहीं मरते † उनको निद्रा में निकाल लेता है और फिर जिन पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी रोक रखता है और दूसरों को भेजता है उनके ठहराये हुए समय लों

* नजम २३। † इनाम ६० ॥

पारा२४.

निस्सन्देह इसमें लोगों के निमित चिन्ह हैं जो विचार करते हैं । (४४) क्या उन्हों ने ईश्वर के उपरान्त बिचवई ठहराए हैं कहदे क्या यदि यह बिचवई कुछ भी अधिकार न रखते हों न बुद्धि रखते हों । (४५) कहदे समस्त बिनती* ईश्वर ही के अधिकार † में है उसीका राज्य आकाशों और पृथ्वी में है फिर उसी की ओर तुम सब लौटाए जाओगे । (४६) जब अकेले ईश्वर का चर्चा किया जाता है तो उन लोगों के हृदय जो अंत के दिनकी प्रतीत नहीं करते घिन करने लगते हैं और जब ईश्वर के उपरान्त औरों का चर्चा किया जाय तब वह प्रसन्न होजाते हैं । (४७) कह हे ईश्वर आकाश और पृथ्वी के सृजनहारे गुप्त और प्रगट के जानने हारे तूही अपने दासों में उस बात का न्यायकरदेगा जिसमें वह विभेद कर रहे थे । (४८) और यदि दुष्टों के तीर जितना पृथ्वी में है और उतनाही उसके साथ और हो तो अवश्य वह ऐसे दण्ड की कठिनता के बदले में देडालें और ईश्वर की ओर से उन पर वह प्रगट होगा जिसका उन्हें अनुमान भी न था । (४९) और उन पर उनकी बुराइयां जो उन्होंने की थीं प्रगट हो जायंगी और उनको वह घेर लेगा जिसका वह ठठ्ठा किया करते थे । (५०) जब मनुष्य को कोई हानि पहुंचती है तो वह हमको पुकारता है और जब हम उसपर अपनी ओर से कोई उपकार करते हैं तो कहने लगता है निस्सन्देह यह मुझको मेरी विद्या द्वारा मिला है कुछ भी नहीं वह तो एक परिच्छा है परन्तु उनमें बहुतेरे नहीं जानते । (५१) जो इनसे पहिले से थे वह भी यही कहचुके परन्तु यह उनके कुछ अर्थ न आया जो वह किया करते थे । (५२) और उनपर उनकी बुरी क्रियाएं जो उन्हों ने की थीं आईं और जिन लोगों ने इनमें से दुष्टता की उनपर भी उनकी बुरी क्रियाएं शीघ्र आयंगी जो उन्होंने की थीं और वह उसको हरा नहीं सकते । (५३) क्या उन्हों ने नहीं जाना कि ईश्वर जिसकी चाहता है जीविका अधिक करता है और घटा देता है निस्सन्देह जो विश्वास लाए उनके निमित इसमें चिन्ह हैं ॥

रु० ६—(५४) कहदे हे मेरे दासो जिन्होंने अपने प्राण पर आपही अनीति‡ की तुम ईश्वर की दयासे निराश न होओ निस्सन्देह ईश्वर समस्त पापों को क्षमा करता है निस्सन्देह वह क्षमा करने हारा दयालु है । (५५) और अपने प्रभुकी ओर फिरो और उसके आज्ञाकारी हो जाओ प्रथम इसके कि तुम पर दण्ड पड़े और तुम्हारी सहायता न हो सकेगी । (५६) और इस उत्तम बात के अनुगामी होओ जो तुम्हारे प्रभुकी ओर से उतरी प्रथम इसके कि तुम पर अकस्मात आजाय

* अर्थात पच । † मोमिन ७ । ‡ नहल १०८ ॥

और तुमको सुध भी न हो। (५७) कहीं ऐसा न हो कि कोई प्राणी कहने लगे हाय ! शोक मेरी कहती पर जो मैंने ईश्वर के विषय में की और निस्सन्देह मैं उन में से था जो ठट्ठा करते रहे थे। (५८) अथवा कहने लगे कि यदि ईश्वर मेरी शिक्षा करता तो अवश्य मैं संयमियों में होजाता। (५९) अथवा जब दण्ड देखे तो कहने लगे यदि मुझको फिर लौट जाना हो तो मैं सुकर्मियों में होजाऊं। (६०) हां तेरे निकट मेरी आयतें पहुंचीं फिर तूने उनको झुठलाया और अभिमान किया और तू अधर्मियों में से था। (६१) पुनरुत्थान के दिन तू उन लोगों को देखेगा जिन्होंने ईश्वर पर झूठ बोला कि उनके मुख काले होंगे क्या अभिमानियों का ठिकाना नर्क नहीं। (६२) और जिन लोगों ने संयम किया ईश्वर उनकी सफलता के संग मुक्ति देगा उनको न बुराई छुएगी और न वह शोकित होंगे। (६३) ईश्वर हर वस्तु का सृजनहार है और वह हर वस्तु का रक्षक है और आकाशों और पृथ्वी में उसी का अधिकार है और जिन लोगों ने नकारा वही लोग हानि उठानेहारे हैं॥

रु० ७—(६४) हे मूर्खो क्या तुम मुझसे कहते हो कि ईश्वर को छोड़ दूसरों की उपासना करूं। (६५) निस्सन्देह वह तेरी ओर और उनकी ओर जो तुझसे पहिले थे प्रेरणा हो चुकी और यदि तूने उसके साथ साझी ठहराया तो तेरी क्रियाएं मलियामेट होजायंगी और तू अवश्य हानि उठानेहारों में होजायगा। (६६) वरन ईश्वर ही की आराधनाकर और धन्यवादी दासों में हो। (६७) उन्होंने ईश्वर की सार न जानी जैसा कि जानना उचित था. पुनरुत्थान के दिन समस्त पृथ्वी उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश लिपटे हुए उसके दहिने हाथ में होयंगे वह पवित्र है और जो तुम साझी ठहराते हो उससे श्रेष्ठ है। (६८) और तुरही फूंकी जायगी तो जो आकाशों और पृथ्वी में हैं मूर्छित होजायंगे केवल उसके जिसको ईश्वर चाहे फिर दूजी बार तुरही फूंकी जावेगी और वह तत्काल खड़े होजायंगे और वह देखने लगेंगे। (६९) और पृथ्वी अपने प्रभु की ज्योति से चमक उठेगी और पुस्तक सन्मुख लाके रखी जायगी और भविष्यद्वक्ता और साक्षी आगे लाए जाएंगे और उनमें सत्य सत्य निर्णय करादिया जायगा और उन पर कुछ अनीति न होगी। (७०) और हर प्राणी को जो उसने किया था सम्पूर्ण दे दिया जायगा और जो कुछ वह करते हैं वह भली भांति जानता है।

रु० ८—(७१) और अधर्मी नर्क की ओर जत्था जत्था हांके जायंगे और जब वह वहां पहुँचेंगे उसके द्वार खोल दिए जायँगे और उसके द्वारपाल उनसे कहेंगे क्या तुम्हारे समीप तुम हीं में से प्रेरित न आए थे जो तुम पर तुम्हारे प्रभु की

आयतें पढ़कर तुमको इस दिनके मिलने से डराते थे वह कहेंगे हां परन्तु दण्ड की आज्ञा तो अधर्मियों पर हो ही चुकी थी। (७२) कहा जायगा नर्क के द्वारों में प्रवेश करो इसमें सदा रहने के निमित घमण्ड करनेहारों के निमित यह बुरा ठिकाना है। (७३) और जो लोग अपने प्रभु से डरते थे उनको जत्था जत्था बैकुण्ठ की ओर हांका जायगा और जब उसकी पहुंचेंगे उसके द्वार खोल दिए जायेंगे और उसके द्वारपाल उनसे कहेंगे प्रणाम हो तुम पर तुम सुभागे हो इसमें प्रवेश करो सदा रहने के निमित। (७४) और वह कहेंगे सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जिसने अपनी प्रतिज्ञा हमको सत्य कर दिखाई और हमको पृथ्वी का अधिकारी किया कि हम बैकुण्ठ में से जहां चाहें बसें अभ्यास करनेहारों का कैसा अच्छा प्रतिफल है। (७५) और तू देखेगा स्वर्ग के चहुंओर दूत चक्र बांधकर अपने प्रभु का महिमा सहित जाप करते हैं और उनके बीच में यथार्थ निर्णय कर दिया जायगा और कहा जायगा सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जो सृष्टियों का प्रभु है॥

४० सूरए मोमिन (विश्वासी) मक्की रुकू ९ आयत ८५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १ हम—(१) इस पुस्तक का उतरना बलिष्ठ ज्ञानवान ईश्वर की ओर से है। (२) जो पापों का क्षमा करनेहारा पश्चाताप का ग्रहण करनेहारा और कठिन दण्ड देनेहारा है। (३) पारितोषिक का स्वामी उसको छोड़ कोई देव नहीं उसीके समीप फिर जाना है। (४) ईश्वर की आयतों पर झुकरनेहारों को छोड़ और कोई नहीं झगड़ता सो तू उनके नगरों में फिरने से धोखे में न आ। (५) उनसे पहिले नूह की जाति ने और उनके पश्चात और गोष्टियें भी झुठला चुकीं और हर जाति ने अपने प्रेरित के पकड़ने की इच्छा की और मिथ्या के साथ झगड़ा करते थे जिस्तें उसके द्वारा सत्य को डिगमिगा दें फिर मैंने उनको धरपकड़ा सो कैसा था मेरा दण्ड। (६) और ऐसेही तेरे प्रभु का वचन अधर्मियों पर सत्य ठहरा कि वह अग्निवाले लोग हैं। (७) जो स्वर्ग* को उठाए† हुए हैं और वह जो उसके चहुं ओर अपने प्रभु का महिमा सहित जाप करते हैं-और उस पर

* सिंहासन। † यशैयाह ६ : २. हिजकिएल १० पर्व॥

विश्वास रखते हैं और विश्वासियों के निमित क्षमा मांगते हैं कि हे हमारे प्रभु तूने हर वस्तु को अपनी दया और ज्ञान से घेर लिया तू उन लोगों को क्षमा कर जो पश्चाताप करें और तेरे मार्ग पर चलें और उनको नर्क के दण्ड से रक्षा कर। (८) हे हमारे प्रभु उनको सदा के बैकुण्ठों में प्रवेश दे जिनकी तूने उनसे प्रतिज्ञा की है और उनको भी जो उनके पुरखों और उनकी पत्नियों और उनके सन्तान में से सुकर्म करे निस्सन्देह तू बली बुद्धिवान है। (९) और बुरे कर्मों से उनकी रक्षा कर और जिसकी तूने उस दिन बुराइयों से रक्षा की तो निस्सन्देह तूने उस पर दया की और यही तो बड़ी विजय है॥

रु० २—(१०) निस्सन्देह जो लोग अधर्मी हैं उन्हें पुकारकर कह दिया जायगा निस्सन्देह ईश्वर का घिन करना उस घिन से अधिक है जो तुम परस्पर प्रगट करते हो जब तुम विश्वास की ओर बुलाए जाते थे तुम अधर्मही करते रहे (११) कहेंगे हे हमारे प्रभु तू हमको दूजीबार मृत्यु * देचुका और तू हमको दोबार जिला † चुका अब हम अपने पापों को मानलेते हैं सो अब भी निकलने का कोई मार्ग है। (१२) यह इस कारण है कि जब तुमको एक ईश्वर की ओर बुलाया जाता था तुम अनंगीकार करते थे और यदि उसके संग साझी ठहराया जाता था तुम मानलेते थे अब आज्ञा ईश्वर ही की है जो ऊंचा और बड़ा है। (१३) वही है जो तुमको चिन्ह दिखाता है और आकाशों से तुम्हारे निमित जीविका उतारता है केवल पश्चाताप करनेहारों के कोई इसपर विचार नहीं करता। (१४) सो ईश्वर को पुकारो और सत्य मत के साथ उसी की आराधना करो यद्यपि अधर्मी बुराही मानें। (१५) ऊंची पदवियों वाला स्वामी स्वर्ग पर है अपने दासों में से जिस पर चाहता है वह अपनी आज्ञा से आत्मा डालता है जिस्तें मिलने के दिन ‡ से डराए। (१६) और वह निकल खड़े होंगे ईश्वर पर उनकी कोई वस्तु गुप्त न रहेगी कह आज किसका राज है अकेले ईश्वर का जो अत्यन्त कोपवान § है। (१७) आज हर मनुष्य को उसका बदला दिया जायगा जो उसने उपार्जन किया आज कुछ अन्याय न होगा निस्सन्देह ईश्वर शीघ्र लेखा लेनेहारा है। (१८) उनको उस दिन से जो आ रहा है डरादे जब हृदय गलों में अटक कर घुटरहे होंगे। (१९) दुष्टों के निमित न कोई स्नेही मित्र होगा न पक्षवादी ¶ कि जिसकी सुनी जाय। (२०) वह नेत्रों की चोरी को जानता है जो

* एक तो जीवन के पश्चात की मृत्यु और दूसरी क्लेश के पश्चात की मृत्यु। † उत्पन्न होने के पहिले का जीवन और मृत्यु के पश्चात जिलाना। ‡ फिलपी १ : ११. पहिला थिसलोनियों ४ : १७। § अर्थात भयानक। ¶ अर्थात बिनती करनेहारा॥

अन्तःकरणों में गुप्त रखते हैं। (२१) ईश्वर सत्य निर्णय करता है और जिनको यह ईश्वर के उपरान्त पुकारते हैं वह तो कुछ भी निर्णय नहीं करते निस्सन्देह ईश्वर सुननेहारा और देखने हारा है ॥

रु० ३—(२२) क्या उन्होंने देश में यात्रा नहीं की कि देखते कि उन लोगों का जो उनसे पहिले थे क्या अन्त हुआ वह इनसे शक्ति में अधिक थे वह पृथ्वी में अपने चिन्ह छोड़गए उनको ईश्वर ने उनके पापों के कारण धर पकड़ा और ईश्वर से उनको कोई बचानेहारा न हुआ। (२३) यह इस कारण हुआ कि उनके प्रेरित उनके निकट खुले चिन्हों के साथ आए सो उन्होंने अधर्म्म किया तो ईश्वर ने उन्हें धर पकड़ा निस्सन्देह वह बली और कठिन दण्ड देनेहारा है। (२४) और हमने मूसा को अपने चिन्ह और खुला प्रमाण देकर भेजा। (२५) फ़िराऊन और हामान और क़ारून* के निकट तो वह कहने लगे यह झूठ कहनेहारा टोनहा है। (२६) फिर जब वह हमारी ओर से उनके निकट सत्य लेकर आए कहने लगे इनके पुत्रों को जो उस पर विश्वास लाएं मारडालो और इनकी स्त्रियों को जीता रहने दो परन्तु अधर्म्मियों का छल केवल भटकना है। (२७) फ़िराऊन बोला मुझको छोड़दो कि मैं मूसा को मारडालूं और उसे अपने प्रभु को पुकारने दो निस्सन्देह मुझे डर है कि वह तुम्हारे मत को बदलडाले अथवा देश में कोई बुरा उपद्रव निकाल खड़ा करे। (२८) मूसा बोला निस्सन्देह मैं अपने और तुम्हारे प्रभु की शरण हर घमण्डी से जो लेखे के दिन का विश्वास नहीं करता लेचुका ॥

रु० ४—(२९) फ़िराऊन के लोगों में से एक विश्वासी† जिसने अपना विश्वास गुप्त रखा था उसने कहा क्या तुम एक मनुष्य को केवल इस बात पर घात करोगे कि वह कहता है कि मेरा प्रभु ईश्वर है और तुम्हारे तीर तुम्हारे प्रभु की ओर से प्रत्यक्ष चिन्ह लाया है और यदि वह झूठा है तो उसका झूठ‡ उसी पर है और यदि वह सत्य कहता है तो तुम पर उसीमें से जिसकी तुम्हें बाचा देता है आंपड़ेगा निस्सन्देह ईश्वर उसकी अगुवाई नहीं करता जो मर्याद से बढ़ा झूठ बोलनेहारा है। (३०) हे मेरी जाति आज देश में तुम्हारा राज है तुम देश में प्रबल हो फिर ईश्वर के कोप से यदि वह तुम पर आपड़े तुम्हारी कौन सहायता करेगा फ़िराऊन बोला मैं तो तुम्हें वही दिखलाऊंगा जो मैं देखता हूं और

---

* कसस ७६। † कसस २०। ‡ प्रेरितों की क्रिया ५ : ३८—३९ ॥

मैं हीं तुमको सीधा मार्ग दिखलाऊंगा। (३१) और वह जो विश्वास लाया था कहने लगा हे मेरी जाति मुझको तुम्हारे निमित अगली जत्थाओं के दिन के समान का डर है। (३२) नूह की जाति आद और समूद के समान । (३३) और उन लोगों का जो उनके पश्चात हुए और ईश्वर तो दासों पर अन्याय करना नहीं चाहता। (३४) हे जाति निस्सन्देह मुझे तुम्हारे निमित एक दूसरे को पुकारने के दिन का डर है। (३५) जिस दिन तुम पीठ फेर कर भाग खड़े होगे तुमको ईश्वर से बचानेहारा कोई नहीं है और जिसको ईश्वर भटकादे तो उसके निमित कोई अगुवाई करने हारा नहीं है। (३६) और तुम्हारे तीर इससे पहिले यूसफ खुले चिन्ह लेकर आचुका है परन्तु तुम सन्देह करने से न रुके उन बातों में जो वह तुम्हारे तीर लाया यहांलों कि वह मरगया और तुम कहने लगे कि उसके पीछे ईश्वर कभी कोई प्रेरित न भेजेगा इसी रीति ईश्वर उसको भटकाया करता है जो मर्याद से अधिक सन्देह करनेहारों में है। (३७) उन लोगों को जो ईश्वर की आयतों में बिना प्रमाण झगड़ते हैं कि जब वह उनके तीर आचुकीं—ईश्वर उनसे बहुत घिन करता है और वह भी जो विश्वास लाए और ऐसेही ईश्वर हर अभिमानी हठी के हृदय पर छाप लगादेता है। (३८) फ़िराऊन बोला हे हामान * मेरे निमित एक गर्गज बना जिस्तें मैं उन मार्गों में पहुंचूं। (३९) आकाशों के मार्गों में और मूसा के ईश्वरलों चढ़ जाऊं क्योंकि निस्सन्देह मैं उसे झूठा समझता हूं। (४०) इसी रीति हमने फ़िराऊन को उसके बुरे कर्म अच्छे कर दिखाए और वह मार्ग से रोका दिया गया और फ़िराऊन के छल का अंत विनाश हुआ॥

रु० ५—(४१) और उस पुरुष ने जो विश्वास लाचुका था कहा हे मेरी जाति मेरे पीछे चलो मैं तुमको भलाई का मार्ग दिखाऊंगा। (४२) हे मेरी जाति निस्सन्देह इस संसार के जीवन में लाभ तो है बरन निस्सन्देह अन्त ही सर्वदा का घर है। (४३) और जिसने बुरा कर्म्म किया तो उसको उसी के समान दण्ड दिया जायगा और जिसने सुकर्म्म किया पुरुष हो अथवा स्त्री और वह विश्वासी भी हो वही लोग बैकुण्ठ में प्रवेश करेंगे और उनको वहां अलेख जीविका मिलेगी। (४४) और हे मेरी जाति मैं क्यों तुमको मुक्ति की ओर बुलाता हूं और तुम मुझको अग्नि की ओर बुलाते हो। (४५) और तुम मुझे बुलाते हो कि मैं ईश्वर का मुकरनेहारा होजाऊं और उसका साझी ऐसी वस्तु को ठहराऊं जिसको मैं नहीं

---

* क़सस ६ ॥

जानता और मैं तुमको एक बलवन्त क्षमा करनेहारे की ओर बुलाता हूं। (४६) निस्सन्देह जिसकी ओर तुम मुझे बुलाते हो उसको न इस संसार में न अन्त में पुकारना उचित है निस्सन्देह हमको ईश्वर की ओर लौट जाना निस्सन्देह जो मर्याद से बढ़े हुए हैं वही अग्निवाले लोग हैं। (४७) और तुम स्मर्ण करोगे जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं और मैं अपना कार्य्य ईश्वर को सौंपता हूं निस्सन्देह ईश्वर अपने दासों पर दृष्टि कर रहा है। (४८) सो उसको ईश्वर ने उनके छलकी कठोरताओं से बचालिया और फ़िराऊन के लोगों को कठिन दण्ड ने आ घेरा। (४६) यह अग्नि है वह इस पर भोर और सांझ लाए जायंगे और जिस दिन वह घड़ी * स्थिर होगी फ़िराऊन के लोगों को कठिन दण्ड में डालदेंगे। (५०) और जब परस्पर अग्नि में झगड़ा करेंगे और बलहीन अभिमानियों से कहेंगे कि निस्सन्देह हमतो तुम्हारे आज्ञाकारी थे सो क्या तुम अग्नि का कुछ भाग हमसे हटासकते हो। (५१) अभिमानी कहेंगे निस्सन्देह हम सब इसमें पड़े हैं निस्सन्देह ईश्वर ने अपने दासों में निर्णय कर दिया। (५२) और वह जो अग्नि में पड़े हुए हैं नर्क के द्वारपालों से कहेंगे कि अपने प्रभु से प्रार्थना करो कि हमारे दण्ड को एक दिन हलका करदे। (५३) वह उत्तर देंगे क्या तुम्हारे समीप तुम्हारे प्रेरित खुले चिन्ह लेकर न आए थे कहेंगे हां कहा जायगा सो पुकारो परन्तु अधर्म्मियों की पुकार तो केवल भटकना है॥

रु० ६—(५४) निस्सन्देह हम अपने प्रेरितों की और विश्वासियों की संसारिक जीवन में सहायता करते हैं और उस दिन भी जब साक्षी खड़े होंगे। (५५) जिस दिन दुष्टों को उनका बहाना लाभ न देगा वरन उनके निमित श्राप है और उनके निमित एक बुरा घर है। (५६) और हमने मूसा को शिक्षा की और इसराएल वंश को पुस्तक का अधिकारी किया जो बुद्धिवानों के निमित्त शिक्षा और अगुवाई है। (५७) सो तू † धीरज धर निस्सन्देह ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य है अपने पाप की क्षमा मांग और अपने प्रभु का सांझ और सकारे स्तुति सहित जाप कर। (५८) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर की आयतों में जो उनके समीप आई हों बिना प्रमाण झगड़ते हैं तो उनके अन्तःकरणों में केवल घमंड के कुछ नहीं और वह उसलों पहुंचनेहारे नहीं सो तू ईश्वर की शरण मांग निस्सन्देह वह सुनने और देखनेहारा है। (५६) निस्सन्देह आकाशों और पृथ्वी का उत्पन्न करना

---

* अर्थात पुनरुत्थान। † अर्थात महम्मद साहब॥

मनुष्य के उत्पन्न करने की अपेक्षा से बड़ा है परन्तु बहुतेरे मनुष्य नहीं समझते। (६०) और अन्धा और देखनेहारा समान नहीं और जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए और न कुकर्म्मी तुम बहुतही न्यून शिक्षा ग्रहण करते हो। (६१) निस्सन्देह वह घड़ी निश्चय आनेहारी है उसमें तनिक भी सन्देह नहीं है परन्तु बहुतेरे मनुष्य विश्वास नहीं लाते। (६२) तुम्हारा प्रभु कहता है मुझे पुकारो मैं तुम्हें उत्तर दूंगा जो लोग मेरी अराधना से घमंड करते हैं वह नर्क में तुच्छ होकर प्रवेश करेंगे॥

रु० ७—(६३) ईश्वर वह है जिसने तुम्हारे हेतु रात्री को बनाया जिस्तें तुम उसमें विश्राम करो और दिवस जिस्तें तुम उसमें देखो निस्सन्देह ईश्वर लोगों के निमित बड़ा अनुग्रहवाला है परन्तु बहुतेरे मनुष्य धन्यवाद नहीं करते। (६४) ईश्वर तुम्हारा प्रभु हर वस्तु का उत्पन्न करनेहारा है उसके उपरान्त कोई देव नहीं सो तुम कहां बहके जाते हो। (६५) इसी रीति वह लोग भटकाए जाते हैं जो ईश्वर की आयतों से मुकरते हैं। (६६) वह ईश्वर है जिसने पृथ्वी को तुम्हारे निमित रहने का स्थान बना दिया और आकाश को छत और तुम्हारे स्वरूप बनाए और तुम्हारे स्वरूपों को अच्छा बनाया और तुमको पवित्र वस्तुओं की जीविका दी यह है ईश्वर तुम्हारा प्रभु ईश्वर धन्य हो जो सृष्टियों का प्रभु है। (६७) वही जीवता है उसके उपरान्त कोई देव नहीं उसको पुकारो और उसकी अराधना निष्कपट मतके साथ करो सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जो सृष्टियों का प्रभु है। (६८) कहदे निस्सन्देह मैं इसमें वर्जा गयाहूं कि मैं उनकी अराधना करूं जिन्हें तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते हो जब कि मेरे प्रभु की ओर से मेरे निकट खुले चिन्ह आचुके और मुझे आज्ञा है कि मैं सृष्टियों के प्रभु का आज्ञाकारी बनूं। (६९) वही है जिसने तुमको माटी से उत्पन्न किया फिर वीर्य से फिर लोथड़े से फिर तुमको बालक बनाकर निकालता है जिस्तें तुम अपनी तरुणाई को पहुंचो फिर तुम वृद्ध हो जाते हो और तुम में से किसी का प्राण उससे पहिले ही ले लिया जाता है जिस्तें तुम ठहराए हुए समय को पहुंच जाओ जिस्तें तुम समझो। (७०) वही है जो जिलाता और मारता है और जो किसी कार्य का होना स्थापित करता है तो उसके निमित कह देता है कि होजा और वह होजाता है॥

रु० ८—(७१) क्या तूने उनको नहीं देखा जो ईश्वर की आयतों पर झगड़ते हैं वह कैसे फिरे जाते हैं। (७२) जिन लोगों ने पुस्तक को झुठलाया और उसको

जो हमने अपने प्रेरितों पर भेजा वह शीघ्र ज्ञान जायंगे। (७३) इनके गलों में पट्टा और सांकरें होंगी और खौलते हुए पानी में घसीटे जायंगे फिर अग्नि में झोंक दिए जायंगे। (७४) फिर उनसे कहा जायगा कहां हैं वह जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त साझी ठहराते थे वह कहेंगे वह तो हम से खोगए वरन हम तो इससे पहिले किसी वस्तु को पुकारते ही न थे ईश्वर इसी भांति अधर्मियों को भटकाता है। (७५) यह इस कारण है कि तुम पृथ्वी में अनर्थ प्रसन्न होते फिरते थे और यह कि तुम इतराते फिरते थे। (७६) नर्क के द्वारों में इसमें सदा रहने के हेतु प्रवेश करो घमण्ड करनेहारों का कैसा बुरा ठिकाना है। (७७) तू धीरज धर निस्सन्देह ईश्वर की वाचा सत्य है सो यदि हम उसमें से कुछ जिसकी हम उन से प्रतिज्ञा करते हैं दिखादें अथवा यदि हम तुझको अपनी ओर उठालें तुम सबको हमारी ओर लौट आना है। (७८) और हमने तुझ से पहिले प्रेरित भेजे और उनमें से कोई ऐसे हैं जिनके वृत्तान्त हमने तुझे नहीं सुनाए किसी प्रेरित को शक्ति न थी कि ईश्वर की आज्ञा के उपरान्त कोई चिन्ह ले आवे फिर जब ईश्वर की आज्ञा आई तो सत्यता से निर्णय कर दिया और उस स्थान में झूठ बोलने हारे हानि में रहे॥

रु० ६—(७९) ईश्वर वह है जिसने तुम्हारे निमित पशु उत्पन्न किए कि उनमें से किसी पर चढ़ो और उन में से तुम खाते हो। (८०) और उनमें तुम्हारे निमित बहुत लाभ हैं जिससे तुम अपनी मनेच्छाओं को उनके द्वारा प्राप्त करो उन पर और नौकाओं पर तुम चढ़े फिरते हो। (८१) वह तुम्हें अपने चिन्ह दिखाता है तुम अपने प्रभु के किस किस चिन्ह से मुकरोगे। (८२) क्या यह लोग देश में नहीं फिरे कि देखते कि उनके अगले लोगों का कैसा अन्त हुआ वह उनसे अधिक बलवान थे और उन चिन्हों * में जो पृथ्वी में हैं सो उनके कुछ अर्थ न आया जो वह उपार्जन किया करते थे। (८३) और जब उनके समीप उनके प्रेरित खुले चिन्ह लेकर आए वह उस पर प्रसन्न हुए जो ज्ञान उनके निकट था और उनको घेर लिया उसने जिसकी वह हंसी उड़ाया करते थे। (८४) सो जब उन्हों ने हमारे दण्ड को देखा कहने लगे हम तो अकेले ईश्वर पर विश्वास लाते हैं और हम उन से मुकरते हैं जिनको हम उसके साथ साझी ठहराते थे। (८५) सो उनको उनका विश्वास कुछ लाभदायक न हुआ जब कि वह हमारा दण्ड देख चुके ईश्वर का व्यवहार उसके दासों में प्रचलित है और उस स्थान पर अधर्मियों ने हानि उठाई॥

---

* जुखरुफ़ २८॥

४१ सूरए हमसिज्दा मक्की रुकू ६ आयत ५४ ।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १ हम—(१) अति दयालु रहमान की ओर से उतरी है । (२) ऐसी पुस्तक जिसकी आयतें स्पष्ट हैं अरबी में कुरान विद्यवान लोगों के निमित । (३) सुसमाचार और डर सुनानेहारी और बहुतेरे उनमें से मुंह मोड़ लेते हैं और नहीं सुनते । (४) और कहते हैं हमारे हृदयों पर पट पड़े हैं उसकी ओर से जिस बात के निमित तू बुलाता है हमारे कानों में ढट्ठी हैं हमारे और तेरे मध्य में एक आड़ है तू भी कार्य्य कर और निस्सन्देह हम भी कार्य्य करते हैं । (५) कहदे मैं तो तुम्हारे* ही समान एक मनुष्य हूं मुझे प्रेरणा होती है कि तुम्हारा ईश्वर एक ही ईश्वर है सो सीधे उसी की ओर जाओ और उससे पापों की क्षमा मांगो और साझी ठहरानेहारों पर शोक है । (६) जो दान नहीं देते और अन्त से मुकरते हैं । (७) निस्सन्देह जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म किए उनके निमित अक्षय प्रतिफल है ॥

रु० २—(८) कहदे क्या तुम उससे मुकरतेहो जिसने पृथ्वी को दो दिन में उत्पन्न किया और तुम उसके निमित सजाति ठहराते हो वह समस्त संसार का प्रभु है । (९) और उसने उस पर अटल पहाड़ रख दिए और उसमें आशीष रखी और चार दिवस में उसके भीतर उनकी जीविकाएं ठहराईं सब इच्छुकों के निमित तुल्य । (१०) फिर आकाश की ओर अवहित हुआ और वह धुआं था फिर आकाश और पृथ्वी को कहा कि तुम दोनों सहर्ष आओ अथवा अप्रसन्नता से आओ उन दोनों ने कहा हम प्रसन्नता से आते हैं । (११) फिर उनको सम्पूर्ण किया और दो दिन में सात आकाश बना दिए फिर हर आकाश में अपनी आज्ञा की प्रेरणा की और हमने निचले आकाश को दीपकों से संवारा यह बलवन्त बुद्धि वाले का ठहराया हुआ है । (१२) और यदि वह मुंह फेरें तो कहदे मैं तुमको एक कड़क से डराता हूं आद और समूद की कड़क के समान । (१३) जब उनके प्रेरित उनके निकट उनके आगे से और उनके पीछे से कहते हुए आए कि ईश्वर के उपरान्त किसी की अराधना न करो वह कहने लगे यदि हमारा प्रभु चाहता तो हम पर दूतों को उतारता हम तो उससे जो तुम्हारे सङ्ग भेजा गया है अनंगीकार ही करेंगे । (१४) और आदवाले देश में अनर्थ घमण्ड करने लगे और कहने लगे

* प्रेरितों की क्रिया १४ : १५ ॥

हमसे अधिक शक्ति में कौन है क्या उन्होंने नहीं देखा कि ईश्वर जिसने उनको उत्पन्न किया उनसे अधिक शक्तिवान है और वह हमारी आयतों का अनंगीकार करते थे। (१५) सो हमने उन पर बड़ी प्रचण्ड वायु अशुभ दिनों में भेजी जिससे हम उनको उपहास का दण्ड जगत के जीवन में चखाएं और अन्त के दिन का दण्ड तो बड़ा अनादर करनेहारा है और उनकी सहायता न कीजायगी। (१६) और समूदवालों को हमने मार्ग दिखाया परन्तु उन्होंने अन्धा रहना मार्ग पर आने से उत्तम समझा सो उनको उपहास के दण्ड की कड़क ने धर पकड़ा उसके कारण जो उन्होंने उपार्जन किया था। (१७) और हमने उनको जो विश्वास लाए और डरते थे मुक्ति दी।

रु० ३—(१८) और जिस दिन ईश्वर के वैरी अग्नि की ओर हांके जायंगे और उनको जत्था जत्था किया जायगा। (१९) और जब उसके तीर पहुंचेंगे तो उनके कान उनके नेत्र उनकी खालें उनके विरुद्ध साक्षी देंगे जो कुछ वह किया करते थे। (२०) और वह अपनी खालों से पूछेंगे तुमने हमारे विरुद्ध साक्षी क्यों दी वह कहेंगी हमको ईश्वर ने बोलने की शक्ति दी जिसने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी है उसने तुमको पहिलीबार उत्पन्न किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। (२१) और तुम छिपा नहीं सकते कि तुम्हारे कान और तुम्हारे नेत्र और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध साक्षी न दें परन्तु तुम तो यही विचार करते रहे कि ईश्वर उसके बहुत भाग को जो तुम करते थे नहीं जानता। (२२) और वही तुम्हारा अनुमान जो तुम अपने प्रभु के विषय में करते थे तुम्हारे नाश का कारण हुआ सो तुम हानि उठानेहारों में होगए। (२३) सो यदि वह धीरज धरें तौ भी अग्नि उनका ठिकाना है और यदि क्षमा चाहें तो उनको क्षमा न किया जायगा। (२४) और हमने उन पर मित्र स्थापन किए उन्होंने इनको भला कर दिखाया जो कुछ उनके आगे था और जो कुछ उनके पीछे था और उन पर जाति गणों के साथ ही वाचा सत्य ठहरी जो उनसे पहिले जिन्न और मनुष्य बीत चुके हैं निस्सन्देह वह हानि उठानेहारों में हुए।

रु० ४—(२५) अधर्म्मी कहने लगे इस कुरान को सुनो ही मत और उसके पढ़ेजाने के समय बक बक किया करो कदाचित तुमही प्रबल होओ। (२६) सो हम अधर्म्मियों को कठिन दण्ड चखायंगे। (२७) और हम उनको उसके कारण जो वह करते थे बुरे से बुरा दण्ड देंगे। (२८) ईश्वर के वैरियों का प्रतिफल यही है अर्थात अग्नि और वह उसमें सदालों रहेंगे और यह उसका दण्ड है जो हमारी

आयतों का अनअंगीकार करते थे। (२९) अधर्मी कहेंगे हे हमारे प्रभु हमको वह * दिखादे जिन्हों ने हमको जिन्नों और मनुष्यों में से भटका दिया और हम उनको अपने पैरों के तले डालें जिस्तें वह सबसे तले रहनेहारों में हों। (३०) निस्सन्देह जिन्होंने कहा कि हमारा प्रभु तो ईश्वर है और उस पर जमें रहे उन पर दूत उतरते हैं मत डरो न शोक करो उस बैकुण्ठ का सुसमाचार सुनो जिसकी तुमसे बाचा कीजाती थी। (३१) हम तुम्हारे मित्र जगत के जीवन और अन्त के दिन में हैं और वहां तुम्हारे निमित जिस वस्तु की इच्छा करोगे उपस्थित होगी और जो कुछ तुम मांगोगे वहां तुमको मिलेगा। (३२) क्षमा करने हारे दयालु की ओर से जेवनार॥

रु० ५—(३३) उससे उत्तम किसकी बात है जिसने लोगों को ईश्वर की ओर बुलाया और सुकर्म्म किए और कहे निस्सन्देह मैं आज्ञा पालन करने हारों में से हूं। (३४) सुकर्म्म और कुकर्म्म समान नहीं होते सुकर्म्म से टालदे ‡ फिर तो वह मनुष्य कि उसमें और तुझमें बैर था मानो स्नेही मित्र और सहायक है। (३५) धीरज धरनेहारों को छोड़ यह किसको मिलता है बड़भागी के उपरान्त और किसी को नहीं मिलता। (३६) और यदि तुझे दुष्टात्मा का दुविधा उभारे तो ईश्वर की शरण ले क्योंकि वह सुननेहारा और जाननेहारा है। (३७) उसके चिन्हों मेंसे रात और दिन और सूर्य्य और चंद्रमा हैं सूर्य्य और चन्द्रमा को दण्डवत न करो ईश्वरही को दण्डवत करो जिसने उसको उत्पन्न किया यदि तुम उसकी अराधना करते हो। (३८) और यदि वह घमंड करें फिर वह भी जो तेरे प्रभु का जाप सवेरे § और सांझ करते हैं और थकते नहीं। (३९) और उसके चिन्हों में से तू देखेगा पृथ्वी को कुम्हलाया हुआ और फिर जब हम वर्षा बर्षाते हैं तो वह हरी भरी होजाती है निस्सन्देह जिसने उसे जीवता किया वही मृतकों को भी जीवता करदेगा निस्सन्देह वही हर वस्तु पर शक्तिवान है। (४०) निस्सन्देह वह हमारी आयतों में टेढ़ाई करते हैं हमसे गुप्त नहीं है भला वह जो अग्नि में डाला जाता है उत्तम है अथवा वह जो पुनरुत्थान के दिन शान्ति में आवेगा जो चाहो सो करलो निस्सन्देह वह देखरहा है जो तुम करते हो। (४१) निस्स-न्देह वह लोग जिन्होंने शिक्षा को अनअंगीकार किया पश्चात इसके कि उनके तीर आचुकी निस्सन्देह यह महिमावाली पुस्तक है। (४२) उसके आगे और

---

* अर्थात बड़े लोग। † अहकाफ १२। ‡ अर्थात कुकर्म्म को। § प्रकाशित वाक्य ४:८॥

पीछे झूठ नहीं आसकता जो बुद्धिवाले और स्तुति योग्य की ओर से उतरी हुई है। (४३) तुझसे और कुछ नहीं कहाजाता वरन वही जो तुझसे आगे प्रेरितों से कहागया था निस्सन्देह तेरा प्रभु क्षमा करनेहारा और कठिन दण्ड करनेहारा है। (४४) यदि हम इस कुरान को अजमी भाषा का बनाते तो यह अवश्य कहते कि क्यूं इसकी आयतें खोलकर वर्णन न कीगईं क्या अरबी और अजमी कहदे कि यह बिश्वासियों के निमित शिक्षा और औषध है और जो विश्वास नहीं लाए उनके कान भारी हैं और यह उनके निमित दृष्टि विहीनता है और यह लोग एक दूर स्थान से पुकारे जारहे हैं॥

रु० ६—(४५) और हमने मूसा को पुस्तक दी और उसमें विभेद किया गया था यदि तेरे प्रभु की ओर से एक बचन न कहदिया गया होता तो अवश्य उनमें निर्णय करदिया जाता निस्सन्देह उसके विषय में बड़े सन्देह में पड़े हुए हैं। (४६) जिसने सुकर्म्म किए तो अपनेही भले के निमित और जिसने कुकर्म्म किया है वह उसी के निमित है और तेरा प्रभु दासों पर अन्याय करनेहारा नहीं॥

५. (४७) उसी की ओर उस घड़ी के ज्ञान का आरोपण किया जाता है फल भी अपने गाभों से नहीं निकलते और न किसी नारी जाति के गर्भ रहता है अथवा जनती है केवल उसीके ज्ञान से और उस दिन जब वह उन्हें पुकारेगा कि वह मेरे साझी कहां हैं वह कहेंगे कि हमने तो तुझे कह सुनाया कि हम में से कोई साक्षी नहीं। (४८) और जिनको वह पहले पुकारते थे वह उनसे खोगए और उन्होंने बिचार किया कि उनके निमित छुटकारे का कोई मार्ग नहीं। (४९) मनुष्य भलाई के निमित प्रार्थना करने से नहीं थकता और यदि उसे बुराई पहुँचे तो आश तोड़ कर निराश हो बैठता है। (५०) यदि हम उसको अपनी दया से चखावें उस क्लेश के पश्चात जो उसको पहुंचा था तो कहने लगेगा यह तो मेरे निमित है और मैं बिचार नहीं करता कि वह घड़ी स्थिर हो और यदि मैं अपने प्रभु की ओर लौटाया जाऊं तो निस्सन्देह मेरे निमित उसके समीप भलाई होगी सो हम अधर्मियों को बतलावेंगे जो कुछ उन्होंने किया है और हम अवश्य उनको कठिन दण्ड चखावेंगे। (५१) और जब हम मनुष्य पर उपकार करते हैं तो मुंह फेर लेता है और अलग होजाता है परन्तु जब उसे बुराई पहुँचती है तो चौड़ी प्रार्थनाएं करने लगता है। (५२) कहदे भला देखो तो सही यदि यह ईश्वर की ओर से हो और तुम उससे मुकरे उससे अधिक भटका हुआ कौन है जो दूरकी भिन्नता में पड़ा हो। (५३) हम शीघ्र उनको अपने चिन्ह संसार की दिशाओं में और उनके

मध्य में दिखायंगे यहां लों उनपर प्रगट होजाय कि यह यथार्थ है क्या यह बस नहीं तेरा प्रभु हर वस्तु पर साक्षी है। (५४) हां निस्सन्देह यह लोग सन्देह में पड़े हुए हैं अपने प्रभु से मिलने के विषय में हां निस्सन्देह ईश्वर हर वस्तु को घेरे हुए है॥

४२ सूरए शोरी मक्की रुकू ५ आयत ५३।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १ ह् म अ् स् क़्—(१) इसी रीति ईश्वर बलवन्त बुद्धिवान तेरी ओर और उनकी ओर जो तुझसे पहिले थे प्रेरणा करता है। (२) उसी का है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है वही सब से उच्च और महान है। (३) निकट है कि आकाश ऊपर से फटपड़ें और दूत अपने प्रभु का स्तुति सहित जाप करते हैं और पृथ्वी के निवासियों के निमित क्षमा मांगते हैं हां निस्सन्देह ईश्वर जो है वही क्षमा करनेंहारा दयालु है। (४) जिन लोगों ने ईश्वर के उपरान्त स्वामी * बना रखे हैं ईश्वर उनको देखता है तू उनका हितवादी नहीं। (५) और इसी रीति हमने कुरान अरबी में उतारा जिस्तें तू मक्का † वालों को और उसके आस पास वालों को डर सुनादे और उस दिन से डरावे जिसमें सब इकत्र होंगे और इसमें कुछ सन्देह नहीं एक जत्था वैकुण्ठ में होगा और एक लपट ‡ में। (६) यदपि ईश्वर चाहता तो उन सबको एकही जाति बना देता परन्तु वह जिसे चाहे अपनी दया में प्रवेश देता है और दुष्टों का न कोई स्वामी होगा न सहायक। (७) क्या उन्होंने उसके उपरान्त दूसरे स्वामी ठहरा रखे ईश्वर ही वही स्वामी है वही मृतकों को जिलाता है और वही प्रत्येक वस्तु पर शक्तिवान है॥

रु० २—(८) और जिस बात में तुम्हारा विभेद हो उसका निर्णय ईश्वर के समीप है ईश्वर है—वही मेरा प्रभु है मैंने उसी पर भरोसा कर लिया और मुझे उसी की ओर फिर जाना है। (९) वह जो आकाशों और पृथ्वी का सृजनहार है जिसने तुम्हारे निमित तुमहीं में से पत्नियें बनाईं और पशुओं के भी जोड़े बनाए और उनसे तुम्हें फैलाता § है उसके समान कोई नहीं और वही सुनता और देखता है। (१०) आकाशों और पृथ्वी की कुंजियां उसी की हैं वह जिसकी

* अर्थात वली। † उम्मुल कुरा जिसका अर्थ शहरों की माता है। ‡ अर्थात नर्क।
§ अर्थात वंश बढ़ाना है॥

चाहता है जीविका अधिक करदेता है अथवा ठहरादेता है निस्सन्देह वह प्रत्येक बात को जानता है। (११) उसने तुम्हारे निमित वही मत स्थापित किया जिसकी आज्ञा नूह को दी थी और वह जो तुझपर प्रेरणा की और जिसकी इबराहीम और मूसा और ईसा को आज्ञा दी यह कि मत पर स्थिर रहो और उसमें फूट न डालो साझी ठहराने हारों को यह बात कठिन जान पड़ती है। (१२) कि जिसकी ओर तू उन्हें बुलाता है ईश्वर जिसको चाहता है अपने निमित चुनलेता है और जो अवहित होता है उसकी अपनी ओर शिक्षा करता है। (१३) और वह गोष्ठियों में भिन्न भिन्न न हुए परन्तु उसके पश्चात कि उनके समीप ज्ञान आया परस्पर के हठ के कारण से यदि तेरे प्रभु की ओर से ठहराए हुए समय के निमित एक वचन निकल न चुका होता तो उनमें निर्णय कर दिया जाता और जो लोग उनके पश्चात पुस्तक के अधिकारी किए गए वह उसके विषय भारी सन्देह में हैं। (१४) सो इसी रीति पुकार और जैसी तुझे आज्ञा हुई उस पर स्थिर रह उनकी चेष्टाओं के पीछे न चल और कह मैं उस पुस्तक पर विश्वास लाता हूं जो ईश्वर ने उतारी है और मुझे आज्ञा हुई है कि तुममें न्याय करूं ईश्वर हमारा और तुम्हारा प्रभु है हमारे कर्म्म हमारे निमित और तुम्हारे निमित तुम्हारे कर्म्म हम में और तुममें कोई झगड़ा नहीं ईश्वर हम सबको इकत्र करेगा और उसी की ओर लौट कर जाना है। (१५) वह जो ईश्वर के विषय में झगड़ा डालते हैं पश्चात इसके कि वह मान लिया गया उनके प्रभु के यहां उनका वादविवाद व्यर्थ है उन पर कोप होगा और उनके निमित कठिन दण्ड है। (१६) ईश्वर वह है जिसने सत्य के साथ पुस्तक उतारी और तुला * और तू क्या जाने कदाचित वह घड़ी निकट ही हो। (१७) वह जो शीघ्रता † करते हैं वह इसका विश्वास नहीं करते और जो विश्वास करते हैं वह इससे डरते हैं और जानते हैं कि वह यथार्थ है हां जो लोग उस घड़ी के आने में झगड़ते हैं अत्यन्त भ्रमणा में हैं। (१८) ईश्वर अपने दासों पर दयालु है जिसको चाहता है जीविका देता है वही बलवन्त बलिष्ठ है॥

रु० ३ – (१९) और जो अन्त के दिन की खेती चाहता है हम उसकी खेती को बढ़ाते हैं और जो कोई संसार की खेती चाहता है हम उसको उसमें देते हैं परन्तु अन्त के दिन में उसका कोई अन्श ‡ नहीं है। (२०) क्या उनके और देव हैं कि जिन्होंने उनके निमित मत का वह नियम निकाला है जिसकी ईश्वर ने उन्हें

* अर्थात व्यवस्था जो कुरान में है। † यशैयाह ५५ : १९। ‡ गलातियों ६ : ७—८॥

आज्ञा नहीं की यदि निर्णय की वाचा नहीं हुई होती तो उनमें निर्णय कर दिया जाता निस्सन्देह दुष्टों के निमित कठिन दण्ड है। (२१) और तू दुष्टों को देखेगा कि वह अपने करतूतों की विपति से डर रहे होंगे जो उन्हों ने उपार्जन की है यद्यपि वह उन पर आ पड़ेगी और जो विश्वासलाए और सुकर्म किए वैकुण्ठ की वाटिकाओं में होंगे और वह जिसको चाहेंगे अपने प्रभु के समीप पायेंगे और यही बड़ा अनुग्रह है। (२२) यही है वह जिसका ईश्वर अपने दासों को सुसमाचार देता है जो विश्वास लाए और सुकर्म किए कहदे मैं इस पर तुम से बनि नहीं मांगता केवल इसके नातेदारों की प्रीत और जो कोई भलाई उपार्जन करेगा तो हम उसमें और गुण बढ़ाय देंगे निस्सन्देह ईश्वर क्षमाकरनेहारा उपकार स्मृता है। (२३) क्या यह कहते हैं कि उसने ईश्वर पर झूठ बांधा है यदि ईश्वर चाहे तो तेरे हृदय पर छापकरदे ईश्वर झूठ को मिटायगा और सत्य को अपने कार्य से प्रमाणिक कर दिखायगा निस्सन्देह वह अन्तःकरण के भेदों को जानता है। (२४) वह वह है जो अपने दासों का पश्चाताप ग्रहण करता और पापों को क्षमा करता है और जो कुछ तुम करते हो वह उसको जानता है। (२५) और वह उसकी जो विश्वास लाए और सुकर्म किए प्रार्थना ग्रहण करता है और उनको अपने अनुग्रह * से अधिक देता है और अधर्मियों के निमित कठिन दण्ड है। (२६) और यदि ईश्वर अपने दासों की जीविका अधिक करदे तो पृथ्वी में उपद्रव करें परन्तु जितनी चाहता है उतारता है क्योंकि वह अपने दासों को भली भांति जानता और देखता है। (२७) वह वह है जो निराश होने के पश्चात मेंह बर्षाता है और अपनी दया को फैलाता है और वही स्वामी महिमा योग्य है। (२८) और उसके चिन्हों में से आकाशों और पृथ्वी का उत्पन्न करना है और उनका जो जीवधारी फैला दिए और वह जब चाहे उन सब को इकत्र कर सकता है॥

रु० ४—(२९) और जो विपति तुम पर पड़ी है यह उसके कारण है जो तुम्हारे हाथों ने उपार्जन किया परन्तु वह बहुत कुछ क्षमा करदेता है। (३०) तुम उसको पृथ्वी में विवश नहीं कर सकते न ईश्वर के उपरान्त तुम्हारा कोई स्वामी है न सहायक। (३१) और उसके चिन्हों में से जलयान हैं जो समुद्र में पर्वत समान चलते हैं यदि वह चाहे तो पवन को ठहरादे फिर वह समुद्र में ठहरे रहजायं निस्सन्देह उसमें धीरज धरनेहारों और धन्यवादियों के निमित चिन्ह हैं। (३२) अथवा उनकी कमाई † के कारण उन्हें नाश करदे और बहुत कुछ क्षमा

---

* स्तोत्र ११९ : १९। † अर्थात बुरेकर्म॥

करदे। (३३) और जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं जानलें, उनके निमित भागने को कहीं ठौर नहीं। (३४) और जो कुछ तुम्हें दिया गया वह केवल इस संसार के जीवन के निमित है परन्तु जो कुछ ईश्वर के समीप है वह श्रेष्ठ और शेष रहनेहारा है उनके निमित जो विश्वास ले आए और अपने प्रभु पर भरोसा किया। (३५) और जो लोग बड़े पापों और निर्लज्जता की बातों से बचते रहे और जब क्रोधित हुए तो क्षमाकर देते हैं। (३६) और जो लोग अपने प्रभु का कहना मानते और प्रार्थना में स्थिर रहते और उनका कार्य परस्पर के परामर्श से होता है और हमारे दिए हुए में से व्यय करते हैं। (३७) और वह लोग कि जब उन पर कठिनाई आती है तो वह पलटा लेते हैं। (३८) और बुराई का बदला उसी के समान बुराई करना है फिर जो कोई क्षमाकरदे और मेल करदे उसका प्रतिफल ईश्वर के संग है निस्सन्देह वह दुष्टों को मित्र नहीं रखता। (३९) और जिस किसी ने अपने ऊपर अनीति होने के पश्चात पलटा लिया तो यह हैं कि उनपर कुछ मार्ग* नहीं। (४०) मार्ग केवल उन्हीं पर है जो लोगों पर अनीति करते हैं और देश में अनर्थ विरोध करते हैं यही हैं जिनके निमित दुखदायक दण्ड है (४१) परन्तु निस्सन्देह जिसने धीरज धरा और क्षमा किया तो निस्सन्देह बड़े साहस का कार्य है॥

रु० ५—(४२) और जिसको ईश्वर भटकावे उसके पश्चात उसका कोई स्वामी नहीं और तू दुष्टों को देखेगा। (४३) जिस समय वह दण्ड को देखेंगे कहेंगे कि क्या लौटजाने की कोई विधि है। (४४) और तू उनको देखेगा कि जब वह उपहास के साथ उसके सन्मुख लाए जायंगे आंखों से छिपे छिपे दृष्टि करेंगे और विश्वासी कहेंगे निस्सन्देह यही हानि उठानेहारे हैं उन्होंने आप ही हानि उठाई और अपने कुटुम्बियों को पुनरुत्थान के दिन हानि में डाला हां दुष्ट सदा के दण्ड में रहेंगे। (४५) उनके निमित ईश्वर के उपरान्त सहायता करने को कोई स्वामी न होंगे—और जिस किसी को ईश्वर भटकावे उसके निमित कहीं मार्ग नहीं। (४६) अपने प्रभु की आज्ञा मान प्रथम इसके कि वह दिवस जिसका ईश्वर की ओर से टलना असम्भव है उपस्थित हो उस दिन न तुमको कहीं शरण मिलेगी न मुकर ही सकोगे। (४७) सो यदि वह अलग रहें तो हमने तुमको उन पर रक्षक बना के नहीं भेजा तेरे सिर तो केवल सन्देश पहुंचा देना है और जब हम मनुष्य को अपनी ओर से दया चखाते हैं तो वह प्रसन्न होजाता है

* अर्थात कोई दोष नहीं।

और यदि उसके कारण से उन पर कुछ आपदा आती है जो उनके हाथों ने आगे उपार्जन करके भेजा निस्सन्देह कृतघ्न है। (४८) आकाशों और पृथ्वी में ईश्वर ही का राज्य है जो कुछ चाहता है उत्पन्न करता है जिसको चाहता है पुत्रियां देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है। (४९) अथवा उन्हें जोड़े देता है पुत्र और पुत्रियां और जिसे चाहता है बांझ बना देता है निस्सन्देह वह जानने हारा और पराक्रमी है। (५०) किसी मनुष्य के वश में नहीं कि ईश्वर से वार्तालाप करे केवल प्रेरणा से अथवा पट की ओट से। (५१) अथवा किसी प्रेरित को भेजदे सो वह उसकी आज्ञा से उसकी प्रेरणा में से जो कुछ वह चाहे पहुंचावे निस्सन्देह वह महान और बुद्धिवान है। (५२) और इसी भांति हमने अपनी आज्ञा से तेरी ओर एक आत्मा* को भेजा तू नहीं जानता था कि पुस्तक क्या वस्तु है और न यह कि विश्वास क्या है परन्तु हमने उसको ज्योति बना दिया और अपने भक्तों में जिसको चाहते हैं मार्ग दिखाते हैं और निस्सन्देह तू सीधे मार्ग की ओर शिक्षा देता है। (५३) उसके मार्ग की ओर जिसका है जो कुछ है आकाशों में और जो कुछ है पृथ्वी में हां ईश्वर ही की ओर समस्त कार्य्य फिरेंगे॥

४३ सूरए ज़ुख़रुफ़ (स्वर्णाभूषण) मक्की रुकू ७ आयत ८९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १ हम—(१) वर्णन करनेहारी पुस्तक की सौंह। (२) निस्सन्देह हमने उसे अरबी में कुरान बनाया जिस्तें तुम समझो। (३) और वह उमउल† किताब में है हमारे समीप महान और बुद्धिवाली। (४) क्या हम तुमको शिक्षा करने से रुकरहेंगे इस कारण कि तुम मर्याद से अधिक बढ़नेहारे लोग हो। (५) और हमने अगले लोगों पर भी बहुत से भविष्यद्वक्ता भेजे थे। (६) और उनके समीप ऐसा कोई भविष्यद्वक्ता नहीं आता था जिसकी उन्होंने हंसी न की हो। (७) सो हमने उनसे अधिक बलवानों को नाश कर दिया और अगलों का एक दृष्टान्त चला आता है। (८) यदि तू उनसे पूछे कि आकाशों और पृथ्वी को किसने उत्पन्न कर दिया तो अवश्य कहेंगे बलिष्ठ ज्ञानवान ने उत्पन्न किया है। (९) जिसने तुम्हारे निमित पृथ्वी को बिछौना बना दिया और उसमें तुम्हारे निमित

* अर्थात जिबराईल। † अर्थात पुस्तकों की माता. स्तोत्र १३९ : १६ ॥

मार्ग ठहराए जिस्सें तुम मार्ग पाम्रो। (१०) और जिसनें आकाशों से आवश्यकतानुसार पानी उतारा और फिर हमने उससे मरे हुए नग्र को जीवता कर दिया इसी रीति तुम भी फिर निकाल खड़े किए जाओगे। (११) और जिसने हर भांति के जोड़े उत्पन्न किए और तुम्हारे निमित नौकाएं और पशु बनाए जिन पर तुम चढ़ते हो। (१२) जिस्तें तुम उनकी पीठ पर चढ़ो और अपने प्रभु के वरदानों को स्मर्ण करो जब उन पर बैठ जाओ और कहो कि वह पवित्र है जिसनें उनको हमारे अधिकार में कर दिया और हम आप उनको वश में न लासकते थे। (१३) और निस्सन्देह हमको अपने प्रभु की ओर लौट जाना है। (१४) फिर भी उन्होंने उसके निमित उसके दासों में से अंश ठहराया निस्सन्देह मनुष्य प्रत्यक्ष कृतघ्न है॥

रु० २—(१५) क्या उसने अपने निमित सृष्टि में से पुत्रियां ठहरा लिईं और तुमको चुन कर पुत्र * दिए। (१६) जब उनमें से किसी को उस वस्तु † का जिसको रहमान के निमित बनाते हैं सन्देश दिया जाता है तो उसका मुंह काला होजाता है और हृदय क्रोधित होजाता है। (१७) क्या जो आभूषणों में पाला गया. वह झगड़े में बात भी न कहसके। (१८) और उन्होंने दूतों को जो रहमान के दास हैं स्त्रिएं ठहराया है क्या उन्होंने उनकी उत्पति को देखा है उनकी साक्षी लिखली जायगी और उनसे पूछपाछ की जायगी। (१९) और यह कहते हैं. यदि रहमान चाहता तो हम उनकी उपासना कभी न करते इनको इसकी कुछ सुध तो है नहीं निस्सन्देह वह तो केवल अटकल दौड़ाते हैं। (२०) क्या हमने इससे पहिले उन्हें कोई पुस्तक दी है जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हैं । (२१) वरन वह; कहते हैं कि निस्सन्देह हमने अपने पुरखों को एक विधि पर पाया और निस्सन्देह हम उन्हींके पद चिन्ह के अनुसार शिक्षा किए गए हैं। (२२) और ऐसेही हमने तुझसे पहिले किसी बस्ती में कोई डरानेहारा भेजा तो वहां के तृप्त लोगों ने कह दिया कि निस्सन्देह हमने अपने पुरखों को एक मार्ग पर पाया और हम उनके पद चिन्ह चलनेहारे हैं। (२३) कहदे क्या यदि मैं तुम्हारे समीप उससे भी उत्तम मार्ग लाऊं जिस पर तुमने अपने पुरखों को पाया वह कहेंगे निस्सन्देह जो तेरे साथ भेजा गया हम उसको अनअंगीकार करते हैं। (२४) फिर हमने उनसे पलटा लिया सो देख झुठलानेहारों का क्या अन्त हुआ॥

---

* अथवा तुमको पुत्रों के निमित चुन लिया। † अर्थात पुत्री का॥

रु० ३—(२५) और जब इबराहीम ने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि जिनको तुम पूजते हो निस्सन्देह मैं उनसे रहित हूं। (२६) उसके उपरान्त जिसने मुझे उत्पन्न किया सो वही मुझको मार्ग दिखायगा। (२७) और वह अपने पश्चात * इस बात को छोड़ गया कि कदाचित वह फिरें। (२८) वरन मैंने उनको और उनके पुरुषों को लाभ पहुंचाया यहांलों कि उनके समीप सत्य और स्पष्ट कहनेहारा प्रेरित आगया। (२९) और जब उनके समीप सत्य आया तो कहने लगे यहतो टोना है हम इसको न मानेंगे। (३०) और कहते हैं कि यह कुरान इन दो † बस्तियों के निवासियों में से किसी बड़े मनुष्य पर क्यों न उतरा। (३१) क्या हम तेरे प्रभु की दया को बांटनेहारे हैं हमने उनके बीच संसारिक जीवन में उनकी जीविका बांटदी और हमने उनमें एक को एक पर पदवी में ऊंचा किया जिस्तें कोई को कोई आधीन करें और मेरे प्रभु की दया उन सब वस्तुन से बढ़के है जिनको यह इकत्र कर रहे हैं। (३२) यदपि यह न होता कि सब लोग एक मार्ग पर होजावेंगे तो जो लोग रहमान से मुकरते हैं उनके घरों की छतें और उन पर चढ़ने की सीढ़ियां चांदी की। (३३) उनके घरों के द्वार और सिंहासन जिन पर यह ओसीसा लगाकर बैठते। (३४) सोने के और यह सब का सब कुछ नहीं है परन्तु संसारिक जीवन का असबाब है और अन्त का दिन तेरे प्रभु के निकट संयमियों के निमित उत्तम है॥

रु० ४—(३५) जो पुरुष रहमान की चर्चा से आंख चुराता है हम उस पर एक दुष्टात्मा स्थापन कर दिया करते हैं जो उनके संग बना रहता है। (३६) और निस्सन्देह वह उनको मार्ग से रोकते हैं और वह विचार करते हैं कि हम मार्ग पर हैं। (३७) यहां लों कि जब हमारे समीप आयगा तो कहेगा यदि मेरे और तेरे‡ मध्य में दो पूर्वों का अन्तर होता सो वह बुरा साथी है। (३८) और आज तुमको यह बात कुछ लाभ न देगी क्योंकि तुम दुष्ट थे निस्सन्देह तुम दण्ड में भी साझी हो। (३९) क्या तू बहरों को सुना सकता है अथवा अन्धे को मार्ग दिखा सकता है अथवा उसको जो प्रत्यक्ष भ्रम में है। (४०) सो जब हम तुझको उठावेंगे तो अवश्य उनसे पलटा लेंगे। (४१) अथवा हम तुझको वह दिखलावें जिसकी हमने उनसे प्रतिज्ञा की है क्योंकि निस्सन्देह हम इस पर शक्ति § रखते हैं। (४२) सो

---

* अर्थात अपने वंश में। † अर्थात मक्का और तायफ़। ‡ अर्थात दुष्टात्मा।

§ मोमिन ७७, अहज़ाब ९७, यूनस १७, अनकबूत ५१, साफ़ात १७५, राद ४२. इन आयतों के पढ़ने से विदित होताहै कि यह आयतें मक्का के अन्तिम समय में वर्णन कीगईं॥

जो तेरी ओर प्रेरणा कीगई है तू उसको दृढ़ थामले निस्सन्देह तू सीधे मार्ग पर है। (४३) और निस्सन्देह यह तो तेरे और तेरी जाति के निमित चर्चा है और अन्त को उनसे पूछपाछ होगी। (४४) और तू पूछ तुझसे पहिले जो प्रेरित हमने भेजे क्या हमने रहमान के उपरान्त और देव ठहराए थे कि उसकी स्तुति करें॥

रु० ५—(४५) और हमने मूसा को अपने चिन्हों सहित फ़िराऊन और उसके अध्यक्षों के तीर भेजा और उसने कहा निस्सन्देह मैं सृष्टियों के प्रभु की ओर से प्रेरित हूं। (४६) परन्तु जब वह उनके समीप हमारे चिन्हों सहित आया वह उनसे हंसी करने लगे। (४७) और जो चिन्ह हम उनको दिखाते गए वह दूसरे से बड़ा होता था और हमने उनको दण्ड में डाला जिस्तें पश्चाताप करें। (४८) और वह बोले हे टोनहे अपने प्रभु से प्रार्थना कर इस नियमानुसार जो तुझसे कर रखा है हम अवश्य शिक्षितों में होजायंगे। (४९) सो जब हमने उन से दण्ड हटा दिया तो उन्होंने उस समय अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी। (५०) और फ़िराऊन ने अपनी जाति से पुकारकर कहा हे मेरी जाति क्या मिसर का राज्य मेरा नहीं और यह धाराएं नहीं जो मेरे पाओं के नीचे बहती * हैं सो क्या तुम नहीं देखते। (५१) क्या मैं उससे उत्तम नहीं हूँ वह तो तुच्छ है। (५२) और अपनी बात को वर्णन भी नहीं करसकता। (५३) सो क्यों उसको सोने † के कड़े नहीं दिए जाते और दूत उसके संग पांति बांधकर नहीं आते। (५४) ऐसे ही उसने अपनी जाति गणों को मूर्ख बना दिया और वह उसके कहने में रहे निस्सन्देह वह अनाज्ञाकारी लोग थे। (५५) फिर जब उन्होंने हमको क्रोधित किया हमने उनसे बदला लिया और उन सब को डुबा दिया। (५६) और उनको भूला बिसरा और पिछले लोगों के निमित दृष्टान्त बनाया॥

रु० ६—(५७) और जब मरियम के पुत्र का दृष्टान्त बर्णन किया गया तो उस समय तेरी जाति तुरन्त उस पर तालियां बजाने लगी। (५८) और कहने लगे कि हमारे देव उत्तम ‡ हैं अथवा वह उन्होंने तुझसे यह बात दुष्टता की रीति पर कही क्योंकि यह झगड़ालू लोग हैं। (५९) वह केवल एक दास है कि हमने उस पर उपकार किया और उसको इसराएल के निमित एक दृष्टान्त बना दिया। (६०) और यदि हम चाहते तो तुममें से पृथ्वी में दूत बना देते जिस्तें कि दीवान हों। (६१) वह तो उस घड़ी का चिन्ह § है सो उसमें सन्देह न करो मेरे

---

* कसस ३९। † उत्पति ४१ : ४२। ‡ अम्बिया ९८। § अथवा वह उस घड़ी का झण्डा है॥

आधीन होओ यही सीधा मार्ग है। (६२) और तुमको शुत्रान सीधे मार्ग से न रोकदे वहतो तुम्हारा खुला शत्रु है। (६३) और जब ईसा स्पष्ट और प्रत्यक्ष चिन्हों के सहित आया उसने कहा कि मैं तुम्हारे समीप बुद्धि की बातें लेकर आया हूं जिस्तें जिन बातों में तुम विभेद करते हो उनका वर्णन करदूं सो ईश्वर से डरो और मेरे आधीन होओ। (६४) निस्सन्देह ईश्वर वही है जो मेरा और तुम्हारा प्रभु है उसी की अराधना करो यही सीधा मार्ग है। (६५) फिर जत्थाओं ने उसमें विभेद किया दुष्टों पर दुखदायक दण्ड के दिन का कैसा शोक। (६६) क्या वह उस घड़ीही की बाट जोहते हैं कि वह अचानक उन पर आजाय और उनको सुध * भी न हो। (६७) जितने मित्र हैं उस दिन कोई कोई के बैरी होजायेंगे केवल संयमियों के ॥

रु० ७—(६८) हे मेरे दासो आज के दिन तुम्हारे निमित भय नहीं और न तुम शोकित होओगे। (६९) जो हमारी आयतों पर विश्वास लाए और आज्ञाकारी रहे। (७०) बैकुण्ठ में प्रवेश करो तुम और तुम्हारी पत्नियें तुम्हारा आदरमान किया जायगा। (७१) उन पर स्वर्ण थालों और कटोरों के चक्र चलेंगे और जो प्राणी जिस वस्तु को चाहेगा उसमें उपस्थित होगी और आंखें स्वाद लेंगी और तुम उसमें सदा रहनेहारे हो। (७२) और यही वह बैकुण्ठ है जिसके तुम अधिकारी बनाए गए हो उसकी सन्ती जो तुमने किया है। (७३) उसमें तुम्हारे निमित बहुत फल हैं जिनमें से तुम खाते हो। (७४) निस्सन्देह अपराधी नर्क के दण्ड में सदा रहनेहारे हैं। (७५) और उनसे कुछ घटाया न जायगा और वह उसमें औंधे मुंह रहेंगे। (७६) और हमने उन पर अनीति नहीं की वरन वही दुष्ट बने रहे। (७७) और वह पुकारेंगे हे मालिक † तेरा प्रभु हमारा अंत करदे वह उत्तर देगा तुमतो यहां रहनेहारे हो। (७८) हमतो तुम्हारे समीप सत्य लेकर आए थे परन्तु बहुतेरे तुममें से घिन ही करते हैं। (७९) क्या उन्होंने कोई बात ठानली निस्सन्देह हम भी ठाननेहारे हैं। (८०) क्या वह विचार करते हैं कि हम उनके भेद और उनकी कानाफूसी को नहीं सुनते यद्यपि हमारे प्रेरित ‡ उनके संग संग लिखते जाते हैं। (८१) कहदे यदि रहमान के पुत्र होता तो मैं सबसे पहिले उसकी अराधना करनेहारों में होता। (८२) वह पवित्र है आकाशों और पृथ्वी का प्रभु है स्वर्ग का प्रभु है उन बातों से रहित है जो वह वर्णन करते हैं। (८३) सो उनको झगड़े और खेल करते हुए छोड़दे यहां लों कि वह

* हासिफ़हा १० । † अर्थात नर्क का अध्यक्ष । ‡ अर्थात दूत ॥

अपने इस दिन से मिल लें जिसकी उनसे प्रतिज्ञा कीगई है। (८४) वही आकाशों का ईश्वर है और पृथ्वी का भी ईश्वर है और वह बुद्धिवान जाननेहारा है। (८५) धन्य है वह जिसके निमित स्वर्गों और पृथ्वी का राज है और जो कुछ उन दोनों के बीच में है उसी का है और उस घड़ी का ज्ञान उसको है और उसी की ओर तुम लौट जाओगे। (८६) और जो उसके उपरान्त औरों को पुकारते हैं वह क्षमा कराने का अधिकार नहीं रखते केवल उनके जो सत्य साक्षी दे और जो जानते हैं। (८७) यदि तू उनसे पूछे कि किसने उनको उत्पन्न किया है सो कहेंगे ईश्वर ने सो फिर कहां से फिरे जाते हैं। (८८) और वह * जब यह कहता उसके इस कहने की सौंह कि हे मेरे प्रभु निस्सन्देह यह ऐसे लोग हैं कि बिश्वास नहीं लाते। (८९) सो तू उनसे मुह फेरले और कह प्रणाम है और अन्त को उन्हें जान पड़ेगा॥

४४ सूरए दुख़ान (धुआं) मक्की रुकू ३ आयत ५९।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—हम (१) प्रकाशित पुस्तक की सौंह। (२) हमही ने उसको धन्य रात्रि में उतारा निस्सन्देह हम डरानेहारे हैं। (३) उसमें समस्त बुद्धि के कार्य्य निर्णय किए जाते हैं। (४) हमारी ओर से एक आज्ञा के समान हम भेजनेहारे हैं। (५) तेरे प्रभु की दया से निस्सन्देह वही सुनने और जाननेहारा है। (६) आकाशों और पृथ्वी का प्रभु और जो कुछ उनके बीच में है यदि तुम बिश्वास करनेहारे हो। (७) उसके उपरान्त कोई देव नहीं जिलाता और मारता है तुम्हारा प्रभु है और तुम्हारे पूर्व्व पुरखों का। (८) बरन वह सन्देह में पड़े खेल रहे हैं। (९) सो तू उस दिन की बाट जोह जब आकाश एक प्रगट धुआं उपस्थित करेगा। (१०) जो लोगों को ढांप लेगा यह दुखदायक दण्ड है। (११) हे हमारे प्रभु हम पर से दण्ड दूर कर निस्सन्देह हम बिश्वासी हैं। (१२) अब उनको क्योंकर शिक्षा होगी जब कि उनके समीप स्पष्ट करनेहारा प्रेरित आचुका। (१३) फिर उन्होंने उससे मुंह मोड़ा और कहा कि यह सिखाया हुआ बावला है। (१४) † हम दण्ड को थोड़े दिनों के निमित हटादेते हैं तुम फिर वही करने लगते

* अर्थात महम्मद साहब। † विचार किया जाता है कि यह आयत मदीना में उतरी जिस दण्ड का वर्णन है वह मक्का के दुर्भिच्छ के विषय में जान पड़ता है॥

हो। (१५) जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़से निस्सन्देह हम पलटा लेनेहारे हैं। (१६) और हम उनसे पहिले फ़िराऊन की परिक्षा कर चुके जब कि उनके समीप आदर योग प्रेरित आया। (१७) कि मेरे साथ ईश्वर के दासों को भेजदो निस्सन्देह मैं तुम्हारे निमित विश्वास योग्य प्रेरित हूं। (१८) ईश्वर के विरुद्ध विरोध न करो निस्सन्देह मैं तुम्हारे समीप ज्योतिमय प्रमाण लेकर आया हूं। (१९) निस्सन्देह मैं शरण मांगता हूं अपने और तुम्हारे प्रभु से कि तुम मुझको पत्थरवाह करो। (२०) यदि तुम मेरा विश्वास नहीं करते तो मुझसे अलग होजाओ। (२१) फिर उसने अपने प्रभु को पुकारा कि निस्सन्देह यह अपराधी लोग हैं। (२२) मेरे दासों को लेकर कुछ रात से निकल निस्सन्देह तुम्हारा पीछा किया जायगा। (२३) परन्तु समुद्र को ठहरा हुआ छोड़ जाओ निस्सन्देह वह सेनाएं डुबाई जायंगी। (२४) वह बहुत बारीं और सोते छोड़गए। (२५) खेतियां और उत्तम भवन। (२६) और विश्राम का अटाला जिसमें भोग विलास करते थे। (२७) ऐसा हुआ कि हमने दूसरे लोगों को उन वस्तुओं का अधिकारी बना दिया। (२८) और उन पर आकाश और पृथ्वी न रोए और न उनको अवसर दिया गया॥

रु० २—(२९) और इसराएल वंश को हमने उपहास के दण्ड से रहित किया। (३०) फ़िराऊन से निस्सन्देह वह बहुत ही विरोधी अपराधी था। (३१) और हमने उनको जानते हुए सृष्टियों के निमित चुन* लिया। (३२) और उनको चिन्ह दिए जिनमें स्पष्ट परिक्षा थी। (३३) निस्सन्देह यह लोग कहते हैं। (३४) यह तो हमारी पहिली मृत्यु है और फिर हम जीवते उठाए न जायंगे। (३५) अच्छा ले आओ हमारे पुरखों को यदि तुम सत्यवादी हो। (३६) क्या यह उत्तम हैं अथवा तुब्बा की जाति। (३७ और जो लोग उनसे पहिले थे उनको नष्ट कर दिया निस्सन्देह वह अपराधी थे। (३८) और हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच में है खेलते हुए नहीं बनाया। (३९) हमने उनको यथार्थ बनाया परन्तु उनमें से बहुतेरे लोग नहीं जानते। (४०) निस्सन्देह उन सबके निमित विचार का दिवस स्थापित है। (४१) उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ अर्थ न आयगा न उनकी सहायता कीजायगी। (४२) परन्तु जिस पर ईश्वर दयाकरे कि वही बलिष्ठ दयावन्त है॥

रु० ३—(४३) ज़कूम † का पेड़। (४४) अपराधियों ‡ का भोजन है। (४५) पिघली हुई धातु की नाईं पेटों में फिनाता है। (४६) जैसे उफनता हुआ

---

* साफ़ात १०. † सेंहुड़ अथवा थूहर का पेड़। ‡ अबूजहल की ओर सूचना है॥

पानी। (४७) इसको पकड़ो और घसीटते हुए नर्क के बीचोबीच लेजाओ। (४८) फिर उसके सिर पर खौलते हुए पानी का दण्ड डालो। (४९) चख निस्सन्देह तू बड़ा बलवन्त महान बना हुआ था। (५०) यह वही है जिसके विषय में सन्देह करते थे। (५१) निस्सन्देह संयमी शान्ति के घरों में।' (५२) बैकुण्ठों और सोतों में। (५३) झीने रेशमी और मोटे कपड़े पहिरे हुए आमने साम्हने बैठे होंगे। (५४) इसी रीति होगा और हम बड़ी बड़ी आंखवाली हूरों से उनका विवाह करदेंगे। (५५) वहां शांति में हर प्रकार के फल मांग रहे होंगे। (५६) इसमें पहिली मृत्यु के उपरान्त और मृत्यु न चाखेंगे और उन्हें हम नर्क के दण्ड से बचालेंगे। (५७) यह तेरे प्रभु का अनुग्रह है और यही बड़ा मनोर्थ है। (५८) हमने इसको तेरी जीभ पर सहज कर दिया जिस्तें वह विचार करें। (५९) सो तू बाट जोह और वह भी बाट जोहनेहारों में हैं॥

---

४५ सूरए जासिया (दण्डवत करना) मक्की रुकू ४ आयत ३६।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—हम् (१) इस पुस्तक का उतरना बलवन्त बुद्धिवान की ओर से है। (२) बिश्वासियों के निमित आकाशों और पृथ्वी में चिन्ह हैं। (३) तुम्हारी और पशुओं की उत्पति में जिनको वह फैलाता है बिश्वास लानेहारों के निमित चिन्ह हैं। (४) और रात्रि और दिवस के परिवर्तन में और उस जीविका में जो ईश्वर आकाशों से उतारता है और उससे पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवता करता है और पवनों के बदलने में बिश्वास करनेहारों के निमित चिन्ह हैं। (५) यह ईश्वर के चिन्ह हैं कि तुझे हम ठीक २ सुनाते हैं कि ईश्वर और उसके चिन्हों के पश्चात किस बात पर बिश्वास लायंगे। (६) प्रत्येक झूठे पापी की दुर्दशा है। (७) जो ईश्वर की आयतें सुनकर जो उसके तीर भेजी गईं अभिमान में आकर हठ करता है मानों उसने सुनाही नहीं था सो उसको दुख देनेहारे दण्ड का समाचार सुनादे। (८) और जब हमारी आयतों में से किसी का समाचार पाता है वह उनकी हंसी करता है उसके निमित उपहास का दण्ड है। (९) यह हैं उनके आगे नर्क है और जो कुछ उन्हों ने उपार्जन किया उनके कुछ भी अर्थ न आया न वह जिनको ईश्वर के उपरान्त स्वामी बना रखा था उनके निमित भारी दण्ड है। (१०) यह है शिक्षा जो अपने प्रभु की आयतों से मुकरे उनके निमित दण्ड और दुख देनेहारी मार है॥

रु० २ –(११) ईश्वर ही है जिसने समुद्र को तुम्हारे वश में कर दिया जिस्तें उसमें उसकी आज्ञा से नौकाएं चलें जिस्तें तुम उसके अनुग्रह को ढूंढो कदाचित तुम धन्यवादी बनो। (१२) और उसने आकाशों और पृथ्वी की सब वस्तुन को अपनी ओर से तुम्हारे वश में कर दिया निस्सन्देह इस में विचार करनेहारों के निमित चिन्ह हैं। (१३) विश्वासियों से कहदे जो ईश्वर के दिनकी आशा नहीं रखते उनको क्षमा करदें जिस्तें वह उन लोगों को जो कुछ वह उपार्जन करते थे पलटावें।, (१४) जो कोई सुकर्म करता है तो अपने ही प्राण के निमित और जो कोई बुरा करता है वह उसी के निमित है फिर तुम अपने प्रभु की ओर लौट करजाओगे। (१५) और निस्सन्देह हमने इसराएल वंशको पुस्तक और आज्ञा और भविष्यद्वाक्य दिया और पवित्र वस्तुन की जीविका दी और उनको सृष्टियों पर उपमा दी। (१६) और उनको आज्ञा में खुली आयतें दीं फिर उन्होंने ज्ञान पाने के पीछे केवल परस्पर वैर के कारण विभेद किया निस्सन्देह तेरा प्रभु पुनरुत्थान के दिन उनमें उस विषय का निर्णय करदेगा जिसमें वह विभेद करते थे। (१७) फिर हमने तुझको मत की व्यवस्था पर स्थिर कर दिया सो तू उसका अनुगामी हो और उनकी इच्छाओं का अनुगामी न हो जो जानते नहीं। (१८) निस्सन्देह वह ईश्वर के विरुद्ध तेरे कुछ भी अर्थ न आवेंगे और दुष्ट लोग परस्पर एक दूसरे के स्वामी * हैं और संयमियों का स्वामी तो ईश्वर है। (१९) यह सूझकी बातें हैं जो लोगों के निमित शिक्षा और दया निश्चय करनेहारे लोगों के निमित। (२०) क्या वह लोग जो कुकर्म करते हैं ऐसा विचार करते हैं कि हम उनको उनके तुल्य करदेंगे जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए कि उनका जीना और मरना समान होजाय यह तो वह एक बुरा निर्णय करते हैं॥

रु० ३—(२१) ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और प्रत्येक प्राणी को उसकी उपार्जनानुसार पलटा दिया जायगा और उन पर अनीति न होगी। (२२) तूने उसको देखा जिसने अपनी कल्पना को अपना देव बनालिया और ईश्वर ने उसको अपने ज्ञानानुसार भटका दिया और उसके कान और हृदय पर छापकरदी और उसके नेत्रों पर पट डालदिया सो कौन ईश्वर के पश्चात उसकी अगुवाई कर सकता है क्या तुम नहीं सोचते। (२३) और उन्हों ने कहा कि हमारा जीवन इसी संसार का है हम मरते हैं और जीते हैं हमको कोई नाश नहीं करता परन्तु समय और उनको इसका कुछ ज्ञान नहीं निस्सन्देह वह तो

* अर्थात वली॥

केवल अटकल दौड़ाते हैं। (२४) और जब हमारी आयतें उन पर स्पष्ट पढ़ी जाती हैं तो वह भी वादविवाद करते हैं कि लेआओ हमारे पुरखों को यदि तुम सांचे हो (२५) कहदे कि ईश्वर ही तुमको जिलाता है फिर मारता है फिर इसमें सन्देह नहीं कि पुनरुत्थान के दिन तुमको इकत्र * करेगा परन्तु बहुतेरे लोग नहीं जानते ॥

रु० ४—(२६) आकाशों और पृथ्वी का राज्य ईश्वर ही का है और जिस दिन वह घड़ी स्थिर होगी उस दिन असत्य ठहरानेहारे लोग हानि उठानेहारों में होंगे। (२७) और तू प्रत्येक जाति को घुटनों के बल गिरेहुए देखेगा हर जाति अपनी पुस्तक की ओर बुलाई जायगी आज के दिन तुमको उसीका प्रतिफल मिलेगा जो तुम किया करते थे। (२८) यह हमारी पुस्तक है जो तुमको सत्य सत्य बतलाती है निस्सन्देह हमने लिख रखा जो कुछ तुम करते थे। (२९) जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनका प्रभु उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा यही प्रत्यक्ष मनोर्थ पाना है। (३०) और जिन लोगों ने अधर्म्म किया क्या तुम पर मेरी आयतें न पढ़ी जाती थीं तुम घमंडी और कुकर्म्मी थे। (३१) और जब उनसे कहा जाय कि निस्सन्देह ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य है और उस घड़ी † में कुछ सन्देह नहीं तो तुमने यही कहा कि हम नहीं जानते कि वह घड़ी क्या है जैसे अनुमान होते हैं हम उसका भी अनुमान करते हैं परन्तु हमको प्रतीत नहीं। (३२) और उनके कर्म्मों की बुराई उन पर प्रगट होगी और जिस पर वह ठट्ठा किया करते थे वह उन्हीं पर उलट पड़ा। (३३) और उनसे कहा जायगा कि आज तुम भी भुला दिए गए जैसा तुमने आज के दिन मिलने को भुला दिया था तुम्हारा ठिकाना अग्नि है और तुम्हारा कोई सहायक नहीं। (३४) यह इस कारण है कि तुमने ईश्वर की आयतों को हंसी ठहरा लिया और तुमको संसारिक जीवन ने धोका दिया सो आज तुम वहांसे निकाले न जाओगे और न तुम पर उपकार ‡ किया जायगा। (३५) सो सर्व महिमा ईश्वर ही के निमित है जो आकाशों और पृथ्वी और सृष्टियों का प्रभु है। (३६) और आकाशों और पृथ्वी में उसीकी बड़ाई है और वह बलवान और बुद्धिवान है ॥

---

* मती २४ : ३१। † सूरए मरियम ३४। ‡ अर्थात तुम चंगा न किए जाओगे ॥

४६ सूरए अहक़ाफ़ मक्की रुकू ४ आयत ३५ ।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १ हम—(१) यह पुस्तक बलवान बुद्धिमान ईश्वर की ओर से उतरी है। पारा २६. (२) हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच में है यथार्थ उत्पन्न किया और एक ठहराए हुए समय लों के हेतु और जो मुकरते हैं उससे मुंह फेर लेते हैं जिससे तुम्हें डराया जाता है। (३) कहदे क्या तुमने उन पर विचार किया कि जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पुकारते हो मुझको दिखाओ कि पृथ्वी में उन्होंने क्या उत्पन्न किया है अथवा आकाशों में उनका कोई साझा है मेरे तीर इससे पहिले की कोई पुस्तक लेआओ अथवा ज्ञान में से कोई कहावत* लाओ यदि तुम सत्यवादी हो। (४) और उससे अधिक भटका हुआ कौन है जो ईश्वर के उपरान्त ऐसे को पुकारता है कि जो उसको पुकारने का उत्तर पुनरुत्थान के दिन लों न देसकें और वह उनके पुकार ने से अचेत हैं। (५) और जब लोग इकत्र किए जायंगे तो उनके वैरी† होजायंगे और उनकी उपासना को मुकरेंगे। (६) और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो अधर्म्मी सत्य के विषय में जब कि उनके समीप आ चुका कहते हैं यह तो प्रत्यक्ष टोना है। (७) क्या वह कहते हैं कि इसको उसने बना लिया है तो तुम ईश्वर के सन्मुख मेरा कुछ भला नहीं करसकते वह भलीभांति जानता है जो कुछ तुम उसके विषय में कहते हो मेरे और तुम्हारे बीच वही साक्षी बस है और वह क्षमा करनेहारा और दयालु है। (८) प्रेरितों में मैं ही कुछ अनोखा नहीं मैं तो यह भी नहीं जानता कि मुझसे क्या किया जावेगा और तुमसे क्या किया जावेगा निस्सन्देह मैं तो उसीका अनुगामी हूं जो मेरी ओर प्रेरणा होती है और मैं स्पष्ट रीति से डर सुनाता हूं। (९) कह क्या तुमने विचार किया कि यदि यह ईश्वर की ओर से हो और तुम उससे अधर्म्मी होचुके और इसराएल वंश का एक साक्षी ‡ उसके पक्ष में साक्षी देकर विश्वास लाया और तुमने अभिमान किया निस्सन्देह ईश्वर दुष्ट जाति की अगुवाई नहीं करता॥

रु० २—(१०) और अधर्म्मी विश्वासियों के विषय में कहनेलगे यदि यह उत्तम होता तो उस पर हमसे पहिले न दौड़कर § जाते और जब उनको इससे

---

* अर्थात हदीस। † अर्थात देवता मनुष्यों के बैरी होजायंगे। ‡ अबदुल्ला बिन सलाम मदीना निवासी एक यहूदी था वह महम्मद साहब पर विश्वास लाया था। § युहन्ना ७ : ४८ ॥

शिक्षा न हुई तब वह कहते हैं यह तो पुरानी भांति का झूठ है। (११) इससे पहिले मूसा की पुस्तक अगुवा थी और यह पुस्तक अरबी भाषा में उनकी सिद्ध करनेहारी है जिस्तें पापियों को डराए और सुकर्म्मियों को सुसमाचार सुनाए। (१२) निस्सन्देह वह जो कहते हैं कि हमारा प्रभु ईश्वर है फिर उस पर स्थिर रहते हैं तो उन्हें न कुछ भय है और न शोकित होंगे। (१३) यही लोग बैकुण्ठ बासी हैं उसमें सदा रहेंगे यह उसका बदला है जो वह किया करते थे। (१४) और हमने मनुष्य को शिक्षा दी कि अपनी माता पिता से दयानुसार व्यवहार करे उसकी माता ने उसको कष्ट से ओदर में रखा और उसे कष्ट से जना उसका गर्भ और दूध छुड़ाना तीस मास है यहांलों जब वह अपनी तरुणाई को पहुंचता है और चालीस वर्ष को पहुंचता है तो कहने लगता है कि हे मेरे प्रभु मुझे सहायता दे कि तेरे उन उपकारों का धन्यवाद करूं जो उपकार तूने मुझ पर किए और मेरे माता पिता पर और यह कि मैं ऐसे सुकर्म्म करूं जो तुझे भावें मेरी सन्तान को मेरे निमित भला बना निस्सन्देह मैं तेरी ओर अवलंबित होता हूं और निस्सन्देह मैं मुसलमानों में हूं। (१५) यह लोग हैं कि जिनके सुकर्म्मों को जो वह करते हैं हम ग्रहण करते हैं और उनकी बुराइयों को हम क्षमा करते हैं वह बैकुण्ठ बासियों में होंगे उस सत्य प्रतिज्ञा के हेतु जो उनसे कीजाती थी (१६) परन्तु वह जिसने अपने माता पिता से कहा तुम पर फिटकार क्या तुम मुझे इस बात की प्रतिज्ञा सुनाते हो कि मैं फेर निकलूंगा * जब कि मुझसे पहिले बहुतेरी जाति बीत चुकीं तब वह दोनों ईश्वर से बिन्ती करते हैं कि तुझपर शोक—विश्वास ला निस्सन्देह ईश्वर की प्रतिज्ञा सत्य है तब कहता है यह तो अगलों कि कहानियां हैं। (१७) यह हैं कि जिन पर बाचा † पूरी होचुकी उन जातियों सहित जो उनसे पहिले बीत चुकीं मनुष्यों और जिन्नों में निस्सन्देह वह हानि उठानेहारों में हैं। (१८) सबके निमित पदवी हैं उनके कर्म्मों के अनुसार जिस्तें उनके कर्म्मों पर उन्हें पूरा पूरा बदला मिले और उन पर कुछ अनीति न होगी। (१९) और जिस दिन अधर्म्मी अग्नि के सन्मुख लाए जायेंगे तुमतो अपने संसारिक जीवन में स्वाद लेचुके और उनसे लाभ उठाचुके सो आज तुमको उपहास के दण्ड से दण्ड दिया जायगा क्योंकि तुम पृथ्वी में अनर्थ घमंड करते इस कारण कि तुम कुकर्म्मी थे॥

---

* मर के समाधि से जीवता होऊंगा। † अर्थात दण्ड की॥

रु० ३—(२०) आद के भाई को स्मर्ण कर जब उसने अपनी जाति को अहक़ाफ़ * में डराया और उसके आगे पीछे डरानेहारे आचुके ईश्वर को छोड़ किसी की अराधना न करो मैं निस्सन्देह तुम्हारे निमित एक दिन के दण्ड से संशय करता हूं। (२१) वह कहने लगे क्या तू हमारे समीप इस हेतु आया है कि हमको हमारे दैवों से फेरदे सो उसको अब लेआ जिससे तू हमें डराता है यदि तू सत्यवादी है। (२२) वह बोला इसका ज्ञान तो केवल ईश्वरही को है और मैं तुमको पहुंचाए देता हूं जो मेरे साथ भेजा गया है परन्तु मैं देखरहा हूं कि तुम मूर्ख लोग हो। (२३) और जब उन्होंने उसे देखा कि एक मेघ में से उनकी स्पष्ट भूमियों की ओर चला आरहा है तो बोले यह तो मेघ है हम पर बर्सेगा— नहीं यह तो वही है जिसके हेतु तुम शीघ्रता करते थे एक प्रचंड बयार इसमें दुःख देनेहारा दण्ड है। (२४) उखाड़ फेंकेगी हर वस्तु को अपने प्रभु की आज्ञा से और भोर के समय उनके घरों को छोड़ और कुछ दिखाई न पड़ता था अपराधियों को हम इसी भांति दण्ड दिया करते हैं। (२५) और निस्सन्देह हमने उनको ऐसे कार्यों की शक्ति दी थी जो तुमको नहीं दी और उनको कान और आंख और हृदय दिए थे परन्तु न उनके कान न आंखें न हृदय उनके कुछ अर्थ आए जब कि ईश्वर की आयतों से वह मुकरे और जिसका वह ठट्ठा करते थे उसी ने उनको घेर लिया॥

रु० ४—(२६) निस्सन्देह हमने बहुत सी बस्तियां जो तुम्हारे आस पास हैं नष्ट करदीं और हमने अपनी आयतें फेर फेर के वर्णन कीं जिस्तें वह अवहित हों। (२७) सो उन्होंने उनकी सहायता क्यों न की जिनको उन्होंने ईश्वर के उपरान्त उससे संगत प्राप्त करने को दैव ठहराया था बरन वह तो उनसे खोगए यही था उनका झूठ जो वह बंधक बांधकर कहते थे। (२८) और जब हमने तेरी ओर जिन्नों में से एक जत्था को अवहित किया जो क़ुरान सुनते थे और जब वह उपस्थित † थे बोले चुपरहो सो जब समाप्त होचुका तो अपनी जाति की ओर डराने के निमित चले गए। (२९) वह बोले हे हमारी जाति हमने एक पुस्तक सुनी है जो मूसा के पश्चात उतारी गई जो अपने से पहिले को सिद्ध करनेहारी है जो सत्यता और सत्य मार्ग की शिक्षा करती है। (३०) हे हमारी जाति उसकी सुनो जो ईश्वर की ओर से बुलानेहारा है उस पर विश्वास लाओ

* यमन में एक बहुत बड़ा मैदान है. आयत २० से ३१ तक एक ऐसा टुकड़ा है जो यहां बेजोड़ जानपड़ता है। † अर्थात क़ुरान पढ़ते समय॥

और वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा करदेगा और तुमको दुखदायक दण्ड से बचावेगा। (३१) और जो ईश्वर की ओर बुलानेहारे की नहीं सुनता वह पृथ्वी में भाग कर नहीं हरा सकता न उसके निमित ईश्वर के उपरान्त सहायक हैं वही प्रत्यक्ष भ्रम में हैं। (३२) क्या वह नहीं देखते कि जिस ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और उनके उत्पन्न करने में नहीं थका वह इस पर भी शक्ति रखता है कि मृतकों को जिलाए निस्सन्देह वह हर वस्तु पर शक्तिवान है। (३३) जिस दिन अधर्मी अग्नि के सन्मुख लाए जायेंगे क्या सत्य नहीं वह कहेंगे अपने प्रभु की सौंह अवश्य सत्य है वह कहेगा सो अब दण्ड को चाखो उस अधर्म की सन्ती जो तुम किया करते थे। (३४) सो तू धीरज धर जैसा साहसी प्रेरितों ने धीरज धरा और उनके निमित शीघ्रता न कर वह लोग जिस दिन उस वस्तु को देख लेंगे जिसकी उनसे प्रतिज्ञा कीजाती है। (३५) कि जैसे एक घड़ी दिन से अधिक नहीं ठहरे यह संदेश है वही नाश होंगे जो कुकर्मी हैं॥

---

४७ सूरए * महम्मद मदनी रुकू ४ आयत ४०।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) जो अधर्म करते हैं और लोगों को ईश्वर के मार्ग से फेरते हैं उनके कर्म नष्ट कर दिए गए। (२) और जो विश्वास लाए और सुकर्म करता रहे और उस पर विश्वास लाए जो महम्मद पर उतरा है वह उनके प्रभु की ओर से यथार्थ है वह उनकी बुराइयां उनसे दूर करेगा और उनकी दशा को सुधारेगा। (३) यह इस निमित है जो अधर्मी हैं वह असत्य के पीछे चलते हैं और वह जो विश्वास लाए वह सत्य के अनुगामी हैं जो उनके प्रभु की ओर से है ईश्वर इसी भांति लोगों के निमित दृष्टान्त वर्णन करता है। (४) और जब तुम्हारा अधर्मियों से साम्हना हो तो उनके सिर काटो † यहांलों कि जब उनमें भली भांति लोहू बहा चुको फिर उनको दण्ड बांधलो। (५) फिर इसके पश्चात उपकार से अथवा त्राण मूल्य लेके छोड़दो यहांलों कि लड़ाई समाप्त होजाय इसी रीति यदि ईश्वर चाहे तो इनसे पलटा ले यह इस निमित है कि तुममें से किसी को

---

* यह सूरत बदर की युद्ध के विजय के पश्चात उतरी। † इनकी इस आज्ञा को बदर की युद्ध के सम्बन्ध में ही विचार करते हैं परन्तु शाफ़ई हर समय के निमित॥

किसी से परखे और जो ईश्वर के मार्ग में घात हुए तो वह कभी उनके कर्म्मों को क्षीण न करेगा। (६) उनकी शिक्षा करेगा और उनकी दशा को सुधारेगा। (७) और उन्हें बैकुण्ठ में प्रवेश देगा जिसका वर्णन उसने उनके निमित करादिया है। (८) हे विश्वासियो यदि तुम ईश्वर की सहायता करो तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पांओं को स्थिर रक्खेगा। (९) और जिन्होंने अधर्म्म किया वह लड़खड़ायंगे और उनके कर्म्मों को नष्ट कर देगा। (१०) यह इस निमित है कि जो कुछ ईश्वर ने उतारा उससे उन्होंने मुँह मोड़ा सो उसने उनकी क्रियाओं को नाश कर दिया। (११) सो क्या वह पृथ्वी में नहीं फिरे और नहीं देखा कि उनसे पहिलों की क्या दशा हुई ईश्वर ने उनको नाश कर दिया और अधर्म्मियों के निमित उसी के समान * है। (१२) यह इस निमित कि ईश्वर विश्वासियों का मित्र है और अधर्म्मियों का कोई मित्र नहीं॥

रु० २ –(१३) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और जिन्हों ने सुकर्म किए ईश्वर उनको बैकुण्ठ में प्रवेश देगा जिसके नीचे धारें बहती हैं जिन्होंने अधर्म किया वह पशुओं की नाईं आनन्द करते और खाते हैं उनका ठिकाना अग्नि है। (१४) और बहुतेरी बस्तियां तेरी इस बस्ती की अपेक्षा से जिसने तुझे निकाल † दिया बल में अधिक थीं उनको नाश कर दिया और उनका कोई सहायक न हुआ। (१५) सो क्या जो पुरुष अपने प्रभु की ओर स्पष्ट शिक्षा पर है वह उसके तुल्य है जिसे बुरे कर्म अच्छे करके दिखाए गए और जो अपनी इच्छाओं का अनुगामी हुआ। (१६) बैकुण्ठ का दृष्टान्त जिसकी वाचा संयमियों से की गई यह है कि उसमें जल की धाराएँ हैं जिनका स्वाद नहीं बिगड़ता और मदिरा की धाराएं जिससे पीने हारों को आनन्द आता है। (१७) और स्वच्छ करे हुए मधु की धारायें और उसमें उनके निमित हर प्रकार के फल हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है क्या उसके तुल्य हैं जो सदा अग्नि में रहनेहारा है और जिसको खौलता हुआ पानी पिलाया जाता है जो उसकी आंतों को काट डालता है। (१८) उनमें से एक ऐसा भी है जो तेरी वार्ता सुनता है यहां लों कि जब वह बाहर गए तो विद्यावानों से कहने लगे कि उसने आज क्या कहा था यही हैं जिनके हृदयों पर छाप लगादी और यही अपनी इच्छाओं के अनुगामी होगए। (१९) परन्तु वह जो शिक्षित हैं वह उनको अधिक शिक्षा करता है और उनको ईश्वरस्वी देता है। (२०) सो क्या वह उस घड़ी की बाट जोहते हैं और वह अचानक उन पर आजायगी और

* अर्थात क्लेश। † अर्थात महम्मद साहब को मक्का से निकाल दिया॥

उसके चिन्ह तो आचुके सो जब वह आचुकेगी तो उनको विचार करना कैसे लाभ दायक होगा। (२१) सो जानता रह कि ईश्वर को छोड़ कोई देव नहीं अपने पापों की क्षमा मांग और विश्वासी पुरुषों और स्त्रियों के निमित भी ईश्वर तुम्हारे चलने और फिरने और ठिकाने को जानता है ॥

रु० ३—(२२) और विश्वासी कहते हैं क्यों न कोई सूरत उतरी फिर जब स्पष्ट सूरत उतरेगी और उसमें लड़ाई की आज्ञा होगी तो देखलेना जिनके मनों में रोग है तेरी ओर येसे देखेंगे जैसे कोई मृत्यु की अचेत दशा में देखता है फिर उनकी दुर्दशा है आधीनी और अच्छी बात कहना चाहिए। (२३) सो जब कार्य ठन जाय यदि वह सच्चे रहें तो उनके निमित भलाई है। (२४) सो क्या यदि तुम फिर जाओ तो क्या पृथ्वी में उपद्रव करो और अपनी नातेदारियों की लाज तोड़ दो। (२५) यही हैं जिन पर ईश्वर ने स्राप किया और उन्हें बहरा कर दिया और उनके नेत्रों को अंधा कर दिया। (२६) सो क्या वह कुरान पर ध्यान नहीं करते क्या हृदयों पर ताले जड़े हुए हैं। (२७) निस्सन्देह जो शिक्षा पाने के पश्चात अपनी पीठों पर फिर गए उनके निमित शिक्षा स्पष्ट रीति से प्रगट हो चुकी और दुष्टात्मा ने उनको भर्माया उनको अवसर दिया गया है। (२८) यह इस निमित है कि उन्हों ने उनसे कहा जिन्होंने उन बातों से घिन प्रगट की जो ईश्वर ने उतारीं कि हम कोई २ बातों में तुम्हारे अनुगामी होंगे और ईश्वर उनकी गुप्त बातों को जानता है। (२९) क्या दशा होगी जब दूत उनके प्राण निकालेंगे और उनके मुहों और उन की पीठों पर चोटें लगायेंगे। (३०) यह इस कारण है कि वह उसके अनुगामी हुए जिससे ईश्वर को घिन है और उसकी प्रसन्नता को बुरा समझा सो उसने उनकी क्रियों को मेट दिया ॥

रु० ४—(३१) जिन लोगों के मनों में रोग है विचार करते हैं कि ईश्वर उनके बैर को प्रगट न करेगा। (३२) और यदि हम चाहते तो तुझे उनकी दशा दिखा देते और तू उनको उनके माथे से पहचान लेता और उनकी बातांलाप के ढंग * से भी तू उनको पहचान लेगा ईश्वर तुम्हारे कर्म्मों को जानता है। (३३) और हम तुम को परखेंगे यहांलों कि तुम में से युद्ध करनेहारे और धीरज धरनेहारे को जानलें और हम तुम्हारे समाचार प्रगट करदेंगे। (३४) निस्सन्देह जो अधर्मी हैं और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं और शिक्षा के पश्चात जो

* मकर ५६ ॥

उन पर प्रगट हुई प्रेरित को दुःख दिया वह ईश्वर को कुछ भी हानि न पहुंचा सकेंगे वह उनके कर्मों का नाश कर देगा। (३५) हे विश्वासियो तुम ईश्वर की सेवा करो और प्रेरित की सेवा करो और अपने कर्म्मों को वृथा न ठहराओ। (३६) निस्सन्देह जिन्हों ने अधर्म किया और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका और अधर्म ही में मारे गए उनको ईश्वर कभी न क्षमा करेगा। (३७) सो आलसी मत होओ और मेल की ओर पुकारो तुमही प्रबल रहोगे क्योंकि ईश्वर तुम्हारे साथ है वह तुम्हारे कर्मों में से कभी कुछ न घटावेगा। (३८) संसारिक जीवन तो केवल खेलक्रीड़ा है यदि तुम बिश्वास लाओ और ईश्वर से डरो वह तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल देगा और तुम से तुम्हारा धन न चाहेगा। (३६) यदि वह तुम से उनको मांगे और तुमको संकेती में डालें तो तुम कृपणता करने लगोगे और वह तुम्हारे बैर को प्रगट करदें। (४०) देखो तुमको बुलाया जाता है जिस्तें तुम ईश्वर के मार्ग में व्यय करो और जो कोई तुम में ऐसा है जो कृपणता करता है तो वह अपने ही प्राण से कृपणता करता है ईश्वर तो धनी है और तुम दरिद्री हो और यदि तुम पीठ फेरोगे तो ईश्वर तुम्हारी सन्ती और लोगों को लावेगा और वह तुम्हारे समान न होंगे॥

४८ सूरए फ़तह* (जय) मदनी रुकू ४ आयत २९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) निस्सन्देह हमने तुझको स्पष्ट जय दी। (२) जिस्तें ईश्वर तेरे अगले और पिछले पापों को क्षमा करदे और अपने उपकारों को तुझ पर पूरा करदे और तुझे सीधे मार्ग की शिक्षा दे। (३) और ईश्वर तेरी सहायता करे बड़ी सहायता से। (४) वही है जिसने विश्वासियों के हृदयों में सन्तोष† डाला जिसतें उनके विश्वास के साथ विश्वास और अधिक होजाय आकाशों और पृथ्वी की सेना ईश्वर ही की हैं और ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (५) जिसतें विश्वासी पुरुषों और विश्वासी स्त्रियों को बैकुण्ठों में प्रवेश दे जिनके नीचे धारें निकल के बहती हैं वह उसमें सदा रहेंगे उनसे उनकी बुराई दूर कर दीजायगी और यह उसके निकट बड़ी सफलता है। (६) धर्मकपटी पुरुषों और धर्मकपटी स्त्रियों साझी ठहराने पुरुषों और साझी ठहरानेहारी स्त्रियों को

* यह सूरत सन् ६ हिजरी में उतरी है हुदेबा की युद्धकी सन्धि के थोड़ेही समय पश्चात।
† असल में सकीना॥

दण्ड देगा जो ईश्वर के विषय में कुविचार करते हैं उन पर बुराई का घेरा है और ईश्वर उस पर कोपित है और उनको स्राप दिया है उनके निमित नर्क उद्यत है वह बहुत बुरा स्थान है। (७) आकाशों और पृथ्वी की सेनाएं ईश्वर ही की हैं ईश्वर बलवन्त बुद्धिवान है। (८) निस्सन्देह हमने तुझको साक्षी देनेहारा और सुसमाचार सुनानेहारा और डरानेहारा करके भेजा है। (९) जिस्तें तुम ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वास लेआओ और उसकी सहायता करो और उसका आदर करो भोर और सांझ को उसका जाप करो। (१०) निस्सन्देह जो लोग तुझसे हाड़ करते हैं ईश्वर का हाथ उनके हाथ पर है सो जिसने नियम को तोड़ा वह अपने ही निमित तोड़ता है और जिसने नियम जो ईश्वर के संग बांधा था वह पूरा किया ईश्वर उसको बहुत बड़ा प्रतिफल देगा॥

रु० २—(११) गंवारों में से पीछे रहनेहारे लोग अवश्य कहेंगे कि हम तो अपने धनों और घरों के कार्य्य में लगे रहे सो तू हमारे निमित क्षमा मांग वह अपने मुंह से वह कहते हैं जो उनके मनों में नहीं तू कह कि ईश्वर के सन्मुख तुम्हारे कोई किस अर्थ आसकता है, यदि वह तुमको हानि पहुंचाने अथवा लाभ देने का विचार करे वरन जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उसको जानता है। (१२) तुम्हारा तो यही अनुमान है कि प्रेरित और विश्वासी अपने घरों की ओर लौट कर कभी न आसकेंगे और यह बात तुम्हारे मनों में अच्छी करके दिखाई गई तुम्हारा विचार अति अशुद्ध है तुम भूले बिसरे लोग हो। (१३) जो ईश्वर पर और उसके प्रेरित पर विश्वास न लाए निस्सन्देह हमने अधर्म्मियों के निमित ज्वाला* उद्यत की है। (१४) आकाशों और पृथ्वी का राज ईश्वर ही का है वह जिसको चाहता है क्षमा करता है जिसको चाहता है दण्ड देता है और ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१५) और पीछे रहे हुए लोग जब लूट प्राप्त करने की ओर जाओगे कहेंगे कि हमको आज्ञा देओ कि हम भी तुम्हारे अनुगामी हों वह चाहते हैं कि ईश्वर के वचन को बदल डालें कहदे तुम कभी हमारे अनुगामी न होओगे ईश्वर ऐसेही पहिले कहचुका है सो वह शीघ्र कहने लगेंगे कि तुम हमसे डाह करते हो हां वह नहीं समझते वरन बहुत थोड़ा। (१६) उनसे कहदे जो पीछे छोड़ दिए गए कि तुम शीघ्र एक कठोर और संग्राम करनेहारी जाति की ओर बुलाए जाओगे कि तुम उनसे लड़ोगे अथवा वह मुसलमान होजायंगे सो यदि तुम आज्ञा पालन करोगे तो ईश्वर तुमको उत्तम प्रतिफल देगा और यदि

* अर्थात दहकता हुआ दण्ड॥

पीठ दिखाओगे जैसा कि तुम पहिले पीठ दिखाते रहे तो वह तुमको दुखदायक दण्ड देगा। (१७) हां अन्धे पर न लंगड़े पर न रोगी पर कोई दोष है और जो ईश्वर और उसके प्रेरित के पीछे चले वह उसको बैकुण्ठों में प्रवेश देगा जिनके नीचे धारें बह कर निकलती हैं और जो पीठ दिखाए उसको दुखदायक दण्ड देगा॥

रु० ३—(१८) ईश्वर विश्वासियों से प्रसन्न हुआ जब वह पेड़ के नीचे तुझसे होड़* करते थे क्योंकि वह जानता है जो उनके मनों में था और उसने उनके मनों में सन्तोष † उतारा और उनको निकट की विजय से बदला दिया। (१९) और बहुत सी लूटें जिनको वह प्राप्त करेंगे ईश्वर बलवन्त बुद्धिवान है। (२०) और ईश्वर ने तुमसे बहुत सी लूटों की प्रतिज्ञा की थी कि तुम उनको प्राप्त करोगे सो तुमको शीघ्र दीं और उन लोगों के हाथ तुमसे रोक रखे जिस्तें विश्वासियों के निमित एक चिन्ह होजाय जिस्तें ईश्वर तुमको सीधे मार्ग पर चलाए। (२१) और दूसरी भी जिस पर तुमने अभी लों अधिकार नहीं पाया निस्सन्देह वह ईश्वर के अधिकार में है और ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिवान है। (२२) यदि अधर्म्मी तुमसे लड़ते तो अवश्य पीठ दिखाते फिर उनका न कोई हितवादी होता न सहायक। (२३) ईश्वर का व्यवहार चला आता है जो पहिले से होरहा है और तू ईश्वर के व्यवहार में कभी परिवर्तन न पायगा। (२४) वही है जिसने अधर्म्मियों के हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ अधर्म्मियों से मक्का के मध्य घाटी में रोक रखे और उसके पश्चात तुमको प्रबल कर दिया और जो कुछ तुमने किया ईश्वर उसको देखता था। (२५) यही हैं जिन्होंने अधर्म्म किया और तुमको मसजिदे हराम से निकाला और भेट के पशुओं को रोका कि वह रुके खड़े रहे और अपने स्थान पर पहुंचने न पाए और यदि कुछ विश्वासी पुरुष और कुछ विश्वासी स्त्रियें न होतीं तो तुम उनको लताड़ डालते फिर तुम पर उनसे अचेती में आपदा पहुंचती जिस्तें जिसको ईश्वर चाहे अपनी दया में प्रवेश दे और यदि वह अलग होजाते तो हम उनमें से अधर्म्मियों को कठिन दण्ड देते। (२६) जब अधर्म्मियों ने अपने मन में हठ ठान ली और हठ भी मूर्खता के समान तो ईश्वर ने अपने प्रेरित पर सन्तोष ‡ उतारा और उन पर ईश्वरस्वी उचित करदी वह उसके विशेष अधिकारी और योग्य थे और ईश्वर हर वस्तु का जाननेहारा है॥

रु० ४—(२७) और ईश्वर ने अपने प्रेरित को उसका उत्तर सत्य कर दिखाया कि यदि ईश्वर चाहे तो निस्सन्देह तुम मसजिदे हराम में अपने सिरों को

---

* अर्थात बयत। † असल में सकीना। ‡ अर्थात सकीना॥

मुड़ाते और बाल कतरवाते हुए शान्ति से प्रवेश करोगे और तुम्हें कुछ भय न होगा क्योंकि वह जानता है जो तुम नहीं जानते उसके उपरान्त एक और निकट की जय उसने ठहरा दी है। (२८) वह वही है जिसने अपने प्रेरित को सत्य धर्म की शिक्षा सहित भेजा जिस्तें समस्त धर्मों पर उसको प्रबल करदे और ईश्वर साक्षी बस है। (२९) महम्मद ईश्वर का प्रेरित है और जो उसके साथ हैं वह अधर्मियों पर कठोर और परस्पर दया करनेहारे हैं तू उनको झुकते और दण्डवत करते देखेगा और ईश्वर के अनुग्रह और प्रसन्नता के चाहक रहते हैं और दण्डवत का चिन्ह उनके माथों पर उनका यह दृष्टान्त तौरेत में है और इंजील* में उनका दृष्टांत यह है कि एक खेती जिसने अपना अंकुर निकाला फिर उसने उसको दृढ़ किया फिर मोटा किया और वह अपनी नली पर खड़ा हुआ और किसान को प्रसन्न किया जिस्तें अधर्मी उससे क्रोध में भरजायं ईश्वर ने उन लोगों से जो बिश्वासलाए और सुकर्म किए क्षमा और बड़े प्रतिफल की प्रतिज्ञा की है॥

४६ सुरए हुजरात † (कोठरियों) मदनी रुकू २ आयत १८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) हे विश्वासियो ईश्वर और उसके प्रेरित से आगे न बढ़ो ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर सुनने और जाननेहारा है। (२) हे विश्वासियो अपने शब्द भविष्यद्वक्ता के शब्द से ऊंचा न करो और उससे चिल्लाकर बात न किया करो जैसा तुम एक दूसरे से करते हो कि तुम्हारी क्रियाएं नष्ट होजायं और तुम्हें जान भी न पड़े। (३) निस्सन्देह जो अपना शब्द ईश्वर के प्रेरित के सन्मुख नीचा करते हैं उन्हीं के हृदयों को ईश्वर ने संयम के निमित जांच लिया है उनके निमित क्षमा और बड़ा प्रतिफल है। (४) और वह जो तुझको कोठरियों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से बहुतेरे निर्बुद्ध हैं। (५) और यदि वह ठहरे रहते यहांलों कि तू उनके निकट निकल आता तो उनके निमित उत्तम था परन्तु ईश्वर क्षमा करनेहारा और दयालु है। (६) हे विश्वासियो यदि कोई कुकर्मी ‡ तुम्हारे समीप समाचार लेकर आए तो उसकी परताल करलो ऐसा न हो कि किसी जाति पर अचेती में जापड़ो फिर बिहान को अपने किए पर

* मार्क ४ : २८। † यह सूरत मक्का बिजय प्राप्त करने के पश्चात उतरी। ‡ किसी किसी का बिचार है कि वलीद बिन उकबा की ओर सूचना है॥

लज्जित होओ। (७) और जान रखो कि तुममें ईश्वर का प्रेरित उपस्थित है यदि वह बहुत सी बातों में तुम्हारा कहा माने तो तुम पर कठिनता आजाय परन्तु ईश्वर ने तुम्हारे हृदयों में विश्वास का प्रेम डाल दिया और उसको तुम्हारे हृदयों में भला करके दिखाया और तुम्हारे दृष्टियों में—अधर्म—कुकर्म और विरोध को घिनित कर दिखाया यही लोग शुभाचरणी हैं। (८) ईश्वर के अनुग्रह और उपकार से और ईश्वर जाननेहारा और बुद्धिवान है। (९) और यदि विश्वासियों की दो जत्थाएं परस्पर लड़ पड़ें तो उनमें मेल करादो यदि दोनों में से एक दूसरे से विरोध करे तो विरोध करनेहारे से लड़ो यहांलों कि वह ईश्वर की आज्ञा के अनुगामी हों फिर यदि वह मान जायं तो उनमें न्यायानुसार मेल करादो और निर्णय करो निस्सन्देह ईश्वर न्याय करनेहारों को मित्र रखता है। (१०) विश्वासी भाई भाई हैं फिर अपने दो भाइयों में मेल करादो और ईश्वर से डरो जिस्तें तुम पर दया की जाय॥

रु० २ – (११) हे विश्वासियो कोई जत्था दूसरे पर ठट्ठा न करे कदाचित वह उन से उत्तम हों न कोई स्त्री किसी स्त्री पर हंसे कदाचित वह उससे उत्तम हो और एक दूसरे को मेहना न मारो न एक दूसरे को बुरे नामों से चिढ़ाओ अशुद्ध नाम लेना विश्वास के पश्चात बहुत बुरे हैं और जो न माने वही बुरे हैं। (१२) हे विश्वासियो बुरविचार से बचते रहो निस्सन्देह बुरविचार पाप हैं और ठट्ठा न करो न एक दूसरे की निन्दा करो क्या तुम में से कोई अपने मृतक भाई का मांस खायगा उससे तो तुमको घिन आती है सो ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर पश्चाताप ग्रहण करनेहारा और दयालु है। (१३) हे लोगो निस्सन्देह हमने तुम सब को एक पुरुष और एक ही नारी से उत्पन्न किया है और तुमको जातिएं और कुटुम्ब बना दिया जिस्तें एक दूसरे को पहचानो निस्सन्देह तुममें अधिक आदर योग्य ईश्वर की दृष्टि में वही है जो अधिक संयमी है निस्सन्देह ईश्वर जाननेहारा और सुधि रखनेहारा है। (१४) गंवार अरब कहते हैं कि हम विश्वास-लाए कहदे कि तुम विश्वास नहीं लाए परन्तु ऐसे कहो कि हम मुसलमान हुए और अभी तुम्हारे हृदयों में विश्वास प्रवेश नहीं हुआ और यदि तुम ईश्वर और उसकी आज्ञा पर चलोगे तो वह तुम्हारी क्रियाएं न घटायगा निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१५) सो विश्वासी वही हैं जो ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वासलाए फिर सन्देह न किया और अपने धन और प्राण से ईश्वर के मार्ग में लड़े यही लोग सत्यवादी हैं। (१६) कहदे क्या तुम ईश्वर को अपनी

पवित्रता सिखलाते हो ईश्वर तो जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है और ईश्वर हर वस्तुको जानता है। (१७) तुझ पर उपकार जताते हैं कि वह मुसलमान होगए कहदे अपने मुसलमान होने का मुझपर उपकार न करो वरन तुम पर तो ईश्वर का उपकार है कि उसने तुमको विश्वास की शिक्षा की यदि तुम सच्चे हो। (१८) निस्सन्देह ईश्वर आकाशों और पृथ्वी की गुप्त वस्तुन को जानता है और ईश्वर देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।

---

५० सूरत् क़ाफ़ (क़) मक्की रुकू ३ आयत ४५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १ क़—(१) महिमा वाले क़ुरान की सौंह। (२) हां उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनके निकट उन्हीं में से एक डराने वाला आया और अधर्मी कहते हैं यह एक बड़ी अद्भुत बात है। (३) क्या जब हम मरकर मट्टी होजायंगे फिर उठेंगे यह लौटाया जाना तो बुद्धि के परे है। (४) और हम जानते हैं जो कुछ पृथ्वी उन में से घटा देती है और हमारे समीप पुस्तक में सब रक्षित है। (५) वरन उन्होंने सत्य बात को झुठलाया जब कि उनके समीप आचुकी वह इस बात में डिगमिगा रहे हैं। (६) क्या वह अपने ऊपर आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसा बनाया और सजाया और उसमें कोई दरार* नहीं। (७) और पृथ्वी को फैलाया और उस पर अटल पहाड़ डाल दिए और हर प्रकार की शोभायमान वस्तुएं उपजाईं। (८) जो हर पश्चाताप करनेहारे दास के निमित शिक्षा और बुद्धि हैं। (९) और हमने आकाश से आशीश का जल वर्षाया और उससे बारियां और अन्न जो काटा जाता है उपजाया। (१०) और लम्बी २ खजूरें कि उनके गुच्छे प्रत प्रत हैं। (११) जो दासों के निमित अहार हैं और उससे मृतक भूमि को सजीव करदिया इसी भांति निकलना होगा। (१२) इससे पहिले नूह की जाति और कूपवालों † और समुद्रवालों ने झुठलाया था। (१३) और आद और फ़िराऊन और लूत के भाई बन्धु और ईकावाले और तुब्बा ‡ की जाति इन सबने अपने प्रेरितों को झुठलाया और उन पर दण्ड की आज्ञा सत्य होगई। (१४) सो क्या हम पहिली उत्पति से थक गए नहीं वरन वह नई उत्पति के सन्देह में हैं॥

---

* अर्थात कोई खुटाई नहीं। † फ़ुरकान ४०। ‡ दुख़ान ३६॥

रु० २—(१५) और हमने उसको उत्पन्न किया और हम जानते हैं कि उसका प्राण कैसे दुविधा में है हम उससे प्राण की नाड़ी की अपेक्षा अधिक निकट हैं। (१६) जब वह रक्षा करने दहने और बाएं बैठें रक्षा करते हैं। (१७) कोई बात भी वह मुंह से नहीं निकालता परन्तु रक्षक उसके निकट ही उपस्थित होते हैं। (१८) और मृत्यु की अचेत दशा यथार्थ आपहुंचेगी और यह वही है जिससे तू भागता था। (१९) और तुरही फूंकी जायगी यह वही है जिससे डराया गया था। (२०) और हरएक प्राणी आयगा उसके संग एक हांकनेहारा और एक साक्षी होगा। (२१) तू उससे अचेत ही था सो हमने तुझसे* पट उठा लिया आज तेरी दृष्टि तीव्र है। (२२) और उसका साथी कहेगा यह जो मेरे निकट है उद्यत है। (२३) नर्क में डाल दो प्रत्येक अधर्म्मी हठी को। (२४) जो भलाई से वर्जनेहारा विरोधी और सन्देही है। (२५) जिसने ईश्वर के साथ देव ठहराए उसको कठिन दण्ड में डालो। (२६) उसका साथी कहेगा हे मेरे प्रभु मैंने उसे नहीं भरमाया वरन वह आप ही दूर की भ्रमणा में था। (२७) वह कहेगा मेरे सनमुख मत झगड़ो मैं तुम्हारे तीर पहिले ही डरावे भेजचुका। (२८) मेरी बात बदलती नहीं और मैं अपने दासों पर अनीति करनेहारा नहीं हूं॥

रु० ३—(२९) और जिस दिन हम नर्क से पूछेंगे क्या तू भर गया और वह कहेगा क्या कोई और† भी है। (३०) और संयमियों से वैकुण्ठ निकट कर दिया जायगा और कुछ भी दूर न होगा। (३१) यह वह है जिसकी प्रतिज्ञा प्रत्येक पश्चाताप करनेहारे और रक्षा करनेहारे के निमित की गई थी। (३२) जो रहमान से गुप्त में डरता है और पश्चाताप करनेहारा मन लेकर आता है। (३३) उसको कुशल के साथ प्रवेश दो यह अनन्त का दिवस है। (३४) जो कुछ वह चाहेंगे उनके निमित वहां होगा और हमारे निकट से और भी अधिक है। (३५) और उनसे पहिले हमने कितनी ही बस्तियां नाश करदीं जो उनसे अधिक बलवान थीं सो जिन्होंने बहुत नग्र छान मारे क्या कोई छुटकारे का ठौर मिला। (३६) यह उस मनुष्य के निमित एक शिक्षा है जो अन्तःकरण रखता हो और कान लगा कर सुने और उसमें साक्षी है। (३७) और हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके मध्य में है छः‡ दिन में उत्पन्न किया और हम नहीं थके। (३८) सो जो कुछ वह कहते हैं उस पर धीरज धर और सूर्य्य के उदय और अस्त होने से

---

* अर्थात उस दिन से। † नीति वचन १०:१५. यशैयाह ५:१४। ‡ कहते हैं यह आयत एक यहूदी के उत्तर में उतरी जिसने कहा ईश्वर छः दिन कार्य्य करने के पश्चात थक गया॥

पहिले अपने प्रभु का स्तुति सहित जाप कर। (३९) और रात में भी उसका जाप कर और दण्डवत के पश्चात भी। (४०) और सुन रख कि एक दिन पुकारनेहारा पुकारने के स्थान से पुकारेगा। (४१) जिस दिन वह यथार्थ रीति से एक पुकार सुनेंगे वही निकलने का दिन है। (४२) हम ही जीवता करते और मारते हैं और हमारी ओर सब को चलके आना है। (४३) एक दिन पृथ्वी उन पर से फिर फट जायगी और वह दौड़ते हुए निकलेंगे ऐसा उठाना और इकत्र करना हम पर सहज है। (४४) और हम भलीभांति जानते हैं जो कुछ वह कहते हैं तू उन पर कोई बरियाई करनेहारा नहीं। (४५) सो जो डराने से डरता है उसको कुरान समझा दे॥

५१ सूरए ज़ारियात (छितराना) मकी रुकू २ आयत ६०। अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) बिथराने* वालियों की सौंह जो बिथराती हैं। (२) उनकी सौंह जो अपने बोझ† से बोझिल हैं। (३) और धीरे ‡ चलनेवालों की सौंह। (४) फिर आज्ञानुसार बांटने§हारों की सौंह। (५) निस्सन्देह जो बाचा तुमको दीजाती है वह सत्य है। (६) निस्सन्देह यह न्याय का होना अवश्य है। (७) मार्गोंवाले आकाश की सौंह। (८) निस्सन्देह तुम एक झगड़े की बात में पड़े हो। (९) जो फिर गया वही निराश किया जाता है। (१०) अटकल दौड़ानेहारे नाश हों। (११) वह जो अचेती में पड़े भूले हुए हैं। (१२) वह पूछते हैं प्रतिफल का दिन कब होगा। (१३) जिस दिन वह अग्नि में तपाए जायंगे। (१४) अपनी क्रूरता का स्वाद चाखो यही है जिसके निमित तुम शीघ्रता करते थे। (१५) निस्सन्देह संयमी बैकुण्ठों और सोतों में होंगे। (१६) और जो उनके प्रभु ने उनके निमित उद्यत किया ले रहे होंगे और वह लोग उससे पहिले संयमी थे। (१७) वह रात को बहुत ही थोड़ा सोते थे (१८) और भोर को क्षमा मांगते थे। (१९) और उनकी सम्पति में मांगनेहारों और न मांगनेहारों का अंश था। (२०) और पृथ्वी में निश्चय करनेहारों के निमित चिन्ह हैं। (२१) और तुम में भी सो क्या तुम नहीं देखते। (२२) और आकाश में तुम्हारी जीविका है जिसकी तुमसे प्रतिज्ञा¶

---

* अर्थात पवन। † अर्थात मेघ। ‡ अर्थात जहाज़। § दूत। ¶ वर्षा और अन्त का प्रतिफल॥

कीजाती है। (२३) आकाश और पृथ्वी के प्रभु की सौंह निस्सन्देह यह* यथार्थ है। जिस भांति तुम † वर्णन करते हो॥

रु० २—(२४) क्या तुझको इबराहीम के आदर योग्य पाहुनों ‡ का सन्देश पहुंचा। (२५) जब वह उसके समीप भीतर आए तो कहा कि प्रणाम उसने उत्तर दिया कि प्रणाम यह तो विदेशी पुरुष हैं। (२६) फिर अपने कुटुम्बियों की ओर गया और एक मोटा बछड़ा लेआया। (२७) और उसको उनके निकट सरका दिया कहा तुम खाते क्यों नहीं। (२८) और मन में उनसे डरा वह बोले मत डर और उसको एक बुद्धिवान बालक का सुसमाचार सुनाया। (२९) फिर उसकी पत्नी आगे आ खड़ी हुई और बोलने लगी अपना मुंह पीट लिया और बोली मैं बुढ़िया बांझ। (३०) वह बोले तेरे प्रभु ने ऐसेही कहा है निस्सन्देह वह बुद्धिवान और जाननेहारा है॥

(३१) उनसे पूछा हे प्रेरितो तुम्हारा क्या कार्य्य है (३२) वह बोले निस्सन्देह हम एक अपराधी जाति § की ओर भेजे गए हैं। (३३) कि हम उन पर माटी के ढेले ¶ फेंकें। (३४) जिन पर तेरे प्रभु की ओर से मर्याद से बढ़ने हारों के निमित चिन्ह लगे हुए हैं। (३५) फिर हमने उनमें से बचा निकाला उनको जो विश्वासियों में थे। (३६) और हमने उसमें केवल एक घर के और किसी को मुसलमान न पाया। (३७) और हमने उसमें उनके निमित जो दुख-दायक दण्ड से डरते हैं एक चिन्ह छोड़ा। (३८) और मूसा @ में जब हमने उसको फ़िराऊन के निकट खुला प्रमाण देकर भेजा। (३९) तो उसने अपने बल के बूते पर पीठ फेरी और कहा यह टोनहा है अथवा बावला। (४०) फिर हमने उसको और उसकी सैना को धर पकड़ा और उनको समुद्र में फेंक मारा क्योंकि उसने धिक्कार योग्य कर्म्म ही किया था। (४१) और आद $ में जब हमने उन पर एक अशुभ पवन भेजी। (४२) जो किसी वस्तु को जिस पर पड़े न छोड़ती थी वरन उसको चूर करदेती थी। (४३) और समूद *‡ में जब उनसे कहा गया कि एक नियत समयलों चैन करलो। (४४) फिर उन्होंने अपने प्रभु की आज्ञा से विरोध किया सो उनको एक कड़क *† ने आ पकड़ा और वह देखतेही रह गए

पारा २७.

---

* अर्थात क़ुरान। † जिस रीति परस्पर बार्तालाप करके कार्य्यों को सत्य ठहराते हो। ‡ देखो हूद ७२. हजर ५१। § देखो हजर ६१। ¶ विशेष में पत्थर। @ अर्थात मूसा के बृत्तान्त में चिन्ह है। $ आद के बृत्तान्त में भी चिन्ह है। *‡ समूद के बृत्तान्त में भी चिन्ह है। *† देखो अहक़ाफ़ २२॥

(४५) सो वह उठ ही न सके न पलटा लेनेहारे हुए। (४६) और नूह की जाति को इसके पहिले निस्सन्देह वह कुकर्म्मी लोग थे ॥

रु० ३—(४७) और आकाश हमने हाथ के बल से बनाए और निस्सन्देह हम पराक्रमी हैं। (४८) और पृथ्वी को हमने बिछौना बना दिया सो हम कैसे अच्छे बिछौना करनेहारे हैं। (४९) और हमने हर वस्तु के जोड़े बनाए जिस्तें तुम ध्यान दो। (५०) सो तुम ईश्वर की ओर भागो निस्सन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हारे समीप डर सुनाने हारा होकर आया हूं। (५१) और ईश्वर के साथ दूसरे देव न बनाओ निस्सन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हारे तीर डर सुनानेहारा होकर आया हूं। (५२) इसी रीति उनसे पहिलों की तीर कोई प्रेरित नहीं आया परन्तु वह कहते थे कि यह टोनहा है अथवा बावला। (५३) क्या उन्होंने एक दूसरे को भी मृतक लेख पत्र कर दिया है कुछ नहीं वरन यह द्रोही जाति है। (५४) सो तू उनसे मुंह फेरले तुझको उनके विषय में धिक्कार न किया जायगा। (५५) शिक्षा करता रह निस्सन्देह शिक्षा करना विश्वासियों के हेतु लाभदायक है। (५६) मैंने जिन्नों और मनुष्यों को उत्पन्न किया है जिस्तें वह मेरी अराधना करें। (५७) मैं उनसे जीविका नहीं मांगता न चाहता हूं कि वह मुझे खिलाएं। (५८) निस्सन्देह ईश्वरही जीविका देनेहारा और बलिष्ट शक्तिवान है। (५९) निस्सन्देह जिन्होंने * दुष्टता की उनका भाग उनके साथियों के समान होगा परन्तु वह मुझसे शीघ्रता न करें। (६०) अधर्म्मियों पर सन्ताप है उस दिन के निमित कि जिसकी उनसे प्रतिज्ञा कीजाती है॥

—◦◇◦—

५२ सूरए तूर (पर्व्वत) मक्की रुकू २ आयत ४९।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) तूर की सौंह। (२) और लिखी हुई पुस्तक की सौंह। (३) चौड़े पत्र में। (४) बसे † हुए घर की सौंह। (५) ऊंची छत ‡ की सौंह। (६) और उफनते हुए समुद्र की सौंह। (७) निस्सन्देह तेरे प्रभु का दण्ड होना अवश्य है। (८) उसको कोई टाल नहीं सकता। (९) जिस दिन आकाश हिले। (१०) और

* जिन्हों ने अगले प्रेरितों को और महम्मद साहब को झुठलाया जैसा अगले प्रेरितों को झुठलाने का दण्ड लोगों को मिला वैसाही अब भी होगा। † खानए काबा। ‡ अर्थात आकाश॥

पहाड़ चलते * फिरें। (११) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (१२) जो बक बक में पड़े खेलरहे हैं। (१३) और जिस दिन वह नर्क की ओर ढकेल दिए जायंगे। (१४) यह वही अग्नि है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (१५) क्या यह टोना है अथवा तुमको दिखाई नहीं देता। (१६) उसमें घुसो फिर धीरज करो अथवा धीरज न करो तुम्हारे निमित समान है तुमको तो उसी का पलटा मिल-रहा है जो तुम किया करते थे। (१७) निस्सन्देह संयमी बैकुण्ठों और वरदानों के मध्य। (१८) चैन करते होंगे उसमें जो उनके प्रभु ने उन्हें दिया और उनका प्रभु उन्हें नर्क के दण्ड से बचायगा। (१९) आनन्द से खाओ और पिओ उसके कारण जो तुम करते थे। (२०) बिछे हुए सिंहासनों पर ओसीसा लगाए हुए बैठे होयंगे और हम उनको बड़े नैन वाली हूरें † ब्याह देंगे। (२१) और जो बिश्वास लाए और उनका मार्ग बिश्वास के साथ उनकी सन्तान चली हम उनकी सन्तान को उनलों पहुंचा देंगे और हम उनके कार्य्यों में कुछ भी न घटायंगे प्रत्येक मनुष्य अपने किए हुए कर्म्म पर गिरवी है। (२२) और हम उन्हें फल और मांस और बसी के समान बार बार देंगे। (२३) वह एक दूसरे के हाथ से मदिरा का कटोरा लेयंगे जिसमें न बकवास है न कोई पाप की बात। (२४) और उनके समीप उनके छोकरे आयें जायंगे। (२५) मानों वह छिपे हुए मोती हैं। (२६) कहेंगे हमतो पहिलेही अपने कुटुम्बियों सहित डरते रहते थे। (२७) सो ईश्वर ने हम पर बड़ा उपकार किया और हमको दण्ड की भाप से बचा लिया। (२८) निस्सन्देह हम पहिलेही से उसको पुकारा करते थे निस्सन्देह वही उपकार करने हारा दयालु है॥

रु० २—(२९) सो तू उन्हें शिक्षा कर क्योंकि अपने प्रभु के अनुग्रह से तू न टोनहा है न बावला। (३०) क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम समय के पलटे की उसके निमित बाटजोह रहे हैं। (३१) कह सो तुम बाटजोहते रहो और मैं भी बाटजोहने हारों में हूं। (३२) क्या उनकी बुद्धिएं उनको यह सिखाती हैं अथवा वह द्रोही लोग हैं। (३३) क्या वह कहते हैं कि उसने उसको बनालिया नहीं बरन वह बिश्वास न लानेहारे हैं। (३४) सो वह ऐसा बचन ले आवें यदि वह सच्चे हैं। (३५) क्या वह आप‡ से आप बन गए अथवा वह आपही करते थे। (३६) क्या उन्होंने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया नहीं बरन वह निश्चय न करनेहारों में हैं। (३७) क्या उनके तीर तेरे प्रभु के भण्डार हैं अथवा वह

---

* स्तोत्र ६८ : ९। † अर्थात अप्सरा। ‡ अर्थात किसी बस्तु के॥

भयडारी हैं। (३८ क्या उनके तीर कोई सीढ़ी है जिस पर से वह सुन आते हैं तो उनमें से कोई सुननेहारा कोई प्रत्यक्ष प्रमाण तो ले आवे। (३९) क्या उसके* निमित पुत्रियां हैं और तुम्हारे निमित पुत्र हैं। (४०) क्या तू उनसे कुछ बलि मांगता है कि जिसके बोझ से वह दब रहे हैं। (४१) अथवा उनके तीर गुप्त † विद्या है कि वह लिखलेते हैं। (४२) अथवा वह कुछ छल करना चाहते हैं सो जो अधर्मी हैं वही छल में पकड़े जायंगे। (४३) क्या ईश्वर के उपरान्त उनका कोई देव है ईश्वर पवित्र है उससे जो वह उसके साझी बताते हैं। (४४) और यदि आकाश का कोई टुकड़ा भी गिरता हुआ देखें तो यही कहेंगे यह तो पर्त पर्त मेघ है। (४५) सो तू उनको छोड़ दे यहां लों कि उस दिन को देखें जब वह मूर्छित कर दिए जायंगे। (४६) जिस दिन उनका छल उनके कुछ अर्थ न आयगा और न उनकी सहायता की जायगी। (४७) और निस्सन्देह दुष्टों के निमित इसके उपरांत और दण्ड भी है परन्तु बहुतेरे उनमें नहीं जानते। (४७) तू सावधानी से अपने प्रभु की आज्ञा की बाट जोहने में बैठारह ‡ तू तो हमारी आंखों के सन्मुख है अपने प्रभु का जिस समय तू उठे § स्तुति सहित जापकर। (४९) और रात्रि के एक भाग में उसका जापकर और तारों के छिप जाने के पश्चात भी।

---

५३ सूरए नजम ¶ (तारागण) मक्की रुकू ३ आयत ६२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) तारे की सौंह जब वह गिरता है। (२) तुम्हारा मित्र भर्मा नहीं और न भटका हुआ है। (३) और न अपने प्राण की इच्छा से बोलता है। (४) निस्सन्देह यह तो प्रेरणा है जो उसकी ओर कीजाती है। (५) बड़े बलवान* ने उसे सिखाया है। (६) जो बुद्धि में शुद्ध और ठीक है। (७) और वह महान मर्याद पर पहुंचा। (८) फिर वह निकट हुआ और उतर आया। (९) सो वह दो धनुषों के अंतर के तुल्य अथवा उससे भी घाट निकट होगया। (१०) फिर उसने अपने दास की ओर प्रेरणा की जो कुछ प्रेरणा किया गया था। (११) झूठ नहीं बतलाया उसके हृदय ने उस विषय में जो कुछ देखा। (१२) सो क्या तुम उसके साथ झगड़ते हो उस पर जो उसने देखा। (१३) निस्सन्देह उसने एक

---

* अर्थात ईश्वर के। † अर्थात गुप्त विद्या। ‡ अर्थात प्रातःकाल। § यह सूरत भविष्यद्वाक्य के पांचवें वर्ष में उतरी थी जब महम्मद साहब के चेले प्रथमबार हबश: को चलेगए थे। ¶ अर्थात जिबराईल॥

बेर और भी देखा था। (१४) पेड़ सिदरत * उलमुन्तहा के तीर। (१५) उसी के निकट रहने का स्थान बैकुण्ठ है। (१६) जब कि उस पेड़ सदरा पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था। (१७) न उसकी दृष्टि बहकी न मर्याद से बढ़ी। (१८) निस्सन्देह उसने अपने प्रभु के बड़े चिन्ह देखे। (१९) भला तुम देखो तो लात † और उज्जा †। (२०) मनात † तीसरे को। (२१) क्या तुम्हारे निमित पुत्र होंगे और उसके निमित पुत्री होगी। (२२) यह बटाई तो टेढ़ी है (२३) निस्सन्देह वह तो केवल नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे पुरुखों ने रख लिए हैं ईश्वर ने उसका कोई प्रमाण नहीं उतारा वहतो बस अनुमान के पीछे चलते हैं अथवा अपनी शारीरिक इच्छाओं के और यदपि उनके प्रभु की ओर से उनके निकट शिक्षा आचुकी। (२४) कभी मनुष्य को मिलता है जिसकी वह इच्छा करे। (२५) सो ईश्वर ही के अधिकार में है आदि और अन्त॥

रु० २—(२६‡) और आकाशों में बहुतेरे दूत हैं कि उनकी सहायता कुछ अर्थ नहीं आती। (२७) परन्तु पश्चात इसके कि ईश्वर आज्ञा दे और प्रसन्न होजाय। (२८) जो लोग अन्त के दिन का विश्वास नहीं रखते वह दूतों के नाम स्त्रियों के नामों के समान रखते हैं। (२९) यदपि उनको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं वह तो अनुमान के पीछे चलते हैं और सत्य के विरुद्ध अनुमान कुछ भी अर्थ नहीं आता। (३०) सो उनकी कुछ चिन्ता न कर जो हमारी चर्चा से पीठ फेरता और संसारिक जीवन के उपरान्त और कुछ नहीं चाहता। (३१) उनके ज्ञान की इतनी पहुँच है तेरा प्रभु भलीभांति जानता है कि उसके मार्ग से कौन अधिक भटका है और कौन अधिक शिक्षित है। (३२) और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है वह ईश्वर ही का है जिस्तें वह कुकर्म्म करनेहारों को उनके किए अनुसार प्रतिफल दे और सुकर्म्मियों को भलाई का उत्तम प्रतिफल दे। (३३) जो बड़े § पापों और निर्लज्जता के कर्मों से बचते रहे केवल छोटे पापों में पड़ने के निस्सन्देह तेरा प्रभु अति क्षमा करनेहारा है वह तुमको भली भांति जानता है जब तुमको पृथ्वी से उत्पन्न किया जब तुम अपनी माताओं के गर्भ में बालक थे सो तुम अपने को पवित्र मत जताओ वह भली भांति जानता है कि कौन अधिक संयमी है॥

---

* बैकुण्ठ में एक पेड़ है जिसके फल बेर के समान होते हैं। † यह अरब की तीन मूर्तें हैं।
‡ आयत २६ से ३२ लों इस सूरत की आदि की आयतों के बहुत समय बीते उतरी हैं। § गुनाह कबीरा किसी किसी का विचार है कि केवल आयत ३३ अथवा ३४ से ४२ लों मदीना में उतरीं और किसी का विचार है कि सारी सूरत मदनी है॥

रु० ३—(३४) क्या तूने उसको देखा जो मुंह फेर कर चला गया। (३५) और थोड़ा दिया और कठोर होगया। (३६) क्या उसके तीर गुप्त विद्या है कि वह देखलेता है। (३७) क्या उसको उसका संदेश नहीं दिया गया जो मूसा की पुस्तकों में है। (३८) और इबराहीम* की उसने अपनी वाचा पूरी की। (३९) कोई बोझ उठाने हारा दूसरे का बोझ न उठा सकता। (४०) और मनुष्य के निमित और कुछ नहीं परन्तु वही जिसका वह प्रयत्न करे। (४१) और अपने प्रयत्न का फल वह अवश्य देखलेगा। (४२) फिर उसका प्रतिफल पूरा पूरा दिया जायगा। (४३) और तेरेही प्रभु की ओर अंत है। (४४) और निस्सन्देह वही हँसाता और रुलाता है। (४५) वही मारता और जिलाता है। (४६) और उसी ने जोड़े नर और नारी उत्पन्न किए। (४७) वीर्य्य से जब वह डाला जाय। (४८) उसी के अधिकार में दूजीवार उत्पन्न करना है। (४९) वही धनाढ्य और पूंजी वाला बनाता है। (५०) और वही शेरा † का प्रभु है। (५१) वह वही है जिसने आद को नष्ट कर दिया। (५२) और समूद को और किसी को न छोड़ा। (५३) और नूह की जाति को उनसे पहिले निस्सन्देह वह तो और भी अधिक विरोधी और दुष्ट थे। (५४) उलटी हुई बस्तियों को उसने दे पटका। (५५) फिर उनको ढांक दिया जो कुछ ढांका। (५६) सो तुम अपने प्रभु के कौन से वरदान में झगड़ा करते हो। (५७) यह तो पहिले डराने हारों में से एक डराने हारा है। (५८) वह निकट आनेहारे ‡ में से निकट आपहुंचा ईश्वर के उपरान्त कोई उसको प्रगट करने हारा नहीं। (५९) सो क्या इस कहावत से आश्चर्य करते हो। (६०) और हंसते हो और रोते नहीं। (६१) और तुम खेल करते हो। (६२) सो ईश्वर को दण्डवत करो और उसी की आराधना करो॥

५४ सूरए क़मर (चंद्रमा) मक्की रुकू ३ आयत ५५। अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) वह घड़ी § निकट आ गई और चन्द्रमा फट गया। (२) यदि वह कोई चिन्ह देखें अलग होके कहें कि यहतो सदा का टोना है। (३) उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं के अनुगामी हुए और हर कार्य्य ठहरा हुआ है।

* आला १९। † अर्थात एक तारे का नाम। ‡ अर्थात पुनरुत्थान। § अर्थात पुनरुत्थान की।

(४) निस्सन्देह उनको संदेश पहुंच गया जिससे उनको ताड़ना होसकती है। (५) सम्पूर्ण होनेहारी बुद्धि है सो डराना उनको कुछ लाभदायक न हुआ। (६) सो तू उनसे अलग होजा जिस दिन एक पुकारनेहारा एक कठिन वस्तु की ओर पुकारेगा। (७) उनकी दृष्टिएं झुकी हुई होंगीं वह अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे और टीड़ियों की नाईं फैले होंगे। (८) पुकारनेहारे के शब्द पर दौड़े जायेंगे अधर्मी कहेंगे कि बड़ा कठिन दिन है। (९) उनसे पहिले नूह की जाति झुठला चुकी उन्होंने हमारे दास को झुठलाया और कहा कि बावला है और वह झिड़का गया। (१०) उसने अपने प्रभु को पुकारा कि मैं बेबस होगया सो तूही पलटा ले। (११) सो हमने आकाश के द्वार खोल दिए और लगातार पानी बर्षने लगा। (१२) और पृथ्वी से सोते बहा दिए और पानी इकत्र होगया एक आज्ञा के अनुसार जो स्थिर हो चुकी थी। (१३) हमने उसको कील जड़े हुए पटरों पर चढ़ा लिया। (१४) जो हमारी आंखों के सन्मुख बहते थे यह उस मनुष्य का बदला है जिसकी ओर न जानी गई थी। (१५) और हमने इस बात को एक चिन्ह बना दिया है कोई शिक्षा ग्रहण करनेहारा। (१६) सो कैसा हुआ मेरा दण्ड और डराना। (१७) और हमने कुरान को समझनेहारों के निमित सहज कर दिया सो है कोई इस पर विचार करने हारा। (१८) आद ने भी झुठलाया सो कैसा हुआ मेरा दण्ड और डराना। (१९) और हमने एक कठिन अशुभ दिन में ठंडी और प्रचंड बयार भेजी। (२०) जो लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे वह जड़से उखड़ी हुई खजूर की पेड़ियां हैं। (२१) फिर कैसा हुआ मेरा दण्ड और डराना। (२२) और हमने कुरान को समझने के निमित सहज कर दिया सो है कोई इस पर विचार करने हारा॥

रु० २—(२३) समूद ने भी डरानेहारे को झुठलाया। (२४) और बोले क्या हम एक ऐसे मनुष्य की जो हम ही में से है बात मानलें तब तो हम बड़ी भ्रमता और बावली दशा में हैं। (२५) क्या हम में से केवल उसी पर प्रेरणा हुई है नहीं वह झूठा और अभिमानी है। (२६) उनको भोर जान पड़ेगा कि कौन झूठा और अभिमानी है। (२७) निस्सन्देह हम उनकी परिक्षा के निमित ऊटनी भेजते हैं सो तू* उनकी बाट जोह और धीरज धर। (२८) और उन्हें सन्देश दे कि जल उनमें बांट† दिया गया सो प्रत्येक अपने औसर पर उपस्थित हो। (२९) और उन्होंने

---

* अर्थात हे मोहम्मद। † अर्थात लोगों के पशुओं के पीने का समय और ऊटनी के पीने का समय ठहरा दिया गया था. शौरा १५५. ऐराफ ७१॥

अपने मित्र को गुहराया सो उसने हाथ चलाया और कूंचें काट* डालीं। (३०) फिर कैसा हुआ मेरा दण्ड और डराना। (३१) हमने उन पर एक चिन्घाड़ भेजी और वह ऐसे होगए जैसे काटों की मसली हुई बाड़ †। (३२) और हमने इस क़ुरान को समझने के निमित सहज कर दिया सो है कोई इस पर विचार करनेहारा। (३३) लूत की जाति ने भी डरानेहारों को झुठलाया। (३४) और हमने उन पर पत्थरों की कठिन आंधी भेजी लूत के कुटुम्बियों के उपरान्त जिनको हमने भोर होते ही बचा लिया। (३५) यह हमारी ओर से अनुग्रह और वरदान था और हम गुणानुवादी को इसी भांति बदला दिया करते हैं। (३६) निस्सन्देह उसने उनको हमारी पकड़ से डरा दिया था सो वह डरानेहारों से झगड़ने लगे। (३७) और जब वह उससे उसके पाहुने मांगने लगे सो हमने उनकी आंखें मूंद दीं अब चाखो मेरा दण्ड और मेरा डराना। (३८) और ठहराए हुए दण्ड ने उन्हें प्रात ही धर पकड़ा। (३९) अब चाखो मेरा दण्ड और डराना। (४०) और हमने क़ुरान को समझने के निमित सहज कर दिया सो है कोई इस पर विचार करनेहारा॥

रु० ३—(४१) और फ़िराऊन के लोगों के तीर डरानेहार आचुके। (४२) उन्होंने हमारे समस्त चिन्हों को झुठलाया सो हमने उनको पकड़ा जैसे कोई बलिष्ठ पराक्रमी पकड़ा करता है। (४३) क्या तुममें जो मुकरते हैं उनसे उत्तम हैं अथवा तुम्हारे निमित पुस्तक में बचाव है। (४४) अथवा वह कहते हैं कि हम पलटा लेनेहारी जत्थाएं हैं। (४५) अब शीघ्र हारेंगे और पीठ दिखाकर भागेंगे। (४६) वरन वह घड़ी ‡ उनकी बाचा का समय है और वह घड़ी अत्यन्त कठिन और बहुत ही कड़ुई है (४७) निस्सन्देह अपराधी लोग भ्रम और मूर्खता में पड़े हैं। (४८) जिस दिन वह औंधे मुंह अग्नि में घसीटे जायंगे कि अग्नि का स्वाद चाखो। (४९) हमने हर वस्तु को एक माप से उत्पन्न किया है। (५०) हमारी आज्ञा तो बस एक बात है जैसे आंख का झपकना। (५१) और हमने तुम्हारे साथियों को नष्ट कर दिया सो है कोई शिक्षा ग्रहण करनेहारा। (५२) और हमने हर बात जो उन्होंने की पुस्तक में लिखी हुई है। (५३) और हर छोटा और बड़ा कर्म्म लिखा हुआ है। (५४) निस्सन्देह संयमी बैकुण्ठों और धाराओं में होंगे। (५५) और शक्तिवान राजा के साथ सत्यता के घर में॥

---

* एक कुकर्म्मी स्त्री थी जिसके बहुत से ढोर थे उसने अपने लेही कदार सालिफ के पुत्र को इस बात पर तत्पर किया कि सालेह की ऊटनी को मारडाले और उसने उसकी कूचें काट डालीं। † सूरए हमासिजदा १६. ऐराफ ७६। ‡ अर्थात पुनरुत्थान॥

५५ सूरए रहमान मक्की रुकू ३ आयत ७८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) रहमान ने कुरान सिखाया। (२) उसने मनुष्य को उत्पन्न किया। (३) उसने बात करना सिखाया। (४) सूर्य और चन्द्रमा एक ठहराए यंत्र से। (५) और बूटियां और पेड़ दण्डवत कर रहे हैं। (६) आकाश को ऊंचा किया और तुला को स्थिर किया। (७) कि तुम तुला में मर्य्याद से न बढ़ो। (८) और न्याय से ठीक तौलो और तौल में घटी न करो। (९) और पृथ्वी को सृष्टि के निमित्त फैला दिया। (१०) कि उसमें से फल और गुच्छेदार खजूरें उत्पन्न कीं। (११) और अन्न भूसेवाला और सुगन्धित फूल। (१२) सो तुम दोनों* अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (१३) और उसने मनुष्य को माटी से जो ठीकरे के समान बजती है उत्पन्न किया। (१४) और उसने जिन्नों को अग्नि की लपट से उत्पन्न किया। (१५) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (१६) दो पूर्वों का प्रभु। (१७) और वह दो पश्चिमों का प्रभु है। (१८) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (१९) उसने दो समुद्र चला† दिए कि परस्पर मिलते हैं। (२०) उन दोनों के मध्य में एक पट है वह नहीं निकल सकते। (२१) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (२२) और उनमें से मोती और मूंगा निकलता है। (२३) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (२४) और उसी के हैं जलयान जो पहाड़ों की नाईं ऊंचे खड़े चल रहे हैं। (२५) सो तुम अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो॥

रु० २—(२६) और जो कुछ उस‡ पर है नष्ट होनेहारा है। (२७) परन्तु तेरे प्रभु की मूर्ति जो बड़ी महिमा और बड़ाईवाली है रहजायगी। (२८) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (२९) जो कोई आकाश और पृथ्वी में है सब उसीसे मांगते हैं हर समय वह एक ऐश्वर्य्य में है। (३०) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (३१) हे दो§ बोझियो हम शीघ्र तुम्हारे निमित्त निश्चिन्त होंगे। (३२) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (३३) हे जिन्नों और मनुष्य की जत्थाओ यदि

* अर्थात जिन्न और मनु। † नमल १९, फातिर १२। ‡ अर्थात पृथ्वी पर।
§ अर्थात जिन्न और मनुष्य॥

तुममें पराक्रम है कि आकाशों के छोरों से निकल जासको तो निकल जाओ परन्तु न जासकोगे केवल एक अधिकार से। (३४) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (३५) तुम पर अग्निकी लपट और धुआं भेजा जायगा और तुम बदला न लेसकोगे। (३६) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (३७ और जब आकाश फट जाय और तेल * की तलछट की नांई गुलाबी होजाय। (३८) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (३९) उस दिन न किसी मनुष्य और न किसी जिन्न से उनके अपराध के विषय में प्रश्न होगा। (४०) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (४१) अपराधी अपने चहरों से पहचान लिए जायंगे। (४२) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (४३) यही है वह नर्क जिसको अपराधी झुठलाते थे। (४४) उसमें खौलते हुए पानी में फिरेंगे। (४५) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो॥

रु० ३—(४६) और जो कोई अपने प्रभु के सन्मुख खड़े होने से डरा तो उसके निमित दुहरे वैकुण्ठ हैं। (४७) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (४८) दोनों घनी टहनियों से। (४९) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (५०) उनमें दो सोते बहते हैं। (५१) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (५२) दोनों में हर भांति के फलों के जोड़ हैं। (५३) सो तुम अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (५४) बिछौनों पर उपधान लगाए हुए होयंगे जिनके अस्तर कढ़े हुए होयंगे और दोनों बारियों में फल झुके हुए होयंगे। (५५) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (५६) और उसमें नीची दृष्टि वाली हूरें होंगी कि जिनसे किसी मनुष्य अथवा जिन्न ने पहिले प्रसंग नहीं किया। (५७) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (५८) वह मानो याकूत और मूंगा हैं। (५९) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो। (६०) भलाई का बदला केवल भलाई के क्या हो सकता है। (६१) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (६२) और उनके उपरान्त दो और वैकुण्ठ† होंगे। (६३) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो। (६४) दोनों बहुत ‡ हरी। (६५) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो।

---

* अथवा नरी के समान लाल होजाय। † अर्थात बारियाएं। ‡ अर्थात हरे पातवाले॥

(६६) उनमें दो सोते उफननेहारे । (६७) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस किस वरदान से मुकरते हो । (६८) उनमें फल खजूरें और अनार हैं । (६९) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो । ७०) उस में भली और सुन्दर स्त्रियें हैं ।(७१) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो । (७२ गोरी रंगत वाली डेरों में बैठी हुई । (७३) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो । (७४) जिनसे पहिले * किसी मनुष्य अथवा जिन्न ने प्रसंग नहीं किया । (७५) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो । (७६) उपधान लगाए हुए बैठे होयेंगे हरे बिछौनों और उत्तम बहुमूल्य गद्दियों पर । (७७) सो तुम दोनों अपने प्रभु के किस २ वरदान से मुकरते हो । (७८) तुम्हारे प्रभु का नाम धन्य हो जो महिमा और आदर योग्य है ।

५६ सूरए वाक़या (पुनरुत्थान) मक्की रुकू २ आयत ९६ ।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) होनहार † होजायगी । (२) उसके होने में अनहोना नहीं होसकता । (३) नीचा करने हारी और ऊंचा करने हारी । (४) जब पृथ्वी ठेर से हिलाई जायगी । (५) और पहाड़ टूक टूक होजायेंगे । (६ जैसे कि धूर उड़ाई गई है । (७) और तुम तीन भांति में होजाओगे । (८) सो दहनी ओर वाले कैसे हैं दहनी ओर वाले । (९) और बाईं ओर वाले कैसे हैं बाईं ओर वाले । (१०) बढ़ने हारों से भी आगे बढ़ने हारे । (११) वह भी समीपियों में से हैं । (१२) जो चैन के बैकुण्ठों में होंगे । (१३) और एक जत्था पहिलों में से । (१४ और थोड़े से अन्त समय वालों में से । (१५) जड़ाऊ सिंहासनों पर बैठे होंगे । (१६) ओसीसा लगाए हुए आमने सामने । (१७ उनके चहुंओर सदा जीनेहारे लड़के लिये हुई मदिरा लिए फिरेंगे । (१८) कटोरे और कुल्लड़ और प्यालियें । (१९) जिनसे न मतवाले होंगे न बकवास करेंगे । (२०) और फल जिस प्रकार के वह चाहेंगे । (२१) और पक्षियों का मांस जिस भांति का उनका जी चाहे । (२२) और बड़ी २ आंखों वाली हूरें होंगी जैसे छिपे हुए मोती । (२३) उसके बदले में जो वह किया करते थे । (२४) वहां अशुद्ध बात और पाप का वचन न सुनेंगे । (२५) परन्तु यही बात प्रणाम

---

* बक़र ३१, निसा १०, यस ५१, जुख़रुफ ७०, राद १३, मोमिन ८ । † अर्थात पुनरुत्थान ॥

प्रणाम। (२६) और दहिनी ओर वाले कैसे होंगे वे दहनी ओर वाले। (२७) बिन कांटों की बेरियों * के बीच में। (२८) और केला फलों से लदा हुआ। (२९) और लंबी छांह। (३०) और बहे हुए पानी। (३१) और बहुतायत से फल। (३२) न वह घटेंगे न वह बर्जे जायंगे। (३३) और ऊंचे २ बिछौनों में। (३४) और हमने उनको एक उठान † पर उत्पन्न किया है। (३५) फिर उनको कुवारियां बना दिया है। (३६) प्यारी २ समान अवस्था वाली। (३७) दहनी ओर वालों के निमित॥

रु० २—(३८) एक जत्था अगले लोगों में से। (३९) और एक जत्था अंतिम वालों में से। (४०) और बाईं ओर वाले कैसे हैं वह बाईं ओर वाले। (४१) भाप और खौलते हुए पानी में। (४२) और काले धुएं की छाया में (४३) कि जिसमें न ठण्ढक है न कुछ विश्राम। (४४) निस्सन्देह इससे पहिले वह लोग चैन करते थे। (४५) और इस बड़े पाप पर हठ करते थे। (४६) और कहा करते थे। (४७) कि जब हम मरगए और हाड़ और माटी होगए फिर हमको उठना होगा। (४८) क्या हमारे व्यतीत पुरखों को भी। (४९) कह निस्सन्देह अगले और पिछलों को भी। (५०) उस ठहराए हुए समय इकट्ठा होना होगा। (५१) फिर तुम हे भटके हुओ झुठलानेहारो। (५२) निस्सन्देह थूहड़ के पेड़ से खाओगे। (५३) और उससे पेट भरोगे। (५४) फिर उस पर खौलता हुआ पानी पियोगे। (५५) ऐसे पियोगे जैसे प्यासा ऊंट पीता है। (५६) प्रतिफल के दिन यह उनकी जेवनार है। (५७) हमने तुमको उत्पन्न किया फिर तुम क्यों नहीं सत्य मानते। (५८) क्या तुमने सोचा कि तुम क्या टपकाते ‡ हो। (५९) क्या तुमने उसको उत्पन्न किया है अथवा हमहीं उत्पन्न करनेहारे हैं। (६०) और हमने तुम्हारे निमित मृत्यु को ठहरा दिया है और हम इससे नहीं थक गए (६१) कि तुम्हारी सन्ती तुम्हारी नाईं और लेआयें और तुमको ऐसी दशा में उत्पन्न करदें जिसको तुम नहीं जानते। (६२) और तुम पहिली उत्पति को जान चुके हो फिर क्यों शिक्षित नहीं होते। (६३ भला देखो तो जो तुम बोते हो। (६४) क्या तुम उसको उगाते हो अथवा हम उगानेहारे हैं। (६५) यदि हम चाहें तो कण कण करदें कि तुम बातें बनाते रहजाओ। (६६) कि हम पर तो डांड़ पड़ा और हम निराश रह गए। (६७) भला देखो तो सही जो पानी तुम पीते हो। (६८) क्या तुमने उसको मेघ से उतारा अथवा हमहीं उतारनेहारे हैं। (६९) यदि हम चाहें

---

* नजम १४। † अर्थात हूरों को। ‡ अर्थात स्त्रियों के गर्भ में॥

तो उसे खारी करदें सो तुम क्यों धन्यबाद नहीं करते। (७०) भला बताओ तो अग्नि जो सुलगाया करते हो। (७१) क्या तुमने उसका पेड उत्पन्न किया अथवा हमहीं उत्पन्न करनेहारे हैं। (७२) हमने उसको बटोहियों के निमित चिन्ह और लाभ का कारण बनाया है। (७३) अपने महिमा वाले प्रभु का जाप कर॥

रु० ३—(७४) और मैं तारा गिरने के स्थानों की किरिया खाता हूं (७५) और निस्सन्देह यह भारी किरिया है यदि तुम समझो। (७६) और निस्सन्देह कुरान बड़ा आदरवाला है। (७७) गुप्त पुस्तक में। (७८) बिना स्नान किए हुए उसे कोई न छुए। (७९) यह * सृष्टियों के प्रभु की ओर से उतरा है। (८०) सो क्या तुम इस वचन से मुकरते हो। (८१) और अपना भाग यही ठहराते हो कि तुम उसको झुठलाते हो। (८२) और जब तुम्हारे गले में आपहुंचे। (८३) और तुम उस समय देखते हो। (८४) और हम तुम्हारी अपेक्षा से उससे अधिक निकट होते हैं परन्तु तुमको दिखाई नहीं देते। (८५) सो यदि तुम किसी की आज्ञा में नहीं। (८६) तो उस प्राण को लौटा क्यों नहीं लाते यदि तुम सत्यबादी हो। (८७) सो यदि वह समीपियों में से हुआ। (८८) तो आनन्द और सुगन्ध और बरदान वाला बैकुण्ठ है। (८९) और यदि वह दहिनी ओर वालों में से है। (९०) फिर तुझ पर प्रणाम दाहिनी ओर वालों में से। (९१) और यदि वह झुठलानेहारों में से। (९२) भटके हुओं में से हो। (९३) उसकी जेवनार खौलता हुआ पानी है। (९४) और नर्क में प्रवेश करेगा। (९५) निस्सन्देह यह समाचार निपट यथार्थ है। (९६) अपने महिमा वाले प्रभु का जाप कर॥

५७ सूरए हदीद † (लोहा) मदनी रुकू ४ आयत २९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है ईश्वर का जाप करता है वही बली बुद्धिवान है। (२) आकाशों और पृथ्वी का राज्य उसी का है वही मारता और जिलाता है वह हर वस्तु पर पराक्रमी है। (३) वही आदि है और वही अन्त है और प्रगट है और गुप्त है वही हर वस्तु को जानता है। (४) वही है

* इस आयत से जान पड़ता है कि महम्मद साहब के जीवन में कुरान का बहुत बड़ा भाग इकट्ठा होचुका था जो अनेक लोगों के पास था।

† यह सूरत सब के निकट मदनी है इसकी आयत २२ से ऐसा जान पड़ता है कि युद्ध उहद और खन्दक के मध्य में उतरी॥

जिसने आकाश और पृथ्वी को छः दिन में उत्पन्न किया फिर स्वर्ग पर ठहरा और वह जानता है जो कुछ पृथ्वी में प्रवेश करता है और जो कुछ आकाश में से निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसकी ओर चढ़ता है और वह तुम्हारे संग है जहां कहीं भी तुम होओ और जो कुछ तुम कररहे हो ईश्वर उसे देखरहा है। (५) आकाशों और पृथ्वी का राज उसी का है और समस्त कार्य्य ईश्वरही की ओर लौटकर जायंगे। (६) वह रात्रि को दिवस में प्रवेश देता है और दिवस को रात्रि में प्रवेश देता है और वही अन्तःकरणों के भेदों को जानता है। (७) ईश्वर पर विश्वास लाओ और उसके प्रेरित पर और उसमें से व्यय करो जिसका उसने उत्तराधिकारी किया है और जो तुममें से विश्वास लाए और व्यय करते रहे उनके निमित बहुत बड़ा प्रतिफल है। (८) तुमको क्या होगया कि ईश्वर पर विश्वास नहीं लाते यद्यपि उसका प्रेरित तुमको बुलाता है जिस्तें तुम अपने प्रभु पर विश्वास लाओ और तुमसे याचा लेचुका है यदि तुम प्रतीत करनेहारे हो। (९) वह वही है जो अपने दास पर स्पष्ट आयतें उतारता है जिस्तें तुमको अन्धकारों से निकालके जोति की ओर लेआवे और निस्सन्देह ईश्वर अत्यन्त कृपालु और दयालु है। (१०) तुमको क्या होगया कि ईश्वर के मार्ग में व्यय नहीं करते यद्यपि आकाशों और पृथ्वी का दाय भाग * ईश्वरही का है तुम में वह मनुष्य उसके तुल्य नहीं होसकता जो जय होने से पहिले व्यय करता है और लड़ता है यह उन लोगों से बढ़े हुए हैं जो विजय के पश्चात व्यय करते और लड़ते हैं ईश्वर ने सबसे सुदशा की प्रतिज्ञा की है और ईश्वर उन कर्म्मों को जो तुम करते हो जानता है॥

रु० २—(११) कौन ऐसा है जो ईश्वर को ऋण दे अच्छा ऋण और वह उसको दुगना चुका दे उसी के निमित आदर का प्रतिफल है। (१२) जिस दिन तू विश्वासी पुरुष और विश्वासी स्त्रियों को देखेगा कि उनकी ज्योति उनके आगे आगे दौड़ती चली आयगी उनकी दहिनी ओर से तुम्हारे निमित आज वैकुण्ठ का सुसमाचार है उनके नीचे धारें बहती हैं। (१३) जिस † दिन धर्म कपटी पुरुष और स्त्रिएं विश्वासियों से; कहेंगे हमारी बाट जोहो हम भी तुम्हारी जोति से प्रकाश प्राप्त करलें कहा जायगा अपने पीछे लौट जाओ सो ढूंढ़ो प्रकाश फिर उनके मध्य में एक भीत खड़ी की जायगी जिसका एक द्वार होगा उसके भीतर की ओर

---

* अरबी में मीरास।   † दस कुंवारियों का दृष्टान्त. मत्ती २५ : ८—९॥

दिया है और बाहर की ओर दण्ड है वह उनको पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे संग न थे वह कहेंगे हां थे तो परन्तु तुमने अपने प्राणों को उपद्रव में डाल दिया और बाट जोहते रहे और सन्देह करते रहे और तुमको तुम्हारी लालसाओं ने धोके में रक्खा यहां लों की ईश्वर की आज्ञा आ पहुंची और धोका * देने हारे ने तुमको ईश्वर के विषय में बहकाया। (१४) सो आज के दिन न तुम से न अधर्मियों से कोई भाया † मूल्य ग्रहण किया जायगा तुम्हारा ठिकाना अग्नि है वही ‡ तुम्हारा स्वामी है बहुत बुरा स्थान लौट जाने को। (१५) क्या बिश्वास लानेहारों के निमित समय नहीं आया कि उनके हृदय ईश्वर के सुमरण के समय आधीनी करें और उसकी जो ईश्वर ने सत्य के साथ उतारा और उन लोगों के समान न हो जिनको इससे पहिले पुस्तक दी गई और उनका नियत समय आयगा तो उनके हृदय कठोर होगए और बहुतेरे उनमें कुकर्मी हैं। (१६) जानलो ईश्वर पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवता करता है और हमने स्पष्ट आयतें तुम्हारे निमित बर्णन करदीं जिस्तें तुम समझो। (१७) निस्सन्देह दान करने हारे पुरुष और दान करनेहारी स्त्रियें और जो ईश्वर को ऋण देते हैं अच्छा ऋण उनका दुगना किया जायगा और उनके निमित बड़े आदर का प्रतिफल है। (१८) जो ईश्वर पर और उसके प्रेरित पर विश्वास लाए वही लोग अपने प्रभु के निकट सच्चे स्वधर्मी और साक्षी हैं उनके निमिन उनका प्रतिफल और उनकी जोति है और जिन्होंने अधर्म्म किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही नर्कगामी हैं॥

रु० ३—(१९) जान रक्खो कि संसारिक जीवन केवल खेल क्रीड़ा और परिक्षा है परस्पर एक दूसरे पर घमण्ड करना और एक दूसरे से बढ़के संपति और संतति चाहना उस वर्षा का दृष्टान्त है कि उसकी हरयाली अधर्मियों § को अच्छी लगी फिर सूख जाती है और तू उसको देखता है कि पीली पड़जाती है फिर वह चूरा होजाती है और अन्त के दिन कठिन दण्ड है। (२०) और क्षमा ईश्वर ही की ओर से है और उसी की प्रसन्नता परन्तु संसारिक जीवन यही धोके की टट्टी है। (२१) अपने प्रभुकी क्षमा और बैकुण्ठ की ओर दौड़ो जिसका फैलाव इतना है जैसे आकाशों और पृथ्वी का फैलाव यह उन लोगों के निमित उद्यत की गई जो ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वास लाए यह ईश्वर का अनुग्रह है जिसको चाहे दे और ईश्वर का अनुग्रह बहुत ही बड़ा है। (२२) कोई

* अर्थात दुष्टात्मा। † अर्थात फ़िदिया। ‡ अर्थात अग्नि। § कोई कोई इसे किसान समझते हैं॥

कष्ट पृथ्वी में और न तुम ही में नहीं आता परन्तु यह कि वह पुस्तक में लिखा हुआ है पहिले इसके कि हम उसको उत्पन्न करें निस्सन्देह यह ईश्वर पर सहज है। (२३) जिस्तें तुम उस पर शोक न किया करो जो तुम्हारे हाथ से जाता रहे और न तुम उस पर हर्षित होओ जो तुमको वह देता है ईश्वर किसी घमंडी को मित्र नहीं रखता। (२४) और जो आप भी कृपणता करते हैं और दूसरों को भी कृपणता का परामर्श देते हैं और वह अपनी पीठ फेरे निस्सन्देह ईश्वर निश्चित और स्तुति योग है। (२५) हमने अपने प्रेरितों को स्पष्ट चिन्ह देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक और तुला * उतारी जिस्तें लोग न्याय पर स्थिर रहें और हमने लोहा उतारा जिसमें कठिन भय † और लोगों के निमित लाभ भी है जिस्तें ईश्वर जान जाय कि कौन मनुष्य उसकी और उसके प्रेरितों की गुप्त में सहायता करता है निस्सन्देह ईश्वर बलवन्त और बलिष्ठ है॥

रु० ४—(२६) और हमने नूह को और इबराहीम को भेजा और उनके वंश में भविष्यद्वाक्य और पुस्तक रखी कोई उनमें से शिक्षित हैं और बहुतेरे उनमें कुकर्मी हैं। (२७) और हमने उनके पीछे अपने प्रेरितों को भेजा और उनके पीछे मरियम के पुत्र ईसा को और उसको इंजील‡ दी और उन लोगों के हृदयों में जो उसके मार्ग पर चले नम्रता और दया उत्पन्न की और एकान्त § गृही जो उन्होंने अपनी ओर से प्रचलित की थी हमने उन पर नहीं लिखी थी परन्तु ईश्वर की प्रसन्नता चाहने के निमित उन्होंने उसको ऐसा दृष्टि में नहीं रखा जैसा रखना उचित था परन्तु हमने उनमें से उनको जो विश्वास लाए उनका प्रतिफल दिया और उनमें बहुतेरे कुकर्मी हैं। (२८) हे विश्वासियो ईश्वर से डरते रहो और उसके प्रेरित पर विश्वास लाओ जिस्तें ईश्वर तुमको अपनी दया से दुगना भाग दे और तुमको एक जोति दे जिसको तुम लिए फिरो और तुमको क्षमा करदे और ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (२९) यह इस कारण है कि पुस्तक वाले न समझें कि वह ईश्वर के अनुग्रह से कुछ नहीं पासकते अनुग्रह तो ईश्वर ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है देता है क्योंकि ईश्वर बड़े अनुग्रह वाला है॥

---

* अर्थात मत के नियम. रहमान ६। † उत्पत्ति ४ : २२। ‡ इससे पूरा नया नियम वर्णन करना अभिप्राय नहीं वरन वह प्रेरणाएं जो महम्मद साहब के कहे अनुसार ईसा पर उतरी हैं। § अर्थात त्यागी॥

५८सूरए मुजादला(वह जो झगड़ती है)मदनी रुकू३आयत२२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १ (१) ईश्वर ने उसकी बात सुनली जो तुझसे अपने पति के निमित झगड़ती* थी और ईश्वर से विलाप करती थी और ईश्वर तुम्हारी-बात चीत सुनता था निस्सन्देह ईश्वर सुनता और देखता है। (२) जो लोग तुम में से अपनी स्त्रियों को माता† कह बैठें वह उनकी माताएं नहीं हैं उनकी माता तो केवल वही हैं जिन्होंने उनको जन्मा और निस्सन्देह वह अनुचित और झूठ बात कह दिया करते हैं। (३) निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (४) और जो अपनी स्त्रियों को माता कह बैठें और अपनी बात को लौटाना चाहें तो उनके निमित प्रथम इसके कि परस्पर इकट्ठे हों एक दास निर्बन्ध करना है तुमको इसकी शिक्षा कीजाती है जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उसे जानता है। (५) फिर जिससे यह न बनपड़े तो लगातार दो महीने उपवास करे प्रथम इसके कि वह परस्पर इकट्ठे हों फिर जिससे यह भी न बन पड़े तो साठ कंगालों को भोजन कराए यह इस निमित है कि तुम ईश्वर और उसके प्रेरित पर बिश्वास लाओ और यह ईश्वर की ठहराई हुई मर्यादें हैं और अधर्म्मियों के निमित कठिन दण्ड है। (६) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर और उसके प्रेरित से विरुद्धता करते हैं वह औंधे मुंह किए जायंगे जैसा वह औंधे मुंह हुए जो उनसे पहिले थे और हमने स्पष्ट आयतें उतारदीं और अधर्म्मियों के निमित उपहास का दण्ड है। (७) जिस दिन ईश्वर सबको इकट्ठा खड़ा करेगा फिर उनको उनके कर्म्म दर्शाएगा ईश्वर ने उन सबको गिन रक्खा है परन्तु वह उसको भूलगए हैं और ईश्वर हर वस्तु पर साक्षी है ॥

रु० २—(८) क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है ईश्वर सब कुछ जानता है कहीं तीन का परामर्श नहीं होता जहां वह उनमें चौथा न हो और पांच का जहां वह छठा न हो और न इससे न्यून न अधिक जहां वह उनके संग न हो जहां कहीं भी वह हों फिर पुनरुत्थान के दिन वह उनको उनके किए हुए कर्म्म दर्शायगा निस्सन्देह ईश्वर को हर वस्तु का ज्ञान है। (९) क्या तू नहीं देखता कि जो कानाफूसी करने से बर्जे गए पाप और विरोध और प्रेरित की अनाज्ञाकारी के विषय में मिलकर परामर्श करते हैं और जब तेरे समीप आते

---

* सावित के पुत्र ओस ने अपनी पत्नी सालिबा की पुत्री खोला से कह दिया था कि तू मेरी माता की ठौर है यह अज्ञानता के समय का त्याग था उसीका इस रुकू में चर्चा है। † अर्थात ज़ुहार ॥

हैं तो उन शब्दों में तुझे प्रणाम * करते हैं जिनसे ईश्वर ने तुझे प्रणाम नहीं किया और अपने मनों में कहते हैं क्यों ईश्वर हमारे इस कहने पर दण्ड नहीं देता उनके निमित नर्क बस है वह उसमें प्रवेश होयंगे सो वह बुरा ठिकाना है। (१०) हे विश्वासियो जब तुम परस्पर बात चीत किया करो तो पाप और विरोध और प्रेरित की अनाज्ञाकारी की बात न करो बरन भलाई और संयम के विषय में मिलकर बातें करो और ईश्वर से डरो क्योंकि तुम सब उसी के तीर इकत्र किए जाओगे। (११) कानाफूसी करना तो दुष्ट कर्म्म है कि विश्वासियों को शोक पहुंचाए परन्तु वह उनका ईश्वर के बिना कुछ बिगाड़ नहीं सकता विश्वासियों को ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। (१२) हे विश्वासियो जब तुम से कहाजाय कि सभाओं में खुलकर बैठो † तो फैलजाया करो ईश्वर तुम्हें फैलावे देगा और जब कहा जाय कि उठ खड़े हो तो खड़े होजाओ ईश्वर तुमसे विश्वासी और ज्ञानी लोगों की पदवियां उच्च करेगा क्योंकि जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उसको भली भांति जानता है। (१३) हे विश्वासियो जब तुम प्रेरित के तीर परामर्श के हेतु आओ तो परामर्श से पहिले दान करलो यह तुम्हारे निमित उत्तम और अधिक पवित्र है परन्तु यदि यह न करसको तो ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है (१४) सो क्या तुम डर गए कि अपने परामर्श करने से पहिले दान कर दिया करो सो जब तुमने न किया और ईश्वर ने तुमको क्षमा कर दिया तो प्रार्थना को स्थिर रखो और दान दिया करो और ईश्वर और उसके प्रेरित की सेवा करो क्योंकि ईश्वर उसको जो तुम करते हो भली भांति जानता है॥

रु० ३—(१५) क्या तू ने उनको नहीं देखा जो उन लोगों से मित्रता करते हैं जिन पर ईश्वर का कोप है न तो वह तुम में से और न उनमें से हैं और तुम से झूठी किरिया खाते हैं और वह भली भांति जानते हैं। (१६) उनके निमित ईश्वर ने दुखदायक दंड उपस्थित कर रखा है निस्सन्देह यह बुरा है जो कुछ वह करते हैं। (१७) उन्होंने अपने विश्वास को ढाल बना रखा है और वह ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं उनके निमित उपहास का दण्ड है। (१८) उनकी संपति उन को कुछ अर्थ न आयगी और न उनकी संतति ईश्वर के विरुद्ध वह तो अग्नि वाले

---

* यहूदी अस्सलाम की सन्ती अस्साम कहते थे जिसका अर्थ यह है कि तुझे मृत्यु आजाय।
† जब बदरवाले महम्मद साहब से उनके मद्र में मिलने आए तो महम्मद साहब के सहायक चहुंओर बैठे थे बदरवालों को ठौर न मिला वह खड़े रहे इस पर महम्मद साहब नें किसी किसी के नाम लेके उनकी ठौर से उठाया और बदरवाले बैठ गए इस पर धर्म्म कपटियों ने मेहना किया था तब यह आयत उतरी॥

लोग हैं और उसमें सदा रहेंगे। (१९) जिस दिन ईश्वर उन सबको उठाके इकत्र करेगा वह उसके साम्हने किरिया खायंगे जैसा कि तुम्हारे साम्हने किरया खाते हैं और बिचार करेंगे कि वह कुछ मार्ग पर हैं परन्तु निस्सन्देह वह झूठ हैं। (२०) दुष्टात्मा ने उन पर विजय पा ली है सो उनको ईश्वर का स्मर्ण भुलादिया यह दुष्टात्मा का जत्था है हां दुष्ट आत्मा का ही जत्था हानि उठाया करता है। (२१) निस्सन्देह जो लोग ईश्वर और उसके प्रेरित के विरोध में उठ खड़े हुए वह तुच्छ से तुच्छ लोग हैं ईश्वर लिख चुका है निस्सन्देह मैं ही प्रबल रहूंगा और मेरे प्रेरित निस्सन्देह ईश्वर ही बलिष्ठ और बलवान है। (२२) तू उन लोगों को जो ईश्वर और अन्त के दिन की प्रतीत नहीं रखते हैं उन लोगों का मित्र न पायगा जो ईश्वर और उसके प्रेरित से विरुद्धता करते हैं चाहे वह उनके पिता अथवा पुत्र अथवा भाई अथवा नातेदार ही क्यों न हों उन लोगों के हृदयों में ईश्वर ने विश्वास लिख दिया है और उनकी सहायता अपनी पवित्र आत्मा से करता है और वह उनको बैकुण्ठों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नदियां बह रही हैं वह उसमें सदा रहेंगे ईश्वर उनसे प्रसन्न हुआ और वह उससे प्रसन्न हुए वह ईश्वर का दल है हां ईश्वर ही का दल भलाई प्राप्त करेगा ॥

५९ सूरए हशर (देशत्याग होना) मदनी रुकू ३ आयत २४।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है ईश्वर का जाप करता है वही बलवान बुद्धिवान है। (२) वही है जिसने पुस्तक* वाले लोगों को उनके घरों से निकाल बाहर किया जो अधर्म्मी हुए यह उनका पहिला देश निकाला है तुम्हें विचार न था कि वह निकल जायंगे और उनको भी बिचार न था कि उनके गढ़ उनको ईश्वर से बचा लेंगे फिर ईश्वर उन पर ऐसी ओर से आया कि जहां से उनका बिचार लों न था और उनके हृदयों में भय बैठा दिया उन्होंने अपने ही हाथों से अपने घरों को उजाड़ दिया और विश्वासियों के हाथों ने भी सो हे नेत्र वालो शिक्षा पकड़ो। (३) यदि ईश्वर ने उन पर देश निकाला न लिखा होता तो

---

* यहूदियों में से नज़ीरबंशी जो मदीना के निकट रहते थे उन्होंने बाचा की थी कि वह युद्ध में अलग रहेंगे. बदर की विजय के पीछे महम्मद साहब के पक्ष वादियों में हुए और उहद की युद्ध की हार के पीछे उन्होंने महम्मद साहब का संग छोड़ दिया इसी कारण वह देश से निकाल दिए गए ॥

वह उनको इस संसार में दण्ड देता और उनके निमित अन्त के दिन में अग्नि का दण्ड है। (४) यह इस कारण है कि उन्होंने ईश्वर और उसके प्रेरित से विरोध किया और जो कोई ईश्वर से विरोध करेगा निस्सन्देह ईश्वर कठिन दण्ड देनेहारा है। (५) जो खजूर के पेड़ तुमने काट डाले अथवा उनकी जड़ों पर रहने दिए सो ईश्वर की आज्ञा से है जिस्तें वह कुकर्म्मियों को उपहास करे। (६) और जो कुछ ईश्वर ने इसमें से अपने प्रेरित के हाथ में सौंपा उस पर तुमने अपने घोड़े अथवा ऊंट नहीं दौड़ाए परन्तु ईश्वर अपने प्रेरितों को जिस पर चाहता है अधिकार देता है और ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिवान है। (७) बस्तियों वालों में से जो कुछ ईश्वर अपने प्रेरित के हाथ में दे सो वह ईश्वर का और प्रेरित का और नातेदारों का और अनाथों का और कंगालों का और बटोहियों का अंश है जिस्तें वह तुम्हारे धनवानों ही के हाथों में न फिरे और जो कुछ प्रेरित् तुमको दे लेलो और जिससे तुमको बरजे उससे अलग रहो ईश्वर से डरो निस्सन्देह ईश्वर कठिन दण्ड देनेहारा है। (८) और निर्धन घर त्यागनेहारों के निमित जो अपने घरों और धनों से निकाले गए जो ईश्वर के अनुग्रह और उसकी प्रसन्नता के चाहक हैं और ईश्वर और उसके प्रेरित की सहायता करते हैं और यही लोग सत्य बोलनेहारे हैं। (९) और उनका* जो इस† स्थान में रहते हैं और उनसे‡ पहिले विश्वास लाए थे और उनसे प्रीत करते थे जिन्होंने देश और अपने मनों में कोई अभिप्राय नहीं पाते उसके निमित जो उनको § मिले और अपने प्राण पर उनको श्रेष्ठ जानते हैं यदि वह आप ही सकेती में क्यों न हो और जो अपने प्राण के लालच से बच गया वही भलाई पानेहारों में होगा। (१०) और उनका जो उनके पश्चात आए और कहते हैं कि हे हमारे प्रभु हमको क्षमा करदे और जो हमसे पहिले विश्वास लेआए और जो विश्वास लाए हैं उनकी ओर से हमारे मनों में कुछ द्वेष न रहने दे हे हमारे प्रभु निस्सन्देह तू ही दयालु और कृपालु है॥

रु० २—(११) क्या तूने उन धर्म्म कपटियों को नहीं देखा जो अपने भाइयों से जो पुस्तकवालों में से अधर्म्मी हैं कहते हैं कि यदि तुमको कोई निकाल देगा तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और हम तुम्हारे विषय में किसी का कहा न मानेंगे और यदि कोई तुमसे लड़ेगा तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे परन्तु ईश्वर साक्षी है कि वह झूठे हैं। (१२) यदि वह निकाले जायंगे तो यह उनके

---

* अर्थात सहायक। † अर्थात मदीना। ‡ अर्थात घर त्यागनेहारों से। § अर्थात संगी जो त्याग न करें॥

संग न निकलेंगे और यदि उनसे लड़ाई होगी तो यह उनकी सहायता न करेंगे और यदि सहायता करेंगे भी तो पीठ दिखाकर भाग जायंगे और फिर उनकी सहायता न कीजायगी। (१३) तुम्हारा डर उनके मनों में ईश्वर के डर से बहुत अधिक है इस कारण कि वह वे समझ जाति हैं। (१४) वह तुमसे कभी मिल कर युद्ध न करेंगे परन्तु गढ़वाली बस्तियों में और भीतों की आड़ में उनकी लड़ाई परस्पर बहुत कठिन है तू उनको मिला हुआ जानता है यद्यपि उनके हृदय छिन्नभिन्न हैं यह इस कारण कि वह निर्बुद्धि जाति है। (१५) उनका दृष्टान्त उन लोगों के समान है जो उनसे पहिले व्यतीत हुए उन्होंने अपनी बुराई की विपति चाखी और उनके निमित दुखदायक दण्ड है। (१६) उनका दृष्टान्त दुष्टात्मा के समान है जब उसने मनुष्य से कहा कि तू अधर्मी होजा और जब वह अधर्मी होगया तो कहा निस्सन्देह मुझे तुझसे कोई प्रयोजन नहीं मैं तो ईश्वर से डरता हूं जो सृष्टियों का प्रभु है। (१७) और उन दोनों का अन्त यही है कि वह दोनों अग्नि में डाले जायंगे और वहां सदा रहेंगे और दुष्टों का दण्ड यही है॥

रु० ३—(१८) हे विश्वासियो ईश्वर से डरो और चाहिए कि हर प्राणी विचार करे कि उसने कलके* निमित्त क्या आगे भेजा है ईश्वर से डरते रहो निस्सन्देह ईश्वर भली भांति जानता है उस सबको जो तुम करते हो। (१९) और उनके समान न बनो जो ईश्वर को भूलजाते हैं और ईश्वर भी उन्हें भुलादेता है वह लोग कुकर्मी हैं। (२०) अग्नि वाले लोग वैकुण्ठ वासियों के तुल्य नहीं होंगे वैकुण्ठ वासी तो मनोर्थ पाए हुए हैं। (२१) यदि हम इस कुरान को पहाड़ पर उतारते तो तू देखलेता कि वह ईश्वर के डर से गड़ गड़ जाता और फटजाता हम यह दृष्टान्त मनुष्यों के निमित वर्णन करते हैं जिस्से वह विचार करें। (२२) वही ईश्वर है उसके उपरान्त कोई देव नहीं वही गुप्त और प्रगट का जानने हारा है वही रहमान और दयालु है। (२३) वही ईश्वर है उसके उपरान्त कोई देव नहीं राजा है—पवित्र है—कुशल देनेहारा है—धर्मात्मा है—शरण देनेहारा है—बलिष्ठ है—स्वाधीन है—अहंकारी है—ईश्वर उससे पवित्र है जो उसके साथ साझी ठहराते हैं। (२४) वही ईश्वर है—सृजनहार—करतार—स्वरूप बनानेहारा—उसके सब नाम अच्छे हैं जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में हैं उसी का जाप करते हैं क्योंकि वही बलिष्ठ बुद्धिवान है॥

---

* अर्थात पुनरुत्थान।

६० सूरए मुमतहना*(जो परखलीगई)मकी रुकू २ आयत १३।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रु० १—(१) हे बिश्वासियो मेरे और अपने बैरियों में से किसी को मित्र न बनाओ कि उनकी ओर प्रेम से संदेश भेजो क्योंकि वह उस सच्चाई से जो तुम्हारी ओर उतरी है अधर्म्म कर चुकी हैं प्रेरित को और तुमको निकाले देते हैं क्योंकि तुम ईश्वर अपने प्रभु पर बिश्वास लाए हो और यदि तुम मेरे मार्ग में युद्ध को निकले हो और मेरी प्रसन्नता के चाहक हो तो उनकी प्रेम के गुप्त संदेश † अनर्थ भेजते हो और जो कोई तुममें से ऐसा करेगा वह सीधे मार्ग से भटक गया। (२) यदि वह तुम्हें पाजायं तो वह तुम्हारे बैरी होजायं और तुम पर अपने हाथ और अपनी जीभें लड़ाई के साथ चलाएं और चाहें कि तुम भी किसी उपाय से अधर्म्मी होजाओ। (३) तुम्हारे नातेदार और तुम्हारी सन्तान पुनरुत्थान के दिन कभी तुम्हारे किसी अर्थ न आयंगे वह तुममें न्याय करेगा और जो कुछ तुम करते हो ईश्वर देखरहा है। (४) तुम्हारे निमित इबराहीम और उसके साथियों में शुभ दृष्टान्त उपस्थित है जब उन्हों ने अपने लोगों से कहा कि हम तुमसे और उन बस्तुओं से जिनको तुम ईश्वर के उपरान्त पूजते हो रहित हैं हम तुमसे मुकरते हैं और हममें और तुममें डाह और बैर भाव सदा के निमित आरंभ होगया जबलों तुम एक ईश्वर पर बिश्वास न लाओ केवल इबराहीम की एक बात के कि उसने अपने पिता से कहा कि मैं अवश्य तेरे निमित क्षमा मागूंगा और ईश्वर के विरुद्ध में तेरे निमित कुछ और ‡ नहीं कर सकता और हे मेरे प्रभु हमने तुझ पर भरोसा किया और तेरी ही ओर अवहित हुए और तेरी ही ओर लौट कर जाना है। (५) हे हमारे प्रभु हम पर अधर्म्मियों के बल की परिच्छा न कर हे हमारे प्रभु हमको क्षमा कर निस्सन्देह तू बलिष्ठ बुद्धिवान है। (६) निस्सन्देह तुम्हारे निमित उनमें उसके निमित शुभ दृष्टान्त उपस्थित हैं जो ईश्वर और अंत के दिन की आशा रखते हैं परन्तु जो पीठ फेरे तो निस्सन्देह ईश्वर ही निश्चिन्त और स्तुति योग्य है॥

---

* यह सूरत सन ९ हिजरी मक्का विजय करने के थोड़े समय पहिले उतरी ९ आयत लों उसी वर्ष के रमज़ान मास में उतरीं। † देश त्यागने के आठवें वर्ष महम्मद साहब ने मक्का पर चढ़ाई करने की इच्छा की थी और इस बात को गुप्त रखा था बतला के पुत्र हातिब एक संगी जो देश त्यागी था और बदर के युद्ध में भी साथी होचुका था उसके कुटुम्ब के लोग मक्का में थे उसने एक स्त्री के द्वारा गुप्त पत्र मक्कावालों को भेजा था जो पकड़ा गया था। ‡ सूरए तोबा ११५॥

रु० २—(७) निकट है कि ईश्वर तुममें और उनमें जिनके साथ तुम्हारा वैर भाव है मित्रता उत्पन्न करदे और ईश्वर पराक्रमी है और ईश्वर क्षमा करने हारा दयालु है। (८) ईश्वर तुमको उन लोगों के विषय में नहीं बर्जता जो तुम से मत के विषय में न लड़े और न तुमको तुम्हारे घरों से निकाला कि तुम उनके साथ उपकार न करो और उनके विषय में न्याय न करो निस्सन्देह ईश्वर न्याय करनेहारों को मित्र रखता है। (९) ईश्वर तुमको उन लोगों से मित्रता करने से बर्जता है जो तुम से मत के विषय में लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से निकाल बाहर किया और तुम्हारे निकालने के निमित दूसरों की सहायता की और जो कोई ऐसों से मित्रता करे वही दुष्ट हैं। (१०) हे बिश्वासियो जब तुम्हारे समीप विश्वासी * स्त्रिएं घर त्याग के आएं तो उनकी परिक्षा करलो ईश्वर उनकी परख भली भांति जानताहै फिर जब तुम जान जाओ कि वह बिश्वासी हैं तो फिर उनको अधर्मियों की ओर न लौटाओ यह उनको लीन नहीं और न वह इनको लीन हैं और उन लोगों को जो कुछ उन्हों ने इन पर व्यय किया है देदो और इसमें तुम पर कुछ दोष नहीं कि उन से बिवाह करलो जब कि उनकी बनि† उनको देदो और तुम अधर्मी स्त्रियों पर अपना अधिकार न रखो और जो कुछ तुमने उन पर व्यय किया है मांगलो और वह लोग भी जो कुछ उन्होंने व्यय किया है मांगलें यह ईश्वर की आज्ञा है जिससे वह तुम्हारे मध्य में न्याय करता है और ईश्वर जानने हारा बुद्धिवान है। (११) और यदि तुम्हारे हाथ से तुम्हारी स्त्रियों में से कोई अधर्मियों की ओर निकल भागे और फिर तुम उन से लड़ो तो जिन लोगों की स्त्रिएं चली गई थीं उनको जितना उन्होंने व्यय किया था देदो और उस ईश्वर से डरो जिसपर तुम विश्वास लाए हो। (१२) हे भविष्यद्वक्ता जब बिश्वासी स्त्रिएं तेरे निकट इस बात की होड़ करने को आएं कि वह ईश्वर के साथ किसी को साझी न ठहरायेंगी और न चोरी करेंगी और न कुकर्म करेंगी और न अपनी संतान को मार डालेंगी और न अपने हाथों और पाओं के मध्य में कोई बनावट § बना कर लायेंगी न किसी सुकर्म में तेरी आज्ञा उलंघन करेंगी सो तू उन से बाचाकरले और उनके निमित ईश्वर से क्षमा मांग ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१३) हे बिश्वासियो जिन लोगों पर ईश्वर का कोप है उनसे मित्रता न करो निस्सन्देह वह अपने अन्त के दिन से निराश होचुके हैं जैसे अधर्मी लोग समाधि¶ वालों से निराश होचुके हैं॥

* यह आयत हुदैबा के युद्ध के सन्धिपत्र के थोड़ेही समय पीछे उतरी। † अर्थात मिहर ‡ अपने पतियों को सन्तान के विषय में धोका न देंगी। § अर्थात यहूदी। ¶ मृतकों के दूजीबार जी उठने से॥

६१ सूरए सफ़ (चढ़ाई) मदनी रुकू २ आयत १४ ।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रु० १—(१) जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर का जाप करते हैं और वही बलवन्त बुद्धिवान है । (२) हे विश्वासियो वह बात मत कहो जो तुम नहीं * करते । (३) ईश्वर को उससे बड़ी घिन है कि तुम जो कहते हो वह नहीं करते हो । (४) निस्सन्देह ईश्वर उनको मित्र रखता है जो उसके मार्ग में ऐसे पांति बांधकर युद्ध करते हैं कि जैसे वह एक दृढ़ भीत है । (५) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि हे मेरी जाति तुम मुझे क्यों सताते हो यदपि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे ईश्वर का प्रेरित हूं और जब उन्होंने टेढ़ाई की ईश्वर ने भी उनके मन टेढ़े करदिए और ईश्वर कुकर्मियों को मार्ग नहीं दिखाता (६) और जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा हे इसराएल सन्तान मैं तुम्हार निमित ईश्वर का प्रेरित हूं उस पुस्तक को जो मुझ से पहिले आई सिद्ध करताहूं और एक प्रेरित का सन्देश देता हूं जो मेरे पश्चात आयगा उसका नाम अहमद † होगा और जब वह उनके तीर खुले चिन्ह लेकर आया तो बोले यह तो स्पष्ट टोना है । (७) उस से अधिक दुष्ट कौन है जो ईश्वर पर झूठा बन्धक बांधे जब कि वह इसलाम की ओर बुलाया जाता है परन्तु ईश्वर दुष्टों को शिक्षा नहीं करता । (८) वह चाहते हैं कि ईश्वर की जोति को अपनी फूकों से बुझादें परन्तु ईश्वर तो अपनी जोति को पूरा ही करके रहेगा यदपि अधर्मी बुराही मानें । (९) वही है जिसने अपने प्रेरित को शिक्षा और सत्यमत देकर भेजा कि उसको समस्त मतों पर प्रबल करे यदपि साझी ठहरानेहार बुराही मानें ॥

रु० २—(१०) हे विश्वासियो मैं तुमको एक व्यापार का संदेश दूं जो तुम्हें कठिन दण्ड से रहित करेगा । (११) ईश्वर और उसके प्रेरित पर विश्वास लाओ और ईश्वर के मार्ग में अपने धन और अपने प्राणों सहित युद्ध करो यह तुम्हारे निमित उत्तम है यदि तुम जानते हो । (१२) वह तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और तुमको बैकुण्ठों में प्रवेश देगा जिनके नीचे धारें बहती हैं उत्तम घर और अच्छे बैकुण्ठों में ठौर देगा वह बहुत बड़ी सफलता है । (१३) और एक दूसरी वस्तु भी जिसे तुम मन से चाहते हो ईश्वर की ओर से सहायता और निकट की

---

* यह ओहद के युद्ध के उन मुसलमानों से किया गया जो ओहद से पीठ दिखा कर भागे थे ।
† निश्चय योहन १६ : ७ से धोखा खाकर ऐसा कहा ॥

विजय सो तू विश्वासियों को सुसमाचार सुनादे। (१४) हे विश्वासियो ईश्वर के सहायक बनजाओ जैसा कि मरियम के पुत्र ईसा ने प्रेरितों से पूछा था कि ईश्वर के निमित मेरा कौन सहायक है प्रेरित बोले हम ईश्वर * के सहायक हैं और इसराएल वंश में से एक जत्था तो विश्वास ले आया और दूसरा मुकरगया हमने विश्वासियों को उनके शत्रुओं पर सहायता दी और वह प्रबल रहे॥

६२ सूरए जुमा (भीड़) मदनी रुकू २ आयत ११।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर ही का जाप करता है जो पवित्र राजा बलवन्त बुद्धिवान है। (२) वही है जिसने उम्मी लोगों में उन्हीं में से एक प्रेरित उन पर आयतें पढ़ता हुआ भेजा और उनको पवित्र बनाता और उनको पुस्तक और बुद्धि सिखाता और इससे पहिले निस्सन्देह वह प्रत्यक्ष भ्रम में पड़े हुए थे। (३) और दूसरे लोगों की ओर भी जो उनसे आगे नहीं बढ़े और वही बलवन्त और बुद्धिवान है। (४) यह ईश्वर का अनुग्रह है जिसे चाहे देता है ईश्वर बड़े अनुग्रहवाला है। (५) उन लोगों का दृष्टान्त जिन पर तौरेत लादी गई और उन्होंने उसको नहीं उठाया उस गदहे के समान है जो पुस्तकें लाद रहा है जिन लोगों ने ईश्वर की आयतों को झुठलाया उनका दृष्टान्त बहुत बुरा है ईश्वर दुष्ट लोगों को शिक्षा नहीं करता। (६) कह हे यहूदियो यदि तुम विचार करते हो कि समस्त लोगों के उपरान्त तुम ही ईश्वर के मित्र हो तो मृत्यु की लालसा करो यदि तुम सच्चे हो। (७) और वह कभी उसकी लालसा न करेंगे इस कारन कि जो कुछ उनके हाथ पहिले भेज चुके हैं परन्तु ईश्वर दुष्ट लोगों को भलीभांति जानता है। (८) तू कह निस्सन्देह वह मृत्यु जिससे तुम भाग रहे हो निश्चय तुमसे भेट करेगी फिर तुम्हारा फिरना गुप्त और प्रगट जानने हारे ईश्वर ही की ओर होगा और वह बतला देगा जो कुछ तुम करते थे॥

रु० २—(९) हे विश्वासियो जब शुक्रवार के दिन प्रार्थना की पुकार हो तो ईश्वर की ओर दौड़ो और व्यापार छोड़ दो यह तुम्हारे निमित उत्तम है यदि तुम जानते हो। (१०) फिर जब प्रार्थना समाप्त होचुके तो भूमि में फैल जाओ और

* इमरान ४५। † अर्थात मुसलमान नहीं हुए॥

ईश्वर का अनुग्रह ढूंढ़ो और ईश्वर को बहुतायत से स्मर्ण करो जिस्तें तुम्हारा भला हो। (११) जब वह बिकरी होती हुई अथवा क्रीड़ा देखें तो तुझको खड़ा *-छोड़ कर भाग जायं कहदे जो कुछ ईश्वर के निकट है वह क्रीड़ा और व्यापार से अति उत्तम है क्योंकि ईश्वर सब से उत्तम जीविका देनेहारा है॥

---

६३ सुरए मुनाफिकून[†] (धर्म्म कपटी) मदनी रुकू २ आयत ११।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) जब धर्म्म कपटी तेरे समीप आते हैं वह कहते हैं कि हम साक्षी देते हैं कि निस्सन्देह तू ईश्वर का प्रेरित है और ईश्वर तो जानता है कि निस्सन्देह तू उस का प्रेरित है और ईश्वर साक्षी देता है कि धर्म्म कपटी झूठे हैं। (२) उन्होंने अपने विश्वास को ढाल बना रक्खा है और वह ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं निस्सन्देह उनकी सब करतूतें बुरी हैं। (३) यह इस निमित है कि यह विश्वास लाए और फिर अधर्म्मी होगए तो उनके हृदयों पर छाप लगा दीगई जिस्तें वह न समझें। (४) और जब तू उन्हें देखता है तो तुझे उनके शरीर अचम्भित करते हैं और यदि बात करें तू उनकी बात पर कान लगाता है वह तो लकड़ियों के समान हैं जो भीत के सहारे लगी धरी हैं और प्रत्येक प्रचण्ड शब्द को समझते हैं कि उनके विरुद्ध हैं वह तो बैरी हैं सो तू उनसे बच ईश्वर उन्हें मारे कहां से फिरे जाते हैं। (५) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ईश्वर का प्रेरित तुम्हारे निमित क्षमा मांगेगा वह अपने सिर मटकाने लगते हैं और तू देख कि वह इतराते हुए घमण्ड करते हैं। (६) उनके निमित समान है कि तू उनके निमित क्षमा मांगे अथवा न मांगे ईश्वर उनको क्षमा न करेगा ईश्वर कुकर्म्मियों की शिक्षा नहीं करता। (७) वही तो हैं जो कहते हैं कि उन पर व्यय न करो जो प्रेरित के तीर रहते हैं यहां लों कि वह छिन्नभिन्न होजायं आकाशों और पृथ्वी के भण्डार ईश्वर ही के हैं परन्तु धर्म्म कपटी तो समझते ही नहीं। (८) कहते हैं कि यदि हम लौट कर मदीना गए तो निस्सन्देह प्रतिष्ठित तुच्छ को निकाल बाहर करेगा परन्तु प्रतिष्ठा ईश्वर ही की है और उसके प्रेरित की और विश्वासियों की परन्तु धर्म्म कपटी तो जानते ही नहीं॥

---

* कहते हैं कि एक शुक्रवार को एक व्यापारियों की जत्था आई महम्मद साहब प्रार्थना करा रहे थे तो लोग ढोल का शब्द सुन कर केवल बारह मनुष्यों के सब के सब प्रार्थना छोड़ कर भाग गए।

† यह सूरत सन ६ हिज्री में मुस्तलक वंश के ऊपर चढ़ाई करने के थोड़ेही समय पीछे उतरी॥

रु० २—(९) हे विश्वासियो तुमको तुम्हारी संपति और सन्तति ईश्वर के स्मरण से अचेत न करदें और जो ऐसा करेगा वही हानि उठानेहारा होयगा। (१०) हमारी दी हुई जीविका में से व्यय करो प्रथम इसके कि तुममें से किसी को मृत्यु आए और फिर कहने लगे हे मेरे प्रभु आह! तू मुझे थोड़ा सा अवसर देता कि मैं दान कर लेता और मैं सुकर्म्मियों में होजाता। (११) और ईश्वर किसी मनुष्य को जब उसकी मृत्यु आपहुंचेगी कभी अवसर न देगा और ईश्वर उसको जो तुम करते हो भलीभांति जानता है॥

---

६४ सूरए तग़ाबुन (हारजीत) मदनी रुकू २ आयत १८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर का जाप करते हैं उसी का राज्य है और वही महिमा योग्य है और वही हर वस्तु पर शक्तिवान है। (२) वही है जिसने तुमको उत्पन्न किया और तुम्ही में से अधर्म्मी हैं और तुम्हीं में से विश्वासी हैं और जो कुछ तुम कररहे हो ईश्वर देखरहा है। (३) उसी ने आकाशों और पृथ्वी को यथार्थ उत्पन्न किया और तुम्हारे स्वरूप बनाए और तुम्हारे स्वरूपों को अच्छा बनाया फिर उसी की ओर लौटकर जाना है। (४) वह जानता है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है और वह उसको जानता है जो कुछ तुम गुप्त करते हो और जो कुछ प्रगट करते हो और ईश्वर हृदय के भेदों को जानता है। (५) क्या तुम उनको नहीं जानते जो तुमसे पहिले अधर्म्मी होचुके हैं और उन्होंने अपने किए की विपति चाखी और उनके निमित्त दुःखदायक दण्ड था। (६) इस कारण की उनपे निकट उनके प्रेरित खुले चिन्ह लेकर आए थे और वह कहदेते थे क्या मनुष्य हमारी अगुवाई करेंगे सो उन्होंने अधर्म्म किया और मुंह मोड़ा और ईश्वर ने भी चिन्ता नहीं की ईश्वर निश्चिन्त और स्तुति योग्य है। (७) अधर्म्मी अनुमान करने लगे कि वह कभी उठा खड़े न किए जायंगे कहदे हां अपने प्रभु की सौंह तुम निश्चय उठाए जाओगे और तब तुमको बता दिया जायगा जो कुछ तुमने किया है क्योंकि वह तो ईश्वर पर सहज है। (८) सो विश्वास लाओ ईश्वर पर और उसके प्रेरित पर और उस ज्योति पर जो हमने उतारी है और ईश्वर तुम्हारी करनी को जानता है। (९) जिस दिन

तुमको इकत्र करेगा इकत्र करने के दिन वह दिन हार * जीत का है जो ईश्वर पर विश्वास लाया और सुकर्म्म किए ईश्वर उनकी बुराइयां दूर करके उसको बैकुण्ठों में प्रवेश देगा कि उनके नीचे धारें बहती हैं उसमें सदा रहेंगे यही बहुत भारी सफलता है। (१०) और जिन्होंने अधर्म्म किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही अग्नि वाले लोग हैं और वह सदा वहां रहेंगे और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है॥

रु० २—(११) बिना ईश्वर की आज्ञा के कोई विपति नहीं आती और जो कोई ईश्वर पर विश्वास लाए तो ईश्वर उसके मनकी शिक्षा करता है ईश्वर हर वस्तु को जानता है (१२) ईश्वर और प्रेरित के आधीन रहो और यदि तुम पीठ फेरोगे तो हमारे प्रेरित का कार्य केवल स्पष्ट सन्देश पहुंचा देना है। (१३) ईश्वर है और उसके उपरान्त कोई देव नहीं और विश्वासियों को ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। (१४) हे विश्वासियो निस्सन्देह तुम्हारी पत्नियों और तुम्हारी संतान में से कुछ तुम्हारे वैरी हैं उन से चौकस रहो यदि क्षमा करो और छोड़ दो और क्षमा करो तो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (१५) तुम्हारी संपति और संतति तुम्हारे निमित परिक्षा है और ईश्वर जो है उसके तीर बहुत बड़ा प्रतिफल है। (१६) और जहांलों होसके तुम ईश्वर से डरो और सुनो और आधीनी करो और व्यय करो तुम्हारे निमित उत्तम होगा और जो अपने प्राण में लाभ से बचा तो वही भलाई पानेहारों में होयंगे। (१७) यदि तुम ईश्वर को ऋण दो अच्छा ऋण वह तुमको इसका दुगना देगा और तुमको क्षमा करेगा क्योंकि ईश्वर उपकार स्मृता और कोमल स्वभाव है। (१८) छिपे और खुले का जाननेहारा बलवन्त बुद्धिवान है॥

६५ सूरए तलाक़ (त्यागना) मदनी रुकू २ आयत १२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) हे भविष्यद्वक्ता जब तू अपनी स्त्रियों को त्यागने † लगे तो उनको इद्दत § की दशा में त्यागदो और इद्दत को गिनो और ईश्वर से जो तुम्हारा

---

* पुनरुत्थान के दिन अपराधी और धर्म्मी अपनी दशाओं को बदल देंगे अपराधियों ने संसार में भोग विलास किया यहां उपहास का दण्ड पायंगे धर्म्मियों को बैकुण्ठ का विश्राम प्राप्त होयेगा। † जान पड़ता है कि यह आयत मदीना में उतरी। ‡ सूरए बकर २२८। § अर्थात मासिकधर्म्म होजायं यदि गर्भ हो तो उसके उत्पन्न होने के पीछे॥

प्रभु है डरते रहो उनको अपने घरों से निकाल मत दो और न वह आपही निकलें केवल इसके कि प्रगट में निर्लज्जता के कर्म्म करें और यह ईश्वर की ठहराई हुई मर्यादें हैं और जो ईश्वर की मर्यादों से आगे बढ़ गया उसने अपने ऊपर अनीति की तू नहीं जानता कि कदाचित ईश्वर इसके पश्चात कोई नई बात उत्पन्न करे। (२) सो जब वह अपने नियत समय को पहुंचे तो फिर उनको सहर्ष रखलो अथवा सहर्ष उनको अलग कर दो और अपने लोगों में से दो विश्वासपात्र पुरुष साक्षी करलो और ईश्वर के निमित ठीक २ साक्षी दो इस बात की शिक्षा उस मनुष्य को दीजाती है जो ईश्वर और अंत के दिन पर विश्वास रखता है और जो मनुष्य ईश्वर से डरता है और ईश्वर उसकी मुक्ति का उपाय उत्पन्न करदेता है और उसको ऐसी ओर से जीविका देता है जहां से उसने विचार लो न किया हो। (३) जो कोई ईश्वर पर भरोसा रखता है तो उसके निमित वह बस है निस्सन्देह ईश्वर अपने अभिप्राय को पूरा करेगा ईश्वर ने हर बात के निमित एक समय नियुक्त किया है। (४) तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिकधर्म्म के होने से निराश होचुकी हों यदि तुम्हें सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीन मास है और ऐसीही कि जिनको मासिकधर्म्म की दशा न आई हो और उनकी जो गर्भवती हैं इद्दत यह है कि अपना बालक जन लें और जो ईश्वर से डरता है वह उसके कार्य्य में सुगमता करदेता है। (५) यह ईश्वर की आज्ञा है उसने तुम्हारे निमित उतारी है जो कोई ईश्वर से डरता रहेगा वह उसकी बुराइयों को उससे दूर करदेगा और उसको बहुत बड़ा प्रतिफल देगा। (६) और जहां तुम रहते हो उन्हें वहीं रहने दो अपनी सामर्थ्यानुसार और उन्हें दुख न दो न सकेती में डालो और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर व्यय करते रहो यहां लों कि वह अपना बालक जन लें फिर यदि वह तुम्हारे निमित दूध पिलाएं तो उनकी बनि उन्हें देदो और परस्पर उचित परामर्श किया करो और यदि परस्पर हठ करो तो उसको कोई और दूध पिलायगी। (७) उचित है कि सामर्थवाला अपनी सामर्थ्यानुसार व्यय करे और जिस पर जीविका की सकेती है जो कुछ ईश्वर ने उसको दिया है उसमें से व्यय करे ईश्वर किसी को उससे अधिक विवश नहीं करता जितना उसको दिया है ईश्वर शीघ्र सकेती के पश्चात सुगमता कर देगा॥

रुकू २ (८) और बहुतेरी बस्तियां थीं जिन्होंने अपने प्रभु की आज्ञा और उसके प्रेरितों से द्रोह किया और हमने उनसे कठिन लेखा लिया और हमने उनको अनसुने हुए दण्ड से कठिन दण्ड दिया। (९) सो उन्होंने करणी की

आपदा चाखी और उनका अन्त हानि था। (१०) ईश्वर ने उनके निमित कठिन दण्ड उद्यत कर रखा है सो हे बुद्धिवानों तुम ईश्वर से डरते रहो। (११) तुम जो विश्वास लाचुके हो ईश्वर ने तुम्हारे निमित शिक्षा उतारी है एक प्रेरित जो तुम पर ईश्वर की खुली आयतें पढ़ता है जिस्तें उन लोगों को जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए अन्धकार से निकाल कर जोति की ओर लेजाय और जो मनुष्य ईश्वर पर विश्वास लाए और सुकर्म्म करै वह उसको बैकुण्ठों में प्रवेश देगा जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और सदा उसमें रहेंगे निस्सन्देह ईश्वर ने उनको अच्छी जीविका दी है। (१२) ईश्वर वह है जिसने सात आकाश और उसीके समान पृथ्वी उत्पन्न की हैं उनके बीच आज्ञा उतारी है जिस्तें तुम जानलो कि ईश्वर हर वस्तु पर शक्तिवान है और यह कि ईश्वर हर वस्तु को अपने ज्ञान से घेरे हुए है॥

६६ सूरए तहरीम* (वर्जित) मदनी रुकू २ आयत १२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) हे भविष्यद्वक्ता तू किस कारण मलीन करता है जो ईश्वर ने तेरे निमित लीन ठहराया है अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहता है और ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है। (२) वह तेरे निमित तेरी किरियाओं का खोलना ठहराता है ईश्वर तेरा स्वामी है वही जाननेहारा बुद्धिवान है। (३) और जब भविष्यद्वक्ता ने अपनी पत्नियों में से एक से चुपके से एक बात कही और जब उसने उसको प्रगट कर दिया और ईश्वर ने इसका समाचार उसको† दिया और उसने उसको‡ इससे कुछ जताया और कुछ रख छोड़ा और उसने† उसको‡ जताया वह बोली तुझे किसने बताया उसने कहा मुझको जाननेहारे संदेशिया ने बताया। (४) यद्यपि तुम पश्चाताप करो ईश्वर के सन्मुख निस्सन्देह तुम्हारे मन टेढ़े होगए हैं और यदि परस्पर उसके विरुद्ध मेल करोगी तो निस्सन्देह ईश्वर उसका स्वामी है और जिबराईल और धर्म्मीदास विश्वासी और दूत भी इसके उपरान्त उसके सहायक हैं। (५) यदि वह तुमको त्याग दे तो निकट है—उसका प्रभु तुम से सुन्दर पत्नियां बदल दे जो आज्ञाकारी और विश्वासी प्रार्थना करने

* इस सूरत की आदि की आयतें सन् सात हिजरी में उतरीं।
† महम्मद साहब को।
‡ अर्थात हफसा को॥

हारी पश्चाताप करनेहारी अराधना करनेहारी उपवास करनेहारी और ब्याहजन और कुवारियां होंगी। (६) हे विश्वासियो अपने आपको और अपने कुटुम्बियों को उस अग्नि से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं बलिष्ठ और तीक्ष्ण स्वभाव दूत नियुक्त हैं जो कुछ ईश्वर आज्ञा करे उसको उलंघन नहीं करते वही करते हैं जो उनको आज्ञा दीजाती है। (७) हे अधर्मियों आज के दिन छल छिद्र न करो सो तुमको तो उसीका दण्ड दिया जायगा जो कुछ तुम किया करते थे॥

रुं० २—(८) हे विश्वासियो ईश्वर के सन्मुख निष्कपट हृदय से पश्चाताप करो आशा है कि तुम्हारा प्रभु तुम्हारे पापों को तुमसे दूर करदे और तुमको ऐसे बैकुण्ठों में प्रवेश दे जिनके नीचे धारें बहती हैं सो उस दिन ईश्वर भविष्यद्वक्ता का और उन लोगों का जो उसके साथ विश्वास लाए हैं उपहास न करेगा उनकी ज्योति उनके आगे आगे दौड़ रही होगी और उनके दहिने ओर कहेंगे कि हे हमारे प्रभु हमारे निमित हमारी ज्योति को सम्पूर्ण कर और हमको क्षमा कर निस्सन्देह तू हर वस्तु पर शक्तिवान है। (९) हे भविष्यद्वक्ता अधर्म्मियों और धर्म्म कपटियों से युद्ध कर और उनमे कठोरता कर उनका ठिकाना नर्क है और वह बुरा ठिकाना है। (१०) ईश्वर ने अधर्म्मियों के निमित नूह की और लूत की स्त्रियों का दृष्टान्त वर्णन किया वह दोनों हमारे दासों में से दो धर्म्मी दासों के अधिकार में थीं परन्तु उन्होंने उनसे चोरी की और वह दोनों ईश्वर के विरुद्ध उनके निमित कुछ अर्थ न* आसके और उनसे कहा गया अग्नि में प्रवेश करो प्रवेश करनेहारों के साथ। (११) और ईश्वर ने विश्वासियों के निमित फिराऊन की पत्नी † का दृष्टान्त वर्णन किया जैसा उसने कहा कि हे मेरे प्रभु मेरे निमित बैकुण्ठ में एक घर बना मुझे फिराऊन और उसकी करतूतों से रहित कर और मुझे दुष्ट जाति से भी बचा। (१२) और इमरान की पुत्री का जिसने अपने लज्जित अंगों की रक्षा‡ की फिर हमने उसमें अपनी आत्मा फूंक दी और वह अपने प्रभु की बातों को और उसकी पुस्तकों को सिद्ध करती रही और वह आज्ञाकारियों में से थी॥

* अर्थात नूह और लूत को। † पहिली तवारीख ४ : १८। ‡ अंबिया ९१॥

६७ सूरए मुल्क (राज्य) मक्की रुकू २ आयत ३० ।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) धन्य है वह जिसके हाथ में राज है और वही हर वस्तु पर शक्तिवान है। (२) वह जिसने मृत्यु को और जीवन को उत्पन्न किया जिस्ते तुम्हारी परिक्षा करे कि कौन तुम में से सुकर्म्म करता है और वही बलवान क्षमा करनेहारा है। (३) जिसने सात आकाश पर्त पर्त बना दिए तू रहमान की सृष्टि में कोई उलटपुलट न देखेगा। (४) फिर दूजीबार दृष्टि कर तू कोई दरार देखता है और भी विचार से देख तेरी दृष्टि तेरी ही ओर तुच्छ और धुंधली* होकर लौट आयगी। (५) और हमने निचले आकाश को दीपकों से सजाया और उन्हें दुष्टात्माओं को मार कर निकाल ने का यंत्र बनाया और हमने उनके निमित धधकता हुआ दण्ड उद्यत किया है। (६) और जो लोग अपने प्रभु से मुकरते हैं उनके निमित नर्क का दण्ड है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (७) और जब वह उसमें डाले जायंगे तो उसका रेंकना† सुनेंगे जब कि वह उफनता होगा। (८) यहां लों कि फट पड़ने पर होगा और जब जब उसमें कोई जत्था डाली जायगी उसके रक्षक उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे निकट कोई डर सुनानेहारा न आया था। (९) कहेंगे हां हमारे निकट डर सुनानेहारा तो आया था परन्तु हमने उसे झुठलाया और कह दिया कि ईश्वर ने कुछ भी नहीं उतारा है तुम तो बड़ी भ्रमणा में पड़े हो। (१०) और यह भी कहेंगे कि यदि हम सुनते अथवा समझते तो आज ज्वाला‡ वालों में न होते। (११) अब अपने पापों को स्वीकार किया सो ज्वाला वालों पर श्राप है। (१२) निस्सन्देह जो लोग अपने प्रभु से गुप्त में डरते हैं उनके निमित क्षमा और बड़ा प्रतिफल है। (१३) चाहे तुम छिप कर बोलो अथवा प्रगट निस्सन्देह वह हृदय के भीतर की बातें जानता है। (१४) क्या वही अनजान है जिसने उत्पन्न किया और वही सूक्ष्म§ जाननेहारा है॥

रु० २—(१५) वही है जिसने पृथ्वी को तुम्हारे निमित नम्र बनाया जिस्तें उसकी दिशाओं में चलो फिरो और उसकी दी हुई जीविका में से खाओ और उसी की ओर जी उठना है। (१६) अथवा क्या तुमको निश्चय होचुका है कि वह जो आकाश में है तुमको पृथ्वी में न धंसा देगा और तब वह कांपने लगे।

---

* अर्थात सुस्त। † सूरए फ़ुरकान १२—२१ लों. लुक़मान १८। ‡ अर्थात नर्कवालों में। § राद १८॥

(१७) अथवा क्या तुमको निश्चय होचुका है कि वह जो आकाश पर है तुम पर पत्थरों की कठिन आंधी न भेजेगा सो तुम शीघ्र जान लोगे कि डराने द्वारा कैसा था। (१८) और वह जो उनसे पहिले प्रेरितों को झुठला चुके तो कैसा हुआ मेरा दण्ड। (१९) और क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर नहीं देखा कि वह पंख खोले हुए चले आते हैं और कभी समेट लेते हैं केवल रहमान के उनको और कोई थामें नहीं है क्योंकि वही हर वस्तु को देखता है। (२०) अथवा कौन है जो तुम्हारी सैना बने जो रहमान के उपरान्त तुम्हारी सहायता करे अधर्मी तो केवल धोके में पड़े हैं। (२१) अथवा ऐसा कौन है कि तुमको जीविका दे यदि वह अपनी जीविका तुमसे रोकले कोई भी नहीं परन्तु यह अधर्मी लोग क्रूरता और विरोध पर अड़े हैं। (२२) जो मनुष्य अपने मुँह के बल औंधा चले वह अधिक मार्ग पाया हुआ है अथवा वह जो सीधे मार्ग पर सीधा चले। (२३) कहदे वही है जिसने तुमको निकाल खड़ा किया तुम्हारे निमित कान और आखें और हृदय बनाए तुम फिर भी बहुत थोड़ा धन्यवाद करते हो। (२४) कहदे वही है जिसने तुमको पृथ्वी में फैला दिया है और उसी की ओर तुम इकत्र किए जाओगे। (२५) और वह कहते हैं यह वाचा कब होगी यदि तुम सच्चे हो। (२६) कहदे उसका ज्ञान तो केवल ईश्वर ही को है मैं तो स्पष्ट डर सुनानेहारा हूं। (२७) सो जब वह उसी वाचा को देखेंगे कि निकट ही आ लगी अधर्मियों के मुंह बिगड़ जायंगे और कहा जायगा यही तो है जिसको तुम मांगा करते थे। (२८) कहदे भला देखो तो यदि ईश्वर मुझको और मेरे साथियों को नाश करदे अथवा हम पर दया करे फिर ऐसा कौन है जो अधर्मियों को दुखदायक दण्ड से बचावे। (२९) कह वही रहमान है हम उस पर विश्वास ले आए और उसी पर भरोसा किया और तुम शीघ्र जान जाओगे कि कौन प्रत्यक्ष भ्रम में पड़ा हुआ है। (३०) कह भला देखो तो सही यदि तुम्हारा पानी भोर को अलोप होजाय तो कौन है जो तुम्हारे निमित बहता हुआ पानी उपस्थित करे॥

६८ सूरए क़लम (लेखनी) मक्की रुकू २ आयत ५२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १ रू—(१) लेखनी की सौंह और उसकी जो लिखते हैं। (२) कि तू अपने प्रभु के अनुग्रह से बावला नहीं। (३) और निस्सन्देह तेरे निमित बहुतायत

से प्रतिफल हैं। (४) निस्सन्देह तू सुस्वभाव वाला है। (५) सो तू भी शीघ्र देख लेगा और वह भी देख लेंगे। (६) कि तुममें से किसको बावलापन है। (७) तेरा प्रभु उसको भलीभांति जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और वह शिक्षितों को भी भलीभांति जानता है। (८) सो तू झुठलानेहारों का कहा न मान। (९) वहतो अभिलाषी हैं कि तू नम्र पड़जाय तो वह भी ढीले होजायं। (१०) सो तू किसी नीचे * किरिया खानेहारे का कहा न मान। (११) मेहना देता है और चवई करता फिरता है। (१२) भलाई से वर्जता है मर्याद से बढ़नेहारा पापी है। (१३) दुरस्वभावी है और इसके उपरान्त वेसर † सदृश है। (१४) यदपि गृहस्थी आश्रम है। (१५) जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं कहता है यह तो अगलों की कहानियां हैं। (१६) और हम उसकी सूंड़ पर चिन्ह लगादेंगे। (१७) निस्सन्देह हमने उसको परखा जैसा हमने वाटिका वालों को परखा जब उन्होंने किरिया खाई कि भोर होतेही अवश्य फल तोड़ेंगे। (१८) और उन्होंने कुछ व्यतिरेक ‡ न किया। (१९) और उस पर तेरे प्रभु की ओर से एक विपति पड़गई जब कि वह सोतेही थे। (२०) और वह विहान को ऐसा रहगया जैसे काट लिया गया। (२१) सो विहान को एक दूसरे को पुकारने लगे। (२२) कि अपने खेतों पर सकारेही चलो यदि तुमको काटना है। (२३) फिर वह चले और परस्पर चुपके चुपके कहरहे थे। (२४) कि आज तुम्हारे तीर कोई कंगाल न आने पावे। (२५) और कंजूसी का विचार करके सकारेही जा पहुंचे। (२६) सो जब देखा वह बोले निस्सन्देह हम मार्ग भूल गए। (२७) नहीं—वरन हम निराश रह गए। (२८) उनमें से सब में अच्छे पुरुष ने कहा था कि मैंनें तुमको न कहा था कि ईश्वर का जाप क्यों नहीं करते। (२९) वह बोले कि हमारा प्रभु पवित्र है हमहीं दुष्ट हैं। (३०) सो एक दूसरे की ओर मुंह करके निन्दा करने लगे। (३१) बोले कि शोक हमारा दुरभाग्य निस्सन्देह हमहीं विरोधी थे। (३२) कुछ दूर नहीं कि हमारा प्रभु इसकी सन्ती हमको इससे उत्तम दे निस्सन्देह हम अपने प्रभु की ओर फिरते हैं। (३३) ऐसेही आपति आती हैं परन्तु निस्सन्देह अन्त के दिन का दण्ड तो भारी है यदि तुम जानते। (३४) निस्सन्देह संयमियों के निमित उनके प्रभु के तीर वरदान वाले वैकुण्ठ हैं॥

---

* मुग़ैरा के पुत्र वलीद के विषय में जान पड़ता है। † अर्थात कुजात अथवा दुरनाम।
‡ यदि ईश्वर की इच्छा हो न कहा॥

रु० २—(३५) क्या हम मुसलमानों को अपराधियों के तुल्य करदेंगे। (३६) तुमको क्या होगया कैसा न्याय करते हो। (३७) क्या तुम्हारे तीर कोई पुस्तक है जिसमें तुम ढूंढ़लेते हो। (३८) क्या तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे। (३९) अथवा तुमने हम से किरिया ले रखी है जो पुनरुत्थान के दिन लों चली जायगी कि निस्सन्देह तुमको मिलेगा जिसकी तुम आज्ञा करोगे। (४०) उन से पूछ कि उनमें से कौन इसको अपने सिर लेता है। (४१) अथवा उनके साक्षी हैं तो उचित है कि अपने साक्षियों को ले आवें यदि सच्चे हैं। (४२) जिस दिन पिंडली खोली * जायगी और वह दण्डवत के निमित बुलाये जायंगे परन्तु न करसकेंगे। (४३) उनकी आंखें झुकी हुई होयंगी और हंसाई उन पर चढ़ी चली आती होगी वह दण्डवत करने को पहिले बुलाए जाते थे जब भले चंगे थे। (४४) अब मुझको और उसे छोड़दे जो इस व्याख्यान को झुठलाया करता था और निस्सन्देह हम उनको इसी रीति खींचेंगे कि उनको जान भी न पड़े। (४५) और उनको ढील दूंगा क्योंकि निश्चय मेरा छल चलता हुआ है। (४६) क्या तू उन से कुछ बनि मांगता है कि वह धनादण्ड के बोझ से दबे जाते हैं। (४७) अथवा उनके तीर गुप्त विद्या है जिससे वह लिखलेते हैं। (४८) और अपने प्रभु की आज्ञा की बाट जोह और मछली † वाले की नाईं मत हो जब उसने पुकारा और वह क्रोध से भरा हुआ था। (४९) यदि उसको तेरे प्रभु का उपकार न सम्हालता तो वह चटील भूमि पर फेंक दिया जाता और दुर्दशा में होता। (५०) फिर उसको उसके प्रभु ने उच्च किया सो उसको भले दासों में कर दिया। (५१) और अधर्मी तो इस बात में लिप्त हैं कि तुझको अपनी दृष्टियों से गिरादें जब वह चर्चा ‡ सुनते हैं कहते हैं निस्सन्देह यह बावला है। (५२) और निस्सन्देह यह चर्चा ‡ सृष्टियों के निमित है॥

---

६९ सूरए हाक़ा (सत्य होने हारी) मक्की रुकू २ आयत ५२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) सत्य होने § हारा। (२) क्या है वह सत्य होने हारा। (३) और तू क्या जाने कि सत्य होने हारा क्या है। (४) समूद और आदने उस खड़कने ¶ हारे को झुठलाया। (५) सो समूद @ एक मर्याद से बढ़े हुए नष्ट हुए। (६) और

---

* किसी बड़ी बिपति और क्लेश के समय नङ्गे होते और टाट ओढ़ते और पापों की क्षमा चाहते उस दशा में पिंडली खुल जाती थी। † अर्थात यूनस साफात १३९—१४८ लों, अंबिया ८७॥ ‡ अर्थात क़ुरान। § पुनरुत्थान की ओर सूचना है। ¶ उस दिन को. राद ३१। @ ऐराफ़ ६१—७७॥

आद एक शर्द आंधी से नष्ट कर दिए गए। (७) जिसको उसने उन पर सात रात और आठ दिन समान ठहरा रखा और तू ने उस जाति को देखा कि वह खोखले खजूरों की पेड़ियों के समान हैं। (८) सो क्या तू उन में से किसी को बचा हुआ देखता है। (९) और फ़िराऊन और उससे पहिले लोग और उलटी * हुई बस्तियां अपराधी होचुकी थीं। (१०) सो उन्होंने अपने प्रभु के प्रेरितों की अनाज्ञाकारी की सो उनको कठिन दण्ड के साथ आ पकड़ा। (११) निस्सन्देह जब पानी चढ़ आया हमने तुमको नौका † पर चढ़ा लिया। (१२) जिस्तें हम उसको तुम्हारे निमित स्मर्ण योग्य बनादें और स्मर्ण करनेहारे कान इसको स्मर्ण करें। (१३) सो एक बेर जब तुरही फूंकी जायगी। (१४) और पृथ्वी और पहाड़ उठाए जायंगे और एकही टक्कर में टूक २ होजायंगे। (१५) उस दिन होनहार होयगा। (१६) और आकाश फट जायगा और उस दिन ढीला पड़ जायगा। (१७) और दूत उसकी दिशाओं पर होंयगे और तेरे प्रभु के सिंहासन को उठाए हुए होंयगे। (१८) उस दिन जब तुम सन्मुख किए जाओगे तुम्हारा कोई गुप्त भेद छिपा न रहेगा। (१९) सो जिसको उसकी पुस्तक ‡ उसके दहने हाथ में दी जायगी वह कहेगा लेना तनिक मेरी पुस्तक को पढ़ना। (२०) निस्सन्देह मेरा अनुमान तो यही था कि मुझे अपने लेखे से मिलना है। (२१) सो वह पुरुष आनन्द के जीवन में होगा। (२२) ऊंचे बैकुण्ठों में। (२३) जिसके फल झुके हुए हैं। (२४) रुचि से खाओ और पियो यह इस कारण है कि जो तुम पहिले पिछले दिनों में भेजचुके। (२५) परन्तु जिसको उसकी पुस्तक बाएं हाथ में दीजायगी तो वह कहेगा आह ! मेरी पुस्तक मुझको न दी जाती। (२६) और मुझको सुध भी न होती कि मेरा लेखा क्या है। (२७) आह मैं नाश ही होजाता। (२८) मेरा धन मेरे कुछ भी अर्थ न आया। (२९) मेरा राज मुझ से नष्ट होगया। (३०) इसे पकड़ो इसे पट्टा पहराओ। (३१) इसे नर्क में डालो। (३२) और इसे सांकर में भलीभांति जकड़ो जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ है। (३३) निस्सन्देह यह महान ईश्वर पर विश्वास न लाता था (३४) और न कंगाल के खिलाने को उभारता था। (३५) सो आज उसका यहां कोई गाढ़ा मित्र नहीं। (३६) और केवल घावों के धोवन के निमित और कोई अहार नहीं। (३७) जिसको केवल अपराधियों के और कोई नहीं खाता॥

रु० २—(३८) सो मैं किरिया खाता हूँ उन वस्तुओं की जिनको तुम देखते हो। (३९) और उनकी जो तुम नहीं देखते। (४०) निस्सन्देह यह बड़े

---

* सदूम और अमूरा उत्पति १९ : २९. दूसरा पितर २ : ६। † नौका ७१। ‡ अर्थात क्रियापत्र॥

प्रेरित का वचन है। (४१) और किसी कवि का वचन नहीं तुम बहुत थोड़ी प्रतीत करते हो। (४२) और न किसी टोनहे का वचन है तुम लोग बहुत ही थोड़ा विचार करनेहारे हो। (४३) इसको सृष्टियों के प्रभु ने उतारा है। (४४) यदि* यह हम पर कोई बात बना लाता। (४५) तो हम उसका दहना हाथ पकड़ लेते। (४६) और उसकी प्राण की नाड़ी काट डालते। (४७) सो तुममें कोई भी हमको इससे रोक न सकता। (४८) निस्सन्देह संयमियों के निमित यह † शिक्षा है। (४९) और निस्सन्देह हम जानते हैं तुममें कोई ऐसे हैं जो इसको† झुठलाते हैं। (५०) निस्सन्देह वह अधर्म्मियों के निमित शोक का कारण है। (५१) और निस्सन्देह वह † निश्चय सत्य है। (५२) सो तू अपने महान प्रभू के नाम का भजन कर॥

---

७० सुरए मआरिज (सीढ़ियां) मक्की रुकू २ आयत ४४।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) एक मांगने ‡हारे ने दण्ड मांगा जो होनहार है। (२) अधर्म्मियों पर और उसे कोई रोक नहीं सकता। (३) ईश्वर उच्च पदवी वाले की ओर से। (४) दूत और आत्मा उसकी ओर चढ़ते हैं उस दिन में जिसका माप पचास § सहस्र वर्ष है। (५) सो धीरज धर धीरज के साथ। (६) निस्सन्देह वह उसे ¶ दूर देख रहे हैं। (७) और हम उसे निकट देख रहे हैं। (८) जिस दिन आकाश पिघले हुए तांबे के समान होजायगा। (९) और पहाड़ धुनी हुई रुई के समान होजायेंगे। (१०) और कोई मित्र किसी मित्रको न पूछेगा। (११) वह एक दूसरे पर दृष्टि करेंगे और अपराधी लालसा करेंगे कि अपने प्राण मूल्य में दण्ड से बचने को उस दिन पुत्रों को देदें। (१२) और अपनी पत्नी और अपने भाई। (१३) और अपना कुटुम्ब जिसमें वह रहा करते थे। (१४) और सब जो पृथ्वी में हैं सबका सब जिस्तें अपने को बचालें। (१५) ऐसा कभी न होगा निस्सन्देह वह एक लपट है। (१६) जो खाललौं उधेड़ डालती है। (१७) और उसको पुकारती है जिसने पीठ दिखाई और मुंह फेरा। (१८) और जो धन इकत्रकर रखा था। (१९) निस्सन्देह मनुष्य शीघ्रगामी $ है। (२०) जब उसको कष्ट पहुंचता है तो

---

* अर्थात महम्मद साहब। † अर्थात कुरान। ‡ अबूजहल की ओर सूचना है. देखो सूरए ओरा १८७. अथवा हारिस के पुत्र नज़र की ओर। § सिजदा ४ कदर ३। ¶ अर्थात दण्ड को। $ बनी इसराएल १२॥

घबड़ा उठता है। (२१) जब भलाई पहुंचती है तो कंजूसी स्वीकार करता है। (२२) परन्तु प्रार्थना करने हारे लोग। (२३) जो अपनी प्रार्थना पर स्थिर हैं। (२४) और उनके धन में भाग नियत किया हुआ है। (२५) मांगनेहारों और निराशियों* के निमित। (२६) और जो प्रतिफल के दिनकी प्रतीत करते हैं। (२७) जो अपने प्रभु के दंड से डरते हैं। (२८) निस्सन्देह वह अपने प्रभु के दण्ड से रक्षित हैं। (२९) और जो अपने लज्जित स्थानों की रक्षा करते हैं। (३०) केवल अपनी पत्नियों अथवा अपने हाथ के धन† के निस्सन्देह उन पर कुछ दोष नहीं। (३१) सो जो कोई इसके उपरान्त और की इच्छा करे वह मर्याद से बढ़े हुओं में है। (३२) और जो अपनी धरोहरों और नियम की लाज रखते हैं। (३३) और जो अपनी साक्षियों पर स्थिर हैं। (३४) और अपनी प्रार्थनाओं पर स्थिर रहते हैं। (३५) वही लोग बैकुण्ठ में सादर रहेंगे॥

रु० २—(३६) सो अधर्मियों को क्या होगया कि वह तेरी ओर दौड़े चले आते हैं। (३७) दहने और बायें झुण्ड ‡ के झुण्ड इकत्र होके। (३८) क्या उनमें से हर मनुष्य वरदानों के बैकुण्ठों में प्रवेश होने की लालसा करता है। (३९) कभी नहीं हमने उनको उससे उत्पन्न किया जिसको वह जानते हैं। (४०) सो पूर्वों और पच्छिमों के प्रभु की किरिया खाता हूं कि निस्सन्देह हम इस बात पर शक्तिमान हैं। (४१) कि उनसे उत्तम लोग बदलकर लायें और हम कभी असमर्थ नहीं हैं। (४२) सो उन्हें उनकी बकवास में छोड़ दे कि वह खेलते रहें यहां लों कि उस दिन से कि जिसकी बाचा उनसे की जाती है आ मिलें। (४३) जिस दिन समाधियों में से दौड़ते हुए निकल पड़ेंगे जैसे कि वह किसी लक्ष्य की ओर दौड़ रहे हैं। (४४) उनकी दृष्टिएं झुकी हुई होयंगी और हंसाई उन पर पड़ रही होयंगी यही तो वह दिन है जिसकी प्रतिज्ञा उनसे की जाती थी॥

---

७१ सूरए नूह§ मक्की रुकू २ आयत २९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) निस्सन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि अपनी जाति को उस आनेहारे कठिन दण्ड से डराए। (२) वह बोला कि हे मेरी जाति मैं तुम्हारे निमित स्पष्ट भय सुनाने हारा होके आया हूं। (३) तुम ईश्वर की

---

* इच्छुक। † अर्थात दासिएं। ‡ अर्थात सूरए जारियात। § यह सूरत किसी लम्बी सूरत का टुकड़ा जान पड़ता है देखो हूद २६१॥

अराधना करो और उसीसे डरो और मेरा कहा मानो। (४) वह तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और तुमको नियत समय लों अवसर देगा निस्सन्देह ईश्वर का नियुक्त समय आजाने में विलम्ब न करेगा यदि तुम समझ रखते हो। (५) वह बोला हे मेरे प्रभु निस्सन्देह मैंने अपनी जाति को रात और दिन पुकारा परन्तु मेरी पुकार से उनकी घिन ही अधिक हुई। (६) और निस्सन्देह जब जब मैंने उनको पुकारा कि तू उनको क्षमा करे तो उन्हों ने अपनी उंगलियां अपने कानों में ठूंस लीं और अपने कपड़ों में अपने आपको छिपाया और हठ की और अत्यन्त विरोध किया। (७) निस्सन्देह जब मैंने उन्हें पुकार कर बुलाया। (८) निस्सन्देह मैंने उनको प्रगट में भी समझाया और गुप्त में भी समझाया। (९) और मैंने कहा कि अपने प्रभु से क्षमा मांगो निस्सन्देह वह बड़ा क्षमा करनेहारा है। (१०) और तुम पर आकाश से वेग की वृष्टि भेज देगा। (११) और तुम्हारी सहायता करेगा संपति और संतति से तुम्हारे निमित वाटिका लगादेगा और तुम्हारे निमित धाराएं बहा देगा। (१२) तुमको क्या होगया क्यों ईश्वर की महिमा को स्वीकार नहीं करते। (१३) यदपि उसने तुमको भांति भांति * से उत्पन्न किया। (१४) क्या तुम नहीं देखते कि सात ठोस आकाश कैसे बनाए। (१५) और उनमें चन्द्रमा को उजियाला बनाया और सूर्य्य को ज्योतिमय दीपक बना दिया। (१६) और ईश्वर ने तुमको पृथ्वी से जमा कर उगाया। (१७) फिर तुमको लौटा कर उसी में ले जायगा और तुमको उससे बाहर निकालेगा। (१८) और ईश्वर ने तुम्हारे निमित्त पृथ्वी को बिछौना बना दिया। (१९) जिस्तें तुम उसके चौड़े मार्गों में चलो॥

रु० २—(२०) नूह ने कहा हे मेरे प्रभु निस्सन्देह उन्हों ने मुझ से विरोध किया और ऐसे † के अनुगामी हुए जिसको उसकी संपति और संतति ने केवल हानि के और कुछ न दिया। (२१) और उन्होंने बड़े छल के साथ छल किया। (२२) और कहा कि अपने देवों को कभी न त्यागो न वद ‡ और सुआ को छोड़ना (२३) न यगूस § और यऊक § और नसर § को। (२४) और उन्होंने बहुतेरों को भटका दिया और दुष्टों का केवल भ्रम के और कुछ न बढ़ा। (२५) अपने ही अपराधों के कारण वह डुबा दिए गए और फिर अग्नि में प्रवेश होंगे। (२६) और उन्होंने ईश्वर के उपरान्त किसी को अपना सहायक न पाया। (२७) और नूह ने कहा हे मेरे प्रभु अधर्मियों में से पृथ्वी पर बसनेहारा एक भी न छोड़।

---

* सूरए हज ५। † मुग़ैरा के पुत्र वलीद के विषय में जान पड़ता है। ‡ वद और सुआ अरब देश की मूर्ति हैं। § यह अरब की मूर्ति हैं॥

(२८) निस्सन्देह तू उनको छोड़ देगा तो वह तेरे दासों को भर्मा देंगे और वह केवल कुकर्मी और अधर्मी ही जन्मेंगे। (२६) हे मेरे प्रभु मुझे क्षमाकर और मेरे माता पिता को और जो कोई मेरे घरमें विश्वास सहित प्रवेश हो और विश्वासी पुरुषों और विश्वासी स्त्रियों को और दुष्टों के नाश को अधिक कर॥

७२ सूरए जिन्न मक्की रुकू २ आयत २८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) कह मुझको प्रेरणा हुई है कि जिन्नों के एक जत्था ने सुना और वह बोले कि हमने अद्भुत कुरान सुना है। (२) जो शिक्षा का मार्ग दिखाता है और हम उस पर, विश्वास ले आए और हम कभी किसी को भी अपने प्रभु का साझी नहीं ठहरायंगे। (३) क्योंकि निस्सन्देह हमारे प्रभु का ऐश्वर्य्य बड़ा है न उसने पत्नी की है न पुत्र। (४) और निस्सन्देह जो हम में मूर्ख हैं वह ईश्वर पर बढ़ा बढ़ा कर बातें वर्णन करते हैं। (५) और हमने विचार किया कि मनुष्य और जिन्न ईश्वर के विषय में कभी कोई झूठ बात न बोलेंगे। (६) मनुष्यों में बहुतेरे मनुष्य हैं जो जिन्नों से मृतकों से शरण मांगते हैं इससे उन्होंने उनका अभिमान बढ़ा दिया। (७) और उनका भी वैसाही विचार था कि ईश्वर किसी को भी उठा खड़ा न करेगा। (८) और हमने आकाश को टटोल के देखा तो उसको कठिन रक्षकों और अंगारों से भरा हुआ पाया। (६) और हम आकाश के बहु ठिकानों में जा बैठते थे और वहां से सुनते थे और जो कोई अब सुनता है अपने निमित एक छिपा हुआ अंगारा उद्यत पाता है। (१०) और निस्सन्देह हम नहीं जानते कि पृथ्वी के वासियों के निमित कोई बुराई है अथवा उनका प्रभु उनके निमित किसी भलाई की इच्छा करता है। (११) और हम में कुछ तो भले हैं और कुछ और भांति के हैं हम में कई भिन्न भिन्न जत्थाएं हैं। (१२) और हमने विचार किया कि हम ईश्वर को पृथ्वी में विवश नहीं कर सकते न भाग कर उसको हरा सकते हैं। (१३) परन्तु निस्सन्देह हमने शिक्षा सुनी है और हम उस पर विश्वास ले आए और जो कोई अपने प्रभु पर विश्वास लायगा तो उसे किसी हानि अथवा किसी वस्तु का डर नहीं। (१४) और हम में से कोई तो मुसलमान हैं और कोई अपराधी हैं सो जो आज्ञाकारी हुए तो उन्होंने सीधा मार्ग पाने का प्रयत्न किया। (१५) और जो अपराधी हैं वह नर्क का ईंधन बनेंगे। (१६) और यदि सीधे मार्ग

चले चलेंगे तो हम निश्चय उनको बहुत से पानी से सींच देंगे। (१७) जिस्तें हम उसमें उनकी परिक्षा करें और जो अपने प्रभु के स्मर्ण से मुंह मोड़ेगा वह उसे कठिन दण्ड की ओर हांक देगा। (१८) और यह कि मन्द्र तो ईश्वर ही के निमित्त हैं सो ईश्वर के साथ किसी और को न पुकारो। (१९) और जब कि ईश्वर का जन* प्रार्थना के निमित खड़ा होता है वह† उसे पुकारते हैं और उस पर झुण्ड के झुण्ड आ जाते हैं॥

रु० २—(२०) कहदे मैं तो केवल अपने प्रभु की अराधना करता हूं और उनका किसी को भी साझी नहीं ठहराता। (२१) कहदे कि मेरे अधिकार में न तुमको हानि पहुंचाना है न सत्य मार्ग की ओर लेआना। (२२) ईश्वर के कोप से निस्सन्देह मुझे भी कोई शरण देनेहारा नहीं। (२३) और मैं भी उसको छोड़ किसी को अपना शरण देनेहारा न पाऊंगा। (२४) निस्सन्देह ईश्वर की ओर से संदेश और समाचार पहुंचाना मुझे उचित है और जो मनुष्य ईश्वर और उसके प्रेरित की आज्ञा उलंघन करेगा वो निस्सन्देह उसके निमित नर्क की अग्नि है और उसमें सदा रहेंगे। (२५) यहां लों जब उसको देखलें जिसकी प्रतिज्ञा तुमसे कीजाती है उस समय उनको जान पड़ेगा कि किसके सहायक निर्बल हैं और गिन्ती में थोड़े हैं। (२६) और कहदे कि मुझे ज्ञान नहीं जिससे तुम्हें डराया जाता है वह निकट है अथवा उसके निमित मेरे प्रभु ने कौन समय नियत किया है वह गुप्त का जाननेहारा है वह अपने भेद किसी पर प्रकट नहीं करता। (२७) उस प्रेरित के उपरान्त जिसको उसने ग्रहण‡ किया क्योंकि निस्सन्देह वह उसके आगे और पीछे रक्षक भेजता है। (२८) जिस्तें कि जानले कि निस्सन्देह उन्होंने अपने प्रभु के संदेश पहुंचा दिए और उसने जो कुछ उनके तीर है घेर रखा है और प्रत्येक वस्तु घेर रखी है॥

---

७३ सूरए मुज़म्मिल (लिपटा हुआ) मक्की रुकू २ आयत २०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) हे तू जो चादर में लिपटा हुआ है। (२) रात्रि में खड़ा रह परन्तु थोड़ा। (३) आधा अथवा उसमें से थोड़ा घाट। (४) अथवा थोड़ा अधिक और कुरान को ठहर ठहर कर पढ़ा कर। (५) निस्सन्देह हम तुझ पर एक भारी

---

* अर्थात महम्मद साहब। † अर्थात जिन्न। ‡ अअराफ़ ६१॥

बात खा डालेंगे। (६) निस्सन्देह रात का उठना शारीरिक इच्छा को भलीभांति कुचलता है और उसमें बात ठीक निकलती है। (७) निस्सन्देह दिन के समय लम्बे कार्य्य रहते हैं। (८) और अपने प्रभु के नाम की चर्चा कर और सम्पूर्ण रीति से उसकी ओर झुक जा। (९) वह पूरब और पच्छिम का प्रभु है उसके उपरान्त कोई देव नहीं उसीको अपना हितवादी बनाले। (१०) और जो कुछ वह कहते हैं उस पर धीरज धर और उनसे सुशीलता से अलग होजा। (११) मुझको और झुठलानेहारे संतोषी को छोड़दे और उनको थोड़ासा अवसर दे। (१२) निस्सन्देह हमारे तीर बेड़ियां और नर्क है। (१३) और ऐसा भोजन जो गले में अटके और दुख देनेहारा दण्ड है। (१४) एक दिन पृथ्वी और पहाड़ हिलजायंगे और पहाड़ भुरभुरी बालूके समान होजायंगे। (१५) निस्सन्देह हमने तुम्हारे तीर एक वैसा ही प्रेरित भेजा जो तुम पर साक्षी देता है जैसा प्रेरित हमने फ़िराऊन के तीर भेजा था। (१६) सो फ़िराऊन ने उस प्रेरित की आज्ञा उलंघन की सो हमने उसको कठिन पकड़ से धर पकड़ा। (१७) सो यदि तुमने भी अधर्म किया तो उस दिन से क्योंकर बचोगे जो बालकों को बूढ़ा बना देता है। (१८) जब कि आकाश फट जायगा और उसकी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी। (१९) निस्सन्देह यह शिक्षा है जो चाहे अपने प्रभु का मार्ग पकड़ले॥

रु० २—(२०*) निस्सन्देह तेरा प्रभु जानता है कि रात को तू दो तिहाई के निकट कभी आधी कभी एक तिहाई खड़ा रहता है और तेरे साथियों में से भी एक जत्था और ईश्वर रात और दिन का अटकल करता है वह जानता है कि तुम इसको निर्वाह न सकोगे और वह तुम्हारी ओर फिरा सो जितनी सामर्थ्य हो कुरान पढ़ लिया करो वह जानता है कि तुम में रोगी होंगे और कोई पृथ्वी में ईश्वर के अनुग्रह की खोज भी करेंगे और कोई ईश्वर के मार्ग में लड़ेंगे सो जितनी सामर्थ्य हो इसमें से पढ़ लिया करो और प्रार्थना को स्थिर रखो दान दो और ईश्वर को ऋण दो अच्छा ऋण और जो कुछ भलाई तुम अपने प्राणों के निमित्त आगे भेजोगे उसको ईश्वर के समीप पाओगे वह उत्तम होगा और बहुत बड़ा प्रतिफल और ईश्वर से क्षमा मांगो निस्सन्देह ईश्वर क्षमा करनेहारा दयालु है॥

---

* इस आयत से जान पड़ता है कि यहां से अन्तिम आयत जो मदीना में उतरी आयशा ने वर्णन किया है कि यह आयत इस सूरत के एक वर्ष पीछे उतरी॥

७४ सूरए मुदस्सिर (ओढ़े हुए) मक्की रुकू २ आयत ५५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रु० १—(१) हे कम्बल में लिपटे हुए खड़ा हो। (२) और डरा। (३) और अपने प्रभु की बड़ाई कर। (४) अपने वस्त्रों को पवित्र कर। (५) और अपवित्रता से दूर रह। (६) अधिक पाने के विचार से उपकार न कर। (७) अपने प्रभु के निमित्त धीरज धर। (८) और जब तुरही फूंकी जायगी। (९) वह दिन एक कठिन दिन होगा। (१०) और अधर्मियों के निमित्त सुगमता न होगी। (११) मुझको और उसको जिसको मैंने उत्पन्न किया छोड़ दे°। (१२) और उसको मैंने बहुतसा धन दिया। (१३) और पुत्र देखने के निमित्त। (१४) और हर प्रकार की सामग्री उसके निमित्त उपस्थित की। (१५) फिर लोभ करता है कि और दूं।

वह * बड़ी बातों में से एक है। (३९) मनुष्य को डराने हारी। (४०) जो तुम में से आगे बढ़ना अथवा पीछे रहना चाहता है। (४१) हर एक प्राणी अपनी उपार्जना पर गिरवी † है केवल दहनी ओर वालों को छोड़। (४२) और बैकुण्ठों में अपराधियों के विषय में प्रश्न करेंगे। (४३) तुम्हें नर्क में किस वस्तु ने पहुंचा दिया। (४४) कहेंगे कि हम प्रार्थना करनेहारे न थे। (४५) और न कंगालों को भोजन कराया करते हैं। (४६) और विवाद करनेहारों के साथ विवाद करते थे। (४७) और प्रतिफल के दिनको झूठा समझते थे। (४८) यहां लों कि हमको निश्चय होगया। (४९) और उनको विन्ती करनेहारों की विन्ती ने कुछ लाभ न दिया। (५०) इनको क्या होगया वह शिक्षा से मुंह मोड़ते हैं। (५१) वह तो डरपोक गदहे हैं कि मनुष्य की आहट से भाग जाते हैं। (५२) नहीं उनमें से हर मनुष्य चाहता है कि प्रत्येक को खुली पुस्तक मिले। (५३) कभी नहीं वरन वह अन्त के दिन का डर ही नहीं रखते। (५४) नहीं यह तो एक शिक्षा है सो जो चाहे इसको स्मरण करे। (५५) और वह नहीं समझते परन्तु जब ईश्वर चाहे वही डरने के योग्य है और वही क्षमा करनेहारा है॥

---

७५ सूरए क़ियामत (पुनरुत्थान) मक्की रुकू २ आयत ४०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—पुनरुत्थान के दिन की किरिया खाता हूं। (२) आपको धिक्कार ने हारे प्राणकी ‡ किरिया खाता हूं। क्या मनुष्य ने विचार कर लिया कि हम उसके हाड़ इकत्र न करसकेंगे। (४) वरन हम इस बात पर शक्तिवान हैं कि हम उसकी पोर पोर को ठीक बैठा दें। (५ वरन मनुष्य चाहता है कि अपने भविष्यतकाल में भी आज्ञाकारी बना रहे। (६) वह पूछता है कि पुनरुत्थान का दिन कब होगा। (७) जब आंखें पथराजायं। (८) चन्द्रमा गहना जाय। (९) और चन्द्रा और सूर्य एक ठौर इकत्र करदिए जायं। (१० मनुष्य उस दिन बोल उठेगा अब कहां भाग कर जाऊं। (११) नहीं कहीं शरण नहीं। (१२) आज के दिन तेरे प्रभु ही की ओर ठहरना है। (१३) मनुष्य को उस दिन बता दिया जायगा जो कुछ उसने आगे भेजा और जो कुछ उसने पीछे छोड़ा। (१४) वरन मनुष्य अपने प्राण का आपही प्रमाण है। (१५) यदपि वह अपने छलछिद्र करता रहे (१६§) कुरान पढ़ने

---

* अर्थात पुनरुत्थान। † तूर ४१। ‡ आदम के विषय में जान पड़ता है। § जान पड़ता है कि आयत १६ से १९ लों महम्मद साहब ही से कहा जाता है॥

पर अपनी जीभ न हिला जिस्तें तू उसको शीघ्र कण्ठ करले। (१७) निस्सन्देह कुरान जिसका इकत्र करना और पढ़ना हमारे सिर है। (१८) फिर जब हम उसे पढ़ें उस पढ़ने का अनुगामी हो। (१९) फिर निस्सन्देह इसका बखान करना हमारे सिर है। (२०) कुछ भी नहीं—तुमतो संसार को मित्र रखते हो। (२१) और अंत के दिन को त्याग रहे हो। (२२) उस दिन कितने ही मुख हर्षित होंगे। (२३) अपने प्रभु की ओर निहार रहे होंगे। (२४) और उस दिन कितने ही मुख उदास होंगे। (२५) उनका विचार है कि उन पर ऐसी कठिनता न कीजायगी जो कटि तोड़ डाले। (२६) नहीं जब कि वह * गलों में आ अटकेगा। (२७) और यह कहेंगे कौन उसको झाड़ फूंक कर रोकनेहारा है। (२८) उसने अनुमान किया कि निस्सन्देह वह वियोग है। (२९) और पिड़ली से पिड़ली लिपटने लगी। (३०) आज तुझे अपने प्रभु की ओर जाना है॥

रु० २—(३१) सो न सिद्ध ठहराया न प्रार्थना की। (३२) परन्तु झुठलाता और मुंह फेरता रहा। (३३) फिर अपने कुटुम्ब की ओर अकड़ता हुआ चला गया (३४) तुझ पर सन्ताप तुझ पर सन्ताप। (३५) फिर तुझ पर सन्ताप तुझ पर सन्ताप। (३६) क्या मनुष्य विचार करता है कि वैसेही छोड़ दिया जायगा। (३७) क्या वह वीर्य्य की बूंद न था जो डाला गया। (३८) फिर वह जमा हुआ लोहू था फिर उसने उसे उत्पन्न किया और संवारा। (३९) और उन्हें जोड़े जोड़े बनाया नर और नारी। (४०) क्या वह इस पर सामर्थ्य नहीं रखता कि मृतकों को जीवता करदे॥

---

७६ सूरए दहर (मनुष्य) मक्की रुकू २ आयत ३१।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) क्या मनुष्य पर एक समय वह भी नहीं आचुका है जब कि वह कुछ भी न था और न उसका चर्चा था। (२) निस्सन्देह हमने मनुष्य को मिश्रित वीर्य्य से बनाया जिस्तें उसे परखें और हमने उसे सुनना देखना दिया। (३) निस्सन्देह हमने उसे मार्ग की शिक्षा दी चाहे वह गुणानुवादी हो अथवा कृतघ्न हो। (४) निस्सन्देह हमने अधर्म्मियों के निमित सांकरें और पट्टे और लपट

---

* अर्थात प्राण॥

उद्यत किए हैं। (५) निस्सन्देह संयमी उस कटोरे से पिएंगे जिसमें कपूर * की मिलावट है। (६) एक सोता है जिससे ईश्वर के समीपी दास पिएंगे वह इससे नहीं निकाल कर लेजायंगे। (७) जो भेटों को पूरा करते और उस दिन से डरते जिसकी विपति फैलरही होयगी। (८) और उसकी † प्रीत में दरिद्री और अनाथ औ बन्धुआ को भोजन कराते हैं। (९) और कहते हैं कि हमतो केवल ईश्वर की प्रसन्नता के निमित खिलाते हैं तुम से कुछ प्रतिफल अथवा धन्यवाद के अभिलाषी नहीं हैं। (१०) निस्सन्देह हम अपने प्रभु का डर करते हैं उस उदास और अत्यन्त कठिन दिन का। (११) सो ईश्वर ने उनको उस दिन की कठिनाई से बचा लिया और उनको आनन्द और सुदशा से मिला दिया। (१२) और उनको उनके धीरज धरने का प्रतिफल वाटिका और रेशमी वस्त्र से दिया। (१३) वहांसिंहासनों पर बालिश लगाए बैठे होंगे वहां न धूप न जाड़े की ठिरन। (१४) और उन पर उसके छाया झुके पड़ते हैं और फल लटका कर नीचे कर दिए गए हैं। (१५) और उनमें चांदी के कटोरों और गडुओं में जो कांच के समान होंगे चक्र चल रहा होगा। (१६) और पानपात्र भी चांदी के कि उनके एक अटकल से नाप रखा है। (१७) और उनको वहां ऐसी मदिरा पिलाई जायगी जिसमें सोंठ की मिलावट होगी। (१८) और वहां एक सोता है जिसका नाम सलसबील है। (१९) और उनके तीर हर समय रहनेहारे लड़के आते जाते होंगे और जब तू उनको देखे तो यह विचार करे कि बिखरे हुए मोती हैं। (२०) जब तू उस ठौर को देखे तो वरदान और एक बड़ा राज देखेगा। (२१) और उनके वस्त्र महीन रेशमी हरे और मोटे रेशम के होंगे और उनको चांदी के कड़े पहराए जायंगे और उनका प्रभु उनको पवित्र मदिरा पिलायगा। (२२) निस्सन्देह यह है तुम्हारा बदला और तुम्हारा प्रयत्न ठिकाने लगा॥

रु० २—(२३) निस्सन्देह हमने तुझ पर कुरान धीरे धीरे उतारा। (२४) तू अपने प्रभु की आज्ञा पर धीरज धर और उनमें से किसी अपराधी कृतघ्न का कहा न मान। (२५) अपने प्रभु के नाम का भोर और सांझ चर्चा कर। (२६) और कुछ रात में दण्डवत कर और बहुत रात बीते लों उसका जाप करता रह। (२७) निस्सन्देह यह तो संसार ही का जीवन चाहते हैं और अपने पीछे बहुत भारी दिन को छोड़रखा है। (२८) हमही ने उनको उत्पन्न किया और हमही

---

* बैकुण्ठ में एक नदी का नाम है जिसका स्वच्छ शीतल मीठा और कपूर की नाईं सुगन्धित जल है।
† अर्थात् ईश्वर की॥

ने उनके बन्धन दृढ़ किए और हम जब चाहें उन्हीं के समान और लोग बदल कर लेआवें। (२९) निस्सन्देह यहतो शिक्षा है सो जो चाहे अपने प्रभु की ओर मार्ग पकड़े। (३०) और तुम तो न चाहोगे परन्तु हां ईश्वर ही चाहे निस्सन्देह ईश्वर जानने हारा और बुद्धिवान है। (३१) वह जिसे चाहता है अपनी दया में प्रवेश देता है और दुष्ट के निमित उसने दुखदायक दण्ड उद्यत किया है॥

७७ सूरए मुर्सलात (भेजे हुए) मक्की रुकू २ आयत ५०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) कोमलता से भेजे * हुओं की सौंह। (२) फिर बेग से प्रचण्ड चलनेहारों की सौंह। (३) फिर उठाकर छिन्नभिन्न करने † हारियों की सौंह। (४) फिर टूक टूक करके विभाग कर देते हैं। (५) फिर उनकी सौंह जो शिक्षा पहुंचाते हैं। (६) विन्ती के निमित अथवा डराने को। (७) निस्सन्देह जिससे तुम्हें डराया जाता है वह अवश्य होनहार है। (८) और जब तारे मंद होजायं। (९) जब आकाश फाड़ दिया जायगा। (१०) और जब पहाड़ उड़ाए जायंगे। (११) और जब प्रेरित नियुक्त समय पर उपस्थित किए जायंगे। (१२) किस दिन के निमित समय नियुक्त हुआ। (१३) उस न्याय के दिन के हेतु। (१४) और तू क्या समझा कि न्याय का दिन क्या है। (१५) उस दिन उन लोगों की दुर्दशा है जिन्हों ने उसे झुठलाया। (१६) क्या हम अगले लोगों को नाश नहीं करचुके। (१७) और उन्हीं के पीछे पीछे दूसरे लोग ‡ लाते रहे। (१८) हम अपराधियों के साथ उसी भांति करेंगे। (१९) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (२०) क्या हमने तुझको एक तुच्छ पानी से उत्पन्न नहीं किया। (२१) और हमने उसको एक दृढ़ स्थान में नहीं रखा। (२२) नियुक्त समय लों। (२३) फिर हमने एक नाप ठहराई और हम अच्छी नाप ठहरानेहारे हैं। (२४) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (२५) क्या हमने उनके निमित पृथ्वी को नहीं बनाया कि समेटे। (२६) जीवतों को और मृतकों को। (२७) और क्या हमने उसमें अटल और ऊंचे ऊंचे पहाड़ नहीं बनाए और तुमको सोतों से पानी पीने को नहीं दिया। (२८) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (२९) चलो उसकी ओर जिसको तुम झुठलाते थे। (३०) तीन डारवाले छाया की ओर चलो। (३१) उसमें न कुछ छाया है न जलन

---

* वायु अथवा दूत अथवा कुरान की आयतें। † मेघों को उठाकर आकाश पर फैलाना।

‡ दुख़ान ४०॥

को घटा सकता है। (३२) निस्सन्देह वह चिनगारियां फेकता है राशि चक्रों के के समान। (३३) जैसे वह पीला ऊंट है। (३४) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (३५) यह वह दिन है जिसमें वह बात न करेंगे। (३६) और न उनको विन्ती करने की आज्ञा मिलेगी। (३७) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (३८) यह न्याय का दिन है हमने तुम को और अगलों को इकत्र कर लिया है। (३९) यदि तुम्हारे समीप कोई दाव है तो अब करलो। (४०) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है॥

रु० २—(४१) निस्सन्देह संयमी छाहों और सोतों। (४२) और फलों के बीच में होंगे जिस प्रकार के उनका जी चाहे। (४३) खाओ और पियो रुचि के साथ यह उसकी सन्ती जो तुम किया करते थे। (४४) निस्सन्देह हम सुकर्मियों को इसी भांति प्रतिफल देते हैं। (४५) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (४६) खालो* और लाभ उठालो थोड़े दिनलों निस्सन्देह तुम अपराधी हो। (४७) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (४८) और जब उससे कहा जाता है कि झुको तो नहीं झुकते। (४९) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (५०) अब इसके पश्चात किस नवीन बात पर विश्वास लायंगे॥

---

७८ सूरए नबा (समाचार) मक्की रुकू २ आयत ४१।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) वह किस वस्तु के विषय में प्रश्न करते हैं। (२) उस बड़े समाचार के विषय में। (३) जिसमें वह परस्पर विभेद कर रहे हैं। (४) हां वह उसे अवश्य जानलेंगे। (५) फिर हां वह उसे अवश्य जान लेंगे। (६) क्या हमने पृथ्वी को नहीं बनाया। (७) और पहाड़ों को खूंटे। (८) और तुमको जोड़े जोड़े उत्पन्न किया। (९) और तुम्हारी निद्रा को तुम्हारे विश्राम का कारण बनाया। (१०) और रात्रिको आड़ बनाया। (११) और दिनको जीविका का द्वारा बनाया। (१२) और तुम्हारे ऊपर सात ठोस आकाश† बना दिए। (१३) और प्रकाशित दीपक बनाया। (१४) और मेघों से झड़ी की वर्षा वर्षाई। (१५) जिस्तें हम उससे अन्न और शागपात उपजावें। (१६) और घनी वारियें लगाईं। (१७) और निर्णय का दिन तो ठहराया। (१८) और उस दिन जब तुरही फूंकी जायगी तुम जथा जथा होकर आओगे। (१९) और आकाश खोले जायंगे

---

* अपराधियों से कहा गया है। † अर्थात् आकाश. बक़र २७॥

और द्वार द्वार * होजायगा। (२०) और पहाड़ उड़ाए जायंगे वह मृगतृषा † के समान होजायंगे। (२१) निस्सन्देह नर्क घात में है। (२२) विरोधियों का ठिकाना है। (२३) और उसमें बहुत समयों लों पड़े रहेंगे। (२४) उसमें न शर्दी का स्वाद प्राप्त करेंगे न पीने का। (२५) परन्तु खौलता हुआ पानी और पीब। (२६) यह सम्पूर्ण प्रतिफल है। (२७) निस्सन्देह वह लेखे की आशा न रखते थे। (२८) उन्हों ने हमारी आयतों को नकार कर झुठलाया। (२९) और हर वस्तु को हमने गिनकर लिख रखा है। (३०) सो चाखो हम तुम पर दण्ड अधिक ही करते जायंगे॥

रु० २—(३१) निस्सन्देह संयमियों के निमित सफलता है। (३२) बारी और दाख। (३३) और सामान्यवस्था कुंवारी स्त्रिएं। (३४) और भरे हुए कटोरे। (३५) वहां कोई अनर्थ और झूठी बात न सुनेंगे। (३६) यह तेरे प्रभु के लेखे से दिया हुआ प्रतिफल है। (३७) आकाशों और पृथ्वी और उनके मध्य की वस्तुओं का प्रभु रहमान उसके सन्मुख किसी को बात करने की सामर्थ्य नहीं। (३८) एक दिन आत्मा और दूत पांति २ खड़े होयंगे और वह बात न करसकेंगे केवल उसके जिसको रहमान आज्ञा दे और वह ठीक बात बोले। (३९) यह सत्य का दिन है जो चाहे अपने प्रभु की ओर ठिकाना अंगीकार करे। (४०) निस्सन्देह हमने तुमको समीपी दण्ड से डराया है। (४१) उस दिन के दण्ड से जब मनुष्य देख लेगा उसके दोनों हाथों ने आगे क्या भेजा और कहेगा आह! मैं धूर होजाता॥

७९ सूरए नाज़ियात (घसीटनेहारे) मक्की रुकू २ आयत ४६।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) डूब कर फाड़नेहारों‡ की सौंह। (२) उनकी सौंह जो धीरे§ से बन्धन खोलते हैं (३) और उनकी सौंह जो तैरते¶ फिरते हैं। (४) फिर लपक कर आगे‖ बढ़ते हैं। (५) और वह जो आज्ञा से कार्य्य का प्रबन्ध करते हैं। (६) जिस दिन कांपनेहारी कांपेगी। (७) और उसके पीछे लगातार कंपकंपी चली आती है। (८) उस दिन बहुत से हृदय धड़कते होयंगे। (९) और दृष्टिएं झुकी हुई होयंगी। (१०) वह कहेंगे क्या हम उलटे पांव पीछे लौटाए जायंगे। (११) हां क्या जब हम गलीहुई हड्डियां होजायंगे। (१२) वह कहते हैं तब तो यह टोटे का लौटना होगा।

* दूत चहुं ओर से बाहर निकलते होंगे। † अर्थात् बालू। ‡ वो दूत जो कुकर्म्मियों के प्राण निकालते हैं। § वह दूत जो धर्म्मियों के प्राण शान्ति से निकालते हैं। ¶ दूत जो वायु में फिरते हैं। ‖ विश्वासियों की आत्मा को लेकर शीघ्र बैकुण्ठ में पहुंचा देते हैं॥

(१३) सो वह तो दपट है। (१४) फिर वह एक साथ मैदान में आ प्रगट होंगे। (१५) क्या तुम्हारे समीप मूसा का वृत्तान्त * आ चुका। (१६) जब उसे उसके प्रभु ने तवी के मैदान में पुकारा। (१७) फ़िराऊन की ओर जा कि वह विरोधी होगया है। (१८) और उससे कह कि क्या तू पवित्र होने चाहता है। (१९) और मैं तुझे तेरे प्रभु की ओर मार्ग बतादूं जिस्तें तू डरने लगे। (२०) सो उसने उसको सब से बड़ा चिन्ह दिखाया। (२१) परन्तु उसने झुठलाया और आज्ञा उलंघन की। (२२) फिर पीठ फेरी-उपाय करने लगा। (२३) जत्था इकत्र करके पुकारा। (२४) कि मैं ही तुम्हारा बड़ा प्रभु हूं। (२५) सो ईश्वर ने उसे धर पकड़ा दण्ड के साथ अगले और पिछले † संसार में। (२६) निस्सन्देह उसके निमित जो डरता है शिक्षा है॥

रु० २—(२७) क्या तुम्हारी उत्पति अधिक कठिन है अथवा आकाश की जिसको उसने बनाया। (२८) और उसकी उंचाई को ऊंचा किया और उसको संवारा। (२९) और उसकी रात्रि को अंधियारी किया और उसका दिन निकाला। (३०) और उसके पश्चात पृथ्वी को चौड़ा किया। (३१) और उसमें से उसी का पानी और चारा निकाला। (३२) उसने पहाड़ों को स्थिर किया। (३३) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के निमित आश्रय है। (३४) सो जब वह बहुत बड़ा हुल्लड़ आयगा। (३५) उस दिन मनुष्य सुर्ति करेगा कि उसने क्या २ प्रयत्न किया। (३६) और नर्क खोल कर दिखाया जायगा जो चाहे देखे। (३७) और वह जिसने विरोध किया। (३८) इस संसार के जीवन को उपमा दी। (३९) उसका ठिकाना नर्क है। (४०) और जो अपने प्रभु के सन्मुख खड़े होने से डरा और अपनी शारीरिक भावना को रोका। (४१) सो निस्सन्देह उसका ठिकाना वैकुण्ठ है। (४२) तुझसे उस घड़ी के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब होगी। (४३) तुझे उसके वर्णन करने का क्या प्रयोजन। (४४) तेरे प्रभु ही की ओर उसका अन्त है। (४५) तू तो केवल उसको डरानेहारा है जो डरता है। (४६) उस दिन उसको देख लेंगे और उनको ऐसा जान पड़ेगा कि वह केवल एक सांझ अथवा मध्याह लों उसमें ‡ टिके थे॥

---

* तोय १२। † फ़ुरक़ान ९—६६। ‡ अर्थात संसार में॥

८० सूरए अबस (त्योरी चढ़ाना) मक्की रुकू १ आयत ४२।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) उसने त्योरी चढ़ाई और मुंह मोड़ा। (२) क्योंकि उसके समीप एक अन्धा * आया। (३) परन्तु तुझे उसका क्या ज्ञान कदाचित वह पवित्र होजाता। (४) अथवा वह उपदेश सुनता और वह शिक्षा उसे लाभदायक होती। (५) परन्तु वह जो धनवान है। (६) तू उसकी ओर अवहित है। (७) यद्यपि तुझ पर कुछ पकड़ † नहीं कि वह पवित्र नहीं होता। (८) परन्तु जो तेरे निकट दौड़ता हुआ आया। (९) और वह डरता है। (१०) और तू उससे भागता है। (११) नहीं-निस्सन्देह यह ‡ तो शिक्षा है। (१२) सो जो चाहे उसको स्मर्ण रक्खेगा। (१३) आदरमान पत्रों में। (१४) जो ऊंचे पदवाले और पवित्र हैं। (१५) ऐसे लेखकों के हाथों में जो आदरमान और सुकर्म्मी हैं। (१६) मनुष्य नाश होजाय कैसा कृतघ्न है। (१७) किस वस्तु से उसने उन्हें उत्पन्न किया। (१८) वीर्य्य से। (१९) उत्पन्न करके उसकी आप ठहराई। (२०) फिर उसके निमित मार्ग सहज कर दिया। (२१) फिर उसको मार दिया और समाधियों में पहुंचा दिया। (२२) फिर जब चाहेगा उसे उठा खड़ा करेगा। (२३) नहीं उसने अभी उसकी आज्ञा पूरी नहीं की। (२४) सो मनुष्य को उचित है कि अपने भोजन की ओर निहारे। (२५) निस्सन्देह हमने ऊपर से पानी डाला। (२६) फिर पृथ्वी को जैसा उचित था फाड़ डाला। (२७) फिर हमने उसमें से अन्न उगाया। (२८) और दाख और सागपात। (२९) जैतून और खजूरें। (३०) और सघन वाटिकाएं। (३१) फल और चारा। (३२) तुम्हारे और तुम्हारे पशुओं के निमित जीविका। (३३) सो जब वह चिल्लाहट जिससे कान बहरे होंगे आ उपस्थित होगी। (३४) उस दिन मनुष्य अपने भाई से भागेगा। (३५) और अपने माता और पिता से। (३६) और अपनी स्त्री और अपने पुत्रों से। (३७) प्रत्येक मनुष्य को उस दिन चिन्ता लगी होगी जो उसके निमित बस है। (३८) उस दिन कई मुख चमक रहे होंगे। (३९) हंसते और आनन्द करते हुए। (४०) और उस दिन कई मुख मलीन होंगे। (४१) उन पर कालख छाई होयगी। (४२) यही दुष्ट और कुकर्म्मी जन हैं॥

* कहते हैं कि जब मुहम्मद साहब वलीद के साथ जो कुरैश का एक अध्यक्ष था बात कर रहे थे तो एक अन्धा जिसका नाम उम्मकतूम का पुत्र अबदुल्ला था क़ुरान सुनने की नियत से आया महम्मद साहब ने उसको झिड़क दिया उस समय यह सूरत उतरी। † अर्थात् दोष। ‡ अर्थात् क़ुरान॥

८१ सूरए तकवीर (लपेट लिया गया) मक्की रुकू १ आयत २९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) जिस समय सूर्य्य लपेट * लिया गया हो। (२) और तारे मध्यम होगए हों। (३) जब पर्व्वत चलरहे हों। (४) जब दस मास की गर्भणी ऊंटनी मारी मारी फिरे। (५) जब कि बन के पशु एक ठौर इकत्र किए जायं। (६) और जब कि नदी भड़काई जायं। (७) और जब आत्माएं मिलाई जायं। (८) और जब लड़की से जो जीवती गाड़दी गई थी पूछा जाय। (९) कि वह किस † पाप के कारण घात कीगई थी। (१०) और जब पत्रे ‡ खोल कर फैलाए जायं। (११) जब आकाश का छिलका § उतारा जाय। (१२) और जिस समय नर्क दहकाया जाय। (१३) जिस समय स्वर्ग निकट लाया जाय। (१४) उस समय प्रत्येक प्राण जान लेगा जो कुछ लेके आया है। (१५) सो मैं पीछे हटने हारे की किरिया खाता हूं। (१६) और सीधे चलनेहारे और छिपजानेहारे की। (१७) और रात की सौंह जब बढ़ती चली आती है। (१८) और प्रातःकाल की सौंह जब वह स्वासले। (१९) निस्सन्देह यह एक सज्जन प्रेरित का वाक्य है। (२०) वह शक्तिवान है और स्वर्ग के स्वामी के निकट स्थिर है। (२१) वह माना हुआ और विश्वास योग्य है। (२२) और तुम्हारा मित्र बावला नहीं। (२३) और उसने उसे ¶ दिगमण्डल $ में देखा। (२४) और वह गुप्त@की बातों पर कृपण नहीं है। (२५) और निस्सन्देह यह ** स्रापित दुष्टात्मा का वाक्य *† नहीं। (२६) सो तुम कहां फिरे जाते हो। (२७) यहतो सृष्टियों के निमित एक शिक्षा है। (२८) उसके निमित जो तुममें से सीधा मार्ग ग्रहण करना चाहे। (२९) और तुमतो नहीं चाहते वरण ईश्वर जो सृष्टियों का प्रभु है जब वही *‡ चाहे ॥

---

८२ सूरए इनफ़ितार (फट गया) मक्की रुकू १ आयत १९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) जब कि आकाश फटजाय। (२) और तारे छितर जायं। (३) और जब समुद्र एक संग बह जायं। (४) और जब कि समाधें उखाड़ फेंकी

---

* इबरियों १:१२। † नहल ६१. बनी इसराएल ३३। ‡ अर्थात् कर्म्मपत्र। § स्तोत्र १०४:२। ¶ अर्थात जिबराईल। $ नजम १—१९ लों। @ नजम ७। ** इमरान ३१। *† अर्थात् क़ुरान। *‡ दहर ३९ से अन्त लों ॥

जायं। (५) प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि क्या कुछ उसने आगे भेजा और पीछे रख छोड़ा। (६) हे मनुष्य तुझे तेरे दयालु प्रभु के विषय में किस वस्तु ने बहकाया। (७) उसने तुझे सृजा और तुझे संवारा और तुझे सुडौल बनाया। (८) जिस स्वरूप में चाहा तुझको रचा। (९) नहीं—तुम प्रतिफल को झुठलाते रहे। (१०) निस्सन्देह तुम पर रक्षक नियुक्त हैं। (११) महान लेखक। (१२) वह जानते हैं जो तुम करते हो। (१३) निस्सन्देह सुकर्म्मी सुदशा में होंगे। (१४) और निस्सन्देह कुकर्म्मी नर्क में। (१५) प्रतिफल के दिन उसमें प्रवेश करेंगे। (१६) और वह उससे छिप नहीं सकते। (१७) और तू क्या जाने कि प्रतिफल का दिन कैसा है। (१८) फिर तू क्या जाने कि प्रतिफल का दिन कैसा है। (१९) उस दिन कोई प्राणी किसी प्राणी के कुछ अर्थ न आयगा और उस दिन ईश्वर ही की आज्ञा होगी ॥

---

८३ सुरए ततफ़ीफ़ (घाट तौलना) मक्की रुकू १ आयत ३६।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) घाट तौलनेहारों पर सन्ताप। (२) जो जब औरों से तौल कर लें तो पूरा तौलें। (३) परन्तु जब उन्हें तौल करदें तो घाटदें। (४) क्या उनको विचार नहीं कि फिर उठाए जायंगे। (५) उस बड़े दिन को। ६ उस दिन जब कि मनुष्य सृष्टियों के प्रभु के सन्मुख खड़े होयंगे। (७) नहीं कुकर्मियों की पुस्तक सज्जीन* में है। (८) और तू क्या जाने कि सज्जीन क्या है। (९) एक लिखी हुई पुस्तक। (१०) उस दिन झुठलानेहारों की दुर्दशा है। (११) जो प्रतिफल के दिन से मुकरते हैं। (१२) उसको तो कोई नहीं मुकरता केवल प्रत्येक पापी और कुकर्मी के (१३) जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह कहता है कि अगलों की कहानियां हैं। (१४) नहीं वरन उनके हृदयों पर सिहाना† जमा दिया करते हैं। (१५) नहीं निस्सन्देह उस दिन वह अपने प्रभु से ओट में होंगे। (१६) फिर अवश्य उनको नर्क में प्रवेश देगा। (१७) फिर कहा जायगा यही तो है जिसको तुम झूठ समझते थे। (१८) नहीं निस्सन्देह सुकर्मियों की पुस्तक अलीन‡ में है। (१९) और तू क्या जाने कि अलीन क्या है। (२०) लिखी हुई पुस्तक। (२१) समीपी उसको देखेंगे। (२२) निस्सन्देह सुकर्मी सुदशा में होंगे। (२३) सिंहासनों पर बैठे हुए देख रहे होंगे। (२४) तू उनको

---

* नर्क में एक कन्दीलग है। † अर्थात मोरचा। ‡ अर्थात उच्च स्थान ॥

मुखड़ों पर हर्ष को सुदशा के हर्ष से पहचान लेगा। (२५) और उनको छाप * की हुई मदिरा पिलाई जायगी। (२६) और उसकी छाप कस्तूरी की होगी और उसमें रुचि करनेहारों को चाहिए कि रुचि करें। (२७) और उसमें तसनीम † की मिलावट होगी। (२८) वह एक सोता है जिसमें से समीपी दास पीते हैं। (२९) निस्सन्देह अपराधी विश्वासियों के साथ ठट्ठा किया करते थे। (३०) और जब वह उनके तार से होके निकलते थे तो वह परस्पर सैन करते थे। (३१) और जब वह अपने घर लौटकर जाते थे तो बातें बनाते हुए लौटते थे। (३२) और जब उनको देखते थे तो कहते थे कि निस्सन्देह यह लोग तो बहके हुए हैं। (३३) परन्तु वह उन पर रक्षक बनाकर नहीं भेजे गए। (३४) सो आज विश्वासी अधर्मियों से ठट्ठा कर सकेंगे। (३५) सिंहासनों पर बैठे देख रहे हैं। (३६) कि क्या अधर्मियों को प्रतिफल मिल गया उसका जो वह किया करते थे॥

---

८४ सूरए इन्शिक़ाक़ (फाड़ना) मक्की रुकू १ आयत १५।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) जब आकाश फटजाय। (२) अपने प्रभु की ओर कान लगाए यही उसको उचित है। (३) और जब पृथ्वी फैलाई जाय। (४) और जो कुछ उसमें है डालदे और शून्य होजाय। (५) और अपने प्रभु की ओर कान लगाए और यही उसको उचित है। (६) हे मनुष्य तू परीश्रम करता हुआ अपने प्रभु की ओर जा रहा है सो तू उससे अवश्य मिलेगा। (७) सो जिसके दहिने हाथ में पुस्तक दी गई। (८) उससे लेखा सुगमता के साथ लिया जायगा। (९) वह अपने कुटुम्बियों की ओर हर्षित होता जायगा। (१०) और जिसको उसकी पुस्तक पीठ पीछे से दी गई। (११) वह दुर्दशा को पुकारेगा। (१२) और ज्वाला में प्रवेश करेगा। (१३) निस्सन्देह अपने कुटुम्बियों में सहर्ष रहा करता था। (१४) निस्सन्देह उसने विचार किया कि फिर नहीं लौटेगा। (१५) हां निस्सन्देह उसका प्रभु उसे देख रहा था। (१६) मैं गोधूलि की किरिया खाता हूँ। (१७) और रात की किरिया (१८) और चन्द्रमा की सौंह जब कि वह पूरा हो। (१९) कि तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा को पहुंचोगे। (२०) सो उन्हें क्या होगया कि वह विश्वास नहीं लाते। (२१) जब कुरान उन पर पढ़ा जाता है तो दण्डवत नहीं करते। (२२) बरन

---

* अर्थात जिन पात्रों में मदिरा होगी उन पर छाप लगी होगी। † बैकुण्ठ में एक कुण्ड है॥

जो अधर्मी हैं वह इसको झुठलाते हैं । (२३) और ईश्वर भली भांति जानता है जो कुछ यह हृदयों में रखते हैं । (२४) उनको दुखदायक दण्ड का सुसमाचार सुनादे । (२५) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और सुकर्म किए उनको अलेख प्रतिफल मिलेगा ॥

---

८५ सूरए बुरूज (राशि चक्र) मक्की रुकू १ आयत २२ ।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) राशि चक्र वाले आकाश की सौंह । (२) प्रतिज्ञा के दिन की सौंह । (३) साक्षी † और साक्षी दिए हुए की सौंह । (४) खंदक ‡ वाले घात किए गए । (५) एक प्रज्वलित अग्नि थी । (६) जब कि उस पर बैठे थे । (७ §) और जो कुछ वह विश्वासियों के साथ कररहे थे । (८) और उन्होंने उससे बदला न लिया केवल इस बात के कि वह ईश्वर बलिष्ठ और स्तुति योग्य पर विश्वास लाए । (९) उसी के राज्य स्वर्गों और पृथ्वी में हैं और ईश्वर हर वस्तु पर साक्षी है । (१०) निस्सन्देह जिन्होंने विश्वासी पुरुषों और विश्वासी स्त्रियों को सताया और फिर पश्चाताप न किया तो उनके निमित नर्क का दण्ड है और उनको जलने का क्लेश है । (११) निस्सन्देह जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित बैकुण्ठ है जिनके नीचे नहरें बहती हैं और यह बहुत बड़ी सफलता है । (१२) निस्सन्देह तेरे प्रभु की पकड़ बड़ी कठिन है । (१३) निस्सन्देह वही उत्पन्न करता और फिर लौटाता है । (१४) वही क्षमा करने हारा और प्यार करनेहारा है । (१५) स्वर्ग का स्वामी और बड़ा ऐश्वर्य्यवान है । (१६) और जो कुछ चाहता है करता है । (१७) क्या तुझे सेनाओं का समाचार पहुंचा । (१८) फ़िराऊन और समूद की । (१९) नहीं बरन अधर्मी झुठलाने ही में लगे हैं । (२०) और ईश्वर उनको चहुंओर से घेरे हुए है । (२१) बरन यह बड़ा ऐश्वर्य्यवान कुरान है । (२२) जो लौह ¶ महफ़ूज़ में है ॥

---

* हजर १५ । † जान पड़ता है कि साक्षी का अभिप्राय महम्मद साहब और साक्षी दिए हुए से उस विश्वास का अभिप्राय है जिसके विषय में उन्होंने साक्षी दी । ‡ दानियल ३ पर्व । § जान पड़ता है कि आयत ७—११ भी बहुत समय बीते इस सूरत में मिलाई गईं क्योंकि यह आयतें लम्बी २ हैं ।
¶ अर्थात रक्षित पाटी ॥

८६ सूरए तारिक़ (रात के समय आनेहारा) मक्की रुकू १ आयत १७
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) आकाश की सौंह रात को आने हारे की सौंह। (२) और तू क्या समझा कि रात को आने हारा क्या है। (३) एक चमकता हुआ तारा है। (४) निस्सन्देह कोई मनुष्य नहीं जिस पर एक रक्षक न हो। (५) सो उचित है कि मनुष्य विचार करे कि वह किस वस्तु से उत्पन्न किया गया है। (६) वह उछलते हुए पानी से उत्पन्न हुआ है। (७) जो पीठ और छाती की बीच की हड्डियों में से निकलता है। (८) निस्सन्देह वह उसे फिर उत्पन्न करने पर सामर्थी है। (९) जिस दिन भेद जांचे जायंगे। (१०) उसको न कुछ शक्ति होगी और न उसका कोई सहायक। (११) आकाश वर्षा वर्षानेहारे की सौंह। (१२) और पृथ्वी की सौंह जो फटजाती * है। (१३) निस्सन्देह यह निर्णीत वचन है। (१४) और कुछ ठट्ठा नहीं है। (१५) निस्सन्देह वह छल से एक छल कररहे हैं। (१६) मैं भी अपने छल से छल कररहा हूं। (१७) सो तू अधर्म्मियों को अवसर दे उनको थोड़े दिनों लौं अवसर दे॥

---

८७ सूरए आला (महान) मक्की रुकू १ आयत १९।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) अपने महान प्रभु के नाम का जाप कर। (२) जिसने उत्पन्न किया और फिर संवारा। (३) जिसने अटकल किया फिर मार्ग दिखाया। (४) और जिसने हरी घास निकाली। (५) फिर उसको सुखाके काली करदिया। (६) और हम तुझको पढ़ायंगे और फिर तू न भूलेगा। (७) परन्तु हां जो कुछ ईश्वर चाहे निस्सन्देह वह गुप्त और प्रगट को जानता है। (८) और हम तेरे निमित्त सुगमता को सुगम कर देंगे। (९) सो तू समझादे यदि समझाना फल-दायक हो। (१०) जिसको डर होगा वह समझ जायगा। (११) परन्तु अभागी उससे अलग होजायगा। (१२) जिसको बड़ी अग्नि में प्रवेश करना है। (१३) उसमें न मरेगा न जिएगा। (१४) उसी का भला होगा जो पवित्र बन गया। (१५) और अपने प्रभु का नाम स्मर्ण किया फिर प्रार्थना की। (१६) परन्तु तुमतो सान्सारिक

---

* अर्थात बनस्पति बगल देती है॥

जीवन को उपमा देते हो। (१७) यद्यपि अंत का दिन उत्तम और अधिक दृढ़ है। (१८) निस्सन्देह यही अगली पुस्तकों में था। (१९) इब्राहीम और मूसा की पुस्तकों में ॥

८८ सूरए ग़ाशिया (ढांकना) मक्की रुकू १ आयत २६।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) क्या तुझे ढांकनेहारे का समाचार मिला। (२) उस दिन अनेक स्वरूप नीच होयंगे। (३) परिश्रम करते दुख उठाते। (४) दहकती अग्नि में प्रवेश करेंगे। (५) एक खौलते हुए सोते से उन्हें पीने को मिलेगा। (६) केवल कटीली घास के और कोई खाना न मिलेगा। (७) जो न मोटा करती है न क्षुधा मिटाती है। (८) उस दिन कई स्वरूप हर्षित होंगे। (९) अपने प्रयत्न से प्रसन्न होंगे। (१०) ऊंचे बैकुण्ठ में। (११) वहां कोई अनर्थ वचन न सुनेंगे। (१२) उसमें सोते बहरहे होयंगे। (१३) वहां ऊंचे सिंहासन बिछे हैं। (१४) और पानपात्र धरे हैं। (१५) और घालीश बराबर बराबर लगे हैं। (१६) और जाजम* चहुं ओर बिछी हैं। (१७) क्या वह ऊट की ओर दृष्टि नहीं करते कि वह कैसे बना है। (१८) आकाश की ओर कि वह कैसे ऊंचा किया गया। (१९) और पहाड़ों की ओर कि वह कैसे धरे गए। (२०) और पृथ्वी की ओर कि वह कैसे फैलाई गई। (२१) तू समझा तेरा काम केवल समझाना है। (२२) और तू उन पर प्रधान नहीं है। (२३) परन्तु जिसने मुंह फेरा और मुकरा। (२४) तो ईश्वर उसको बहुत बड़ा दण्ड देगा। (२५) निस्सन्देह उनको हमारी ही ओर लौट कर आना है। (२६) फिर हमहीं उनसे लेखा लेंगे ॥

८९ सूरए फ़जर (भोर) मक्की रुकू १ आयत ३०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) भोर और दस रात्रियों† की सौंह। (२) जुट और छुट की (३) और रात की जब वह बीत रही हो। (४) क्या सत्य के खोजियों के निमित्त इन वस्तुओं की कोई किरिया है। (५) क्या तूने देखा कि तेरे प्रभु ने आद के संग में क्या किया। (६) जो इरम में बड़े बड़े खंभों वाले थे। (७) उनके समान

* अर्थात क़ालीन। † ज़िलहिज मास की पूर्व दस रात्रिएं ॥

देश में उत्पन्न नहीं हुए ।(८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को चीर डाला। (९) और खूटों वाले फ़िराऊन के साथ। (१०) जो देश में विरोध अंगीकार कर चुके थे। (११) और बहुतायत से उसमें उपद्रव मचाते थे। (१२) सो तेरे प्रभु ने उन पर दण्ड का कोड़ा चलाया। (१३) निस्सन्देह तेरा प्रभु घात में है। (१४) सो जब मनुष्य की उसका प्रभु परिक्षा करता और उसे आदर और बरदान देता है। (१५) तो वह कहता है कि मेरे प्रभु ने मुझको आदर दिया। (१६) और जब वह उसकी परिक्षा करता है और उसके निमित उसका अहार संकेत करता है। (१७) तो कहता है कि मेरा प्रभु मेरा उपहास करता है। (१८) नहीं बरन तुम अनाथ का आदर नहीं करते। (१९) और न दरिद्रियों को भोजन कराने को उभारते हो। (२०) और दाय भाग समेट २ कर खाजाते हो। (२१) और धन की प्रीत से गहिरी प्रीत करते हो। (२२) हां जब पृथ्वी टूट कर चूर २ होजाय। (२३) और तेरा प्रभु और दूत पांति पांति आयंगे। (२४) उस दिन नर्क लाया जायगा और मनुष्य स्मर्ण करेगा परन्तु वह स्मर्ण करना उसे कुछ लाभ न देगा। (२५) वह कहेगा शोक आह मैं अपने जीवन के निमित कुछ आगे भेज लेता सो उस दिन वह ऐसा दण्ड देगा कि किसी ने ऐसा दण्ड न दिया होगा (२६) और ऐसा जकड़ेगा कि वैसा किसी ने न जकड़ा हो। (२७) हे तू सन्तुष्ट आत्मा (२८) अपने प्रभु की ओर लौट आ तू उसको प्रसन्न करनेहारा और वह तुझको प्रसन्न करनेहारा। (२९) और मेरे दासों में प्रवेश कर। (३०) और मेरे बैकुण्ठ में प्रवेश कर॥

---

९० सूरए बलद (देश) मक्की रुकू १ आयत २०।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) मैं नग्र की किरिया खाता हूं। (२) और तू उस नग्र का वासी है। (३) जन्म ने हारे और जन्में हुए की सौंह। (४) और हमने मनुष्य को कष्ट* में बनाया। (५) क्या वह † विचार करता है कि उसको कोई वश में न कर सकेगा। (६) वह कहता है मैंने ढेरों धन नाश किया। (७) क्या वह विचार करता है कि उसे कोई नहीं देखता। (८) क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। (९) और जीभ और दो होंठ। (१०) और उसे दो मार्ग दिखा दिए। (११) उसने घाटी को पार नहीं

---

* परिश्रम व दुख के हेतु।   † कल्दा के पुत्र अबिअशद कुरैशी धनवान व योद्धा का वर्णा है॥

किया (१२) तू क्या जानता है कि घाटी क्या है। (१३) घीचों का छुड़वाना। (१४) अथवा उपवास के दिन भोजन करवाना। (१५) नातेदार अनाथ को। (१६) अथवा मस्कीन दरिद्री को। (१७) और उन लोगों में होना जो विश्वास लाए और दूसरे को धीरज के निमित उभारते रहे और दया करने की आज्ञा * की। (१८) यही दाहिनी ओर वाले हैं। (१९) और जो लोग हमारी आयतों से मुकरे वही बाईं ओर वाले हैं। (२०) उनके निमित अग्नि है जिसमें बंद हो जायेंगे॥

---

९१ सूरए शम्स (सूर्य्य) मक्की रुकू १ आयत १५।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) सूर्य्य और उसकी धूप की सौंह। (२) और चन्द्रमा जब कि वह उसको † पीछे आए। (३) और दिन की जब कि उसको प्रगट करे। (४) और रात की जब कि उसे ढांक ले। (५) और आकाश की और जिसने उसे बनाया। (६) और पृथ्वी की और जिसने उसे फैलाया। (७) और देहकी और जिसने उसे संवारा। (८) और उसको बुराई और संयम सिखाया। (९) निस्सन्देह वह मनोर्थ को पहुंच गया जिसने उसको ‡ पवित्र किया। (१०) और वह नष्ट हुआ जिसने उसे अशुद्ध किया। (११) और समूद § ने विरोध से झुठलाया। (१२) जब कि उनमें से सब से बड़ा दुर्भागी¶ उठ खड़ा हुआ। (१३) और उनको ईश्वर के प्रेरित ने कह दिया कि यह ईश्वर की ऊंटनी है उसको पानी पीने दो। (१४) परन्तु उन्होंने उसे झुठलाया और उसकी कूंचें काट डालीं परन्तु उनके प्रभु ने उन्हें उनके पापों में नष्ट कर दिया और उन सबको समान कर दिया। (१५) और उसको उनके अन्त का डर नहीं॥

---

९२ सूरए लैल (रात) मक्की रुकू १ आयत १९।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) रात की सौंह जब वह ढांप ले। (२) और दिन की जब वह प्रकाशित हो। (३) और उसकी जिसने नर और नारी उत्पन्न किए। (४) निस्सन्देह तुम्हारे प्रयत्न भिन्न भिन्न हैं। (५) सो जिसने दया और संयम अंगीकार किया।

---

* अर्थात ताकीद। † अर्थात सूर्य्य के। ‡ अर्थात मन को। § देखो ८० ११।

¶ अर्थात सालिक का पुत्र करार॥

(६) और भली बात को सिद्ध किया। (७) हम उसको सुगमता के साथ सुगम* में पहुंचाएंगे। (८) और जिसने कृपणता की और सन्तुष्ट रहा। (९) और भली बात को झुठलाया। (१०) हम उसको सुगमता के साथ कठिनता† में पहुंचा देंगे। (११) और उसके मित्र उसके कुछ अर्थ न आयंगे जब कि वह उसमें डाला जायगा। (१२) निस्सन्देह हमें मनुष्य को मार्ग दिखाना उचित है। (१३) निस्सन्देह अंत और आदि हमारे ही निमित हैं। (१४) सो मैंने तुमको भड़कती हुई अग्नि से डराया। (१५) उसमें दुर्भागी को छोड़ और कोई प्रवेश न करेगा। (१६) जो झुठलाए और मुंह फेरे। (१७) और संयमी उससे दूर रखा जायगा। (१८) जो अपना धन अपने पवित्र † होने के निमित देता है। (१९) और उस पर किसी का कोई उपकार नहीं कि जिसका बदला उतारता हो। (२०) केवल अपने महान प्रभु की प्रसन्नता का इच्छुक है। और अंतकाल वह हर्षित होगा॥

९३ सूरए जुहा (प्रकाश) मक्की रुकू १ आयत ११।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) दिन के पहिले पहर की सौंह। (२) और रात की सौंह जब वह छा जाय। (३) तेरे प्रभु ने न तुझे छोड़ दिया है न तुझ से दुखित हुआ है। (४) निस्सन्देह तेरा अंत आदि की अपेक्षा उत्तम है। (५) तेरा प्रभु तुझको शीघ्र इतना देगा कि तू सन्तुष्ट होजायगा। (६) क्या उसने तुझको अनाथ ‡ नहीं पाया और उसने तुझको शरण नहीं दी। (७) और क्या तुझे भटका § हुआ नहीं पाया और तेरी अगुवाई नहीं की। (८) और तुझे दरिद्री पाया सो तुझे धनाढ्य कर दिया। (९) सो जो अनाथ है उस पर क्रोध न कर। (१०) और दरिद्री को झिड़कर हांक न दे। (११) और अपने प्रभु के वरदानों का चर्चा कर॥

---

* विश्राम अथवा वैकुण्ठ। † क्लेश अथवा नर्क। ‡ लूका ११ : ४८। § महम्मद साहब का पोषण उनके दादा अबदुलमतलिब ने किया। ¶ यह सूचना महम्मद साहब के आरम्भ के जीवन चरित्र के चालीस वर्ष की ओर है॥

९४ सूरए इनशराह (खोलना) मक्की रुकू १ आयत ८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) क्या हमने तेरा हृदय नहीं खोल दिया। (२) और क्या तेरा भार नहीं उतार दिया। (३) जिसने तेरी कटि तोड़ रखी थी। (४) और तेरा चर्चा ऊंचा नहीं किया। (५) सो निस्सन्देह कठिनाई ही के संग सुगमता है। (६) निस्सन्देह कठिनाई के संग सुगमता है। (७) सो जब तू सावकाश में हो परिश्रम * कर। (८) और अपने प्रभु से अनुराग कर ॥

---

९५ सूरए तीन (गूलर) मक्की रुकू १ आयत ८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) गूलर † की सौंह जैतून की सौंह। (२) और सीना पर्वत की। (३) उस निर्भय नगर ‡ की। (४) निस्सन्देह हमने मनुष्यको अच्छी से अच्छी युक्ति से उत्पन्न किया। (५) और हम फिर उसे अकार्थ से अकार्थ श्रेणी में फेंक देंगे। (६) परन्तु जो लोग विश्वास लाए और सुकर्म्म किए उनके निमित अलेख प्रतिफल हैं। (७) सो इसके पश्चात तुझको प्रतिफल के झुठलाने पर कौन बात उद्यत करती है। (८) क्या ईश्वर सब प्रधानों से बड़ा प्रधान नहीं है ॥

---

९६ सूरए अलक़ (लोहू का लोथड़ा) मक्की रुकू १ आयत १९।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) पढ़ चल अपने प्रभु के नाम से जिसने उत्पन्न किया। (२) मनुष्य को एक लोहू की फुटकी से बनाया। (३) पढ़ चल कि तेरा प्रभु अत्यन्त महान है। (४) जिसने लेखनी को विद्या सिखाई। (५) और मनुष्य को सिखाया जो वह न जानता था। (६) नहीं निस्सन्देह मनुष्य विरोधी है। (७) जब अपने आपको धनाढ्य देखे। (८) निस्सन्देह तेरे प्रभु ही की ओर लौट जाना है। (९) क्या तूने उसको § देखा जो बर्जता है। (१०) एक दास ¶ को जब वह प्रार्थना

---

* अर्थात आराधना। † अर्थात अंजीर। ‡ अर्थात मक्का॥ § अर्थात अबूजहल।
¶ अर्थात महम्मद साहब।

करता है। (११) क्या तूने विचार किया कि यदि वह मार्ग पर होता। (१२) अथवा लोगों को संयम की शिक्षा करता। (१३) क्या तूने विचार किया कि यदि वह झुठलाता और मुंह फेरता रहा। (१४) क्या वह नहीं जानता कि निस्सन्देह ईश्वर देखसकता है। (१५) हां निस्सन्देह यदि वह न माने तो हम उसकी चोटी पकड़ कर घसीटेंगे। (१६) झूठ अपराधी की चोटी। (१७) सो वह अपने परामर्शियों को बुलाले। (१८) और हम भी नर्क के रक्षकों को बुलालेंगे। (१९) चौकस रह उसका कहा न मानना वरन दंडवत करते हुए निकट होते रहना॥

---

९७ सूरए क़द्र (बल) मक्की रुकू १ आयत ५।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) निस्सन्देह हमने इसे * शक्तिवान † रात्रि में उतारा। (२) और तू क्या जाने कि शक्तिवान ‡ रात्रि क्या है। (३) शक्तिवान रात्रि सहस्रों मासों से अच्छी है। (४) उसमें दूत और आत्मा अपने प्रभु की आज्ञा से प्रत्येक आज्ञा सहित उतरते हैं। (५) और होने लों कुशल है॥

---

९८ सूरए बैयना (प्रत्यक्ष) मदनी रुकू १ आयत ८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) पुस्तक वालों और साझी ठहराने हारों में से जो अधर्म्मी हुए वह माननेहारे न थे यहांलों कि उनके निकट प्रत्यक्ष प्रमाण आजाय। (२) ईश्वर की ओर से प्रेरित पवित्र पुस्तकें पढ़ता हुआ जिसमें यथोचित रीति से व्यवस्था लिखी है। (३) और पुस्तक वालों ने उस समय लों विभेद नहीं किया जब कि उनके तीर प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं आया। (४) और उनको यही आज्ञा दीगई थी कि उसकी आराधना करें और उसके निमित मत में एक हनीफ़ के समान निष्कपट हों और प्रार्थना में स्थिर रहें और दान दें यही सत्य धर्म्म है। (५) निस्सन्देह जो पुस्तक वालों और साझी ठहराने हारों में से अधर्म्मी हुए नर्क की अग्नि में होंगे और वह इसमें सदा रहेंगे यही लोग दुर्भागी सृष्टि में से हैं। (६) निस्स-

---

* अर्थात क़ुरान। † अर्थात शबेक़द्र। ‡ दुख़ान २॥

न्देह जो विश्वास लाए और सुकर्म्म किए वही लोग उत्तम सृष्टि में से हैं। (७) उनका प्रतिफल उनके प्रभु के निकट सदा के बैकुण्ठ हैं जिनके नीचे धाराएं बहती हैं और वह उसमें सदा रहेंगे। (८) ईश्वर उनसे प्रसन्न है और वह ईश्वर से प्रसन्न हैं और यह उनके निमित है जो अपने प्रभु से डरता है॥

---

९९ सूरए ज़लज़ला (भुइंडोल) मदनी रुकू १ आयत ८।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) जब कि पृथ्वी अपने भुइंडोल से हिलादी जायगी। (२) और पृथ्वी अपना बोझ निकाल फेंकेगी। (३) और मनुष्य कहेगा कि उसे क्या होगया। (४) उस दिन वह अपने समाचार वर्णन करेगी। (५) इस कारण कि तेरा प्रभु उसे प्रेरणा करता है। (६) उस दिन लोग पृथक २ जत्थाओं में आयंगे जिस्से उनको उनकी क्रियाएं दिखाई जायं। (७) सो जिसने प्रमाणु तुल्य भलाई की होयगी वह उसको देख लेगा। (८) और जिसने प्रमाणु तुल्य बुराई की होयगी वह उसे भी देख लेगा॥

---

१०० सूरए आदियात (सवारी के जानवर बिशेष तुरंग) मक्की रुकू १ आयत ११।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) दौड़ते*हुए हांपनेहारों की सौंह। (२) अग्नि† झाड़नेहारों की सौंह। (३) फिर बिहान के समय छापा मारनेहारों की सौंह। (४) और फिर उसमें धूर उड़ाते। (५) फिर उसी समय सेना में जा घुसते हैं। (६) निस्सन्देह मनुष्य अपने प्रभु का कृतघ्न हैं। (७) और निस्सन्देह वह इस बात पर आपही साक्षी है। (८) और निस्सन्देह वह धन की प्रीत में कठोर हैं। (९) सो क्या वह नहीं जानता कि जो कुछ समाधियों में है उठा खड़ा किया जायगा। (१०) और जो कुछ हृदयों में है प्रगट कर दिया जायगा। (११) निस्सन्देह उसका प्रभु उस दिन उसकी दशा से अचेत नहीं हैं॥

---

* अर्थात घोड़ा। † अर्थात खुर मन्थन और पत्थर की रगड़ से जो उत्पन्न हो॥

१०१ सूरए कारिया (ठोंकना) मक्की रुकू १ आयत ८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) ठोकनेहारी क्या है वह ठोकनेहारी। (२) और तूने क्या समझा कि क्या है वह ठोकनेहारी। (३) एक दिन मनुष्य पतंगों की नाईं बिखरे हुये होयंगे। (४) और पहाड़ धुनी हुई रुई के समान होयंगे। (५) और जो बोझ में भारी होगा वह आनन्द के जीवन में होगा। (६) और जिसका बोझ हलका होगा उसका ठिकाना हाविया* होगा। (७) और तू क्या जाने कि वह हाविया क्या है। (८) वह दहकती हुई अग्नि है॥

---

१०२ सूरए तकासुर (अधिकाई की अभिलाषा) मक्की रुकू १ आयत ८।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) अधिक चाहने तुमको अचेत कर रखा है। (२) यहां लों कि तुम समाधियों में पहुंचे। (३) नहीं तुम शीघ्र जान लोगे। (४) फिर नहीं तुम शीघ्र जान लोगे। (५) नहीं यदि तुम निश्चय रीति से जान लो। (६) कि तुम अवश्य नर्क को देख लोगे। (७) फिर अवश्य तुम उसको प्रतीत के नेत्र से देख लोगे। (८) फिर उस दिन तुम से वरदान के विषय में प्रश्न किया जायगा॥

—— :o: ——

१०३ सूरए असर (मध्यान्ह) मक्की रुकू १ आयत ३।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) मध्याह्न के पश्चात की सौंह। (२) निस्सन्देह मनुष्य हानि में है। (३) केवल उनके जो विश्वास लाए और सुकर्म किए और एक दूसरे को सत्य की आज्ञा की और एक दूसरे को सन्तोष की आज्ञा † की॥

—— o ——

---

* अर्थात नर्ककुण्ड। † अर्थात ताकीद॥

१०४ सूरए हमज़ा (चवाई) मक्की रुकू १ आयत ९।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रु० १—(१) हर दोषक और चवाई पर सन्ताप। (२) जिसने धन इकत्र किया और गिन गिन कर रखा। (३) क्या उसने विचार किया है कि उसका धन उसको सदा जीवता रखेगा। (४) नहीं वह हुतमा में फेंका जायगा। (५) और तू क्या जाने कि हुतमा क्या है। (६) ईश्वर की सुलगाई हुई अग्नि। (७) जो हृदयों के ऊपर छा जाती है। (८) निस्सन्देह वह उन पर लटकती है। (९) बड़े बड़े खम्भों पर ॥

---

१०५ सूरए फ़ील (हाथी) मक्की रुकू १ आयत ५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे प्रभु ने हाथी वालों के साथ क्या किया। (२) क्या उसने उनके छलको असत्य न कर दिया। (३) और उन पर पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड भेजे। (४) जो उन पर कंकर की पथरियां फेंके। (५) और उन्हें खाए हुए चारे के समान कर दिया ॥

---

१०६ सूरए क़ुरैश मक्की रुकू १ आयत ४।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रुकू १—(१) क़ुरैश के मिलाप के निमित्त। (२) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा का अभ्यासी किया। (३) चाहिए कि वह इस घर के प्रभु की आराधना करें जिसने उन्हें भूख में भोजन कराया। (४) और भय * से निर्भय रखा ॥

---

* सूरए तीन यह अरब लोगों की एक प्राचीन मूर्तिपूजा की रीति थी ॥

२०७ सूरए माऊन (दान) मक्की रुकू १ आयत ७।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) क्या तूने उसको देखा जो प्रतिफल को झुठलाता है। (२) यह वही है जो अनाथ को धक्के देता है। (३) और कंगाल को खिलाने के हेतु नहीं उभारता। (४) सो उन प्रार्थकों पर सन्ताप। (५) जो अपनी प्रार्थना से अचेत हैं। (६) और दिखाने के हेतु करते हैं। (७) और आवश्यकता की वस्तुओं * में कृपणता करते हैं॥

---

१०८ सूरए कौसर (बहुतायत) मक्की रुकू १ आयत ३।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) निस्सन्देह हमने तुझको बहुतायत † दी है। (२) सो अपने प्रभु से प्रार्थना कर और बलि दे। (३) निस्सन्देह तेरा शत्रु ही दुर्दशा ‡ में रहेगा॥

---

१०९ सूरए काफ़रून (अधर्म्मी) मक्की रुकू १ आयत ६।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रुकू १—(१) कह हे अधर्म्मियों। (२) मैं नहीं पूजता जो तुम पूजते हो। (३) और न तुम उसको पूजते हो जिसको मैं पूजता हूं। (४) और न मैं पूजूंगा जिसको तुम पूजते हो। (५) और तुम न पूजोगे जिसको मैं पूजता हूं। (६) तुमको तुम्हारा मत और मेरे निमित मेरा मत॥

---

* अर्थात उपयोगी वस्तुएं मांगे नहीं देते। † अरबी में कौसर। ‡ निर्वंशी वायल का पुत्र आस कहा करता था कि महम्मद साहब के कोई पुत्र नहीं और इस पर उनको अबतर कहा करता था जिसका अर्थ लंडूरा है. इज १८॥

११० सूरए नसर (सहायता) मदनी रुकू १ आयत ३।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रुकू १—(१) जब ईश्वर की ओर से सहायता और विजय आ पहुंचती है। (२) और तू देखता है कि ईश्वर के मत में लोग झुण्ड के झुण्ड प्रवेश करते हैं। (३) सो अपने प्रभु का जाप कर उससे क्षमा मांग निस्सन्देह वही पश्चाताप ग्रहण करनेहारा है॥

---

१११ सूरए लहब मक्की रुकू १ आयत ५।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से ॥

रु० १—(१) अबूलहब * के दोनों हाथ टूट जायं और वह नाश हो जाय। (२) उसका धन उसके कुछ अर्थ न आयगा और न वह जो उसने उपार्जन किया है। (३) वह लपटों वाली अग्नि में प्रवेश करेगा। (४) और उसकी पत्नी † ईंधन उठाए हुए। (५) उसके गले में बटी हुई रस्सी है।

---

११२ सूरए इख़लास मक्की रुकू १ आयत ४।
अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से।

रु० १—(१) कह ईश्वर एक है। (२) ईश्वर अनन्त है। (३) न जन्मता है। और न जन्मा गया। (४) और उसके समान तो कोई है ही नहीं॥

---

* महम्मद साहब का चचा। † यह महम्मद की गैल में कांटे बिछाया करती थी॥

११३ सूरए फ़लक (पौफटना) मक्की रुकू १ आयत ५।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) कह मैं विहान के प्रभु की शरण लेता हूं। (२) हर वस्तु की हानि से जो उसने उत्पन्न की। (३) और अंधेरी* की हानि से जब फैल पड़े। (४) और गांठ पर फूंक मारने हारियों की हानि से। (५) और डाह करनेहारे की क्रूरता से जब वह डाह करे॥

---

११४ सूरए नास (मनुष्य) मक्की रुकू १ आयत ६।

अति दयालु अति कृपालु ईश्वर के नाम से॥

रु० १—(१) कह मैं मनुष्यों के प्रभु के तीर शरण लेता हूं। (२) जो मनुष्यों का महीप है। (३) और मनुष्यों का देव है। (४) और दुविधा डालनेहारे की क्रूरता से जो छिप जाता है। (५) जो मनुष्य के हृदय में दुविधा डालता है (६) जिन्नों और मनुष्यों से॥